हिन्दी प्रकाशक

१९७३

विज्ञान प्रकाशक
वर्ष 1 1963

अखिल भारतीय हिन्दी प्रक...
का मु...

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष १ जनवरी, १९६३ अंक ...

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष १, अंक २ जनवरी, १९६३ मूल्य वार्षिक ३.००

सेमिनार की उपलब्धियाँ

यूनेस्को के तत्वावधान में अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा संयोजित पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी सेमिनार की रिपोर्ट और उसमें हुए कुछ भाषण इस अंक में प्रकाशित हो रहे हैं। शेष भाषण और निबन्ध क्रमशः प्रस्तुत होंगे।

दिल्ली के दैनिक 'नवभारत टाइम्स' ने इस सेमिनार के सम्बन्ध में लिखा है कि "साहित्य-सृजन के विभिन्न अंगों से सम्बद्ध क्षेत्रों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाने और सब की साझी समस्याओं पर विचार करने का यह प्रथम आयोजन होते हुए भी इस सम्मेलन की उपलब्धियाँ कई दृष्टियों से महान और प्रशंसनीय रहीं।"

प्रतिष्ठित दैनिक ने जिन उपलब्धियों को महान और प्रशंसनीय माना है उनमें एक नेशनल बुक लीग की स्थापना है और दूसरा यह निश्चय है कि पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र से सम्बन्धित विभिन्न व्यवसायों को अपने संघों को दृढ़ करना और जहाँ नहीं हैं वहाँ उनकी स्थापना करना तथा उनमें पारस्परिक सहयोग बढ़ाना आज की सब से बड़ी आवश्यकता है।

हमारा विश्वास है कि जो बन्धु सेमिनार में उपस्थित नहीं हो सके वे भी सेमिनार सम्बन्धी सामग्री और आज की परिस्थिति के सम्यक् अध्ययन से इस निश्चय को इसी प्रकार ग्रहण करेंगे, और नये संघों की स्थापना तथा वर्तमान संघों को सुदृढ़ करने का काम तेज़ी के साथ शुरू हो जायगा। हमारे सामने की समस्याएँ गम्भीर होती जा रही हैं और कितनी ही नई समस्याएँ सिर उठा रही हैं। ऐसी स्थिति में यह काम जितनी जल्दी उठा लिया जायगा उतना ही अच्छा होगा। ●

इमर्जेंसी का प्रभाव

पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी सेमिनार का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय शिक्षा सचिव श्री कृपाल ने अपने सुचिन्तित भाषण में 'नेशनल इमर्जेंसी' का भी उल्लेख किया था। आपने कहा था कि "शिक्षा में लगाया जाने वाला धन अब रचनात्मक आर्थिक विनियोग समझा जाता है। इसलिये आपत्कालिक अवस्था में भी शिक्षा में किसी तरह की कटौती की आशंका नहीं है। बल्कि इस इमर्जेंसी के कारण शिक्षा को, पाठ्य-सामग्री जिसका अनिवार्य अंग है, और भी अधिक महत्व मिलेगा। ऐसी स्थिति में उन लोगों की गतिविधि में किसी तरह की भी कमी होने का कोई खतरा नहीं है जो पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचाने के विभिन्न व्यवसायों में लगे हैं।

श्री कृपाल के ये वाक्य उस समय एक ठोस आश्वासन के रूप में ही ग्रहण किये गए थे परन्तु पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश आदि से जो समाचार आ रहे हैं उनका सीधा अर्थ यही है कि विभिन्न सरकारी और अनुदान-प्राप्त क्षेत्रों में पुस्तकों की खरीद बन्द नहीं हो गई तो स्थगित अवश्य है। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ पुस्तकों की खरीद से सम्बन्धित इस नई स्थिति के प्रामाणिक तथ्यों का संग्रह करने और उन्हें अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है। इसलिये हम

अभी इस विषय में अधिक कहना नहीं चाहते फिर भी यह एक तथ्य है कि प्रकाशन और उससे सम्बन्धित अन्य क्षेत्रों में एक अनिश्चित अवस्था उत्पन्न हो गई है और पाठ्य सामग्री के क्षेत्र में जो विकास प्रारम्भ हुआ था वह रुक गया है। यह अनिश्चित अवस्था यदि अधिक स्थिर हो गई तो प्रकाशन और उससे सम्बन्धित क्षेत्रों में तो बेकारी और बेचैनी का कारण बन ही जायगी, शिक्षा और नागरिक प्रशिक्षण के उस कार्य में भी बाधक होगी जो किसी भी लम्बी आपत्कालिक अवस्था का सामना करने के लिए अनिवार्य माना जाता है।

आशा है कि सम्मानित अधिकारी शिक्षा और प्रकाशन क्षेत्र की इस अनिश्चित अवस्था पर गम्भीरता एवं सहानुभूति के साथ विचार करेंगे और इसे शीघ्र ही निश्चित विश्वास के रूप में बदल देंगे, जिससे प्रकाशन और उससे संबंधित क्षेत्र भी राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के कार्य में अपनी पूर्णशक्ति एवं श्रम लगा सकें। ●

'हिन्दी प्रकाशक' का स्वागत

'हिन्दी प्रकाशक' के प्रवेशांक का सर्वत्र उत्साह-पूर्ण स्वागत हुआ है। गुरुजनों, मित्रों और सहयोगियों ने इस सिलसिले में मुक्त उद्गार प्रकट किये हैं और संघ के कितने ही सम्मानित सदस्यों ने वर्षभर निरन्तर विज्ञापन देते रहने के कण्ट्राक्ट कर लिये है। विश्वास है कि यह उत्साह निरन्तर बढ़ता रहेगा और 'हिन्दी प्रकाशक' को सेवा के लिए स्थिर शक्ति प्रदान करेगा।

पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी सेमिनार की सामग्री को स्थान देने के कारण इस अंक में श्री दयानंद वर्मा तथा श्री रघुवीर शरण बंसल आदि के महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित नहीं हो सके। नेशनल बुक लीग की प्रस्तावित रूपरेखा भी नहीं दी जा सकी। सेमिनार में पढ़े गये अन्यान्य निबन्धों के साथ यह सामग्री भी अगले अंक में प्रस्तुत होगी। आशा है कि यह विवशता उदारता के साथ समझी और क्षमा की जायगी।

●

स्वागत

'हिन्दी प्रकाशक' के प्रवेशांक पर प्राप्त कुछ उद्गार

'हिन्दी प्रकाशक' का पहला अंक प्राप्त हुआ। राष्ट्र-भाषा होने के नाते हिन्दी पर जो दायित्व आया है उसको निभाने में हिन्दी जगत की इससे बड़ी सेवा होगी, ऐसी मेरी आशा है। कृपया बधाई स्वीकार करें।

—श्री राजेन्द्रशंकर भट्ट

संचालक, सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान

यह आनंद का विषय है कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने 'हिन्दी प्रकाशक' के प्रकाशन की व्यवस्था की है। पत्र की छपाई तथा आकार-प्रकार सुन्दर है। इसमें प्रति मास प्रकाशित की जाने वाली सामग्री के बारे में मेरा सुझाव है कि हर मास प्रकाशित होने वाली सभी हिन्दी पुस्तकों की सूची दी जाय, साथ ही नयी पुस्तकों की ऐसी आलोचना भी छपे जिससे अच्छे ग्रंथों के चयन में सुभीता हो।

मैं पत्र की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ भेज रहा हूँ।

—हिरण्मय (डॉ०)

आचार्य तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग, मैसोर वि. वि.

हिन्दी-प्रचार-प्रसार-विकास में चारों दिशाओं से विविध प्रयत्नों की नितान्त आवश्यकता है। प्रकाशन-जगत् की हलचलें, दृष्टिकोण सामने आना बहुत जरूरी है। राष्ट्र तथा राष्ट्र-भाषा की गति-मति बढ़ेगी। आपका प्रयत्न तथा प्रकाशन समीचीन तथा स्वागतार्ह ही नहीं उपकारक साबित होगा। 'हिन्दी प्रकाशक' खूब बढ़े, फूले-फले।

—पंढरीनाथ मुकुन्द डांगर

संचालक, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पूना

'हिन्दी प्रकाशक' के प्रथम अंक ने ही यह स्पष्ट कर दिया कि इसका भविष्य उज्ज्वल है। आपके सम्पादन, अनुभव और सूझ-बूझ ने इस पत्र को प्रकाशन-व्यवसाय से संबन्धित अन्य सभी पत्रों की अपेक्षा सुन्दरतम रूप प्रदान किया है। बधाई स्वीकार करें।

—श्री रामलाल पुरी

संचालक, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

'हिन्दी प्रकाशक' का अंक देखा है। अच्छा निकला है। आपने खूब मेहनत की है। आशा है, इसके द्वारा हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय की सेवा होगी और उसकी वृद्धि में यह सहायक होगा। —मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

'हिन्दी प्रकाशक' का पहला अंक देखा। चित्त प्रसन्न हो गया। वास्तव में प्रकाशकों के सम्मिलित योग के लिए जैसा पत्र हिन्दी में निकलना चाहिए था, आपने वैसा ही उसे निकाला। मेरी बधाई स्वीकार करें। पत्र मुझे इतना पसन्द आया कि अब प्रकाशन-व्यवसाय से सीधा सम्बन्ध न होते हुए भी मैं आपको बधाई देने से अपने को रोक न सका। —श्रीनिवास गुप्त
चिरगाँव, (झाँसी)

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रवेशांक आद्योपान्त देख गया। पत्र की न केवल सामग्री मुझे रुचिकर लगी, बल्कि स्तम्भों की योजना भी बेहद पसन्द आई। प्रकाशकों को तो इससे पथ-प्रदर्शन प्राप्त होगा ही—पुस्तकालय भी इससे यथेष्ट लाभान्वित होंगे। पुस्तकालयों का आपके पत्र की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए उनसे निवेदन करता हूँ कि वे इसे हर प्रकार का संरक्षण समर्थन प्रदान करें।

—परमानन्द दोषी, एम० ए०,
मंत्री, बिहार राज्य पुस्तकालय संघ, पटना

'हिन्दी प्रकाशक' का अंक देखा। बहुत उपयोगी है। मेरी बधाई स्वीकार करें। मेरा सहयोग सदैव आपके साथ है। —दीनानाथ शरण प्रो०
दरियापुरगोला, बांकीपुर, पटना

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रथम अंक मिल गया है। प्रथम अंक भी आपने वास्तव में बहुत सुन्दर बना दिया है। इसे इतना अधिक सुन्दर और पाठ्य बना देने का आपका परिश्रम इस बात का प्रतीक है कि यह बहुत शीघ्र ही हिन्दी-प्रकाशनों और हिन्दी-प्रेमियों का सर्वप्रिय बनेगा। हमारी बधाई और शुभ कामनाएँ। —सतीशकुमार
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

'हिन्दी प्रकाशक' आशा से अधिक सुन्दर और उपयोगी निकला है। इसमें उपयोगी सूचनाएँ बढ़ाते रहें। आपका अकेले का इतना परिश्रम स्तुत्य है। —पुरुषोत्तम दास मोदी
संचालक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रवेशांक संघ की महत्ता के अनुरूप पाया। सामग्री के चयन और रूप-रेखा में कहीं भी कोई कमी नहीं। बधाई हो। —दयानन्द वर्मा
पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रवेशांक देखने को मिला। प्रकाशन सम्बन्धी सूचनाओं का तगड़ा संकलन 'हिन्दी प्रकाशक' अपने पाठकों को दे सकेगा ऐसी आस्था जगती है। प्रवेशांक में प्रकाशन-विषयक लेख पठनीय व विचारणीय हैं। —सुरेन्द्रप्रसाद जमुआर
सम्पादक 'नई पीढ़ी', पटना

'हिन्दी प्रकाशक' अपने बाह्य रूप में तो सुन्दर है ही, विषय-सामग्री की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है और भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा, यह मेरा विश्वास है।

—रघुवीरशरण बंसल
संचालक, बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली

आपका दिसम्बर का 'हिन्दी प्रकाशक' का अंक देखने को मिला, जिसे देखकर प्रसन्नता हुई। आपका पत्र प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं को मार्ग दर्शन दे, यही कामना है। —एस० पी० टण्डन
संचालक, पुस्तक प्रतिष्ठान, इन्दौर

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रथमांक देखकर प्रसन्नता हुई। इस पत्र का प्रकाशन कर संघ ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। इसमें संदेह नहीं। पत्र का सम्पादन बड़ी योग्यता और सूझबूझ से किया गया है और इसमें पर्याप्त उपयोगी सामग्री का समावेश है। मेरा विश्वास है, हिन्दी पुस्तक व्यवसाय को इससे गति मिलेगी। परमात्मा शरण
संचालक, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ

'हिन्दी प्रकाशक' का प्रथम अंक अत्यन्त आकर्षक लगा। प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेताओं के साथ इसमें लेखकों से सम्बन्धित सुझाव भी संगृहीत हैं—यह देखकर प्रसन्नता हुई। मँजी हुई लेखनी और चुटीली भाषा-शैली पत्र में चार चांद लगा रही है।

—शिवेन्द्रकुमार 'परिवर्तन'
वाङ्मय भण्डार, गाजियाबाद

पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में व्यावसायिक संघों का विकास दिल्ली में ऐतिहासिक सेमिनार

राष्ट्रसंघ के शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के तत्वावधान में अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में व्यावसायिक संघों के विकास पर विचार करने वाला सेमिनार ५ से १० दिसम्बर तक दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी के हाल में हुआ। अखिल भारतीय स्तर के इस सेमिनार में भाग लेने के लिए लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, मुद्रकों, कलाकारों तथा पुस्तकालयों आदि के संघों के सुप्रतिष्ठित प्रतिनिधि उत्तर भारत के प्रायः सभी प्रमुख केन्द्रों से पधारे थे। नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी, पब्लिकेशन डिवीज़न तथा कई विश्वविद्यालयों एवं सरकारी तथा अर्ध-सरकारी प्रकाशन संस्थाओं के प्रतिनिधि पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे। वे सेमिनार की सब गोष्ठियों में मनोयोग के साथ भाग लेते और अपने सुझावों आदि से सहायता देते रहे।

उद्घाटनोत्सव

सेमिनार का प्रारंभ ५ दिसम्बर को सायंकाल प्रतिनिधियों के सम्मिलन के बाद हुआ। सबसे पहले अ. भा. प्रकाशक संघ के अध्यक्ष एवं सेमिनार के टेकनिकल निर्देशक श्री लक्ष्मीचंद्र जैन ने अभ्यागतों का सत्कार किया एवं यूनेस्को की उपयोगी गतिविधियों की सराहना की। सेमिनार के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि पाठ्य-सामग्री से सम्बन्धित विभिन्न व्यवसायों के प्रतिनिधियों को अपनी-अपनी समस्याएँ समझाने के लिए यह सम्मिलित एवं सुविधापूर्ण मंच प्रस्तुत किया गया है। इस बात पर आपने खेद प्रकट किया कि अभी भारत में पाठ्य-सामग्री से सम्बन्धित कई व्यवसायों के क्षेत्रीय संगठन भी नहीं हैं। सीमा पर आक्रमण और उसकी छाया का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि हमारे साहित्य और हमारी पाठ्य सामग्री का क्या मूल्य होगा यदि वह मानव मस्तिष्क में सदेहों, संघर्षों और युद्धों के बीज वपन करे—उसे समृद्धि और शान्ति न दे? आपने कहा, हम सब यहाँ ऐसा साहित्य प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा करें जो मनुष्य को स्वतन्त्रता, सम्मान और शांति के लिए सब कुछ निछावर कर देने वाले साहस और आत्मविश्वास से भर दे!

अंत में आपने श्री कृपाल की सांस्कृतिक सेवा और प्रशासनिक योग्यता की सराहना की, उन्हें सेमिनार की मूल प्रेरणा का पुरस्कर्ता बताया तथा निवेदन किया कि वे इस ऐतिहासिक सेमिनार का उद्घाटन कर मार्ग प्रदर्शित करें।

केन्द्रीय शिक्षा-सचिव श्री प्रेमनाथ कृपाल ने अपने उद्घाटन भाषण में पाठ्य-सामग्री को समुचित रूप देने वाले प्रयत्नों का इतिहास बताया और कई महत्वपूर्ण विषयों पर अधिकृत प्रकाश डालकर इस बात पर बल दिया कि पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में विभिन्न व्यावसायिक संघों का संगठन एक ऐसी आवश्यकता है जिसकी पूर्ति होनी ही चाहिए। अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष श्री रामलाल पुरी ने आपको धन्यवाद अर्पित किया और उद्घाटनोत्सव सानन्द समाप्त हुआ।

गोष्ठियाँ

६ दिसम्बर से १० दिसम्बर तक रविवार को छोड़कर प्रतिदिन सवेरे ६-५० से १ बजे तक और मध्याह्न में २-५० से ५ बजे तक सेमिनार की गोष्ठियाँ हुईं; जिनमें निम्नलिखित विषयों पर निम्नलिखित अधिकारी महानुभावों ने अपने प्रबंध प्रस्तुत किये और उन पर विस्तृत चर्चा हुई।

पाठ्य सामग्री के क्षेत्र में प्रकाशक संघों का योगदान :

फेडरेशन आफ बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स एसोसियेशन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सदानंद भटकल और आत्माराम एण्ड संस के संचालक श्री रामलाल पुरी

विक्रेता संघों का योगदान :

दिल्ली बुकसेलर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री एस. एच. प्रमिलानी और अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष श्री कृष्णचंद बेरी

मुद्रक संघों का योगदान

गुलाब सन्स आफसेट प्रेस के श्री गोवर्धन कपूर और बैनेट कोलमैन एण्ड कंपनी (टाइम्स आफ इण्डिया) के मैनेजर श्री जे. एम. डी'सूजा

कलाकार संघों का योगदान

कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारतीय कला और संस्कृति के विभागाध्यक्ष और संसः सदस्य डा० निहार रंजन राय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डा० जगदीश गुप्त

लेखक संघों का योगदान

पंजाब विश्वविद्यालय के डा० मुल्कराज आनन्द और श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

लायब्रेरी संघों का योगदान

दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी के निदेशक श्री डी. आर. कालिया

नेशनल बुक लीग की आवश्यकता

राजपाल एण्ड सन्स के श्री दीनानाथ मल्होत्रा

व्यावसायिक संघों के लिए कुछ सिद्धान्त

फोर्ड फाउंडेशन नई दिल्ली के श्री आर्टर आइज़नवर्ग

समापन

१० दिसम्बर को सायंकाल सेमिनार का समापन हुआ; उसमें निदेशक ने प्रत्येक निबंध और उस पर हुई चर्चा का सार प्रस्तुत किया और फिर आवश्यक निश्चय किये गये तथा वक्ताओं, प्रतिनिधियों एवं सेमिनार की सयोजना में सहायता देने वाले मित्रों को धन्यवाद दिए गये।

नेशनल बुक लीग की स्थापना

सेमिनार की समाप्ति का वह समय उत्साह से पूर्ण था। उस दिन सबेरे की गोष्ठी में नेशनल बुक लीग की स्थापना हो गई थी और उसके लिए लगभग चार हजार रुपये के चंदे के वचन भी मिल गये थे। ऐसी एक संस्था की आवश्यकता पर जब श्री दीनानाथ मल्होत्रा अपना निबन्ध पढ़ रहे थे तब किसी को ऐसी आशा नहीं थी परन्तु निबंध पाठ के बाद चर्चा ने कुछ ऐसा रूप ग्रहण किया कि संस्था की स्थापना का निश्चय हो गया और श्री दीनानाथ जी ही उसके संयोजक चुने गये। यह संस्था पुस्तक-व्यवसाय से सर्वथा पृथक् रहेगी और जनसाधारण में पुस्तकें पढ़ने की रुचि जगाने तथा बढ़ाने का काम करेगी। फोर्ड फाउंडेशन के श्री आर्टन आइजनवर्ग के लिए यह कार्यपद्धति बिलकुल नई थी। वे चकित और पुलकित हो गये।

सेमिनार की उपलब्धियों और निश्चयों ने इस उत्साह को और बढ़ाया था। प्रतिनिधि उत्साह के उसी वातावरण में यह निश्चय लेकर विदा हुए कि पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में वे सामूहिक रूप से पर्याप्त रचनात्मक कार्य अवश्य करेंगे।

भारत सरकार की बालसाहित्य प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षामंत्रालय ने ९वीं बाल पुरस्कार प्रतियोगिता की घोषणा कर दी है। पुस्तकें १ मई तक ली जायेंगी और १५ पुरस्कार दिये जायँगे। विवरण इस पते से मिल सकता है। सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार, सेक्सन-बी-३, नई दिल्ली।
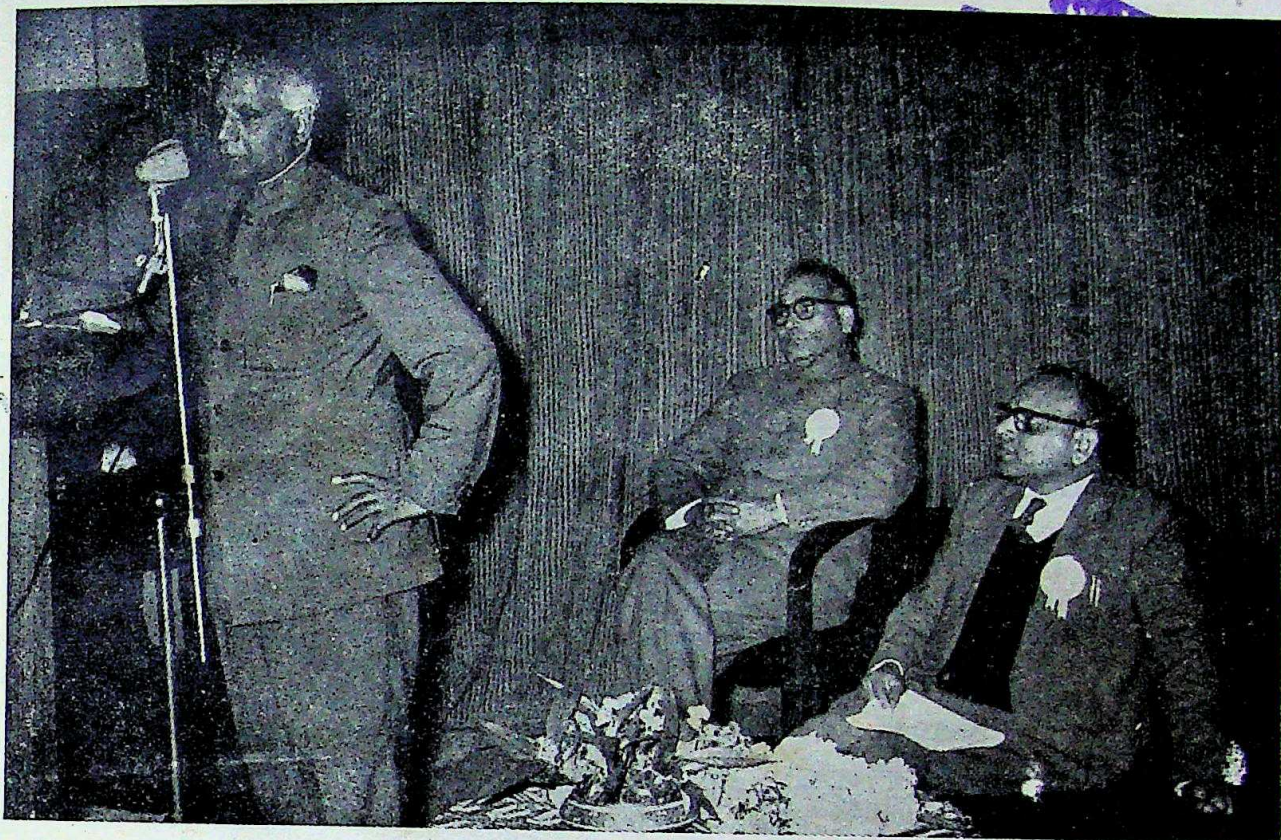
पाठ्यसामग्री सम्बन्धी सेमिनार : श्रीकृपाल उद्घाटन करते हुए *

श्री कृपाल का परिचय देते हुए श्री लक्ष्मीचंद्र जैन
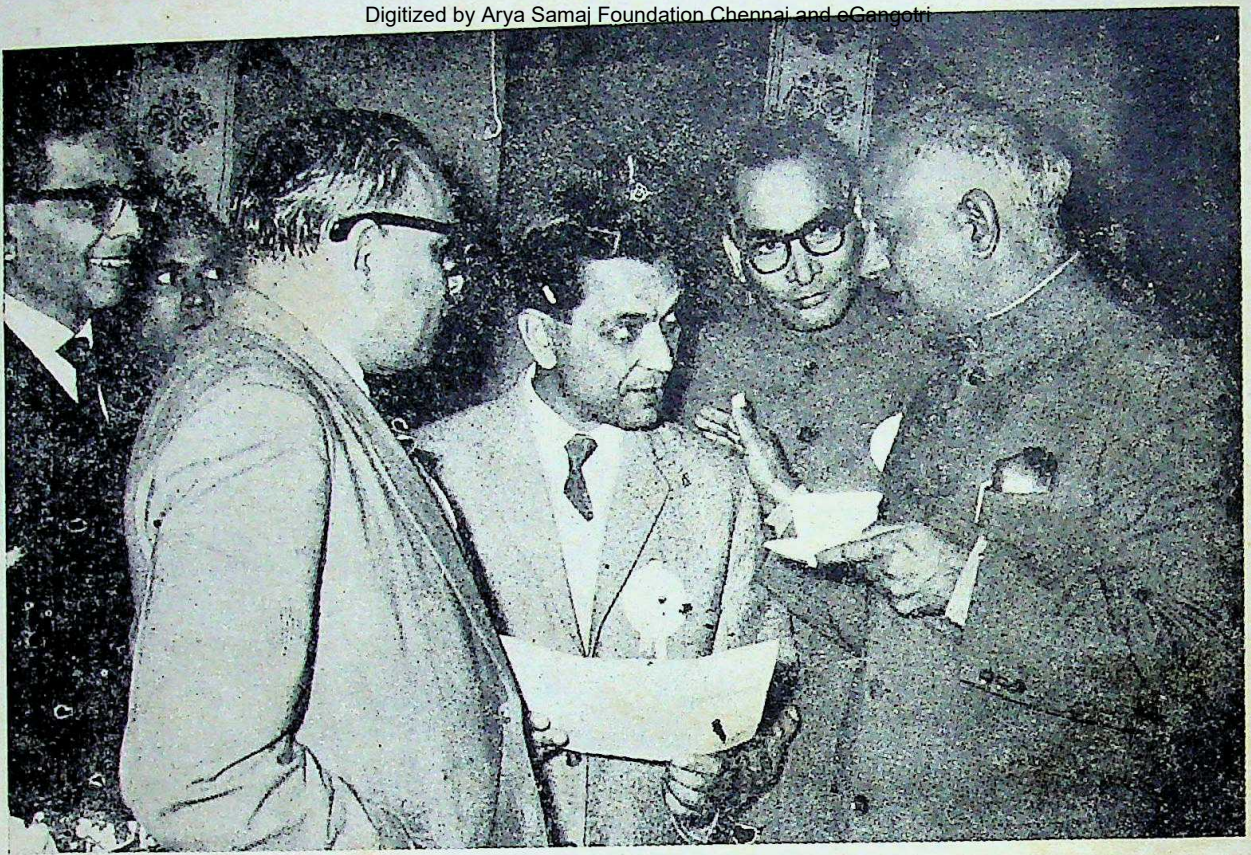
उद्घाटन से पूर्व श्री कृपाल से वार्तालाप

गोष्ठी के मध्य में जलपान
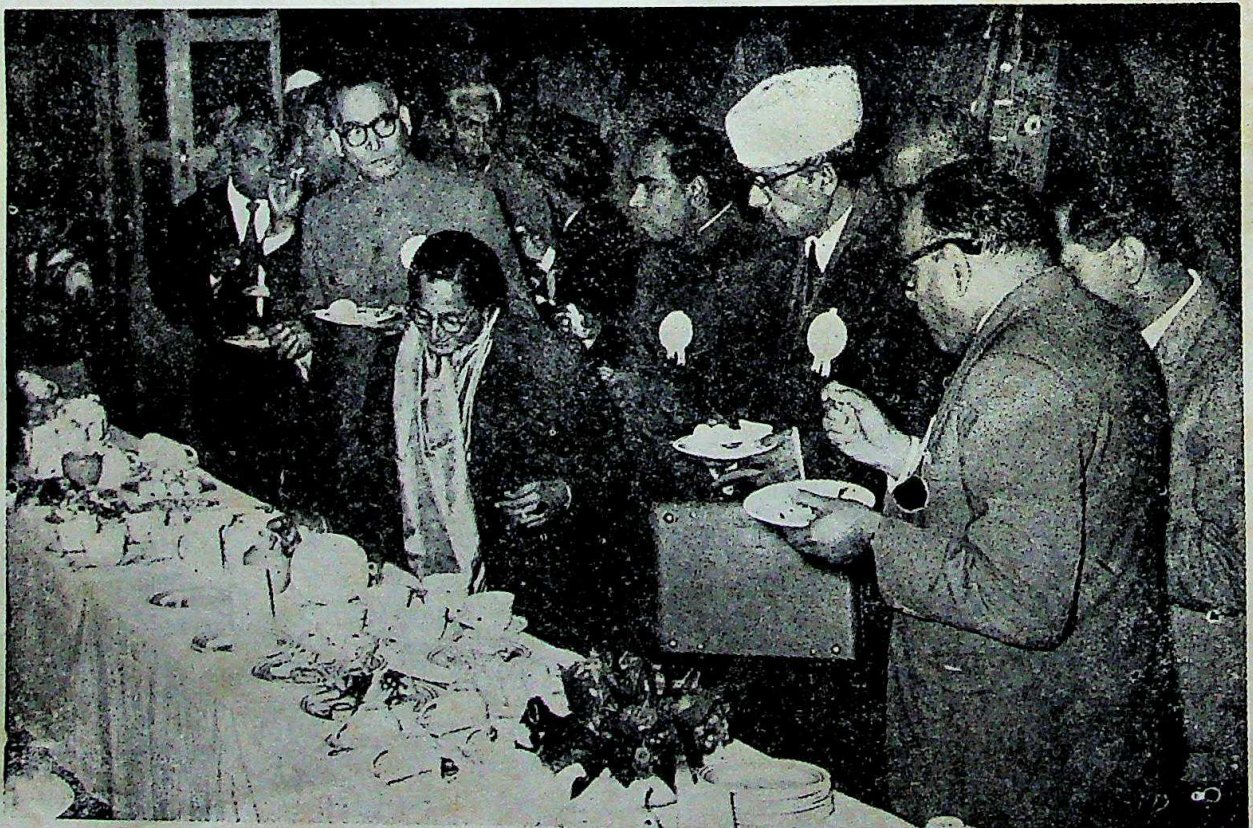
पाठ्य-संबंधी सेमिनार में केन्द्रीय शिक्षा सचिव
श्री कृपाल का उद्घाटन भाषण

पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में व्यावसायिक संघों की महत्ता

आपने मुझे इस उत्सव में आमंत्रित किया और इस सेमिनार के उद्घाटन का भार सौंपा—इसके लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ। कुछ दिन पहले मैंने अपने उपाध्यक्ष डा० जाकिरहुसैन को यूनेस्को के इंडियन नेशनल कमीशन की ओर से आयोजित एक सांस्कृतिक समारोह का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया था। तब उन्होंने अपने विद्वत्ता और विनोदपूर्ण भाषण में उद्घाटन-कर्ता के नाम पर मीठी चुटकी ली थी और अपनी उलझन प्रकट की थी, फिर भी उद्घाटनकर्ता की कुछ उपयोगिता है। वह प्रयाण के लिए संकेत दे देता है, यद्यपि मूल्यवान् क्रिया के लिए वह संकेत प्रतीकात्मक और औपचारिक ही होता है। सेमिनार के निदेशक के इस कथन में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है कि अगले कुछ दिनों में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा भली-भाँति से संयोजित यह सेमिनार काफ़ी उपयोगी काम करेगा।

पाठ्य-सामग्री के लिए परियोजना का प्रारम्भ

आपने विभिन्न गोष्ठियों में विचार-विमर्श के लिए प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित किया है। मेरा विश्वास है कि उनका योगदान और विचार-विमर्श का परिणाम पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र की कितनी ही समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेगा। प्रसन्नता की बात है कि ऐसे विशिष्ट आयोजन में मैं अपरिचित नहीं हूँ। कह सकता हूँ कि इस परियोजना के प्रारम्भ में पेरिस में मैंने कुछ काम भी किया है। यह सन् १९५५ की बात है जब यूनेस्को ने अपने कार्यक्रम को पुनर्गठित करने के लिए विचार प्रारम्भ किया। वह आवश्यकता किसी असावधानी या वैचारिक परिवर्तन से उत्पन्न नहीं हुई थी अपितु स्थिति में तीव्र परिवर्तन और यूनेस्को के कार्यक्षेत्र में विस्तार से सामने आई थी। मैं उस समय सांस्कृतिक विभाग का कार्यकारी निदेशक था। तब हमने कुछ विकासोन्मुख देशों को पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में यह सहायता देने का विचार किया था।

एशिया में व्यापक परिवर्तन

इस परियोजना के पीछे दृष्टि यह थी कि एशिया में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। ऐसा परिवर्तन हो रहा है जिससे केवल साक्षरता ही विस्तृत नहीं हो रही है—जीवन की एक नई राह भी निकल और फैल रही है। पुरानी सभ्यता का आधार बदल रहा है, बर्बर प्रथाओं और पारम्परिक संस्कृतियों के स्थान पर पाठ्य-सामग्री, साक्षरता और यातायात की सुविधाओं के आधार पर एक नया समाज सामने आ रहा है। ऐसी स्थिति में पाठ्य-सामग्री इस समाज के सांस्कृतिक धरातल को रूप देने में प्रमुख भाग लेगी। इस परियोजना को रूप देने वालों का यह परामर्श औचित्यपूर्ण ही था कि एशिया के देशों में निरक्षर जन-समूह भी ऊँचे स्तर की संस्कृति रखता है। ऐसे लोगों को साक्षरता और सभ्यता का जो आधार दिया जाय वह उनकी परम्परागत जीवन-प्रणाली से पृथक् करके उन्हें साक्षरता और शिक्षा पर आधारित जीवन-धारा तो दे दे परन्तु उनके परम्परागत मूल्यों को न घटावे। उनकी श्रेष्ठ संस्कृति पर आघात न करे। साक्षरता के क्षेत्र में द्रुतगति से प्रवेश करने वाले योरोप के कुछ देशों का ऐसा उदाहरण सामने था। वहाँ साक्षरता के इसी प्रयास में कुछ ऐसी हल्की और अवांछित पाठ्य-सामग्री भी प्रस्तुत हो गई थी जो मनुष्य की निम्नस्तरीय और सहजातवृत्ति को संतुष्ट करती तथा उसे पथभ्रष्ट करने वाले भोग का मार्ग दिखाती थी। फल यह हुआ कि कई दृष्टियों से साक्षरता का परिणाम सुखद नहीं रहा। अतएव यूनेस्को का दृष्टिकोण यह था कि ऐसा कुछ अवश्य किया जाय जिससे साक्षरता के व्यापक प्रसार से

एशिया में संस्कृति को चोट पहुँचाने वाली कोई समस्या जन्म न ले अपितु वह अज्ञात भूमि की परम्परागत संस्कृति को उत्कर्ष प्रदान करे।

भारत, बर्मा, श्रीलंका और पाकिस्तान में श्रीगणेश

इस निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद सोचा गया कि क्या और कैसे किया जाय। यूनेस्को के पास विकासोन्मुख देशों की जीवनधारा और उनके सांस्कृतिक मूल्यों की सीधी जानकारी नहीं थी। भारत, बर्मा, श्रीलंका और पाकिस्तान को संयोजित किया गया और वहाँ से पाठ्य-सामग्री के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्राप्त की गई। फिर पुस्तकों से संबंधित प्रकाशक, मुद्रक और विक्रेता आदि विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञ नियुक्त किये गये और यूनेस्को के सचिवालय में एक सूचना-केन्द्र प्रारम्भ किया गया।

इस सबके परिणाम में जो कार्यक्रम बना, जिससे आप परिचित हैं—यह आयोजन जिसका अंग है—उसका तत्व यह है कि यह काम मुख्य रूप से राष्ट्रीय अधिकारियों को ही सौंप दिया जाय। यूनेस्को इस विकासोन्मुख और अहरह परिवर्तित क्षेत्र में प्रेरक 'एजेन्ट' के रूप में काम करे और यह अपने आप में कम महत्वपूर्ण भी नहीं है। अतएव यूनेस्को का कार्यक्रम मुख्यतः यहीं तक सीमित है कि पाठ्य-सामग्री की विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञों को क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर एकत्र होने की व्यवस्था कर दी जाय; इसी तरह जैसे आप आज यहाँ राष्ट्रीय स्तर पर एकत्र हुए हैं। विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञ जब इस प्रकार एकत्र होंगे तब वे सिद्धान्तों की चर्चा में ही न रह जायंगे अपितु अनिवार्य आवश्यकताओं के व्यावहारिक उत्तर भी प्रस्तुत करेंगे। बड़ा और महत्वपूर्ण काम इस प्रकार सरल हो जायगा।

यूनेस्को के कार्यक्रम का दूसरा भाग वह सूचना-केन्द्र है जिससे विभिन्न क्षेत्रों में खोज और अध्ययन की इच्छा रखने वालों को उपयोगी सूचनाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। क्षेत्र के नेताओं को छपाई और अध्ययन के विशेष सुअवसर भी प्राप्त हो सकते हैं। इसके साथ-साथ यूनेस्को स्थानीय स्थिति के अनुसार थोड़ी मात्रा में ऐसी पाठ्य-सामग्री स्वयं भी प्रस्तुत करेगी जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुतीकरण के लिए आदर्श और प्रेरक हो सके।

आप संभवतः उस काम से परिचित होंगे जो यूनेस्को की विभिन्न एजेंसियाँ इस क्षेत्र में कर रही हैं। इस कार्य का संयोजन यूनेस्को का कराची-स्थित कार्यालय करता है। रंगून, मद्रास और कोलंबो में अब तक कई सम्मेलनादि हो चुके हैं। पिछले वर्ष कोलंबो में जो अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्मेलन हुआ था उसमें मेरी समझ से व्यावसायिक संघों के योगदान पर विचार किया गया था। राष्ट्रीय स्तर का यह आयोजन उसी की एक कड़ी है। व्यावसायिक संघों के विकास के लिए यह अवसर उपयुक्त प्रतीत होता है।

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

अब मैं राष्ट्रीय क्षेत्र में आता हूँ क्योंकि इस राष्ट्रीय आयोजन का उद्देश्य पाठ्य-सामग्री के विभिन्न सहयोगी संगठनों को उत्कर्ष प्रदान करना है। यहाँ वितरित सूचना-पत्रकों से ज्ञात होता है कि आपने प्रकाशकों, मुद्रकों, विक्रेताओं, लेखकों और चित्रकारों के साथ लायब्रेरी संगठनों पर भी विचार करने का व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। अनुवादकों का उल्लेख इसमें नहीं है, इसके सिवाय समालोचक भी नहीं हैं—इसका कारण शायद यह है कि ये व्यावसायिक संघों के रूप में संगठित नहीं हैं।

आप जानते हैं कि अपने देश में विकास की प्रत्येक दिशा में सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्र काम कर रहे हैं। कहीं उनमें बहुत स्वस्थ प्रतियोगिता दीख पड़ती है कहीं नहीं दीख पड़ती, परन्तु उद्देश्य यही है कि सामूहिक राष्ट्रीय हित के लिए दोनों क्षेत्र सहयोग के साथ और अपव्यय तथा दुहरक्कम के दोष से बचकर अग्रसर हों। प्रकाशक कई बार इस बात के लिए सरकार की आलोचना करते हैं कि वह प्रकाशन के क्षेत्र में बहुत अधिक उतर आई है। पाठ्य-पुस्तकों को ही लीजिए। व्यक्तिगत क्षेत्र—प्रकाशक, विक्रेता और मुद्रक सब—पाठ्य-पुस्तकें प्रस्तुत करने में विशेष रुचि रखते हैं और अपने यहाँ की स्थिति में पाठ्य-पुस्तकें दूसरे प्रकार की पाठ्य-सामग्री की बुनियाद

भी हैं। इधर कई राज्यों में स्कूल स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हुआ है। यह अभी विवादास्पद है कि इस राष्ट्रीयकरण को व्यापक रूप दिया जाय और पाठ्य-पुस्तकों का समूचा क्षेत्र ले लिया जाय या राज्य के लिए कोई सीमा रखी जाय। तथ्य यह है कि सरकार कुछ असंतोषप्रद और अस्वास्थ्यकर स्थितियों के कारण ही इस क्षेत्र में आई है। पुस्तकें तत्व की दृष्टि से अपूर्ण थीं; उनका प्रस्तुतीकरण आकर्षक नहीं था; वे बच्चों को समय पर नहीं मिलीं और बहुत से मामलों में उनके मूल्य बहुत अधिक थे। इसलिए कुछ राज्य-सरकारों ने अच्छी, सस्ती और आकर्षक पाठ्य-पुस्तकें प्रस्तुत करने के उद्देश्य से उनके राष्ट्रीयकरण का मार्ग ग्रहण किया। मैं नहीं कहता कि यह व्यापक रूप में और सर्वत्र प्राप्त हुआ परन्तु उद्देश्य यही था और इसी विशेष परिस्थिति का परिणाम था। अब यदि व्यक्तिगत क्षेत्र—मैं व्यक्तिगत और सार्वजनिक क्षेत्र में कोई तीक्ष्ण अन्तर करना पसंद नहीं करता—यदि इस व्यवसाय में लगे हुए व्यक्ति अपने आपको अच्छी तरह संगठित करलें; प्रकाशक, मुद्रक, लेखक, विक्रेता और लाइब्रेरियन सब एक-दूसरे के गहरे संपर्क में आ जायँ; उनका संगठन अपने अस्तित्व के लिए ही नहीं अपने व्यवसाय की महत्ता को भी अपना लक्ष्य मान ले और सब अपने लिए एक आचरण-संहिता बना लें तो फिर सरकार के लिए इस क्षेत्र में व्यापक रूप से आने का कोई औचित्य न रह जायगा।

अनुकूल स्थिति

कुछ भी हो, पुस्तकों की आवश्यकता इतनी अधिक बढ़ रही है कि राष्ट्रीयकरण को गलत कदम नहीं कहा जा सकता। यह एक समाधान है, यह एक प्रणाली है जो कई जगह सफल हो चुकी है। यदि हम पुस्तकों के और व्यापक राष्ट्रीयकरण का ही निर्णय कर लें तो प्रकाशक और लेखक आदि अपने संघों के माध्यम से पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की बुद्धिमत्तापूर्ण एवं प्रभावशाली प्रणाली में महत्वपूर्ण भाग ले सकते हैं। जब पुस्तक-व्यवसाय अपने विभिन्न सहायकों सहित भली भाँति संगठित होगा, आचरण का ऊंचा आदर्श मान लिया जायगा, अधिक प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी प्राप्त होगी, तब सरकार के लिए इस काम में हाथ डालने की आवश्यकता निरंतर घटती चली जायेगी। मेरा ख्याल है कि कुछ यूनेस्को की परियोजना से तथा अधिकांश में हमारे अपने संगठनों के नेतृत्व और इस क्षेत्र के नये नेताओं के उद्योग से, व्यावसायिक संगठनों के लिए परिस्थिति काफ़ी अनुकूल हो गई है। इसलिए, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, इन व्यापारों के लिए, इन व्यवसायों के लिए और इन संगठनों के लिए स्वर्ण सुअवसर उपस्थित हो गया है।

आपत्कालिक स्थिति

निदेशक महोदय ने आज की उस दुखद स्थिति का उल्लेख किया है जो विदेशी आक्रमण के खतरे से हमारे सामने आई है, आंशिक आक्रमण तो हो भी चुका है। हमारा राष्ट्र इस नई परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए तात्कालिक एवं दूर-प्रसारी आधार पर ठीक ही संगठित हो रहा है। कई बार समझा जाता है कि इस स्थिति में शिक्षा और पाठ्य-सामग्री, जो शिक्षा का ही एक अंग है, बुरी तरह प्रभावित होगी, अर्थात् शिक्षा में कटौती की जायेगी क्योंकि हमको सुरक्षा के लिए धन एकत्र करना पड़ेगा। मैं नहीं समझता कि ऐसा सम्भव है। हमारे राष्ट्र-नायकों ने ऐसा कदापि नहीं सोचा।

कुछ दिन पहले तक शिक्षा को समाज-कल्याण का अंग समझा जाता था, दुर्भाग्य से हमारी पंचवर्षीय योजना में भी शिक्षा सामाजिक सेवा ही गिनी गई है। परन्तु हम जानते हैं कि यूनेस्को द्वारा किये गये कुछ अनुसंधानों ने इस धारणा में आमूल परिवर्तन कर दिया है। अब यह सर्वत्र स्वीकार किया गया है कि शिक्षा में लगा हुआ धन उसका लाभदायक विनियोग है। आर्थिक और सामाजिक विकास की योजनाओं को अमली रूप देने के लिए निर्णायक विनियोग है, मानवीय साधनों को अधिक-से-अधिक उपयोगी बनाने के लिए विनियोग है—धन के विनियोग का यह सर्वाधिक उज्ज्वल पक्ष है। मेरा विश्वास है कि आज की आपत्कालिक अवस्था राष्ट्र को सुरक्षार्थ प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षा को और भी अधिक अनिवार्यता प्रदान करेगी। आर्थिक विकास की योजना

में तो शिक्षा में लगा धन लाभदायक विनियोग का स्थान रखता ही है, सुरक्षा की तात्कालिक एवं दूर-प्रसारी व्यवस्था में वह और भी अधिक एवं अनिवार्य स्थान ले लेता है। इसलिए उनकी गतिविधि में किसी तरह की कटौती की आशंका नहीं है जो पाठकों तक पुस्तकें या पाठ्य-सामग्री पहुँचाने के विभिन्न व्यवसायों में लगे हैं। सरकार पुस्तकों की सुविधा बढ़ाने वाले सब प्रयत्नों के लिए सहायक ही है।

व्यावसायिक संघ यदि अच्छी तरह प्रतिष्ठित हो जायें तो सरकार के लिए इस काम में सहायता देना और भी सुविधाजनक हो जाय। व्यावसायिक संघों की प्रतिष्ठा का अर्थ उनका संगठन या दफ़्तर ही नहीं है, उनके लिए एक विकासोन्मुख आचरण-संहिता भी आवश्यक है—अपने कार्य के प्रति निष्ठा के साथ अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए ही नहीं, अपने देश की उन्नति के लिए भी एक प्रबुद्ध चेतना ज़रूरी है।

नेशनल बुक लीग

अपने कार्यक्रम में आपने नेशनल बुक लीग की स्थापना का उल्लेख किया है। मुझे यह विचार बहुत आकर्षक जान पड़ा है। यह समय भी उसके लिए उपयुक्त प्रतीत होता है। मैं नहीं जानता कि विचार-विमर्श के बाद यह विचार क्या रूप ग्रहण करेगा फिर भी यदि आप नेशनल बुक लीग की स्थापना का निर्णय करेंगे तो वह इस क्षेत्र के विभिन्न व्यवसायों के सक्रिय सहयोग पर ही आधारित होगी। एक प्रकार से यह अन्तर व्यावसायिक सम्पर्क के लिए संयोजन का काम देगी। अपने स्वरूप में यह सर्वथा राष्ट्रीय हो सकती है। विभिन्न बुक ट्रस्ट, व्यावसायिक और अन्य संगठन तथा विश्वविद्यालय इसमें भाग ले सकते हैं। यह उस अपव्यय, अनिश्चय और अव्यवस्था में वैज्ञानिक व्यवस्था भी स्थापित कर सकती है जो आज इस क्षेत्र में सर्वाधिक आवश्यक है।

विद्यार्थियों के लिए सस्ती पुस्तकें

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता इसलिए दो-एक बातों का उल्लेख ही और करूँगा। प्रकाशकों के मस्तिष्क में कुछ सरकारी योजनाओं ने कुछ बेचैनी उत्पन्न की है, पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में बाह्य और विदेशी सहायता ग्रहण करना उनमें से एक है। ऐसी सहायता हमें कुछ मित्र-देशों से, कुछ मित्र एजेंसियों से और स्वयं यूनेस्को से अच्छी मात्रा में मिल रही है। इस दिशा में एक योजना विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए वैज्ञानिक पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करना है। इस योजना में अमरीकी और ब्रिटिश अधिकारियों का सहयोग है, साथ ही साथ सोवियत संघ के साथ रूसी किताबों को अंग्रेजी में अनूदित करने के लिए भी एक सांस्कृतिक समझौता किया गया है। ये प्रयत्न भारतीय प्रकाशकों या लेखकों के हितों को किसी प्रकार भी खतरा उत्पन्न नहीं करते। यह सारा काम भारतीय प्रकाशकों के सहयोग से ही होगा और वही किताबें छपेंगी जो यहाँ नहीं मिलतीं और जिनका कापी-राइट दूसरों के पास है। हम उस सहायता के लिए कृतज्ञ हैं जिसके द्वारा इनका मूल्य एक तिहाई, कहीं-कहीं एक चौथाई हो जायगा और विद्यार्थियों को सहारा मिलेगा। हम सब भारतीय पुस्तकों के लिए उत्सुक हैं परन्तु वैज्ञानिक क्षेत्र की अच्छी किताबें जहाँ से मिलेंगी वहीं से लेनी पड़ेंगी। यदि हमारे लेखक उसी मानदण्ड की पुस्तकें लिखेंगे जो सहायता से सस्ते रूप में प्रस्तुत करने योग्य होंगी तो उनके लिए भी योजना अवश्य बनाई जायगी। इस प्रकार वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र की यह योजना भारतीय प्रकाशकों और भारतीय लेखकों के हितों के प्रतिकूल नहीं है। हिन्दी प्रकाशक संघ जैसे सुगठित संगठन इन क्षेत्र में हों तो ऐसी भ्रांत धारणाओं को फैलने का अवसर ही न मिले।

शिक्षा मंत्रालय और नेशनल कमीशन फार यूनेस्को की ओर से, जिसने हिन्दी प्रकाशक संघ के साथ मिलकर इस सेमिनार की व्यवस्था की है, मैं आयोजना की पूर्ण सफलता चाहता हूँ। सेमिनार का उद्घाटन करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही हैं।

●

विक्रेता वार्ता

पाठ्य-सामग्री संबंधी सेमिनार में
आक्सफोर्ड बुक कंपनी दिल्ली के
श्री एच० एस० प्रमिलानी का निबंध

विक्रेता संघों का उपयोग

पाठ्य-सामग्री के वितरण में पुस्तक-विक्रेताओं का महत्व प्रतिपादित करने के उपरांत श्री प्रमिलानी ने कहा :

साधारणतया समझा जाता है कि व्यापारिक उत्तेजना पुस्तक-विक्रेता की सफलता के लिए पर्याप्त है। जहाँ लाभदायक व्यवसाय के लिए समुचित मैदान, अच्छी पूँजी और अन्य सुविधाएँ भी सरलता से मिल जाती हैं वहाँ कहना ही क्या। कोई संदेह नहीं कि इन साधनों और सुविधाओं के साथ पुस्तक-विक्रेता अपने सामने की समस्याएं सुलझाने और आगे बढ़ते में समर्थ हो सकता है, परन्तु ऐसी समस्याओं का समाधान वह फिर भी नहीं कर सकता जो सामूहिक या सहकारी शक्ति से ही सुलझाई जा सकती हैं। ऐसी समस्याओं का समाधान विक्रेता संघ द्वारा ही हो सकता है इसलिए पुस्तक-विक्रय के व्यवसाय की पूर्ण सफलता के लिए विक्रेता संघ की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है। ऐसी समस्याएँ भी एक-दो नहीं हैं, उनकी लिस्ट काफी लम्बी हैं और पुस्तक विक्रेता संघ ही उनका समाधान दे सकता है।

कमीशन का सवाल

मैं कमीशन की बुनियादी समस्या से शुरू करता हूँ। विक्रय की समुचित व्यवस्था के लिए १० से ३० प्रतिशत तक का कमीशन उचित समझा जा सकता है। समझौते के रूप में यह २० प्रतिशत निश्चित हो सकता है। प्रतियौगिता इसे उतार कर १६, १८ यहाँ तक कि १० के आत्मघाती नुक्ते तक पहुँचा सकती है। यहां पुस्तक-व्यवसाय की एक विख्यात घटना का उल्लेख किया जा सकता है। सन् १८९० में प्रतियोगिता के कारण कमीशन १०-१५ प्रतिशत तक उतर आया और ब्रिटेन का पुस्तक-व्यवसाय तबाही के तट पर पहुँच गया। तब पुस्तक-विक्रेता के लिए समुचित कमीशन किसने प्राप्त किया और पुस्तक-व्यवसाय की किसने रक्षा की? वह पुस्तक-विक्रेता संघ ही था जिसने प्रकाशक संघ के साथ विचार-विमर्श किया और विख्यात "नेट बुक एग्रीमेंट" सामने आया। विक्रेता को समुचित कमीशन दिया गया। अपने देश में वह बुकसेलर्स एशोसियेशन दिल्ली है जिसने वही कमीशन अंग्रेजी पुस्तक-व्यवसाय के लिए प्राप्त किया है।

प्रकाशक और ग्राहक का सीधा संबंध

प्रकाशक और ग्राहक का सीधा सम्बन्ध इसी समस्या से जुड़ा है। ऐसा सीधा व्यवसाय पुस्तक-विक्रेता की वार्षिक आय को घटा देता है। प्रकाशक को इस व्यापार से इधर-उधर कुछ लाभ हो सकता है परन्तु विक्रेता संघ प्रकाशक को समझायेगा कि संघ के सदस्यों के माध्यम से व्यवसाय करने में उसे अन्ततोगत्वा और अच्छा लाभ रहेगा। समृद्ध और सुसंगठित विक्रय-व्यवस्था प्रकाशक के लिए एक विभूति होती है। ग्रेट ब्रिटेन के प्रकाशकों ने, जो शताब्दियों से इस व्यवसाय में हैं, इस तथ्य को पूर्णतया हृदयंगम कर लिया है। वे विक्रेता के माध्यम से ही व्यवसाय करते हैं और इस प्रकार उसे सहायता पहुँचाते हैं। दूसरे विक्रेता संघ अपने सदस्यों की क्षमता को विकसित करेगा जिससे प्रकाशक को ज्ञात हो जायेगा कि इसके सदस्य हमारे प्रकाशनों की बिक्री बढ़ा रहे हैं। फलतः वे विक्रेता संघ का सहयोग प्राप्त करने के लिए स्वयं उत्सुक रहेंगे।

विश्वास का लाभ

विक्रेता संघ प्रकाशकों में अपने सदस्यों के प्रति गंभीर विश्वास उत्पन्न करेगा। आवश्यकता पड़ने पर वह प्रकाशकों को अपने किसी भी सदस्य की आर्थिक स्थिति, उसके स्टाक की दशा और उसके व्यावसायिक अनुभव आदि का पूरा विवरण दे सकेगा। संघ बतायेगा कि हमारे सब सदस्य हमारे विधान से बंधे हैं और अपने आर्थिक व्यवहार

में शुद्ध रहने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं। संघ से ये सारी सूचनाएँ प्राप्त करने के बाद प्रकाशक विक्रेताओं को उत्साहपूर्वक और पूरी मात्रा में माल दे सकेंगे।

रकम की सुरक्षा

पुस्तक-विक्रेता प्रायः खोटे ग्राहकों के नीचे अपनी रकम गँवा बैठता है; विक्रेता संघ ऐसे खोटे ग्राहकों के नाम प्रचारित कर देगा जिससे धोखा खाने की आशंका जाती रहेगी। कुछ ऐसे ग्राहक भी होते हैं जिनसे ६ महीने, १२ महीने या दो वर्ष बाद पैसा मिलता है। सरकारी संस्थाएँ भी कई बार इस श्रेणी में आ जाती हैं। विक्रेता ऊँचे सरकारी अधिकारियों तक पहुँचकर इस स्थिति को बदल सकता है। आडिट विभाग को भी इस दिशा में प्रेरित किया जा सकता है।

बिक्री-कर और आय-कर

विक्रेता को बिक्री-कर, आय-कर, आयात-निर्यात, रेल किराया और डाक विभाग की सुस्ती तथा असावधानी आदि कितनी ही ऐसी समस्याओं का आये दिन सामना करना पड़ता है जिनका संबंध सरकार से है। विक्रेता संघ को इन सब के समाधान में जितनी सफलता मिल सकती है उतनी विक्रेता को व्यक्तिगत रूप से कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। आपको स्मरण होगा कि संघों के दबाव से ही दिल्ली, महाराष्ट्र, बंगाल तथा अन्य राज्यों में पुस्तकों को बिक्री-कर से मुक्ति मिली है। संघों के प्रभाव से ही पुस्तकों पर रेल किराया ५० प्रतिशत घट गया है।

बिक्री में वृद्धि का मार्ग

सतर्क प्रकाशक स्थानीय विक्रेता संघ के सहयोग से अपनी पुस्तक की बिक्री दुगुनी-तिगुनी भी कर सकता है। उसने किसी नगर या ज़िले के सम्बन्ध में कोई विशेष पुस्तक अच्छी प्रकाशित की है, उस स्थान के विक्रेता संघ के सहयोग से वह पुस्तक को अच्छी तरह विज्ञापित कर सकता और पूरा लाभ उठा सकता है।

विक्रेता संघ पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने में और भी सहायक हो सकते हैं। भारत में लोग पुस्तक-व्यवसाय में पूँजी नहीं लगाते। ९९ प्रतिशत पुस्तक-विक्रेताओं के पास बहुत दुर्बल स्टाक है। कारण, उनकी पूँजी सीमित है। जहाँ पूँजी पर्याप्त है वहाँ किताबों में उसे लगाने का

साहस नहीं है। माल पड़े रहने का भय भी सताता रहता है। इसका समाधान यही है कि प्रकाशक उन्हें अपना माल, विशेषतः नये प्रकाशन वापसी की शर्त पर भेजे। फ्रांस में यह व्यवस्था प्रचलित है और अमेरिका में विकसित हो रही है। वहाँ नई पुस्तक प्रकाशित होते ही समूचे देश के पुस्तक-विक्रेताओं की दूकानों पर प्रदर्शित हो जाती है और इस प्रकार उसका पर्याप्त प्रचार हो जाता है। मेरी समझ में भारत के लिए यह व्यवस्था अनुकूल है। इससे १० से २० प्रतिशत तक बिक्री बढ़ सकती है परन्तु इसमें एक बाधा है प्रकाशक की यह चिंता कि क्या विक्रेता इतना विश्वस्त है कि उसे संपत्ति इस प्रकार सौंप दी जायं? व्यक्तिगत रूप में बहुत थोड़े विक्रेता इस कसौटी पर खरे उतरेंगे परन्तु यदि सुसंगठित पुस्तक-विक्रेता संघ हो तो उसके सदस्य विश्वस्त हो सकते हैं। उसके सदस्यों को वापसी के आधार पर माल देकर बिक्री बढ़ाई जा सकती है। प्रकाशकों के लिए बिक्री में १०-२० प्रतिशत की वृद्धि एक सुख स्वप्न है। सिर्फ सुसंगठित विक्रेता संघ की आवश्यकता है।

प्रकाशकों और विक्रेताओं में और भी कई छोटे-मोटे सवाल उठते रहते हैं, कभी कमीशन का सवाल होता है तो कभी उधार की अवधि का, कभी किताबें पुरानी हो जाती हैं, कभी गुम हो जाती हैं, कभी देर से माल भेजने की शिकायत खड़ी होती है—विक्रेता संघ इन सब को सुलझाने में भी सहायक हो सकता है और पारस्परिक सहयोग से ऐसे नियम बना सकता है कि विवाद की जड़ ही न रहे।

विक्रेता संघ पुस्तक पढ़ने की रुचि बढ़ाने आदि के लिए सामूहिक प्रचार में सहायक हो सकता है, पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ करवा सकता है, पुस्तकों की चोरियाँ रोक सकता हैं, अश्लील साहित्य की गति में बाधा डाल सकता है, प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन कर सकता है। परन्तु मैं सब बातों की चर्चा करके आपका समय नहीं लेना चाहता। मेरा विश्वास है, और अब आपको भी विश्वास हो गया होगा कि पुस्तक-विक्रेता संघ पाठ्य-सामग्री के वितरण में महत्वपूर्ण योग दे सकते हैं।

ऐसे संघों की स्थापना के लिए पूर्ण प्रयत्न करना परमावश्यक है।

सम्पादक के नाम पत्र

कागज़, स्याही और छपाई

प्रिय संपादक जी,

यूनेस्को और अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ धन्यवाद के अधिकारी हैं कि उनके तत्वावधान एवं संयोजन में पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी सेमिनार दिल्ली में हुआ और काम की कितनी ही बातें मालूम हुईं।

सेमिनार में एक चोटी के विद्वान पाठ्य-सामग्री को सौंदर्य-पूर्ण रूप देने की आवश्यकता समझा रहे थे। भारत में छपी पुस्तकों की चर्चा करते हुए वे कह रहे थे : "कोई पाठ्य-पुस्तक लीजिए, वह स्कूल की हो चाहे कालेज की, उसके एक पन्ने से दूसरे पन्ने और एक फरमे से दूसरे फरमे की स्याही शायद ही एक जैसी होगी; टाइप, खासकर उनके कोमल अंग टूटे मिलेंगे। आँखों को चुभने वाली यह दशा मैंने नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत पुस्तकों में भी देखी है।"

एक छोटे-से मुद्रक के नाते मेरा सिर ये शब्द सुनकर झुक जाता परन्तु उसी दिन प्रातः मुद्रकों की ओर से गुलाब सन आफसैट प्रेस के श्री गोवर्धन कपूर और टाइम्स आफ इंडिया के जनरल मैनेजर श्री जे० एम० डीसूजा अपने निबन्ध पढ़ चुके थे। श्री कपूर छपाई की इस दशा के लिए कागज़ और स्याही का नाम लेकर उसे निराशाजनक सीमा तक घटिया बता चुके थे और श्री डीसूजा इसको सरल रूप में उदाहरण देकर समझा चुके थे। वे कह चुके थे कि लेटर प्रेस की छपाई में मशीन पर दी जाने वाली 'दाब' बहुत महत्व रखती है। मशीनमैन ने बड़ी होशियारी और सावधानी से 'दाब' बाँधी परन्तु कागज़ की मोटाई कई तरह की हो जाय तो मशीनमैन की सारी चतुराई मट्टी में मिल जायेगी। यह तो हम सब जानते ही हैं कि आज-कल एक रिम में भी कई तरह का मोटा-पतला कागज़ निकल आता है।

श्री डीसूजा ने अपने निबन्ध में यह भी बताया था कि कागज़ की इस स्थिति के कारण मुद्रक की उत्पादन-क्षमता में फर्क पड़ता है और छपाई मँहगी हो जाती है। उन्होंने यह भी कहा था कि भारत में बना हुआ कागज़ अमरीका और योरोप तो दूर, जापानी मिलों के कागज़ से भी घटिया होता है, परन्तु उसका मूल्य पश्चिमी देशों की तुलना में काफी अधिक देना पड़ता है। इस तरह पाठ्य-सामग्री के मूल्य में स्वभावतः वृद्धि हो जाती है।

कागज़ की इस स्थिति को श्री डीसूजा ने मुद्रक के लिए सबसे बड़ी समस्या बताया था और श्री कपूर ने कहा था कि प्रकाशक और मुद्रक संघ अपने सम्मिलित प्रयास से इस समस्या को हल की ओर ले जा सकते हैं। उन्होंने खेद के साथ कहा था कि कागज़-निर्माताओं के संघ ने मुद्रक संघ के आह्वान का आदर नहीं किया। प्रकाशक संघ का सहयोग भी मुद्रक संघ को मिलेगा तो कागज़-निर्माता उपेक्षा न करेंगे। आपने बताया था कि स्याही-निर्माता सहयोग के लिए प्रस्तुत हैं।

टूटे हुए टाइपों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया था परन्तु इस क्षेत्र में भी छानबीन की जायेगी तो यही परिणाम मिलेगा कि टाइप फाउंडरियों में काम की भीड़ है और टाइप को मज़बूत करने वाली 'ऐंटीमनी' की मात्रा घटती जा रही है।

मेरा ख्याल है कि श्री कपूर और श्री डीसूजा के निबन्धों से यह धारणा दूर होगी कि मुद्रक अच्छी छपाई नहीं करते या प्रकाशक अच्छी छपाई नहीं करवाते। सेमिनार से हुआ यह लाभ अपने आप में कम नहीं है। परन्तु समस्या को सुलझाने की आवश्यकता बाकी रह ही जाती है। श्री कपूर ने जो राह दिखाई है वह ले ली जाय तो प्रकाशकों और मुद्रकों का मुँह और भी उजला होगा तथा पाठ्य-सामग्री भी सुन्दर तथा सस्ती मिलने लगेगी।

—रणवीर पुरी
पुरी प्रिंटर्स, नई दिल्ली

संकटकाल में

प्रकाशकों और लेखकों का दायित्व साहित्यकारों और प्रकाशकों की गोष्ठी में विचार

रविवार ९ दिसम्बर को सेमिनार के कार्यक्रम में अवक.श था। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ ने उस दिन साहित्यकारों और प्रकाशकों की एक संयुक्त गोष्ठी आयोजित की, जिसमें चीनी हमले के कारण राष्ट्र पर आये संकट और संकटकाल में लेखकों एवं प्रकाशकों के कर्तव्य पर विचार हुआ। गोष्ठी की अध्यक्षता कविवर श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने की। डा० बच्चन, डा० माचवे, श्री मन्मथनाथ गुप्त, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क', श्रीमती लक्ष्मीरघुरामय्या और श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने गोष्ठी में अपने विचार प्रकट किये।

विचारणीय विषय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने कहा कि लेखकों का कर्तव्य स्पष्ट है। राष्ट्रीय आपत्काल में उन्हें ऐसा साहित्य सृजन करना है, जो प्रेरणाप्रद हो और संकट की घड़ी में, जब जीवन कभी-कभी निराश होकर चारों ओर अंधेरा देखता और दिग्भ्रांत होने लगता है, तब उसे आशा की नयी किरणें दिखाये, जीवन का सत्य एवं शाश्वत पथ आलोकित करे।

हिंसा और अहिंसा

इसमें संदेह नहीं कि भारतीय लेखक नयी जिम्मेदारियों को उठाने और अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को निभाने के लिए पूरी तरह से सजग और सचेष्ट हैं। लेकिन, जो गम्भीर और प्रबुद्धचेता हैं उनके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि वे अहिंसा, शांति और मानव-प्रेम के जिन मूल्यों को जीवन में शाश्वत सत्य मानकर चल रहे थे, क्या अब उन्हें त्यागना होगा? जीवन के अब तक मान्य इन स्थायी मूल्यों में अब यदि कोई फेर-बदल करनी पड़े अथवा उनमें तब्दीली करके हिंसा को अपनाना पड़े, तो मन में सकल्प-विकल्प होना स्वाभाविक है। यह सवाल ऐसा है, जिसे टाला नहीं जा सकता। लेकिन, लेखक के सामने यह बात भी स्पष्ट होनी जरूरी है कि उसे अपने तात्कालिक कर्तव्य का निर्वाह करना होगा।

पुस्तकों की खरीद में कटौती की चिंता

प्रकाशकों की समस्या यह है कि उन्हें पहले ही सरकारी माध्यमों का सहारा लेना पड़ता था। लेकिन, अब वे माध्यम या तो कमजोर होते जा रहे हैं या पहले जितने समर्थ नहीं। क्योंकि राष्ट्र पर आये संकट को देखते हुए सरकार पुस्तकों की खरीद में कुछ न कुछ कमी या कटौती करेगी। समय की माँग यह है कि नये साहित्य का सृजन हो। प्रकाशक समयोचित और प्रेरणादायक साहित्य ही छापें और उसे स्वयं लेकर ग्राम पाठक के सामने पहुँचें। यह स्थिति प्रकाशकों से महान त्याग और साहस का परिचय देने की अपेक्षा करती है।

चीनी इरादे

गोष्ठी में अपने विचार प्रकट करते हुए डा० प्रभाकर माचवे ने कहा—मैंने चीनी इतिहास और साहित्य का नये सिरे से अध्ययन किया। मुझे लगा कि चीनी जीवन और दर्शन को समझने में हमने विवेक से कम और भावावेश से अधिक काम लिया। चीनियों के इरादे बहुत पहले से ही प्रकट होने लगे थे। चीनी साहित्य का दुबारा अध्ययन करते समय मुझे एक कविता देखने को मिली, जिसका भाव था—"हमारा लाल झण्डा पंजाब में जाकर गड़ना चाहिए।" और लोग क्या करते हैं, यह तो वे जानें, किन्तु मैंने चीनियों के इरादों को प्रकट करने वाले लेख लिखना आरम्भ किया है।

नये दर्शन की जरूरत

श्री मन्मथनाथ गुप्त ने कहा—देश को नये दर्शन की जरूरत है। अहिंसा कायरों के लिए नहीं। वह वीरों का भूषण है। गीता की टीका गांधी ने भी लिखी और लोकमान्य तिलक ने भी। आज की स्थिति में कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराने में गांधी जी की टीका की अपेक्षा तिलक

महत्वपूर्ण प्रकाशन

बृहत् हिन्दी कोश

सम्पादक श्री कालिकाप्रसाद आदि — लैदर क्लाथ जिल्द २५.००
(तीसरा संस्करण छप रहा है) — चमड़े की जिल्द ३२.००

बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश

सं० डा० हरदेव बाहरी — लैदर क्लाथ जिल्द ३०.००
चमड़े की जिल्द ३७.००

ज्ञान शब्द कोश

सं० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव — लैदर क्लाथ जिल्द १५.००
चमड़े की जिल्द २२.००

हिन्दी साहित्य कोश

सं० डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा आदि — लैदर क्लाथ जिल्द २०.००
चमड़े की जिल्द २७.००

पारिभाषिक शब्द कोश

सं० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव — लैदर क्लाथ जिल्द ४.००
चमड़े की जिल्द ५.५०

काव्यप्रकाश

आचार्य मम्मट कृत : भाष्यकार आचार्य विश्वेश्वरजी १६.००

ध्वन्यालोक

श्री मदानन्द वर्धनाचार्य कृत : भाष्यकार आचार्य विश्वेश्वरजी १२.००

प्रत्येक प्रमुख विक्रेता के पास उपलब्ध

प्रकाशक :

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी-१

की टीका अधिक समर्थ और अधिक व्यावहारिक है।

चीन से हमारी लड़ाई हो रही है। यह लड़ाई उद्देश्यों की है। चीनी जनता से हमारे व्यक्तिगत द्वेष का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

भारत की शक्ति

श्री हरिवंशराय 'बच्चन' के अनुसार चीनी हमले से उत्पन्न संकट ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि भारत के अन्तर में महान शक्ति छिपी है। यह देश परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने में समर्थ है। परिस्थिति के अनुकूल ही आचरण करने की प्रवृत्ति तो पशुजीवन में भी परिलक्षित है।

भारत में अशोक हुए और चाणक्य भी। यदि महाप्रभु चैतन्य आये तो गुरु गोविन्दसिंह भी प्रकट हुए। गांधीजी यदि इस धरती पर घूमे तो लोकमान्य तिलक का भी यहीं आविर्भाव हुआ। इन सब को हमने माना। अतः आज हमारे लिए यह कठिन नहीं कि परिस्थितियों के अनुरूप वीरोचित ध्येय अपनायें और उनकी पूर्ति के लिए कृत-संकल्प एवं कार्यरत हों। आज देश के सामने जो संकट आया है, वह हमारे लम्बे इतिहास के पिछले दो हजार वर्षों में अपने ढंग की पहली घटना है। हमारा इतिहास और संस्कृति हमें यह भी सिखा रहा है कि हममें परिस्थितियों के अनुरूप बदल जाने की शक्ति एवं सामर्थ्य है। यह बात भी स्पष्ट है कि अगर हम कर्तव्यपरायण होंगे, तो जियेंगे, अन्यथा मर जायेंगे। देश में अपार क्षमता और सामर्थ्य है। हमें सिर्फ उसको जगाने और तैयार करने के लिए स्वयं जागने और तैयार होने की ज़रूरत है। देश की शक्ति और क्षमता को यदि हमने चैतन्य कर दिया तो यही देश के काम आयेगी, देश की रक्षा करेगी और देश विजयी होगा।

साहित्यकार का दायित्व

श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने महाभारत, चाणक्य, विशाखदत्त, नेपोलियन आदि के उदाहरण देते हुए कर्त्तव्य-परायण होने पर बल दिया।

राजनीति को ढालने और मानव मस्तिष्क को परिस्थिति के अनुकूल आचरण करने को तैयार करने में लेखकों एवं प्रकाशकों का बड़ा हाथ रहा है।

नेपोलियन ने एक ऐसे नाटक के अभिनय का आयोजन कराया था, जिसमें एक ऐतिहासिक घटना को तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया था, जिससे पता चलता था कि उसी ऐतिहासिक घटना की पुनरावृत्ति हो रही है।

जार ने उस नाटक को देखते समय अपनी जो प्रतिक्रिया प्रकट की थी, उसके आधार पर नेपोलियन को इस परिणाम पर पहुँचने में देर न लगी कि जार के मन में क्या है। प्रतिपक्षी के मनोभावों को इस कौशल से जानकर ही नेपोलियन ने अपनी नीति निर्धारित की थी।

देश को आज राजनीतिक साहित्य की ज़रूरत है। लिखने वालों की कमी नहीं। कठिनाई सिर्फ यह रही कि प्रकाशकों ने पहले इस दिशा में पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। पाठकों ने भी उपेक्षा की। अब आशा है कि ऐसी पुस्तकें आयेंगी, जो देश को जागृत करेंगी और लड़ाई एवं राजनीति का समुचित ज्ञान प्रदान करेंगी।

प्रसिद्ध नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने कहा कि राष्ट्र की मौजूदा परिस्थितियों के प्रति लेखक पूरी तरह से जागरूक हैं। कल तक जो एक विचारधारा रखते थे और प्रयोगवादी अथवा दुरूह साहित्य लिखते थे, आज सरल भाषा में जनता को प्रबुद्ध करने वाले साहित्य का सृजन कर रहे हैं। लेखकों ने स्वेच्छा से अपनी कृतियां सैनिकों के लिए उपहारस्वरूप भेजी हैं। इस दिशा में और भी काम हो रहा है।

श्रीमती लक्ष्मी रघुरामय्या ने बताया कि मैंने अपने विदेशी साहित्यकार मित्रों को निजी तौर पर पत्र लिखे हैं और उन्हें चीनी हमले के बारे में तथ्यों तथा भारत के राजनीतिक रवैये की जानकारी करायी है। प्रत्येक लेखक इस तरह अपने विदेशी मित्रों को पत्रव्यवहार द्वारा चीनी हमले की सचाई से अवगत करा सकता है।

ज्वालामुख

कविवर श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' जब गोष्ठी में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे, तब ऐसा प्रतीत हुआ मानो ज्वालामुखी से लावा बरस रहा हो।

दिनकरजी ने कहा—यह हिन्दी-प्रकाशन का दुर्भाग्य

है कि उसे सरकारी खरीद पर आश्रित होने की आदत पड़ी। तानाशाही ने ऐसे साहित्यकारों को जन्म दिया, जो चीन में चैन की वंशी बजाते और रूस में नाचते-गाते हैं। कारण स्पष्ट है। ये साहित्यकार सरकार के हाथों बिके हुए हैं। लेकिन, भारतीय साहित्यकार स्वाधीन-चेता है।

आज जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं, उनके कारण देश जाग गया है। देश का इस तरह से जाग जाना स्वत: इस बात का सबूत है कि युग बदल रहा है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में हमें अपने जीवन-दर्शन का पुनर्मूल्यांकन करना होगा।

परिस्थितियां कुछ इस तेजी से और इस तरह बदली हैं कि लगता है कि बुद्ध, अशोक और गांधी अब रक्षक नहीं रक्षणीय हैं।

जो लोग देश की असीम क्षमताओं का उल्लेख करते है, उनसे मुझे सिर्फ यह पूछना है कि हमारे देश में पिछले एक हज़ार वर्ष में केवल चार वीर ही क्यों हुए—महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गोविन्दसिंह और लक्ष्मीबाई। क्या यह देश के सतत जीवंत रहने का लक्षण है?

इस सदी के पूर्वार्ध में, जब तिलक ने प्रवृत्ति की शिक्षा दी और देश ने उसे अपनाया, तब उसे आजादी मिली। आज जब देश की आजादी के लिए खतरा बढ़ रहा है, तब निवृत्ति का दर्शन किस काम का!

यदि हमें त्याग का दर्शन ही अपनाना अभीष्ट है, तो इस क्षेत्र में पहला त्याग हमें यह करना चाहिए कि अब यह नारा त्याग दिया जाय कि दुनिया को उपदेश देने के लिए एक हमीं बचे हैं, हमीं जगद्गुरु हैं। अगर हमें ज़िन्दा रहना है, तो यह सीखना होगा कि जीवन स्वयं एक पशु-धर्म है।

हमारा सबसे बड़ा दोष अथवा कमज़ोरी यह रही कि अन्तर्राष्ट्रीयता के फेर में पड़कर हमने राष्ट्रीयता का त्याग कर दिया। देवता बनने की फिक्र मे हम मनुष्यता से भी गये।

अगर हम ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें समझना होगा कि देवता और पशु के मिलन का ही नाम मनुष्य है।

प्रकाशक और लेखक-२

श्री बाल कृष्ण, एम. ए.

हमने अपने लेख के पहले भाग में "प्रकाशक और लेखक के सम्बन्ध का स्वरूप क्या है" —इस विषय की चर्चा की थी। हमने उसमें यह प्रतिपादित किया कि जहाँ तक किसी लेखक की किसी कृति के प्रकाशन का प्रश्न है, प्रकाशक और लेखक के सम्बन्ध "दुकान और ग्राहक" वाले सम्बन्ध नहीं हैं; अथवा उनके आपसी सम्बन्धों का उपरोक्त आधार नहीं होना चाहिए। "दोनों के सम्बन्ध का स्वरूप क्या है" —इस प्रश्न पर विचार करने की वह नकारात्मक रीति थी। दूसरे शब्दों में, हमने लेख के प्रथम भाग में यह विचार किया था कि प्रकाशक और लेखक का सम्बन्ध किस प्रकार का नहीं होना चाहिए। लेख के प्रस्तुत भाग में हम इस प्रश्न पर इस पहलू से विचार करेंगे कि उनके सम्बन्ध का आधार क्या होना चाहिए।

प्रकाशक और लेखक के सम्बन्ध का स्वरूप और आधार क्या होना चाहिए—इस प्रश्न पर विचार करने से पहले यह आवश्यक है कि हम पहले यह समझ लें कि प्रकाशक के व्यवसाय का स्वरूप क्या है। फिर हम यह विचार करेंगे कि प्रकाशक के व्यवसाय में लेखक का क्या स्थान है—या क्या स्थान होना चाहिए। इन दोनों प्रश्नों को स्पष्ट रूप से समझने के बाद हम आसानी से दोनों के सम्बन्ध के स्वरूप एवं आधार को समझ सकेंगे।

व्यवसाय-जगत् के दो मुख्य अंग हैं—एक उत्पादक और दूसरा विक्रेता। उत्पादकों के भी दो वर्ग हैं। एक वे जो कच्चे माल का उत्पादन करते हैं और दूसरे वे जो कच्चा माला लेकर उससे कोई चीज़ तैयार करते हैं। कृषि का व्यवसाय जिन पदार्थों को उत्पन्न करता है उनमें से कुछ "कच्चे माल' के रूप में होते हैं और कुछ "तैयार माल" के रूप में। सब प्रकार के अन्न सीधे रूप में एक तरह से तैयार माल हैं—उपभोक्ता उसी रूप में उनका उपभोग कर सकता है। किंतु कृषक के द्वारा उपजाई हुई कुछ चीज़ें "कच्चा माल" भी हैं। अर्थात् वे प्रायः सीधी उपभोग के योग्य नहीं होतीं, वरन् उनसे कुछ अन्य ऐसी वस्तुएं तैयार की जाती हैं जिनका उपभोग किया जा सकता है। कपास सीधे तौर पर बहुत काम आने वाला पदार्थ नहीं है। उससे औद्योगिक प्रक्रिया के द्वारा कपड़ा तैयार किया जाता है, तब वह उपभोग्य वस्तु बनता है। तेल निकालने वाले बीजों की भी यही स्थिति है। जब सरसों, अलसी, तिल आदि से तेल निकालते हैं तभी उनका हो पाता है। गन्ने के लिए भी काफी हद तक यही बात कह सकते हैं। ये हमने केवल कुछ उदाहरण दिये हैं—इनके अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है।

जहाँ बहुत से पदार्थ मनुष्य अपने परिश्रम और उद्योग से पैदा करता है वहाँ अन्य बहुत से पदार्थ प्रकृति ने उसके लिए पहले से ही तैयार करके रक्खे हुए हैं, या वह उन्हें निरंतर तैयार करती रहती है। मनुष्य के सामने इतना ही काम रहता है कि वह उन पदार्थों को प्रकृति के आंचल से प्राप्त करले। खनिज पदार्थ—धातुएँ, तेल आदि—जंगली वस्तुएँ तथा समुद्रों आदि से प्राप्त होने वाले पदार्थ इसी श्रेणी में आते हैं। इन पदार्थों में से भी, पुनः कुछ पदार्थ ज्यों के त्यों काम में आ जाते हैं, किन्तु बहुत से पदार्थों को उपभोग्य बनाने के लिए किसी-न-किसी औद्योगिक प्रक्रिया में से निकालना पड़ता है।

मूल उत्पादन व्यवसाय के बाद औद्योगिक व्यवसाय का नम्बर आता है। मनुष्य द्वारा उत्पन्न किए गए पदार्थ अथवा मनुष्य के प्रयास के बिना प्रकृति द्वारा स्वयं उत्पन्न किये गए पदार्थ—कुछ तो मूल रूप से स्वतः उपभोग के काम में आ जाते हैं, किन्तु शेष पदार्थों को "तैयार माल" का रूप देना पड़ता है—तभी वे मनुष्य जाति द्वारा उपभोग करने योग्य बनते हैं। उद्योगपति या 'कारीगर' लकड़ी लेकर फर्नीचर, चौखट, चारपाई, ठेला, रेल का डब्बा आदि बनाता है। सोना-चाँदी लेकर उसके सिक्के ढालता है या आभूषण बनाता है; लोहा लेकर उसके औजार बनाता है, मशीनें बनाता है। वन्य जड़ी-बूटियाँ, फल-फूल, धातु आदि लेकर औषधियाँ तैयार करता है। रबर के पेड़ से

दूध निकालकर, उससे रबर तैयार करके उससे मोटरों, साइकिलों के पहिये तथा अन्य सैंकड़ों चीज़ें तैयार करता है; कपास से कपड़े, चादर, लिहाफ, तकिये तथा नावों के पाल आदि बनाता है। खाद्य-पदार्थ लेकर उनसे सैंकड़ों अन्य खाद्य-पदार्थ तैयार करता है। मांस-मछली को डिब्बों में भरकर सुरक्षित रूप में भविष्य में काम आने के लिए रखता है—अर्थात् कच्चे माल से वह मनुष्य के उपभोग में आने योग्य सैंकड़ों-हजारों वस्तुएँ तैयार करता है। यह सब काम औद्योगिक व्यवसाय करते हैं।

मूल उत्पादक तथा उद्योगों के बीच और कच्चे अथवा तैयार माल के उपभोक्ताओं के बीच की कड़ी है—व्यापारी वर्ग। वह सीधी उपभोग में आने वाली वस्तुओं को उत्पादक से खरीद कर उपभोक्ता तक पहुँचाता है, अथवा अन्य (कच्चे) पदार्थों को उद्योग संस्थानों एवं कारीगरों तक पहुँचता है और इनके द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को पुनः उपभोक्ता के लिए उपलब्ध करता है।

उत्पादकों, निर्माताओं और वितरकों की इस विशाल व्यवस्था में प्रकाशक का स्थान किस जगह है? क्या वह कृषक की भाँति अपने प्रयत्न से किसी पदार्थ का उत्पादन करता है? या वह किसी खान या तेल के कुएँ के मालिक की भाँति किसी प्राकृतिक पदार्थ को प्रकृति के आंचल से उपलब्ध करता है? या किसी कपड़े, काग़ज़, लोहा, सीमेंट या रबर के कारखाने के मालिक की भाँति कोई कच्चा माल लेकर उससे कोई वस्तु तैयार करता है? या वह कच्चे अथवा तैयार माल को उत्पादक से खरीद कर उपभोक्ता तक पहुँचाता है, अथवा औद्योगिक निर्माता को बेचता है और तैयार माल को निर्माता से खरीद कर उपभोक्ता के लिए उपलब्ध करता है?

व्यवसाय-जगत् के दो सामान्य भागों—व्यापार और उद्योग अथवा उत्पादक व निर्माता और वितरक की जो सर्वमान्य परिभाषा है वह प्रकाशक के व्यवसाय पर लागू नहीं होती। दूसरे शब्दों में प्रकाशकों की कार्य-शैली और कार्य-परिधि ठीक वैसी ही नहीं है जैसी सामान्य व्यापारों तथा उद्योगों की होती है। वास्तव में देखा जाए तो प्रकाशन-व्यवसाय अपने आप में एक अलग श्रेणी है। हम यहाँ प्रकाशन-व्यवसाय को पुस्तक विक्रय के व्यापार से नितान्त अलग मानकर चल रहे हैं। पुस्तक-विक्रेताओं का व्यापार अन्य सामान्य वितरकों के व्यापार की श्रेणी में ही आता है—सीमेंट या पैट्रोल या काग़ज के विक्रेता की भाँति वह किसी से माल लेता है और उसे खरीदार (अर्थात् उपभोक्ता) के हाथ बेच देता है। यह सही है कि अभी चूंकि हमारे देश में पुस्तकों की वितरण-व्यवस्था अर्थात् पुस्तक-विक्रय का व्यापार व्यापक रूप धारण नहीं कर सका है, इसलिए अधिकांश प्रकाशकों को स्वयं पुस्तक-विक्रेता बनना पड़ रहा है। किन्तु हमारी मान्यता है कि ये दोनों भिन्न व्यवसाय हैं—चाहे हैं अन्योन्याश्रित। हम उस समय की कल्पना को निराधार नहीं मानते जब भारत के गाँवों और नगरों में पुस्तकों की उसी भाँति दुकानें होंगी जैसी अनाज या कपड़े की या जनरल-मर्चेंटों की दुकानें होती हैं। यह बात स्पष्ट है कि पुस्तकों के वितरण का यह विशाल व्यापार तभी सम्भव होगा जब उत्पादक अथवा निर्माता तथा उपभोक्ता के बीच हजारों-लाखों पुस्तक-विक्रेता कड़ी का काम करेंगे।

उपरोक्त पंक्तियाँ लिखने में हम अपने मूल विषय से हट गए हैं। किन्तु हमें इनका लिखना आवश्यक प्रतीत हुआ, इसलिए विषयान्तर करने की धृष्टता की। अस्तु, हम मूल बात की ओर लौटते हैं। हम कह यह रहे थे कि सामान्य व्यापार का क्षेत्र माल का वितरण करना है—इसलिए सामान्य व्यापार की परिधि में पुस्तक-विक्रय की लाइन का समावेश तो हो जाता है, किन्तु प्रकाशन-व्यवसाय का नहीं।

तो क्या प्रकाशक उसी ढंग से किसी वस्तु का उत्पादन करता है जिस रूप में कृषक अन्न का उत्पादन करता है या किसी खान का मालिक खान में से लोहा, सोना, तांबा आदि निकालता है? इस प्रश्न का उत्तर भी स्पष्ट रूप से नकारात्मक है।

व्यापार उद्योग-जगत् के त्रिकोण का तीसरा भुज-दंड रह जाता है औद्योगिक क्षेत्र। किसी भी उद्योग में कच्चा माल लेकर उससे किसी अन्य वस्तु का निर्माण किया जाता है—कपास से कपड़े का, चूना-पत्थर से सीमेंट का, घास या पेड़ों से काग़ज का, लोहे से लोहे के सामान का, लकड़ी से फर्नीचर का, इत्यादि। तो क्या प्रकाशक

का व्यवसाय उद्योगों की परिधि में आता है ? क्या वह भी कोई कच्चा माल लेकर उससे किसी 'तैयार वस्तु' का निर्माण करता है ? कच्चे माल का उत्पादक, तैयार वस्तु का निर्माता तथा कच्चे या पक्के माल का वितरक—इन तीनों क्षेत्रों में से किसी क्षेत्र में यदि प्रकाशन-व्यवसाय को रक्खा जा सकता है तो वह औद्योगिक क्षेत्र है । किन्तु यदि प्रकाशन-व्यवसाय को एक उद्योग के रूप में मान भी लिया जाय तो भी इस उद्योग में और सामान्य उद्योगों में एक बहुत बड़ा अन्तर है । और इसी अन्तर के कारण हम यह प्रमेय प्रतिपादित कर रहे हैं कि प्रकाशन-व्यवसाय की अपने आप में एक अलग श्रेणी है—उसे पूर्णरूपेण किसी अन्य सामान्य व्यवसाय, किसी व्यापार अथवा उद्योग की श्रेणी में हम नहीं रख सकते ।

साधारण उद्योगों और प्रकाशन-उद्योग में क्या अन्तर है ? प्रकाशन-उद्योग, इस प्रकार का उद्योग नहीं है कि प्रकाशक ने 'कच्चा माल' खरीदा, उसे किसी यांत्रिक क्रिया में से निकाला और फलतः उससे किसी तैयार माल का निर्माण कर दिया । इस उद्योग में यदि कोई कच्चा माल प्रयुक्त होता है तो कागज़ की गणना हम इस श्रेणी में कर सकते हैं । किन्तु कागज़ को किसी यांत्रिक क्रिया में से निकालने-भर से इस उद्योग की तैयार वस्तु (पुस्तक) का निर्माण नहीं हो जाता । कागज़ तो पुस्तक का रूप तभी धारण करता है जब उस पर 'मैटर' छापा जाए । और यह 'मैटर' किसी उद्योग में प्रयुक्त होने वाला कोई 'कच्चा माल' नहीं होता, वरन् वह किसी लेखक की रचना होती है, जो स्वयं, अपने आप में, 'तैयार माल' होता है । दूसरे शब्दों में जहाँ सामान्य उद्योगों में किसी कच्चे माल को लेकर उससे किसी वस्तु का—तैयार माल का—निर्माण किया जाता है, वहाँ प्रकाशन-उद्योग में एक ऐसी वस्तु से निर्माण-कार्य आरम्भ किया जाता है जो अपने आप में एक तैयार वस्तु है । इसी आधार पर हम प्रकाशन-व्यवसाय को एक ऐसा उद्योग मानते हैं जिसकी अपने आप में एक अलग श्रेणी है ।

जैसा कि हमने ऊपर कहा, प्रकाशक की गतिविधि अथवा कार्य किसी अन्य व्यक्ति की रचना एवं कृति पर आधारित होता है और वह रचना अपने आप में एक पूर्ण निर्मित वस्तु होती है । इसी बात में से हमारे इस प्रश्न का कि—"प्रकाशक और लेखक के सम्बन्ध का स्वरूप क्या है ?" उत्तर निकल आता है । सीधे शब्दों में वह उत्तर यह है कि प्रकाशक और लेखक प्रकाशन-व्यवसाय में परस्पर सहयोगी हैं । इसीलिए हमने अपने लेख के प्रथम भाग में यह प्रतिपादित किया था कि उनका सम्बन्ध यह नहीं है कि एक व्यक्ति ने दूसरे से एक चीज़ खरीद ली और तीसरे को बेच दी । इसीलिए हम यह मानते हैं कि दोनों के बीच आर्थिक व्यवस्था का रूप "वस्तु के क्रय-विक्रय" का न होकर वस्तु के "विक्रय-मूल्य का बंटवारा" होना चाहिए—और अधिकांश रूप में होता भी ऐसा ही है । जबकि विक्रय-मूल्य में प्रकाशक के अंश का कोई विशेष नाम नहीं रक्खा गया है (सामान्य व्यवसायों की भाँति उस अंश को प्रकाशक का "लाभ" मान लिया गया है), लेखक के अंश को एक विशेष नाम दे दिया गया है । इसे 'रॉयल्टी' के नाम से पुकारा जाता है ।

कई वर्ष हुए, नई दिल्ली में भारतीय प्रकाशकों की एक सभा का उद्घाटन करते हुए पं० जवाहरलाल नेहरू ने प्रकाशकों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि आखिर आप लोग लेखक की चीज़ ही तो बेचते हैं, इसलिये आप का कर्तव्य है कि आप लेखक को उसका उचित भाग दें । हम पंडित जी की बात के दूसरे भाग का पूर्णतया अनुमोदन करते हुए भी पहले भाग से पूर्णतया सहमत नहीं हैं । यह बात पूर्णतया सत्य नहीं है कि प्रकाशक लेखक की ही चीज़ बेचता है । ये शब्द वहाँ प्रयुक्त किये जा सकते है जहाँ दुकानदार दूसरे के माल को कमीशन लेकर बेचता हो । जहाँ एक ओर यह स्थिति ग़लत है कि प्रकाशक पुस्तक का मालिक बनकर उसे ग्राहकों के हाथ बेचे, वहाँ, दूसरी ओर यह स्थिति मान लेनी भी उतनी ही ग़लत है कि प्रकाशक केवल दूसरे की चीज़ बेचता है । यह ठीक है कि लेखक को कानून और परम्परा, दोनों, उसकी रचना पर स्वत्वाधिकार प्रदान करते हैं (और हम उसके इस अधिकार की पूर्ण रक्षा करने के पक्ष में हैं), और इस स्वत्वाधिकार के कारण, ऐसा लगने लगता है कि नेहरूजी की यह बात ठीक है कि प्रकाशक केवल लेखक की

चीज़ ही तो बेचता है। किन्तु वास्तव में प्रकाशक केवल-मात्र कोई कमीशन-एजेंट नहीं है जो किसी के माल को विशेष लाभांश पर बेचता हो। जब हम लेखक को पुस्तक के प्रकाशन के लाभ का स्थायी भागीदार मानते हैं (या कह लीजिये कि उतने वर्षों के लिए कि जब तक कापीराइट कानून उसे स्वत्वाधिकार प्रदान करता है), तो प्रकाशक को भी मात्र कमीशन-एजेंट से ऊँचा दर्जा देना होगा। और इस ऊँचे दर्जे का वह क्यों अधिकारी है, इसकी हम आगे चलकर चर्चा करेंगे।

अब तक हमने जो कुछ कहा है उसका सार यह है कि लेखक और प्रकाशक का सम्बन्ध न तो कच्चे माल के उत्पादक और तैयार माल के निर्माता का है और न ही वह माल के मालिक और उसके वितरक का है, वरन् वह सहयोगियों का पारस्परिक सम्बन्ध है। दोनों पुस्तक-उत्पादन के अभियान में एक-दूसरे के सहयोगी हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि दोनों प्रकाशन-व्यवसाय की समस्याओं को सुलझाने के लिए—यदि पूर्णरूप से न सही तो काफ़ी हद तक तो निश्चित रूप से—समान रूप से उत्तरदायी हैं। यद्यपि समस्याओं के कुछ अंश ऐसे हैं जिनसे निपटने की जिम्मेदारी एक की अधिक होती है (या होनी चाहिए), तो दूसरे कुछ ऐसे अंश हैं जिन्हें सुलझाने का भार दूसरे के कंधे पर अधिक होना चाहिए, किन्तु कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि दोनों का कार्य एक-दूसरे के बिना नहीं चल सकता।

उत्पादन की क्या समस्याएँ हैं और दोनों की उन्हें सुलझाने की कितनी-कितनी जिम्मेदारी है, इस विषय पर हम बाद में विचार करेंगे। किन्तु उससे पहले दो अन्य प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है। पहला प्रश्न यह है कि लेखक का लाभांश (अर्थात् रॉयल्टी) क्या होनी चाहिए। और दूसरा प्रश्न यह है कि क्या लेखक को अपनी रचना लेकर सीधे प्रकाशक से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए, या किसी माध्यम की सहायता लेनी चाहिए।

इन समस्याओं पर हम लेख की अगली क़िस्त में प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

—क्रमशः

भारतीय भाषाओं में....

मराठी प्रकाशन-व्यवसाय : इतिहास तथा प्रवृत्तियाँ

श्री म. तु. कुलकर्णी

बुद्धिजीवी होने के कारण चार करोड़ आबादी वाले महाराष्ट्र प्रदेश में प्रकाशन-व्यवसाय बहुत सतर्क योजना-पूर्ण और प्रभावी बना रहा है। परिणामस्वरूप सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक क्रांतियाँ महाराष्ट्र प्रदेश में बहुत जल्द हुईं। यद्यपि आजकल के युग में प्रकाशन-व्यवसाय अन्य व्यवसायों के समान महाराष्ट्र में संगठित, लाभदायी भले ही न हो; परन्तु इस व्यवसाय के कर्ता-धर्ता कर्तव्य-भावना को अपने जीवन में अधिक महत्त्व देकर इस व्यवसाय में सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से ही क्यों न हो, अपने को सफल व्यावसायिक मानते हैं। केवल आर्थिक दृष्टि से विचार करने पर भी यह व्यवसाय समाज, राजनीति, अर्थनीति के साथ-साथ निश्चय ही लाभदायी बना है।

तर्क और विश्वास से काम लेने की प्रवृत्ति मराठी प्रकाशन-व्यवसाय में अधिक पायी जाती है। क्योंकि इस व्यवसाय में सामाजिक रुचि, लेखक की पात्रता, प्रकाशित पुस्तकों का वितरण, इन बातों की ओर प्रकाशक विशेष ध्यान देते हैं। इसीलिये महाराष्ट्रीय प्रकाशकों ने अपने कार्यक्षेत्र के मुख्य रूप से दो विभाग किये हैं।

१. एक विभाग पुस्तकों की छपाई का है। जिसके अन्तर्गत मुद्रण, चित्र और उनके ब्लाक, जिल्दसाजी और लेखक ये पाँच अंग हैं। इस विभाग से पुस्तक के सुन्दर बनवाने की ओर प्रकाशक विशेष ध्यान देते हैं। इस विभाग का नियंत्रण संगठित रूप में भले ही न होता हो परन्तु इस विभाग को मराठी प्रकाशक विशेष महत्त्व देते हैं। परिणामस्वरूप इस विभाग का मूल्यांकन अन्य प्रांतों से बढ़ा-चढ़ा बना है। मामूली तौर पर एक फर्मे का मूल्य दो आने से लेकर चार आने तक रखा जाता है। पुस्तक का लेखन नापा-जोखा जाता है। पुस्तक की अंदरूनी और बाहरी सजावट भी सुन्दर बनायी जाती है। लेखकों का संगठन "मराठी साहित्य परिषद" के द्वारा होता है। छापने वालों का नियंत्रण 'मुद्रण प्रकाश' नामक संस्था के द्वारा होता है। चित्रकार, ब्लाकमेकर और जिल्दसाजों का भी अपना-अपना संगठन है। परन्तु मोल-तोल और पुस्तक के सौंदर्य के अतिरिक्त ये संगठन कुछ प्रभावी कार्य नहीं कर पाते।

सन् १८३० से लेकर सन् १९६० तक मराठी की लगभग चालीस हज़ार पुस्तकें छप चुकी हैं। प्रकाशन कला या व्यवसाय का आगमन महाराष्ट्र में सन् १८१० में हुआ। सबसे पहले यह व्यवसाय, अपना निजी छापाखाना शुरू कर, गणपत कृष्णाजी ने बम्बई में प्रारम्भ किया। उन दिनों केवल धार्मिक पुस्तकों का ही चलन रहा। प्रभाकर श्रीपत भसे बम्बई ने पौराणिक कथा-उपन्यासों को जन्म दिया और उन्हीं दिनों पूना के बलवन्त गणेश दामोलकर ने पौराणिक एवं वैदिक ग्रन्थों के भाष्य को प्रकाशित करना शुरू किया। यह अवस्था सन् १९१० तक रही। इस काल-खंड में कथा, उपन्यास के साथ-साथ नाटक और इतिहास ग्रन्थ भी छापे गये। जब महाराष्ट्र ने अंग्रेजी रीति-नीति को पहचान लिया तब जागृति के हेतु बड़े परिमाणों में छापेखाने स्थापित हुए और प्रकाशन भी होने लगे। निर्णय सागर प्रेस और इंदू प्रकाश छापाखाना बम्बई में स्थापित हुए और चित्रशाला, ज्ञान प्रकाश, केसरी, तथा मराठा प्रेस पूना में बने। इन्हीं दिनों जन-जागृति के लिए धड़ल्ले से लेख, पुस्तकें तथा मासिक पत्रिकायें छपने लगीं। महात्मा तिलक, आगरकर, विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, हरीभाऊ आप्टे आदि लेखक, राजनीति, समाजसुधार, शास्त्रीय और ललित साहित्य में भरसक योग देने लगे। आज महाराष्ट्र में ५० प्रमुख प्रकाशन संस्थाएँ काम करती हैं। जिनकी ओर से कुल मिलाकर प्रति वर्ष एक हजार पुस्तकें छपती हैं। प्रकाशन-व्यवसाय के लिए लगभग ६०० छापाखाने चलते हैं। मराठी में

१५० मासिक पत्रिकायें साहित्य की अर्चना करती हैं। प्रमुख प्रकाशन संस्थाएँ ये हैं—

(१) चित्रशाला प्रेस, (२) अनाथ विद्यार्थी गृह, (३) वीनस प्रकाशन, (४) देशमुख आणि कम्पनी, (५) कॉन्टिनेंटल बुक सर्विस, (६) जोशी लोखंडे—पूना, (७) पाप्युलर बुक डिपो, (८) केशव भिकाजी ढवले, (९) मैजिस्टिक बुक डिपो, (१०) मौज प्रकाशन—बम्बई, (११) महाराष्ट्र ग्रन्थ भाण्डार—कोल्हापुर, (१२) नव-भारत ग्रन्थमाला—नागपुर, (१३) जोशीव दर्स औरंगाबाद।

२. प्रकाशन-व्यवसाय का दूसरा प्रमुख अंग वितरण का है। मुद्रण, प्रकाशन, लेखन और जिल्दसाजी की संस्थाएँ जिस प्रकार स्थानीय और स्वतन्त्र रूप में संगठित हैं उसी प्रकार पुस्तक-विक्रेता और वाचनालय का संगठन भी स्थानीय और स्वतन्त्र रूप में है। पुस्तक-विक्रेता या वाचनालय उन्हीं पुस्तकों को खरीदते हैं जो जीवनोपयोगी हैं। यद्यपि महाराष्ट्र में १५०० वाचनालय हैं पर इनमें २००, २५० वाचनालय ही कार्यक्षम हैं। पुस्तक-विक्रेता यद्यपि ५०० हैं परन्तु इनमें प्रमुख ५० हैं। यह सत्य है कि अन्य प्रान्तों के समान सरकार की ओर से वाचनालयों का संगटन महाराष्ट्र में भी हुआ है, परन्तु स्थानीय कार्यकर्ता इन वाचनालयों के प्रति विशेष रुचि नहीं दिखाते। महाराष्ट्र में २६ प्रतिशत लोग साक्षर हैं और ज्ञान-विज्ञान संपन्न पुस्तक की अधिक से अधिक प्रतियाँ ३०००, (तीन हजार) तक बेची जाती हैं। महाराष्ट्र के प्रमुख पुस्तक विक्रेता :

पूना—नवीन किताबखाना, गोडबोले आणि मंडली।

बम्बई—बलवन्त पुस्तक भाण्डार, महाराष्ट्र ग्रन्थ भाण्डार। यूँ तो प्रत्येक जिले के केन्द्र में पुस्तकों की २-२, ३-३ दूकानें हैं परन्तु तालुका केन्द्र में अभी तक पुस्तक-व्यवसाय पर जीविका नहीं चलती है। पुस्तक वितरक का व्यवसाय करके अपनी जीविका चलाना महाराष्ट्र में अब तक सुलभ नहीं बन पाया है। महाराष्ट्र में इस व्यवसाय को स्थायी रूप देने में विशेष कर पूना, बम्बई, नागपुर और औरंगाबाद ही अधिक उपयुक्त सिद्ध हुए हैं।

महाराष्ट्र में प्रारम्भ से ही हिन्दी का प्रचार काफी परिमाण में होता रहा है। राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, पूना

स्वयं हिन्दी प्रकाशन का व्यवसाय करती है। बम्बई में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर अनेक वर्षों से हिन्दी प्रकाशन का व्यवसाय करता है। अरगडे आणि मंडली, हिंदी माता पुस्तक मंदिर, पुना; ये पुस्तक-विक्री-केन्द्र अधिकतर हिंदी पुस्तकों के वितरण का ही काम करते हैं। महाराष्ट्र राष्ट्र-भाषा सभा की तो अपनी निजी दूकान भी है। सर्व-साधारण रीति से सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेता हिन्दी की विशेष पुस्तकों का लेन-देन करते हैं। हिंदी लेखन के साथ-साथ थोड़ा-बहुत प्रकाशन भी महाराष्ट्र में होता है।

वाङ्मयीय सभी प्रकार की प्रवृत्तियों का प्रकाशन-व्यवसाय महाराष्ट्र में होता है। यद्यपि इतिहास को खोजने का कार्य महाराष्ट्र में इतिहास संशोधक मंडल करता है परन्तु साथ-साथ ऐतिहासिक पुस्तकों को भी वह छापता है। यहाँ के सभी प्रकाशक सभी विषयों की पुस्तकें छापते हैं। अतः बाल, स्त्री और उद्यम आदि खास किसी एक प्रकाशन-व्यवसाय को पूर्णरूप से कोई भी प्रकाशक नहीं चलाता है। तुलना के साथ-साथ विश्लेषण की ओर प्रकाशकों की रुचि महाराष्ट्र के प्रकाशकों में अधिक पायी जाती है। महाराष्ट्रीय प्रकाशन-व्यवसाय नियमित, सचाई से सुन्दर एवं प्रभावी बना है। सरकार के द्वारा विशेष रूप से शास्त्रीय ग्रन्थों को जो पुरस्कार मिलता है वह लेखक ही पाते हैं। अगर थोड़े में कहना हो तो क्रमिक पुस्तकों के बल पर ही प्रकाशन-व्यवसाय चलता है। स्वतन्त्र रूप से प्रकाशन-व्यवसाय से धन कमाने की इच्छा कोई भी प्रकाशक नहीं करता है। फिर भी जन-जागृति में प्रकाशन-व्यवसाय श्रेष्ठ सिद्ध हुआ है। महाराष्ट्र के प्रकाशक अपने को विचार-परिवर्तन का अग्रदूत मानते हैं। इसीलिए वाङ्मयीय या शास्त्रीय और संदर्भ ग्रन्थों के प्रकाशन पक्ष होते हैं। अगर प्रकाशन व्यवसाय का प्रत्येक घटक यहाँ संगठित होकर प्रभावी कार्य करेगा तो बहुत जल्द महाराष्ट्र की जनता ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अग्रसर होगी। जनता को निर्भय, निःशंक धैर्यशाली, चरित्र-प्रधान प्रकाशन-संस्थाएँ ही कर सकती हैं यह विश्वास महाराष्ट्र की जनता अब कर चुकी है। इसीलिए अल्प ही क्यों न हो प्रकाशन संस्थाओं के द्वारा प्रकाशित होने वाली हर पुस्तक को खरीदने वाले ग्राहक महाराष्ट्र में बढ़ रहे हैं।

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

(१) निबन्ध-भारती —सिंहासन राय 'सिद्धेश' (सजिल्द पुस्तक) मूल्य ३)

दिनकरजी के विचार—'निबन्ध-भारती' छात्रोपयोगी निबन्धों की मौलिक पुस्तक है। निबन्धों के विषय काफी विस्तृत और वैविध्यपूर्ण हैं। भाषा शुद्ध और टकसाली है। वाक्य सुस्पष्ट और विचारपूर्ण हैं।

(२) वाद विवाद और व्याख्यान प्रवेशिका —तिवारी और सिद्धेश, मूल्य ३·५०

वाद-विवाद करने और व्याख्यान की तैयारी के लिए इस पुस्तक को अवश्य देखिए और पढ़िए। व्याख्यान के विषय—(१) तुलसी पर—तुलसी जयन्ती के अवसर पर बोलने के लिए (२) स्वतंत्रता दिवस—१५ अगस्त के अवसर पर बोलने के लिए। (३) भगवान श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के अवसर पर बोलने के लिए। (४) गांधीजी—गांधी जयन्ती के अवसर पर बोलने के लिए। इसी प्रकार सुर जयन्ती, मीरा जयन्ती, कबीर जयन्ती, प्रेमचन्द-निधन-दिवस, २६ जनवरी आदि विषयों पर सुललित व्याख्यान ओजपूर्ण भाषा में लिखे गये हैं।

(३) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—सिंहासन राय 'सिद्धेश', मूल्य ३·०० । हिन्दी के कवियों और गद्य-लेखकों का सुन्दर साहित्यिक परिचय प्राप्त करने के लिए इसे अवश्य पढ़ें।

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए० (कामर्स) मूल्य ५)

इण्टर और बी० काम० के छात्रों के लिए अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक, व्यापारिक निबन्ध, अंग्रेजी-हिन्दी शब्दों की तालिका के साथ सजिल्द। यह बी०काम० के छात्रों के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक है।

(५) प्रबन्ध-पराग—आचार्य बैजनाथ राय एम० ए०, ५२० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक, मूल्य ५) मात्र।

उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और साहित्यिक निबन्धों के साथ।

(६) नागरिकता तथा भारतीय शासन—शिवनाथ शर्मा एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, मूल्य ८·००; सन् १९६२ तक के आधुनिकतम तथ्यों से परिपूर्ण यह अपने विषय की बेजोड़ पुस्तक है। तीसरा संस्करण।

(७) समाज का अध्ययन—श्री बलराम चौहान मूल्य ५·५०। समाज-अध्ययन सेकेण्डरी स्कूलों में पाठ्य विषय हो गया है। यह पुस्तक अपने विषय की सर्वोत्तम है—प्रत्येक विद्वान शिक्षा-प्रेमी ऐसा ही कहते हैं।

(८) हमारा सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास—श्री बलराम चौहान एम० ए०, मूल्य १०·००।

पुस्तकालयों के लिए यह एक शोभा और गौरव की वस्तु है।

(९) कुँवरसिंह नाटक—श्री कान्त जी, मूल्य २·५०; नाटक खेलने योग्य है। पढ़ना प्रारंभ करने पर छोड़ने को दिल नहीं चाहता।

(१०) बलिदान (उपन्यास) श्री बैजनाथ राय एम० ए०, मूल्य ५·००; इसमें सन् १९४२ के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सजीव चित्र है। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि बलिदान के लेखक को यथार्थ गहराई में पहुँचने में अद्भुत सफलता मिली है।

(११) उच्चतर निबन्ध भारती—श्री 'सिद्धेश' तथा आचार्य मिश्र, मूल्य ४·००। सभी विषयों के निबंधों की यह पुस्तक इण्टर, बी० ए०, विशारद, कोविद, प्रभाकर आदि के छात्रों के लिए है।

(१२) टिमटिमाते दीप — आचार्य राजकिशोर त्रिपाठी, मूल्य ३·५०। इस सरल [illegible] में यथार्थ और आदर्श का सुन्दर समन्वय है। पढ़ना आरम्भ कर यह छोड़ा नहीं जा सकता।

मगध की पद्मिनी—वासुदेव उपाध्याय एम० ए० मूल्य ३.००। अच्छे उपन्यास के सभी गुणों से युक्त यह उपन्यास सहृदय प्रेमी पाठकों के गले का हार हो रहा है।

(१३) संसार की प्राचीन सभ्यताएँ और भारत से उनका सम्बन्ध—राजकिशोर शर्मा एम०ए०, मूल्य ६·००।

इस पुस्तक के लेखक इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान हैं। उन्होंने प्रमाणित कर दिया है कि भारतीय सभ्यता ही संसार की प्राचीनतम सभ्यता है और यहीं से यह सर्वत्र फैली।

(१४) अर्थशास्त्र के मूलतत्व—श्री सच्चिदानन्द मिश्र एम० ए०, मूल्य ८·००। अपने विषय की यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक इण्टर और हायर सेकेण्डरी के छात्रों के लिए नवीनतम आंकड़ों के साथ लिखी गई है।

(१५) सीमारेखा—शिवमूर्ति शिव; मूल्य ३·००।

"क्या आज भी काश्मीर की घाटियों में देश की रक्षा के लिए जूझने वाले प्रेमी नवजवानों का हृदय घाटी पार से उठने वाले प्यार के नए-नए सरगम सुनकर भी प्यार का प्रतिदान देने के लिए उतावला नहीं है?" इस प्रश्न का एक मात्र हल आपको इसी ग्रंथ में मिलेगा।

प्रधान कार्यालय : **आदर्श पुस्तक भंडार** शाखा :

५८, अपरचितपुर रोड, कलकत्ता-७

डी० ५३/८६, लक्सा रोड, गुरुबाग, वाराणसी

संघ समाचार

प्रकाशक संघ के सभापति का चुनाव

सदस्यों से नाम प्रस्तावित करने का अनुरोध

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री ने निम्नलिखित परिपत्र संघ के सदस्यों के नाम भेजा है :

संघ के विधान की धारा ९ के अनुसार आगामी सत्र—१९६३-६४—के लिए सभापति का चुनाव होना है। इस पद के लिए आप जिन सज्जनों के नाम प्रस्तावित करना चाहते हों, उनके नाम, पते सहित, संघ कार्यालय—चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली-६—के पते पर अविलम्ब सूचित करने का अनुग्रह करें।

सदस्यों से वार्षिक चंदा भेजने की माँग

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री का परिपत्र

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री ने निम्नलिखित परिपत्र उन सदस्यों के नाम भेजा है जिनका वार्षिक शुल्क अभी तक नहीं आया :

सन् ६२-६३ सत्र के लिए हमें आपका वार्षिक शुल्क अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। इस सम्बन्ध में हम आपको अपने पत्र दिनांक २८ मई, २८ अगस्त तथा १० अक्तूबर, '६२ द्वारा स्मरण भी करा चुके हैं। इस पत्र द्वारा आपका ध्यान संघ के विधान की धारा ४ : घ : (प्रत्येक वित्तीय वर्ष के समाप्त होने के तीन मास के भीतर जिन सदस्यों का नये वर्ष का शुल्क प्राप्त नहीं होगा, वे स्वयमेव सदस्यता से वंचित समझे जायेंगे) की ओर आकर्षित करते हुए आपसे पुनः अनुरोध है कि आप अपना चन्दा रु० ३०-०० संघ के कार्यालय को मनीआर्डर द्वारा अविलम्ब भिजवा दें।

परिपत्र में यह भी कहा गया है कि संघ का सारा कार्य सदस्यों से प्राप्त होने वाले चन्दे से ही चलता है। उसकी मांग करने में जो व्यय हो जाता है उसका भार संघ को अनावश्यक रूप में उठाना पड़ता है। संघ के सदस्य अपनी संस्था को इस व्यय से बचा सकते हैं।

'हिन्दी प्रकाशक' के लिए विज्ञापन और सामग्री

फरवरी मास से 'हिन्दी प्रकाशक' को महीने की पहली तारीख पर प्रकाशित करने की व्यवस्था हो गई है। अंक में उसी सामग्री का उपयोग हो सकेगा जो २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जायगी। संघ के सम्मानित सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने लेख, विचार, विज्ञापन तथा नये प्रकाशनों की सूचनाएँ आदि इस तिथि तक अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे हिन्दी प्रकाशक' नियत समय पर सेवा में उपस्थित हो जाय।

—प्रधान मंत्री

प्रशिक्षण [Training] साहित्य की नवीनतम कृतियाँ

पुस्तक	लेखक	मूल्य
० भारतीय शिक्षा का इतिहास	बी. पी जौहरी : पी. डी. पाठक	७.००
० भारत में शिक्षा	,,	८.००
० भारतीय शिक्षा की रूपरेखा	,,	५.००
० भारतीय शिक्षा की समस्याएँ	,,	६.००
० शिक्षा मनोविज्ञान	डा० एस. एस. माथुर	१२.५०
० Educational Psychology	Dr. S. S. Mathur	16.00
० शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा	डी. एस. रावत	६.००
० शिक्षा सिद्धान्त	डा० एस. एस. माथुर	६.००
० शिक्षण कला	,,	६.००
० प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	,,	३.००
० विद्यालय : संगठन एवं संचालन	बी. डी. सिंह : भूदेव शास्त्री	६.००
० स्वास्थ्य शिक्षा	जी. पी. शेरी	८.००
० सोवियत जन शिक्षा का स्वरूप	प्रो० नरेन्द्र सिंह चौहान : प्रो० राजेन्द्र पाल सिंह	४.००
० गृह विज्ञान शिक्षण	जी. पी. शेरी	६.००
० हिन्दी भाषा शिक्षण	भाई योगेन्द्र जीत	४.५०
० इतिहास शिक्षण	गुरु सरन दास त्यागी	४.५०
० सामाजिक अध्ययन तथा नागरिक शास्त्र का शिक्षण	,,	४.००
० अर्थशास्त्र शिक्षण	,,	४.००
० भूगोल शिक्षण	एच. एन. सिंह	४.००
० विज्ञान शिक्षण	डी. एस. रावत	४.००
० गणित शिक्षण	एम. एस. रावत : मुकुट बिहारी लाल	४.००
० बुनियादी शिक्षा शास्त्र	राम मोहन तिवारी	४.५०
० बुनियादी शिक्षा सिद्धान्त	बी. डी. शर्मा : राम मोहन तिवारी	२.५०
० बुनियादी पाठन पद्धतियाँ	,,	२.५०
० चर्मकला शिक्षण	मानक चन्द्र गुप्त	१.२५
० राष्ट्रभाषा और हिन्दी	राजेन्द्र मोहन भटनागर	२.००
मनोविज्ञान		
० सामान्य मनोविज्ञान	डा० एस. एस. माथुर	७.००

*** सभी पुस्तकों के नवीन संस्करण**

*** अधिकांश पुस्तकें आगरा एवं अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत**

प्रकाशक :

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

नये प्रकाशन

साहित्य समालोचना

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना : ले. विश्वनाथ लाल 'शैदा'; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. ८·०० । पु. मु. ।

ग्वाल कवि : ले. प्रभुदयाल मीतल; प्र. साहित्य संस्थान डैम्पियर पार्क, मथुरा; सा. क्राँ.-८; पृ. १६४; मू. ३·०० ।

चंद सखी का जीवन और साहित्य : ले. प्रभुदयाल मीतल; प्र. साहित्य संस्थान, डैम्पियर पार्क, मथुरा; सा. डि.-८; पृ. १८६; मू. ५·०० ।

सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव : ले. डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर; हास्पिटल रोड, आगरा; सा. डि-८, पृ. ४७२; मू. १५·०० । अनुसंधान ।

समीक्षा के सिद्धांत : ले. डा. सत्येन्द्र; प्र. भारती भवन, राजा मंडी, आगरा; सा. क्रा-८; पृ. २०४ ।

साहित्य समीक्षा : ले. मुद्राराक्षस; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २६ए, जवाहर नगर, दिल्ली; सा. डि.-८; पृ. २०४; मू. ६.०० । परिभाषाएँ और समस्याएँ ।

स्वतन्त्रता के बाद का सर्वश्रेष्ठ उर्दू साहित्य : सं. कृष्णचंद, फैज़ अहमद फैज़ आदि; प्र. प्रगतिशील प्रकाशन कटरा खुशालराय, किनारी बाजार, दिल्ली; सा. क्रा. मू. १०·०० ।

काव्य

चार खेमें चौंसठ खूंटे : ले. बच्चन; प्र. राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा-८; मू. ३.०० ।

जीवन और जवानी : ले. देवराज 'दिनेश'; प्र. आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा. डि., पृ. १४४; मू. ५.०० ।

तेरे सुर मेरे गीत : ले. भरतव्यास; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. १·०० । पा. बु. ।

पद्मावती : ले. बंगकवि अलाओल; लिप्यन्तरकार, डा. सत्येन्द्रनाथ घोषाल; प्र. क. मु. हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा; सा. रा.-८; पृ. ३००; मू. ७·०० । जायसी की पदमावत के प्राचीन बंगला अनुवाद का लिप्यन्तर ।

संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ : सं. जनार्दन भट्ट एम. ए.; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २६ए, जवाहर नगर, दिल्ली; सा. क्रा-८, पृ. २४०; मू. ४·०० । अनोखे और अनेक विषयों के श्लोकों का टीका सहित संग्रह ।

उपन्यास

अतृप्त : ले. आचार्य 'मग'; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. ४·७५ । पु. मु. ।

अधूरे सपनों का देश : प्रो. दीनानाथ शरण और राजचन्द्र शर्मा किशोर; प्र. संगम प्रकाशन, पटना-४; सा. डि., मू. ३.७५ । 'ग्यारह सपनों का देश' का प्रत्युत्तर ।

आकाश तले धरती पर : ले. उमाशंकर; प्र. उमेश प्रकाशन, दिल्ली; सा. क्रा-८; पृ. १७६; मू. ३·५० । यथार्थ की भूमि पर सामाजिक ।

उजला कफन : ले. रघुवीर शरण मित्र; प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; सा. क्रा-८; पृ. २०४; मू. ४·०० ।

एक आवारे की डायरी : ले. तुर्गनेव; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. १·०० । पा. बु. ।

काका : ले. डा० रांगेय राघव; प्र. आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १८०; मू. ३.०० ।

कावेरी : ले. विश्वम्भर मानव; प्र. किताब महल, प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा. क्रा ; पृ. १८६; मू. ४·०० । नारी व्यक्तित्व का विश्लेषण, रहस्यपूर्ण ।

कुब्जा सुन्दरी : ले. ठाकुर प्रसाद सिंह; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. १·०० । पा. बु. ।

कुलवधू : ले. कमल शुक्ल; प्र. अनुपम प्रकाशन, नई मंडी, मुजफ्फर नगर; सा. क्रा.; पृ. २२८; मू. ४·५० ।

घाट-घाट का पानी : ले. कमल शुक्ल; प्र. अनुपम प्रकाशन, नई मंडी, मुजफ्फर नगर; सा. क्रा.; पृ. २२२; मू. ४·५० ।

ढाल तलवार : ले. रघुवीर शरण मित्र; प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; सा. क्रा.-८; पृ. ३७२; मू. ६·५० ।

देवदास : ले. शरतच ध्याय; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी; मू. २·५० । पु. मु. ।

धूमकेतु : ले. नरेश मेहता; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २६एए जवाहरनगर, दिल्ली; सा. डि.-८; पृ. ४५२; मू. ८·०० । शिल्प, संवेदन और रागबोध की दृष्टि से अभिनव ।

प्यार का देश : ले. कमल शुक्ल; प्र. अनुपम प्रकाशन, नई मंडी, मुजफ्फरनगर; सा. क्रा.; पृ. १२८; मू. ३.०० ।

भूख और तृप्ति : ले. सरस्वती सरन 'कैफ'; प्र. प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. ६·०० । पु. मु. ।

मम्मी बिगड़ेंगी : ले. द्वारकाप्रसाद एम. ए.; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. ५·०० ।

मधुमास के बीते दिन : ले. तुर्गनेव; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. २६१; मू. ५·०० । रूस के अमर उपन्यास का अनुवाद ।

मरने के बाद : ले. ब्रजकिशोर नारायण; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी । मू. १·०० । पा. बु. ।

माँ : ले. वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. १.०० । पा. बु. ।

ये जाने अनजाने : ले. छेदीलाल गुप्त; प्र. राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा.-८; पृ. ११२; मू. २.२५ ।

रंग का पत्ता : ले. अमृता प्रीतम; प्र. राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा.-८; पृ. १४४; मू. ३·०० ।

राजसिंह : बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, मू. १·०० । पा. बु. ।

वन के मन में : ले. योगेन्द्रनाथ सिन्हा; प्र. आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १४०; मू. २·५० ।

हिरना सांवरी : ले. मनहर चौहान; प्र. उमेश प्रकाशन दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. २२४; मू. ४·५० । छत्तीसगढ़ के रंग और दर्द की कहानी ।

हँसता कौन, रोता कौन : ले. यदुनंदन कपूर; प्र. निर्मल साहित्य प्रकाशन, के-१६, नवीन शाहदरा, दिल्ली; सा. क्रा.-८, पृ. १२८; मू, २·५० । अध्यापक समस्या पर आधारित ।

कहानी

एक छोड़ एक : ले. डा. रांगेय राघव; प्र. आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १८०; मू. ३·०० ।

नया सफर : ले. सत्येन्द्र शरत् : प्र. सुषमा निकुंज, एल. २/५४ लाजपत नगर, नई दिल्ली, सा. क्रा. ८; पृ. १३६; मू. ३.०० । लेखक का तीसरा कहानी-संग्रह ।

भरे मेले में : ले. लोचन बख्शी; प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, सा. क्रा.-८; पृ. १२८; मू. २·५० ।

सर्वश्रेष्ठ पंजाबी कहानियाँ : सं. अमृता प्रीतम; प्र. प्रगतिशील प्रकाशन, कटरा खुशालराय, किनारी बाजार, दिल्ली; सा. क्रा.; मू. ४·५० ।

स्वतन्त्रता के बाद की पचीस सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ : सं. कृष्णचंद, अमृता प्रीतम आदि; प्र. प्रगतिशील प्रकाशन, किनारी बाजार, दिल्ली; सा. क्रा.; मू. १०·०० ।

स्वतंत्रता के बाद की सर्वश्रेष्ठ हिन्द कहानियाँ : सं. विजयचंद; प्र. प्रगतिशील प्रकाशन, किनारी बाजार, दिल्ली; सा. क्रा.; मू. ५·०० ।

नाटक

चित्रांगदा : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ; प्र. राजपाल एण्ड संस, दिल्ली ६; सा.क्रा-८ ; पृ. १००; -. २·०० । नाटिका ।

नया समाज : ले. उदयशंकर भट्ट ; प्र. आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली ; सा. क्रा. ; पृ. ८४ मू. १.५० ।

मयूर फिर नाच उठे : ले. ओंकार नाथ दिनकर; प्र. किताब महल प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. १४४; मू. २·५० । ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर एकांकी, राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत ।

राष्ट्रध्वज : ले. रघुवीरशरण मित्र, प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, सा. क्रा-८; पृ. १०४ ; मू. २·०० ।

समस्या का अन्त : ले. उदयशंकर भट्ट; प्र. आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली, सा. क्रा. ; पृ.१७२; मू. ३·०० । एकांकी संग्रह ।

जीवनी

टामस जैफ़र्सन : ले. विंसेन्ट शिएन ; प्र. आत्माराम एंड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली ; सा. क्रा. ; पृ. १८० ; मू. ३·०० । सचित्र ।

नारीरत्न : ले० ओंकारशरद ; प्र. राजरंजना प्रकाशन ऋषिकुटी, जीरोरोड इलाहाबाद, सा. क्रा-८ ; पृ. १४२ ; मू. २·०० । सचित्र ; सीता, शंकुतला, मीरा, लक्ष्मीवाई, सरोजिनी नायडू, एनीबीसेंट और क्यूरी की जीवन-कथाएँ ।

समर्थ-जीवन-दर्शन : ले. म. तु. कुलकर्णी ; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २६ ए, जवाहर नगर, दिल्ली ; सा. क्रा-८ ; पृ. २४० ; मू. ४·०० । सचित्र ; समर्थ गुरु रामदास के जीवन और कार्यप्रणाली पर रोचक एवं विवेचनात्मक ।

संस्मरण

हमारा नया देश : ले. ए. पेलेग्रिनी ; प्र. आत्माराम एंड संस, सा. क्रा. ; पृ. १०० ; मू. २·०० ।

हास्य-व्यंग्य

फक्कड़ की फाइल : ले. अरुण ; प्र. आत्माराम एंड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली ; सा. डि. ; पृ. ३०४ ; मू. ६·०० ।

स्वतंत्रता के बाद का सर्वश्रेष्ठ उर्दू हास्य-व्यंग्य : सं. फिक्र तौंसवी ; प्र. प्रगतिशील प्रकाशन, कटरा खुशाल राय, किनारी बाज़ार, दिल्ली ; सा. क्रा. ; मू. ३·५० ।

किशोरोपयोगी

पूपू : ले० मनहर चौहान, प्र. उमेश प्रकाशन, दिल्ली, सा. क्रा. ८ ; पृ. १०२ ; मू. २·०० । समुद्री प्राणियों पर आधारित उपन्यास ।

बाघ का शिकार : ले. प्रकाश नगायच, प्र. उमेश प्रकाशन दिल्ली, सा. क्रा. ८ ; पृ. ११०; मू. २·०० ।

मीराँ बावरी : ले. वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी, प्र. उमेश प्रकाशन, दिल्ली, सा. क्रा. ८ ; पृ. १०४ ; मू. २·०० ; सचित्र । मीराबाई के जीवन पर आधारित उपन्यास ।

रूपा और लल्ली : ले. मनहर चौहान, प्र. उमेश प्रकाशन दिल्ली, सा. क्रा. ८ ; पृ. १२० ; मू. २·०० ; चीटियों के दिलचस्प जीवन पर आधारित उपन्यास ।

बाल साहित्य

अच्छी-अच्छी कहानियाँ : ले. योगराज थानी ; प्र. आशा प्रकाशन गृह, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली, मू. १·५० ।

कोठी के धान : ले. कु. निर्मल गर्ग ; प्र. अनुपम प्रकाशन, नई मंडी, मुजफ्फ़रनगर ; सा. फु. ८ ; पृ. १६, मू. १·०० ।

झरने और फूल : ले. रघुवीर शरण मित्र ; प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ ; सा. क्रा-८ ; पृ. ७६ ; मू. १·५० ; एकांकी ।

दियासलाई की कहानी : ले. एस. एन. अग्रवाल ; प्र. अनुपम प्रकाशन, नई मंडी, मुज़फ़्फ़र नगर ; सा. क्रा. ; पृ. ३२ ; मू. ०·७५ ।

नई-नई कहानियाँ : ले. योगराज थानी ; प्र. आशा प्रकाशन गृह, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली ; मू. १·५० ।

फूलों की टोकरी : ले. द्रोणवीर कोहली ; प्र. आत्माराम एन्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली ; सा. क्रा. ; पृ. १०० ; मू. १·५० । सचित्र उपन्यास ।

हीरे की अंगूठी : ले. योजराज थानी ; प्र. आशा प्रकाशन गृह, ३ नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली-५ ; मू. १.५० ।

मनोविज्ञान

मानव प्रकृति और आचरण : ले. जॉन ड्यूई ; प्र. आत्माराम एंड सन्स ; कश्मीरी गेट, दिल्ली ; सा. डि. ; पृ. २५६ ; मू. ६.०० ।

सामान्य मनोविज्ञान : ले० डा० एस. एस. माथुर : प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा सा. डि. ८ ; पृ. ४६६ ; स्नातक विद्यार्थियों के लिए ।

कोश

बृहत् पर्यायवाची कोश : सं. डॉ. भोलानाथ तिवारी; प्र. किताब महल, प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. डि.-४; पृ. ५५७; मू. १५·०० ।

इतिहास

भारतीय संस्कृति का इतिहास : ले० दिनेश चन्द्र भारद्वाज; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ; सा. डि. ८ ; पृ. ५२० ; बी. ए. के विद्यार्थियों के लिए ।

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र के सिद्धांत : ले. ए. बी. भट्टाचार्य ; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ; सा. डि. ८ ; पृ. ३५५ ।

शिक्षाशास्त्र

भारत में शिक्षा : ले० बी. पी. जौहरी, पी. डी. पाठक : प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ; सा. डि. ८ ; पृ. ७६० । इतिहास, समस्याएँ एवं परीक्षण सम्मिलित ।

भारतीय शिक्षा की रूपरेखा : ले० बी. पी. जौहरी, पी. डी. पाठक ; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ; सा. डि. ८ ; पृ. ३६१ ।

विविध

नवग्रह और भाग्य : ले०शिवमूर्ति 'शिव' ; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ; मू. १·०० ; ज्योतिष । पा. बु. ।

भारतीय गणतंत्र का संविधान : अनु. डॉ. एम. पी. शर्मा; प्र. किताब महल, प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. डि.-४; पृ. ३७२; मू. ६·०० ।

यह दोस्त हमारा दुश्मन है : ले. एम. बी. रणदिवे; प्र. विविध भारती प्रकाशन; ११७, गाड़ीवान टोला, इलाहाबाद; सा. क्रा.-८; पृ. ९४; मू. १·५० । सीमा की रक्षा करने वाले भारतीय जवानों की वीरता का परिचय देने वाली रचना ।

स्वयं डाक्टर बनें : ले० डा. केवल धीर ; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ; मू. १ ०० । चिकित्सा पा. बु. ।

सूचना सार

पंजाब में मैट्रिक का सबमिशन

पंजाब विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री के० एस० नारंग के परिपत्र बी० एम० १५।१९६२ के अनुसार पंजाब विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा के लिए निम्नलिखित विषयों की पुस्तकों का सबमिशन ३० जून '६३ तक होगा। परीक्षा सन् '६६ में होगी। उसके लिए विद्यार्थी सन् '६४ में ९वीं कक्षा में प्रविष्ट होंगे। विषय—(१) संस्कृत, (२) रसायन और भौतिक विज्ञान, (३) शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य, (४) कृषि, (५) गणित, (६) पशु-पालन, (७) हिन्दी और पंजाबी—व्याकरण तथा रचना; एवं (८) अंग्रेजी—व्याकरण, रचना और अनुवाद होंगे। १, ७ और ८ के सिवा अन्य विषयों की पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी की होंगी।

जोधपुर विश्वविद्यालय में सबमिशन

जोधपुर विश्वविद्यालय में सब विषयों की पुस्तकों का सबमिशन ३० जनवरी तक होगा। पाठ्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय के अनुसार है।

राजस्थान हायर सेकेंड्री बोर्ड में सबमिशन

राजस्थान हायर सेकेण्ड्री बोर्ड, अजमेर में पुस्तकों का सबमिशन ४ फरवरी तक होने वाला है।

पंजाब यूनिवर्सिटी में (हिन्दी परीक्षाओं का) सबमिशन

पंजाब यूनिवर्सिटी के रिजिस्ट्रार महोदय ने अपने परिपत्र बी० एम० १६।१९६२ में सूचित किया है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं की परीक्षाओं के लिए पुस्तकों का सबमिशन ३० अप्रैल तक होगा। निम्नलिखित पुस्तकें बदली जायंगी: हिन्दी रत्न—कहानी संग्रह (पृ० २५०); हिन्दी भूषण—एक मौलिक नाटक तथा १५० पृ० का एक एकांकी संग्रह; हिन्दी प्रभाकर—एक काव्य-संग्रह, एक उपन्यास, एक नाटक, एक कहानी-संग्रह (पृ० ३००) और संस्कृत की ऐच्छिक पुस्तक; ज्ञानी—संस्कृत की ऐच्छिक पुस्तक; बुद्धिमानी—एक उपन्यास और एक ही लेखक की १२ कहानियों का संग्रह।

युद्ध-काल में शिक्षा के विषय

केन्द्रीय शिक्षा संस्थान ने युद्ध-काल में शिक्षा के महत्व के चुने गये ग्रंथों की सूची तैयार की है। सूची में विभिन्न विषयों के उपयुक्त शीर्षक वर्णक्रम में दिए गये हैं। यह संस्थान नई दिल्ली की राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के अधीन शिक्षा के क्षेत्र में एक विशिष्ट अखिल भारतीय संस्थान है।

इस संस्थान के पुस्तकालय में राष्ट्रीय संकट विभाग बनाया गया है जहाँ छात्रों व विद्वानों के लिए उस ग्रन्थ सूची के सभी ग्रन्थ रखे गए हैं।

ग्रंथ सूची के कुछ महत्वपूर्ण विषयों के नाम इस प्रकार हैं: स्कूलों का प्रशासन, विमानशास्त्र, हवाई हमला, सैनिक प्रशासन, हवाई जहाज चलाने की शिक्षा, बच्चे और युद्ध, सैनिक प्रशिक्षण, राष्ट्रीय सुरक्षा, शारीरिक शिक्षा, प्रचार, मनोवैज्ञानिक युद्ध-कला, स्कूल और युद्ध, नारे, युद्धकाल में अध्यापकों का प्रशिक्षण, नारी और युद्ध, युद्धगीत आदि।

उत्तरप्रदेश में कटौती और शिक्षा

उत्तर प्रदेश के विकास आयुक्त श्री सतीशचन्द्र ने समस्त डिवीज़नों के आयुक्तों और अतिरिक्त जिलाधीशों (नियोजन) से एक परिपत्र में कहा है कि विकास खण्डों में नये स्कूल खोलने और ग्राम क्षेत्रों में बालकों एवं प्रौढ़ों की शिक्षा के लिए शिक्षित व्यक्तियों की सेवाओं का उपयोग किया जाय। परिपत्र में कई योजनाओं में कटौती का आदेश दिया गया है।

छात्रों के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य होगी

राष्ट्रीय केडेट कोर के डाइरेक्टर जनरल, मेजर जनरल वीरेन्द्रसिंह ने जयपुर में एक एन० सी० सी० रैली में बताया कि राष्ट्रीय संकट काल को दृष्टि में रखते हुए देश के कालेजों एवं विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए

अगले शैक्षणिक सत्र से अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण आरम्भ किया जाएगा।

कागज बचाने का परामर्श

पंजाब राज्य शिक्षा विभाग ने प्राइमरी स्कूलों के प्रमुखों को इस बात पर बल देने के लिए कहा है कि वे कागज के प्रयोग में मितव्ययता करें। इस बारे में सुझाव दिया गया है कि छोटी प्राइमरी श्रेणियों में नोट बुक की जगह पर जहाँ तक भी सम्भव हो सके स्लेट और तख्ती प्रयोग में लाई जाए।

कालिजों, हाई और हायर सैकण्ड्री क्लासों के ऐसे छात्र जो किसी भी प्रकार का सैनिक या अर्धसैनिक प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर रहे हैं, उन्हें परामर्श दिया गया है कि वे सब्जियाँ, पोल्ट्री जैसे उत्पादन कार्य को अपनाएं जिससे वे सुदीर्घकाल तक श्रमकार्य कर सकें।

पंजाब में नये विकास ब्लाक

पूर्वी पंजाब में १४ नये विकास ब्लाकों ने काम शुरू किया है। सब ब्लाकों की संख्या अब २२२ हो गई है। नये ब्लाक—बेरी (रोहतक), असंध (करनाल), कलायत (संगरूर), बारागिढ़ा (हिसार) भुनेरखेरी (पटियाला), जंडियाला और बेरका (अमृतसर), लंबी और मालोट (फिरोजपुर), भुंगा (होशियारपुर) बुधलाडा (भटिंडा), सुजानपुर और मंगवाल (कांगड़ा), और जालंधर पूर्व (जालधर) में खुले हैं। अप्रेल में ६ नये ब्लाक और बन जायंगे।

सस्ती पुस्तकों के लिए ब्रिटिश कम्पनी से समझौता

परगामोन प्रेस, आक्सफोर्ड के अध्यक्ष और निदेशक श्री राबर्ट मैक्सवेल ने दिल्ली में बताया है कि उन्होंने भारत सरकार के साथ एक समझौता कर लिया है। समझौते के अनुसार विज्ञान, तकनीक और इंजीनियरिंग की एक हजार पुस्तकों का सह प्रकाशन होगा। इसके लिए कलकत्ते में एक आधुनिकतम प्रेस स्थापित होगा जो लाभ का विचार न रखकर पुस्तकें प्रस्तुत करेगा। ब्रिटिश और अमरीकन सरकार से सस्ती पुस्तकों के लिए जो सहायता मिली है, यह व्यवस्था उसके अन्तर्गत की गई है।

भारत में अमरीकी प्रकाशन संस्था

अमेरिका के प्रकाशन प्रतिष्ठान प्रिंटेंस हाल इनकार० को भारत सरकार ने अनुमति दी है कि वह ५१ प्रतिशत पूंजी लगाकर भारत में एक कम्पनी स्थापित कर सकती है। ऐसे मामलों में भारत सरकार अब तक ५१ प्रतिशत भारतीय पूंजी रखने पर जोर देती रही है।

दिल्ली में प्रेस के लिए ब्रिटिश कम्पनी से समझौता

भारत सरकार ने उस समझौते पर अपनी सहमति प्रदान कर दी है जो नई दिल्ली के एक प्रतिष्ठान और एक ब्रिटिश कम्पनी में हुआ है। समझौते के अनुसार दिल्ली में एक प्रेस स्थापित होगा जो वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करेगा।

इलाहाबाद में अमरीकी विशेषज्ञ

उत्तरी अमरीका के दो विशेषज्ञ उत्तरी क्षेत्र के प्रिंटिंग स्कूल में प्रशिक्षण देने के लिए इलाहाबाद आये हैं। वे दो वर्ष तक भारत में रहेंगे।

फोर्ड संस्था द्वारा भारत में शिक्षा-संस्थाओं को २० लाख डालर का अनुदान

अमेरिका की फोर्ड संस्था ने विश्व की विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के लिए एक करोड़ ३३ लाख डालर के अनुदान की घोषणा की है। इसमें से २० लाख डालर से अधिक की राशि भारत को दी गई है।

शिक्षा पर साढ़े बारह अरब रूबल

१९६२ में रूस में शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति पर १२४० करोड़ रूबल खर्च किये गये। १९६३ में यह रकम १४ अरब रूबल तक पहुँच जाएगी। सोवियत संघ में उच्चतर शिक्षा तथा अनुसन्धान संस्थाओं में चार लाख से अधिक वैज्ञानिक काम कर रहे हैं। इंजीनियरों की संख्या में सोवियत संघ अन्य तमाम देशों से आगे निकल गया है।

सरकारी किताबों में भूलें

पश्चिमी पाकिस्तान के समाचार पत्रों में लिखा है कि पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की योजना के अनुसार पाक सरकार ने जो किताबें छापी हैं, उनमें तथ्यों की भूलें हैं और इतिहास की ८०० पृष्ठ की पुस्तक सत्र प्रारंभ होने के ९ महीने बाद बाजार में आई है।

जवानों के लिए पुस्तकें

प्रयाग के २३ प्रकाशकों ने श्रीमती उमाराव की अपील पर दस हज़ार रुपये से भी अधिक मूल्य की लगभग ७००० पुस्तकें, और १८४२ पत्रिकाएँ जवानों के लिए भेंट की हैं। पाँच प्रतिष्ठानों ने अपनी मासिक पत्रिकाओं की २३०० प्रतियाँ प्रति मास भेंट करने का वचन भी दिया है। 'नीलाभ' की श्रीमती कौशल्या 'अश्क' और 'लोकभारती' के श्री दिनेश ने इस कार्य में विशेष उद्योग किया है। विवरण इस प्रकार है :

प्रकाशक	पुस्तकें	पत्रिकाएँ	मूल्य
रूपसी प्रकाशन	१५८	५३७	लगभग ६०००-००
,,	३७६१		५,००१-००
सरस्वती प्रेस	५४०	२२०	१,२९५-००
किताब महल	५००		१,०५०-००
नीलाभ प्रकाशन	१३१		३९५-००
इण्डियन प्रेस	४००		३६१-२५
हंस प्रकाशन	१२०		२४२-००
भारती भंडार	१००		२३१-५०
तरुण प्रकाशन	५२०		......
साहित्य भवन	१००		२२८-७५
लोक भारती	६०		२००-००
मित्र प्रकाशन	६२		२००-००
आदर्श हिन्दी पुस्तकालय	१००		१९७-५०
मातृभाषा मंदिर	९०		१४८-५०
न्यू लिटरेचर	१२०		१८८-७५
आदर्श पुस्तक मंदिर	१७९		१२२-७१
हिन्दी प्रकाशन मंदिर	१००		१०८-७५
नया साहित्य प्रकाशन	७१		९६-००
छात्र हितकारी संघ	६०		७५-००
मैगजीन वितरक		१०८५	लगभग १,०००-००
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	१२५		१५०-००
श्री अनिरुद्ध पाण्डेय	१०		५०-००
श्री विश्वम्भर मानव	९		३२-२५

पत्रिकाएँ जो प्रतिमाह देने का वचन मिला है

प्रकाशक	पत्रिका	प्रतियाँ
१—माया प्रेस	माया	५००

माया प्रेस	मनोहर कहानियां	५००
"	मानसी (बंगला पत्रिका)	२००
२—मैगज़ीन वितरक	नवलिका	१००
"	उर्दू साहित्य	१००
३—आदर्श पुस्तक मंदिर	जासूस महल और कोयल	१००
४—रूपसी प्रकाशन	रूपसी	३००
"	गुप्तचर	२००
"	रोमांच	२००
५—दीपक प्रकाशन	शशिप्रभा	१००

—बंसल एण्ड कम्पनी, नवीन शाहदरा दिल्ली ने ५६० रु० के मूल्य की २५१ पुस्तकें दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी के द्वारा मोर्चे पर जमे हुए सैनिकों के लिए भेजी हैं।

—पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा, दिल्ली, ने ५०२ रु० की पुस्तकें लालकिले के कमांडिंग आफिसर के द्वारा और १०० रु० पुस्तकें दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी के द्वारा जवानों के लिए भेजी हैं। इस प्रतिष्ठान की ओर से १०१ रु० राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में भी दिये गये हैं।

—विविध भारती प्रकाशन, इलाहाबाद ने 'यह दोस्त हमारा दुश्मन है' नामक पुस्तक की १०० प्रतियाँ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए प्रधान मंत्री को भेजी हैं।

अमरीकी बुकसेलरों की हैंड बुक

अमरीकन बुकसेलर्स ऐसोसियेशन ने अपनी हैंडबुक का नया संस्करण प्रकाशित किया है। इसमें प्रचलित कमीशन की सारिणी, वापसी की नीति तथा अन्य उपयोगी सामग्री का अप-टू-डेट समावेश हुआ है।

विद्यापति : जनतंत्र के प्रचारक !

सोवियत संघ में विद्यापति और रवीन्द्रनाथ की रचनाओं पर अध्ययन प्रकाशित हुए हैं। विद्यापति को मानवीय और जनतंत्रीय उद्देश्यों का प्रचारक माना गया है। अलबेरूनी की भारत यात्रा संबंधी पुस्तक का अनुवाद रूसी भाषा में हो गया है।

केन्द्रीय बोर्ड की हायर सेकन्डरी परीक्षा

माध्यमिक शिक्षा के केन्द्रीय बोर्ड (दिल्ली) द्वारा ली जाने वाली हायर सेकन्डरी परीक्षाएँ १२ मार्च १९६३ से शुरू होंगी। यह केन्द्रीय बोर्ड द्वारा ली जानेवाली पहली परीक्षा है। केन्द्रीय बोर्ड १ जुलाई १९६२ को, हायर सेकण्डरी शिक्षा के दिल्ली बोर्ड और अजमेर बोर्ड को मिलाकर पुनर्गठित किया गया था।

उत्तर प्रदेश की हाई स्कूल परीक्षा

उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल तथा इण्टरमीडियेट एजूकेशन बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षाएँ गुरुवार १४ मार्च से और हाई स्कूल प्रौद्योगिक (टेकनिकल) परीक्षाएँ शुक्रवार १५ मार्च से प्रारम्भ होंगी। इण्टर की कृषि तथा टेकनिकल परीक्षाएँ १४ मार्च से आरम्भ होंगी।

दिल्ली नगर निगम के निर्णय

दिल्ली नगर निगम ने सन् ६३-६४ में १०००० विद्यार्थियों को अपनी ओर से कपड़े देने का निर्णय किया है। एक अन्य निर्णय में निर्धन छात्रों को पुस्तकें आदि देने के लिए डेढ़ लाख रुपया स्वीकार किया गया है। पहले इस मद में ७५००० रु० रखे गये थे।

श्री नारायणदत्त सहगल का स्वर्गवास

दिल्ली के विख्यात प्रकाशक मेसर्स एन० डी० सहगल एण्ड कम्पनी के संचालक श्री नारायणदत्त सहगल का ५ जनवरी को स्वर्गवास हो गया है। प्रकाशन-व्यवसाय के आप पुराने महारथी और अत्यन्त सहृदय महानुभाव थे।

श्री नारायण दास जी का देहान्त

भारत के प्रसिद्ध पुस्तक-विक्रेता तथा इंगलिश बुक डिपो (फिरोज़पुर, देहरादून और पूना) के मालिक श्री नारायण दास जी का मोटर की एक दुर्घटना में देहान्त हो गया है। अपने व्यवसाय में माहिर होने के साथ-साथ आप अथक समाज-सेवी भी थे।

श्री सुखसम्पत्ति राय भंडारी का देहान्त

पिछले दिनों प्रख्यात हिन्दी विद्वान और तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों के हिन्दी-इंगलिश बृहत कोश के रचयिता श्री सुखसम्पत्ति राय का इन्दौर में देहान्त हो गया। उसकी आयु ७१ वर्ष की थी।

दिल्ली यूनिवर्सिटी में हिन्दी माध्यम के लिए बोर्ड

ज्ञात हुआ है कि दिल्ली विश्वविद्यालय ने हिन्दी माध्यम के निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए श्री सी० डी० देशमुख की अध्यक्षता में एक बोर्ड नियुक्त किया है। प्रो० बी० एन० गांगुली, प्रो० विश्वेश्वर प्रसाद, डा० नगेन्द्र, प्रो० पी० महेश्वरी, प्रो० एम० सी० शुक्ल, डा० रामबिहारी, प्रो० के० एन० राज, डा० के० एन० राय और श्री शान्ति नारायण बोर्ड के सदस्य हैं। श्री महेन्द्रनाथ चौबे इसके सचिव सदस्य हैं। बोर्ड के सामने लगभग ५८ मौलिक और १५० अनूदित पुस्तकें प्रस्तुत करने का प्रश्न है। मौलिक पुस्तकों में लगभग ६ लाख के व्यय का अनुमान है। प्रकाशकों के द्वारा यह काम करवाने के स्थान पर शिक्षा मंत्रालय या यूनिवर्सिटी ग्राण्ट्स कमीशन से अनुदान प्राप्त करना ही ठीक समझा गया है।

अमरीकी पुस्तकों का अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम

अमरीका के प्रकाशकों ने एक परामर्शदात्री समिति का निर्माण किया है। समिति सरकार की प्रेरणा से बनी है और उसे पुस्तकों के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम को अधिक विस्तृत करने के लिए परामर्श तथा सहयोग देगी। समिति की पहली बैठक में एटर्नीजनरल राबर्ट एफ केनेडी ने विकासोन्मुख देशों में कम्यूनिस्ट साहित्य के प्राचार को एक चुनौती के रूप में उपस्थित किया है।

रूस के तकनीकी प्रकाशन

मास्को का ज्नानी (ज्ञान) प्रकाशन गृह बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक पुस्तकों के अतिरिक्त आम जनता के लिए तकनीकी पुस्तकाएँ भी प्रकाशित करता है। पुस्तिकाएँ विभिन्न क्षेत्रों में खोज करने वालों से लिखाई जाती हैं और अनेक जन भाषाओं में लाखों की संख्या में छपती हैं।

लातविया में दो हजार पुस्तकालय

कुछ वर्षों में राज्य पुस्तकालय की नयी इमारत का निर्माण किया जायेगा जहाँ एक करोड़ पुस्तकें रखने की व्यवस्था होगी।

इस समय लातविया में २००० से अधिक राज्य, व्यापार संघ तथा सामूहिक पुस्तकालय हैं जिनमें पुस्तकों की कुल संख्या लगभग १५० लाख है। १९४५ में जनतंत्र में केवल ३९० पुस्तकालय थे। जनतंत्र का प्रत्येक तीसरा व्यक्ति नियमित रूप से पुस्तकालय में जाता है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित; पुरी प्रिंटर्स, देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष १ फरवरी, १९६१ अंक २

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

गोमती के तट पर	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्तसिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
आकाशदीप	टेकचन्द शर्मा	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक तथा एकाँकी-साहित्य

शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	,, ,,	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डॉ० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रत्नलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०
मारवाड़ गौरव	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	१.२५

काव्य-साहित्य

प्रतिपदा	कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभानु	१.७५
गीतम	वीरेन्द्र मिश्र	२.५०

विभिन्न-साहित्य

मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
जय भारत विशाल	राजेन्द्र शर्मा	२.००
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
जन नायक	फतहचन्द्र शर्मा 'आराधक'	२.५०
संघर्षमय जीवन	प्रि० हरिश्चन्द्र	२.५०
दौलति बाग विलास	कुंवर चन्द्रप्रकाशसिंह	३.००
इंगलैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००
आविष्कार जगत्	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.००

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	,, ,,	६.५०
हरिकृष्ण प्रेमी	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डॉ० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसाद सिंह	,,	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	,,	२.५०
हिन्दी गद्य : विधाएँ और विकास	,,	२. ०
शुक्ल : एक समीक्षा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
सूर सरोवर	डॉ० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम एवं शास्त्रीय संगीत (निबंध संग्रह)	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	२ ५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

धरती की पूजा	दुर्गादत्त शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	,, ,,	१.२५
हम आज़ाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूँ	रामावतार त्यागी	१.२५
ईसप की नीति कथाएँ १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएँ २	,,	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.२५
भगवान बुद्ध	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	१.२५
राजधानी दिल्ली	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
राम राज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
मुहावरों का मेला	डॉ० व्यास	१.२५
ईशोपनिषद	गोपाल जी	०.६०
उपनिषद	,,	१.५०

अंग्रेजी में

Handful of Stories	Ish Kumar	2.50

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, (पोस्टबाक्स १२८९) दिल्ली—३२

टेलीफोन : 86/2292

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष १, अंक ३ फरवरी, १९६३ मूल्य वार्षिक ३.००

पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें

जनवरी की 'ज्ञानपीठ पत्रिका' में विचक्षण विद्वान् डा० प्रभाकर माचवे ने अपनी यह पीड़ा काफी कड़वे शब्दों में प्रस्तुत की है कि "वर्तमान हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं से वर्तमान हिन्दी प्रकाशन का कोई सही चित्र नहीं उभरता। सुनते हैं कि पिछले वर्ष में लगभग पौने तीन हज़ार हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हुई। अब उनका सही-सही अता-पता कहाँ मिले, कौन बतावे ?"

इस स्थिति के लिए डा० माचवे ने पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली एकांगी आलोचनाओं को उत्तरदायी ठहराया है और इस बात पर भी क्षोभ प्रकट किया है कि कितनी ही पत्र-पत्रिकाओं में आलोचना होती ही नहीं। पहली बात के सम्बन्ध में हम कुछ कहने के अधिकारी नहीं। दूसरी बात के समर्थन में तो नहीं स्पष्टीकरण में एक विख्यात और रंगीन साप्ताहिक का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। जनवरी मास के चार अंकों में इसने अपने पाठकों को २२४ पृष्ठ भेंट किये हैं, पुस्तकों की समालोचना को उनमें से केवल आधा पृष्ठ प्राप्त हुआ है। दिसम्बर मास के तीन अंकों में पुस्तकें इस आधे पृष्ठ से भी वंचित रह गई हैं! तारीफ की बात यह है कि इस पत्र में साहित्य की समस्याओं पर अग्रलेख तक लिखे जाते हैं और दिवंगत साहित्यकारों के सम्बन्ध में बहुत-कुछ कहा सुना जाता है। ऐसे सहृदय और साहित्यानुरागी पत्र में पुस्तकों को जब इतना अल्प स्थान दिया जाता है तब उन पत्रों की कल्पना सहज ही की जा सकती है जो साहित्य को अपना तन-मन अर्पन करने का दावा नहीं करते।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने कभी समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं से अनुरोध किया था कि वे पुस्तकों के विज्ञापनों पर ५० प्रतिशत की छूट दिया करें और एक ही प्रति लेकर उसकी समालोचना कर दिया करें। कुछ उदार स्थानों पर यह अनुरोध स्वीकार भी किया गया था परन्तु व्यवहार में यह व्यवस्था नहीं चली। आज पत्र-पत्रिकाओं की विज्ञापन दर इतनी ऊँची हो गई है कि पुस्तक जैसी अनावश्यक समझी जाने वाली वस्तु का विज्ञापन करना सम्भव नहीं रहा और समालोचना दो-दो प्रतियाँ देने पर भी प्रायः नहीं होती।

सवाल यह है कि जनमत को दिशा दिखाने वाले साधन पुस्तकों के प्रति जब ऐसे उदासीन हैं तब उनके प्रचार-प्रसार कैसे हो और प्रकाशकों को श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करने का सहारा या प्रोत्साहन कैसे मिले? क्या यह उचित न होगा कि प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तकों के प्रकाशन को उतना स्थान अवश्य दिया जाय जितना चित्रपटों के 'भीगे हुए सौंदर्य' आदि को अर्पित किया जाता है?

क्या आशा की जाय कि पत्र-पत्रिकाओं के सम्मानित संपादक इन पंक्तियों पर विचार करेंगे और ये अरण्य रोदन न सिद्ध होंगी? ●

संघ और सेमिनार के निष्कर्ष

जनवरी के सहयोगी 'हिन्दी प्रचारक' ने पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी गोष्ठी पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि "गोष्ठी के आयोजक होने के नाते संघ (हिन्दी प्रकाशक संघ) का यह परम पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि

वह गोष्ठी के निष्कर्षों पर अमल करे और पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में काम करने वाली अन्य संस्थाओं का सहयोग इस कार्य में ले।" संघ इस दिशा में प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील है परन्तु प्रत्येक संस्था की क्रिया-शक्ति उसके पदाधिकारियों और उसके सदस्यों में निहित रहती है। सेमिनार के तुरन्त बाद संघ के क्षेत्रों में जो उत्साह दीख पड़ा था वह कहीं-कहीं मन्द हो गया प्रतीत होता है। इसका कारण सम्भवतः दैनिक कार-व्यवहार की व्यस्तता ही है। फिर भी हमें विश्वास है कि संघ को सब का सक्रिय सहयोग अवश्य प्राप्त होगा और यह इस कर्तव्य का पालन करने मे सफल हो जायगा।

डाक विभाग की तत्परता और लापरवाही

डाक विभाग ने हिन्दी प्रकाशक' को डी. नम्बर देने में आश्चर्यजनक तत्परता दिखाई है फलतः इसका दूसरा अंक इस सुविधा के साथ पाठकों के पास पहुँचने में समर्थ हुआ है। कर्तव्य-पालन के लिए धन्यवाद देना आवश्यक नहीं होता परन्तु आज की दुनिया में कर्तव्य-बोध ही सब से अधिक दुर्लभ हो गया है—पालन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। अतएव हम डाक विभाग के संबंधित अधिकारियों को इस तत्परता के साथ कर्तव्य का पालन करने के लिए हार्दिक बधाई अर्पित करते हैं।

साथ ही साथ डाक विभाग को एक अजीब लापरवाही की ओर भी संकेत करना पड़ रहा है। हिन्दी प्रकाशक संघ के कार्यालय से विगत ३१-१२-६२ को चुनाव सम्बन्धी एक परिपत्र अंडर पोस्टल सर्टिफिकेट सदस्यों को भेजा गया; १०-१-६३ तक उसका उत्तर माँगा गया था परन्तु कलकत्ता, वाराणसी और प्रयाग आदि ही नहीं दिल्ली के कितने ही सदस्यों को भी वह १०-१-६३ के बाद प्राप्त हुआ; लिफाफे पर लगी मुहरों से मालूम हुआ कि इस बीच में वह मद्रास की यात्रा भी कर आया है। लिफाफों पर पता पूरा, साफ और हिन्दी में टाइप किया हुआ था। डाक विभाग को इस सिलसिले में लिखा गया है परन्तु उत्तर अभी नहीं मिला। संभव है कि छानबीन हो रही हो और परिपत्र की इस दुर्दशा का कारण शीघ्र ही सामने आ जाय।

पाठ्य-सामग्री संबंधी
सेमिनार में पठित निबंध

नेशनल बुक लीग की योजना

श्री दीनानाथ मल्होत्रा
डायरेक्टर, हिंद पाकेट बुक्स लि., दिल्ली

मनुष्य के जीवन में आज पुस्तकों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया है ! इतिहास, संस्कृति, विज्ञान और तकनीक—सभी की उपलब्धि पुस्तकों द्वारा ही संभव है। मनुष्य पुस्तकों का जितना अधिक उपयोग करेगा मानव-समाज उतनी ही जल्दी सुसंस्कृत हो जायगा। साथ ही साथ पुस्तकें युग-युगान्तरों के संचित ज्ञानभंडार तक पहुँचने का सरलतम माध्यम भी हैं। मानव ने आज तक जितने आविष्कार किये हैं उनमें ये सबसे अधिक क्रांतिकारी और रोमांचकर आविष्कार हैं जो धरती के अंतिम और परित्यक्त छोर पर या सूर्य की किरणों से भी अभेद्य अँधेरे गहन बन में बैठे हुए व्यक्ति को भी ज्ञान का नया आलोक प्रदान करती हैं। पुस्तकें व्यक्ति को सुदूरतम देशों की यात्रा का आनन्द देती हैं और उसे गहन समुद्रों, उज्ज्वल तारों तथा अनन्त आकाशों के अगम रहस्यों तक पहुँचाती हैं। वास्तव में पुस्तकें मनुष्य को दोनों लोकों की सर्वोत्तम निधि समर्पित कर देती हैं यदि वह उन्हें पढ़ने का प्रयास करे।

पुस्तकों के इस व्यापक महत्व को देखते हुए क्या समाज और राज्य-शासन का यह परम कर्तव्य नहीं हो जाता कि वह अपने सदस्यों और नागरिकों को इस महान वरदान से परिचित करावे, इस उपलब्ध निधि से लाभ उठाने की बात उनके मस्तिष्क में बिठा दे और उनको इसके निकट तक पहुँचने की सुविधाएँ दे ? निस्संदेह पुस्तक मानव-समाज के शस्त्रागार का महा तेजस्वी शस्त्र है जिससे उसके सदस्य अज्ञानता को नष्ट कर आत्मज्ञान का लक्ष्य प्राप्त करते हैं ; परन्तु इस शस्त्र का लाभ तभी होगा जब उसका उपयोग किया जायगा। अतएव समाज के प्रत्येक सदस्य से, प्रत्येक नर-नारी से, प्रत्येक किशोर और प्रौढ़ से, प्रत्येक तरुण और वृद्ध से यह कहने की आवश्यकता है कि वह प्रतिदिन किसी न किसी समय किसी भी विषय की पुस्तक अवश्य पढ़े। मनुष्य और समाज इसी प्रकार सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

पुस्तक पढ़ने की रुचि

योरोप के प्रगतिशील देशों में, अमरीका में और एशिया में जापान में—चाहे वहाँ जनतंत्र हो या तानाशाही—जनता में पुस्तकें पढ़ने की आदत चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी है। उन देशों के लोग चाहे दिन हो या रात, हर समय, हर स्थान पर, बस स्टापों पर, रेलवे प्लेटफार्मों पर, चलती बसों और गाड़ियों में भी पुस्तकें पढ़ते हैं। वस्तुतः वे पुस्तक पढ़ने का समय और सुविधा हर स्थान पर प्राप्त कर लेते हैं और अपनी जेब में पड़ी पुस्तक के कुछेक पन्ने पढ़ ही लेते हैं। वे प्रबुद्ध होना चाहते हैं, इसलिए प्रतिदिन, निरन्तर और अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ते हैं और यही उनकी प्रगति का रहस्य है।

भारत में पुस्तकों को अभी इतना महत्व प्राप्त नहीं हुआ। लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि इतनी दुर्बल है कि उसको पुष्ट करने के लिए तूफ़ानी प्रयत्नों की आवश्यकता है। साथ ही साथ पुस्तकों की इस उपेक्षा का एक और बड़ा कारण भी है। यह हमारी शिक्षा-प्रणाली का ही दोष है कि विद्यार्थी पुस्तकों को परीक्षा पास करने का साधन-मात्र ही समझते हैं। विश्वविद्यालय से निकलने के बाद वे पुस्तकों की उपेक्षा करते हैं और जीवन में उन्हें कभी छूते भी नहीं हैं। विद्यार्थी-जीवन में उन्हें पुस्तकों के अध्ययन से आनन्द प्राप्त करने की शिक्षा नहीं मिलती। फलतः पुस्तकों के प्रति वे एक ग़लत दृष्टिकोण बना लेते हैं। इसके लिए किसी अंग में यह बात भी उत्तरदायी होती है कि विद्यार्थी-जीवन में उन्हें जो पुस्तकें मिलती हैं वे ऐसी ही गली-सड़ी होती हैं। परिणाम यह होता है कि भारत में विद्यार्थी-जीवन से बाहर आते ही लोग अशिक्षा की ओर मुँह कर लेते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि प्राचीन काल में जिस देश में स्नातकों को 'स्वाध्यायात् मा प्रमदः' की शिक्षा दी जाती थी वहाँ आज पुस्तकों से घृणा करने का वातावरण बन रहा है। इस वातावरण को सुधारने के भगीरथ प्रयत्न करने होंगे। साथ ही गंदी

और अश्लील पुस्तकों के विरुद्ध भी जिहाद करना होगा जो कि विष में बुझे बाणों से भी अधिक घातक होती हैं।

नेशनल बुक लीग की आवश्यकता

ऐसी स्थिति में भारत में एक ऐसे प्रबल आन्दोलन की आवश्यकता है जो सर्वसाधारण को पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा दे। आवश्यकता है कि नेता और बुद्धिजीवी नर-नारी समूचे राष्ट्र को आह्वान दें। इस उद्देश्य को पूर्ति के लिए नेशनल बुक लीग की स्थापना की जाय। लीग हमारे उस पिछड़ेपन को दूर करे जो दूसरे प्रगतिशील देशों की तुलना में इस क्षेत्र में दीख पड़ता है। इसके बिना सार्वजनिक साक्षरता के लिए महान् आंदोलन पूरा न होगा और विदेशों के साथ हमारा सम्पर्क अधूरा रह जायगा। नेशनल बुक लीग के इस महान काम में तभी सफलता मिलेगी जब सब शिक्षित वर्ग इसे अपना सहयोग देंगे। इसलिए इसकी सदस्यता उन सबके लिए खुली रहे जो पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति को बढ़ाना आवश्यक समझते हैं। यह एक ऐसी अव्यावसायिक संस्था हो जिसमें शिक्षाविद्, लेखक, पुस्तकालयाध्यक्ष, अध्यापक, प्रकाशक, सार्वजनिक सेवा के व्रती—प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्ति एकत्र हो जायँ। लीग की गतिविधि को संचालित करने के लिए सरकार से आर्थिक सहायता लेने का प्रयत्न किया जाय परन्तु प्रारम्भ में इसे नैतिक समर्थन के रूप में स्वतन्त्र नागरिकों और सांस्कृतिक संस्थाओं से प्राप्त धन पर ही निर्भर करना पड़ेगा। सांस्कृतिक दृष्टि से लीग का महत्व सारे राष्ट्र को समझना होगा।

चंदे के मार्ग

सरकारी सहायता के अतिरिक्त लीग को प्रकाशन-व्यवसाय से भी पर्याप्त चन्दा मिल सकता है। प्रकाशक काफ़ी मात्रा में और यथासम्भव अपने व्यापारिक विस्तार के अनुपात में इसके लिए चन्दा दें क्योंकि लीग की गतिविधियाँ सांस्कृतिक होते हुए भी अन्ततोगत्वा उनके व्यवसाय को भी बढ़ावा देंगी। यह स्पष्ट रहे कि इसका उद्देश्य किसी वर्ग-विशेष के व्यवसाय की सहायता न होगा परंतु अप्रत्यक्ष रूप से यह उनके व्यवसाय में सहायक होगी। इसलिए प्रकाशक वर्ग समाज के सदस्य और पुस्तकों के प्रकाशक की दुहरी हैसियत से यथाशक्ति पर्याप्त मात्रा में चन्दा दें। विदेशों में तो प्रकाशक ऐसी संस्था के लिए बहुत धन देते हैं, यद्यपि यह संस्था अव्यावसायिक ढंग से काम करती है और किसी प्रकाशक-विशेष को सहायता का उद्देश्य अपने सामने नहीं रखती।

गतिविधियाँ

नेशनल बुक लीग का कार्य ऐसी गतिविधियों को संगठित एवं संचालित करना होगा जिनसे राष्ट्र का ध्यान पुस्तकों पर केन्द्रित हो और पुस्तकें पढ़ने की आदत अंकुरित हो। वे गतिविधियाँ इस प्रकार की हो सकती हैं कि नेशनल बुक लीग :

१. सब प्रकार की पुस्तकों की प्रदर्शनियों के साथ-साथ विषय-विशेष और वर्ग-विशेष जैसे बाल-साहित्य, यात्रा साहित्य, गृहोपयोगी साहित्य आदि—की प्रदर्शनियों का भी प्रबन्ध करे।
२. विशिष्ट व्यक्तियों के ऐसे व्याख्यान का प्रबन्ध करे जिनमें अभिभावकों को परामर्श दिया जाय कि वे अपने बच्चों के लिए कैसी पुस्तकें चुनें।
३. स्कूलों के प्रबन्धकर्त्ताओं को प्रेरणा दे कि वे पुस्तकों के लिए अधिक धन की व्यवस्था करें।
४. पुस्तकों के मुक्त-प्रवाह के मार्ग की बाधाओं को हटाए और अपने सदस्यों तथा अन्य नागरिकों को पुस्तकों की सूचियाँ भेजे।
५. महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन पर विशेष उद्घाटन उत्सव की व्यवस्था करे।
६. राष्ट्रीय-पुस्तक-सप्ताह, बाल-पुस्तक-सप्ताह और राष्ट्रीय पुस्तकोत्सव आदि की व्यवस्था करे।
७. समाचार-पत्रों और मासिक पत्रिकाओं से अनुरोध करे कि वे पुस्तकों की समालोचना तथा पुस्तकों से सम्बन्धित आयोजनों के विवरणों आदि को अधिक स्थान दें।
८. प्रयत्न करे कि रेडियो, सिनेमा और टेलीविज़न आदि द्वारा भी पुस्तकों का प्रचार हो।
९. सर्वसाधारण को प्रेरणा दे कि प्रत्येक घर में उसका निजी घरेलू पुस्तकालय अवश्य होना चाहिए।
१०. इस प्रकार के ऐसे सभी विचारों को प्रोत्साहित करे जिनसे पुस्तकें पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो।

लीग पुस्तकों को अधिक प्रचारित करने के लिए

रेडियो से वार्ताएँ प्रसारित करवाने का प्रबन्ध भी कर सकती है और राष्ट्रीय-पुस्तक-सप्ताह में सरस्वती-पूजा के नाम से ऐसे जुलूस निकाल सकती है जिनमें प्रतिष्ठित नागरिक, विद्यार्थी, अध्यापक, लेखक और कवि आदि सम्मिलित हों और संस्कृति की 'संदेश-वाहिका' पुस्तक की प्रतिष्ठा प्रस्थापित हो। सरस्वती-पूजा के दिन कम से कम एक पुस्तक अवश्य खरीदने की प्रथा का प्रचलन भी हो सकता है—भगवती सरस्वती की उपासना का यह आधुनिक रूप सचमुच ही बहुत लोकप्रिय हो सकता है।

विधान की रूपरेखा

नेशनल बुक लीग के संविधान के संबंध में यही कहा जा सकता है कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए और इस बात को सदा स्पष्ट रखने के लिए कि यह पुस्तकों की बिक्री के लिए कोई व्यावसायिक आंदोलन नहीं, इसके पदाधिकारियों में व्यवसाय से असंबद्ध व्यक्तियों का ही बहुमत रहे। इसका अध्यक्ष ऐसा प्रतिष्ठित एवं स्वतन्त्र व्यक्ति हो जिसका पुस्तक-प्रकाशन से कोई सम्बन्ध न हो। कार्य समिति में कम से कम ५० प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हों जो पुस्तकेतर व्यवसायों से सम्बन्ध रखते हों। अध्यापकों, पत्रकारों, प्रकाशकों और पुस्तकालयाध्यक्षों का सहयोग अवश्य रखा जाय। कार्य-व्यवहार की व्यवस्था का ब्यौरा पूरी तरह से बाद में बनाया जा सकता है, जब अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं के सहयोग से नेशनल बुक लीग की स्थापना हो।

नेशनल बुक लीग के कार्यालय प्रत्येक राज्य में हों जहाँ से वह स्कूलों या पुस्तकालयों के सहयोग से अपनी गतिविधि प्रत्येक नगर, कस्बे और गाँव तक फैला दे—इस प्रकार यह आन्दोलन राष्ट्रव्यापी हो सकता है। इन विभिन्न शाखाओं के द्वारा देश भर में उसी तरह पुस्तकोत्सव मनाया जा सकता है जैसे वनमहोत्सव आदि अन्य उत्सव मनाये जाते हैं।

प्रेरणा के स्रोत

अपना कार्यक्रम संयोजित करने के लिए नेशनल बुक लीग विदेशों की ऐसी संस्थाओं से ही प्रेरणा ग्रहण कर सकती है। ऐसा पहला आदर्श इंगलैण्ड की नेशनल बुक लीग हो सकती है जो कि एक सार्वजनिक संस्था है और अपने सदस्यों के चन्दे पर ही पूर्णतया निर्भर करती है। इसका उद्देश्य पुस्तकों के पूर्ण उपयोग और उपभोग को प्रोत्साहित करना है। इसकी गतिविधियों में प्रदर्शनियों और व्याख्यानों का प्रबन्ध करना, सूचियाँ भेजना, सूचनाएँ देना, संदर्भ पुस्तकालय संचालित करना आदि है। अठारहवीं शताब्दी के एक प्राचीन ऐतिहासिक सुन्दर भवन में इसका प्रधान कार्यालय है जहाँ अपने सदस्यों को यह क्लब की सुविधा भी देती है। इस संस्था के नाम की भ्रांति से बचने के लिए हम अपनी संस्था का नाम बुक लीग आफ इण्डिया या नेशनल बुक सोसाइटी आफ इण्डिया भी रख सकते हैं।

अमरीका का नेशनल बुक वीक आफिस भी इसी उद्देश्य को सामने रख कर काम करता है। वहाँ चिल्ड्रन बुक कौंसिल भी है जो बाल साहित्य की लोकप्रियता के लिए सूचियाँ भेजता, प्रदर्शनियाँ करता, पुरस्कार देता, बाल पुस्तक समारोह आयोजित करता तथा पोस्टर, झंडियाँ आदि आकर्षक प्रचार-सामग्री वितरित करता है। यह काफ़ी उपयोगी काम है। यदि आज बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की आदत पड़ जायगी तो कल के नागरिकों की समस्या स्वयं सुलझ जायगी। हमारी लीग बाल-आयोजनों को पर्याप्त महत्व दे।

जापान में ऐसी ही एक संस्था है जिसके नाम से पुस्तक प्रोत्साहक संघ का आशय प्रकट होता है। पुस्तक-जगत् से संबंधित संघों के द्वारा इस संघ का संगठन हुआ है। यह अक्तूबर २७ से नवम्बर ३ तक राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह मनाता है। ३ नवम्बर को जापान का राष्ट्रीय संस्कृति दिवस होता है। पहले यह सम्राट हिरोहितो के पितामह सम्राट मेजी के जन्म-दिवस के रूप में मनाया जाता था—पिछले महायुद्ध से राष्ट्रीय सांस्कृतिक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसके बाद १ मई से १४ मई तक बालपक्ष के समारोह होते हैं। इन दोनों अवसरों पर संघ हजारों रंगीन पोस्टर, झंडियाँ और परचे बाँटता है। अनाथ बच्चों को पुस्तकें भेंट की जाती हैं। इस संघ की २७ शाखाएँ हैं। १० अप्रैल को महिला दिवस और १० जनवरी को प्रौढ़ दिवस का आयोजन भी यह संघ करता है। इस प्रकार संघ की गतिविधि पूरे वर्ष भर तक रहती है। इस संस्था से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अखिल

भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा पिछले दिनों में ऐसी गतिविधियाँ संगठित हुई हैं। तीन वर्ष पहले प्रधानमन्त्री नेहरूजी के जन्म-दिवस पर बाल-दिवस के उपलक्ष्य में भारत में पहली बार बाल-पुस्तक-सप्ताह का आयोजन किया गया था। बड़े सुन्दर कलापूर्ण पोस्टर बाँटे गये थे, प्रदर्शनियाँ हुई थीं और किसी सीमा तक समाचार पत्रों द्वारा भी प्रचार किया गया था। पिछले दो वर्षों से राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह आयोजित होता है।

कुछ क्षेत्रों से सुझाव मिला है कि पुस्तकों के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों का भार नेशनल बुक ट्रस्ट ले—उसके पास धन भी है और अब लोगों के सामने उसका नाम परिचित-सा है। अन्य प्रकाशकों की भाँति प्रकाशन में अपव्यय न करके वह अपने साधनों को इस दिशा में लगा दे तो अधिक लाभदायक काम होगा। सुझाव अच्छा है परन्तु इसे स्वीकार या अस्वीकार करना बुक ट्रस्ट का ही काम है। वैसे वह अपनी प्रकाशन योजना के साथ भी ऐसी गतिविधियों को अपने कार्यक्रम का अंग बना सकता है और राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध कर सकता है। वैसी स्थिति में उसे स्वतंत्र पुस्तक-व्यवसाय से तथा अन्य क्षेत्रों से भी कुछ सदस्य संयोजित करने पड़ेंगे।

अन्त में मुझे यही कहना है कि नेशनल बुक लीग की स्थापना की आवश्यकता पर जितना बल दिया जाय उतना ही कम है। पुस्तकों का प्रचार-प्रसार हमारे राष्ट्रीय जीवन की प्रत्येक गतिविधि को प्रभावित करेगा। यह एक ऐसा ब्रह्मास्त्र होगा जिससे हमारी पंचवर्षीय योजनाएँ भी आसानी से और तेजी के साथ आगे बढ़ेंगी। पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में इससे बड़ी कोई सेवा नहीं होगी कि नेशनल बुक लीग (राष्ट्रीय पुस्तक परिषद) की स्थापना की जाय जो जनता को अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने का आह्वान दे। ●

काशक

पाठ्यसामग्री संबंधी सेमिनार में
डॉ० निहाररंजन राय का भाषण
सुनकर उठे हुए प्रश्न

भारत के प्रकाशन व्यवसाय पर विदेशी 'आक्रमण' की आशंका

श्री राधारमण शर्मा
११ ई, कमलानगर, नई दिल्ली

कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारतीय कला और संस्कृति के प्राध्यापक डॉ० निहाररंजन राय गम्भीर विद्वान हैं और संसद सदस्यों में प्रमुख स्थान रखते हैं। यूनेस्को के तत्वावधान में पाठ्य-सामग्री सम्बन्धी जो सेमिनार हुआ उसमें अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने आपको पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में कलाकार संघों के योगदान पर निबन्ध-पाठ के लिए आमंत्रित किया था। अपने भाषण में आपने पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण को शिल्प सिद्ध किया और विस्तार के साथ बताया कि आज के पुस्तक-प्रकाशन में इस तथ्य को सदा सामने रखने की महती आवश्यकता है। इस सिलसिले में आपने कुछ ऐसे तथ्य भी प्रस्तुत किये हैं जिन पर भारतीय प्रकाशकों को ही नहीं भारतीयता के उपासकों और उन्नायकों को भी गम्भीरता के साथ विचार करना चाहिए।

वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकें

डॉ० राय ने अपने भाषण में सूचना दी है कि प्रारम्भिक कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकें प्रस्तुत करने वाले प्रकाशकों में एक दो की चीजें ही मानदण्ड के अनुरूप समझी गई हैं—और वे मूलतः विदेशी प्रकाशक हैं। आगे चल कर आपने कहा है कि कुछ दिन पहले हायर सैकण्ड्री स्तर में काम आने लायक तकनीकी पुस्तकों का सर्वेक्षण हुआ था। आप विश्वास न करेंगे वह सारा क्षेत्र विदेशी प्रकाशकों के हाथ में है। यूनिवर्सिटी स्तर पर काम आने वाली सब वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकें मूलतः विदेशिनी हैं। और अब ब्रिटिश कौंसिल इस व्यवसाय में उतर रही है—यू० एस० आई० एस० इस क्षेत्र में आ रही है।

आधे से अधिक बाजार विदेशियों के हाथ में

वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकों की चर्चा करते हुए अपने भाषण में डॉ० राय ने एक अन्य स्थान पर यह भी कहा है कि आधे से अधिक बाजार विदेशी प्रकाशकों ने ले लिया है परन्तु इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ब्रिटिश कौंसिल और यू० एस० आई० एस० इसलिये मैदान में आ रही हैं कि हमारे प्रकाशकों ने दूर-दर्शिता का प्रमाण देकर भविष्य को देखने का प्रयास नहीं किया। दूसरे मैदान बढ़ रहा है—दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। हमारे प्रकाशकों को क्रियाशीलता और कल्पना-प्रवणता के साथ आगे बढ़ना और इस प्रकार का अपेक्षित साहित्य सुन्दर रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

बढ़ता हुआ मैदान

बढ़ते हुए मैदान के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए आपने बताया है कि छोटे से पश्चिमी बंगाल में हायर सैकण्ड्री स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों की संख्या ढाई लाख है। पिछले वर्ष वहाँ एक लाख साठ हज़ार विद्यार्थी इसकी अन्तिम परीक्षा में बैठे हैं। इस वर्ष यह संख्या एक लाख अस्सी हज़ार हो गई है। केरल में भी लगभग यही स्थिति है। बिहार से राजस्थान तक शिक्षा की औसत, विशेषतः माध्यमिक स्तर में अवश्य बहुत कम है परन्तु पूरे दक्षिण की अवस्था सर्वथा भिन्न है और महाराष्ट्र बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालयों की संख्या पिछले दस वर्षों में भारत में चौगुनी हो गई है अर्थात् इस समय ५६ विश्वविद्यालय या इसी स्तर की शिक्षा-संस्थाएँ वर्तमान हैं और उनमें विद्यार्थियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ रही है। पाठ्य-सामग्री की माँग इस दृष्टि से निरन्तर बढ़ती ही रहेगी। यह आप पहले ही बता चुके हैं कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में शिक्षा का अनुपात ६० प्रतिशत और चौथी के अन्त में ८२ प्रतिशत हो जायगा। फलतः पाठ्य-सामग्री की माँग, विशेषतः ६ से १४ वर्ष तक की आयु वालों के लिए, बहुत बढ़ जायेगी। आपने कहा—कहना चाहिए वह एक विराट शून्य होगा—जो सरकार को और प्रकाशकों को भरना पड़ेगा।

विदेशी प्रकाशकों की क्षमता

डॉ० राय की सान्त्वना काफी गुरु-गम्भीर है फिर भी

विदेशी प्रकाशकों की चर्चा के रूप में उन्होंने जो चेतावनी दी है वह चुनौती अधिक प्रतीत होती है। कारण यह है कि आँकड़ों की दुनिया कई बार अपनी वास्तविकता में उतनी मनोहर नहीं होती। दूसरे अपने इसी निबंध में डॉ० राय ने विदेशी प्रकाशकों की आश्चर्यजनक क्षमता का आभास भी दिया है। जर्मनी के एक प्रकाशन-गृह की चर्चा करते हुए आपने बताया है कि सन् १९३३-३४ में ही वह हमारी कल्पना के मानदण्ड को भी परास्त करता था। दूसरे महायुद्ध के बाद सन् १९४६ में मैं वहाँ गया तो सब कुछ ध्वस्त हो चुका था परन्तु सन् ५२ और ५६ में यह देखकर आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि उसी प्रकाशन-गृह ने छपाई की आधुनिकतम व्यवस्था भी अपनी कर ली है और वह इतनी क्षमतापूर्ण है कि एक घंटे में पाँच रंगों वाली-प्लेट की एक लाख से अधिक प्रतियाँ छप जाती हैं। ८ पेज का एक जनरल ५ बजे मशीन पर जाता है और ६ बजे तक लाखों की संख्या में छप जाता है।

विदेशीकरण ?

मैदान चाहे जितना बड़ा हो, चाहे जितना बढ़ता जाता हो और ब्रिटिश कौंसिल तथा यू० एस० आई० एस० की सद्भावना भी सवा सौ प्रतिशत खरी हो परन्तु प्रश्न यह है कि क्या ऐसा विराट उत्पादन करने वाले विदेशी प्रकाशकों को अपनी दानवी मशीनों के लिए चारे की जरूरत न होगी और वे बड़ी मंडियाँ ढूंढने का प्रयास न करेंगे ? जो लोग आज उनके माल की प्रशंसा और उनके काम की सराहना कर रहे हैं वे तब उनके सहायक न होंगे ? विदेशी प्रकाशक अपनी इस विराट क्षमता का एक अंश ले कर भी भारत के मैदान में उतर आये तो डॉ० राय के ही शब्दों में १९वीं सदी के साधनों पर निर्भर भारतीय मुद्रक और भारतीय प्रकाशक उनके मुकाबले पर कहाँ खड़े हो सकेंगे और उस स्थिति को क्या प्रकाशन व्यवसाय का ही नहीं शिक्षा की सामग्री के क्षेत्र का भी विदेशीकरण न कहा जायगा ? क्या अपने आप में असफल होता हुआ पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण अन्त में इसी विदेशीकरण के रूप में परिवर्तित हो जायगा ?

ये पंक्तियाँ प्रारम्भ करते समय जिन भारतीय प्रकाशकों और भारतीयता के उन्नायकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास किया गया है, वे ही इन बड़े प्रश्नों का सही उत्तर दे सकते हैं और इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं।

पुनश्च: ये पंक्तियाँ डॉ० राय का भाषण सुनने के बाद उसी समय लिखी गई थीं। 'हिन्दी प्रकाशक' में उसी समय प्रकाशनार्थ भेजने का विचार भी था परन्तु श्रद्धेय पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की यह चेतावनी याद आ गई कि कोई विचार उठते ही उसे सींग पर रखकर बाज़ार में दौड़ना अच्छा नहीं होता। इसलिए रुक गया।

अब 'हिन्दी प्रकाशक' का जनवरी अंक अपने पृष्ठ ४३-४४ पर एक साथ तीन-चार समाचार लेकर सामने आया है। एक समाचार के अनुसार भारत सरकार ने एक ब्रिटिश कम्पनी के साथ एक हजार वैज्ञानिक पुस्तकें छापने और कलकत्ते में एक प्रेस स्थापित करने के लिए समझौता किया है। दूसरे समाचार के अनुसार एक अमरीकी प्रकाशक को भारत में ५१ प्रतिशत पूंजी लगा कर अपनी कम्पनी स्थापित करने की अनुमति दी गई है। तीसरे समाचार के अनुसार दिल्ली के एक प्रतिष्ठान ने दिल्ली में एक प्रेस खोलने के लिए एक ब्रिटिश कम्पनी से समझौता किया है और भारत सरकार ने उसे अनुमति प्रदान की है। इन समाचारों से वह आशंका यथार्थ का रूप ग्रहण करती प्रतीत होती है जो उपरोक्त पंक्तियों में प्रकट की गई है। प्रकाशन के साथ-साथ भारतीय मुद्रण-व्यवसाय भी अब इसमें सम्मिलित हो जाता है।

'हिन्दी प्रकाशक' के इसी अंक में शिक्षा-सचिव श्री कृपाल का एक भाषण भी प्रकाशित हुआ है, उसमें आपने कुछ सरकारी योजनाओं के कारण कुछ प्रकाशकों में उत्पन्न बेचैनी को निरर्थक बताया है और कहा है कि विदेशी सहयोग से वैज्ञानिक पुस्तकों के पुनर्मुद्रण आदि की योजनाएँ भारतीय प्रकाशकों और लेखकों के लिए कोई खतरा उत्पन्न नहीं करतीं और सारा काम भारतीय प्रकाशकों के सहयोग से ही होगा। श्री कृपाल उत्तरदायी अधिकारी ही नहीं, भारतीयता और भारतीय प्रकाशकों के प्रति सहानुभूतिशील भी हैं। फिर भी यह आवश्यक जान पड़ा कि प्रकाशकों और मुद्रकों के सामने ये बातें रख दी जायँ और वे स्वयं इन पर विचार कर लें।

बिक्री बढ़ाने के उपाय

अनुभवी प्रकाशकों, विक्रेताओं और लेखकों के विचार

प्रचार की समस्या

श्री दयानंद वर्मा
संचालक, पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली

जनरुचि के अनुसार पुस्तकें प्रकाशित करना जनता के निकट पहुँचना है किन्तु वैसी पुस्तकें छाप लेना ही काफ़ी नहीं है—करेंसी नोटों को पुस्तकों का रूप देना सरल है लेकिन उन पुस्तकों को पुनः नोट बनाना श्रमसाध्य है।

आज का युग प्रचार का युग है। लेकिन आज का प्रचार इतना महँगा बन चुका है कि कोई भी व्यक्तिगत प्रकाशन संस्था इसका सहारा लेकर लाभ में नहीं रह सकती। केवल वही वस्तुएं विज्ञापन के सहारे लाभदायक बिक्री दे सकती हैं जो या तो नित्यप्रति की जरूरत की चीजें हों या ऐसी जिनका नफा ७०-८० प्रतिशत से कम न हो। सिरदर्द की गोलियों का विज्ञापन जितनी बिक्री ला सकता है भगवती चरण वर्मा के 'चित्रलेखा' का नहीं। 'चित्रलेखा' के खरीदने के लिए उपभोक्ता का शिक्षित होना जरूरी है। विशेष रूप से वह हिन्दी पढ़ा हो, उसकी रुचि परिष्कृत हो, जबकि सिरदर्द की दवा का खरीदार बनने के लिए कोई शर्त नहीं है!

सिरदर्द की गोलियां हों या साबुन, तेल, सिग्रेट, ये वस्तुएं विज्ञप्त होने पर हर शिक्षित-अशिक्षित अपने लिए उनकी ज़रूरत महसूस कर सकता है। ऐसी वस्तुओं के उत्पादकों के हित में जाने वाली सब से बड़ी बात यह भी है कि ये सब वस्तुएं प्रयोग के बाद घटती हैं, जबकि हमारा उत्पादन अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त होने पर भी वैसा ही रहता है। यही कारण है कि इस प्रकार की वस्तुओं का उत्पादक इनकी पब्लिसिटी पर दिल खोलकर जितना खर्च कर सकता है उतना पुस्तक-प्रकाशक नहीं कर सकता।

प्रकाशक की बेचारगी का अनुमान कीजिये कि वह जनरुचि के अनुसार पुस्तकें छापकर भी विज्ञापन के साधनों की महँगाई के कारण पाठकों तक उसकी सूचना नहीं पहुँचा पाता।

प्रकाशनों की सूचना देने के लिए सूचीपत्र एक कम खर्च का अच्छा साधन है, लेकिन ये सूचियां भी आम तौर पर वहीं पहुँचती हैं, जहां पुस्तकों का शौक पहले से है। जहां नया शौक पैदा करना है वहां तक सूचीपत्र पहुँचाना कठिन है। इस कठिनता से परित्राण पाने के लिए हमें उस तरीके से सोचना है जिस तरीके से चाय के प्रचलन से पूर्व चाय कम्पनियों ने सोचा था। उन्होंने लेबल-विशेष का विज्ञापन देने के बजाय केवल चाय शब्द से जन-साधारण को परिचित कराया था। सर्दी हो या गर्मी, बरसात हो या बसंत, नदी का किनारा हो या बस की यात्रा, हर समय के लिए चाय की ज़रूरत का उन्होंने अहसास कराया था। कोई भी अकेली कम्पनी समदर्शी भाव से इस प्रकार का प्रचार नहीं कर सकती थी, इसलिए 'सैन्ट्रल टी बोर्ड' को माध्यम बनाकर उन्होंने एक नये पेय की आदत डाल दी, जो अब हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है या लगता है।

इस दृष्टिकोण से देखने के साथ हमें यह पहले सोच लेना चाहिए कि पुस्तक चाय का स्थान कदापि न ले सकेगी। क्योंकि पुस्तक की खपत के साथ बहुत से बन्धन लगे हैं, जिनका कि पहले जिक्र किया जा चुका है, जो चाय के साथ नहीं हैं। लेकिन इतना अवश्य है कि इस प्रकार के सामूहिक प्रचार से इस व्यवसाय की आज के मुकाबिले में अधिक मज़बूत स्थिति बन सकती है।

जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि शिक्षित व्यक्तियों की संख्या भारत में बढ़ रही है। लेकिन जिस अनुपात से उनकी संख्या बढ़ी है उस अनुपात से जनरल बुक्स की

खपत (लाइब्रेरियों की खरीद को छोड़कर) नहीं बढ़ी। इसका कारण यह है कि एक ग्राम शिक्षित व्यक्ति को इस बात का ज्ञान नहीं कि परीक्षा पास करने के बाद भी उसे पुस्तक की ज़रूरत पड़ सकती है। ज़रा सोचिए तो हमारे जन-जीवन में परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद पुस्तक का स्थान ही क्या है? अध्यापक के भय से डरते-काँपते जो पुस्तक पढ़ ली, वही जीवन भर के लिए काफी हो गयी। हमारा सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि पुस्तकों के प्रति लोगों का भय उनके मन से निकालें और उन्हें इस वास्तविकता से परिचित करायें कि पुस्तक के अध्ययन का पूरा आनन्द तो मिलता ही परीक्षा पास करने के बाद है।

इस समय ज़रूरत इस बात की है कि कोई संस्था समय-समय पर फिल्मों, स्लाइड़ों, कैलेण्डरों तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम द्वारा केवल पुस्तक की आवश्यकता पर बल देकर लोगों को पढ़ने के लिए उत्साहित करे। यात्रा, घर, ब्याह तथा उत्सव आदि के अवसर पर पुस्तक के पठन और समर्पण के महत्व पर प्रकाश डाले। लोगों को यह ज्ञान कराये कि उन्हें पुस्तक की हर कदम पर ज़रूरत है। वह पुस्तक के द्वारा अपना व्यवसाय अच्छे ढंग से चुन सकता है, चुने हुए व्यवसाय में पारंगत बन सकता है, साथी की कमी पूरी कर सकता है, कोई उद्योग-धन्धा शुरू कर अपनी आय बढ़ा सकता है, दुश्मनों को दोस्त बना सकता है, दोस्तों को साथी बना सकता है। स्त्रियाँ पुस्तकों की मदद से स्वादिष्ट भोजन बना सकती हैं, कढ़ाई-बुनाई में कुशलता प्राप्त कर सकती हैं, बच्चों को अच्छे ढंग से पाल सकती हैं, घर को सजा सकती हैं। विवाहित जोड़े अपने जीवन को मधुर बना सकते हैं। कर्मचारी अपने अफ़सर को मेहरबान बना सकता है, व्यवसायी अपने व्यापारियों की संख्या बढ़ा सकता है, नये रोज़गार सोच सकता है, संसार की गतिविधि की जानकारी प्राप्त कर सकता है। गर्ज़े की अच्छी पुस्तक हर वर्ग के व्यक्ति को हर समय, हर क्षण पहले की अपेक्षा अधिक दक्ष और चतुर बनाती है। यह सब सच्चाइयां हैं जिनसे जनसाधारण अनभिज्ञ हैं। उन्हें भिज्ञ बनाकर पुस्तकों की बिक्री को कई गुना बढ़ाया जा सकता है।

यह सब कुछ करने के साथ ही, उक्त संस्था के तत्वावधान में सभी विषय की पुस्तकों का वृहत् सूचीपत्र छापना चाहिए, जिसमें से हर व्यक्ति अपने मनपसन्द विषय की पुस्तक चुन सके। सूचीपत्र में संस्था से सम्बद्ध सभी सदस्यों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बिना किसी भेद-भाव के विषयवार अकारादि क्रम से दी जाएं और पुस्तक का मूल्य, विषय, पृष्ठसंख्या, साइज, प्राप्तिस्थान आदि का स्पष्ट उल्लेख हो ताकि कोई भी व्यक्ति कहीं से पुस्तक मँगा सके। संस्था के यहाँ दर्जशुदा ग्राहकों के पते सभी सम्बद्ध सदस्यों की पूंजी समझे जाएँ।

यह सारा काम काफ़ी अर्थ-साध्य है। कोई एक प्रकाशक निष्पक्ष रहकर यह सब कुछ नहीं कर सकता और जो संस्था यह सब काम अपने जिम्मे ले वह भी आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो, तो ये सारे सपने साकार बन सकते हैं।

सौभाग्यवश हिन्दी प्रकाशकों की अखिल भारतीय संस्था 'संघ' पहले से मौजूद है। लेकिन संघ की वर्तमान आर्थिक स्थिति इस योग्य नहीं समझी जा सकती कि वह यह सब काम कर सके। उसे अधिक अर्थ-सम्पन्न बनाने के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं, जिन पर विचार करके सम्भव है किसी निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके।

(१) प्रकाशक अपनी पुस्तकें विभिन्न प्रदेश सरकारों या जिलों में स्वीकृत कराने के लिए उचित-अनुचित खर्च करते हैं। हर पुस्तक के साथ कुछ न कुछ धनराशि फ़ीस के रूप में जमा कराते हैं। यदि संघ को भी किसी एक प्रदेश की सरकार मानते हुए हर प्रकाशक प्रति पुस्तक पर कुछ फीस दे तो प्रकाशक को भी महसूस न होगा और संघ भी सम्पन्न बनेगा। और उस फीस के बदले संघ उक्त सूची में पुस्तक का नाम शामिल करे।

(२) प्रचार खर्च के लिए वार्षिक चन्दे में कोई परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए बल्कि प्रकाशकों के कुछ वर्ग बनाकर उनसे उनकी स्थिति के अनुसार विज्ञापन फण्ड का चन्दा अलग से लिया जाए।

प्रकाशकों के वर्ग कुछ इस किस्म के बनाए जाएं :—

क—सालभर में लगभग दस या दस से कम हिन्दी पुस्तकें छापने वाले प्रकाशक।

ख—दस से पच्चीस पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशक।

हमारी अल्पमोली-माला के सेट (प्रकाशित)

पहला सेट

१. **दशरथनंदन श्रीराम** —च० राजगोपालाचार्य २.५०
सजीव और रोचक शैली में वाल्मीकि रामायण पर आधारित भगवान् राम की कहानी।

२. **इंगलैंड में गांधीजी** —महादेव देसाई १.२५
गोलमेज-परिषद् के दिनों का ऐतिहासिक यात्रा-वृत्तान्त तथा संस्मरण।

३. **गांधी की कहानी** —लुई फिशर १.५०
सुप्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार द्वारा गांधीजी के महान् व्यक्तित्व तथा कार्यों पर प्रकाश।

४. **कोई शिकायत नहीं** —कृष्णा हठीसिंग १.५०
नेहरू-परिवार की मर्मस्पर्शी कहानी।

५. **आंसू और मुस्कान** —खलील जिब्रान १.००
विचार-प्रेरक, भावनापूर्ण कृति—गद्य में पद्य का आनन्द देनेवाली।

६. **अमृत की बूंदें** —सम्पा० आनन्दकुमार १·००
विद्वानों तथा प्राचीन ग्रन्थों की रचनाओं से सुभाषित।

७. **अठारहसौ सत्तावन** —हर्डीकर १.२५
महान् क्रांति का प्रामाणिक इतिहास, दुर्लभ चित्रोंसहित।

दूसरा सेट

१. **इतिहास के महापुरुष** —जवाहरलाल नेहरू १.५०
ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रेरणादायक संस्मरण।

२. **सर्वोदय-संदेश** —विनोबा १.५०
सर्वोदय के बुनियादी सिद्धांतों का निरूपण।

३. **बापू की कारावास-कहानी** —सुशीला नैयर २.५०
आगाखां-महल में गांधीजी के बन्दी-जीवन की मार्मिक कहानी।

४. **तूफान और ज्योति** —सुमतिदेवी धनवटे १.५०
जीवन के हृदय-स्पर्शी उतार-चढ़ावों पर आधारित उपन्यास।

५. **रूस में छयालीस दिन** —यशपाल जैन १.५०
विश्व के शक्तिशाली देश की यात्रा का रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक वृत्तान्त।

६. **प्राकृतिक जीवन की ओर** —एडोल्फ जस्ट १.५०
सही ढंग पर जीवन व्यतीत करने तथा स्वस्थ रहने का मार्ग बताने वाली पुस्तक।

तीसरा सेट

१. **खंडित पूजा** —विष्णु प्रभाकर १.५०
मौलिक कहानियों का रोचक संग्रह।

२. **भारत-विभाजन की कहानी** —ए. के. जान्सन १.५०
पाकिस्तान बनने और भारतीय आजादी के आगमन की रोचक कहानी।

३. **चिकित्सक की यूरोप-यात्रा** —विट्ठलदास मोदी १.५०
सुप्रसिद्ध प्रा० चिकित्सक की रोचक यात्रा का वर्णन। यूरोप में प्राकृतिक चिकित्सा-संबंधी जानकारी।

४. **सूफी-संत-चरित** —महात्मा भगवान दीन १.५०
अरब देश के सूफी संतों के चरित। हिन्दी के पुराने लेखक तथा कवि श्री क्षेमानंद 'राहत' की लेखनी से, जो अब स्वयं पहुँचे हुए संत हो गये हैं।

५. **रेबेका** —अनु० शांति भटनागर २.५०
सुप्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यास का हिन्दी रूपांतर।

चौथा सेट

१. **सिपाही की बीवी** —मामा वरेरकर १.५०
सामाजिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास।

२. **अनोखा** —विक्टर ह्यूगो २.५०
'दि लाफिंग मैन' का हिन्दी रूपांतर।

३. **धरती के देवता** —खलील जिब्रान १.५०
जिब्रान की भावपूर्ण रचनाओं का हिन्दी रूपांतर।

४. **सूक्ति रत्नावली** —सं० आनंदकुमार १.५०
विविध विषयों की सूक्तियों का संग्रह।

५. **संघर्ष नहीं सहयोग** —क्रोपाटकिन २.००
सुप्रसिद्ध पुस्तक '**म्यूचिअलएड**' का हिन्दी रूपांतर।

६. **विनोबा के पत्र** —सं० रामकृष्ण बजाज २.००
बजाज-परिवार के नाम।

७. **इतनी परेशानी क्यों?** —श्रीमन्नारायण १.५०
विचार-प्रेरक लघु-निबन्ध।

ये सब पुस्तकें इतने सस्ते मूल्य में और सुन्दर ढंग से इसलिए निकाली जा रही हैं कि सत्साहित्य का प्रचार हो और अल्प-साधनवाले महानुभाव भी इन्हें खरीदकर अपने घर में एक छोटे-से पुस्तकालय का श्रीगणेश कर सकें।

- ये सब सेट अपने यहाँ रखिये।
- इतनी बढ़िया पुस्तकें इतने कम मूल्य में अन्यत्र शायद ही मिलें।

सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

ग—सालभर में २५ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशक।

संघ द्वारा प्रचारित हर विज्ञापन के अंत में वृहद् सूची मंगाने का संकेत रहने से सूची लाखों की संख्या में नये व्यक्तियों के पास पहुंचेगी। और यदि सूची का सम्पादन डिक्शनरी के ढंग से हुआ हो तो वह कुछ अर्से बाद इतना महत्व प्राप्त कर सकती है कि हर लायब्रेरी अपनी खरीद की लिस्ट बनाने के लिए उस सूची का परामर्श प्राप्त करना जरूरी समझे।

विज्ञापन के खर्च में कटौती कराने के लिए पत्र-संचालकों से मिलकर विज्ञापन दर में कमी करायी जा सकती है। यह कह कर कि पाठकों की संख्या का बढ़ना पत्र-संचालकों के भी हित की बात है—उनसे सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार की आशा हो सकती है।

यह सब कुछ कहना जितना सरल लग रहा है, करने में शायद इतना सरल न लगे, किन्तु यह योजना एक ऐसा वृक्ष जरूर है जिसका फल चाहे हम तुरन्त न खा सकें लेकिन यह निश्चित है कि वृक्ष पर फल लगेगा अवश्य।

श्री दयानन्द वर्मा की यह परिकल्पना 'नेशनल बुक लीग' के रूप में मूर्त होने जा रही है। 'नेशनल बुक लीग' सम्बन्धी श्री दीनानाथ मल्होत्रा का निबन्ध, जो मल्होत्राजी ने यूनेस्को द्वारा आयोजित दिल्ली की गोष्टी में पढ़ा था, अन्यत्र देखिए।

बिक्री में बाधा

श्री रघुवीर शरण बंसल

संचालक, बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली

आजकल समस्त प्रकाशक एक स्वर से यही कहते हैं कि पुस्तकों की बिक्री नहीं है। इसके विपरीत पुस्तकालय अध्यक्ष कहते हैं कि हमारे पास अच्छी पुस्तकें नहीं पहुँच पातीं और पुस्तक-विक्रेता कहता है कि पुस्तकें नहीं मिलतीं, सप्लाई कैसे करूँ? यदि दोनों बातों को सही माना जाए तब ऊपर की बात गलत प्रमाणित होती है। इस पर एक उदाहरण आपके सम्मुख रखता हूँ।

मुझे एक पुस्तकालय से १७ पुस्तकों का आर्डर मिला। राजधानी में जहाँ-जहाँ पर भी हिन्दी पुस्तकों के भण्डार थे, वहाँ पर पुस्तकें लेने मेरा व्यक्ति गया किन्तु उस सूची की एक भी पुस्तक मुझे नहीं मिली और मैं असफल हो गया। विवश होकर आर्डर वापिस करना पड़ा। क्या इस स्थिति में कभी हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री बढ़ेगी? आज प्रत्येक हिंदी का प्रकाशक अपने प्रकाशन को ही बेचना चाहता है। वह इस बात का प्रयास करता है कि 'येन-केनप्रकारेण' कोई भी आर्डर उसको मिले, वह अपना माल भेजकर 'शेष अप्राप्य हैं' की मुहर लगाकर वापिस भेज दे, इससे क्या हिन्दी का लाभ होगा? जब तक हम प्रत्येक अच्छे शहर में हिन्दी की उत्तम कृतियों का भंडार नहीं रखेंगे, हिन्दी प्रकाशन कभी भी सफल नहीं हो सकता। यह भण्डार किस रूप में रहे और कैसे चले, यह पृथक् सोचने की बात है।

हिन्दी प्रकाशन की बिक्री के लिए और भी दो बातें प्रमुख रूप से सोचनी आवश्यक हैं:—

क—हिन्दी पुस्तकों की परिचयात्मक पुस्तक-सूची प्रकाशित हो। यह सूची विषयानुसार एवं स्तरानुसार होनी चाहिए और कम से कम जहाँ पर भी पुस्तक की खरीद होती हो, वर्ष में उस सस्था के पास दो बार अवश्य ही सूची जाए।

ख—इस सूची की पुस्तकें कम से कम प्रत्येक प्रान्त की राजधानी एवं जहाँ हिन्दी के प्रमुख स्थान हैं, उस नगर में मिल सकें। जिस दिन ये दोनों बातें हो जायंगी, मेरा विश्वास है कि हिन्दी पुस्तकों की बिक्री अवश्य ही बढ़ेगी।

प्रकाशक, प्रकाशक ही रहे, पुस्तक-विक्रेता नहीं—यह सिद्धान्त वास्तव में उत्तम है किन्तु इसी के साथ हमें किसी एक पुस्तक-विक्रेता को बड़े-बड़े नगरों में अवश्य ही भण्डार रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और यदि कोई पुस्तक-विक्रेता नहीं मिलता, तब सहकारिता के आधार पर प्रकाशक संघ को बुक-सेंटर की योजना प्रारम्भ करनी चाहिए।

आशा है, आप मेरे इन विचारों पर तथा सुझाव पर यदि कुछ उपयोगी समझें तो विचार करने की कृपा करेंगे। इस योजना में मैं प्रत्येक प्रकार से सक्रिय योग देने को तैयार हूँ।

इस लेखमाला के स्वत्वाधिकार लेखक के आधीन हैं

प्रकाशक और लेखक-३

श्री बाल कृष्ण, एम. ए.

प्रस्तुत लेख-माला की दूसरी किस्त में हमने यह प्रतिपादित किया था कि प्रकाशक और लेखक का आपसी सम्बन्ध सहयोगियों का है, वे दोनों प्रकाशन-व्यवसाय में साझीदार हैं।

यदि प्रकाशक और लेखक दोनों को प्रकाशन-व्यवसाय में साझीदार मान लिया जाए तो इस सिद्धान्त का सीधा निष्कर्ष यही निकलता है कि इस व्यवसाय के लाभ में दोनों साझीदार हैं। सामान्यतः इस व्यवसाय में—सारे संसार में—दोनों की यही स्थिति मानी जाती है। प्रकाशन-व्यवसाय के लाभ में से जो अंश लेखक को मिलता है उसे 'रॉयल्टी' कहते हैं, किन्तु प्रकाशक के भाग को कोई विशेष नाम नहीं दिया गया है। उसे सामान्यतः 'प्रकाशक का लाभ' ही कह देते हैं।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि दोनों के ही लाभ के बटवारे का क्या आधार होना चाहिए। दूसरे शब्दों में लाभ में से दोनों के भाग का क्या अनुपात होना चाहिए। किन्तु दोनों के भाग का अनुपात तय करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि इस व्यवसाय में लाभ होता कितना है।

प्रकाशन-व्यवसाय में लाभ की दर मालूम करने का कोई एक निश्चित सूत्र नहीं है। प्रत्येक उद्योग-व्यापार में लाभ निकालने का सीधा तरीका यही होता है कि आय में से व्यय घटा दिया जाए। किसी पुस्तक की बिक्री से एक विशेष धनराशि प्राप्त होगी और उसके मुकाबले में कई मदों में कुछ रकम खर्च होनी है; दोनों का अन्तर पुस्तक-व्यवसाय का लाभ हुआ। किन्तु पुस्तक-उत्पादन में और अन्य औद्योगिक उत्पादनों में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। प्रत्येक पुस्तक अपने-आप में एक अलग इकाई है। किन्हीं दो पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या समान होते हुए भी उनके उत्पादन-व्यय तथा अन्य मदों में होने वाले खर्च में बहुत भारी अन्तर हो सकता है। इसी प्रकार समान पृष्ठ-संख्या वाली दो पुस्तकों का विक्रय-मूल्य भी बहुत भिन्न हो सकता है। लाभ की दर की चर्चा करने से पहले यह समझना आवश्यक है कि किन आधारों पर (सामान्यतः) पुस्तक का विक्रय-मूल्य निश्चित किया जाता है, और पुस्तक-उत्पादन तथा बिक्री पर होने वाले खर्च की मदें क्या हैं, तथा विभिन्न पुस्तकों के विक्रय-मूल्य और खर्च में भारी अन्तर क्यों हो जाता है।

पहले हम पुस्तक पर होने वाले उत्पादन-व्यय तथा बिक्री-सम्बन्धी खर्चों को लेंगे।

सब से पहले हम पुस्तक के मुख्य उपादान काग़ज़ को लेते हैं। पुस्तक चौदह-पंद्रह रुपये रीम के न्यूज़प्रिंट काग़ज़ पर भी छप सकती है, पच्चीस-तीस रुपए रीम के व्हाइट-प्रिंटिंग पर भी और सत्तर-अस्सी रुपए रीम के आर्ट-पेपर पर भी। अब छपाई को लें तो वहाँ भी दो पुस्तकों पर होने वाले व्यय में बहुत अन्तर हो सकता है। छपाई की दरों में विभिन्न नगरों में तो अन्तर है ही, किसी एक ही नगर के विभिन्न प्रेसों में भी यह अन्तर काफ़ी बड़ी मात्रा में विद्यमान है। दिल्ली को ही ले लीजिये—एक प्रेस यदि १२ प्वाइंट मोनो की छपाई तीस रुपए फ़र्मे पर कर रहा है, तो ऐसे भी प्रेस हैं जो चालीस, पचास, साठ रुपए—बल्कि इससे भी ज्यादा—रेट माँगते हैं। फिर मुद्रण की विभिन्न प्रक्रियाओं के अनुसार भी मुद्रण-व्यय में बहुत अन्तर पड़ जाता है। लैटर-प्रेस में पुस्तक छपवाने से (विशेष कर यदि पुस्तक सचित्र है और चित्र रंगीन छप रहे हैं) और आफ़सेट पर पुस्तक छपवाने में छपाई का व्यय बहुत भिन्न हो सकता है। जैकेट यदि लगना है तो उसका काग़ज़ और छपाई (जैकेट एक रंग में छपना है या दो या तीन या चार रंगों में, अथवा वह केवल टाइपों में सैट होना है) भी पुस्तक में कुल उत्पादन-व्यय में थोड़ा-बहुत अन्तर डाल सकते हैं। अब बाइंडिंग को लें तो इस मद में खर्च होने वाले व्यय में भी बहुत अन्तर पड़ सकता है। कच्ची और पक्की जिल्द के व्यय में तो बहुत अन्तर होता ही है, पक्की जिल्द पर भी दो पुस्तकों के व्यय में बहुत भिन्नता हो सकती है।

विलायतों में सामान्यत: जिल्दों के दो प्रकार होते हैं—पेपर-बैक (Paper-back) और पक्की। किन्तु वहाँ पक्की जिल्द का अर्थ होता है 'कपड़े की' (Cloth-bound)। पेपर-बैक जिल्द वहाँ मोटे कार्ड या आर्ट-पेपर की बनती हैं। फिर जिल्द चाहे पेपर-बैक वाली हो या कपड़े की, आमतौर पर वहाँ सिलाई जुज़बंदी की होती है। (सस्ती पुस्तकों में आजकल वहाँ सिलाई करते ही नहीं, वरन् पुस्तकों की मिसल उठाकर, पीछे की ओर से पूरी पुस्तक को तराश देते हैं—अर्थात् पुस्तक का प्रत्येक पन्ना अलग हो जाता है—और पूरी पुस्तक के पन्नों की पुश्त पर एक चेपदार चीज़ लगा देते हैं और उस पर कार्ड-शीट चढ़ा देते हैं।) किन्तु हमारे देश में जिल्दों के बहुत प्रकार हैं। यहाँ स्टिच-सिलाई करके उस पर कवर-पेपर अथवा कार्ड-शीट चढ़ाते हैं अथवा जुज़बंदी की सिलाई करके उस पर कार्ड-शीट चढ़ा देते हैं, या 'पक्की जिल्द' चढ़ा देते हैं। इस 'पक्की जिल्द' का हमारे देश में एक विचित्र रूप बना लिया गया है—गत्ते की जिल्द और कपड़े का पुश्ता या गत्ते पर पूरा काग़ज़ मंढा हुआ। यहाँ बहुत कम पुस्तकें कपड़े की जिल्द वाली बनाई जाती है, किन्तु फिर भी कुछ पुस्तकों पर कपड़े की पूरी जिल्द चढ़ाई जाती है। अब साधारण कवर-पेपर (या आर्ट-कार्ड आदि) चढ़ाकर कच्ची जिल्द के व्यय की तुलना पूरे कपड़े की जिल्द के व्यय से करें तो एक हज़ार प्रतियों पर सैकड़ों रुपयों का अन्तर पड़ जाता है। काग़ज़, छपाई और जिल्द-बंदी को छोड़कर अब चित्रों को लें। सचित्र पुस्तकों में चित्र बनवाने और ब्लाक बनवाने का खर्च भी अलग-अलग पुस्तकों पर अलग-अलग पड़ सकता है। ऐसे चित्रकार भी हैं जो दो-दो रुपए में पूरे पेज का चित्र बना देते हैं और बीस-पच्चीस-तीस—बल्कि इससे भी अधिक—रुपयों में एक चित्र बनाने वाले चित्रकार भी हैं। किसी पुस्तक में दिये जाने वाले चित्रों की संख्या और चित्रकार के दर के अनुसार तथा ब्लाकों की संख्या, ब्लाकों के प्रकार और प्रक्रिया के अनुसार विभिन्न पुस्तकों के उत्पादन-व्यय में बहुत अन्तर हो सकता है। जैकेट का डिज़ाइन दस-पाँच रुपए में भी बनवा लीजिये और सौ रुपए में भी। कहने का तात्पर्य यह है कि दो पुस्तकों के उत्पादन पर होने

वाले व्यय में बहुत अन्तर हो सकता है।

खर्च के मदों में दूसरा मद बुकसैलरों के कमीशन का लें तो वहाँ भी यही अन्तर दिखाई पड़ता है। पच्चीस प्रतिशत कमीशन से लगाकर तेंतीस, चालीस, पचास— बल्कि किसी-किसी पुस्तक पर इससे भी अधिक—कमीशन की दर मार्केट में चल रही है। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने इस क्षेत्र में एकरूपता लाने और व्यवस्था कायम करने की बड़ी कोशिश की, किन्तु खेद है कि संघ अपने इस सद्प्रयास में अभी तक सफल नहीं हो पाया है।

विभिन्न पुस्तकों के उत्पादन-व्यय और कमीशन की दरों में तो भारी अन्तर हो ही सकता है, और है, इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकाशन-संस्था के प्रबंध-व्यय (overhead charges) में बहुत अन्तर है। किसी संस्था में इस मद में होने वाले व्यय का पुस्तक के विक्रय-मूल्य से अनुपात ढाई-तीन प्रतिशत बैठता है तो किसी का आठ-दस प्रतिशत। यही स्थिति विज्ञापन पर किये जाने वाले खर्च की है।

किसी पुस्तक के विक्रय-मूल्य के मुकाबले में जो रुपया खर्च होता है हमने ऊपर उसकी मोटी-मोटी मदें दी हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रकार के छोटे-मोटे खर्चे होते हैं जिन्हें यदि जोड़ा जाय तो वे शुद्ध लाभ में काफ़ी अन्तर डाल देते हैं।

यह तो हुई खर्चों की मोटी और संक्षिप्त-सी चर्चा, अब, दूसरी ओर, पुस्तकों के विक्रय-मूल्य को लें तो वहाँ भी यही वैभिन्य हमारे सामने आता है। किसी पुस्तक का विक्रय-मूल्य उसके उत्पादन-व्यय से कितना गुणा रखा जाए—इसका भी कोई समान एवं निश्चित सूत्र नहीं है। विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का विक्रय-मूल्य बहुत अधिक भिन्न हो सकता है। वैज्ञानिक पुस्तकें, प्राविधिक पुस्तकें, कानूनी पुस्तकें, अनुसंधान पुस्तकें, कला-सम्बन्धी पुस्तकें आमतौर पर सामान्य साहित्यिक पुस्तकों की अपेक्षा अधिक—बल्कि कई बार बहुत अधिक—मूल्य पर बेची जाती हैं। यह अन्तर मुख्यतः पुस्तक के विषय से सम्बन्धित है किन्तु एक ही विषय की दो पुस्तकों के विक्रय-मूल्य में भी कई बार बहुत अन्तर देखने को मिल जाता है। ऐसा भी नहीं है कि यह अन्तर दोनों पुस्तकों के आकार (साइज़) अथवा कलेवर (Volume) की विभिन्नता पर ही आधारित हो। विक्रय-मूल्य का निर्णय और भी कई बातों को सामने रखकर किया जाता है। इस निर्णय पर पुस्तक की सम्भावित बिक्री-संख्या का बहुत प्रभाव पड़ता है। सम्भावित बिक्री का अनुमान भी कई अलग-अलग बातों पर आधारित होता है। इनमें जहाँ एक महत्त्वपूर्ण बात पुस्तक का विषय है (विज्ञान, अनुसंधान, कानून आदि), वहाँ दूसरी ओर, लेखक का नाम भी विक्रय के सम्भावित अनुमान पर प्रभाव डालता है। किसी एक ही विषय—उदाहरणार्थ कानून को ले लीजिये। यह मानकर भी कि कानून की पुस्तकों की बिक्री का क्षेत्र सीमित है, हमें यह बात स्वीकार करनी ही होगी कि कानून के अन्तर्गत भी किसी एक विशिष्ट कानून पर दो लेखकों द्वारा लिखी गई (समान आकार और कलेवर वाली) दो पुस्तकों की बिक्री भिन्न होगी। यहाँ लेखक की निजी योग्यता, ख्याति आदि का महत्व सामने आ जाता है, और इस तरह यह मानना पड़ता है कि "लाभ में लेखक का कितना भाग हो"—इस प्रश्न के निर्णय पर लेखक के नाम

का भी प्रभाव पड़ सकता है। अस्तु, पुस्तक की सम्भावित बिक्री के अनुमान में जहाँ पुस्तक के विषय और लेखक के नाम का हाथ रहता है वहाँ किसी प्रकाशन-संस्था की विक्रय-व्यवस्था भी बहुत महत्व रखती है। एक ही लेखक की दो (लगभग) समान पुस्तकें दो अलग-अलग प्रकाशन-संस्थाओं को दी जायं तो एक निर्धारित अवधि में दोनों की बिक्री-संख्या अलग-अलग होगी। और कई बार तो दो प्रकाशन-संस्थाओं द्वारा की गई बिक्री की संख्या में बहुत अधिक अन्तर हो जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जहाँ एक ओर लेखक की ख्याति और योग्यता पुस्तक की बिक्री पर प्रभाव डालती हैं, वहाँ दूसरी ओर, प्रकाशक की व्यावसायिक योग्यता, कौशल, विक्रय-व्यवस्था, विज्ञापन, प्रयत्न आदि भी कम प्रभावकारी नहीं होते। इस तरह लाभ के बटवारे में प्रकाशक के भाग का आधार केवल यही नहीं रह जाता कि वह पूँजी लगाता और रिस्क उठाता है, वरन् वह कहीं अधिक ठोस आधार पर आ टिकता है।

पुस्तक की बिक्री की सम्भावना का अनुमान किन आधारों पर लगाया जाता है या लगाया जाना चाहिए और किन बातों से वह सम्भावना बढ़ या घट सकती है— इस विषय का हम यहाँ विवेचन नहीं कर रहे। यह हमारे लेख का सीधा विषय नहीं है। केवल प्रसंगवश यहाँ हमने उसकी संक्षिप्त-सी चर्चा की है। इस चर्चा से केवल इतना भर कहना अभीष्ट था कि सम्भावित बिक्री-संख्या के अंतर के कारण किसी पुस्तक के विक्रय-मूल्य में बहुत अन्तर हो सकता है।

यह बात तो निश्चित है कि पुस्तक की सम्भावित बिक्री-संख्या का उसके मूल्य के निर्धारण पर प्रभाव पड़ता है, किन्तु प्रभाव क्या पड़ता है इस प्रश्न पर यहाँ एक छोटी-सी टिप्पणी देना अप्रासंगिक न होगा। अर्थशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुसार किसी वस्तु की अधिक बिक्री होने पर उसका मूल्य कम रखा जाना चाहिए। साथ ही चक्र के रूप में, मूल्य कम होने से बिक्री बढ़ती है। प्रति वस्तु लाभ की दर कम होने पर भी यदि उस वस्तु की बिक्री अधिक होती है तो उस पर होने वाला कुल लाभ अधिक होगा। इस नियम के अनुसार जिन पुस्तकों

की बिक्री अधिक होने की सम्भावना हो उनका विक्रय-मूल्य कम रखा जाना चाहिए। और प्रगतिशील तथा स्वस्थ-परम्पराओं का पालन करने वाली प्रकाशन-संस्थाएँ ऐसा हो करती भी है। किन्तु कुछेक प्रकाशकों की इस मामले में उल्टी प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। "यह पुस्तक तो खूब बिकेगी ही, इसलिए इसका मूल्य ऊँचा रख दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं" – ऐसा वे सोच लेते हैं। ऐसा करने में उनके मन में यह भी विचार रहता है कि कुछ अन्य पुस्तकें घाटे का सौदा रहीं, इसलिए उनकी कसर इस पुस्तक से निकाल लेनी चाहिए। हमारे देखने में कई ऐसी पुस्तकें आई हैं जिनका मूल्य शायद इसीलिए अपेक्षाकृत ऊँचा रखा गया है कि उनके बिकने की सम्भावना काफ़ी अच्छा थी। किन्तु हम प्रकाशकों से नम्रतापूर्वक निवेदन करेंगे कि यह प्रवृत्ति व्यवसाय के विस्तृत और सच्चे हितों के लिए हानिकारक है। देश की आज की स्थिति की यह माँग है कि पुस्तकों का प्रसार अधिक से अधिक किया जाए। और पुस्तकों के अधिक प्रसार में पुस्तक का मूल्य कुछ अंश में अवश्य सहायक होता है—यह एक निश्चित बात है। हम जानते हैं कि कुछ लोग (प्रकाशन-व्यवसाय में ही नहीं, अन्य व्यवसायों में भी) यह मत रखते हैं कि कम मूल्य रखकर अधिक बिक्री करके जितना लाभ कमाया जा सकता है, इससे यह कहीं अच्छा है कि उतना ही लाभ ऊँचे दाम रखकर और थोड़ी बिक्री करके कमा लिया जाए। समान लाभ कमाने की इन दो रीतियों में से कौन-सी रीति अधिक अच्छी है—यह अपने-अपने विचार की बात है। किन्तु आज के जनतांत्रिक युग में प्रत्येक व्यवसाय की कुछ सामाजिक तथा राष्ट्रीय जिम्मेदारियां भी हैं जिनकी हमें अवहेलना नहीं करनी चाहिए। भारत की इस युग की माँग यही है कि पुस्तकों का अधिक से अधिक प्रसार-प्रचार किया जाए। और अधिक प्रसार-प्रचार करने में कम विक्रय-मूल्य अवश्य सहायक हो सकता है—यह दोहराने की आवश्यकता नहीं है। इस सारी टिप्पणी का सार यह है कि यदि किसी पुस्तक की बिक्री की सम्भावना अधिक दिखाई पड़ रही हो तो उसका मूल्य कम रखना चाहिए।

पुस्तक के मूल्य-निर्धारण पर जहाँ पुस्तक की संभावित बिक्री का अनुमान प्रभाव डालता है वहाँ कई बार कुछ और बातें भी इस प्रश्न के निर्णय में सहायक होती हैं। लेखक ने किस उद्देश्य को सामने रखकर कोई पुस्तक लिखी और प्रकाशक ने किस उद्देश्य से वह पुस्तक प्रकाशित की—इस बात का मूल्य-निर्धारण पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है। उदाहरण के तौर पर हम धार्मिक पुस्तकों को या उन पुस्तकों को ले सकते हैं जो किसी विशेष मत या सिद्धान्त या विचारधारा के प्रचार के उद्देश्य से लिखी गई और प्रकाशित की गई हों। स्पष्ट है कि ऐसी पुस्तकों का मूल्य कम से कम रखने की चेष्टा की जाएगी। किन्तु किसी विशेष उद्देश्य के कारण मूल्य कम रखने की बात तभी उचित एवं न्यायसंगत हो सकती है जब इस ध्येय, उद्देश्य अथवा दृष्टिकोण पर लेखक और प्रकाशक दोनों एकमत हों। यह अनुचित होगा कि इनमें से एक व्यक्ति अपने व्यापारेतर उद्देश्य की पूर्ति के लिए दूसरे से 'बलिदान' की अपेक्षा रखे।

क्रमशः

कुछ नए प्रकाशन

विनय पत्रिका

गोस्वामी तुलसीदास कृत : टीकाकार देवनारायण द्विवेदी ६.००

पृष्ठ सं० ५००, सुन्दर कागज, आकर्षक छपाई और सजिल्द

आधुनिकतम टीका, जिन पदों का अर्थ आपको किसी भी टीका में सन्तोषजनक न मिला हो उनका साधु अर्थ इस टीका में पूर्ण सन्तुष्ट करेगा।

कुछ स्मृतियाँ और कुछ स्फुट विचार

डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी ६.००

विद्वान् लेखक की स्मृतियों और स्फुट विचारों को पढ़ने के लिए कौन लालायित नहीं होगा? अब कुछ ही प्रतियाँ शेष हैं।

ध्वन्यालोक

श्री सदानन्द वर्धनाचार्य कृत : भाष्यकार आचार्य विश्वेश्वर १२.००

काव्यप्रकाश

आचार्य मम्मट कृत : भाष्यकार आचार्य विश्वेश्वर १६.००

कुछ स्थायी साहित्य

तुलसीदास और उनका युग

डाक्टर राजपति दीक्षित ८.००

गीतिकाव्य

डा० रामखेलावन पाण्डेय ५.५०

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना

श्री राम नरेश वर्मा ४.५०

सामयिकी

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ६.००

धरातल

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी २.७५

सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं के पास उपलब्ध

प्रकाशक :

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी-१

सम्पादक के नाम पत्र

नेट-बुक समझौते की आवश्यकता

'हिन्दी प्रकाशक' दिसम्बर सन् १९६२ ई० के अपने प्रथम अंक में 'नेट-बुक समझौते का क्रियान्वयन' शीर्षक एक ज्वलंत सम्पादकीय टिप्पणी लेकर हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय-क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ है। टिप्पणी के लेखक अखिल भारतीय प्रकाशक-संघ के प्रधान मंत्री तथा हिन्दी प्रकाशक के यशस्वी संपादक श्री के० एल० मलिक महोदय हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय-क्षेत्र के जाने-पहचाने व्यवसाय-महारथी हैं। उन्होंने घोषित किया है कि "गत्यवरोध जैसी इस अवस्था में ही नेट-बुक समझौते को अग्रसर करने के लिए मार्ग ढूँढ़ना अनिवार्य हो गया है।" उनका दृढ़ मत यह भी है कि "समझौता अपने स्थान पर स्थिर है और इस बात में भी प्रायः दो मत नहीं दीख पड़ते कि पुस्तक-व्यवसाय के लिए वह हितकारी है।" श्री मलिक महोदय ने समझौता लागू करने की दिशा में अपने जो सुझाव दिए हैं, वे भारतीय पुस्तक-व्यवसाय के क्षेत्र में कितने उपयोगी हैं—यह सहज अनुमेय है। वास्तव में किसी भी क्षेत्र की अराजकता और अव्यवस्था प्रगति की अवरोधक ही सिद्ध होती है। व्यवसाय-क्षेत्र में विक्रेता और ग्राहक दोनों को इन अवस्थाओं से हानि उठानी पड़ती है और व्यवसाय चौपट हो जाता है। क्षणिक और सामयिक लाभ के मोह को त्याग कर यदि हम स्थायी और सनातन लाभ को दृष्टि में रखें, तो निश्चय ही ग्राहक और विक्रेता दोनों को ही लाभ हो सकेगा, और पुस्तक-व्यवसाय की प्रगति भारतवर्ष के भाल को अधिकाधिक ऊँचा उठाती चली जायेगी। व्यवस्था और संगठन—जीवन और शक्ति दोनों का ही प्रदर्शन करते हैं। ग्राहक, पुस्तक-विक्रेता, प्रकाशक और सरकार सभी का हित पुस्तक-व्यवसाय के देश-व्यापी संगठन और निर्धारित नियमों के पालन में निहित है। सामूहिक, उच्च तथा सनातन लाभ मात्र ज्यादा कमीशन देने या लेने में कतई नहीं। माल का स्तर और उपयोगिता व्यवसाय की आत्मा है। आत्मा को उज्ज्वल और उन्नत बनाना हम सब का ही व्यावसायिक धर्म है। हम आज अपने धर्म (कर्तव्य) की अवहेलना कर रहे हैं—इसलिए ही हमारा व्यवसाय नीचे गिरता जा रहा है। भारतीय पुस्तक-व्यवसाय को प्रोज्ज्वल और उन्नत बनाने के लिए नेट-बुक समझौता अत्यन्त आवश्यक है। छोटे दुकानदारों तथा बड़े प्रकाशकों के अतिरिक्त लाइब्रेरियों तथा सरकार का भी लाभ इसमें निहित है—सूत्र-रूप में इतना ही कहा जा सकता है।

यह समझौता कैसे लागू किया जाय—यह कोई अद्भुत और जटिल प्रश्न नहीं है। इस दिशा में अखिल भारतीय प्रकाशक-संघ की ओर से भूतकाल में अनेक सफल योजनाएँ बन चुकी हैं और प्रणालियाँ निश्चित हो चुकी हैं। उन योजनाओं और प्रणालियों से लाभ उठाकर अब और भी मीलों आगे बढ़ा जा सकता है। 'संघ' के वर्तमान अध्यक्ष और भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी के संचालक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, जिन्हें भारतीय पुस्तक-व्यवसाय का आलोक-स्तंभ कहा जा सकता है 'हिन्दी प्रकाशक' के (अन्तर्गत) पृष्ठ सात पर 'वर्तमान स्थिति के परिप्रेक्ष्य में' शीर्षक से जिन भावों को व्यक्त करते हैं, उनमें समझौते को क्रियात्मक रूप देने की दिशा में अनेक संकेत विद्यमान हैं। "जड़ में ही कहीं हमारे वतमान जीवन में विरोध है" यह वाक्य लिखकर उन्होंने हमें आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित किया है। उनका कहना है कि संकल्प, प्रयत्न, उद्देश्य, योजना तथा क्रियात्मिका-शक्ति सब में ही कहीं न कहीं और कोई न कोई त्रुटि है जिसके कारण हम सफल नहीं हो पा रहे हैं। उनका कहना है कि सब की भलाई के लिए प्रत्येक को जो व्यक्तिगत अंश त्यागना है वह हम त्यागने को उद्यत हो पायें तो परिणाम प्रगति को जन्म दे सकता है। उनका कहना बिलकुल सच है कि "जब से बड़े हित के लिए छोटे निजी हित को त्यागने की सामर्थ्य में कमी आई, तभी से व्यवस्था अस्त-व्यस्त होने लगी और अन्त में इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के श्रेय से 'संघ' ने अपने आपको वंचित कर

लिया।" इससे बड़ा दुर्भाग्य हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय के क्षेत्र में और क्या हो सकता है ? श्री जैन महोदय ने सरकारी टेन्डर-प्रथा को एकदम समाप्त कर देने की जो आवाज़ उठाई है, वह छोटे और बड़े सभी पुस्तक-विक्रेताओं के हित और संगठन को दृष्टि में रखते हुए एक आदर्श आवाज़ है। उन्होंने ऊँचे कोटेशन देने वाले लोगों द्वारा ऊँचे मूल्य की घटिया पुस्तकें भंडारों में भरने का खतरा भी स्पष्ट घोषित किया है, और उसको रोकने का मार्ग भी सुझाया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रकाशक संघ' के सम्मानित सदस्य तथा अन्य प्रकाशक और विक्रेता संघ के प्रधानमंत्री की टिप्पणी में बताये गये मार्ग पर स्वेच्छया पग उठायेंगे और नेट बुक समझौते के लिए मार्ग प्रशस्त होगा। परन्तु श्री जैन ने जो सुझाव दिये हैं उन पर अमल करने के लिए संघ को विचार करना और एक निर्णय ग्रहण करना होगा। क्या ही अच्छा होता कि संघ ने यह काम अब तक कर लिए होता ! किन्हीं कारणों से यदि ऐसा नहीं हो सका तो भी मेरी समझ से अवसर पूरी तरह से निकल नहीं गया है। अप्रेल में प्रकाशक संघ का वार्षिक अधिवेशन होने वाला है। उसमें इन सुझावों के परिप्रेक्ष्य में नेट बुक समझौते पर विचार किया जाय और उसे फिर लागू करने का निश्चय हो। इसके लिए जो भी तैयारी करनी है वह अभी से प्रारंभ हो जाय। अर्थात् पूरे भारत के हिन्दी प्रकाशन क्षेत्र में नेट बुक समझौते के लाभों का प्रचार किया जाय और बड़े-बड़े स्थानों पर विक्रेता-बन्धुओं की क्षेत्रीय समितियाँ गठित की जायें।

आशा है कि प्रकाशक तथा विक्रेता-बन्धु मेरे इस निवेदन का समर्थन करेंगे और संघ की कार्य-समिति इस कार्य को अविलम्ब अपने हाथ में ले लेगी।

—शिवेन्द्र कुमार 'परिवर्तन'
वाङ्मय भंडार, गाजियाबाद

दिल्ली में जनरल पुस्तकों का नया बिक्री-केन्द्र

पंजाबी पुस्तक भंडार २८१५ दरियागंज, दिल्ली में १ फरवरी से स्टार बुक सेंटर के नाम से हिन्दी के बाहरी प्रकाशनों की होलसेल बिक्री की व्यवस्था कर रहा है। प्रचारार्थ एक मासिक पत्रिका की भी योजना है।

● हमारे उत्कृष्ट प्रकाशन ●

शब्दकल्पद्रुम सर राजा राधाकान्तदेव बहादुर

पांच बृहद जिल्दों में ● पृष्ठ संख्या ३२०० ● रायल चार पेज

मूल्य १९४-७५ न० पं० (भारत सरकार द्वारा निर्धारित पर ग्राहकों को १६० रु० नेट में मिलेगा)

भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार :

मूल लेखक : डा० के० एम० कापडिया, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विज्ञान, बम्बई विश्वविद्यालय।
अनुवादक : हरिकृष्ण रावत, प्रस्तुत पुस्तक भारतीय संस्थाओं (परिवार तथा विवाह) की वैज्ञानिक विवेचना करने वाली एक मात्र पुस्तक है। भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा स्नातक तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं हेतु हिन्दी माध्यम के अपनाए जाने के कारण यह बहुत ही उपयोगी है। मूल्य १०)

भारत में जनतंत्र के नवीन आदर्श :

मूल लेखक : वेरा माइकेल्स डीन, अनुवादक : राधेश्याम शर्मा

प्रस्तुत ग्रंथ में भारत के जनतंत्र सम्बन्धी राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक गतिविधियों का विशद वर्णन किया गया है। मूल्य ५)

प्राचीन भारत :

डा० आर० सी० मजूमदार, १२)

प्राचीन भारत का इतिहास :

डा० आर० एस० त्रिपाठी, १५)

विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो जाने के कारण दोनों पुस्तकों - Ancient India by Mazumdar तथा History of Ancient India by Tripathi - का हिन्दी संस्करण होने से विद्यार्थियों की एक बहुत बड़ी कठिनाई दूर हो गई।

संस्कृत और संस्कृति :

लेखक – डा० राजेन्द्र प्रसाद (भूतपूर्व राष्ट्रपति), (डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संशोधित तथा परिवर्धित) ४)

नेहरू : राजनीतिक जीवन चरित :

डा० हरिवंश राय बच्चन। श्री जवाहर लाल नेहरू पर इससे अच्छी कोई अन्य पुस्तक नहीं है। साथ ही प्रस्तुत पुस्तक में गत ५० वर्षों का इतिहास भी है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास : ए० बी० कीथ २५)

प्राचीन भारतीय साहित्य : भाग १, डा० विन्टरनित्ज़ १०)

प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन : डा० वासुदेव उपाध्याय २०)

मोतीलाल बनारसीदास

बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–६

प्रकाशक

विवेचना
ओं हेतु

विशद

जाने
by
ndia
ार्थियों

तथा

ाथ ही

कार्य-समिति की बैठक में निर्णय

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य-समिति की एक बैठक शनिवार दिनांक १६ जनवरी, ६३ को अपराह्न ३-०० बजे 'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-६ में श्री रामलाल पुरी की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :

१—सर्वश्री रामलाल पुरी : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

२—दीनानाथ मल्होत्रा : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

३—रामकुमार कपूर : अत्तरचन्द कपूर एण्ड संस, दिल्ली।

४—रघुवीर शरण बंसल : बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

५—रमेश संत : उमेश प्रकाशन, दिल्ली।

६—कन्हैयालाल मलिक : इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

७—श्रीमती प्रकाशवती पाल : विप्लव कार्यालय, लखनऊ।

सर्वप्रथम सर्वश्री नारायण दत्त सहगल (एन० डी० सहगल एण्ड संस, दिल्ली), नारायण दास (इंगलिश बुक डिपो, फीरोजपुर), पृथ्वीनाथ भार्गव (भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी) तथा श्री सुखसम्पतिराय भण्डारी के असामयिक निधन पर संघ की कार्यसमिति ने हार्दिक शोक प्रकट किया। सम्बन्धित परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए, प्रभु से दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। तदुपरांत कार्यकारिणी की वाराणसी में हुई पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और सम्पुष्ट की गई।

सभापति पद के लिए प्रस्ताव

संघ के विधान की धारा ६ के अनुसार आगामी सत्र—१६६३-६४—के लिए सभापति पद हेतु प्रस्तावित एवं अनुमोदित नामों पर विचार हुआ और निश्चय किया गया कि प्रधान मंत्री इस सम्बन्ध में आगामी कार्यवाही करें।

संघ समाचार

आगामी वार्षिक अधिवेशन

आगामी वार्षिक अधिवेशन के आयोजन के बारे में समिति ने विचार किया और निश्चय किया कि अधिवेशन अप्रैल के अन्तिम सप्ताह अथवा मई के प्रथम सप्ताह में हो। स्थान का निर्णय अगली बैठक में किया जाय।

सेमिनार की रिपोर्ट

विगत मास दिल्ली में हुए "पाठ्य-सामग्री के क्षेत्र में व्यावसायिक संघों का विकास" विषयक सेमिनार की रिपोर्ट छापने के बारे में कार्यसमिति ने विचार किया और निश्चय किया कि सेमिनार के फण्ड में से रकम शेष बचती है तो उसका उपयोग सेमिनार की रिपोर्ट छापने में किया जाय।

बृहत् पुस्तक-सूची

श्री रघुवीर शरण बंसल ने हिन्दी में छपी उपलब्ध पुस्तकों की एक बृहत् सूची संघ द्वारा तैयार करने के सम्बन्ध में प्रस्ताव रखा। कार्यसमिति ने इस विषय पर विचार किया और श्री बंसल जी से निवेदन किया गया कि वे प्रधान मंत्री से मिलकर तत्संबंधी रूपरेखा,—आय और व्यय—विवरण सहित तैयार करके कार्य-कारिणी की आगामी बैठक में प्रस्तुत करें।

सभापति को धन्यवाद देकर सायं ५-०० बजे बैठक समाप्त हुई।

कन्हैयालाल मलिक
प्रधान मंत्री

राजस्थान में पोस्टर प्रतियोगिता में पुरस्कार

राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा गत मास आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में श्री ज्योति स्वरूप के 'वी विल विन' (हम जीतेंगे) तथा श्री खज़ानसिंह के 'शक्ति से सुरक्षा' शीर्षक पोस्टरों को संयुक्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। तीसरा पुरस्कार 'अपना कर्तव्य निभायें' शीर्षक श्री नारायण आचार्य के पोस्टर पर दिया गया है। द्वितीय पुरस्कार नहीं दिया गया।

नये प्रकाशन

महाकवि निराला और राम की शक्तिपूजा : ले. श्याम कपूर; प्र. सैण्ट्रल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; पृ. ११२; मू. २·५० ।

युगकवि पन्त की काव्य-साधना : ले. विनयकुमार शर्मा; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. २८६; मू. ७·०० ।

रत्नाकर का काव्य : ले. लल्लनराय; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. २००; मू. ४·०० ।

रामनरेश त्रिपाठी : व्यक्तित्व और कृतित्व : ले. डा. रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल; प्र. लखनऊ विश्वविद्यालय; मू. ३·०० ।

विद्यापति की काव्य-साधना : ले. देशराजसिंह भाटी; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. २१८; मू. ५·०० ।

सरल भाषा विज्ञान : ले. डा. मनमोहन गौतम; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. ४०६; मू. ७·०० ।

सिंदूर की होली कसौटी पर : ले. गौतम सचदेव, 'सुमन' एम. ए.; प्र. सण्ट्रल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; पृ. ६४; मू. २·०० ।

हिन्दी काव्य में मानव और प्रकृति : ले. डा. लालता प्रसाद सक्सेना; प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ; मू. १६·००; शोध-प्रबंध ।

हिन्दी नाटक की रूपरेखा : ले. दशरथ झा; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. १६०; मू. ५·०० ।

हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबन्ध : ले. डा. उदयभानुसिंह; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. डि.-८; मू. १५.००

सन् '६२ तक के शोध-प्रबन्धों के परिचय सहित संशोधित-परिवर्धित संस्करण ।

साहित्य समालोचना

कला, साहित्य समीक्षा : ले. डा. भगीरथ मिश्र; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. डि.-८; पृ. २०८; मू. १०·००; निबन्ध ।

काव्यनिर्णय : ले. भिखारीदास; सं. जवाहरलाल चतुर्वेदी; प्र. कल्याणदास एण्ड संस, वाराणसी; पृ. ८००; मू. १५·००; पु. मु. ।

जायसी : एक विवेचन : ले. देशराजसिंह भाटी; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. २०४; मू. ५·०० ।

देवनागरी लिपि : स्वरूप, विकास और समस्याएं ; सं. न. चि. जोगलेकर और भगवानदास तिवारी; प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ; मू. ७.०० । नेताओं और विद्वानों के लेख; आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के आशीर्वचन सहित ।

नयी कविता और उसका मूल्यांकन : ले. सुरेशचन्द्र सहल; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. डि.; पृ. २१२; मू. ८·०० ।

पालि साहित्य का इतिहास : ले. राजकिशोर सिंह; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा; सा. क्रा.-८; पृ. ११६; मू. २·५०; प्रश्नोत्तर शैली में एम. ए. हिन्दी विद्यार्थियों के लिए ।

ब्रजभाषा-व्याकरण की रूपरेखा : ले. डा. प्रेमनारायण टंडन; प्र. लखनऊ विश्वविद्यालय; मू. ६·०० ।

ब्रजभाषा सूरकोश : सं. डा. प्रेमनारायण टंडन; प्र. लखनऊ विश्वविद्यालय; मू. प्रत्येक खंड का २०·०० ।

भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : ले. डा. नगेन्द्र; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. रा.-८; पृ. ३६४; मू. १२·५०; पु. मु. ।

भारतीय संत परम्परा और समाज : ले. स्व. डा. रांगेय राघव; प्र. किताब महल, प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. १७२; मू. ३·०० । प्रकाशक के अनुसार लेखक की अन्तिम कृति ।

मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : ले. डा. रामरतन भटनागर; प्र. हिन्दी साहित्य संसार; सा. डि.; पृ. १९२; मू. ७·५० ।

नए प्रकाशन

फ़रवरी, १९६३

अँधेरा उजाला : (उपन्यास) नानक सिंह ६·००

जीवन के प्रति एक नया संदेश लिए नानकसिंह का यह उपन्यास ज़िन्दगी के सफ़ेद और स्याह दोनों पहलुओं पर से बड़ी निर्दयता से पर्दा उठाता है।

महामंत्री : (उपन्यास) मोहनलाल महतो 'वियोगी' ५·००

अशोक कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास, जिसे पढ़ते हुए पाठक स्वयं को उसी युग के वातावरण में सांस लेता महसूस करने लगता है।

राकेट की कहानी : (ज्ञान-विज्ञान) विली ले

अनु० डा० रांगेय राघव २·००

चित्रों से सजी, उपन्यास की सी रोचक शैली में अन्तरिक्ष, राकेट और कृत्रिम उपग्रह के रोचक तथ्यों और विकास की कहानी।

बहादुर टाम : (किशोर साहित्य) मार्क ट्वेन

अनु० श्री प्रकाश १·५०

अत्यन्त दिलचस्प कहानी के कारण संसार भर के बच्चों में लोकप्रिय। चित्रों से सुसज्जित।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

काव्य

चाँद इतना हँसा : ले. शकुंतला सिरोठिया; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. १०८; मू. ३.०० । गीतोन्मुखी रचनाओं का संकलन ।

भारत माँ की लोरी : ले. देवराज दिनेश; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. डि.; पृ. १६०; मू. ४.०० ।

मेरा समर्पित एकांत : ले. नरेश मेहता; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. डि.-८; पृ. ८२; मू. ३.०० ।

शर्वरी : ले. दिनेशनन्दिनी; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. डि.-८; मू. ७.०० ।

उपन्यास

अंधेरा उजाला : ले. नानकसिंह; प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. ३४८; मू. ६.०० ।

उन्माद : ले. हंसराज रहबर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १.०० । पा. बु. ।

एक मामूली लड़की : ले. बलवंतसिंह; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १.०० । पा. बु. ।

कारावास : ले. दस्तोवस्की, अ. शिवदानसिंह चौहान, विजया चौहान; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. क्रा.-८; ।

खून की हर बूँद : ले. यज्ञदत्त शर्मा; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १.०० । पा. बु. ।

डूबते मस्तूल : ले. नरेश मेहता; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १.०० । पा. बु. ।

दत्ता : ले. शरत्चन्द्र; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. २१४; मू. ३.०० । अनुवाद ।

पंच कल्याण : ले. व्यौहार राजेन्द्रसिंह; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. २०८; मू. ४.०० ।

प्रेम परीक्षा : ले. ठा. नारायणसिंह 'विक्रम'; प्र. किताबघर, ३८ जेल रोड,इंदौर; सा. क्रा. -८; पृ. १०२; मू. १.०० ।

बुलबुला, तूफान, विस्फोट : ले. अरुण; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. २४८; मू. ४.०० ।

मगध की जय : ले. शिवसागर मिश्र; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. ३६४; मू. ४.०० ।

महामंत्री : ले. वियोगी; प्र. राजपाल एण्ड संज़; सा. क्रा.-८; पृ. १९४; मू. ४·०० ।

मिलन : ले. रवीन्द्र नाथ ठाकुर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि. दिल्ली; मू. १·००; पा. बु. ।

वह जो होना था : ले. यादवचंद जैन; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; मू. ४.०० ।

सेवा और त्याग : ले. गुलाबरत्न वाजपेयी; प्र. कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी; पृ. ११२; मू. ३·०० । पु. मु. ।

कहानी

गंगा की लहरें : ले. राजेन्द्र अवस्थी तृषित; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १७२; मू ३·५० ।

रंगमंच : ले. नंदकिशोर; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १५६; मू. ३.०० ।

नाटक

एकांकी सप्तक : सं० सुरेन्द्रपाल एम. ए.; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.-८; पृ. २००; मू. ३·०० । हिन्दी एकांकीकारों की विशिष्ट कृतियों का संकलन ।

चट्टान का फल : ले. मोहन चोपड़ा; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १४८; मू. २.५० । रेडियो एकांकी ।

छपते-छपते : मूल ले. मिहल सेबैस्शियन; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १८०; मू. ३·०० ।

विजय बेलि अथवा कुरुष : ले. गोविन्ददास; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १४८; मू. ३·०० ।

स्वर्ग-यात्रा : ले. प्रतापनारायण टंडन; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १००; मू. २·०० ।

सरल रूपक मंजरी : ले. विराज; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १४०; मू. २·०० । भास के तीन रूपकों का मूल और हिन्दी अनुवाद ।

जीवनी

महान् वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रमन : ले. श्यामनारायण कपूर; प्र. साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर; सा. डि.; पृ. ५६; मू. २·०० । सजिल्द, कागज सुपर कलेंडर ।

हास्य-व्यंग्य

उर्दू की प्रतिनिधि हास्य - कविताएँ : सं. अर्श मलसियानी; प्र. आत्माराम एण्ड संस; सा. डि.; पृ. ३२०; मू. ७·५० ।

बेढब की बहक : ले. बेढब बनारसी; प्र. कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी; पृ. १२८; मू. २·०० । पु. मु. ।

बेबात की बात : ले. उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १·०० । हास्य-नाटक; पा. बु. ।

स्त्रियोपयोगी

पकाइये खाइये : ले. सावित्री देवी वर्मा; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली; मू. १·०० । पा. बु. ।

किशोरोपयोगी

बहादुर टाम : ले. मार्क ट्वेन; प्र. राजपाल एण्ड संज, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १००; मू. १·५० ।

बाल साहित्य

आचार्य चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त : ले. प्रेमचन्द्र 'महेश'; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. ५६; मू. १·२५ । उपन्यास ।

दालसेव का पैकेट : ले. जयंत वाचस्पति; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ६४; मू. १·२५ । उपन्यास ।

महापुरुषों के बीच : ले. जगदेव पाण्डे; प्र. साहित्य वाणी, इलाहाबाद-३; सा. फु.-८; पृ. ३२; मू. १·५० । ३२ कविताएँ और नये ढंग का मनोरंजक खेल ।

सम्राट अशोक : ले. प्रेमचन्द्र 'महेश'; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. ६४; मू. १·२५ । उपन्यास ।

सूरज, चाँद, सितारे : ले. संतराम वत्स्य; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. फु.-८; पृ. ३२; मू. १·२५ । चित्रमय, रंगीन ।

इतिहास

मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति : ले. उमा शंकर मेहरा; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा; सा. डि. ८; प्र. ३७७; मू. ८·०० । प्रश्नोत्तर शैली में स्नातक विद्यार्थियों के लिए ।

अर्थशास्त्र

भारतीय सहकारिता आन्दोलन : ले. अनन्तराम निगम एम. ए.; प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर; पृ. ३५०; मू. ५·५० । एम. ए. और एम. काम. के पाठ्यक्रमानुसार ।

कृषि

भारत में सहकारी कृषि एवं साधन समितियाँ : ले. जी. आर. मदन; प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १५६; मू. ५·०० ।

ज्ञान-विज्ञान

अन्तर्राष्ट्रीय एकता : ले. अ. अ. अनन्त; प्र. आर्य बुक डिपो, ३० नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-५; पृ. १२०; मू. २·५० ।

राकेट की कहानी : ले. विली ले. अ. रांगेय राघव; प्र. राजपाल एण्ड संज, दिल्ली; सा. क्रा.-८; पृ. १५६; मू. २·०० ।

राष्ट्रीय एकता : ले. अ. अ. अनन्त; प्र. आर्य बुक डिपो, ३० नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-५; पृ. १२०; मू. २·५० ।

पारिवारिक

दम्पतियों की समस्या : ले. डा. लक्ष्मीकांत; प्र. किताब महल प्रा. लि. इलाहाबाद; सा. क्रा; पृ. ९२; मू. १·५० । परिवार नियोजन और नवदम्पतियों के लिए ।

दाम्पत्य रहस्य : ले. डा. हरिकिशनदास गांधी; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. २८७; मू. ५·०० । यौनविज्ञान की गहन समस्याओं पर ।

विविध

प्रेम पत्र : सं. प्रकाश पंडित; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; मू. १·०० । पा. बु. ।

संगीत निर्देश : ले. नंदकिशोर मदन; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा; पृ. १६२; मू. २·०० ।

सूचना सार

पश्चिमी पाक में सरकार स्वयं पाठ्य-पुस्तकें न छापेगी

लाहौर के दैनिक 'नवाय वक्त' को मालूम हुआ है कि पश्चिमी पाकिस्तान की सरकार स्वयं पाठ्य-पुस्तकें छापने का काम बंद कर देगी। दस वर्ष पहले सरकार ने पाठ्य-पुस्तकें छापने का काम यह कह कर अपने हाथ में लिया था कि प्रकाशक महँगी और निकम्मी पुस्तकें देते हैं। प्रकाशक सरकारी पुस्तकों को सामने रखकर हर साल सरकार को चुनौती देते रहे हैं। इस वर्ष टेक्स्ट बुक बोर्ड ने प्रकाशकों की यह बात मान ली है कि सरकार पुस्तकों के मानदण्ड और मूल्य का ही नियन्त्रण करे और शेष काम प्रकाशकों को सौंप दे तो पुस्तकें सरकारी मूल्य से भी १० प्रतिशत कम मूल्य पर मिल जायंगी। इस निर्णय के आधार पर सरकार ने माध्यमिक स्तर तक की कोई भी पाठ्य-पुस्तक स्वयं न छापने का निश्चय किया है और कह दिया है कि अब वह इस काम के लिए अपने खर्च पर प्रेस भी न लगायेगी। पहले इसके लिए लाखों रुपयों का बजट मंजूर किया गया था।

सरकार ने प्रकाशकों की श्रेणियां बाँट दी हैं और उन्हें स्वीकृत पाण्डुलिपियाँ दे दी हैं। साथ ही साथ यह आश्वासन भी दिया है कि प्रकाशकों को बाजार से उचित मूल्य पर कागज़ भी दिलवायेगी। पाकिस्तान के इतिहास में पहली बार १३० प्रकाशकों ने इस आशय का समझौता कर लिया है कि वे पाठ्य-पुस्तकों के सम्बन्ध में कोई हानिकर प्रतिस्पर्धा न करेंगे।

पंजाब में पाठ्य-पुस्तकों की कमी दूर करने के सरकारी उपाय

पंजाब राज्य में आगामी शिक्षा सत्र में राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की कमी को दूर करने के लिए सरकार उचित कार्रवाई कर रही है।

मुख्य संसदीय सचिव श्री गुलाबसिंह पुस्तकों की आवश्यकता का अनुमान लगाने एवं शिक्षा सत्र के आरम्भ होने से पूर्व पुस्तकें छपवाने की व्यवस्था करने में व्यस्त हैं।

मुनाफ़ाखोरी रोकने एवं पुस्तकों के कृत्रिम अभाव को दूर करने के लिए सरकार सम्भवतः मुख्य नगरों में अपने ही पुस्तक-डिपो खोलेगी।

नक्शे की प्रतियां जब्त

केन्द्रीय सरकार ने दत्त एण्ड कम्पनी करौलबाग, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित "दक्षिण-पूर्व एशिया का नक्शा" नामक दीवार पर लगाने वाले नक्शे की सब प्रतियाँ जब्त कर ली हैं। नक्शे की बिक्री या वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। उस नक्शे में भारत की सीमा गलत अंकित की गयी है। (न० भा० टा०)

उत्तर प्रदेश में स्कूल और विकास खंड

गणतन्त्र दिवस पर प्रसारित एक सूचना-पत्रक से मालूम हुआ है कि उत्तर प्रदेश में सामुदायिक विकास खण्डों की संख्या ८७५ हो गई है। प्राइमरी स्कूलों की संख्या अब ४९४३३ है। सन् ६२ में लड़कियों के लिए २१ सरकारी और २२ गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय नये खुले हैं। श्रीनगर में एक डिग्री कालेज भी खोला गया है। हिन्दी समिति ने कुल ६८ उत्कृष्ट पुस्तकें प्रकाशित की हैं। लेखकों को पुरस्कार की योजना के अन्तर्गत कुल १११८ लेखकों को ५४२४५० रुपये दिये गये हैं। चुने हुए प्राइमरी स्कूलों में तीसरी कक्षा से अंग्रेजी और दस नगरों में दक्षिणी भाषाओं की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है।

उत्तर प्रदेश में नये जूनीयर बेसिक स्कूलों के लिए अनुदान

उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार ने ३८० नये जूनीयर बेसिक विद्यालयों को उनके भवन-निर्माण तथा आवश्यक उपकरणों की खरीद के लिए १३,१२,००० रु० स्वीकृत किये हैं। इन विद्यालयों को, जिनमें केवल २९० बालिका-विद्यालय हैं, तृतीय पंचवर्षीय आयोजना की एक योजना के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष में खोलने का प्रविधान किया गया था।

राजस्थान की सरकारी लायब्रेरियाँ

राजस्थान की सरकारी लायब्रेरियों के नाम और पते इस प्रकार हैं :

१. स्टेट सेण्ट्रल लायब्रेरी, जयपुर
२. महाराजा पब्लिक ,, ,,
३. सुमेर ,, ,, जोधपुर
४. सरस्वती भवन ,, उदयपुर
५. डिवीजनल ,, कोटा
६. के.ई.जी.वी.एस.जे. ,, बीकानेर
७. डिस्ट्रिक्ट ,, बूंदी
८. ,, ,, झालावाड़
९. ,, ,, बाड़मेर
१०. ,, ,, किशनगढ़ (जि. अजमेर)
११. ,, ,, विलारा (जि. जोधपुर)
१२. ,, ,, जैसलमेर
१३. ,, ,, नाथद्वारा (उदयपुर)
१४. ,, ,, नोखा (बीकानेर)
१५. ,, ,, डूंगरपुर
१६. ,, ,, भीलवाड़ा
१७. ,, ,, बांसवाड़ा
१८. ,, ,, अलवर
१९. ,, ,, चुरू
२०. ,, ,, सवाई माधोपुर
२१. ,, ,, भरतपुर
२२. ,, ,, झुंझनू
२३. ,, ,, टोंक
२४. ,, ,, नागौर
२५. ,, ,, जालोर
२६. ,, ,, सिरोही
२७. ,, ,, पाली
२८. ,, ,, चित्तौड़गढ़
२९. ,, ,, सीकर
३०. ,, ,, गंगानगर
३१. हरिश्चन्द्र ,, झालावाड़
३२. तहसील ,, वारन (जि. कोटा)
३३. तहसील लायब्रेरा डीग (जि. भरतपुर)
३४. ,, ,, धौलपुर (,,)
३५. ,, ,, खेतड़ी (जि. झुंझनू)
३६. ,, ,, प्रतापगढ़ (जि. चित्तौड़गढ़)
३७. ,, ,, शिवगंज (जि. सिरोही)
३८. ,, ,, बाली (जि. पाली)

राजस्थान के विद्यालयों की सूची के लिए संचालक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा (राजस्थान) बीकानेर से और पंचायतों की सूची के लिए विकास आयुक्त, जयपुर से संपर्क स्थापित करना चाहिए।

राजस्थान में स्वीकृत पुस्तकों की नई सूची

उपाध्यक्ष, समाज शिक्षा (राजस्थान), बीकानेर के कार्यालय से ज्ञात हुआ है कि स्वीकृत पुस्तकों की नई सूची मार्च १९६३ में प्रकाशित होगी। पहले सुना गया था कि यह सूची जनवरी में ही प्रकाशित हो जायगी। स्वीकृत पुस्तकों की एक सूची नवम्बर में प्रकाशित हो चुकी है।

दिल्ली में ब्रिटिश और रूसी पाठ्य-पुस्तकों की प्रदर्शनियाँ

नई दिल्ली के नेशनल इंस्टीट्यूट में ढाई सौ रूसी पाठ्य-पुस्तकों और चित्रों की प्रदर्शनी की गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा सचिव श्री कृपाल ने किया। इस अवसर पर भारत-स्थित रूसी राजदूत ने बताया कि रूस मे प्रतिवर्ष एक अरब दस करोड़ पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। वहाँ अब तक पाँच सौ भारतीय पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, उनकी डेढ़ करोड़ प्रतियां बिक चुकी हैं। प्रदर्शनी में भारतीय भाषाओं की भी कुछ रूसी पुस्तकें थीं। नौ सौ ब्रिटिश पाठ्य-पुस्तकों की प्रदर्शनी दिल्ली विश्वविद्यालय के लायब्रेरी भवन में हुई। प्रदर्शनी में ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली विज्ञान की पुस्तकें थीं। कुछ दर्शकों ने कहा कि साज-सज्जा में ब्रिटिश पुस्तकें रूसी पुस्तकों से अच्छी हैं परन्तु उनके मूल्य भी अधिक हैं।

एजूकेशनल पब्लिशर्स एसोसियेशन दिल्ली का चुनाव

एजूकेशनल पब्लिशर्स एसोसियेशन दिल्ली के वार्षिकोत्सव में नये वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये हैं: प्रधान—श्री श्यामलाल गुप्त; उपप्रधान—श्री रामकुमार; मंत्री—श्री एस. एन. सरकार। यूनाइटेड चेंबर आफ कामर्स के लिए प्रतिनिधि—श्री आर. एस. बंसल और चौ. फतहसिंह।

दिल्ली नगर निगम के स्कूल

दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री ब्रजमोहन ने १९६३-६४ का आनुमानित बजट प्रस्तुत करते हुए बताया है कि निगम के अन्तर्गत १९५८-५९ में ६४५ स्कूल थे; ६२-६३ में इनकी संख्या १०४२ और छात्रों की संख्या १,६३,५८५ से २,११,१९१ हो गई। १९६२-६३ में प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के ५०० सेक्शनों के अतिरिक्त ११९ प्राथमिक तथा ५९ माध्यमिक बेसिक स्कूलों की वृद्धि की गई।

आर्य बुक डिपो का सराहनीय उद्योग

आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली ने एक पुस्तिका और चार पॅम्फलेट अपनी ओर से छपवा कर विद्यार्थियों में वितरित करने के लिए दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निदेशालय को भेजे हैं। राष्ट्रीय चेतना की दिशा में इस उदार सहयोग के लिए निदेशालय ने आर्य बुक डिपो को धन्यवाद अर्पित किया है।

राजस्थान विश्वविद्यालय में कालेज और छात्र

गणतंत्र दिवस पर प्रसारित एक विशेष लेख से ज्ञात हुआ है कि राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कालेजों की संख्या अब ७२ के स्थान पर ६० रह गई है जिनमें ११ स्नातकोत्तर, ४२ डिग्री और ७ व्यावसायिक (१ इंजीनियरिंग, ४ अध्यापक प्रशिक्षण तथा २ मेडीकल कालेज हैं।) १२ कालेज उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय और जोधपुर विश्वविद्यालय में चले गये हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय और उसके सीधे नियन्त्रण वाले कालेजों में विद्यार्थियों की संख्या लगभग ६ हजार है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ८० हज़ार पुस्तकें हैं उनमें १०१४२ सन् '६२ में बढ़ी हैं। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अवकाश-प्राप्त अधिकारी सरदार सोहनसिंह के संचालकत्व में प्रौढ़ शिक्षा-विभाग स्थापित किया गया है।

नव शिक्षित साहित्य पर पुरस्कार

यूनेस्को के तत्वावधान में होनेवाली नवशिक्षित साहित्य की तीसरी प्रतियोगिता के लिए १-१-६१ से ३१-१२-६२ तक छपी हुई पुस्तकें ३०-४-६३ तक माँगी गई हैं। १६००-१६०० रु. के दस पुरस्कार दिए जायंगे (४ हिन्दी, ३ तमिल, २ बंगला और १ उर्दू को)। पूरा विवरण श्री कुलभूषण, स्पेशल आफिसर लिटरेचर, शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से मिल सकता है।

साहित्यकारों का सम्मान

गणतंत्र दिवस पर उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन और पांडुरंग वामन काने को 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया है। डा० सुनीतिकुमार चटर्जी को 'पदम विभूषण' और पं० माखनलाल चतुर्वेदी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डा० रामकुमार वर्मा को 'पदम भूषण' की उपाधि मिली है।

छपाई स्कूलों में सांध्य कक्षाएं

बम्बई में छपाई के सरकारी और रीजनल स्कूल ने इस व्यवसाय में लगे हुए लोगों के लिए शाम की क्लासों का प्रबन्ध किया है। अन्य रीजनल स्कूलों में भी ऐसा ही प्रबन्ध किया जायगा।

पंजाब में सरकारी पुस्तकालयों का समय

एक जनवरी से सेण्ट्रल लायब्रेरी चण्डीगढ़ और पटियाला तथा जिला लायब्रेरी अम्बाला, जालंधर, धर्मशाला, संगरूर, नाभा एवं नारनौल के खुलने और बन्द होने का समय इस प्रकार हो गया है :

१ मई से ३१ अगस्त तक—प्रातः साढ़े सात से साढ़े ग्यारह तक और सायं ५ से ८ तक।

१ सितम्बर से ३० अप्रैल तक—मध्याह्न साढ़े बारह से सायं ८ तक।

लायब्रेरियाँ प्रत्येक शुक्रवार और महीने के अन्तिम गुरुवार को बन्द रहेंगी।

छपाई का केन्द्रीय स्कूल

भारत सरकार ने तीसरी पंचवर्षीय योजना में छपाई की तकनीक के लिए एक केन्द्रीय स्कूल खोलने का निश्चय किया है। इसमें छपाई के स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण एवं प्रमाणपत्र दिया जायगा और नई खोज होगी। छपाई सम्बन्धी सूचनाएँ भी दी जायंगी। स्थान का निर्णय अभी नहीं हुआ।

नेशनल बुक लीग के लिए चन्दा

'पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में व्यावसायिक संघों के विकास' विषयक सेमिनार के अवसर पर नेशनल बुक लीग की स्थापना के लिए निम्न संस्थाओं ने धनराशि देने के वचन दिए :

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी	१०००)
हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लिमिटिड, दिल्ली	५००)
राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली	५००)
यूनिवर्सिटी पब्लिशर्ज़, जालन्धर	२५०)
आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली	२५०)
रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा	२५०)
पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली	२५०)
अत्तरचन्द कपूर एण्ड संज़, दिल्ली	२५०)
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	२५०)
बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली	२५०)
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई	१०१)
आक्सफोर्ड बुक एण्ड स्टेशनरी कम्पनी, दिल्ली	१०१)
	३६५२)

आचार्य शिवपूजन सहाय का देहान्त

सोमवार २१ जनवरी को पटना में वयोवृद्ध, तपस्वी और सरल-मना साहित्य-महारथी आचार्य शिवपूजन सहाय का देहांत हो गया। हिन्दी भाषा और साहित्य की उन्होंने अनेक रूपों में सेवा की है। बिहार की राष्ट्रभाषा परिषद उनका सब से बड़ा कीर्ति स्तम्भ है। उनके देहांत से बिहार के साहित्य-समाज ने अपने को पितृहीन समझा है और हिन्दी-जगत् ने एक सबल महारथी गँवा दिया है।

प्रि. ठाकुरदत्त का स्वर्गवास

इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली के मैनेजर श्री देवराज वर्मा के पूज्य पिता और दिल्ली के प्रमुख शिक्षा-शास्त्री ला० ठाकुरदत्तजी का स्वर्गवास ३०-१-६३ की रात्रि में हो गया है। आप रामजस हायर सेकेण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल पद से रिटायर हुए थे। इधर कुछ दिनों से आप अस्वस्थ थे।

हमारे कुछ अनुपम प्रकाशन

साहित्यिक प्रकाशन

विद्यापति कु॰ सूर्यबलीसिंह तथा लाल देवेन्द्रसिंह ३.५०
प्रसाद के प्रगीत श्री गणेश खरे ६.००
पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त
डा॰ केसरीनारायण शुक्ल ३.००
आधुनिक काव्यधारा ,, ६.००
आधुनिक काव्यधारा का सां॰ स्रोत ,, ४.००
आधुनिक हिन्दी काव्य में रहस्यवाद
डा॰ विश्वनाथ गौड़ ७.००
भारतेन्दु युगीन नाट्य-साहित्य डा॰ भानुदेव शुक्ल ८.००
कहानी कला विकास और इतिहास
डा॰ श्रीपति शर्मा ६.००
आर्य संस्कृति के मूलाधार आचार्य बलदेव उपाध्याय ८.००
आधुनिक साहित्य : व्यक्तिवादी भूमिका
डा॰ बलभद्र तिवारी ६.००
भारतीय साहित्य दर्शन डा॰ राममूर्ति त्रिपाठी ६.५०
क्रान्तिकारी कवि निराला डा॰ बच्चनसिंह ५.००
उपन्यासकार प्रेमचंद और गोदान
प्रो॰ शिवनारायण श्रीवास्तव २.००
हिन्दी साहित्य और साहित्यकार
प्रो॰ सुधाकर पाण्डेय ३.००
समवेत श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी १.७५
महारानी लक्ष्मीबाई श्री श्यामनारायण प्रसाद १.५०
फल संचयन (रवीन्द्रनाथ टैगोर) अनु. रुक्मिणी देवी १.७५
जीवन पथ के चरण चिन्ह श्री वी॰ के॰ व्यास १.५०
हिन्दी कहानी माला डा॰ केसरीनारायण शुक्ल
तथा डा॰ भगीरथ मिश्र ३.५०
सदा सुहागन रूठ गई प्रो॰ सुधाकर पाण्डेय ३.००
हर सिंगार के फूल श्री रामप्रकाश कपूर २.५०
नमस्ते डा॰ आत्मानन्द मिश्र तथा मुमताज उद्दीन २.५०

इतिहास, राजनीति, शिक्षा तथा अन्य पुस्तकें

प्राचीन भारत डा॰ राजबली पाण्डेय १२.००
आधुनिक योरोप का इतिहास डा॰ हीरालालसिंह
तथा डा॰ रामवृक्षसिंह ८.००
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास I
डा॰ परमात्मा सरन ५.००
" II ,, ६.००
अर्वाचीन योरोप का इतिहास I प्रो॰ रामसिंह ६.००
,, II ,, ५.००
भारतवर्ष का इतिहास डा॰ अवध विहारी पाण्डेय ३.५०
भारत का संविधान प्रो॰ कन्हैयालाल वर्मा ८.००
पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास I ,, १०.००
पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास II ,, १०.००
नागरिक शास्त्र ,, २.००
नागरिक शास्त्र के मूलतत्व ,,
डा॰ हीरालालसिंह ४.००
सरल मनोविज्ञान प्रो॰ लालजीराम शुक्ल ६.००
आधुनिक मनोविज्ञान ,, ७.००
मनोविज्ञान चिंतन ,, ७.००
मनोविज्ञान परिचय ,, ७.००
व्यावहारिक मनोविज्ञान प्रो॰ राजाराम शास्त्री ४.००
शिक्षा शास्त्र डा॰ सीताराम चतुर्वेदी ७.००
शिक्षण विधान ,, ३.२५
शिक्षालय प्रबन्ध और स्वास्थ्य ,, ३.२५
विश्व सद्भावना के लिए शिक्षा ,, ३.००
नार्मल शिक्षण ,, ४.२५
,, शिक्षा मनोविज्ञान ,, १.५०
,, शिक्षा सिद्धान्त ,, १.२५
,, शिक्षण विधि ,, १.७५
शिक्षा की दार्शनिक मीमांसा प्रो॰ कल्पनाथ चौबे ७.००
शिक्षा प्रणालियाँ और प्रवर्तक
आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ७.५०
अध्यापन कला ,, ४.२५
इतिहास शिक्षण शैली श्री बैजनाथलाल श्रीवास्तव २.००
कविता की शिक्षा प्रो॰ शिवनारायण श्रीवास्तव २.००
गणित शिक्षा के सिद्धान्त श्री के॰ एल॰ किचलू २.००
नई दृष्टि : नये विचार श्री वंशीधर जी १.५०
सहकारिता और पंचायती राज
श्री हरीदास 'सहयोगी' ३.००
भारतीय धार्मिक पुनर्जागरण डा॰ रामवृक्षसिंह
तथा उमा शंकर २.५०
बैंक परिचय श्री पुरुषोत्तमचंद्र वाजपेयी
तथा सुग्रीव दीक्षित ५.००

नन्द किशोर एण्ड संस

तार : नंद संस

पोस्ट बाक्स नं॰ १७, चौक, वाराणसी

फोन [दुकान : २४२५
निवास : ४३७०

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स, देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली से प्रकाशित ।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ फरवरी, १९६४ अंक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ३ | फरवरी, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

टेंडर प्रणाली और प्रधानमन्त्री

श्रेष्ठ साहित्य के प्रसार और पुस्तक-व्यवसाय की प्रगति के मार्ग में टेंडर प्रणाली का जो पर्वत खड़ा है उसके सम्बन्ध में नये सिरे से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। श्री रामलाल पुरी ने गुलामी की इस निशानी की ओर प्रधानमन्त्री का ध्यान आकर्षित करके एक स्तुत्य पग उठाया है। भारत का सम्पूर्ण पुस्तक-व्यवसाय और उसके उत्कर्ष की आकांक्षा रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस पग में उनके साथ है।

प्रसन्नता की बात है कि प्रधानमंत्री ने व्यस्तता और अस्वस्थता में भी इस प्रश्न के गुरुत्व को समझा है और श्री पुरी जी का पत्र शिक्षा मंत्रालय को भेज दिया है। प्रधानमंत्री के जिस नोट के साथ यह पत्र शिक्षा मंत्रालय को भेजा गया है वह हमारे सामने नहीं है परन्तु उसका आभास इससे मिल जाता है कि शिक्षा मंत्रालय इस पर विचार कर रहा है। आशा हो सकती है कि विचार-विमर्श के बाद वह प्रान्तीय शिक्षा विभागों को यह दूषित प्रणाली परित्याग करने की सलाह दे तथा वित्त मंत्रालय से अनुरोध करे कि वह अपने कर्मचारियों को सही रास्ता दिखाए। वित्त मंत्रालय को प्रधानमन्त्री की ओर से भी इस आशय का आदेश मिले तो परिणाम शीघ्र तथा शुभ हो सकता है। श्री पुरी जी ने अपने पत्र में स्पष्ट कर ही दिया है कि वित्तीय अधिकारियों के कारण ही इस बुरी बात ने प्रथा का रूप धारण कर लिया है।

हम प्रधानमन्त्री और शिक्षा मंत्रालय को इस तत्परता के लिए साधुवाद अर्पित करते हुए आशा करते हैं कि जब उनकी दृष्टि इस हानिकर परिपाटी पर पड़ गई है तब इसका अन्त होने में भी देर न लगेगी। ●

दिल्ली नगरनिगम के पुस्तकालय

दिल्ली नगरनिगम ने निगम के ८० क्षेत्रों में ८० पुस्तकालय स्थापित करने की योजना हाथ में ली है। जहाँ तक हमारी जानकारी है, भारत के किसी अन्य नगर-निगम ने नागरिकों के मानसिक विकास की दिशा में ऐसा सराहनीय पग नहीं उठाया। दिल्ली नगरनिगम इसके लिए निश्चित रूप से बधाई का पात्र है परन्तु 'नवभारत टाइम्स' से यह जान कर दुख हुआ है कि निगम ने योजना के अनुसार जो १८ पुस्तकालय खोल दिए हैं उनकी 'हालत खस्ता' है। कहा गया है कि इन पुस्तकालयों को वर्ष में केवल ९५ हज़ार रुपये अनुदान के रूप में मिलते हैं; उनमें से ७५ हज़ार रुपये दो पुस्तकालय ले जाते हैं, शेष १६ पुस्तकालय २० हज़ार की धनराशि से ही गुजारा करते हैं। जाहिर है कि दिल्ली में सौ रुपये महीने की रकम तो पुस्तकालय के लिए उपयुक्त स्थान के किराए में ही खर्च हो जाती है। ऐसी स्थिति में १०० रु० मासिक के अनुदान से किसी पुस्तकालय का संचालन नहीं हो सकता—नई-नई पुस्तकों की खरीद तो किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती। अच्छा हो कि नगरनिगम अपनी इस सराहनीय योजना को क्रियान्वित करने के लिए अधिक सक्रिय प्रयास करे तथा पुस्तकालयों के प्रति क्षेत्रीय आकर्षण बढ़ाने तथा वहाँ के विद्याव्यसनी लोगों से सहयोग लेने के उपाय भी सोचे जायँ। सांस्कृतिक समारोहों के नाम पर जिस दिल्ली में दुनिया भर के नाच-गान होते हैं और उनमें पानी की तरह रुपया बहता है उस दिल्ली में संस्कृति के संरक्षक पुस्तकालयों की यह दयनीय दशा कलंक की सीमा तक पहुँच जायगी और प्रातः स्मरणीय टण्डन जी की यह बात सही हो जायगी कि ईंटों के जमाव से मनुष्य का विकास नहीं हो सकता। ●

पुस्तकें : एकांत की सखियां

डा० जाकिर हुसेन

"आज का असली विश्वविद्यालय है पुस्तकें"—यह बात बिल्कुल ठीक कही गई है। पुस्तकें हमें "जीवन के नये रूप दिखाती हैं, जीने का ढंग सिखाती हैं। दुखियों को वे तसल्ली देती हैं, जिद्दियों को दंड देकर राह पर लाती हैं। मूर्खों की वे लानत-मलामत करती हैं, अक्लमंदों को ताकत देती हैं।" एकांत में वे हमें सहारा देती हैं, संसार और मनुष्य की क्षणभंगुरता को भुलाने में हमारी मदद करती हैं, हमारी निराशाओं को थपकियाँ देकर सुलाती हैं।

पुस्तकें आत्मा को विचारों का भोजन देती हैं, चिंतन के चश्मों का पानी पिलाकर उसकी प्यास बुझाती हैं। जैसा कि महान यहूदी विद्वान जुडाह इलेन तिब्बन ने कहा है—"पुस्तकों से भरी अलमारियाँ तुम्हारे बगीचे हैं, आरामगाह हैं। वहाँ लगे फल तोड़ो, वहाँ खिले गुलाब चुनो, वहाँ से पराग और लोबान बटोरो।"

सभी युगों में, सभी पीढ़ियों के बड़े आदमियों ने यही पाया है कि पुस्तकें "विवेक, सदाचार, आनन्द और लाभ देती हैं।" लेकिन आधुनिक समाज में तो वे एकदम अनिवार्य हो चली हैं। यह कैसा व्यंग्य है कि उद्योग-धंधों के बढ़ने के साथ ज्यों-ज्यों लोग बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी तादाद में जमा होते जाते हैं, अपने को ज्यादा-ज्यादा अकेला महसूस करने लगते हैं। समाज उनके लिए जाने-पहचाने लोगों का समुदाय न रहकर अपनत्वहीन भीड़ बन जाता है। ऐसे में, पुस्तक लगभग दोस्त की जगह ले लेती है।

आज की औद्योगिक सभ्यता और वैज्ञानिक प्रगति का एक लक्षण यह है कि वह निरंतर व्यक्ति-निरपेक्ष होती जा रही है। पुराने जमाने के उद्योगतंत्र में, जैसे कि कारीगरी में, यह सीखना पड़ता था कि उस्ताद किस ढंग से काम करता है; और इसके लिए शागिर्द बनना जरूरी था। तब लगभग सारा ज्ञान फिलसफे या धर्म से संबन्धित था और यह ज्ञान केन्द्रित था व्यक्तियों में। यही बात मनोरंजन की थी।

अब वैज्ञानिक दृष्टि के विकास से हालत बहुत बदल गई है। आज का उद्योगतंत्र कोई प्रक्रिया "कैसे" की जाती है, इसके बजाय "क्यों" की जाती है, इस पर निर्भर है। आप क्या कर सकते हैं—यह नहीं, बल्कि क्या जानते हैं—यह आज के उद्योगतंत्र का आधार है। समूचे विज्ञान में यही बात है। कारण यह है कि यह सारा ज्ञान व्यक्ति-निरपेक्ष है, वस्तुनिष्ठ है, पुस्तकों में दर्ज है।

पुस्तक तो आज मानो मनुष्य की जीवन-सहचरी है। और बड़ी गजब की सहचरी है यह—बड़ी ही शिष्ट है; जब और जिस भी 'मूड' में बुलायें, आ जाती है; सब कुछ साफ-साफ कह देती है, लेकिन बड़ी शिष्टता से। हम बातचीत छेड़ें, तभी वह बोलती है, अनंतकाल तक हमारे निमंत्रण की प्रतीक्षा करती रह सकती है, हमेशा मदद करने और अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार रहती है।

पुस्तक सिखावन देती है, सलाह देती है, बढ़ावा देती है, झिड़की सुनाती है; लेकिन जितने की आपको आवश्यकता है, उतना ही और उससे एक अक्षर भी ज्यादा नहीं। कभी-कभी हम जो अटपटे व मूर्खता-भरे सवाल पूछ बैठते हैं, उनसे वह खफा नहीं होती। वह मुस्करा-भर देती है और चुप्पी साध लेती है। जो लोग एकाकी हैं, उनके लिए पुस्तक सचमुच बड़ी बेजोड़ साथिन है। जो सीखना-सिखाना चाहते हैं, उनके लिए वह बेजोड़ गुरु है और आनन्द का बेजोड़ साधन है।

जो लोग एकाकी हैं, उनसे मैं ज्यादा कुछ न कहूँगा। अच्छा यह है कि वे एक बार पुस्तक को आजमाकर देख लें। अगर आप उस लगातार बढ़ती जाने वाली तन्हाई में कैद हैं, जिसमें आदमी शोर-शराबे से भरी भीड़ में अकेलापन महसूस करता है, अगर आप फिक्र-परेशानियों के जंगल में अकेले खो गये हैं, तो यह साथिन आपको वह एकांत दे सकती है, जिसके लिए आप तरस रहे हैं और

जिसमें आप अपनी तमाम फ़िक्र-परेशानियों के बावजूद तन्मय हो सकते हैं।

और जो लोग कुछ सीखना-सिखाना चाहते हों, उन्हें तो पुस्तकों के साथ जिंदगी भर का रिश्ता जोड़ लेना चाहिए। सीखने का भी कोई अंत है? हमेशा कुछ-न-कुछ सीखने के लिए बचा ही रहेगा। इस प्रसंग में, आइये, टी० एच० ह्वाइट का यह छोटा-सा उद्धरण साथ-साथ पढ़ें:

"शायद आप बूढ़े हो गये हैं और शरीर की कमज़ोरियों ने आपको धर दबोचा है। शायद आप सारी रात बिस्तर पर पड़े-पड़े अपनी आँतों की गड़बड़ सुनते रहते हैं। शायद आप अपने एकमात्र प्रियजन से बिछुड़ गये हैं। शायद आप अपनी दुनिया को दुष्टों और पागलों के हाथों उजड़ते हुए देख रहे हैं, अपनी इज्जत को कमीने दिलों की गंदी नालियों में रौंदे जाते देख रहे हैं। ......ऐसे में आपके लिए एक ही चीज़ है—सीखना, इल्म हासिल करना। देखिये तो, सीखने के लिए कितना कुछ पड़ा है। शुद्ध विज्ञान है, जो शायद दुनिया में एकमात्र शुद्ध चीज़ है एक ज़िन्दगी में आप खगोल सीख सकते हैं, तीन ज़िंदगियों में पदार्थ-पाठ और छः ज़िन्दगियों में साहित्य। और जब आप जीवशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, धर्मशास्त्र, भूगोल, इतिहास और अर्थशास्त्र के अध्ययन में लाखों ज़िन्दगियाँ खपा चुकें, तो उसके बाद अच्छी-सी लकड़ी चुनकर बैलगाड़ी का पहिया घड़ने बैठ जाइये। अथवा चाहें, तो अगले पचास साल आप यह सीखने की कोशिश में खपा सकते हैं कि तलवारबाजी में दुश्मन को कैसे मात दी जा सकती है। इसके बाद आप फिर गणित सीखना शुरू कर सकते हैं और सीखते रह सकते हैं, जब तक हल चलाना सीखने का वक्त न आ जाये।"

हाँ, सीखने का कोई अन्त नहीं है। और सीखने के लिए आदमी को पुस्तकों के पास ही जाना पड़ेगा। लेकिन हम सिर्फ़ सीखने के लिए पुस्तकों की सोहबत नहीं ढूँढते। आनन्द के लिए भी हम उनके पास जा सकते हैं। जानबूझकर ही मैंने "आनन्द" कहा है, न कि "दिल बहलाव"; क्योंकि ये दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। कुछ लोग दिलबहलाव के लिए भी पढ़ते हैं। ये लोग पढ़ते हैं ऐसे किस्से व अफ़साने, जो आज हैं और कल नहीं, जो आज नये हैं और कल बासी पड़ जाते हैं।

साहित्य आनन्द देता है, दिलबहलाव नहीं करता। साहित्य दर्दनाक हो सकता है, फिर भी उसमें आनन्द है ऐसा आनन्द, जिसे समझाना मुश्किल है। और साहित्य यह आनन्द पहुँचाता है अपने सत्य और सौंदर्य के द्वारा, जो कि कवि कीट्स की बात मानें तो एक ही चीज़ है—"सौंदर्य ही सत्य है, और सत्य ही सौंदर्य।"

लेकिन जैसे आनन्द दिलबहलाव नहीं है, वैसे ही सौंदर्य भी मोहकता नहीं है। संसार के श्रेष्ठ साहित्य के अधिकांश पात्र और प्रसंग मोहक नहीं हैं; लेकिन उनमें सौंदर्य है। उनमें सत्य का सौंदर्य है, साहसपूर्वक जीवन का सामना करने का सौन्दर्य है।

—'नवनीत' से साभार

★
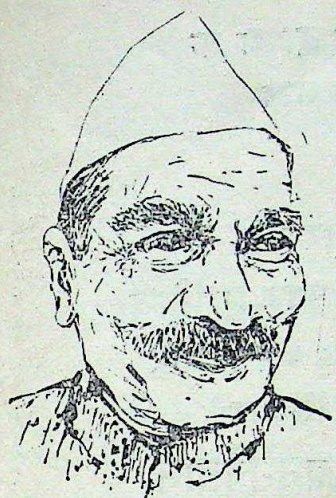
पठनीय, मननीय तथा संग्रहणीय

हमारा नया प्रकाशन

राजेन्द्रबाबू : व्यक्तित्व-दर्शन

इस ग्रन्थ में देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद से संबंधित लगभग सौ संस्मरण हैं. इतने भावपूर्ण, इतने मार्मिक कि ग्रन्थ को एक बार हाथ में लेने पर बिना पूरा किये आप छोड़ नहीं सकेंगे।

भारत के प्रमुख राजनेताओं, विद्वानों, साहित्यकारों एवं समाजसेवियों के 'उद्‌गारों' का बड़ा ही रोमांचकारी संग्रह।

विशिष्ट सम्मतियां

"राजेन्द्रबाबू के विषय में आपने जिस तत्परता से थोड़े समय में ऐसा ग्रंथ प्रस्तुत कर दिया, वह आपका ही काम था। जो संस्मरणात्मक सामग्री दी गई है, वह सुन्दर है, इसका कहना ही क्या।......"

नई दिल्ली —मैथिलीशरण गुप्त

"बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी-संबंधी प्रकाशन बहुत सुन्दर रहा है। लेख सुन्दर हैं। स्वरूप सुन्दर है। स्थायी वस्तु रहेगी।"

पांडिचेरी —डा० इन्द्रसेन

"इस ग्रंथ में राजेन्द्रबाबू के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाली कई रोचक और दिलचस्प घटनाएँ दी गई हैं। लेखकों ने अपने अनुभवों को बड़ी भावभरी एवं प्रांजल भाषा में संजोया है।"—नवभारत टाइम्स

"बड़े आकार की २५६ पृष्ठों की सर्वांग-सुन्दर पुस्तक प्रकाशित करके 'सस्ता साहित्य मंडल' ने देश की जनता का, साहित्य का बड़ा उपकार किया है। हमें विश्वास है कि ७९वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रकाशित इस ग्रंथ-रत्न का खूब स्वागत होगा।" —भूदानयज्ञ, वाराणसी

"यह पुस्तक एक प्रकार से डा० राजेन्द्र प्रसाद का स्मारक है, जिसमें उनका जीवन-दर्शन मूर्तिमान हो गया है।" —सेनानी, बीकानेर

सुन्दर छपाई ० बढ़िया आवरण ० सुन्दर जिल्द

लगभग २० दुर्लभ चित्र : बड़े आकार के २५६ पृष्ठ

मूल्य :

विशेष संस्करण : पंद्रह रुपये, सामान्य संस्करण : आठ रुपये

अपनी प्रतियां तुरंत सुरक्षित करा लें, बहुत थोड़ी प्रतियां ही छपाई गई हैं।

सस्ता साहित्य मण्डल

कनाट सर्कस, नई दिल्ली

प्राच्य-विद्या विश्व-सम्मेलन : २६वाँ अधिवेशन

डा० रामगोपाल,
रीडर संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

प्राच्य-विद्या विश्व-सम्मेलन का २६वाँ अधिवेशन ४ से १० जनवरी १९६४ तक नई दिल्ली के विज्ञान-भवन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें देश-देशान्तरों के लगभग १३०० विद्वानों ने भाग लिया और लगभग ८०० विद्वत्ता-पूर्ण निबन्ध पढ़े गये। अन्य महानुभावों तथा विद्वानों के अतिरिक्त राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् तथा प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने भी उद्घाटन के अवसर पर प्राच्य-विद्याध्ययन के महत्त्व पर अपने विचार अभिव्यक्त किए। उद्घाटन के दिन अपराह्न में राष्ट्रपति ने सभी प्रतिनिधियों को जल-पान के लिए राष्ट्रपतिभवन में आमंत्रित किया।

५ जनवरी से अधिवेशन का मुख्य कार्य अर्थात् निबन्ध-विवेचन का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस कार्य के लिए समस्त अधिवेशन निम्नलिखित दस विभागों में विभक्त था—

१. मिस्री-विद्या-विभाग, २. सैमिटिक-विद्या-विभाग, ३. हिटाइट-काकेशन-विद्या-विभाग, ४. अतटाइक-विद्या-विभाग (तुर्की-विद्या सहित), ५. ईरानी विद्या-विभाग, ६. भारतीय विद्या-विभाग, ७. दक्षिणपूर्वी एशिया-विद्या-विभाग, ८. पूर्वी एशिया-विद्या-विभाग, ९. इस्लामी विद्या-विभाग, १०. अफ्रीकी-विद्या-विभाग।

भारतीय विद्या-विभाग निम्नलिखित पांच उपविभागों में विभक्त किया गया था—

१. वैदिक विद्या तथा सिन्धुघाटी सभ्यता, २. लौकिक संस्कृत, ३. धर्म तथा दर्शन, ४. इतिहास तथा संस्कृति और ५. आधुनिक भारतीय भाषाएँ तथा भाषा विज्ञान।

यह तथ्य विशेषतया उल्लेखनीय है कि इस सम्मेलन में भारतीय-विद्या-विभाग का विशेष प्राधान्य रहा। सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए निबन्धों में से आधे से कुछ अधिक निबन्ध भारतीय-विद्या के सम्बन्ध में थे और इनमें से भी सबसे अधिक निबन्ध भारतीय इतिहास तथा संस्कृति से सम्बद्ध थे। यह बड़े गौरव तथा हर्ष की बात है कि भारतीय-विद्या के बहुत से प्रमुख भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने इस अधिवेशन को समलंकृत किया और भारतीय विद्या-प्रेमियों को नूतन प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्रदान किया। परन्तु भारतीय-विद्या के कतिपय दिग्गज विदेशी विद्वानों—यथा प्रो० लूई रैनू, प्रो० डमोन्ट, प्रो० गोन्डा प्रभृति—की अनुपस्थिति अवश्य खटक रही थी।

यद्यपि हम यह तो नहीं कह सकते कि इस अधिवेशन में बहुत से नूतन अनुसन्धानों की उद्घोषणा की गई, तथापि यह तथ्य निर्विवाद है कि अनेक मौलिक विचारधाराओं से हम अवश्य अवगत हुए; यथा पूना के डा० महेंडले ने "सूरे दुहिता" के व्याकरण विषयक व्याख्यान पर नया सुझाव प्रस्तुत किया। कलकत्ता के श्री हीरालाल चोपड़ा ने फारसी भाषा में विरचित भारतीय ग्रंथों पर रोचक निबन्ध पढ़ा। स्विट्जरलैण्ड के ओ० सी० रैगामी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के कर्मशील सिद्धान्तों के उद्भव पर अपने मौलिक मत प्रस्तुत किए। जर्मनी के प्रो० आल्सडोर्फ ने वैदिक आख्यानवाद के पुराने विवाद को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध **अपाला सूक्त** (ऋग्वेद ८, ९१) का जो व्याख्यान वर्तमान लेखक ने वेद विद्याविशारदों के सम्मुख प्रस्तुत किया उस पर भी विचार किया गया।

इस अधिवेशन में प्रस्तुत किए गए बहुत से निबन्धों में पुराने विवादों पर कुछ नए और कुछ पुराने विचार अभि-व्यक्त किए गए। कुछ निबन्धों ने इतने नूतन विचार रक्खे कि उन विचारों को गले उतारना आलोचक विद्वानों के लिए लगभग असम्भव था; यथा—एक विद्वान् ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि दिल्ली की **कुतब मीनार** को समुद्रगप्त ने बनवाया था और इसका मूल नाम **विष्णुध्वज** था। एक अन्य विद्वान् ने ऋग्वेद में से सिन्धुघाटी सभ्यता का वर्णन खोजने का प्रयास किया, तो दूसरे विद्वान् अथर्ववेद में इसी सभ्यता के वर्णन की खोज में संलग्न थे। एक विद्वान् प्राचीन भारत में वायुयानों की सत्ता सिद्ध करना चाहते थे, तो दूसरे महानुभाव पौराणिक पर्वत **मेरु** को अल्ताई पर्वतमाला का प्रतिनिधि मानते थे। इस प्रकार के निबन्धों पर पर्याप्त तथा रोचक विचार-विमर्श किया गया

और उपस्थित विद्वानों ने ऐसे निबन्धों को पूरी तरह जांचा। यद्यपि यह अधिवेशन हिन्दी भाषा क्षेत्र के केन्द्र में सम्पन्न हुआ, तथापि हिन्दी भाषा के भाषा वैज्ञानिक पक्षों का विवेचन करने वाले निबन्धों का लगभग अभाव था और हिन्दी की तुलना में अन्य भारतीय भाषाओं (विशेषतः तमिल तथा बंगला) की रचना पर विवेचन करने वाले निबन्ध बहुत अधिक थे। और इस अधिवेशन में हिन्दी के विद्वानों की संख्या भी अत्यल्प थी, जबकि अन्य विषयों तथा भाषाओं के विद्वान बड़ी संख्या में उपस्थित थे। यह खेद की बात है कि हमारी राष्ट्रभाषा के विद्वान ऐसे शुभ अवसरों की उपेक्षा करते हैं और हिन्दी के भाषा-वैज्ञानिक विवेचन को अभी तक पूर्ण महत्त्व नहीं देते हैं। वह अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे अधिवेशनों में सक्रिय भाग लेकर हिन्दी के विद्वान भाषा के ज्ञान क्षेत्र तथा दृष्टिकोण को विस्तृत करें।

इस अधिवेशन में 'मुस्लिम वैयक्तिक कानून' पर एक विचार-गोष्ठी की गई जिसमें प्रो० एण्डर्सन तथा शिक्षा-मन्त्री श्री छागला प्रभृति विद्वानों ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। 'मानवविद्या के क्षेत्र में प्राच्यविद्या का योगदान' विषय पर जो विचार गोष्ठी हुई उसे भाषण प्रतियोगता का नाम दिया जा सकता है। डा० सुनीति कुमार चैटर्जी ने इस अवसर पर जो मुद्रित तथा लम्बा भाषण पढ़ा उसका इस विषय से बहुत थोड़ा सम्बन्ध था और वह मुख्यतया प्राच्यविद्याध्ययन का इतिहास तथा विवरण-मात्र था। इस अवसर पर प्रो० ए० एल० बाशम के संक्षिप्त भाषण को सभी प्रतिनिधियों ने सराहा।

अधिवेशन का पूर्ण प्रबन्ध सराहनीय था और इसके लिए सभी सम्बद्ध महानुभाव—विशेषतः डा० कपिला वात्स्यायन—हार्दिक बधाई के पात्र हैं। परन्तु इस सम्बन्ध में यह निर्देश करना असंगत न होगा कि अधिवेशन की दैनिक कार्यसिद्धि के सम्बन्ध में जो विवरण (bulletin) प्रकाकिया जाता था वह सर्वथा सन्तोषजनक नहीं था। उसमें लगभग वैसी ही सूचना दी जाती थी जैसी कि निबन्ध-संक्षेप से उपलब्ध थी अर्थात् निबन्ध ओर निबन्ध पढ़ने वालों का नाम और उसके विषय में एकाध वाक्य परन्तु निबन्ध के विषय में उपस्थित विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई आलोचना प्रायेण छोड़ दी गई। अतएव निबन्धों का मूल्यांकन पूर्णतया नहीं प्रस्तुत किया गया। यदि कहीं आलोचकों का नाम दियो भी गया है तो केवल आलोचक की ख्याति को ध्यान में रक्खा गया है परन्तु उसके कथन के वज़न को नहीं तोला गया है। उदाहरणार्थ वैदिक-विद्या-विभाग के मुद्रित दैनिक कार्य-विवरण के अनुसार पूर्ण अधिवेशन में एक बार विभाग के सभापति ने और दूसरी बार डा० कालिदास नाग ने प्रस्तुत निबन्धों की आलोचना में भाग लिया है। परन्तु जिन विद्वानों ने वैदिक-विद्या-विभाग के अनेक निबन्ध की आलोचना में महत्त्वपूर्ण योगदान किया उनका नाम कहीं भी नहीं दिया गया है। यह तथ्य निर्विवाद है कि डा० डी० सी० सरकार प्रभृति महानुभावों ने इतिहास तथा संस्कृति विभाग में और पं० भगवद्दत्त इत्यादि विद्वानों ने वैदिक-विद्या-विभाग के निबन्धों की आलोचना में महत्त्वपूर्ण योगदान किया और दैनिक विवरण में इस योगदान का संक्षिप्त परिचय देना वाञ्छनीय था।

इस अवसर पर बहुत से ऐसे निबन्ध भी प्रस्तुत किए गए जो सर्वथा निःसार थे और उनको समय देने के कारण अच्छे निबन्धों के विमर्श का समय कम करना पड़ा। निबन्धों को स्वीकार करने वाले पदाधिकारियों ने इस विषय में क्षीर-नीर न्याय को ठुकराकर किसी के साथ भेद-भाव नहीं दिखलाया। जिस किसी ने जो भी निबन्ध भेज दिया वही सम्मिलित कर लिया गया और उसके लिए भी समय निर्धारित कर दिया गया। आखिर किसी को अप्रसन्न भी क्यों किया जाय?

आजकल गणतन्त्र का युग है। इसलिए कुछ गणतन्त्रीय विशेषताएं सर्वत्र अवश्य ही मिलेंगी। भारत तथा भारतीय विद्वानों के लिए यह प्राच्य-विद्या विश्व-संम्मेलन सौभाग्य का अवसर था। हमें देश-देशान्तरों के सुप्रसिद्ध विद्वानों के पुण्य दर्शन, परिचय और निष्णात विचार-परम्परा से अवगत होने का सौभाग्य मिला। ऐसे अधिवेशनों से ज्ञान तथा दृष्टिकोण दोनों का ही विकास होता है और देश के प्रति विदेशी विद्वानों का सौहार्द भी बढ़ता है।

प्राच्य-विद्या विश्व-सम्मेलन का आगामी अधिवेशन अमरीका में होना निश्चित हुआ है और आशा है कि भारत सरकार भी अन्य राष्ट्रों की भाँति हमारे देश के प्रसिद्ध विद्वानों को उस सम्मेलन में भाग लेने का अवसर देगी।

टेंडर प्रणाली के घातक परिणाम

प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के नाम श्री रामलाल पुरी का पत्र

३०-११-६३ को निम्नलिखित पत्र श्री रामलाल पुरी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को लिखा :

मान्यवर,

यह पत्र लिखकर आपका कुछ बहुमूल्य समय ले रहा हूँ—इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

यह पत्र भारत के पुस्तक-व्यवसाय के हित की दृष्टि से लिख रहा हूँ—जो टेंडर प्रणाली की खरीद के द्वारा बुरी तरह पंगु हो रहा है।

मान्यवर, अभी तक मुझे एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला जो इस प्रणाली का समर्थन करता हो फिर भी पुस्तकों की खरीद में इस प्रणाली ने एक प्रथा का रूप धारण कर लिया है—ऐसा उन आपत्तियों के कारण हो रहा है जो हमारे पुराने ढर्रे के वित्तीय अधिकारी बिलों की स्वीकृति के समय उठाते हैं। इसे दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है।

मेरी समझ में टेंडर प्रणाली प्रकाशकों के लिए बुरी है, पुस्तक-विक्रेताओं के लिए बुरी है, लेखकों के लिए बुरी है, पुस्तकालयों के लिए बुरी है, पाठकों के लिए बुरी है—उन सबके लिए बुरी है जो पुस्तकों की खरीद से किसी प्रकार का भी संबंध रखते हैं। इस प्रणाली के अनुसार पुस्तकें खरीदने का आधार उनका गुण या उनका अल्प मूल्य नहीं रह जाता अपितु वह ऊँचा कमीशन हो जाता है जो टेंडर में अंकित किया जाता है। यह स्थिति कुछ प्रकाशकों को अपनी पुस्तकों का अधिक मूल्य रखने के लिए बाध्य करती है जिससे वे दूसरों की अपेक्षा अधिक कमीशन दे सकें। परिणामस्वरूप पुस्तक-विक्रेता अच्छी पुस्तकों का संग्रह नहीं करते क्योंकि वे उतने ऊँचे मूल्य पर उनकी बिक्री असंभव समझते हैं। इस प्रकार ऊँचे कमीशन की घुड़दौड़ में विजय प्राप्त करने के लिए पुस्तकों के मूल्य में अस्वाभाविक वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त यह प्रणाली रद्दी पुस्तकों की बिक्री के लिए भी अनुकूल हो जाती है।

टेंडर प्रणाली के अन्तर्गत अनेक कारणों से अवसरवादियों और भ्रष्टाचारियों को सुविधा मिलती है—सच्चे पुस्तक-विक्रेताओं को कोई सुविधा नहीं मिलती। पुस्तक-व्यवसाय की स्थिरता पर भी यह गंभीर आघात करती है। जनता तक पाठ्य सामग्री पहुँचाने की व्यवस्था में पुस्तक-विक्रेता महत्वपूर्ण कड़ी है परन्तु इस प्रणाली से उसे कोई प्रोत्साहन और सहारा नहीं मिलता। लाभ यदि हो, क्षीणतर हो जाता है। पुस्तक जैसी वस्तु के संग्रह की सब जोखिमें उसे अलग भयभीत कर देती हैं।

मान्यवर, इस बात में कोई अत्युक्ति नहीं है कि प्रत्येक देश को अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं की आवश्यकता होती है। हम सब भी यही चाहते हैं कि समूचे देश में पुस्तकों की खपत बढ़ाने वाले सुगठित पुस्तक-विक्रेता हों परन्तु टेंडर प्रणाली के कारण सब प्रयत्न व्यर्थ हो जाते हैं। पुस्तक-विक्रेता खरीद की इस प्रणाली से उत्पन्न निर्मम आर्थिक परिस्थितियों और आत्मघाती प्रतिद्वन्द्विता में खड़ा नहीं हो पाता। यह प्रणाली साफ-सुथरी, उत्तम और अल्पमूल्य वाली पुस्तकों को कोई प्रोत्साहन नहीं देती। यह पुस्तकों को उनके सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय स्तर से उतार कर फलों और सब्जियों की पंक्ति में रख देती है। सांस्कृतिक और राष्ट्रीय हितों का तकाज़ा है कि पुस्तकों का निश्चित या प्रकाशक द्वारा निर्धारित मूल्य स्थिर रहे—पुस्तक-व्यवसाय इसी आधार पर पनप सकता है।

मान्यवर, पुस्तकों की बिक्री अपने देश में वैसे ही बहुत कम है—उसे लाभहीन व्यवसाय भी बन जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। लाभ की अनुपस्थिति किसी भी व्यवसाय को प्रोत्साहित नहीं कर सकती। पुस्तक-व्यवसाय की स्थिति उन कुछ महानुभावों की समृद्धि से नहीं आँकी जा सकती जिनकी आज की स्थिति की पीठ पर कई दशाब्दियों का कठोर श्रम है। पुस्तक-विक्रेता जो

लाभ के साथ अच्छी पुस्तकें पुस्तकालयों और संस्थाओं के हाथ नहीं बेच सकता वह सर्वसाधारण के हाथ रद्दी किताबें बेचने के काम में लग जाता है। खोटा रुपया अच्छे रुपये को निकाल देता है।

मान्यवर, मेरी प्रार्थना है कि आप इस दिशा में कुछ करें। आर्थिक वर्ष के इन अंतिम दिनों में पुस्तकों की खरीद होती है। आपका एक शब्द परिस्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सकता है।

मैं समझता हूँ कि आप स्वयं इस टेंडर प्रणाली के विरुद्ध हैं, यदि आप इस सिलसिले में अपने विचार भी प्रकट करें तो पुस्तक-व्यवसाय को बहुत बड़ी सहायता मिलेगी।

आपका विश्वासभाजन
रामलाल पुरी
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
उपाध्यक्ष, फैडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन इन इंडिया,
उपाध्यक्ष, दिल्ली राज्य पुस्तक विक्रेता संघ

शिक्षामंत्रालय से पहुँच

२३ जनवरी, १९६४ को शिक्षामंत्रालय के सैक्शन आफिसर श्री एस० पी० इस्सर एम० ए०, बी० एस-सी., एल-एल. बी. ने पत्रसंख्या एफ १-२। ६४-एसई ४ (विषय: टेंडर प्रणाली से पुस्तकों की खरीद) में लिखा है कि मुझे आपके पत्र संख्या आर. एल. पी. १. दिनांक ३०-११-६३ की पहुँच देने का आदेश हुआ है जो आपने उपरोक्त विषय में भारत के प्रधानमंत्री को लिखा है। आपसे यह कहने का भी आदेश मिला है कि यह प्रश्न इस मंत्रालय का ध्यान आकर्षित कर रहा है।

जोधपुर विश्वविद्यालय में सबमिशन

जोधपुर विश्वविद्यालय के १९६५ के पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यपुस्तकों के प्रेषण की तिथि पहले ३१-१-६४ थी वह बढ़ाकर १५-२-६४ कर दी गई है।

हमारे चार अभिनव प्रकाशन

मेरे जीवन के अनुभव : संतराम बी० ए० मूल्य ४.५०

जात-पांत भारत का एक भयंकर शत्रु है। श्री संतराम जी की आत्मकथा एक प्रकार से आधुनिक भारत में जाति-भेद निवारण और पंजाब में हिन्दी का ही इतिहास है। छिहत्तर लम्बे वर्षों में जो सुखद या दुखद अनुभव उन्होंने किया है, उसका यह अनुपम संकलन है।

"दुनियाँ ने तज़रुबातो-हवादिस की शक्ल में,
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं।"

पुस्तकालय-प्रबन्ध : द्वारका प्रसाद शास्त्री मूल्य ५.००

भारत में पुस्तकालय की एक शानदार परम्परा रही है। बौद्ध काल में यहाँ पर चार विश्वविख्यात विश्वविद्यालय—तक्षशिला, नालन्दा, बलभी एवं विक्रम थे और इनमें विशाल पुस्तकालय थे। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद से पुस्तकालयों के वैज्ञानिक प्रबन्ध की ओर लोगों का ध्यान गया। पुस्तकालयों को किस ढंग से रखा जाय विद्वान लेखक ने उसकी टेक्नीकल विधियों को समझाने का प्रयास इस पुस्तक में किया है। अप्रशिक्षित कर्मचारी भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

पंचांग परिचय : श्रीनाथ शाह मूल्य २.००

आये दिन तिथि एवं पर्व की जानकारी की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु साथ ही पंचांग का उपयोग कैसे किया जाय यह अभाव सा रहा। विद्वान लेखक ने उसकी पूर्ति इस पुस्तक को लिखकर की है। पुस्तक इस ढंग से लिखी गई है कि सर्वसाधारण बड़ी सुगमता से पंचांग का उपयोग कर सकते हैं।

ग्राम-स्वयं-सेवक-दल : मनमोहन मदारिया मूल्य २.००

आज़ादी से नये हक तो मिले, लेकिन नई जिम्मेदारियां भी बढ़ीं। हक और जिम्मेदारियों का गाढ़ा नाता होता है। आजाद वही रह सकता है जो आजादी की रक्षा करना जानता है। ग्राम-स्वयं-सेवक-दल यों राष्ट्रीय-संकट के प्रसंग में संगठित किए गए हैं परन्तु उनका उपयोग शांतिकाल में रचनात्मक कार्यों के लिए कहीं अधिक है। यह पुस्तक ग्राम-स्वयं-सेवक-दल के सदस्यों के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप में मार्ग-प्रदर्शन कर सकती है।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बा. नं. ७०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१

'पाण्डुलिपि'

श्री वीरेन्द्र खन्ना
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

आज के युग में हमारे पास पत्र, टेलीफोन, तार, रेडियो, टेलीविज़न आदि साधन सुलभ हैं। ऐसे समय में यह सोचते हुए सचमुच बड़ा अजीब-सा लगता है कि जब मानव-समाज के पास लिपि का साधन न होगा, तब समाज का कार्य कैसे चलता होगा। माना उस समय मनुष्य ने अपनी भाषा बना ली होगी, आपस में बातचीत से एक-दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान हो जाता होगा और मानव अपने सुख-दुख के सम्बन्ध में, केवल भावों का सहारा न लेकर, वार्तालाप द्वारा वर्णन कर सकता होगा। समय की विशेष घटनाओं की स्मृति, धार्मिक विचार आदि वक्ता से श्रोता तक सीधे पहुँचते होंगे, और यही एकमात्र साधन भी था उनके प्रसारण का। और हो सकता है कि विचार, ज्ञान, अन्वेषण और गवेषणा सम्बन्धी अनेकों तथ्य अनेकों व्यक्तियों के अन्तस्तल में छिपे उन्हीं के साथ चले गए हों यदि उन्हें कोई ऐसा विश्वासपात्र व्यक्ति न मिला हो जिसे वे अपने यह 'रहस्य' बता सकें। यहीं, लिपि के महत्व के सम्बन्ध में एक घटना याद आ गई। कुछ वर्ष पूर्व अफरीका की एक जाति में, जिन्हें लिपि के बारे में ज्ञान न था, कुछ अंग्रेज मिशनरी, मिशन का काम कर रहे थे। एक दिन एक मिशनरी ने कई मील दूर ठहरे दूसरे मिशनरी के पास उस अफरीकी जाति के व्यक्ति के हाथ कुछ सामान भिजवाया और उसके साथ एक पत्र भी रख दिया। उस अफरीकन ने रास्ते में कुछ सामान निकाल कर दूसरे मिशनरी के पास पहुँचा दिया, उसने जब वह सामान खोला तो उस अफरीकन से चोरी गए सामान के विषय में पूछा। अफरीकन को बड़ा अचरज हुआ कि चोरी का पता मिशनरी को कैसे लग गया, उसने सोचा कि किसी ने भी रास्ते के घने जंगलों में उसे सामान चुराते हुए नहीं देखा और न ही कोई आदमी उससे पहले इस मिशनरी को इस विषय में सूचना देने आ सकता था फिर इस मिशनरी ने कैसे उसकी यह चोरी पकड़ ली। उसकी समझ में सूचना देने का एकमात्र साधन वार्तालाप ही था। वह नहीं जानता था कि मानव अब अपनी भाषा **लिपिबद्ध** करके दूसरे मानव तक पहुँचा सकता है।

धीरे-धीरे मानव इस निर्णय पर पहुँचा कि विचार, अनुभव तथा ज्ञान जो भाषा की उत्पत्ति के बाद एक-दूसरे मानव तक वक्ता-श्रोता माध्यम से पहुँचते थे, ऐसी विधि से व्यक्त किए जावें कि वह वक्ता के न रहने पर भी दूसरे व्यक्तियों तक पहुँच सकें। और प्रयत्नों के बाद 'लिपि' की उत्पत्ति हुई जो 'श्रोत्र-ग्राह्य' शब्दों का 'नेत्र-ग्राह्य' प्रतिरूप प्रस्तुत करती है।

लिपि की उत्पत्ति के बाद भी विद्या और ज्ञान का प्रसारण कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित रहा। मानव की अपने अर्जित ज्ञान को छुपाए रखने की प्रवृत्ति और हस्त-लिखित ग्रन्थों के तैयार करने की कठिनाई अनुमानतः इसके मुख्य कारण थे। वास्तव में उस समय लेखन-सामग्री का उपलब्ध करना साधारण स्थिति के व्यक्तियों की पहुँच के बाहर था और लिखने में समय भी काफी लगता था और शायद इन्हीं कारणों से तब यह भी सम्भव नहीं था कि हर व्यक्ति अपना ही हस्तलिखित ग्रंथ बना ले।

समय के साथ कागज और प्रेस के आविष्कार ने इस क्षेत्र में क्रान्ति-सी करदी और मानव के ज्ञान और विचारों ने 'साहित्य' का वास्तविक रूप लिया। विज्ञान से दिन-प्रतिदिन मुद्रण और कागज उत्पादन के उद्योगों में नए-नए सुधार करके 'साहित्य एवं ज्ञान' को 'पुस्तक' का रूप देकर जनसाधारण तक पहुँचा दिया। और आज लेखक और प्रकाशक उस रथ के दो पहियों के समान हैं जिसके ठीक प्रकार से चलने पर समाज की उन्नति निर्भर है। लेखक अपना ज्ञान, अपने विचार लिपिबद्ध करके प्रकाशक को देता है और प्रकाशक उस 'रचना' को छपवाकर प्रकाश में लाता है। प्रसारण का माध्यम अब वक्ता के 'श्रोत्रग्राह्य' शब्द न होकर लिपिबद्ध 'नेत्रग्राह्य' शब्द हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि लेखक प्रकाशक तक अपने विचार, अपना ज्ञान उचित रूप में पहुंचाए और प्रकाशक उनको अन्य व्यक्तियों (पाठकों) तक उसी रूप में प्रस्तुत करे। मुद्रित पुस्तक से लेखक की विचारधारा पाठक तक उसी

प्रकार पहुँचें जैसे एक वक्ता के विचार शब्दों (वाणी) द्वारा श्रोता तक पहुँचते हैं।

प्रसारण की इस विधि में विचार और ज्ञान लेखक से पाठक तक पहुँचाने में हमें कितने ही व्यक्तियों का सहारा लेना पड़ता है—जैसे कम्पोज़ीटर, प्रूफरीडर आदि-आदि। यह आवश्यक है कि ये लोग भी भली-भाँति समझ सकें कि 'लेखक क्या कह रहा है', जिससे वे ठीक उसी रूप में पाठक के लिए प्रस्तुत कर सकें। लेखक के लिखित शब्द, धातु के बने हुए अक्षरों के जोड़ से बने शब्दों का रूप लेते हैं जो कागज़ पर नेत्रग्राह्य शब्दों का पुनः रूप लेकर पाठक तक पहुँचते हैं। आवश्यक यही है कि लेखक के लिपिबद्ध शब्द (जिसको हम प्रकाशन-व्यवसाय में 'पाण्डुलिपि' के नाम से पुकारते हैं) धातु के बने अक्षरों के जोड़ से बने शब्दों का सही रूप लें (अर्थात् ठीक से कम्पोज़ हों) और यह धातु के बने शब्द, कागज़ पर पुनः सही शब्दों के रूप में पाठक के सम्मुख प्रस्तुत हों।

इससे हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि लेखक प्रकाशक को साफ और शुद्ध लिखी पाण्डुलिपि दे। फिर भी आज यदि कोई प्रकाशक अपने किसी बड़े लेखक (जिसकी वह कुछ कृतियाँ पहले छपवा चुका है) से ठीक प्रकार से साफ और शुद्ध लिखी पाण्डुलिपि देने का अनुरोध करता है तो लेखक महोदय इसको प्रकाशक का दुर्व्यवहार समझते हैं और समझते हैं कि प्रकाशक ने उनकी प्रतिष्ठा और योग्यता पर चोट की है। मैं एक ऐसे लेखक के विषय में जानता हूँ कि जो अपनी पाण्डुलिपि को दुबारा पढ़ना भी उचित नहीं समझते, वह कहते हैं कि जब प्रूफ़ आएगा तब देख लेंगे। वह यह जानते हैं कि हर शब्द कम्पोजिंग के बाद धातु से बने शब्दों का रूप लेता है। प्रूफ़ में कुछ शब्द काटने पर (जो वास्तव में पहले पाण्डुलिपि में थे और ठीक कम्पोज़ हुए थे) पूरे कम्पोज़ किए मैटर में परिवर्तन करना होगा, फिर भी वह प्रूफ़ में इस प्रकार काफी शब्द, कभी-कभी वाक्य और कभी-कभी पूरा पैरा काट देते हैं। इसी प्रकार वह प्रूफ़ में नए शब्द, वाक्य और पैरा भी प्रायः जोड़ देते हैं जो वास्तव में पाण्डुलिपि में न थे। इन नए जोड़े गए शब्दों आदि के लिए भी कम्पोज़ के मैटर में काफी परिवर्तन करना पड़ता है, धातु के हर अक्षर के लिए स्थान चाहिए और उसे स्थान देने के लिए अनेकों अक्षर अपने स्थानों से हटाने पड़ेंगे। होता यह है कि इन परिवर्तनों के कारण कम्पोज़ीटरों को कम्पोज़ किए मैटर में काफी हेर-फेर करना पड़ता है और अक्सर नई-नई ग़लतियाँ हो जाती हैं जो पहले प्रूफ़ में नहीं होतीं जिनके लिए बाद में प्रकाशक और प्रेस को दोषी ठहराया जाता है। किन्हीं कारणों से अक्सर प्रकाशक या प्रेस लेखक को दूसरा प्रूफ़ नहीं भेज पाते (कभी-कभी तो वह डरते हैं कि दूसरे प्रूफ़ में भी कहीं वैसे ही परिवर्तन न कर डाले जावें) और पाण्डुलिपि कम्पोज़ीटर व प्रूफ़रीडर का आश्रय लेकर मुद्रित हो जाती है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि इस प्रकार के परिवर्तनों के लिए कम्पोज़ीटर और प्रूफ़रीडर को पारिश्रमिक देना होगा, यह व्यय प्रेस या प्रकाशक को वहन करना होगा। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि लेखक द्वारा पाण्डुलिपि में नए परिवर्तन करने पर जो भी व्यय होता है वह वास्तव में एक प्रकार से राष्ट्रीय हानि (नेशनल वेस्टेज) है। फिर हम यह भी भूल जाते हैं कि हमारे देश में कम्पोज़ीटरों व प्रूफ़रीडरों को बहुत ही कम पैसे मिलते हैं और इसी कारण कम पढ़े-लिखे लोग इस व्यवसाय को अपनाते हैं। सचमुच आठवाँ या दसवाँ पास एक कम्पोज़ीटर जिस प्रकार घसीट में लिखी पाण्डुलिपि को काफी हद तक सही कम्पोज़ करले इसके लिए वह बधाई का पात्र ही कहा जावेगा। लेखक पाण्डुलिपि में घसीट में शब्द लिख डालते हैं और सोचते हैं कि कम्पोज़ीटर उनको सही कम्पोज़ कर लेगा और प्रूफ़रीडर उनको पढ़कर सही कर लेगा यदि कम्पोज़ीटर ने ग़लती की है। वास्तव में कम्पोज़ीटरों को घसीट में लिखी पाण्डुलिपि पढ़ने का अभ्यास हो जाता है और वह ऐसी लिखावट पढ़ लेते हैं जिसका अर्थ कभी-कभी काफी पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी नहीं निकाल सकता। फिर भी कम्पोज़ीटर का ज्ञान सीमित है, उसको उसके श्रम का बहुत कम पैसा मिलता है और ऐसी दशा में उससे इससे अधिक आशा करना मेरी दृष्टि में तो उचित नहीं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हम इस नतीजे

पर पहुँचते हैं कि जहाँ तक हो सके पाण्डुलिपि साफ, शुद्ध व खुशख़त लिखी हो। यदि सम्भव हो तो उसकी कम से कम ३ कापियाँ टाइप कराली जावें। ज़रा देर के लिए विचार कीजिए कि एक पाण्डुलिपि जो लेखक इतने परिश्रम से तैयार करता है, किसी भी कारण से यदि खो जावे या नष्ट हो जावे तो लेखक को कितना दुख होगा और उसका दुबारा तैयार करना कितना कठिन होगा—इस कारण उचित यही है कि पाण्डुलिपि आरम्भ में ही टाइप कराली जावे चाहे लेखक कराए या प्रकाशक अपने कार्यालय में कराए। उसकी एक कापी लेखक के पास रहे (हस्त-लिखित मूल प्रति के साथ यदि वह भी है) और दो प्रकाशक अपने पास रखे। यदि पाण्डुलिपि में टैकनिकल शब्द या टर्म हैं तो उसका टाइप कराना और भी आवश्यक है।

यहाँ कुछ सज्जन यह कहेंगे कि उनकी दृष्टि में हिन्दी के टाइपराइटर शब्दों को शुद्ध रूप नहीं दे पाते। पर इसी प्रकार कम्पोज़ की हुई देवनागरी लिपि के बारे में भी तो भाषाशास्त्रियों के विभिन्न विचार हैं और हिन्दी में कलकतिया व बम्बइया टाइपों का प्रचलन भी इन्हीं कारणों से हुआ। मैं भाषाशास्त्री नहीं हूँ फिर भी यह कहूँगा कि हमें शब्दों का ऐसा नेत्रग्राह्य स्वरूप स्वीकार कर लेना चाहिए जो विचारों का सही प्रतिबिम्ब दे व आसानी से अच्छी गति से कम्पोज़ किया जा सके जिससे हिन्दी के टाइपिस्टों व कम्पोज़ीटरों की काम करने की गति बढ़ सके। लेखन सामग्री में समय-समय पर परिवर्तन होने के साथ लिपि में भी बराबर परिवर्तन होते रहे हैं; शिलालेखों, लकड़ी पर खोदे गए लेखों, भोजपत्र व तालपत्र की लिपियों में अन्तर था। जो रूप आसानी से लेखन-सामग्री से सुन्दर व साफ बन सका धीरे-धीरे वह ही रूप हो गया। फिर क्यों न हम अब कम्पोज़िंग का आविष्कार होने पर देवनागरी लिपि में थोड़ा परिवर्तन स्वीकार करलें। मुद्रण की टेकनीकल दृष्टि से तो हिन्दी की लिपि में पर्याप्त परिवर्तन की आवश्यकता है पर इस समय हम इस विषय पर न जाकर यही कहेंगे कि प्रकाशक वर्ग शब्दों की अक्षरी (स्पेलिंग), विराम-

चिन्हों का प्रयोग (पंक्चुएशन) व विदेशी शब्दों की अक्षरी व अनुवाद के विषय में अपने कुछ नियम भाषाशास्त्रियों की राय से बना लें और इन्हीं नियमों के आधार पर कम्पोज़िग हो। अंग्रेजी के प्रकाशकों के यहाँ हाउस स्टाइल (प्रकाशन गृह का कम्पोजिंग का अपना ढंग) पर चला जाता है परन्तु हिन्दी प्रकाशकों में हिन्दी भाषाशास्त्रियों की विभिन्न विचारधाराओं के कारण अभाग्यवश हम अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सके हैं। शब्दों की अक्षरी तक के लिए भी एकमत नहीं हैं—लिये, लिए; जाएँ, जायँ; अन्त, अंत; गंगा, गङ्गा; अर्थ, अर्‌थ; पृथ्वी, पृथ्‌वी आदि-आदि कितने ही शब्दों में कुछ लोग किसी को उचित समझते हैं और कुछ किसी को। इसी प्रकार विदेशी भाषाओं के शब्दों के अनुवाद में (खासतौर पर टैकनीकल शब्दों के बारे में) भी विभिन्न विचार हैं; किसी ने कोई शब्द गढ़ लिया, किसी ने उसकी जगह दूसरा, कभी-कभी तो कोष की सहायता से भी ऐसे शब्दों का अर्थ नहीं निकाल सकते। भारत सरकार का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली, डा० विश्वनाथ प्रसाद जैसे सुविख्यात भाषाशास्त्री के निर्देशन में, इस दिशा में काफी कार्य कर रहा है, अब देखना यह है कि इनके द्वारा चुने या गढ़े गए शब्दों का कहाँ तक स्वागत होता है और विभिन्न संस्थाएँ और व्यक्ति जो इस दिशा में कार्य करते रहे हैं इन शब्दों को कहाँ तक स्वीकार करते हैं। मैं तो यही उचित समझता हूँ कि वर्तमान स्थिति में जिन शब्दों के बारे में विभिन्न विचार हैं और जिनका सही प्रतिबिम्ब पाठक के सम्मुख प्रस्तुत नहीं हो पाता (अर्थात् जिनका अर्थ पाठक नहीं समझ पाता) ऐसे शब्दों को पुस्तक के अन्त में एक इंडेक्स बना कर दे दिया जावे और उनके आगे उनका अंग्रेजी अनुवाद लिख दिया जावे।

[अगले अंक में, इस लेख के दूसरे भाग में, प्रकाशक के कार्यालय में 'मुद्रण के लिए पाण्डुलिपि की तैयारी' के विषय में लेखक के विचार और सुझाव प्रस्तुत होंगे।]

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन और राष्ट्रीय ऐक्य,
एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठा की साधिका
भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृति पर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपया पुरस्कार-योजना प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ
के
तीन चर्चित अभिनव प्रकाशन

अर्द्धशती : बालकृष्ण राव

'अर्द्धशती' की कविताओं के लिए परिचय की अपेक्षा नहीं, जैसे प्रवाल के दानों के लिए या गन्धराज के टटके फूलों के लिए नहीं होती। ये कविताएं 'बालकृष्ण राव' की हैं, यही कहना-भर काफी है। बालकृष्ण राव की अभिव्यक्ति एक बड़ा-स्वच्छ मुकुर है जिसमें समष्टि अपने को देखती है, जिससे वह चेतना ग्रहण करती है, और प्रेरणाएं लेती है। प्रस्तुत कविताओं की बड़ी विशेषता यही है कि न इनकी अनुभूतियों में कोई दुराव है न अभिव्यक्ति में किसी प्रकार का उलझाव : बड़े सच्चे सधे हुए स्वर जिनमें प्रौढ़ पीढ़ी का बोध तो गूँजता ही है, नयी पीढ़ी की चेतनाएं भी स्पन्दित हैं। मूल्य ३.००

काग़ज़ के फूल : भारतभूषण अग्रवाल

हिन्दी में एक बिलकुल नयी चीज : 'तुक्तक', जो मिठाई से ज्यादा मीठे मगर ऐसे पैने-नोकदार कि सीधे निशाने पर बैठें और फिर मासूम बने वहीं मंडराते रहें। लुत्फ की बात यह है कि इनकी चोट न दिल पर होगी न दिमाग पर, ऐसी नाजुक जगह कहीं और ही होगी कि खुद निशाना होकर भी बे-साख्ता सबके साथ अपने को भी अपने ऊपर कहकहा लगाता पायेंगे। इन शरबती तीरों के अपनी अन्दाज़-भरी छेड़छाड़ और चुहलबाज़ी कुछ ऐसे चोटी के हिन्दी कवियों तक के साथ भी की है जो आपके प्रिय हैं और जो अपने कहकहों में अब आपके कहकहे भी शामिल कर लेना चाहते हैं। मूल्य ३.००

भाव और अनुभाव : मुनि नथमल

जीवन पूरा-पूरा विकसित हो और अपने को प्रमाणित भी कर सके, इसके लिए न केवल चलते जाना पर्याप्त होगा न देखते-दिखाते रहना। व्यवहार जगत में आँख और पाँव दोनों का रहना आवश्यक है। श्रद्धा हमारी आधारभूमि हो और बुद्धि उसके ओर-छोर की अंजोरनी आलोक-शिखा। यही सूक्तियों और नीति-वचनों का विशेष उपयोग और महत्त्व होता है। इनमें श्रद्धा और बुद्धि दोनों का ऐसा समन्वित स्वर वाचा पाता है जो अनुभूतियों की आग में तपा हुआ भी होता है। प्रस्तुत संकलन तो अपनी सरसता, सौम्यता और व्यापक दृष्टि को लेकर और भी मूल्यवान बन उठा है। मूल्य १.५०

प्रधान कार्यालय : ६ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६.
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

विक्रेता वार्ता

अश्लील-साहित्य-निरोधक कानून और पुस्तक-विक्रेता

श्री दयानन्द वर्मा

पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली

अश्लील-साहित्य राष्ट्र को क्षीण करनेवाला घातक विष है—उसके निरोध का प्रत्येक प्रयास सराहनीय है। सत्साहित्य के प्रसार के लिए भी ऐसे प्रयत्न आवश्यक हैं। इस लेख के लेखक इसी विचार के पोषक हैं, उन लोगों के लिए किसी प्रकार की रियायत ये नहीं चाहते जो जान-बूझकर अश्लील सामग्री का कूड़ा फैलाते हैं—इनका अनुरोध उन भद्र पुस्तक-विक्रेताओं के लिए है जिनके यहाँ भूल से कोई ऐसी पुस्तक आ गई है जो अश्लील है या समझी गई है।

—सं०

श्लील क्या है और अश्लील क्या—इस विषय को लेकर जितना विवाद हुआ है, बात उतनी ही उलझी है।

विवाद में बात चाहे कितनी ही उलझे किंतु यथार्थ में हर कोई जानता है कि उसके देश-काल में श्लील क्या समझा जाता है और अश्लील क्या। लेखक जब कोई रचना लिखता है वह प्रकट रूप से चाहे कुछ भी कहे किंतु अपने मन में भली-भाँति समझता है कि वह क्या लिख रहा है। यदि उसकी कोई पुस्तक सरकार द्वारा अश्लील समझी जाती है, किंतु लेखक मन से उसे अपनी क्रांतिकारी कृति समझता है तो सशक्त प्रतिवाद द्वारा वह अपनी रचना को अश्लीलता के आरोप से मुक्त करा सकता है।

लेखक के बाद प्रकाशक की बारी आती है। उसे पुस्तक हज़ार-दो हज़ार छापनी है। पुस्तक-प्रकाशन से पूर्व वह भली-भाँति जाँच कर लेता है कि उस पुस्तक की प्रतिक्रिया समाज पर कैसी होगी। सोच-विचार कर पुस्तक-प्रकाशन की जिम्मेवारी लेना प्रकाशक का काम है। यदि उसकी पुस्तक में अनैतिकता को बढ़ावा देने वाली सामग्री पायी जाती है तो प्रकाशक का कर्त्तव्य है कि सरकार के आगे वह नैतिकता की परिभाषा स्पष्ट करे।

तीसरे नम्बर पर पुस्तक-विक्रेता का नाम आता है। उसके पास तैयार की-करायी पुस्तक पहुँचती है। एक समय में अनेक पुस्तकें आती हैं। आती और खत्म होती रहती हैं। इसलिए कोई भी पुस्तक अधिक देर तक उसकी ध्यान-सीमा में नहीं रहती। पुस्तक के लेखक और प्रकाशक की प्रतिष्ठा को देखकर वह पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में अनुमान कर सकता है। जब कभी अचानक ही कोई अधिकारी आकर उसकी दूकान में रखी सहस्रों पुस्तकों में से किसी एक को अश्लील कहकर विक्रेता को अश्लीलता के प्रचार का दोषी समझ कर अदालत के कटहरे में ला खड़ा करता है तो वह समझ नहीं पाता कि वह क्या करे ? पुस्तक को श्लील सिद्ध करे या उसकी पाठ्य सामग्री के प्रति अपनी अबोधता दर्शाए। (यहाँ उन विक्रेताओं का ज़िक्र नहीं किया जा रहा जो ऐसी पुस्तकें बेचते हैं जिन पर मुद्रक-प्रकाशक का नाम नहीं होता। अपितु आशय उन विक्रेताओं से है जो नैतिकता सम्बन्धी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहते और कानून का पालन करना अपना धर्म समझते हैं।)

कानून आम तौर पर यह धारणा बना कर चलता है कि अभियुक्त पुस्तक-विक्रेता ने वह तथाकथित अश्लील पुस्तक पढ़ ली थी। यदि उसने नहीं पढ़ी थी तो अपनी अबोधता दर्शा कर वह कानून से बरी नहीं हो सकता। उसे पढ़कर पुस्तक बेचनी चाहिए थी।

कानून की इस आज्ञा का किस हद तक पालन हो सकता है, यह बात पुस्तक-विक्रेता की भूमिका को समझे बिना स्पष्ट नहीं हो सकती।

भारत में पुस्तक-विक्रय का काम आम तौर पर बहुत छोटे पैमाने पर किया जाता है। एक ही दूकानदार आम तौर पर स्टेशनर होता है, वही पुस्तक-विक्रय का काम भी करता है। गीता, कुरान, बाइबिल, उपन्यास, कहानी, जाने कितनी किस्म की, कितनी भाषाओं की पुस्तकें उसे एक छत के नीचे लाकर बेचनी पड़ती हैं, तब कहीं जाकर उसकी जीविका बनती है। आम तौर पर यह होता है कि वह संस्कृत पुस्तकें बेचता है किंतु संस्कृत भाषा का जानकार नहीं होता। उर्दू बेचता है, किंतु स्वयं उर्दू से अनभिज्ञ,

उपन्यास बेचता है, किंतु उसकी अपनी रुचि उपन्यास पढ़ने की नहीं होती। पुस्तक का नाम पढ़ लेने तक विद्या उसमें होती है। अनेक प्रकाशकों की छपी पुस्तकें अपरिमित संख्या में उसके पास आती हैं। आती हैं, खत्म होती हैं, फिर नयी छपती हैं। कुछ अर्से बाद नयी फिर पुरानी होकर अलमारियों में बन्द हो जाती हैं। किसी भी पुस्तक के भीतरी पृष्ठों से उसका अंतरंग सम्बन्ध नहीं बन सकता। सिवाय पुस्तक के नाम और लेखक की ख्याति-कुख्याति के उसके पास कोई ऐसा जरिया नहीं होता जिससे वह जान सके कि वह पुस्तक कैसी होगी।

यदि किसी पुस्तक का बेचना निषिद्ध घोषित किया जा चुका हो, कोई विक्रेता फिर भी उसे बेचकर किसी कानूनी परेशानी में फंसे तो वह अपने किये का फल पायेगा किन्तु यदि कोई पुस्तक-विशेष पुलिस का छापा पड़ने से पूर्व वर्जित घोषित नहीं हुई और पुस्तक के लेखक-प्रकाशक का अस्तित्व भी टाइटिल से ज्ञात हो सकता है फिर भी विक्रेता के साथ यदि अभियुक्त का बर्ताव किया जाता है तो वह सहानुभूति का पात्र है और उस दशा में तो उसकी दशा और भी अधिक दयनीय बन जाती है जब किसी वर्जित पुस्तक के बेचने के सम्बन्ध में पुलिस के छापे का सबसे पहला शिकार विक्रेता बनता है। प्रकाशक और लेखक को बाद में उसी के माध्यम से पकड़ा जाता है। जब तक पुस्तक उत्पादन के उत्तरदायी सभी व्यक्ति कटहरे में इकट्ठे नहीं तो जाते तब तक जमानत पर छुटे हुए विक्रेता की न सिर्फ जूतियाँ बल्कि एड़ियाँ तक घिस चुकी होती हैं। उसकी वह स्थिति देख कर गेहूं और घुन की कहावत को यों उल्टा करके कहना युक्तिसंगत लगता है—'बिना गेहूं के घुन पिस गया।'

कानून का आविर्भाव सामाजिक हित के लिए हुआ है अतः उसका आदर करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उसी प्रकार कानून (या कानून बनाने वाले) का भी फर्ज है कि वह देखता रहे कि कहीं उसकी लपेट में कोई निरपराध व्यक्ति तो नहीं आ रहा है। यदि ऐसा ज्ञात हो जाए तो कानून में संशोधन करना उचित समझा जाना चाहिए।

पुस्तक-विक्रेता को अश्लील पुस्तक-निरोधक कानून की लपेट में लाने से पहले यह मान लेना आवश्यक है कि विक्रेता अपने यहां आयी सभी पुस्तकों के बारे में सही ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। अच्छा पुस्तक-विक्रेता तो स्वयं चाहता है कि कोई अनैतिक पुस्तक उसके यहाँ न रहे किन्तु उसे यह बात बताए कौन ? अच्छा हो यदि सरकार अपने प्रेस सम्बन्धी कार्यालयों को अधिक सक्रिय बना कर पुस्तकों की विषयवस्तु के सम्बन्ध में जाने। हर प्रदेश में ऐसे विभाग बने हुए हैं जहाँ प्रकाशकों अथवा प्रिंटरों द्वारा छपी पुस्तकें अनिवार्यतः पहुंचती हैं। उन कार्यालयों द्वारा वह सभी पुस्तकें पढ़ी जाएँ। और यदि कोई पुस्तक अनैतिक पायी जाए तो उसके प्रकाशक अथवा लेखक से उसके सम्बन्ध में स्पष्टीकरण माँगा जाए। यदि वह स्पष्टीकरण संतोषप्रद न हो तो उसका बेचना निषिद्ध करने की वह विभाग घोषणा करे। उस निषेध घोषणा के बाद यदि विक्रेता पुस्तक रखे या बेचे तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाए। अन्यथा यदि पुलिस कोई ऐसी पुस्तक बरामद करे, जिसको बेचने का निषेध घोषित न हुआ हो और पुस्तक के लेखक-प्रकाशक का अस्तित्व हो तो पुलिस विक्रेता पर हाथ न डाले। पुलिस यदि विक्रेता को केस से सम्बद्ध रखना आवश्यक समझे तो उसकी स्थिति अभियुक्त की न होकर गवाह की रहे।

दिल्ली में सब प्रकाशनों की उपलब्धि

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के इस वार्षिक अधिवेशन में ऐसी योजना बनाने का प्रस्ताव हुआ था जिससे हिन्दी के सभी प्रकाशन दिल्ली में उपलब्ध हों और यह जानकारी संघ के कार्यालय में रहे कि किस प्रकाशक की पुस्तकें कहाँ मिलती हैं। इस कार्य के लिए श्री अमरनाथ के संयोजन में एक उपसमिति नियुक्त की गई थी। समिति ने विचारविमर्श करने के बाद प्रकाशक बन्धुओं से इस संदर्भ में पत्र-व्यवहार करने का निश्चय किया। फलतः लगभग २०० प्रकाशकों को पत्र लिखे गये। प्रकाशक बन्धुओं की ओर से जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उनमें संघ के इस कार्य को सराहनीय प्रयास माना गया है और कहा गया है कि इससे सबको लाभ होगा तथा हिन्दी पुस्तकों की बिक्री निश्चित रूप से बढ़ेगी।

अब तक जो उत्तर मिले हैं उनसे प्राप्त जानकारी यहाँ दी जा रही है। भविष्य में जो जानकारी मिलेगी वह भी इसी प्रकार प्रस्तुत की जायगी। जिन प्रकाशकों की पुस्तकें दिल्ली में उपलब्ध नहीं हैं उनके संबंध में उपसमिति पत्र-व्यवहार कर रही है।

जिन प्रकाशकों की पुस्तकें दिल्ली में उपलब्ध हैं, अकारादि क्रम के उनके नाम और दिल्ली में उनके प्रकाशनों की उपलब्धि के स्थान इस प्रकार हैं :

१—अखिल भारती-सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी—गांधी कालोनी, राजघाट, नई दिल्ली में शाखा है।

२—अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस, फरुखाबाद—प्रताप फाइन आर्ट वर्क्स, कूचा पातीराम, बाजार सीताराम, दिल्ली।

३—अपर इंडिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ—आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, स्टूडेन्ट्स स्टोर, कश्मीरी गेट; यु. एस. बी. पब्लिशिंग एंड डिस्ट्रीब्यूटर, दरियागंज; मित्तल ब्रदर्स, नई सड़क, दिल्ली-१

४—अभ्युदय प्रेस प्रयाग—इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

संघ समाचार

५—अरविंद सोसाइटी, पांडीचेरी—श्री अरविन्दाश्रम (दिल्ली शाखा) नई दिल्ली-१६ ; एस. एन. संडर सन एंड कंपनी, १ देशबन्धु गुप्ता रोड़, नई दिल्ली।

६—इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

७—उपमा प्रकाशन, कानपुर—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

८—कमल प्रकाशन, रांची बिहार—स्टार बुक सेंटर, दरियागंज; भारती ग्रन्थ भण्डार, अनसारी रोड, दिल्ली-६।

९—क. ला. मुंशी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

१०—किताबघर, ग्वालियर—इंडियन पब्लिशिंग हाउस तथा हिन्दी संसार द्वारा यदाकदा मंगाई जाती हैं।

११—गोस्वामी पुस्तक सदन, गांधी मार्ग, दतिया—राजपाल एंड संज, दिल्ली।

१२—नंदकिशोर ब्रदर्स, बांस फाटक, वाराणसी—इंडियन पब्लिशिंग हाउस; आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

१३—नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद—कम्युनिकेशन्स थियेटर, कनाट सरकस, नई दिल्ली में शाखा।

१४—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी—राजकमल प्रकाशन, ८ फैज बाजार; राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट; इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

१५—नीलाभ प्रकाशन, ५ खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क; स्टार बुक सेंटर, २७१५ दरियागंज, दिल्ली।

१६—बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस—मोतीलाल बनारसीदास, बँगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली।

१७—बंबई प्रकाशन, बंबई—स्टार बुक सेंटर, दरियागंज, दिल्ली।

१८—बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद, राजेन्द्रनगर पटना-४—मुंशीराम मनोहर लाल, नई सड़क; मोतीलाल

बनारसीदास, जवाहर नगर; राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट; आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट; दिल्ली पुस्तक सदन, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली।

१९—मयूर प्रकाशन, झाँसी—देहाती पुस्तक भंडार; इंडियन पब्लिशिंग हाउस; रतन एंड कंपनी; राजपाल एंड संज; देहली पुस्तक सदन; आत्माराम एंड संस; बंसल एंड कंपनी, नवीन शाहदरा; ज्ञान प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।

२०—मानव सेवा संघ, वृन्दावन—श्री सुमतप्रसाद संगल, ११ फौच स्क्वायर, नई दिल्ली; पंडित शिवकुमार, ४ आफिसर्स क्वार्टर्स, देहली क्लाथ मिल्स, गणेश लाइन, किशनगंज, दिल्ली।

२१—यशोधर्म मंदिर, १६६ मर्जवान रोड़, अँधेरी, बंबई—मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर; मुंशीराम मनोहर लाल, नई सड़क, दिल्ली।

२२—यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, रेलवे रोड, जालंधर—यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, ३६४०, मोरीगेट, डफरिन पुल, दिल्ली-६।

२३—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी नगर, वर्धा—श्रीमती राजलक्ष्मी वाघवन, दिल्ली; प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, ६।५७ डब्लू० ई० ए० करौलबाग, नई दिल्ली-५।

२४—रामकृष्ण आश्रम, धंतौली, नागपुर—पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा कलां; देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार; विद्या प्रकाशन मंदिर, दरियागंज; राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट; गोयल एंड कं०, दरीबा कलां, दिल्ली और श्री रामकृष्ण मिशन, श्री रामकृष्ण आश्रम मार्ग, नई दिल्ली-१।

२५—रामप्रसाद एंड संस, अस्पताल रोड, आगरा—प्रकाश प्रकाशन, २३ दरियागंज, दिल्ली।

२६—रूप विलास कं० कानपुर—गर्ग एंड कंपनी, खारी बावली, दिल्ली।

२७—विश्वेश्वरानंद पुस्तक भंडार, साधु आश्रम, होशियारपुर—मुंशीराम मनोहरलाल, नई सड़क, दिल्ली।

२८—श्याम प्रेस, हाथरस—(एन. एस. शर्मा गौड बुक डिपो) रतन एंड कं०, दरीबा; पंजाबी पुस्तकालय, दरीबा; देहाती पुस्तकालय चावड़ी बाजार; सिनेमाबुक डिपो, खारी बावली; अग्रवाल बुकडिपो, खारी बावली; गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय, खारी बावली; गर्ग एंड कंपनी, खारी बावली; गोयल ब्रादर्स सराय हाफिज, सदर, दिल्ली।

२९—सर्वसुलभ साहित्य सदन, अश्वत्थामापुर, फतेहपुर (उ० प्र०)—अमृत बुक कंपनी, कनाट सरकस; आर्म बुकडिपो, ३० नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली; विद्या प्रकाशन मंदिर, दरियागंज; प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

३०—साहित्य निकेतन, कानपुर—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क दिल्ली; भारती साहित्य मंदिर (एस. चांद एंड कं.) फव्वारा; हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली।

३१—स्वामी भगवानसिंह प्रकाशन, ऋषिकेश—श्री बनारसीलाल जी धींगरा, नेशनल पेपर मार्ट, ७०७ चावड़ी बाजार, दिल्ली।

३२—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली; स्टार बुक सेंटर दरियागंज, दिल्ली।

३३—ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली।

इन प्रकाशकों की पुस्तकें दिल्ली में उपलब्ध नहीं हैं:

१. अखिल भारतीय नव लेखक संघ, कनेरा, जि० चित्तौरगढ़।

२—अमरावती प्रकाशन, भंडार विद्यापीठ, भागलपुर

३—पवन प्रकाशन, लक्ष्मीरतन कालोनी, कालपीरोड, कानपुर।

४—बेआस प्रकाशन, गरौठा, झांसी।

निवेदन

जिन प्रकाशक बन्धुओं ने अभी तक उपसमिति के पत्र का उत्तर नहीं दिया वे शीघ्र देने की कृपा करें।

—प्रधानमंत्री

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

आदिकाल का हिन्दी गद्य साहित्य : ले. डा. हरीश; प्र. रामा प्रकाशन, नजीराबाद, लखनऊ; सा. डि; पृ. २५०; मू. ८.०० ।

आधुनिक हिन्दी मराठी में काव्य शास्त्रीय अध्ययन : ले. डा. मनोहर काले; प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, प्रा. लि., हीराबाग, बम्बई; सा. डि. ८; पृ. ६९२; मू. २१.०० ।

उत्तरी भारत की सन्त-परम्परा : ले. परशुराम चतुर्वेदी; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. डि; पृ. ९००; मू. १५.०० । संशोधित परिवर्धित, पु. मु. ।

उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द और उनकी प्रतिज्ञा : ले. प्रो. रामचन्द्र वर्मा; प्र. कमल प्रकाशन, रांची; पृ. १२५; मू. १.५० ।

कबीर साहित्य की परख : ले. परशुराम चतुर्वेदी; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. डि; पृ. ३२०; मू. ७.०० । संशोधित परिवर्धित, पु. मु. ।

कवि पंत और उनकी ग्रन्थि : ले. प्रो. नागेश्वरलाल; प्र. कमल प्रकाशन, रांची; पृ. १२१; मू. १.५० ।

जयशंकर प्रसाद : ले. नंददुलारे वाजपेयी; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. डि.; मू. ५.०० । संशोधित पु. मु. ।

प्रबन्ध प्रतिमा : ले. निराला; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. डि.; पृ २५५; मू. ८.०० । पु. मु. ।

भारतीय साहित्यशास्त्र : ले. आ. बलदेव उपाध्याय; प्र. नन्दकिशोर एण्ड सन्स, वाराणसी; सा. डि.; पृ. ३१२; मू. १५.०० । तृतीय संस्करण ।

मैथिलीशरण गुप्त और उनकी विष्णुप्रिया : ले. डा. सदानन्द सिंह; प्र. कमल प्रकाशन, रांची; पृ. १५०; मू. १.५० ।

मृत्युञ्जय रवीन्द्र : हजारी प्रसाद द्विवेदी; प्र. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, हीराबाग, बम्बई; सा. क्रा. ८; पृ. ४००; मू. ६.०० ।

रवीन्द्रनाथ लोकसाहित्य : डा. सुकुमार सेन; प्र. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, हीराबाग, बम्बई; सा. क्रा. ८; पृ. [illegible]; मू. ०.७५ ।

श्री हरिभक्ति रसामृत सिन्धु : मू. ले. रूपगोस्वामी; सं. टी. डा. श्यामनारायण पाण्डे; प्र. साहित्य निकेतन कानपुर; सा. क्रा. ८; पृ. २५० । हिन्दी टीका सहित मूल ग्रन्थ ।

हिन्दी आलोचना का विकास : ले. डा. सुरेश सिन्हा; प्र. रामा प्रकाशन, नजीराबाद, लखनऊ; सा. डि; पृ. २४८; मू. ८.०० ।

हिन्दी गीतिं नाट्य : ले. कृष्ण सिंहल; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी; मू. ४.०० । अपने प्रकार की प्रथम कृति ।

कविता

चंदायन : ले. मौ. दाउद; सं. डा. परमेश्वरीलाल गुप्त; प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, हीराबाग, बम्बई; सा. डि; पृ. ४९५; मू. २०.०० । खोजपूर्ण सामग्री सहित ।

पदमावत : सं. डा. माताप्रसाद गुप्त; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. ५९७; मू. १२.०० । सटीक ।

बीजुरी काजल ग्राँज रही : क. माखनलाल चतुर्वेदी; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी; मू. ३.०० ।

वीर सतसई : क. सूर्यमल्ल मिश्रण; प्र. भारती भण्डार इलाहाबाद; सा. डि; पृ. २६८; मू. ५.०० । पु. मु. ।

हिन्दी के शृंगार गीत : सं. नीरज; प्रा. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा. फु.; पृ. १२०; मू. १.०० ।

उपन्यास

आग के फूल : ले. आनन्द प्रकाश जैन; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स लि; जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२; सा. फु.; पृ. १२०; मू. १.०० ।

एक घिसा हुआ चेहरा : ले. रमेश बक्षी; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा. फु.; पृ. १२०; मू. १.०० ।

काया की माया : ले. अनिरुद्ध पाण्डेय; प्र. भारती भण्डार, इलाहाबाद; सा. क्रा.; मू. ८.०० ।

चित्रकार : ले. रणवीर; प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ. १६०; मू. १.२५ ।

तनहाई और परछाइयां : ले. प्रेम वाजपेयी; प्र. पुष्पी

पाठकों के लिए मनोरंजक :
पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य पुस्तकें

अर्हंत का शाप (*जान ओ' हिंद का ऐतिहासिक उपन्यास*)

सम्राट हर्ष ने भारत पर एकाधिकार करना चाहा और नालंदा की पृष्ठभूमि पर धर्म के परदे टाँग, तलवार खींच, आड़ में छिप गया—सब से बड़े शत्रु शशांक की प्रतीक्षा में. लेकिन शशांक के पास भी परदे और तलवारें... इतना जोशीला उपन्यास, इतना आकर्षक गेटअप. **मूल्य** :३.७५

स्वर्ण दुर्ग (*जान ओ' हिंद का ऐतिहासिक उपन्यास*)

धूर्त तुलाजी आंग्रे ने भारतीय समुद्र के चप्पे-चप्पे को घेर लिया. भयानक डाकेजनी ने हाहाकार मचा दिया; तभी दूर...पश्चिमी आकाश में विराट काला बादल घिरा, उठा और भारत पर झपटा—आपसी जलन के अंगारों के साथ ! कुछ नें उसे पहचाना, कुछ ने नहीं. भारतीय नौसेना के पहले संगठन का पहला उपन्यास—केवल मनोरंजन ही नहीं, रोशनी भी. **मूल्य** : ४.००

गुलमुहम्मद (*सत्यपाल विद्यालंकार की लेखनी की आग*)

पूरा भारत झुलस रहा है—१९४७ से... सांप्रदायिकता के शोलों में. उन्हें बुझाएगा कौन ? हम ही तो. सफलता मिलेगी ? हां. लेकिन कैसे ? कब ? पढ़िए यह उपन्यास, यह धधकती कहानी गुलमुहम्मद की, जो हिंदू से मुसलमान बना. 'गुलमुहम्मद' एक गुलदस्ता—साहस व आत्मविश्वास के फूलों से सजा. **मूल्य** : २.५०

अर्चना (*विमल वेद का क्रांतिकारी उपन्यास*)

अर्चना न हारी. रायसाहब ने उसका सौदा किया. घर वालों ने उससे दुश्मनी की, समाज ने उसे गहरे कुएं में झोंक दिया लेकिन अर्चना न हारी. वह लड़ती रही और जीत गई. रूढ़ियों पर प्रहार करते नए मूल्यांकन, सार्थक दार्शनिकता, रोमांस के पार्श्व में चिनगारियों की गाथा. **मूल्य** : ३.००

जलते प्रश्न (*दस कहानियां, विश्वनाथ द्वारा संपादित*)

कुछ लोग सही होते हैं, कुछ गलत. एक, दो और कई व्यक्ति—यही समाज है. क्या उसमें गलत लोगों की संख्या अधिक नहीं ? हर व्यक्ति की हर गलत धारणा : एक लाल सवाल—उबलता ! उबलाव भी हर क्षेत्र में. उसे बुझाने के लिए समझदारी का जल चाहिए. हर कहानी इसी जल का खुला कलश. **मूल्य** : २.००

फिर वसंत आया (*उषा की भीनी-भीनी बारह कहानियां*)

नारी पुरुष से भले छिप सके, स्वयं नारी से कैसे छिपेगी ? लेखिका ने नारी की कसक, कोमलता, क्रूरता, लाचारियों तथा विद्रोह की चिनगारियों का ऐसा विश्लेषण किया है कि हर कहानी में जीवन के रंग धड़क उठे हैं. नवीन सामाजिक दृष्टिकोणों को समझने-संजोने के लिए अनिवार्य संग्रह—दिल्ली प्रेस परंपरा की साजसज्जा में. **मूल्य** : ३.००

बंजर धरती (*विश्वनाथ के संपादन में ऐतिहासिक कहानियां*)

जहर ने हम से लाड़ किया है : जातीयता, प्रांतीयता, भाषा, लिपि, सांस्कृतिक व आर्थिक असमानताओं आदि के जहर ने. आजादी मिले पन्द्रह साल बीत चुके, पन्द्रह ठोस कदम भी हम तरक्की की ओर उठा सके ? इतिहास इसकी नापजोख करेगा और इतिहास का आलेखन करेंगी ये कहानियाँ. **मूल्य** : ३.००

मध्य शताब्दी (*श्रेष्ठ कहानियां, विश्वनाथ द्वारा संपादित*)

हर शताब्दी का मध्य काल संघर्षमय होता है. उस काल को जीने वाली पीढ़ी की जीत और हारों का जो साहित्य विश्लेषण करे, केवल वही ईमानदार साहित्य है, पीढ़ी की मांग—ऐसी ही ग्यारह कहानियाँ, युग की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ. नवनिर्माण की मशाल, नवभारत के दृढ़ हाथों में—गड्ढों और अँधेरे से बचने के लिए. **मूल्य** : २.००

हम झुकें नहीं (*साहसिक कहानियां, विश्वनाथ के संपादन में*)

बड़ा ढोल, बड़ी पोल. नई पीढ़ी क्रान्ति का दम भरती है, प्रगति के नारे लगाती है. शोर बहुत, लेकिन काम ? मूल्यांकन कौन करे ? एक कहानी है न ···बिल्ली के गले की घंटी वाली··· लेकिन हम नहीं झुकेंगे ! ग्यारह कहानियाँ, सभी पुरस्कृत, ग्यारह लेखकों की विभिन्न शैलियों में—शक्ति, साहस व स्फूर्ति के लिए प्रस्तुत. **मूल्य** : २.००

सच का बोलबाला (*विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत १२ हास्य कथाएँ*)

कोई भी कथा, जो हँसा दे, हास्यकथा हो गई ? चाहे उसमें झूठ का बोलबाला हो ? सच्चाई तोड़ी-मरोड़ी गई हो ? समाज के अंधियारे पहलुओं पर चोट न की गई हो ? यदि आप राष्ट्र को मजबूत बनाना नहीं चाहते, अपनी फिसलनभरी पगडंडी नहीं छोड़ना चाहते, चाहते हैं केवल कठपुतले बने रहना—तो बशौक यह संग्रह न पढ़ें.

मूल्य : २.००

मृच्छकटिकम् (*शूद्रक का अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्कृत नाटक, अनुवाद ललित सहगल व उग्रसेन नारंग की कलम से*)

शूद्रककालीन युग का सजीव चित्रण, सरल हिन्दी के गद्य और पद्य में. मृच्छ यानी मिट्टी, कटिक यानी गाड़ी. दूसरी गाड़ियाँ गलत मंजिल तक पहुँच सकती हैं, मिट्टी की गाड़ी नहीं. हर पृष्ठ सचित्र. खूबसूरत कागज. मजबूत जिल्द. मोतियों सी छपाई. उपहार में इसे न दिया तो आप ने दिया ही क्या !

मूल्य : १२.००

समाज के देवता (*विश्वनाथ द्वारा संपादित दस एकांकी*)

रंगे सियारों के चेहरों पर रंग नहीं होते. हमारे आप के जैसे ही उन चेहरों को फिर पहचानें कैसे ? ये एकांकी उन 'महंतों' के मुखौटे उतारते हैं, उन पर व्यंग्य करते हैं, उन्हें बदलने की प्रेरणा भी देते हैं. सभी एकांकी रंगमंचीय. आप रंगे सियार हैं ? संग्रह पढ़िये. आप रंगे स्यार नहीं हैं ? संग्रह पढ़िए.

मूल्य : २.००

जय कशमीर (*विष्णुदत्त 'तरंगी' का ओजपूर्ण महाकाव्य*)

२० अक्तूबर १९४७. पाकिस्तानी सहायता से लुटेरों की विराट सेना कशमीर पर एकाएक टूट पड़ी. कशमीर ने भारत के रणबांकुरों को पुकारा और हमारे जवान जूझ गए. साहस व बलिदान की अमर कहानी. वीर रस का पहला हिन्दी महाकाव्य. अनोखे छन्द. सफलताओं का इतिहास—स्याही से नहीं, खून से छपा. **मूल्य : ७.५०**

कामकला (*पहला भाग—विवाहित युवतियों के लिए दूसरा भाग—विवाहिक युवकों के लिए*)

पारिवारिक कलह, असंतोष, तलाक आदि अनेक बुराइयों का बहुत बड़ा कारण स्त्रीपुरुषों की काम के प्रति अनभिज्ञता है.

प्रस्तुत पुस्तक सेक्स जीवन पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई है. इसमें सेक्स के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया गया है, साथ ही आदर्श पारिवारिक जीवन के बारे में भी महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं.

विवाहित युवकों और युवतियों को इस पुस्तक के अध्ययन से स्वाभाविक जीवन निभाने में सहायता मिलेगी.

मूल्य प्रति भाग : ३.००

धरती माता (*आकाश में गोता, शीला शर्मा के साथ*)

हमारी धरती माता कहाँ से आई ? कब और कैसे ? चन्दामामा और सूरजदादा के लाड़ की धनी इस पुस्तिका में सितारों से आँखमिचौनी. अत्यन्त दिलचस्प चित्रों से सजी, जानकारी का खजाना—बच्चों के लिए हमारा विशेष प्रकाशन. इतनी कम कीमत में इतना अच्छा उपहार.

पृष्ठ : ३१, मूल्य : १.२५

दिल्ली बुक कम्पनी, एम-१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

कार्यालय, कटरा, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. १८६; मू. १.२५ । सामाजिक ।

त्यागपत्र : ले. जैनेन्द्रकुमार; प्र. पूर्वोदय प्रकाशन, नेताजी सुभाष रोड, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १००; मू. विशेष २.२५; सस्ता १.५० । पु. मु. ।

परिणीता : ले. शरत्चन्द्र; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली-३२; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० ।

पाप के रास्ते : ले. सोमनाथ अकेला; प्र. पुष्पी कार्यालय, कटरा, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. १३८; मू. १.०० । पु. मु. ।

मिस मसूरी : ले. रामप्रकाश कपूर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली-३२; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० ।

ये मर्द ये औरतें : ले. मंटो; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स; प्रा. लि., दिल्ली-३२; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० ।

लेडी डाक्टर : ले. डा. लक्ष्मीनारायणलाल; प्र. पुष्पी कार्यालय, इलाहाबाद; सा. पा. बु.; पृ. १६०; मू. १.०० । सामाजिक; पु. मु. ।

लोहे का आदमी : ले. इंदिरा; प्र. पूर्वोक्त; सा. क्रा. ८; पृ. १२८; मू. ०.७५ । जासूसी ।

लौटे हुए मुसाफिर : ले. कमलेश्वर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० ।

वाणभट्ट की आत्मकथा : ले. हजारीप्रसाद द्विवेदी; प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, हीराबाग, बम्बई; सा. क्रा; पृ. ४२६; मू. ५.५० । ५वाँ संस्करण ।

सरस्वतीचन्द्र : ले. गोवर्धनराम त्रिपाठी, अ. डा. कमलेश; प्र. भारती ग्रंथ भण्डार, १ अनसारी रोड, दिल्ली; पृ. ४००; मू. ७.५० । गुजराती के विख्यात उपन्यास का हिन्दी अनुवाद ।

सुनीता : ले. जैनेन्द्रकुमार; प्र. पूर्वोदय प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २४४; मू. विशेष ३.५०; सस्ता २.५० । पु. मु. ।

कहानी

चित्र-विचित्र

पोली इमारत

यह कंचन-सी काया : ले. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र';

प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ. १७६, १४०, १३६; मू. ३.००, २.५०, २.५० ।

जैनेन्द्र की कहानियां (भाग ८) : ले. जैनेन्द्रकुमार; प्र. पूर्वोदय प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १९६; मू. ३.५० । पु. मु. ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ (नवां भाग) : ले. जैनेन्द्रकुमार; प्र. पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली; पृ. २००; मू. ३.५० ।

नीम के फूल : ले. गिरिराजकिशोर ; प्र. किताब महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. १२८; मू. २.५० ।

नाटक एकांकी

नेफा की एक शाम : ले. ज्ञानदेव अग्निहोत्री; प्र. उमेश प्रकाशन, ५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १२८; म. २.५० । चीनी आक्रमण पर आधारित, मंचोपयोगी नाटक ।

मराठी के नये एकांकी : सं. वसन्तदेव; प्र. नीलाभ प्रकाशन, १५-ए. महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१; सा. क्रा.; पृ. २२५; मू. ४.०० । श्रेष्ठ एकांकियों का संग्रह ।

ये रेखाएं ये दायरे : ले. विष्णु प्रभाकर; प्र. हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर, हीराबाग, बम्बई; सा. क्रा-८; पृ. १८६; मू. ४.०० ।

यात्रा-संस्मरण

अट्ठाइस दिन की कहानी : ले. नरायण चतुर्वेदी; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा. क्रा.; पृ. १२८; मू. २.०० ।

चीड़ों पर चांदनी : ले. निर्मल वर्मा; प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी; मू. ३.०० । यात्रा-संस्मरण कथाएँ ।

राजेन्द्र बाबू : व्यक्तित्व-दर्शन : प्र. सस्ता साहित्य-मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ४; पृ. २५६; मू. पुस्तकालय संस्क. १५.००, सा. सं. १०.०० । संग्रह ।

व्यंग्य-विनोद

अदालत, वकालत, हजामत : ले. अरुण; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ६; सा. क्रा.; पृ. १०६; मू. १.२५ ।

दिल ही तो है : ले. जी. पी. श्रीवास्तव; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि. दिल्ली-३२; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० ।

नहले पर दहला

पिनकी परिहास

सैक्सों की लड़ाई : ले. अरुण; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. प्रत्येक, क्रा; पृ. प्र. १०६; मू. प्र. १.२५।

बाल-साहित्य

अच्छा कौन : ले. नीरव; प्र. साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर; पृ. ५६; मू. १.२५। ईसप की कविताबद्ध कहानियाँ, सचित्र।

करकट दमनक : ले. मिथलेश प्रभाकर; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा. डि.; पृ. ३६; मू. ०.८०।

किशोरोपयोगी

कर्ण : ले. सुदर्शन चोपड़ा; प्र. उमेश प्रकाशन, ५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. ११२; मू. २.००। किशोर उपन्यास माला का नया पुष्प।

गुरु नानकदेव : ले. राजेश शर्मा; प्र.; सा.; पृ.; मू. पूर्वोक्त।

मगरमच्छ का शिकार : ले. भीमसेन त्यागी; प्र.; सा.; पृ.; मू. पूर्वोक्त।

रबिबाबू : ले. लोकेन्द्र शर्मा; प्र.; सा.; पृ.; मू. पूर्वोक्त।

हम साहस के बेटे हैं : ले. राष्ट्रबन्धु; प्र. साहित्य-निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर; पृ. ६०; मू. १.५०। चीनी आक्रमण में आहुति देने वाले भारतीय वीरों की अमर गाथाएँ।

भूगोल-खगोल

मानचित्र चित्रण एवं प्रयोगात्मक भूगोल : ले. उमेश किशोर सक्सेना, प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड आगरा; सा. क्रा ४; पृ. २३७; मू. ६.५०।

मानव भूगोल के सिद्धान्त : ले. विश्वनाथ, द्विवेदी एवं सिंह; प्र. किताब महल, प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. ३००; मू. ७.५०।

हमारा आकाश : ले. छोटूभाई सुथार; प्र. उमेश प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. २५०; मू. ५.००। साधारण पाठकों के लिए।

अध्यात्म-दर्शन

दर्शन की कहानी : ले. बिलडूरेंट, अ. कैलाशनारायण; प्र. किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. ६००; म. १०.००। स्टोरी आफ फिलासफी का हिन्दी अनुवाद।

मानस का सामाजिक दर्शन : ले. बैजनाथसिंह; प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १७५; मू. ३.००। रामचरित मानस का समाज शास्त्रीय अध्ययन।

वाणिज्य-अर्थशास्त्र

परिवहन : सिद्धांत, इतिहास एवं समस्याएं : ले. डा. यशपाल; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ३४४; मू. ६.००।

व्यापारिक क्रियाशीलन : प्रशासन एवं प्रबन्ध : ले. के. सी. भण्डारी, जे. आर. कुम्भट; प्र. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ९३४; मू. १५.००।

शिक्षा-मनोविज्ञान

विज्ञान शिक्षण : ले. कुंवर बहादुरसिंह; प्र. किताब

हमारे नवीन महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

जनवरी, १९६४ के प्रकाशन

मेरा देश — मेरे देशवासी (सचित्र)
परम पावन दलाई लामा ७.५०
परमाणुयुगीन भौतिकी (सचित्र)
हेनरी सेमट : हार्वे ई० ह्वाइट ५.००
कहे पैरुडीदास (सचित्र)
चिरंजीत २.५०
पोली इमारत (कहानी-संग्रह)
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ३.००
चित्र-विचित्र (कहानी-संग्रह)
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
यह कंचन-सी काया (कहानी-संग्रह)
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
सिंहासन (राष्ट्रीय कविताएँ)
बलवीर सिंह रंग १.५०
चित्रकार : (उपन्यास) रणवीर ३.००
नहले पर दहला (चुटकुले)
अरुण १.२५
अदालत, वकालत, हजामत (चुटकुले) अरुण १.२५
सेक्सों की लड़ाई अरुण १.२५
आग, राख और रोशनी (एकांकी)
रेवतीसरन शर्मा २.००

१९६३ के प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास

विन्ध्या बाबू (सचित्र)
सन्तोषनारायण नौटियाल २.५०
मगध की जय : शिवसागर मिश्र ६.००
धर्म के नाम पर
सन्हैयालाल ओझा १०.००

कहानी

हिन्दी लेखिकाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ १०.००
एक छोड़ एक : रांगेय राघव ३.००

नाटक : एकांकी

छपते-छपते : मिहेल सैबेस्टियन ३.००
नया समाज : उदयशंकर भट्ट १.५०
रक्त-संगम : दिनेश खरे ३.००
विद्रोहिणी अम्बा (नाटक)
उदयशंकर भट्ट २.००

काव्य

उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएँ
संपा० अर्श मलसियानी ७.५०
कलियाँ खिलकर फूल बनी हैं
महेशचन्द्र नक्श १.५०
पुरवैया के नूपुर : देवराज दिनेश ४.००
पूर्वापर उदयशंकर भट्ट ५.००
अन्तर्मथन उदयशंकर भट्ट १.५०

व्यंग्य-विनोद

डींग-डींग असेम्बली (सचित्र)
फिक्र तौंसवी ३.००
मिसिरजी अन्नपूर्णानन्द १.५०
जो है सो : आत्मानन्द मिश्र ४.००

आलोचना (शोध प्रबन्ध)

गोरखनाथ और उनका युग
डा० रांगेय राघव ८.००
आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प
डा० कैलाश वाजपेयी १२.००
आधुनिक हिन्दी-काव्य में विरह भावना
डा० मधुरमालती सिंह १५.००

विविध

एक जीवन्त अधिकार-पत्र
विलियम ओ० डगलस २.००
भारत के त्यौहार
सुरेशचन्द्र शर्मा ३.००
मानव प्रकृति और आचरण
जॉन ड्यूई ६.००
अमरीकी चित्रकला (सचित्र)
जेम्स टॉमस फ्लेक्स्नर २.५०
सुनो कान में (सचित्र)
सावित्रीदेवी वर्मा ८.५०
भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोष
राजेन्द्र द्विवेदी १०.००
भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन (सचित्र)
लिओनार्ड मोसले ७.५०
मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास (सचित्र)
माइखेल नैस्तुर्ख १५.००
अमेरिकी सभ्यता : मैक्स लर्नर १०.००
हिमालय दर्शन (सचित्र)
कृष्णनारायण गोसावी ४.००
मचान पर उनंचास दिन (सचित्र)
श्रीनिधि ६.००
उत्तरी ध्रुव की सतह
कमांडर जेम्स कालवर्ट २.००
उत्तरी ध्रुव के नीचे सर्वप्रथम (सचित्र)
कमांडर विलियम आर. एंडर्सन २.५०
कश्मीर का लोक-साहित्य
मोहनकृष्ण दर १०.००
सामान्य मनोविज्ञान
डा० रामशकल पांडेय ६.५०
कार्यालय कार्यविधि
रामचन्द्रसिंह सागर ६.००
संयुक्त राज्य परिचय (सचित्र)
कालिदास कपूर ३.००

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

महल प्रा. लि. इलाहाबाद; सा. डि.; १४८; मू. ३.५० । प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए ।

शैक्षिक एवं माध्यमिक शिक्षालय व्यवस्था : ले. गैंड एवं शर्मा; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा. डि.; पृ. ४०६; मू. ६.५० । संशोधित संस्करण ।

राजनीति-इतिहास

नेहरू ही क्यों ? : ले. डा. शरदचन्द्र जैन; प्र. किताब महल, प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. १२८; मू. ५.०० ।

परीक्षा की घड़ी : ले. शंभुप्रसाद शाह; प्र. सस्ता-साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा.८; पृ. ४८; मू. ०.७५ । चीनी आक्रमण के समय की कहानी ।

भारतवर्ष का सरल इतिहास : ले. डा. परमात्माशरण; प्र. नन्दकिशोर एण्ड संस, वाराणसी; सा. डि.; पृ. २९६; मू. १०.०० ।

राजनीति के सिद्धान्त : ले. डा. महादेव प्रसाद शर्मा; प्र. किताबमहल, प्रा. लि. इलाहाबाद; सा. डि; पृ. ४००; मू. ७.०० ।

कोश

भाषाविज्ञान कोश : सं. डा. भोलानाथ तिवारी; प्र. ज्ञानमंडल लि. वाराणसी; सा. रा. ८; पृ. ८१६; म. २५.०० ।

हिन्दी साहित्य कोश (प्रथम भाग) : सं. डा. धीरेन्द्र वर्मा आदि; प्र. ज्ञानमंडल लि. वाराणसी; सा. रा.८; पृ. लगभग १०००; मू. २५.०० । द्वितीय संस्करण ।

विविध

जलवायुविज्ञान : ले. सैय्यद एजाज अहमद; प्र. किताबमहल, प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. डि.; पृ. २५०; मू. ५.०० । हिन्दी में विषय की पहली पुस्तक ।

मशीनों की दुनिया : ले. बेरिल बेकर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा. फु.१६; पृ. १२०; मू १.०० । ज्ञान-विज्ञान ।

रोली रंगे पत्र : ले. श्रीमती कौशल्या अश्क; प्र. नीलाभ प्रकाशन, म. गांधी रोड, इलाहाबाद; सा. क्रा.; पृ. ६९; मू. २.०० । बर्फीली चोटियों पर प्रतिरक्षा के लिए डटे जवानों के नाम ।

व्यायाम करो, स्वस्थ रहो : ले. राधाकृष्ण नेवटिया; प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा.८; पृ. ७२; मू. १.५० । दीर्घ जीवन के उपाय ।

सफलता का रहस्य : ले. स्वेद मार्डेन; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; सा. फु. १६; पृ. १२०; मू. १.०० । जीवनोपयोगी ।

सरल निबन्ध : ले. एस. पद्मनाभ एम. ए.; प्र. भारती ग्रन्थ भंडार, १ अनसारीरोड, दिल्ली; पृ. ३३०, मू. ३.७५ ।

●

निवेदन

खेद के साथ कहना पड़ता है कि कई प्रकाशक बन्धु नये प्रकाशनों की सूचना भेजते समय पर्याप्त सावधानी से काम नहीं लेते और एक ही प्रकाशन की सूचना दुबारा दे देते हैं । संपादन के समय संभव सतर्कता से काम लिया जाता है फिर भी कभी-कभी पुनरावृति हो जाती है फलतः उन स्थानों से शिकायत आती है जहां इन सूचनाओं के आधार पर नये प्रकाशनों का लेखा बनता है । निवेदन है कि इस दिशा में पूरी सावधानी रखी जाय और एक प्रकाशन की सूचना दुबारा न भेजी जाय ।

—संपादक

राजस्थान में पुस्तकों की खरीद का सिलसिला

राजस्थान में कुछ शहरों को छोड़कर स्वतन्त्र पाठक वर्ग नहीं है अर्थात् पुस्तक विक्रेताओं के यहां जाकर पुस्तक खरीद लेने वालों की संख्या अंगुलियों पर गिनी जाती है।

राजस्थान में किताबों की सबसे बड़ी खरीददारी स्वयं राजस्थान राज्य सरकार करती है। राजस्थान की शत-प्रतिशत प्राथमिक व माध्यमिक शालाएँ, ९५ प्रतिशत हाई व हायर सेकेण्डरी स्कूल, ९० प्रतिशत कालेज राजस्थान सरकार द्वारा संचालित हैं। इसी प्रकार सम्पूर्ण राजस्थान में लगभग सभी सार्वजनिक वाचनालय व पुस्तकालय भी राज्य सरकार द्वारा चलाये जाते हैं। जहाँ सीधे राज्य सरकार नहीं है—वहाँ भी सरकार का आर्थिक अनुदान अवश्य है अर्थात् पुस्तकों की खरीद पर सरकारी नियमों का प्रतिबन्धन अवश्य आ जाता है। इनके अलावा आजकल विकेन्द्रीकरण की वजह से पंचायत समितियों द्वारा कुछ समाज शिक्षण केन्द्र खोले गए हैं। इन केन्द्रों में भी पुस्तकें व पत्रिकायें खरीदी जाती हैं। किन्तु यह केन्द्र भी पुस्तकों व पत्रिकाओं की खरीद के बारे में राज्य सरकार की स्वीकृत सूची से नियमित होते हैं।

पुस्तकों की खरीद के बारे में एक विधि तय है। विधि इस प्रकार है : पुस्तक की चार प्रतियां उप-संचालक, समाज शिक्षा, शिक्षा विभाग, बीकानेर को भेजिये। समाज शिक्षा विभाग का कहना है कि वे ये पुस्तकें आलोचकों के पास भेजते हैं। आलोचक ये सिफारिश करते हैं कि पुस्तकों को राजकीय संस्थाओं के लिए लिया जाये या नहीं। साथ ही साथ समाज शिक्षा विभाग ने पुस्तकों की खरीद के लिए जो चौदह खाने बनाये हैं—उनमें से वे किन-किन खानों के लिए किस-किस पुस्तक को उचित समझते हैं। इनकी सिफारिश के उपरान्त शिक्षा विभाग स्वीकृत पुस्तकों की साइक्लोस्टाइल प्रति निकालता है। इसी प्रति के अनुसार फिर उपरोक्त संस्थायें पुस्तकों की खरीद कर सकती हैं।

सूचना सार

शिक्षा विभाग प्रतिवर्ष प्रकाशकों से वह कमीशन पूछता है जो वे अपने प्रकाशनों पर देंगे। एक सूची में प्रकाशकों के नाम और उनके स्वीकृत कमीशन लिखे जाते हैं। सूची विभिन्न संस्थाओं को भेजदी जाती है। संस्थाएं उसी सूची के अनुसार कमीशन लेली हैं।

प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन : केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की योजना

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने 'प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकों के अनुवाद व 'प्रकाशन की योजना' को अब संशोधित रूप में स्वीकृत किया है। इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशक मूल अंग्रेजी पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद के और हिन्दी में मौलिक पुस्तकों के प्रकाशन के प्रस्ताव भेज सकते हैं। इसका विषय विज्ञान, शिल्प, सामान्य ज्ञान, साहित्य आदि विषय तथा बाल-साहित्य हो सकता है।

प्रकाशकों के लिए अनिवार्य होगा कि वे योजना में स्वीकृत पुस्तकों की कम से कम तीन हज़ार प्रतियां प्रकाशित करें। इनमें से एक-तिहाई प्रतियां सरकार (मुख्य नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री द्वारा निर्धारित मूल्य पर) खरीद लेगी। योजना की पूरी शर्तों के लिए लिखें :

उपनिदेशक (प्रकाशन), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय (भारत सरकार), १५।१६, सुभाष मार्ग, दरियागंज दिल्ली-६।

नए पाठकों के लिए ७ पुस्तकों को पुरस्कार

यूनेस्को की नए पाठकों के लिए पुस्तकों की प्रतियोगिता के अंतर्गत केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने ७ पुस्तकों को पुरस्कार के लिए चुना है। प्रत्येक पुस्तक को लगभग १९०० रु० (४०० अमरीकी डालर) का इनाम मिलेगा। इनमें से ४ पुस्तकें हिन्दी की, २ बंगला की और १ उर्दू की है। तलिम की पुस्तकों को कोई इनाम नहीं दिया गया है क्योंकि तलिम की जो दो पुस्तकें आई थीं वे उचित स्तर की नहीं थीं। हिन्दी की निम्नलिखित पुस्तकों के

लेखकों को पुरस्कार दिए जाएंगे :

१. 'कीटाणु और सामान्य रोग' ले० श्री धीरेन्द्र अग्रवाल। प्रकाशक—मैसर्स आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

२. 'हमारे आदिवासी' ले० श्री हरि प्रकाश। प्रकाशक मैसर्स बंसल एण्ड क०, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

३. 'आग हमारी मित्र व शत्रु' ले० श्री रमेशचन्द्र। प्रकाशक—मैसर्स राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

४. 'छोटे बड़े जानवर' ले० श्री किशोर गर्ग। प्रकाशक—मैसर्स रानी प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली।

शिक्षा मंत्रालय का भाषा विभाग

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के हिन्दी विभाग का नाम बदल कर 'भाषा विभाग' कर दिया गया है। इस समय हिन्दी विभाग, हिन्दी व संस्कृत के विकास और प्रसार का काम करता है। संस्कृति विभाग के निम्नलिखित कार्य, फौरन भाषा विभाग को दे दिये गए हैं : १. आधुनिक भारतीय भाषाओं का विभाग। २. भारत का भाषायी सर्वेक्षण।

कुरुक्षेत्र में पुस्तकालय विज्ञान सेमीनार

११ जनवरी, सन् ६४ से १९ जनवरी, सन् ६४ तक पंजाब राज्य के हायर सेकेण्डरी विद्यालयों में 'टीचर इन्चार्ज लाइब्रेरीज़' का एक सेमीनार कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कैम्पस में हुआ। सेमीनार का उद्घाटन विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सूर्यभानु ने किया और बताया कि पुस्तक और पुस्तकालय का विद्यार्थी-जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस सेमीनार में पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डा० जगदीश शर्मा, पंजाबी विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष सरदार हाकमसिंह तथा दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय के यहाँ से श्री मंगला ने निबन्ध पढ़े और पुस्तकालय के कार्य संचालनों पर प्रकाश डाला।

इस सेमीनार में कालेज आफ एजूकेशन के प्रिन्सिपल डा० तनेजा, श्री सुधीर एवं विशेषकर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष श्री करतार सिंह दलाल एवं नरेन्द्र शर्मा ने बड़ी कर्मठता से कार्य किया और उनके सतत प्रयासों के फलस्वरूप यह सेमीनार सम्पन्न हुआ।

इस सेमीनार में आए हुए प्रतिनिधियों का विश्वविद्या-

लय में स्थित कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय बुक्स एण्ड स्टेशनरी शाप के व्यवस्थापक श्री रघुवीर शरण बंसल ने चायपान से स्वागत किया। इस अवसर पर श्री बंसल ने शिक्षा संचालक पंजाब द्वारा स्वीकृत लाइब्रेरी बुक्स की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह आयोजन १६ जनवरी से १९ जनवरी तक रहा। प्रदर्शनी का अतिथियों तथा विद्यार्थियों में अच्छा स्थान बना रहा। १८ तारीख को प्रदर्शनी में पंजाब के उप-शिक्षा संचालक श्री रोशनलाल वर्मा ने प्रदर्शनी के कार्य को देखा और उसके कार्य की सराहना की।

प्रदर्शनी में प्रमुख प्रकाशकों की १५०० पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं।

उत्तर प्रदेश में प्राइमरी शिक्षा का प्रसार

उत्तर प्रदेश में वर्ष १९६३ में २,६५० और प्राइमरी स्कूल खोले गये जिनसे राज्य में प्राइमरी स्कूलों की संख्या बढ़कर ५२,०८३ हो गयी। वर्ष १९६२-६३ में ६ से ११ वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले बच्चों का प्रतिशत भी वर्ष १९६१-६२ के ४८ प्रतिशत से बढ़कर ५२ प्रतिशत हो गया। वर्ष १९६२-६३ में स्कूलों में बच्चों की प्रवेश संख्या बढ़ाने के लिए जो व्यापक आन्दोलन चलाया गया था उसके फल-स्वरूप लगभग ४ लाख और अधिक छात्रों ने स्कूलों में अपने नाम लिखवाये।

उत्तर प्रदेश सरकार शिक्षकों के निर्वाचन क्षेत्रों को समाप्त करने के पक्ष में

न्यायमंत्री, श्री अलीजहीर ने २३ दिसम्बर को विधान परिषद् में इस बात की पुष्टि की कि उत्तर प्रदेश सरकार ने इस वर्ष केन्द्रीय सरकार से यह संस्तुति की है कि उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में शिक्षकों के निर्वाचन क्षेत्रों को समाप्त कर दिया जाय। न्यायमन्त्री ने कहा कि राज्य मंत्रिमंडल का यह मत है कि व्यवसाय के आधार पर प्रतिनिधित्व देना उचित नहीं है और यह जनतन्त्र के सिद्धांतों के विरुद्ध है। व्यावसायिक प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में पूछे जाने पर अन्य राज्य सरकारों का भी यही उत्तर है जो उत्तर प्रदेश सरकार ने दिया है।

हिन्दी में विदेशी भाषाओं का अनूदित साहित्य

प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री बालकृष्ण एम. ए. ने हिन्दी में विदेशी भाषाओं के अनूदित साहित्य की सूची प्रस्तुत करने का काम हाथ में लिया है। जिन बन्धुओं ने ऐसा साहित्य प्रकाशित किया है वे निम्नलिखित सूचनाएँ प्रदान करने की कृपा करें : मूल लेखक का नाम, मूल कृति का नाम, मूल भाषा, हिन्दी अनुवादक का नाम, अनुवादित कृति के प्रकाशक, पृष्ठ संख्या, आकार, मूल्य और विशेष विवरण। यह सूची 'हिन्दी प्रकाशक' में प्रकाशित भी होगी। सूचनाएँ इस पते पर भेजें :

श्री बालकृष्ण एम. ए.
के० ४३, नवीन शाहदरा
दिल्ली-३२

सहारनपुर कागज़ टैक्नालाजीकल स्कूल अगले वर्ष चालू होगा

उपमन्त्री, श्री एस० पी० गुप्त ने २३ दिसम्बर को विधान परिषद् में बताया कि सहारनपुर में कागज टैक्नालाजिकल स्कूल के जुलाई, १९६४ से चालू हो जाने की आशा है। इस स्कूल का निर्माण स्वीडेन सरकार के सहयोग से किया जा रहा है। पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री गुप्त ने सदन को सूचित किया कि स्कूल के निर्माण पर कुल ६४·५० लाख रु० की लागत आने का अनुमान है।

आयुर्वेदिक एवं तिब्बी पुस्तकों पर पुरस्कार

आयुर्वेदिक एवं तिब्बी अकादमी उत्तर प्रदेश ने आयुर्वेदिक एवं तिब्बी पर हिन्दी, संस्कृत या उर्दू में लिखी पांडुलिपियों या पुस्तकों पर २३०० रु० के पुरस्कार देने का निर्णय किया है। पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि १५ जनवरी थी। फिर भी इच्छुक सज्जन अकादमी के अध्यक्ष महोदय से तुलसीदास मार्ग लखनऊ के पते पर पत्र व्यवहार कर अधिक जानकारी ले सकते हैं।

विज्ञान की शिक्षा का २० अन्य स्कूलों में प्रचलन

पंजाब सरकार ने वर्ष १९६४-६५ के दौरान [illegible] अन्य सरकारी हाई स्कूलों में विज्ञान की पढ़ाई प्रारम्भ करने का निर्णय किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लि[illegible] प्रत्येक स्कूल को विज्ञान का सामान खरीदने के लि[illegible] २,००० रु० का अनुदान और एक बी० एस-सी० अध्या[illegible]पक दिया जाएगा। इस समय राज्य में ५०६ राजकी[illegible] उच्चतर माध्यमिक स्कूल और ६५५ हाई स्कूल हैं। इन[illegible] से १०५ हाई और हायर सैकेंडरी स्कूलों में विज्ञान की पढ़ाई की सुविधाएँ नहीं हैं।

श्री रामगोपाल मोहता का स्वर्गवास

राजस्थान के वयोवृद्ध विचारक, लेखक, सामाजिक [illegible] धार्मिक क्रांति के उपासक और गीता के मर्मज्ञ मनस्[illegible] श्री रामगोपालजी मोहता का बीकानेर में गत २८ दिसम्ब[illegible] को ९० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

श्री मोहताजी प्रवुद्ध लेखक, स्वतन्त्र विचारक [illegible] दार्शनिक व्यक्ति थे। गीता पर उन्होंने आधे दर्जन [illegible] अधिक ग्रंथ लिखे हैं। उनमें 'गीता का व्यवहार दर्शन[illegible] सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इसी वर्ष आपने गीता का समत्व यो[illegible] अर्थात् 'शाश्वत समाज विज्ञान' नाम से एक नया ग्रं[illegible] लिखा था।

सम्पादक के नाम पत्र

इसमें दो मत नहीं हो सकते कि 'हिन्दी प्रकाश[illegible] अपने स्थान पर एक है। इसके माध्यम से लेखक, प्रकाश[illegible] पुस्तक-विक्रेता तथा पाठक सभी एक सूत्र में पिरो[illegible] जायंगे।

विश्वस्नेही [illegible]
बेआस प्रकाशन, गरी[illegible]

सन् '६३ में प्रकाशित हिंदी साहित्य 'हिन्दी प्रकाशक' का परिचयात्मक

विशेषांक

मार्च सन् १९६४ का 'हिन्दी प्रकाशक' का अंक १९६३ के हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक विशेषांक होगा जिसमें

१ जनवरी सन् १९६३ से ३१ दिसम्बर सन् १९६३ तक प्रकाशित हिन्दी साहित्य का परिचय

दिया जायगा।

१. विशेषांक की पृष्ठ संख्या स्वभावतः अधिक होगी और वह काफी बड़ी संख्या में छापा जायगा इसलिए उसकी तैयारी शुरू हो गई है।

२. जिन प्रकाशक बन्धुओं ने सन् '६३ के अपने प्रकाशनों की एक-एक प्रति अभी तक नहीं भेजी वे तुरंत भेजने की कृपा करें जिससे उनकी उपयोगी चर्चा इस संग्रहणीय और पुस्तकें खरीदने वालों के लिए पथ-प्रदर्शक विशेषांक में हो सके।

३. १५ फरवरी तक जो पुस्तकें हमारे कार्यालय में पहुँच जायंगी उनकी चर्चा इसमें हो सकेगी।

४. अंक के लिए जो विज्ञापन और नये प्रकाशनों की सूचनाएँ २३ फरवरी तक कार्यालय में पहुँच जायेंगे उनका ही समावेश संभव होगा।

५. विशेषांक के लिए विज्ञापन की दर में वृद्धि नहीं की गई।

प्रकाशक बन्धु सन् '६३ के अपने प्रकाशन, विज्ञापन और नये प्रकाशनों की सूचनाएँ तुरंत भिजवाकर इस बड़े काम में सहयोग प्रदान करें!

—संपादक

प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।

★ हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।

★ आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हज़ारों पुस्तकें छापी हैं।

★ क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हज़ारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गांव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मँगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।

२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।

३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।

४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।

५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।

६. म्यूज़िक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मंगाइये।

... शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्रामपंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान-भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक को आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी माँगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आपको सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य. उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ मार्च-अप्रैल, १९६४ अंक ४-५

१९६३ के हिन्दी साहित्य का परिचय विशेषांक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ४-५ | मार्च-अप्रैल, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

अपनी बात

'हिन्दी प्रकाशक' का यह विशेषांक किसी विशेष उद्देश्य को लेकर प्रकाशित किया जा रहा है। विशेषांक अपने उद्देश्य की पूर्ति में कहाँ तक सफल है इसका निर्णय तो बुधजन ही कर सकते हैं, हमने कार्य किया है; गीता का यह कथन कि 'कर्म किए जा, फल की चिन्ता छोड़' वाली बात ही इस विषय में चरितार्थ होती है।

आज सर्वत्र यही चर्चा है कि हिन्दी का प्रकाशन जिस तीव्र गति से हो रहा है उसकी उतनी खपत नहीं होती। वह प्रकाशक जिसने किसी आशा के साथ हिन्दी साहित्य की एक महान् प्रेरणावान कृति का प्रकाशन किया है और वह लेखक जिसने अनवरत श्रम से वह कृति प्रस्तुत की है, दोनों ही अपने को निराश पाते हैं। उधर विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग एवं कालेजों के अध्यक्ष तथा लाइब्रेरियन यह कहते सुने जाते हैं कि हमारी हिन्दी पुस्तकों की ग्राण्ट पुस्तकें न मिलने के कारण खर्च नहीं हो पाई।

इन दोनों विपरीत धाराओं के मध्य में गतिरोध अथवा खाई कहाँ है? कहाँ पर इस बात का अभाव है—इसका विचारना आज का प्रथम कर्त्तव्य है। हिन्दी में जो साहित्य प्रकाशित होता है उसका सामूहिक रूप में कहीं पर भी पता नहीं चलता। पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, बिक जाती हैं, गोदामों में भरी रहती हैं किन्तु किसी एक स्थान अथवा एक सूची से इस बात का पता नहीं चलता कि इस वर्ष कहाँ से और क्या प्रकाशन हुआ।

सैंट्रल रिफरेंस लाइब्रेरी कलकत्ता द्वारा संपादित और भाषा विभाग उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची सन् १९६० तक की प्रकाशित हुई है परन्तु उसमें प्रकाशकों का पूरा परिचय नहीं दिया गया और सूची में वही पुस्तकें दी गई हैं जो प्रकाशकों ने लाइब्रेरी को स्वयं भेज दी थीं। जो पुस्तकें वहाँ नहीं भेजी गईं उनका सूची में उल्लेख नहीं हुआ। यह सूची काफी विलम्ब से भी प्रकाशित होती है। आज सन् १९६४ के तीन मास व्यतीत हो गए किन्तु १९६१ की राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची के दर्शन नहीं हुए। इन सब कारणों को देखते हुए हिन्दी प्रकाशक संघ ने निश्चय किया कि वर्ष के पूरे प्रकाशन का परिचय देने वाला एक विशेषांक प्रकाशित किया जाय और फिर यह काम प्रति वर्ष होता रहे। काम बड़ा और कठिन प्रतीत हुआ परन्तु सबके सहयोग के भरोसे पर उठा लिया गया।

'हिन्दी प्रकाशक' में नये प्रकाशन शीर्षक में नये प्रकाशनों की सूचना प्रतिमास प्रकाशित होती है। हमने 'हिन्दी प्रकाशक', 'प्रकाशन समाचार' तथा 'हिन्दी प्रचारक' के आधार पर पहले अपनी एक सूची बनाई कि इस वर्ष क्या कुछ प्रकाशित हुआ है। उनके प्रकाशकों को पत्र लिखे कि वे अपने प्रकाशनों की एक-एक प्रति प्रकाशक संघ के कार्यालय को भेज दें। प्रकाशकों के यहाँ से जो पुस्तकें मिलीं उनमें ऐसी बहुत सी पुस्तकें नहीं थीं जिनकी सूचनाएँ नये प्रकाशनों की सूची में आ गई थीं। नये प्रकाशनों की सूचनाओं में कई बार एक ही पुस्तक की दो-दो या तीन-तीन बार सूचनाएँ भी दीख पड़ीं। इस विषय में हमारा नम्र निवेदन है कि संघ के मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' में नये

प्रकाशन के लिए उन्हीं पुस्तकों की सूचना प्रकाशनार्थ भेजी जाय जिनका प्रकाशन वास्तव में हो चुका हो। यदि हम यह कार्य स्वयं उत्तरदायी बन कर करेंगे तब व्यापार को लाभ होगा, संघ की प्रतिष्ठा होगी।

खेद है कि हमारे पत्रों के उत्तर में इस विशेषांक के लिए बहुत कम पुस्तकें फरवरी मास में आईं जबकि इसकी तिथि १५ फरवरी थी। उसके पश्चात् पुनः व्यक्तिगत पत्र लिखे, टेलीफोन किये, व्यक्ति भेजे, तब १२ मार्च तक पुस्तकें एकत्र हो पाईं। पुस्तक परिचय किसी न किसी क्रम के आधार पर था इस कारण सामग्री १५ मार्च तक ही पूर्ण हो सकी। यह विशेषांक मार्च के प्रथम सप्ताह में निकलना चाहिए था जो इस विलम्ब के कारण मार्च-अप्रैल के संयुक्त अंक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। यदि सहयोग की अधिक तत्पर भावना के साथ कार्य हो तो सभी कार्य समय पर और ठीक हो सकते हैं। 'हिन्दी प्रकाशक' का ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा। अच्छा हो कि प्रकाशक बन्धु अपने प्रकाशनों की एक-एक प्रति उनका प्रकाशन होते ही कार्यालय को भेज दिया करें जिससे यह कार्य सुविधा और अधिक व्यवस्था के साथ होता रहे।

इस विशेषांक में पौने छः सौ पुस्तकों का परिचय दिया जा रहा है। परिचय उन्हीं पुस्तकों का है जो संघ के कार्यालय में आ गई थीं। नये प्रकाशनों की सूचनाओं से ज्ञात १७५ पुस्तकों का परिचय नहीं दिया जा सका। हमने इन पुस्तकों के प्रकाशकों को बार-बार लिखा किन्तु उनके प्रकाशन न आए। ऐसा लगता है कि वे अपनी पुस्तक की एक-एक प्रति नहीं देना चाहते या इन पुस्तकों का प्रकाशन ही नहीं हुआ। इन पुस्तकों की सूची हमने परिशिष्ट 'ग' में दी है। इस वर्ष कुछ पुस्तकों के द्वितीय संस्करण परिवर्धन के साथ प्रकाशित हुए है। हमने उन पुस्तकों को परिशिष्ट 'ख' में दिया है।

कुछ प्रकाशक बन्धुओं ने पुरानी पुस्तकें अर्थात् सन् १९६३ से पूर्व के प्रकाशन तथा कुछेक ने सन् १९६४ के प्रकाशन भेज दिये थे। उनका परिचयांक में विवरण नहीं दिया गया है। विशेषांक में उन पुस्तकों का भी उल्लेख नहीं किया गया जिनके बाद के संस्करण १९६३ में प्रकाशित हुए हैं किन्तु वह इससे पूर्व भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

हो सकता है कि प्रेस के कारण अथवा टाइप सूची में भूल रह जाने से पुस्तक के मूल्य में अथवा अन्यत्र कोई भूल हो गई हो—इसके लिए 'हिन्दी प्रकाशक' के मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विवशता प्रकट करते हुए उत्तरदायित्व से छुटकारा चाहते हैं।

अन्त में हम अपने कृपालु पाठकों से क्षमा प्रार्थना करते हैं जो पूरे एक महीने तक इस विशेषांक की उत्कट प्रतीक्षा करते रहे हैं, और उन सब मित्रों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिनके उदार सहयोग से यह विशेषांक प्रस्तुत हुआ है। इस संदर्भ में श्री रघुवीरशरण बंसल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पुस्तकों की सूची बनाने, उसे तरतीब देने और परिचय लिखने में उन्होंने जो अनवरत श्रम किया है वह सराहनीय एवं अनुकरणीय है। एक प्रकार से यह विशेषांक उन्हीं की सूझ और दृढ़ निष्ठा का परिणाम है।

•

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

का

नवाँ वार्षिक अधिवेशन

२६-२७ अप्रैल को

इलाहाबाद में होगा !

विवरण संघ समाचार में देखें और अधिवेशन में भाग लेकर उसे सफल बनायें।

हिन्दी साहित्य
सन् १९६३
एक सर्वेक्षण

१. अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य-व्यापार

१. आर्थिक विचारधारायें : ले. श्रीकृष्ण श्रीवास्तव, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६ ।

पुस्तक में आर्थिक विचारों की क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत है । इसे पूर्व-वैज्ञानिक आर्थिक विचार, राजनैतिक अर्थशास्त्र का विकास, समाजवाद का विकास, आधुनिक अर्थशास्त्र और भारत में आर्थिक विचार नामक पांच भागों में बाँटा गया है । पुस्तक छात्रों के लिए है ।

२. आर्थिक विकास का सापेक्ष चित्रण : ले. जान केनेथ गैलब्रेथ, मू. २.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६ ।

यह पुस्तक 'इकनोमिक डेवलपमेंट इन प्रैसपैक्टिव' का हिन्दी रूपांतर है, रूपांतर श्री हरिप्रतापसिंह ने किया है । अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए है ।

३. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त : ले. ए. बी. भट्टाचार्य, मू. ५.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

इस पुस्तक की रचना विश्वविद्यालयों के बी. ए. अर्थ-शास्त्र एवं व्यापार के पाठ्यक्रमों को दृष्टि में रखकर की गई है ।

४. भारतीय सहकारिता आन्दोलन : ले. अनन्तराम निगम, मू. ५.५०, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर ।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत में सहकारिता सम्बन्धी गति-विधियों पर प्रकाश डाला गया है । हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक है । लेखक ने पुस्तक की विषय-सामग्री को १५ अध्यायों में विभाजित किया है । पुस्तक की रचना पाठ्यक्रम की मर्यादा के अनुसार की गई है ।

५. विश्व अर्थव्यवस्था : एक परिचय : ले. ए. जे. ब्राउन, मू. ७.५०, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

पुस्तक में संसार की आर्थिक गतिविधियों के गहन अध्ययन और उनके आधारभूत नियमों और सिद्धांतों को समझने के लिए सामग्री है । Introduction to The World Economy का यह हिन्दी रूपांतर है ।

६. भारतीय कम्पनी अधिनियम एवं सेक्रीटेरियल : ले. एस. सी. सक्सेना, मू. १२.००, प्र. विश्वभारती प्रकाशन, मेरठ ।

प्रस्तुत पुस्तक की विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार रचना की गई है ।

२ आत्मकथा

७. मेरे जीवन के अनुभव : ले. सन्तराम बी. ए., मू. ४.५०, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रमुख साहित्यकार और समाज-सेवी श्री संतरामजी ने अपने कार्यकलापों का विवरण किया है । उनकी आत्मकथा के साथ सामाजिक वातावरण की भी झाँकी मिलती है ।

३. आलोचना : सिद्धांत

८. काव्यशास्त्र की रूपरेखा : ले. डा. रामदत्त भारद्वाज, मू. ७.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक आलोचना शास्त्र के सिद्धांतों को लेकर लिखी गई है जिसमें भारतीय एवं पाश्चात्य सिद्धांतों के अतिरिक्त काव्य, कथा-साहित्य, निबन्ध, रूपक और नाटकों पर विवेचन किया गया है ।

९. ध्वन्यालोक (पूर्वार्द्ध) : ले. डा. रामसागर त्रिपाठी, मू. १२.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में आनन्दवर्द्धनाचार्य के ध्वन्यालोक, अभिनवगुप्त की लोचन टिप्पणी एवं तारावती व्याख्या को दिया गया है । प्रथम भाग में प्रथम तथा द्वितीय उद्योत पर चर्चा की गई है और दूसरे भाग में तृतीय तथा चतुर्थ उद्योत का वर्णन है ।

१०. साहित्य परिचय : ले. डा. एस. पी. खत्री, मू. ३.००, प्र. हिन्दी प्रचारक, वाराणसी ।

प्रस्तुत पुस्तक में काव्य, नाटक, निबन्ध तथा कहानी पर विचार व्यक्त किये गये हैं ।

४. आलोचना : कवि

११. अज्ञेय : ले. विद्यानिवास मिश्र, मू. २.००, प्र. राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली।

पुस्तक में 'अज्ञेय' की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कविताएँ संकलित हैं। साथ ही इनकी जीवनी और व्यक्तित्व पर भी विस्तृत प्रकाश डाला है। आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि माला की यह एक प्रमुख पुस्तक है।

१२. कालिदास और उनकी कला : ले. वागीश्वर विद्यालंकार, मू. १०.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में कालिदास का काल-निर्णय, कालिदास का जन्मस्थान, कालिदास के समय का भारत तथा कवि का जीवन, संयत शृंगार, सौंदर्य का स्वरूप तथा कालिदास द्वारा उसका चित्रण, प्रेम का परिष्कार, कालिदास और महाकाव्य विषय पर चर्चा की गई है।

१३. ग्वाल कवि : ले. प्रभुदयाल मीतल, मू. ३.००, प्र. साहित्य संस्थान, मथुरा।

इस पुस्तक में ग्वाल कवि के जीवन का वृत्तान्त, उनके समस्त साहित्य एवं अप्रकाशित ग्रन्थों का परिचय तथा काव्य संकलन दिया गया है।

१४. चन्दसखी का काव्य : ले. अमरनाथ, मू. २.००, प्र. ज्ञानलोक प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन काव्य की समीक्षा एवं आलोचना के साथ कवयित्री चन्द सखी के सम्बन्ध में बहुत सी अज्ञात बातों पर प्रकाश डाला गया है।

१५. चन्दसखी का जीवन और साहित्य : ले. प्रभुदयाल मीतल, मू. ५.००, प्र. साहित्य संस्थान, मथुरा।

इस पुस्तक में चन्दसखी के जीवन-परिचय के साथ उनके समस्त साहित्य एवं ग्रन्थों का परिचय एवं विवेचन दिया गया है।

१६. युगचारण दिनकर : ले. डा. सावित्री सिन्हा, मू. १०.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

पुस्तक में राष्ट्रीय कवि दिनकर के जीवन एवं उनकी साहित्य-साधना का विस्तृत विवेचन है। दिनकरजी के जीवन और व्यक्तित्व, राष्ट्रीय काव्य की पृष्ठभूमि, काव्य-चेतना का विकास, तथा काव्य-शिल्प पर लेखिका ने विशद चर्चा की है।

१७. एक व्यक्ति एक युग (निराला) : ले. नागार्जुन मू. २.७५, प्र. परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद-६।

प्रस्तुत पुस्तक में निराला के जीवन की कुछ झांकियां हैं, जिनमें उनके साहित्य एवं स्वभाव का परिचय भी मिल जाता है।

१८. रसरतन : सम्पादक शिवप्रसाद सिंह, मू. १०.००, प्र. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

रसरतन महाकवि पुहकर की एक अप्रकाशित रचना है। यह शुद्ध रूप में भारतीय प्रेमाख्यान है। इसमें अवधी भाषा का प्रयोग है। छन्द चौपाई, दोहा और सोरठा है।

१९. सुमित्रानन्दन पन्त : कला, काव्य और दर्शन : ले. गोपालदास नीरज, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में पन्तजी की कला तथा उनके काव्य और दर्शन का सरस ढंग से विद्यार्थियों के स्तर पर विवेचन है।

५. आलोचना : लेखक

२०. नाटककार उदयशंकर भट्ट : ले. मनोरमा शर्मा, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भट्ट जी के जीवन एवं उनके नाटकों का विस्तृत विवेचन है। लेखिका ने भट्ट जी के १८ नाटक तथा ११ एकांकियों की चर्चा की है। परिशिष्ट खण्ड (क) में भट्टजी के नाटकों की सूक्तियों का संकलन है।

२१. जैनेन्द्र : व्यक्तित्व और कृतित्व : ले : सत्यप्रकाश मिलिन्द, मू. ७.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली।

विभिन्न विद्वानों के लेखों का संकलन किया गया है। इसमें जैनेन्द्र के जीवन एवं साहित्य के प्रत्येक पहलू पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है।

२२. मृत्युंजय रवीन्द्र : ले. हजारीप्रसाद द्विवेदी, मू. ६.००, प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई-४।

प्रस्तुत पुस्तक में गुरुदेव टैगोर के व्यक्तित्व और कृतित्व को तीन खंडों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में व्यक्तित्व है, दूसरे खण्ड में कृतित्व तथा तीसरे खण्ड में काव्य।

सभा के कुछ नवीन प्रकाशन

हिन्दी सगुणकाव्य की सांस्कृतिक भूमिका — ले० डा० रामनरेश वर्मा मूल्य ११.००

हिन्दी सगुणकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। इस ग्रंथ में सगुणकाव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बड़े ही पांडित्यपूर्ण ढंग से तटस्थ जिज्ञासा के साथ औचित्यपूर्ण शोध एवं संयोजन किया गया है। सगुण काव्य की आन्तरिक पैठ के लिए प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवं मननीय है।

भारतेन्दु नाट्यरूपक — ले० श्री डा० भानुशंकर मेहता मूल्य ३.००

नाट्य कला की दृष्टि से यह ग्रंथ हिन्दी में एक नूतन प्रयोग है। इस प्रयोग में अनेक नए नाट्य शिल्पों का विनियोग किया गया है। इसमें भारतेन्दु के जीवन की ऐसी झांकी दिखाने की चेष्टा की गई है जिसके द्वारा नाटककार की कला-रेखाओं और साहित्य-माध्यम से दिए गए संदेशों का अच्छा आभास मिल जाता है।

रस रतन — संपा० श्री डा० शिवप्रसाद सिंह मूल्य १०.००

यह ग्रंथ 'पुहकर' कवि द्वारा कल्पित कथा के आधार पर रचित प्रबन्ध काव्य का सुसंपादित संस्करण है। यह वही प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिस पर प्रसन्न होकर बादशाह जहांगीर ने इसके रचयिता कवि को बंदीगृह से मुक्त कर दिया था।

गंगालहरी (पद्माकर-कृत) सं० श्री सुधाकर पांडेय मूल्य १.२५

यह पुस्तक कई विश्वविद्यालयों के बी० ए० के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। प्रस्तुत पुस्तक में कठिन शब्दों पर पाद-टिप्पणी, अलंकार तथा प्रारम्भ में भूमिका दे दी गई है जिससे छात्रों के लिए यह सुबोध एवं अत्यन्त उपयोगी हो गई है।

नाटक के तत्व : मनोवैज्ञानिक अध्ययन ले० श्री० कमलिनी मेहता मूल्य ३.५०

इस कृति में विदुषी लेखिका ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नाटक के तत्वों पर प्रकाश डालने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया है। सभी स्थलों पर विषयों का सुग्राह्य एवं मार्मिक विवेचन सरल भाषा में किया गया है। पूर्व और पाश्चात्य नाट्यमानकों में सामंजस्य स्थापित किया है। पुस्तक नाट्यशास्त्र के अध्ययेताओं के लिए संग्राह्य है।

हिन्दी विश्वकोश खंड ३ सा० मूल्य १२.५० वि० मूल्य १५.००

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

युग-चिन्तन

संकलन और रूपान्तर

शरद देवड़ा

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
डॉ० बर्ट्रेण्ड रसेल
डॉ० हैवलाक एलिस
रेबेका वेस्ट
डॉ० अल्बर्ट श्वाइत्जर
डॉ० ज्युलियन हक्सले
डॉ० जे० बी० एस० हाल्डेन
डॉ० कार्ल यास्पर्स
चार्ल्स वॉदलेयर
जीन फेल्डमान और मैक्स गरटेनवर्ग
माइकेल राबर्ट्‌स
एलेन-रोब्ब ग्रिल्लेत
विलियम कूपर
ताहा हुसैन
जेम्स एस० होम्स
मॉरिस क्रैन्स्टन
बोरिस पास्तरनाक
टी० एस० ईलियट
डब्लू० एच० ऑडेन
डायलन टॉमस
ओसामू देजाई
जोसे आरगोता ई गेस्से
साइमन दे ब्यूवोय

रूपा एण्ड कम्पनी
१५, बंमिम चटर्जी स्ट्रीट
कलकत्ता–१२

●

९४, साउथ मलका
इलाहाबाद-१

●

११, ओक लेन, फोर्ट
बम्बई-१

इस युग ने साहित्य, दर्शन और कलाओं के क्षेत्र में जितने द्रुत और तूफानी परिवर्तन देखे, और विरोधी विचार-धाराओं और आन्दोलनों के जितने प्रहार सहे, वह पिछली कई शताब्दियों के जीवन-काल में नहीं हुआ। इस स्थिति में हमारी सदी के चुनिन्दा मस्तिष्क, दार्शनिक और वैज्ञानिक, कवि और आलोचक, उपन्यासकार और इतिहासकार, शिक्षा-शास्त्री और समाज शास्त्री, मनोवैज्ञानिक और मनो-विश्लेषक आदि महान् चिन्तक और विचारक अपने-अपने विशेष क्षेत्र में क्या सोचते हैं, किस दिशा में सक्रिय हैं, मानवीय चेतना को किधर ले जाना चाहते हैं—इसकी झलक 'युग चिन्तन' में प्रस्तुत है।

मूल्य छः रुपये

पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन

१-५ प्रति—२५ प्रतिशत
६ प्रतियां या ऊपर ३३-१/३ प्रतिशत
पैकिंग और रेल किराया हम देते हैं
डाक से मँगवाने पर डाक खर्च अलग है

२३. शरत्चन्द्र : व्यक्ति और साहित्यकार : ले. मन्मथनाथ गुप्त, मू. ६.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में बंग साहित्य के महान कथाकार के जीवन और कृतित्व पर विवेचन किया गया है। शरत् के साहित्यिक विचार, शरत् और गुरुदेव का परस्पर मनमुटाव आदि का भी समावेश हुआ है।

६. आलोचना : कृति

२४. आधुनिक कवि पंत : समीक्षा एवं व्याख्या : ले. प्रो० देशराज भाटी, मू. ३.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित आधुनिक कवि पंत की समीक्षा एवं व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

२५. अशोक के फूल : एक अध्ययन : ले. रतनलाल शर्मा, मू. १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुस्तक अशोक के फूल पर छात्रों के लिए सहायक पुस्तक है।

२६. अश्वघोष और उनका काव्य : ले. डा० हरिदत्त शास्त्री, मू. ४.७५, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत के महाकवि अश्वघोष के जीवन एवं साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने कवि और नाटककार अश्वघोष का विस्तृत विवेचन किया है।

२७. कामायनी की भाषा : ले. रमेशचन्द्र गुप्त, मू. ७.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में कामायनी की भाषा पर लेखक ने विचार प्रकट किए हैं।

२८. कामायनी में शब्द-शक्ति चमत्कार : ले. विमल कुमार जैन, मू. ५.००, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में कामायनी में अभिधा-सौन्दर्य, कामायनी में लाक्षणिक प्रयोग, कामायनी में भाव-व्यंजना, कामायनी में अलंकार-योजना पर चर्चा की गई है।

२९. कामायनी समीक्षा : ले. सुरेशचन्द्र गुप्त, मू. १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में स्व० जयशंकर प्रसाद की पुस्तक कामायनी की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

३०. कुरुक्षेत्र समीक्षा : ले. प्रो० लक्ष्मणदत्त गौतम, मू. १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' की कृति कुरुक्षेत्र की एक सहायक पुस्तक है जो छात्रों के लिए लिखी गई है।

३१. गंगालहरी : ले. दीनानाथ शरण, मू० १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में महाकवि पदमाकर की गंगालहरी मूल तथा टीका-टिप्पणी सहित छात्रों के लिए प्रकाशित की गई है।

३२. गबन समीक्षा : ले. रमेशचन्द्र गुप्त, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में मुन्शी 'प्रेमचन्द' के प्रमुख उपन्यास गबन की आलोचना प्रस्तुत की गई है।

३३. चन्द्रावली नाटिका : ले. प्रो० भूषण, मू. १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र-कृत चन्द्रावली नाटिका, मूल तथा टिप्पणी सहित है।

३४. पदमावत : सं. डा. माता प्रसाद गुप्त, मू. १२.००, प्र. भारती भंडार, इलाहाबाद।

प्राचीन काव्य, पदमावत, जिसका सर्जन हिन्दी के स्वनामधन्य कवि 'जायसी' ने किया था, का सम्पादन किया गया है। पुस्तक में पदमावत, रचना-तिथि, मूलाधार और उसकी विशेषता, जीवन-दर्शन, सम्बन्धित समस्याएँ आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। मूल पुस्तक का पाठ तथा अर्थ पुस्तक में दिया गया है।

३५. मुद्राराक्षस : ले. सुरेशचन्द्र गुप्त, मू. २.००, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का मूल नाटक मुद्राराक्षस तथा उसके साथ पाद टिप्पणी दी गई है जो छात्रों के लिए है।

३६. महाकवि भवभूति और उनका उत्तररामचरित : ले. कृष्णकान्त त्रिपाठी, मू. २.७५, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में भवभूति और मुख्य रूप से उनकी सर्वश्रेष्ठ तथा परमविश्रुत कृति उत्तररामचरित का ऐतिहासिक एवं समालोचनात्मक अध्ययन है।

३७. रत्नाकर और उनका उद्धवशतक : ले. देशराज सिंह भाटी, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में 'रत्नाकर' के कृतित्व और उनके 'उद्धवशतक' की समीक्षा की गई है। रत्नाकर जी के काव्यपक्ष पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

३८. विद्यापति और उनकी पदावली : ले. देशराज सिंह भाटी एवं जीवन प्रकाश, मू. १२.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्यापति पदावली को मूल में देकर उसकी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। लेखक ने कवि विषयक आलोचना पर अधिक बल दिया है।

३९. सुमित्रानन्दन पंत : ले. देशराजसिंह भाटी, मू. ३.००, प्र० अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'बच्चन' द्वारा सम्पादित 'सुमित्रानन्दन पंत' पुस्तक की आलोचना एवं टीका है। छात्रों की दृष्टि से पुस्तक की रचना की गई है।

४०. सूरदास और उनका भ्रमरगीत : सं. प्रो. दामोदरदास गुप्ता, मू. १२.५०, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में सूरदास रचित उनका भ्रमरगीत टीका के साथ दिया गया है।

७. आलोचना : निबन्ध

४१. आलोचना के द्वार पर : ले. डा. ओमप्रकाश, मू. ४.५०, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के १५ आलोचनात्मक लेखों का संकलन किया गया है।

४२. आधुनिक हिन्दी काव्य : कृति और विधा : ले. डा. सुरेश मायुर, मू. ६.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में आलोचनात्मक निबंध हैं। इसमें अधिकांश निबन्ध बी. ए. तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं के छात्रों के लिए हैं। पुस्तक की भूमिका डा. केसरीनारायण शुक्ल ने लिखी है।

४३. साहित्य समीक्षा : ले. इन्दुप्रकाश पाण्डेय, मू. ४.००, प्र. रामनारायण बेनी प्रसाद, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने २५ आलोचनात्मक निबन्ध दिए हैं। निबन्ध बी. ए. तथा एम. ए. विद्यार्थियों के लिए हैं।

४४. साहित्य : स्वरूप और समस्याएं : ले. रूपनारायण टंडन, मू. ५.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में १९ लेख संग्रहीत हैं।

४५. साहित्य समीक्षा : ले. मुद्राराक्षस, मू. ६.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में समीक्षा के सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों पक्षों का मूल्यांकन किया गया है। लेखक ने पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया है—एक में परिभाषाएं हैं तथा दूसरे में समस्याएं।

४६. साहित्य का परिपेक्ष : ले. डा. रघुवंश, मू. ५.००, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के विभिन्न निबन्ध संकलित हैं। साहित्यिक मूल्य, आधुनिक काव्य तथा नयी प्रवृत्तियां विषय के अन्तर्गत लेखक ने साहित्य के भिन्न पहलुओं पर चर्चा की है।

८. आलोचना : विभिन्न साहित्यिक विधाएँ

४७. नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक : ले. हजारीप्रसाद द्विवेदी, मू. १०.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक धनिक द्वारा रचित दशरूपक का हिन्दी रूपान्तर है जिसमें नाट्यशास्त्र और भारतीय परम्पराओं पर विशेष रूप से विवेचन किया गया है।

४८. भरत का नाट्यशास्त्र : ले. डा. रघुवंश, मू. १५.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक संस्कृत साहित्य की प्रमुख पुस्तक का हिन्दी टिप्पणी सहित प्रकाशन है।

४९. नयी कविता और उसका मूल्यांकन : ले. सुरेशचन्द्र सहल, मू. ८.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पुस्तक में नयी कविता के शिल्प वैचित्र्य तथा उसकी विशेषताओं, सीमाओं और सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला

गया है। पुस्तक की भूमिका डा. दशरथ ओझा ने लिखी है।

५०. हिन्दी के वैयक्तिक निबन्ध : ले. श्री लल्लन शुक्ल, मू. ४.००, प्र. साहित्य भवन प्रा लि. इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में वैयक्तिक निबन्ध पर विशेष रूप से चर्चा की गई है, साथ ही वैयक्तिक निबन्धकारों के कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

५१. हिन्दी सन्त साहित्य : ले. डा. त्रिलोकीनारायण दीक्षित, मू. ९.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में सन्त मत, सन्त साहित्य, सन्तों का काव्यादर्श, सन्त काव्य का साहित्यिक मूल्यांकन एवं सन्तों की भाषा पर प्रकाश डाला गया है।

९. सन्दर्भ ग्रन्थ

५२. भारतीय सन्त परम्परा और समाज : ले. डा. रांगेय राघव, मू. ३.००, प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी सन्त साहित्य की विवेचना की गई है। पुस्तक चार भागों में विभाजित है : भारतीय सन्त परम्परा और समाज, संतों की वेदना एवं सन्तों की देन।

५३. मध्यकालीन हिन्दी काव्य की तांत्रिक पृष्ठभूमि : ले. विश्वंभरनाथ उपाध्याय, मू. १०.००, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में मध्यकालीन तांत्रिक बौद्धमत, पाँचरात्रमत, शाक्तमत, कश्मीर शैवमत और तांत्रिक जैनमत पर विचार किया गया है।

५४. सौंदर्य-तत्त्व और काव्य-सिद्धांत : डा. सुरेन्द्र बारलिंगे, मू. ६.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इसमें लेखक की मराठी पुस्तक तथा फुटकर लेखों का रूपान्तर प्रस्तुत हुआ है। इसका हिन्दी रूपान्तर डा० मनोहर काले ने किया है। सम्पूर्ण पुस्तक दो भागों में विभाजित है—सौन्दर्य-सिद्धान्त और काव्य-सिद्धान्त।

५५. हिन्दी के जनपद संत : प्रेरक जगजीवनराम, मू. २०.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत के ४८ संतों की जीवन-झांकियां हैं। सन्तों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शचीरानी गुर्टू ने कार्य किया है। विषय प्रवेश के रूप में भगवतशरण उपाध्याय का लेख है। ग्रन्थ की भूमिका काका साहब कालेलकर ने लिखी है।

१०. आलोचना : शोध-ग्रन्थ

५६. आधुनिक हिन्दी-मराठी में काव्यशास्त्रीय अध्ययन : ले. डा. मनोहर काले, मू. २१.००, प्र. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई-४।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत है। इसमें सन् १९०० से १९६० तक आधुनिक हिन्दी-मराठी में काव्यशास्त्रीय अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। प्रबन्ध में रससिद्धांत, अलंकार-सिद्धांत, रीति-सिद्धांत, वक्रोक्ति, औचित्य-सिद्धांत का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

५७. आधुनिक हिन्दी-काव्य में रूप-विधाएँ : ले. डा. निर्मला जैन, मू. २५.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि के लिए स्वीकृत हो चुका है, इसमें सैद्धांतिक विवेचन, ऐतिहासिक रूपरेखा, महाकाव्य, खण्ड-काव्य, लघु प्रबन्ध काव्य, काव्यरूपक, स्फुट मुक्तक तथा संयुक्त मुक्तक की रूपविधाओं का विवेचन किया गया है।

५८. आधुनिक हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस : ले. डा० श्रीनिवास शर्मा, मू. १२.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली-६।

यह निबन्ध आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच.डी. परीक्षा के लिए स्वीकृत है, जिसमें वात्सल्य रस का शास्त्रीय विवेचन, काव्य परम्पराओं में वात्सल्य रस, आधुनिक कवि और उनकी कृतियों में रसव्यंजना, आधुनिक काव्य के आधार पर वात्सल्य रस का शास्त्रीय विवेचन किया गया है।

५९. आधुनिक हिन्दी काव्य में विरह-भावना : ले. डा. मधुरमालती सिंह, मू. १५.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच. डी. के लिए स्वीकृत है। लेखिका ने विरह-भावना, शास्त्रीय विवेचना, भारतीय साहित्य में श्रृंगार और विरह-भावना, प्रारम्भिक आधुनिक हिन्दी काव्य में विरह-भावना,

सांस्कृतिक प्रबन्ध कविता में विरह-भावना, छायावादी काव्य में विरह-भावना, छायावादी परवर्ती हिन्दी काव्य में विरह-भावना पर प्रकाश डाला है।

६०. आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प : ले. डा. कैलाश वाजपेयी, मू. १२.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच. डी. के लिए स्वीकृत है। लेखक ने छायावाद, प्रगतिवाद तथा गीतिकाव्य के शिल्प पर विवेचन प्रस्तुत किया है।

६१. कवि कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति : ले. डा. गायत्री वर्मा, मू. १०.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत है। इसमें कालिदास के समय के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक वातावरण पर विशद चर्चा है।

६२. कूटकाव्य : एक अध्ययन : ले. डा. रामधन शर्मा, मू. १२.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के मूल अंग्रेजी शोध-निबन्ध का हिन्दी रूपान्तर है जिस पर पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की गई। लेखक ने पुस्तक में कूट के अर्थ और इतिहास की परम्परा, सूर के कूटपदों का सर्वेक्षण, वर्ण्य विषय तथा सूर की काव्यकला पर प्रकाश डाला है।

६३. गोरखनाथ और उनका युग : ले. डा. रांगेय राघव, मू. ८.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी. एच. डी. के लिए स्वीकृत है। इसमें नाथ सम्प्रदाय की विभिन्न विचार-धाराओं का परिचय मिलता है।

६४. दक्षिण के हिन्दी प्रचार आंदोलन का समीक्षात्मक इतिहास : ले. श्री पी. के. केशवन नायर, मू. १०.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

इस ग्रन्थ में दक्षिण में हिन्दी का प्रचार किस प्रकार हुआ, इस पर चर्चा की गई है। दक्षिण में हिन्दी के प्राध्यापकों, संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं का संक्षिप्त विवरण भी ग्रन्थ में दिया गया है।

६५. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर बौद्धधर्म का प्रभाव : ले. डा. सरलादेवी त्रिगुणायत, मू. १३.५०, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में भक्तिकालीन साहित्य पर बौद्धधर्म का प्रभाव कहां तक है इसका वर्णन विवेचनात्मक ढंग से है। पुस्तक सात खण्डों में विभाजित है जिसमें बौद्धधर्म के विचार, आचार और नीति, साधना, विश्वास और प्रेरणा पक्ष तथा बौद्धधर्म के प्रभाव पर विवेचन किया गया है। यह आगरा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पी-एच. डी. का शोध-प्रबन्ध है।

६६. हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना : ले. डा. सुरेश सिन्हा, मू. १२.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में नायिका की परिकल्पना के प्रमुख स्रोतों एवं उद्देश्यों की चर्चा है। शोध-निबन्ध प्रयाग विश्वविद्यालय से स्वीकृत है।

६७. हिन्दी काव्य में मानव तथा प्रकृति : ले. डा० लालता प्रसाद सक्सेना, मू. १६.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत है। इसमें मानव तथा प्रकृति-विषयक विभिन्न दृष्टिकोण, मानव तथा प्रकृति के विभिन्न सम्बन्ध, मानवीय रूप तथा प्रकृति में मानवीय भाव, मानवीय गुण, मानवीय अवगुण, मानव-व्यापार, मानवीय उपदेश, रहस्यवादी भावना, तथा प्रकृति पर प्रकाश डाला गया है।

६८. हिन्दी कृष्ण-काव्य में माधुर्योपासना : ले. डा. श्यामनारायण पाण्डेय, मू. १५.००, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

पुस्तक में साधना, दर्शन और भक्ति, माधुर्य उपासना की परम्परा, हिन्दी में कृष्णभक्तों की माधुर्य उपासना का स्वरूप, रति माधुर्य, माधुर्यात्मक प्रपत्ति, कृष्ण-काव्येतर अन्य माधुर्य उपासनाएं, पूर्ववर्ती माधुर्योपासनाओं का परवर्ती भक्तों पर प्रभाव आदि पर मूलस्रोतों के अध्ययन के साथ विवेचन किया गया है। आगरा विश्वविद्यालय से स्वीकृत है।

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन और राष्ट्रीय
ऐक्य एवं राष्ट्र प्रतिष्ठा की साधिका
भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृति पर
प्रतिवर्ष एक लाख रुपया पुरस्कार-योजना प्रवर्तिका
विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ
का
एक अभिनव प्रकाशन-प्रयास

• राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला

जिसके अन्तर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रमुख साहित्यकारों की, स्वयं उनकी चुनी हुई, विविध शैली-शिल्प की सर्जनात्मक साहित्यिक प्रतिनिधि रचनाओं के अलग-अलग संकलन प्रकाशित होंगे। ग्रन्थ-माला के माध्यम से देश के साहित्यकार स्वयं तो एक मंच पर आयेंगे ही, विज्ञ पाठक भी कुछ अनुमान लगा पायेंगे कि इस प्रकार के साहित्य का स्वर और स्तर क्या है, और कि उसका तुलनात्मक मूल्यांकन क्या जानकारी प्रस्तुत करता है। प्रथम तीन संकलन—.

• प्रतिनिधि रचनाएं : नार्ल वेंकटेश्वर राव — मूल्य ३.५०

जिन्हें 'टाइम्स लिटरेरी सप्लिमेण्ट' ने 'मेजर इण्डियन पोएट्स आव द डे' में गिना और समूचा तेलुगु भाषी अंचल 'सर्वप्रमुख नाटककार' मानता है, उन्हीं श्री नार्ल के सर्वश्रेष्ठ १३ नाटकों का संकलन। ऐसे सरल और सहज रूप में ये नाटक अपना विषय और प्रयोजन सामने रखते हैं कि उधर ध्यान न देना असम्भव होता है और फिर प्रभाव तो अनिवार्य है ही।

• प्रतिनिधि रचनाएं : 'परशुराम' — मूल्य ३.००

बंगला के अप्रतिम व्यंग्य कथाकार परशुराम के साहित्य के प्रेमियों के लिए अनिवार्य संकलन, जिनकी १२ कथाओं और ७ निबन्ध-रचनाओं में से हरेक में आज के मानव के खंडित व्यक्तित्व और अर्थहीन जीवन-मूल्यों का ही मार्मिक अंकन नहीं हुआ, साथ में उसकी पीड़ा और आकुलता-विवशता के प्रति लेखक का सहानुभूतिपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिबोध भी उजागर हुआ है।

• प्रतिनिधि रचनाएं : व्यं० दि० माडगूलकर — मूल्य ४.००

नयी पीढ़ी के मराठी साहित्यकारों में अग्रणी, श्री माडगूलकर का यह संकलन 'प्रतिनिधि' इसीलिए नहीं है कि एक पूरा उपन्यास, पाँच चुनी-चुनी कहानियाँ और तीन बेजोड़ व्यक्ति-निबन्ध इसमें दिये गये हैं, बल्कि विशेषकर इसलिए है कि यहाँ आयी नयी दृष्टि मानव-मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रवृत्तियों का वस्तु-चित्रण भी करती है और साथ ही सम्पूर्ण मानवीय आस्थाओं का स्वीकरण भी मुखर करती है।

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

हिन्दी के कतिपय नये प्रकाशन

१. प्राचीन भारत

मूल लेखक—डा० रमेशचन्द्र मजूमदार
अनुवादक—परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ ५४४ + १९ चित्र—मूल्य १२.००

प्रस्तुत 'एन्शेंट इंडिया' नामक अंग्रेजी पुस्तक का सुन्दरतम हिन्दी रूपान्तर है। बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओं के लिए विशेष उपयोगी है।

३. प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन

लेखक डा० वासुदेव उपाध्याय

पृष्ठ ५५०—कपड़े की जिल्द—मूल्य २०.००

लेखक की प्रस्तुत रचना आधुनिक तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की रीति से लिखी गई है। इसमें प्राचीन अभिलेखों का वर्णन है। जिसकी इतिहास प्रेमियों ने विशेष प्रशंसा की है।

५. विश्व सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास

लेखक—डा० बी० पी० सिन्हा

पृष्ठ ८७०, १२ माप चित्र, ९१ प्लेटें—मूल्य ११.००

विश्व सभ्यता के इतिहास का वर्णन इस पुस्तक में संक्षिप्त एवं वैज्ञानिक आधार पर किया गया है।

७. तुलनात्मक भाषा-विज्ञान

मूल लेखक—डा० पी० डी० गुणे
अनुवादक—डा० भोलानाथ तिवारी

पृष्ठ संख्या ३३४—मूल्य १०.००

अंग्रेजी में 'इन्ट्रोडक्शन टु कम्पैरेटिव फाइलोलोजी' भाषा विज्ञान की उत्तम पुस्तक मानी जाती है। उसी का सुन्दरतम हिन्दी रूपान्तर अनुवादक ने किया है जो स्वयं भाषा विज्ञान के विद्वान माने जाते हैं।

२. प्राचीन भारत का इतिहास

लेखक—डा० आर० एस० त्रिपाठी

पृष्ठ ४३०—मूल्य १५.००

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन धूमिल से लेकर मुसलिम शासन तक भारत के इतिहास का संक्षिप्त एवं सूक्ष्म विवेचन है जो कि इतिहास प्रेमियों के लिए विशेष लाभदायक है।

४. संस्कृत और संस्कृति

ले०—डा० राजेन्द्रप्रसाद
(भारत के सर्वप्रथम राष्ट्रपति)

तृतीय संस्करण डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संशोधित तथा परिवर्धित किया हुआ आधुनिक ढंग पर है।

६. पाली महाव्याकरण

ले०—भिक्षु श्री जगदीश कश्यप

पृष्ठ संख्या ६५४ सजिल्द—मूल्य १०.००

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने पाली भाषा जो मगध की राज भाषा थी तथा जिसके द्वारा बुद्ध धर्म का प्रचार हुआ, उसे पाठकों को सुन्दरतम रीति से समझाने का सफल प्रयत्न है।

८. नेहरू : राजनीतिक जीवन-चरित्र

मूल लेखक—माइकेल ब्रीचर
अनुवादक—डा० हरिवंश राय 'बच्चन'

पृष्ठ संख्या १३ + ३५४, सजिल्द मूल्य ६.००

"नेहरू—ए पोलिटिकल बायोग्राफी" जो अंग्रेजी में अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक हुई है, उसका हिन्दी अनुवाद, बच्चन जी ने सुन्दरतम रीति से किया है।

मोतीलाल बनारसीदास

बंगलोरोड, जवाहरनगर, दिल्ली-६

६९. हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका : ले. डा. रामनरेश वर्मा, मू. ११.००, प्र. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका के विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यह शोध-प्रबन्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्वीकृत है। इसमें आदि वाणी, भक्ति आन्दोलन प्रवर्तन के कारण और स्थान, भारतीय समाज, धार्मिक सम्प्रदायों का संगठन आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

११. इतिहास : भारतवर्ष

७०. अकबर : ले. लारेन्स विन्यन, मू. १.७५, प्र. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

पुस्तक की रचना नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में हुई है। पुस्तक लारेन्स विन्यन की पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है जिसके अनु. श्री राजेन्द्र यादव हैं।

७१. आन्ध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास : ले. डा. चन्द्रभान पाण्डेय, मू. १०.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने सातवाहन युग के इतिहास का जन्म, विकास; उत्थान और पतन; उस युग की राज्य-पद्धति; साहित्य; सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अवस्था का परिचय और इसी के साथ उस युग की मुद्राएँ, कला तथा वास्तुकला का परिचय दिया है।

७२. भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन : ले. लिओनार्ड मोंसले, मू. ७.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिनों का आँखों देखा वर्णन किया है।

७३. मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति : ले. मेहरा, मू. ८.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इस पुस्तक में सुलतान एवं मुगल काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति, कला, शिक्षा, साहित्य और विभिन्न मतों की चर्चा की गई है।

७४. स्वाधीनता का सिंहनाद : म. १०.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्र-सेनानी पं. मोतीलाल नेहरू के भाषणों का संकलन किया गया है। पुस्तक की रचना मोतीलाल नेहरू जन्म-शताब्दी समिति के तत्वावधान में हुई है।

१२. इतिहास : हिन्दी साहित्य

७५. उन्नीसवीं शताब्दी : ले. डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, मू. ३.५०, प्र. साहित्य भवन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में १९ वीं शताब्दी अर्थात् सन् १८०१ से १९०० तक के हिन्दी साहित्य का विवेचन किया गया है। यह एक सदी का साहित्यिक एवं सामाजिक इतिहास है।

७६. हिन्दी रीति साहित्य : ले. डा. भगीरथ मिश्र, मू. ५.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

इस पुस्तक में रीतिकालीन साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। अलंकार, रस, ध्वनि-सम्प्रदाय तथा हिन्दी रीति-काव्य संग्रह का विस्तृत विवेचन है।

१३. उपन्यास : मौलिक

७७ अंधेरा उजाला : ले. नानकसिंह, मू. ६.००, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में मानव-जीवन के उतार-चढ़ाव, सत-असत् पक्षों का बड़ी बारीकी के साथ चित्रण है। आरम्भ से अन्त तक यथार्थता की पुट है।

७८. अन्तरिक्ष स्पर्श : ले. रमेश वर्मा, मू. ३.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में एक साहसिक अभियान, एक रोमांचकारी गाथा तथा एक नवीन कथा-प्रयोग प्रस्तुत किया गया है।

७९. अनदेखे अनजाने पुल : ले. राजेन्द्र यादव, मू. ३.००, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में निन्नी नामक महिला के जो भारत सरकार के एक बड़े जिम्मेदार पद पर है, जीवन की कुछ झलक उपन्यास के रूप में है।

८०. आखरी सलाम : ले. आदिल रशीद, मू. ५.५०, प्र. सुरेन्द्र एंड को., इलाहाबाद।

सामाजिक उपन्यास की भाषा सरल एवं व्यंग्यात्मक है। लेखक के शब्दों में यह उनका अंतिम उपन्यास है। इसमें एक नगरवधु का चित्रण है।

८१. आदमी और ज़िन्दगी : ले. राजेश्वर प्रसाद सिंह, मू. ६.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।

उपन्यास में विषमता, असन्तोष, विवशता एवं दुःख-दारिद्रय की करुण कहानी नवीनतम टेकनीक में है । कथा-वस्तु आज के युग की ध्वनि है ।

८२. इन्दुमती : ले. सेठ गोविन्ददास, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२ ।

पुस्तक में सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण दिया गया है ।

८३. उग्रतारा : ले. नागार्जुन, मू. २.५०, प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ।

प्रस्तुत उपन्यास में एक ऐसी नारी की संघर्ष-भरी कहानी है जो परिस्थितियों को उनकी यथार्थ पृष्ठभूमि पर पहुँचाती है । बेबसी को जीवन के एक अनावश्यक बोझ की तरह ढोती है और मन पर ज़रा भी कलुष नहीं आने देती ।

८४. उन्माद : ले. हंसराज रहबर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

पुस्तक में एक विद्रोही नारी की कसक-भरी कथा है । शैली में नयापन है ।

८५. एक इंच मुस्कान : ले. राजेन्द्र यादव, मू. ६.००, प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ।

सामाजिक चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है ।

८६. एक गधे की वापसी : ले. कृश्नचन्दर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

यह व्यंग्यात्मक उर्दू उपन्यास का हिन्दी रूपांतर है, जिसमें गधे को माध्यम बनाकर समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति गहरी चोट की गई है ।

८७. एक थी अनीता : ले. अमृता प्रीतम, मू. ३.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली ।

प्रस्तुत उपन्यास में पीर, प्यार और मनुहार का चित्रण है ।

८८. एक म्यान दो तलवार : ले. नानकसिंह, मू. ५.००, प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक की कथा ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, जिसमें क्रांतिकारी सरदार कर्तारसिंह पृष्ठभूमि पर रखे गये हैं । पंजाबी की सर्वश्रेष्ठ कृति होने के नाते लेखक को इस कृति पर ५००० रुपए पुरस्कार दिए गए ।

८९. एक मामूली लड़की : ले. बलवन्तसिंह, मू. १.०० प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

पुस्तक में एक ऐसी लड़की की कहानी है जो आयु-पर्यन्त एक से ही प्यार करती रही । वह जीवन-संगिनी किसी और की होते हुए भी प्रेमिका उसकी ही रही जिसका उससे सर्वप्रथम प्रेमालाप हुआ था ।

९०. एक मूठ सरसों : ले. शैलेश मटियानी, मू. २.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।

प्रस्तुत उपन्यास में बेबसियों का वर्णन है । उपन्यास में ग्रामीण जीवन का चित्रण हुआ है । आंचलिक उपन्यास की पंक्ति में है ।

९१. कटीली राह : ले. अमरकांत, मू. ४.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें दो नारियों की कथा है । एक पथ पर भटक रही है और दूसरी सीधे मार्ग पर जा रही है और अपने साथ भटकों को भी सही मार्ग पर ले जाती है ।

९२. काका : ले. रांगेय राघव, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक है जिसमें मध्यकालीन विचार-धाराओं के केन्द्रों की वास्तविकता को प्रकट किया गया है ।

९३. कुब्जा सुन्दरी : ले. ठाकुरप्रसाद सिंह, मू. ३.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

इसमें नारी की प्यासी भावनाओं के साथ आधुनिक समाज का रूप दिखाया गया है ।

९४. खिलती कली : ले. मामा वरेरकर, मू. ३.२५, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली ।

यह आपका नवीनतम उपन्यास है जिसमें सामाजिक घुटन का चित्रण किया गया है ।

९५. खून की हर बूंद : ले. यज्ञदत्त शर्मा, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

पुस्तक में भारत पर चीन के घिनौने आक्रमण की

पृष्ठभूमि पर आधारित दो वीर सैनिकों की रोंगटे खड़े कर देने वाली वीरता एवं लहू गर्माने वाले साहस का परिचय दिया गया है।

९६. गुलाबी दाग : ले. गोविन्द सिंह, मू. २.२५, प्र. सुरेन्द्र एण्ड कम्पनी, इलाहाबाद।

यह उपन्यास सामाजिक और आदर्शवादी है।

९७. गोरी : ले. मेजर गोवर्धन सिंह, मू. ३.००, प्र. कमल कुञ्ज प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में पहाड़ी लोगों के सरल एवं सांस्कृतिक जीवन के विविध पहलू दिखाए गए हैं तथा कुछ लोकगीत दिए गए हैं। यह जम्मू प्रदेश का एक आंचलिक उपन्यास है।

९८ चंगेजखां : ले. श्री शरण, मू. ४.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें चंगेजखां के जीवन को एक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

९९. चमकता सितारा चुभन भरा कांटा : ले. सुभाष पंत, मू. २.५०, प्र. इण्डिया पब्लिकेशन्स, लखनऊ।

प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक है जिसमें निर्धनता एवं सामाजिक विषमताओं का चित्रण किया गया है। कथाकार ने मानव-मनोविज्ञान का विशेष आश्रय लिया है।

१००. चारुचंद्रलेख. : ले. डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मू. १२.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय समाज एवं इतिहास की बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी का चित्रण है। पुस्तक में पद-पद पर राष्ट्र के लिए युवकों का आह्वान किया गया है।

१०१. जयमाल : ले. शैलेश मटियानी, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस उपन्यास में कुमाऊँ जीवन की कथा प्रस्तुत की गई है जिसमें वहाँ की नारी के प्रेम और साहस का चित्रण है।

१०२. जागरण : ले. मन्मथनाथ गुप्त, मू. ३.५०, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में गहरी निद्रा से जागे हुए भारत का एक चित्र है। जीवन में प्रेम और पारिवारिक सम्बन्धों में नए विचारों का स्वागत होता है जिससे पूरे समाज में संगठन, त्याग और बलिदान की एक लहर दौड़ जाती है।

१०३. जुहू : ले. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२।

पुस्तक में कुछ वर्ष पूर्व की घटना को माध्यम बना कर उग्र जी ने 'भारत के पेरिस' बम्बई के आडम्बरपूर्ण जीवन की खबर ली है। बड़ी पुस्तक हिन्दी-जगत् की जानी-पहिचानी है, यह उसका पाकेट बुक संस्करण है।

१०४. भवरी : ले. विराज, मू. २.५०, प्र. कमल कुंज प्रकाशन, दिल्ली।

लेखक ने मनुष्यों के साथ पशुओं को भी पात्र बनाकर इस उपन्यास की रचना की है। उपन्यास बाल, किशोर एवं वयस्क सभी के स्तर का है।

१०५. टूटते बन्धन : ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी, मू. ४.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

यह एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें नई पीढ़ी को एक विशेष दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। पात्रों और घटना-प्रवाह के माध्यम से नई मान्यताओं के संघर्ष का चित्रण हुआ है।

१०६. डूबते मस्तूल : ले. नरेश मेहता, मू. १.०० प्र. हिन्द पाकेट बुक्स लि., दिल्ली।

डूबते मस्तूल में रूपगर्वित नारी के जीवन की झांकी चित्रित की गई है।

१०७. त्याग का देवता : ले. परदेशी, मू. ३.५०, प्र. कल्याण मल एण्ड संस, जयपुर।

इस उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक और इसकी पृष्ठभूमि सामाजिक एवं पारिवारिक है। राजपूत काल की विषमता का उपन्यास में चित्रण किया गया है।

१०८. तब और अब : ले. गुरुदत्त, मू. ६.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

इस उपन्यास में प्राचीन एवं आधुनिक पीढ़ियों का संघर्ष एवं तुलना है।

१०९. तिब्बत का रहस्य : ले. प्रेम हरद्वारी, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में तिब्बत के जीवन की झांकी, वहाँ पर मठों में होने वाले षड्यन्त्र और विचित्र परम्पराओं का कथा के रूप में चित्रण किया गया है।

११०. दिशाहीन : ले. मन्मथनाथ गुप्त, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२।

पुस्तक में गुप्त जी ने डाका, बलात्कार, हत्या, नरबलि आदि का चित्रण करते हुए डाकूओं के दारुण जीवन के पीछे की बेबसी स्पष्ट की है।

१११. दीर्घतपा : ले. फणीश्वर नाथ रेणु, मू. ४.००, प्र. बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना ४।

प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक है। भाषा में बोलचाल के शब्दों का प्रचलन है।

११२. देश नहीं भूलेगा : ले. उमाशंकर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

नेफा से आए हुए कुछ भारतीय जवानों से प्राप्त सामग्री पर आधारित भारत पर चीन के बर्बरतापूर्ण विस्तारवादी आक्रमण का और भारतीय जवानों की अपूर्व वीरता का वास्तविक एवं ऐतिहासिक चित्र उपन्यास रूप में प्रस्तुत किया गया है।

११३. देवता : ले. सत्यकाम विद्यालंकार, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस उपन्यास में आधुनिक समाज की एक ज्वलंत समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है। प्रेम, वासना, राग-रंग का चित्रण हुआ है।

११४. धर्म के नाम पर : ले. सन्हैयालाल ओझा, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों का विवेचन कथा के रूप में है। उपन्यास आकार की दृष्टि से वृहत है किन्तु इसकी कथावस्तु रोचक है।

११५. धूमकेतु : एक श्रुति : ले. नरेश मेहता, मू. ८.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

लेखक ने एक वृहत कथा की नियोजना की है। प्रस्तुत उपन्यास उसका प्रथम परंतु अपने आप में स्वतंत्र खण्ड है। कथा उदयन की आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत हुई है और उसके शैशव से कैशोर तक फैली है। परंतु उदयन अकेला नहीं है—अपने आस-पास के समूचे वातावरण को लेकर बढ़ा है।

११६. नंदा : ले. प्रिया राजन, मू. २.७५, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस उपन्यास में भावुक हृदय की कथा है जो धन-वैभव के कारण भी मद में नहीं डूबी।

११७. नदी की लहरें : ले. कमल शुक्ल, मू. २.२५, प्र. पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली।

यह एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें लेखक ने उत्तर प्रदेश के ग्राम्य एवं नागरिक जीवन का चित्रण किया है।

११८. नदी के तट से : ले. लालजी सिंह, म. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक उपन्यास है जिसमें प्रेम और मानव-हृदय की भावनाएँ प्रस्तुत हुई हैं।

११९. नन्दिनी : ले. मामा वरेरकर, मू. ३.००, प्र. पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली।

मामा वरेरकर का यह एक सामाजिक उपन्यास है।

१२०. पगडंडी और पहाड़ : ले. माणिकचन्द्र, मू. ३.००, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली।

प्रस्तुत पगडंडी और पहाड़ में समाज का चित्रण घटना के माध्यम से वर्णित है। उपन्यासकार ने मानव की लालची वृत्ति एवं संकुचित दृष्टिकोण और उसका दुखांत फल प्रस्तुत किया है।

१२१. पंच कल्याण : ले. ब्यौहार राजेन्द्रसिंह, मू. ४.००, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

यह राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर आधारित उपन्यास है। उपन्यासकार ने वर्तमान समाज का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

१२२. परिभव : ले. गुरुदत्त, मू. १.००, प्र. भारती साहित्य सदन, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट पुस्तक में लेखक ने पारिवारिक जीवन प्रस्तुत किया है।

१२३. प्रायश्चित : ले. यज्ञदत्त शर्मा, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस उपन्यास में एक ऐसे व्यक्ति की कथा दी गई है जो स्वयं भी आग में जलता है और दूसरों को भी जलाता है।

१२४. पुजारी : ले. नानकसिंह, मू. ४.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

हमारे उपयोगी प्रकाशन

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

चाचा नेहरू के गीत — निरंकार देव 'सेवक' — १.२५
धूल भरे हीरे — रामेश्वर प्रसाद मालवीय — ०.६२
कथा काव्य कौमुदी — बाबूलाल भार्गव — ०.५०
भारत के प्रतापी नरेश — ,, — ०.६२
साहसी यात्री — नरोत्तमदास अग्रवाल एम० ए० — ०.३७
प्रसिद्ध यात्री — व्यथित हृदय — ०.३१
नवीन आविष्कार — बेनी प्रसाद अग्रवाल — ०.७५
विज्ञान के नर रत्न — व्यथित हृदय — ०.६२
हमारा विश्व — डा० कृष्ण बहादुर — १.५०
नवीनतम आविष्कार — डा० कृष्ण बहादुर — १.००
सूर्य की कहानी — यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक' — १.२५
चांद और तारों की कहानी — ,, — १.२५
परमाणु शक्ति — कृष्णकिशोर श्रीवास्तव — १.००

कथा साहित्य

मन मयूर — अन्नपूर्णानन्द — ४.००
आठ सेर चावल — प्रो० महावीर प्रसाद अग्रवाल — २.५०
कड़वी शक्कर — प्रो० मोहन वल्लभ पन्त — १.२५

काव्य साहित्य

रण चण्डी — विश्वनाथ पाठक — १.५०
गुरु दक्षिणा — विनोदचन्द्र पांडेय 'विनोद' — १.००
हिन्दी भारती भाग १ व २ — रामरतन भटनागर एम० ए०, डी० फिल० — ८.००
अवधी लोकगीत और परम्परा — सं० इन्दुप्रकाश पाण्डेय — ५.००
रस रत्नाकर — हरिशंकर शर्मा — ५.००
अलंकार मंजूषा — भगवानदीन 'दीन' — २.२५
अलंकार चन्द्रिका — स्व० लाला भगवान दीन — १.००
उमर खैयाम की रुबाइयां — भगवतदयाल वर्मा 'आनन्द' — ०.७५
विनय पत्रिका — स्व० लाला भगवानदीन — ३.५०
कवितावली — स्व० लाला भगवानदीन — २.००

नाटक, एकांकी साहित्य

नाना फड़नवीस — डा० रामकुमार वर्मा — २.००
आदमी के टुकड़े — कृष्णकिशोर श्रीवास्तव — १.५०
चित्रकूट — लक्ष्मीनारायण मिश्र — २.५०
रंग सप्तक — सं० डा० लक्ष्मीनारायण लाल — ३.००
तीन आँखों वाली मछली — डा. लक्ष्मीनारायणलाल — १.५०
आठ एकांकी — डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित — १.७५
गीतानन्द — मेक्कोल्ला परमेश्वरन पिल्लई — २.००
तीन एकांकी — भरतजी श्रीवास्तव 'मलयज' — ०.८०

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

महाभारत — टीकाकार चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा — २०.००
भारत को प्रयाग की देन — हरेन्द्र प्रताप सिन्हा — ३.००
शेष लकीरें — राजनाथ पाण्डेय — ४.००
प्रसाद की विचारधारा — रामरतन भटनागर एम० ए०, डी० फिल० — ४.००
तुलसी साहित्य की भूमिका — ,, — ४.००
महाकवि हरिऔध का प्रिय प्रवास — धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री — १.२५
कहानी कला और कलाकार — व्यथित हृदय — २.००
हिन्दी गद्य निर्माता — अमरनाथ गुप्त — १.००
साहित्य समिधा — इन्दुप्रकाश पाण्डेय — ४.००
भाषा शास्त्र प्रवेशिका — डा० अमरबहादुर सिंह — ६.५०

कोष

भाषा शब्द कोष—हिन्दी से हिन्दी — सं० डा० रसाल — १२.००
संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ — संस्कृत से हिन्दी — १५.००
हिन्दी शब्दकोष — हिन्दी से हिन्दी — ८.००
स्टुडेन्ट्स प्रैक्टिकल डिक्शनरी — अंग्रजी से हिन्दी — ८.००

नोट—*हम विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद के प्रमुख विक्रेता हैं। कृपया सूचीपत्र के लिए लिखिये।*

रामनारायणलाल बेनीप्रसाद

कटरा रोड, इलाहाबाद–२

टेलीफोन : २४७० — तार : पुस्तक, इलाहाबाद

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि निरीह मानव किस प्रकार समाज के ठेकेदारों के हथकंडों का शिकार होकर मानवता पर आधारित आपसी सम्बन्धों को भूलकर एक दूसरे के खून का प्यासा हो सकता है।

१२५. पुर्नमिलन : ले. नानकसिंह, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पंजाबी लेखक नानकसिंह का यह हिन्दी उपन्यास पत्र-शैली में लिखा हुआ है जिसमें पीड़ित युवतियों की गाथा है।

१२६. बँटवारे का तूफान : ले. यशपाल, मू. ३.००, प्र. पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली।

उपन्यास का कथानक भारत-विभाजन की पष्ठभूमि पर आधारित और तत्कालीन लाहौर से संबंधित है।

१२७. बड़े सरकार : ले. भैरवप्रसाद गुप्त, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२।

पुस्तक में सामंती वातावरण का चित्र है। इसमें आन-बान, ठाट-बाट और विलासिता के बीच घुटते निरीह प्रेमियों के अरमानों की कथा है।

१२८. बन्द दरवाजा : ले. अमृता प्रीतम, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में समाज के प्रपंच से पीड़ित एक नवयुवती की मनोव्यथा का चित्रण है।

१२९. मछेरन : ले. आदिल रशीद, मू. २.२५, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

मछेरनों के रीति-रिवाजों का वर्णन हुआ है। प्रसंगानुसार कथावस्तु में प्रेम-विवाह, समाज की अमर्यादित समस्याओं का चित्रण है।

१३०. मरने के बाद : ले. ब्रजकिशोर नारायण, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

इस उपन्यास में एक लोक-नेता की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी, प्रेयसी, और उसके मित्रों आदि ने अपनी-अपनी दृष्टि से दिवंगत का परिचय दिया है।

१३१. मैं अकेली : ले. गुलशन नन्दा, मू. २.५०, प्र. एन. डी. सहगल एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समाज के प्रति विद्रोही स्वर को अभिव्यक्त किया है। सामाजिक कुरीतियों पर इससे व्यंग प्रकट होता है।

१३२. मैं न मानूं : ले. गुरुदत्त, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

श्री गुरुदत्त का यह एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें पति-पत्नी के सम्बन्धों को नई पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत किया गया है।

१३३. मोरझाल : ले. डा. श्याम परमार, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

यह उपन्यास मनोविज्ञान पर आधारित है। उपन्यासकार ने इतिहास और कल्पना की पुट देकर इसकी रचना की है।

१३४. मोतियों वाले हाथ : ले. मधुकर गंगाधर, मू. ३.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

१५ अंकों में विभाजित इस सामाजिक उपन्यास में निर्धनता एवं बेकारी की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

१३५. यह बस्ती के लोग : ले. बलशौरी रेड्डी, मू. ३.००, प्र. भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने शहरी जीवन पर व्यंग करते हुए सत्यं शिवं सुन्दरं का आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

१३६. युद्ध और प्रेम : ले. ए. रज्झाक, मू० १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

इन्डोनेशिया की क्रान्ति पर आधारित इस उपन्यास में युद्ध और शान्ति की दो धाराओं का चित्रण किया गया है।

१३७. राजलक्ष्मी : ले. ओमप्रकाश वाजपेयी, मू. २.००, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

यह एक सामाजिक उपन्यास है। इसी के साथ उपन्यास में जासूसी और ऐतिहासिक तथ्य भी विद्यमान हैं। जासूसों के चामत्कारिक कृत्यों द्वारा उपन्यास के कथानक को आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है।

१३८. लोक लाज खोई : ले. सुरेन्द्रपाल, मू. ५.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस उपन्यास में लेखक ने उत्तरप्रदेश के एक गांव का

वर्णन प्रस्तुत किया है। उस एक गांव का कथानक सम्पूर्ण भारत का कथानक बन गया है।

१३९. वह जो होना था : ले. यादवचन्द्र जैन, मू. ४.००, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

प्रस्तुत सामाजिक उपन्यास में लेखक ने समाज का बीभत्स रूप प्रस्तुत किया है। लेखक का उद्देश्य जीवन की पंकिल राहों में भटककर भी लक्ष्य प्राप्त कर लेना है।

१४०. विन्ध्या बाबू : ले. सन्तोष नारायण नौटियाल, मू. २.५०, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में विन्ध्या बाबू की कहानीकार बनने के बाद उपन्यासकार बनने की बात हास्यपूर्ण ढंग से कही गई है। प्रस्तुत उपन्यास सरिता में धारावाहिक उपन्यास के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

१४१. बिनाश के बादल : ले. प्रतापनारायण, मू. २.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है जिसमें शत्रु के छलकपट का पर्दाफाश किया गया है।

१४२. विश्वासघात : ले. यज्ञदत्त, मू. २.५०, प्र. पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली।

श्री यज्ञदत्त शर्मा ने अपने इस उपन्यास का सृजन भारत चीन सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि पर किया है जिसमें प्रेम और कर्त्तव्य का सम्मिश्रण है।

१४३. शहर में घूमता आईना : ले. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. १०.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस उपन्यास को मार्च १९६४ में पंजाब भाषा विभाग ने १००० रु० का इनाम दिया है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र दिन भर शहर में घूमता और अनेक दृश्य देखता है—उन दृश्यों का वर्णन ही यह उपन्यास है।

१४४. शोले : ले. भैरवप्रसाद गुप्त, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम की एक रोमांटिक कथा का चित्रण किया है।

१४५. सपने विकाऊ हैं : ले. राधाकृष्ण, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

उपन्यास चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में लिखा गया है।

१४६. सम्मोहिता : ले. उषादेवी मित्रा, मू. ५.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास आज से ३५ वर्ष पूर्व 'पंच पुष्प' पत्रिका में बंगला भाषा में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो चुका है। इसी उपन्यास को लेखिका ने हिन्दी भाषा में दिया है। यह नारी की महिमा और भाई के लिए बहन के त्याग का उपाख्यान है।

१४७. साँचा : ले. डा. प्रभाकर माचवे, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक यंत्र-युग का यथार्थ चित्रण है।

१४८. सात समुन्दर पार : ले. डा. मुल्कराज आनन्द, मू. ६.००, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय सेना के जवानों के इतिहास-प्रसिद्ध अभियान की गौरव-गाथापूर्ण मानवीय संवेदना है।

१४९. सिद्धि पथ : ले. जगदीश शरण शर्मा, मू. ४.०० प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश शर्मा का नवीन उपन्यास है जिसकी भूमिका हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखी है। उपन्यास में सामाजिक चित्रण की छटा मिलती है।

१५०. सौसन : ले. गोविन्दसिंह, मू. २.५०, प्र. पुष्पी कार्यालय, इलाहाबाद।

प्रस्तुत उपन्यास में समाज और व्यक्ति की पारस्परिक घटित वार्तों का विस्तृत रूप में चित्रण है।

१५१. हिमालय के उस पार : ले. जमुनादास, अख्तर, मू. २.५०, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में एक नवयुवक की रोमांचकारी कथा का चित्रण किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु भारत-चीन सीमा विवाद पर आधारित है।

१४. उपन्यास : अनूदित

१५२. अहंवादी : ले. दोस्तोव्स्की, अनु. इलाचन्द्र जोशी, मू. ३.००, प्र. साधना सदन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार फ्योदर दोस्तोव्स्की की दो मनोवैज्ञानिक रचनाओं का अनुवाद है। इस पुस्तक में दोस्तोव्स्की की तुलना शेक्सपीयर से भी की गई है।

१५३. इंदिरा : ले. बंकिमचन्द्र, अनु. रामनाथ सुमन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

बंगला भाषा के इस उपन्यास में सुहाग से बिछुड़ी एक नवयौवना की व्यथा-भरी कथा है। इसमें नारी-पक्ष का विचित्र रूप से चित्रण हुआ है।

१५४. उजड़ाघर : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. १.००, प्र. पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक में गुरुदेव ठाकुर के उपन्यास उजड़ा घर को हिन्दी में प्रकाशित किया है।

१५५. उजड़ा घोंसला भटके पंख : ले. पीताम्बर पटेल, अनु. गोपालदास नागर, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्स सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकृति के चित्रों एवं जीव-जन्तुओं की बड़े ही सरस ढंग से कथा वर्णित है। गुजराती से हिन्दी रूपान्तर है।

१५६. एक आवारे की डायरी : ले. तुर्गनेव, अनु. प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

उपन्यासकार तुर्गनेव की इस कृति में प्रेम और पीड़ा का समन्वय दिखाया गया है।

१५७. एक जीवन्त अधिकार पत्र : ले. विलियम ओ. डगलस, मू. २.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

यह पुस्तक A Living Heir of Right का हिन्दी रूपान्तर है जिसका अनुवाद विश्वदेव शर्मा ने किया है। पुस्तक में लेखक ने अमरिकी संविधान के विषय में छात्रों के लिए सामग्री दी है।

१५८. एक मछुआ एक मोती : ले. स्टेनबेक, अनु. राजेन्द्र यादव, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक 'The Pearl' का हिन्दी रूपान्तर है। इसमें एक गरीब मछुवे-परिवार की कथा दी गई है।

१५९. कपाल कुंडला : ले. बंकिमचन्द्र, अनु. वेणीप्रसाद वाजपेयी, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक बंगला भाषा के विख्यात उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है।

१६०. कलकत्ता के नजदीक ही : ले. गजेन्द्र कुमार मित्र, अनु. पृथ्वीनाथ शास्त्री, मू. ७.५, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

इसमें उन हृदयद्रावक कठिनाइयों का क्रमबद्ध लेखा-जोखा है, जिनके विरुद्ध स्त्रियों को आजीवन संघर्ष करना पड़ता है। प्रमुख पात्र स्त्रियाँ ही हैं। प्रस्तुत उपन्यास बंगला से अनूदित है।

१६१. कारावास : ले. दोस्तोव्स्की, अनु. श्रीमती विजय चौहान, शिवदानसिंह चौहान, मू. ७.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इसमें विश्व-कथा-साहित्य के अन्यतम उपन्यास 'Notes From a Dead House' का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया गया है।

१६२. गाँव : ले. डा. मुल्कराज आनन्द, अनु. शिवदान सिंह चौहान और श्रीमती विजय चौहान, मू. ५.५०, प्र. राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत 'The Village' का रूपान्तर है, इसमें भारतीय ग्राम्य जीवन की चर्चा है।

१६३. घर और बाहर : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु. रामनाथ सुमन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में दाम्पत्य जीवन के स्नेह-संघर्ष की एक कथा है। 'घरे-बाहिरे' का हिन्दी रूपान्तर है।

१६४. चार अध्याय : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक में गुरुदेव के बंगला उपन्यास 'चार अध्याय' का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया गया है।

१६५. चार पत्नियाँ: ले. रानो कल्वर, अनु. दयाव्रत, मू. २.५०, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स दिल्ली।

इस उपन्यास में ग्रामीण समाज का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यह अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास 'Leave Four' का हिन्दी रूपान्तर है।

१६६. जूडी और लक्ष्मी : ले. नाओमी मिचिसन, मू. १.५०, प्र. सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

प्रस्तुत पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में

प्रकाशित की गई है। लेखिका ने इस उपन्यास में भारतीय जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।

१६७. **डाक्टर सदाशिव** : ले. वनफूल, अनु. माया गुप्त, मू. ३.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में आज के जीवन की तस्वीर है। बंगला से हिन्दी में रूपान्तर हुआ है।

१६८. **तपस्विनी (खंड १-२)** : अनु. डा. कमलेश, मू. १५.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक गुजराती के सामाजिक उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है।

१६९. **दत्ता** : ले. शरत्चंद्र, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास प्रमुख बंगला उपन्यास का संक्षिप्तीकरण है। उपन्यास में एक सम्पन्न युवती और निर्धन डाक्टर के मूक प्रेम का चित्रण है।

१७०. **देवदासी और पण्डित** : ले. नरसिंह शास्त्री, अनु. बाबूराव केमठकर, मू. ३.५०, प्र. वाणी विहार, वाराणसी।

प्रस्तुत उपन्यास सर्वप्रथम कन्नड़ भाषा में 'अन्तरंग' नाम से प्रकाशित हो चुका है।

१७१. **बदला** : ले. कानन डायल, अनु. प्रकाश पण्डित, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत हत्या, सन्देह एवं उलझनों वाले उपन्यास 'दी हाउण्ड आफ बासकेराएल्लस' का संक्षिप्त संस्करण है।

१७२. **बन्दे मातरम्** : ले. बंकिमचन्द्र, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

बंगला के प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्द मठ' का यह हिन्दी रूपान्तर है।

१७३. **भाद** : ले. पर्लबक, अनु. कांति मोहन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस उपन्यास में एक साधारण आदमी का एक असाधारण कहानी के रूप में चित्रण किया गया है। श्रीमती पर्लबक नोबल पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।

१७४. **माँ** : ले. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, अनु. लोकनाथ भारती, मू. ३.००, प्र. हिन्दी प्रचारक, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने समाज का चित्रण किया है। माँ की ममता सर्वोपरि है। बंगला के इस उपन्यास का अनुवाद श्री लोक नाथ भारती ने किया है।

१७५. **मिलन** : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु. रामनाथ सुमन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास में बिछुड़े प्रेमियों के मिलन की कथा है।

१७६. **रजनी** : ले. बंकिमचन्द्र, अनु. रामनाथ सुमन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

करुणा से ओतप्रोत इस उपन्यास का बंगला से हिन्दी में रूपान्तर हुआ है।

१७७. **राजसिंह** : ले. बंकिमचंद्र, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१।

विख्यात ऐतिहासिक कृति का हिन्दी रूपान्तर है। पृष्ठ संख्या १८४।

१७८. **लता** : ले. गुलाब दास ब्रोकर, अनु. परदेशी, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इसमें दो पुरुषों के स्नेह-सूत्रों में बंधी एक नारी की कहानी है। गुजराती का हिन्दी रूपान्तर है। इसका सृजन आठ साहित्यकारों ने किया है।

१७९. **वह कौन था** : ले. जैक शैफर, मू. १.००, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक एक सामाजिक उपन्यास है। इसका शाने नाम से इससे पूर्व उर्दू में प्रकाशन हो चुका है।

१८०. **शरलक होम्ज़ की जासूसी** : ले. कानन डायल, अनु. देवेन्द्रकुमार, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

यह जासूसी कहानियाँ अंग्रेजी से रूपान्तरित हैं।

१८१. **सरस्वतीचन्द्र** : ले. गोवर्धनराम त्रिपाठी, अनु. डा. पद्मसिंह शर्मा कमलेश, मू. ७.५०, प्र. भारती ग्रंथ भण्डार, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास गुजराती भाषा का एक श्रेष्ठ उपन्यास है। इसका प्रकाशन साहित्य अकादमी के तत्वावधान में हुआ है।

१५. एकांकी संग्रह

१८२. **आदमी का जहर** : ले. लक्ष्मीकान्त वर्मा, मू. २.५०, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के पाँच एकांकी संकलित हैं, ये पाँचों रेडियो के लिए लिखे गये हैं।

इस मास के नवीन प्रकाशन

मनोविज्ञान का इतिहास

दो अनुभवी विद्वानों द्वारा प्रणीत, गहन अध्ययन एवं सूझ-बूझ की प्रेरक नवीन पुस्तक जिसकी मनोविज्ञान के विद्यार्थियों को सख्त आवश्यकता है।

लेखक : डॉ० जे. डी. शर्मा, डॉ० जी. डी. सारस्वत — मूल्य १०.००

व्यावहारिक मनोविज्ञान

बी. ए. के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई पुस्तक : प्रश्नोत्तर शैली में।

लेखक : श्री सुरेशचन्द्र शर्मा — मूल्य ६.००

आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका

आधुनिक हिन्दी काव्य पर एक नवीन दृष्टिकोण को लेकर लिखी गई पुस्तक जो पुस्तकालयों के अतिरिक्त विद्यार्थियों एवं शोध-कर्ताओं के लिए भी समान रूप से उपयोगी है।

लेखक : डॉ० शम्भुनाथ पाण्डेय — मूल्य १०.००

वैदिक साहित्य का इतिहास

एम. ए. संस्कृत के विद्यार्थियों के लाभार्थ, प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई पुस्तक जो सम्पूर्णतः पाठ्य-क्रमानुसार है।

लेखक : राजकिशोर सिंह एम. ए. — मूल्य ४.००

हिन्दी भाषा शिक्षण

प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई पुस्तक जो प्रशिक्षण—बी. टी., बी. एड., एम. एड. आदि के विद्यार्थियों के लिए पूर्ण रूप से लाभकारी है।

लेखक : दिनेश चन्द्र भारद्वाज — मूल्य ३.००

प्रकाशक

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

१८३. **चट्टान का फूल :** ले. मोहन चोपड़ा, म. २.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत में आकाशवाणी के छः ध्वनि-नाटक हैं, जिनमें समाज का चित्र है; अधिकांश एकांकी व्यंग्य-प्रधान हैं।

१८४. **जोंक :** ले. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. १.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत संकलन में श्री अश्क के दो एकांकी संकलित हैं।

१८५. **झरने और फूल :** ले. रघुवीर शरण मित्र, प्र. भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ।

इस पुस्तक में चार बालोपयोगी एकांकियों का संकलन है।

१८६. **धरती का बेटा :** ले. महेन्द्र कुमार 'मुकुल', मू. ५ न. पै., प्र. साहित्य संगम प्रकाशन, लश्कर।

इसमें तीन एकांकी : धरती का बेटा, विवाह और दहेज एवं तथागत का संग्र है। एकांकियों का विषय सामाजिक है।

१८७. **बेबात की बात :** ले. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक चार एकांकियों का संग्रह है। एकांकी हास्य-व्यंग्य प्रधान हैं।

१८८. **मराठी के नये एकांकी :** सं. वसन्त देव, मू. ४.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा प्रस्तुत मराठी के आधुनिक श्रेष्ठ नये एकांकियों का संग्रह किया गया है। एकांकियों के अनुवादक श्री वसन्त देव जी हैं।

१८९. **ये रेखाएं ये दायरे :** ले. विष्णु 'प्रभाकर', मू. ४.००, प्र. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई-४।

इस पुस्तक में विष्णु प्रभाकर के ८ एकांकियों का संकलन है।

१९०. **रक्त संगम :** ले. दिनेश खरे, मू. २.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६।

प्रस्तुत पुस्तक में रेडियो एकांकियों का संकलन किया गया है। एकांकियों का विषय ऐतिहासिक, पौराणिक, तथा सामाजिक है।

१९१. **लक्ष्मी का स्वागत :** ले. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. १.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस संग्रह में अश्कजी के दो एकांकी हैं।

१९२. **सबसे छोटा आदमी तथा अन्य एकांकी :** ले. श्री शंकर पुणतांबेकर, मू. २.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक 'श्री शंकर' द्वारा लिखित सामाजिकता को लिए हुए चार एकांकियों का संग्रह है। पुस्तक की भूमिका डा० भगीरथ मिश्र ने लिखी है।

१९३. **सरगम :** ले. जमीला कुरैशी, मू. २.७५, प्र. प्रवाल प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में संकलित लेखिका के सात एकांकियों का विषय सौन्दर्य, शृंगार और कृत्रिम शौक के प्रति नारी की आसक्ति है।

१९४. **हिमालय की हुंकार :** ले. कल्पनाथसिंह, मू. १.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

इस संकलन में ८ एकांकी हैं। इनकी रचना भारत-चीन सीमा विवाद की पृष्ठभूमि पर हुई है।

१६. कला

१९५. **आर्ट की कहानी :** ले. राम नाथ पसरीचा, मू. २.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

लेखक ने किशोर एवं बाल दोनों स्तरों का ध्यान रख कर पुस्तक की रचना की है जिसमें सम्पूर्ण चित्रकला—भारतीय एवं पाश्चात्य—का परिचय एवं इतिहास दिया गया है।

१७. कहानी : निजी संकलन

१९६. **अध्यापक :** ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. २.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में गुरुदेव की ११ बंगला कहानियों का शब्दशः अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

१९७. **अंतिम कविता :** ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. २.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, मथुरा।

इसमें बंगला गद्य-पद्यात्मक लंबी कहानी 'शेषेर-कविता' का हिन्दी रूपान्तर श्री विपिन बिहारी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

१९८. **अंतिम पत्ती :** ले. ओ. हेनरी, मू. १.००, प्र. स्टार पब्लिकेशन्ज, दिल्ली।

इस पाकेट बुक में ओ. हेनरी की कहानियों का हिन्दी रूपान्तर है।

१९९. अंतिम पत्र : ले. दशरथराज, मू. २.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

इसकी कहानियां पत्र शैली में हैं।

२००. उपसंहार : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. २.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

इस पुस्तक में लघु कथाएं संकलित हैं। बंगला से हिन्दी में रूपान्तर किया गया है।

२०१. उल्कापात : ले. डा. भगवानदास तिवारी, मू. २.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

तिवारीजी की छः प्रथम पुरस्कृत और तीन अप्रकाशित कहानियों का संग्रह है। भूमिका लेखक डा० भगीरथ मिश्र हैं।

२०२. एक चेहरा : ले. रामकुमार, मू. २.५०, प्र. राजपाल एण्ड संज, दिल्ली।

पुस्तक में लेखक की दस कहानियां संकलित हैं। इनमें मध्यवर्गीय नवयुवकों की मानसिक अवस्था को चित्रित किया गया है। कहानियां सामाजिक हैं।

२०३. एक छोड़ एक : ले. डा. रांगेय राघव, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली।

इस पुस्तक में स्वर्गीय रांगेय राघव की ११ कहानियां संकलित हैं, कहानियों के विषय सामाजिक हैं।

२०४. किनारे से किनारे तक : ले. राजेन्द्र यादव, मू. ४.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

इसमें लेखक की सन् १९६०-६२ के बीच की ११ कहानियां संकलित हैं। इनमें समाज का चित्रण किया गया है। आज की कहानी : परिभाषा भूमिका रूप में है।

२०४. (क) खोई दिशायें : ले. कमलेश्वर, मू. २.५०, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की ११ कहानियां संकलित हैं। लेखक ने अपने मन्तव्य में नई कहानी की भी काफी चर्चा की है।

२०५. गुप्तचरों की सच्ची कहानियां : अनु. वरदाचारी पंडित, मू. ३.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली।

इस पुस्तक में ८ विदेशी जासूसी कहानियों का हिन्दी रूपान्तर दिया गया है। अनुवादक का कथन है कि इन कहानियों का सृजन जीवनसत्य पर आधारित है, कल्पना पर नहीं।

२०६. गंगा की लहरें : ले. राजेन्द्र अवस्थी तृषित, मू. ३.५०, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की १८ कहानियां संकलित हैं। कहानियों के विषय सामाजिक हैं।

२०७. चन्दहसीनों के खतूत : ले. 'उग्र', मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक का पाकेट संस्करण इस वर्ष हुआ है। इसकी पत्रावली में समाज का चित्रण हुआ है।

२०८. नाग और शबनम : ले. कृश्नचन्दर, मू. ३.००, प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई-४।

प्रस्तुत में ग्यारह कहानियां संकलित हैं। लेखक ने समाज का व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण किया है।

२०९. प्रेमपत्र : ले. प्रकाश पंडित, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में जन-विख्यात व्यक्तियों के प्रेम-पत्र एकत्र किए गये हैं।

२१०. बीच का दरवाजा : ले. कृष्ण बलदेव वैद, मू. ३.७५, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में कहानीकार की १० कहानियां संकलित हैं जिनकी कथावस्तु समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण करती हैं।

२११. मास्टर साहब : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु. राजेश दीक्षित, मू. २.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में मुख्य रूप से प्रेम-कहानियां हैं। इसमें एक युग की समाप्ति और दूसरे युग का नवारम्भ हुआ है। बंगला से हिन्दी में रूपान्तर किया गया है।

२१२. रंगमंच : ले. नन्दकिशोर, मू. ३.००, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

इस संग्रह में लेखक की १२ कहानियां संकलित हैं। पुस्तक तथा कहानीकार के विषय में डा. संसारचन्द एवं सेठ गोविन्द दास जी ने परिचय दिया है। लेखक ने मानवीय गुणों एवं अवगुणों का चित्रण किया है।

२१३. **वासना के स्वर** : ले. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इसमें सेक्स का स्वर मुख्य है। अश्क की इन कहानियों में सामाजिक चित्रण करते हुए सार भी प्रस्तुत किया गया है।

२१४. **शिकार** : ले. श्यामराय भटनागर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में मौत से खिलवाड़ करने वाले शिकारियों की साहसपूर्ण और रोमांचकारी कहानियां हैं।

२१५. **सपनों का कैदी** : ले. कृश्नचन्दर, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस पाकेट बुक में कृष्णचन्द्र की ८ कहानियों का संकलन है। कहानियों की पृष्ठभूमि सामाजिक है जिसमें प्रणय एवं व्यंग्य की प्रधानता है।

२१६. **हमारा नया देश** : ले. एंजेलो पेलेग्रिनो, मू. २.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में अमेरिकन कहानियों का हिन्दी रूपान्तर है। रूपान्तकार हैं श्री ए. प्रताप।

२१७. **हिन्दी लेखिकाओं की प्रतिनिधि कहानियां** : सं. योगेन्द्रनाथ लल्ला, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६।

इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य की ३६ लेखिकाओं की कहानियां संकलित हैं। प्रसाद-युग से लेकर आधुनिक कहानी लेखिकाओं तक का समावेश किया गया है।

२१८. **हंस चुगे ज्यों सीप से मोती** : ले. हिमांशु श्रीवास्तव, मू. ३.५ , प्र. बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४।

लेखक की १२ कहानियों का यह प्रथम संकलन है।

१८. काव्य : प्राचीन

२१९. **गंगालहरी** : ले. सुधाकर पाण्डेय, मू. १.२५, प्र. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

महाकवि पद्माकर की इस कृति का प्रामाणिक पाठ तथा उनके शब्दों का अर्थ इस पुस्तक की विशेषता है। पुस्तक के अन्त में कवि पद्माकर का वंश-वृक्ष भी दिया गया है।

२२०. **श्रीहित चौरासी** : ललिताचरण गोस्वामी, मू. ३.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में हितहरिवंश की हितचौरासी और उनकी स्फुटवाणी को सेवकवाणी सहित संपादित रूप में प्रस्तुत किया गया है। भूमिका लेखक डा. विजयेन्द्र स्नातक हैं।

१९. काव्य : आधुनिक

२२१. **अन्तर्मथन** : कवि उदयशंकर भट्ट, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत काव्य में कैकेयी, रावण, वैदेही और राम के अन्तर्मन का संघर्ष-चित्र है। लेखक ने भूमिका में इसे लघुकाव्य की संज्ञा दी है। इसमें प्राचीन और नवीन का मिश्रण है।

२२२. **आंचल के फूल** : क. बाबूलाल शर्मा प्रेम, मू. ३.००, प्र. साहित्य भवन लि., इलाहाबाद।

पुस्तक में कवि के नवीनतम ४१ गीतों का संग्रह है। पुस्तक की भूमिका श्री सोहनलाल द्विवेदी ने लिखी है।

२२३. **कलियां खिलकर फूल बनी हैं** : क. महेशचन्द्र नक्श, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री नक्श की उर्दू कविताओं को हिन्दी लिपि में दिया गया है। पुस्तक में 'इब्तदाइया' शीर्षक से फिराक गोरखपुरी ने भूमिका लिखी है।

२२४. **गीत भरा संसार** : क. भरत व्यास, मू. १.००, प्र. पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली।

सिने गीतकार भरत व्यास की कविताओं को पाकेट बुक में दिया गया है। इसमें कवि की अपनी कुछ कविताएँ हैं और कुछ वह गीत जो चलचित्रों में गाये गए हैं।

२२५. **गीत भी : अगीत भी** : क. नीरज, मू. २.००, प्र. राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

यह पुस्तक कवि के समय-समय पर कवि-सम्मेलनों में सुनाए गए गीतों का संग्रह है। सबसे बड़ी विशेषता भाव, छन्द और लय के समन्वय की हैं। पुस्तक में कवि की ४१ रचनाएं हैं।

२२६. **तुम्हारे लिए** : क. गोपीकृष्ण गोपेश, मू. ४.००, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

इस पुस्तक में श्री गोपेश के छब्बीस गीतों का संकलन है। गीत नवीन प्रतीकों और नवीन भावनाओं वाले हैं।

२२७. तू और मैं : क. पं० दीनानाथ व्यास, मू. १.५०, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

इसमें कवि की १२१ रूबाइयों का संकलन है। प्रणय-वियोग की पृष्ठभूमि पर इन रूबाइयों का सृजन हुआ है। पुस्तक की भूमिका महावीर अधिकारी ने लिखी है।

२२८. तेरे सुर और मेरे गीत : क. भरत व्यास, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री भरत व्यास के गीतों का संकलन है जिनका उपयोग चलचित्र-जगत् में हुआ है।

२२९. थर्ड डिवीजन : क. आदित्य ओमप्रकाश शर्मा, मू. ४.३७, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में हास्य एवं व्यंग्य की १८ कविताओं का संकलन किया गया है।

२३०. धरती को आकाश पुकारे : क. शकील बदायूनी, मू. १.००, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पाकेट बुक में सिने गीतकार श्री शकील बदायूनी के फिल्मी गीतों का संकलन है।

२३१. नील जल सोई परछाइयां : क. जयसिंह नीरज, मू. ३.००, प्र. कविता प्रकाशन, अलवर।

प्रस्तुत पुस्तक नीरज जी की कविताओं का संकलन है।

२३२. पुरवैया के नूपुर : क. देवराज दिनेश, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

इस काव्य संग्रह में कवि के भावनात्मक, रागात्मक एवं प्रणयगीतों का संग्रह है।

२३३. पूर्वापर : क. उदयशंकर भट्ट, मू. ५.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

इस पुस्तक में 'युगदीप' तथा 'यथार्थ और कल्पना' दोनों संग्रहों की कविताएँ संकलित हैं। इसके साथ इस पुस्तक में नई ९ कविताएँ भी हैं। कविताओं में राष्ट्रीय भावना ओतप्रोत है।

२३४. प्रथम किरण : क. कृष्ण कल्याणकारी, मू. १.००, प्र. दक्षिणायन, देवकुण्डा, इलाहाबाद।

इस काव्य पुस्तक में प्रेम-गीतों का संकलन है। इन गीतों में विरह, वेदना, मिलन, आकुलता, प्रेम, वियोग और संयोग सभी का कवि ने चित्रण किया है।

२३५. बाजी रणभेरी : क. उमाकान्त मालवीय, मू. ३.००, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीय कविताओं का संकलन किया गया है। कविताएँ भारत-चीन सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

२३६. भारत माँ की लोरी : क. देवराज दिनेश, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

इस संग्रह की कविताएँ राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत हैं।

२३७. मरणज्वार : क. माखनलाल चतुर्वेदी, मू. ३.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

इस संकलन में चतुर्वेदीजी की राष्ट्रीय कविताओं का संकलन किया गया है। संकलन में चीनी आक्रमण एवं सीमा विवाद सम्बन्धी रचनाएँ भी दी गई हैं।

२३८. मेरा समर्पित एकान्त : क. नरेश मेहता, मू. ३.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इस संकलन में श्री नरेश मेहता की १९ कविताएँ संकलित हैं। यह कवि की सन् १९४९ से ५० तक की कविताएँ हैं।

२३९. मेंहदी और महावर : क. उमाकान्त मालवीय, मू. ३.५०, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

प्रस्तुत में हलके-फुलके पुलकित क्षणों के गीत संकलित हैं। समाज का चित्रण भी मिलता है। गीत अतुकान्त हैं।

२४०. रत्नावली : क. हरिप्रसाद हरि, मू. २.००, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

कवि ने महाकवि तुलसीदास की पत्नी रत्नावली के चरित्र को खण्डकाव्य के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। काव्य दन्तकथाओं तथा कल्पना पर अधिक आधारित है। भूमिका आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने लिखी है।

२४१. रवीन्द्र भ्रमर के गीत : क. रवीन्द्र भ्रमर, मू. ३.५०, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

इस संग्रह में कवि के ४५ भिन्नतुकांत गीतों का संग्रह है।

दो नए कोश

१. हिन्दी साहित्य कोश

(दूसरा भाग)

सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि

इसमें हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित अन्तर्कथाओं, लेखकों, तथा पुस्तकों का परिचय करानेवाली सब सामग्री दी गयी है। मूल्य बीस रुपये

२. भाषा विज्ञान कोश

सं० डा० भोलानाथ तिवारी

इसमें भाषा विज्ञान के प्रायः पूरे विस्तार को न्यूनाधिक रूप से एकत्र किया गया है। सैद्धान्तिक पक्ष के अतिरिक्त विश्व की प्रमुख भाषाओं एवं लिपियों पर मूल्यवान टिप्पणियाँ भी हैं। मूल्य पचीस रुपये

★

हमारे अन्य कोश—

बृहत् हिन्दी कोश (तीसरा संस्करण)	३०.००
बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश	३०.००
ज्ञान शब्द कोश (परिवर्धित संस्करण)	१५.००
हिन्दी साहित्य कोश (पहला भाग संशो० परि० दूसरा संस्करण)	२५.००
पारिभाषिक शब्द कोश	४.००

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी-१

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

गोमती के तट पर	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्तसिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
आकाशदीप	टेकचन्द शर्मा	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक-एकांकी-साहित्य

शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	,, ,,	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डा० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रतनलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०
मारवाड़-गौरव	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	१.२५

काव्य-साहित्य

प्रतिपदा	कुँवर चन्द्रप्रकाशसिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभानु	१.७५
गीतम	वीरेन्द्र मिश्र	२.५०

विभिन्न साहित्य

मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जय भारत विशाल	,, ,,	२.००
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
जन नायक	फतहचन्द्र शर्मा 'आराधक'	२.५०
संघर्षमय जीवन	प्रि० हरिश्चन्द्र	२.५०
दौलति बाग विलास	कुँवर चन्द्रप्रकाशसिंह	३.००
इंगलैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००
आविष्कार जगत्	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.००

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	,, ,,	६.५०
शुक्ल: एक समीक्षा	,, ,,	३.००
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डा० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसादसिंह	,,	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	,,	२.५०
हिन्दी गद्य विधाएँ और विकास	,,	२.००
सूर सरोवर	डा० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम तथा शास्त्रीय संगीत	डा० इन्द्रनाथ मदान	२.५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

धरती की पूजा	दुर्गादास शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	,,	१.२५
हम आजाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूँ	रामावतार त्यागी	१.००
ईसप की नीति कथाएँ १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएँ २	,,	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.००
भगवान बुद्ध	चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	१.२५
राजधानी दिल्ली	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
राम राज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
मुहावरों का मेला	डा० व्यास	१.२५
ईशोपनिषद्	गोपाल जी	०.६०
उपनिषद्	,,	१.५०
मनोवैज्ञानिक कहानियाँ	(पंजाबी)	१.२५
Handful of Stories	(अंग्रेजी)	2.50

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

टेलीफोन : २१२२६२

२४२. शीत भीगा भोर : क. सुरेन्द्रलाल, मू. ३.५०, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।

प्रस्तुत पुस्तक में कवि की ७८ कविताएँ संकलित हैं । कुछ कविताएँ व्यंग्य-प्रधान हैं ।

२४३. शृंगनाद : क. चक्रवर्ती, मू. १.२५, प्र. दक्षिणायन, वोलाराम, आन्ध्र प्रदेश ।

इस पुस्तक में कवि ने दो लम्बी कविताएँ दी हैं— 'हिम सीमान्त के प्रहरी' तथा 'माओत्सेतुंग' । कविता चीन-भारत सीमा विवाद की पृष्ठभूमि पर आधारित है ।

२४४. हरी बांसुरी सुनहरी टेर : क. सुमित्रानन्दन पंत, मू. ३.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में कवि की २३ कविताएँ संकलित हैं । कवि के शब्दों में 'हरी बांसुरी सुनहरी टेर' में मेरे श्रृंगार काव्य के सारे ग्राम भी संकलित हैं ।

२०. काव्य : संकलन

२४५. इकबाल की शायरी : सं. प्रकाश पंडित, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२ ।

पुस्तक में इकबाल के शेरों, गजलों और नज़्मों का संकलन किया गया है।

२४६. ऊँचा है भारत का भाल : मू. १.५०, प्र. सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार । नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। जिसमें हिन्दी के प्रमुख कवियों की रचनाएँ संकलित हैं। इसका प्रकाशन नवयुवकों को प्रेरणा देने के लिए हुआ है।

२४७. उर्दू शायरी के सात रंग : सं. प्रकाश पंडित, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२ ।

पुस्तक में उर्दू शायरी के सातों प्रमुख पहलुओं—इश्क, हुस्न, हिज्र, विसाल, मयखाना, ज़िन्दगी और खुदा से सम्बन्धित शेरों को संकलित किया गया है ।

२४८. चलो सिपाही चलो : मू. १.००, प्र. स्टार पब्लिकेशन्स, दिल्ली ।

यह भारत-चीन सीमा विवाद की पृष्ठभूमि पर लिखी गई राष्ट्रीय कविताओं का संकलन है । इसमें हिन्दी, उर्दू के गीत और गजल के साथ सिने गीतकारों की कविताएँ दी गई हैं।

२४९. दर्द की मीनार : क. कृष्णनन्दन पीयूष, मू. ३.५०, प्र. किशोर ग्रंथ कुटीर, पटना-४ ।

प्रस्तुत पुस्तक कवि की आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी इकतालीस कविताओं का संग्रह है ।

२५०. दाग की शायरी : सं. मस्सी हुज्जमा, मू. १.०० प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

इस पाकेट बुक में 'दाग' की प्रमुख नज़्मों और गज़लों को संकलित किया गया है । प्रारम्भ में सम्पादक ने कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी प्रकाश डाला है ।

२५१. हिन्दी रूबाइयां : सं. नीरज, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के आधुनिक कवियों की रूबाइयों का संकलन किया गया है ।

२१. कृषि तथा ग्रामोद्योग

२५२. इन्टर कृषि विज्ञान : ले. श्यामप्रसाद शर्मा, मू. ५.५०, प्र. भारत भारती प्रकाशन, मेरठ ।

इस पुस्तक की रचना उत्तरप्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत इन्टरमीडियेट के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर की गई है ।

२५३. कृषि-विज्ञान : ले. राजेश्वरदास गुप्त, म. ७.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

पुस्तक में कृषि-सम्बन्धी जानकारी दी गई है । स्वयं गुप्त जी बंगाल सरकार के कृषि-अधिकारी रह चुके हैं । गत बीस वर्ष से उनकी यह पुस्तक अंग्रेजी में भी कृषि विज्ञान के नाम से कलकत्ता विश्वविद्यालय में पाठ्य पुस्तक के रूप में लगी हुई है ।

२५४. गाय का आर्थिक मूल्यांकन : ले. परमेश्वरी प्रसाद गुप्त, मू. ०.७५, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली ।

इस पुस्तक में लेखक ने गाय से संबन्धित समस्याओं का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया है ।

२५५. प्रसार एवं ग्राम कल्याण : ले. ओमप्रकाश वाहमा, मू. ८.००, प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा ।

प्रस्तुत पुस्तक में ग्राम-समाजशास्त्र, ग्राम-कल्याण, ग्राम-मनोविज्ञान, ग्राम-सुधार एवं कृषि-उद्धार की योजनाओं को समझाया है । पुस्तक देश के भावी कृषि स्नातकों, प्रसार

एवं ग्राम-कल्याण से संबन्धित साथियों के लिए लिखी गई है।

२५६. भारत के गाय बैल : ले. परमेश्वरी प्रसाद गुप्त, मू. १.५०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय गाय-बैलों की किस्मों तथा उनकी नस्ल के सुधारों पर प्रकाश डाला गया है। विषय के स्पष्टीकरण के लिए चित्र भी दिये गये हैं।

२५७. माध्यमिक कृषि जन्तु-विज्ञान : ले. चौधरी तथा कौल, मू. ६.००, प्र. भारत भारती प्रकाशन, मेरठ।

इस पुस्तक की रचना छात्रों के पाठ्यक्रम के आधार पर की गई है। पाठ्यक्रम उत्तरप्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत है।

२५८. आधुनिक फर्नीचर डिजाइन बुक : ले. रतन प्रकाश शील, मू. १२.००, प्र. देहाती पुस्तक-भंडार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक अभिनव डिज़ाइनों वाले नवीन फर्नीचरों के चित्र अंकित किये गये हैं।

२५९. गाँव गाँव के जागे भाग : ले. व्यथित हृदय, मू. १.००, प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक ने ग्रामीण जीवन में जो सुधार दस-पन्द्रह वर्षों के मध्य हुआ है, उस पर प्रकाश डाला है।

२६०. मशीन शाप ट्रेनिंग : ले. कालीचरण गुप्त, मू. १०.००, प्र. देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६।

प्रस्तुत पुस्तक में ट्रांजिस्टर रेडियो, एम्लीफायर आदि के विषय में जानकारी प्रदर्शित करते हुए इनके बनाने की विधि समझाई है।

२६१. मशीन वुड वर्किंग : ले. कालीचरण गुप्त, मू. ६.००, प्र. देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६।

इस पुस्तक में लकड़ी की चीजें बनाने तथा उसके उपयोग में जिन-जिन मशीनों, यन्त्रों की आवश्यकता होती है उन पर प्रकाश डाला गया है।

२६२. माडर्न कास्मेटिक इन्डस्ट्री : ले. के. सी. गुप्त, मू. ६.००, प्र. देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली।

इस पुस्तक में आधुनिक सौंदर्य-प्रसाधन सामग्री के बनाने के लिए जानकारी दी गई है।

२२. कोश

२६३. अभिनव पर्यायवाची कोश : सं. सत्यपाल गुप्त, श्याम कपूर, मू. ६.५०, प्र. आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

इस कोष में हिन्दी के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं।

२६४. भाषा विज्ञान कोश : सं. भोला नाथ तिवारी, मू. २५.००, प्र. ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी।

प्रस्तुत कोश भाषा-विज्ञान का एक संदर्भ ग्रंथ है। कोषकार ने कोष के अन्त में अंग्रेजी-हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली भी दे दी है।

२६५. हिन्दी साहित्य कोश भाग २ : सं. डा. धीरेन्द्र वर्मा, मू. २०.००, प्र. ज्ञान मण्डल लि., वाराणसी।

प्रस्तुत ग्रंथ में हिन्दी साहित्य के वादों, परम्पराओं तथा साहित्यिक युगों के अध्ययन का परिचय दिया गया है। इस कोष में हिन्दी के साहित्यकारों का संक्षिप्त रूप में व्यक्तित्व और कृतित्व का भी परिचय दिया गया है।

२३. गद्य-काव्य

२६६. शर्बरी : ले. दिनेशनन्दिनी, मू. ७.००, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में १०१ गद्यगीत संकलित हैं। इसमें शाश्वत तत्व को शाण पर चढ़ाकर उसके शत-शत पहलुओं से कातर जगत को शान्ति देने का प्रयास किया गया है।

२४. जीवन-चरित्र : एक व्यक्ति

२६७. आचार्य जगदीशचन्द्र वसु : ले. श्याम नारायण कपूर, मू. २.००, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में विज्ञानाचार्य जगदीशचन्द्र वसु की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है।

२६८. आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय : ले. श्याम नारायण कपूर, मू. २.००, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

इस पुस्तक में महान वैज्ञानिक आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय की जीवनी और उनका कार्य वर्णित है।

२६९. चन्द्रशेखर वेंकट रमन : ले. श्याम नारायण कपूर, मू. २.००, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में 'महान वैज्ञानिक परिचय माला' के अन्तर्गत प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० सर चन्द्रशेखर वेंकट रमन की जीवनी प्रस्तुत की गई है।

२७०. **तानसेन** : ले. शंकरबाम, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने देश के महान गायक तानसेन का जीवन-परिचय दिया है।

२७१. **दक्षिण की मीरा** : ले. महेश नारायण 'भारती भक्त,' प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तिका में दक्षिण की प्रसिद्ध कवयित्री आंडाल का परिचय दिया है।

२७२. **नेहरू चाचा** : ले. सोहन लाल द्विवेदी, मू. २.२५, प्र. इण्डियन प्रेस, प्रा. लि., इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक ने नेहरू जी के जीवन-चरित्र को पद्य में प्रस्तुत किया है।

२७३. **महामना मालवीय** : ले. ब्रजमोहन व्यास, मू. ५.००, प्र. साधना सदन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में महामना मदनमोहन मालवीयजी का जीवन चरित्र संस्मरणों के रूप में वर्णित है। पुस्तक की भूमिका भारत सरकार के तत्कालीन गृहमन्त्री लालबहादुर शास्त्री द्वारा लिखी गई है।

२७४. **महान गणितज्ञ रामानुजन और डा० गणेश प्रसाद** : ले. श्यामनारायण कपूर, मू. २.००, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

इस पुस्तक में महान वैज्ञानिक परिचय पुस्तक माला के अन्तर्गत आधुनिक भारत के दो महान गणितज्ञ स्व० श्रीनिवास रामानुजन एफ. आर. एस. और स्व डा० गणेश प्रसाद की जीवनियों का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

२७५. **लोकमान्य तिलक और उनका युग** : ले. स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति, मू. ३.५०, प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

लोकमान्य तिलक के जीवन के साथ पुस्तक में उनके युग का अध्ययन प्रस्तुत हुआ है।

२७६. **राजेन्द्र बाबू : व्यक्तित्व और दर्शन** : सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, मू. १५.००, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत ग्रंथ में राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के व्यक्तित्व का परिचय उनके संस्मरणों में दिया गया है।

२७७. **समर्थ जीवन-दर्शन** : ले. म. तु. कुलकर्णी, मू. ४.००, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में 'कुलकर्णीजी' ने समर्थ जी के जीवन-चरित के साथ उनकी विचारधारा और कार्यप्रणाली को सरल और स्पष्ट शैली में प्रस्तुत किया है। भूमिका लेखक डॉ० भगीरथ मिश्र हैं।

२५. जीवन-चरित्र : संकलन

२७८. **अमिट रेखाएँ** : ले. अक्षयकुमार जैन : रत्न-सिंह शाण्डिल्य, मू. ३.५०, प्र. कमल कुंज प्रकाशन, दिल्ली।

इसमें रामायण काल से लगाकर चीनी आक्रमण तक के युद्धों में शौर्य प्रदर्शित करने वाले १७ रणनायकों की संक्षिप्त झांकियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

२७९. **दक्षिण के देशरत्न** : ले. राजेन्द्रसिंह गौड़, मू. ४.००, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

इस पुस्तक में दक्षिण भारत के प्रमुख महापुरुषों का जीवन दर्शन वर्णित है।

२८०. **नोबल पुरस्कार-विजेता साहित्यकार** : ले. ठाकुर राजबहादुरसिंह, मू. ७.००, प्र. राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में संसार में सबसे मूल्यवान 'नोबल-पुरस्कार' द्वारा अब तक सम्मानित देश-विदेश के सभी साहित्यकारों के जीवन और कृतित्व का विवरण है।

२८१. **युद्ध के मोर्चों से** : ले. वृन्दावनलाल वर्मा, मू. २.५०, प्र. मयूर प्रकाशन, झांसी।

इस पुस्तक में लेखक ने वीर चरित्रों की कथाएँ प्रस्तुत की हैं।

२६. दर्शन एवं धर्म

२८२. **तत्व प्रदीप** : ले. सिद्धिनाथ मेहरोत्रा, मू. ८.००, प्र. साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद।

इस पुस्तक में गीता के विषय में लेखक ने अपने मत और अनुभव के आधार पर गीता का सार संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है।

२८३. **दर्शन की कहानियाँ** : ले. बिल ड्यूरैन्ट, मू. १०.००, प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में बिल ड्यूरैन्ट द्वारा लिखित 'दी स्टोरी आफ फिलोसफी' (The Story of Philosophy) पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर किया गया है। अनुवादक श्री 'कैलाश नारायण चौधरी' हैं।

२८४. नैतिक जीवन का सिद्धान्त : ले. जान ड्यूई, मू. ५.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पुस्तक The Theory of the Moral work का हिन्दी रूपान्तर है।

२८५. राधाकृष्णन् का विश्व-दर्शन : ले. शान्ति जोशी, मू. ५.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

भारत के राष्ट्रपति एवं विश्व के महान् दार्शनिक डा. राधाकृष्णन् के दर्शन सम्बन्धी ग्रंथों के आधार पर इस पुस्तक की रचना की गई है; उनके समस्त दर्शन का सार प्रस्तुत करना उद्देश्य है।

२८६. वैदिक धर्म एवं दर्शन : ले. आर्थर बेरी डेल कीथ, मू. २५.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'दी रिलीजन एण्ड फिलासफी आफ दी वेद एण्ड उपनिषद्' के प्रथम भाग का हिन्दी रूपान्तर है। जिसमें वेद के देवता और दानव तथा वैदिक कर्मकाण्ड पर प्रकाश डाला गया है।

२८७. सत्य की ओर : ले. डॉ. राधाकृष्णन्, मू. ६.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. राधाकृष्णन् की 'रिकवरिंग आफ फेथ' का हिन्दी रूपान्तर है। इसमें यथार्थता की खोज और विश्वास की आवश्यकता का विस्तृत विवेचन किया गया है।

२८८. धर्म—तुलनात्मक दृष्टि में : ले. डॉ. राधाकृष्णन्, मू. ५.००, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में धर्म के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक 'ईस्ट एण्ड वैस्ट इन रिलिजन' का हिन्दी अनुवाद है।

२८९. मानव और धर्म : ले. इलाचन्द्र शास्त्री, मू. ३.००, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सम्प्रदायवाद की संकीर्ण सीमाओं से मुक्त धर्म और जीवन में उसकी उपादेयता पर प्रकाश डाला है।

२७. नाटक : मौलिक

२९०. अपनी धरती : ले. रेवतीसरन शर्मा, मू. २.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

श्री रेवतीसरन शर्मा का यह नाटक भारत-चीन सीमा विवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। यह नाटक आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया जा चुका है। कई बार मंच पर खेला भी गया है।

२९१. गान्धारी : ले. आ. चतुरसेन, मू. ३.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत नाटक विशेष कर छोटी कक्षाओं की छात्राओं के लिए ही है। कथा का आधार महाभारत है। भास के कुछ नाटकों की तथा वेणी संहार की छाया का उपयोग किया गया है। इस नाटक का प्रकाशन पहले भी हो चुका है।

२९२. गोरा : ले. जीवन लाल गुप्त, मू. २.७५, प्र. साहित्यवाणी, इलाहाबाद-३।

गुरुदेव ठाकुर के प्रमुख उपन्यास गोरा को हिन्दी में नाटक-रूप में प्रस्तुत किया गया है। गोरा का प्रयाग रंगमंच की ओर से अभिनय किया जा चुका है।

२९३. चाय पार्टियाँ : ले. संतोषनारायण नौटियाल, मू. २.००, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

प्रस्तुत हास्य नाटक है। नाटक का रंगमंच पर अभिनय किया जा चुका है। इसको अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार मिला है।

२९४. छपते-छपते : ले. मिहेल सैवेस्शियन, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत 'स्टाप न्यूज़' का हिन्दी रूपान्तर है। जिसका अनुवाद विनोद रस्तोगी ने किया है। इसमें दिखाया गया है कि सम्पादक या मंत्री पूंजीपतियों के हामी होते हैं।

२९५. पुस्तक जनता का सेवक : ले. कणादऋषि भटनागर, मू. २.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस नाटक में जनता के आधुनिक सेवकों का व्यंग्यात्मक विश्लेषण है। चुनाव परिपाटी एवं उसके आधार पर निर्मित जनतंत्र पर व्यंग्य किया गया है।

२९६. जागा देश हमारा : ले. कु. कुसुमलता मिश्र, मू. २.००, प्र. माया प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत नाटक राष्ट्रीय जागरण की भावनाओं को स्वर देने के लिए लिखा गया है। नाटक का रंगमंच पर अभिनय भी हो चुका है।

२९७. नन्दकुमार की फांसी : ले. पतिराम भट्ट, मू. १.७५, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

बंगाल के महाराज नंदकुमार को अंग्रेजों द्वारा दी गई फांसी इतिहास की अजीब घटना है। उस पर आधारित इस ऐतिहासिक नाटक में कोई स्त्री-पात्र नहीं है।

२९८. नया समाज : ले. उदयशंकर भट्ट, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

पुस्तक में भट्ट जी ने समाज का नवीन स्वरूप प्रस्तुत किया है।

२९९. मोहिनी : ले. परितोष गार्गी, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत नाटक में समाज और व्यक्ति का वास्तविक चित्रण प्रतीकात्मक शैली में किया गया है।

३००. बदलती दिशाएं : ले. सत्यप्रकाश मिलिन्द, मू. ३.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली।

प्रस्तुत देश की सामयिक समस्याओं पर रचित सामाजिक नाटक है।

३०१. भारतेन्दु नाट्य रूपक : ले. श्री भानु, मू. ३.००, प्र. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

भारतेन्दु जन्मशती के अवसर पर श्री भारतेन्दु नाटक मंडल, काशी द्वारा इस नाटक का अभिनय हो चुका है। हिन्दी में अपने ढंग का यह सर्वप्रथम प्रयास है।

३०२. मृत्युञ्जय : ले. ओंकारनाथ दिनकर, मू. २.००, प्र. साहित्य निकेतन, अजमेर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसका कथानक राजपूत काल, महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह के समय का है। नाटक सरलता से मंच पर खेला जा सकता है तथा अभिनय किया जा सकता है।

३०३. लहरों के राजहंस : ले. मोहन राकेश, मू. ३.५०, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

श्री मोहन राकेश का यह दूसरा ऐतिहासिक नाटक है। नाटक अश्वघोष द्वारा रचित सौन्दरनन्द काव्य पर आधारित है।

३०४. विजय-बेलि : ले. गोविन्ददास, मू. ३.००, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

सेठ गोविन्ददास जी का यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें उन्होंने भारत, मीडिया, ईरान आदि प्राचीन राष्ट्रों की क्रिया एवं एकसूत्रता का नाटकीयकरण किया है।

३०५. श्रीराम : ले. आचार्य चतुरसेन, मू. २.५०, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत नाटक पौराणिक है। सम्भवतः इसका प्रकाशन इससे पूर्व भी हो चुका है।

२८. नाटक : अनूदित

३०६. ईडीपस, प्रेम और मृत्यु : ले. रांगेय राघव, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

पुस्तक महान् यूनानी नाटककार सोफोक्लीज की दो दुःखांत नाटिकाओं का हिन्दी रूपान्तर है।

३०७. लम्बे दिन की यात्रा रात में : अनु. उपेन्द्रनाथ अश्क, मू. ३.७५, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

यूजीन ओनील के नाटक का हिन्दी रूपान्तर है।

३०८. हमदर्दी : ले. लियोनिद एन्द्रेव, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सरल और सहज भाषा को अपना कर लियोनिद एन्द्रेव के नाटक का भावानुवाद किया है।

२९. निबन्ध

३०९. कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबन्ध : ले. विष्णुकांत शास्त्री, मू. ४.५०, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में कवि निराला तथा विभिन्न साहित्यकारों के विषय में आलोचनात्मक निबन्ध दिये गये हैं।

३१०. गद्य भारती : सं. केसरी कुमार, मू. ४.००, प्र. बिहार ग्रन्थ कुटीर, पटना-४।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी गद्य साहित्य के विभिन्न रूप :- कहानी, व्यक्तिगत निबन्ध, शब्दचित्र, संस्मरण, यात्रा, एकांकी, समालोचना एवं लघुकथाओं का संकलन है।

३११. प्रबन्ध प्रदीप : ले. एन. पी. कुट्टन पिल्ले, मू. ३.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में मुहावरे, लोकोक्तियाँ, व्याकरण, अनुवाद करना, लेखन, पत्र लेखन, निबन्ध—सामान्य और साहित्यिक—रूपों का समावेश है। पुस्तक छात्रों के लिए है।

३१२. फागुन के दिन चार : ले. प्रभुदयाल भुपतकर, मू. ४.००, प्र. हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के सोलह निबन्धों का संकलन है।

३१३. मैं विद्यार्थी हूँ : ले. स्वामीनाथ शर्मा, मू. २.५०, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न विषयों को लेकर १६ निबन्धों की रचना की गई है। समस्त निबन्धों का विषय सामाजिक है।

३१४. युग चिन्तन : ले. शरददेवड़ा, मू. ६.००, प्र. रूपा एण्ड कम्पनी, बम्बई।

इस पुस्तक में दर्शन, साहित्य, समाजशास्त्र एवं यौन मनोविज्ञान सम्बन्धी निबन्धों का संकलन है। निबन्ध मूलतः अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। यह इनका हिन्दी अनुवाद है।

३१५. रवीन्द्र और लोकसाहित्य : ले. सुकुमार सेन, मू. ०.७५, प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, दिल्ली-६।

प्रस्तुत पुस्तक में डा० सुकुमार सेन के चार निबन्ध संकलित हैं। निबन्ध मूल रूप में बंगला भाषा में लिखे गये हैं; अनुवाद श्री अनिल वरण गोपाध्याय ने किया है।

३१६. साधना और साहित्य : ले. हरस्वरूप माथुर, मू. ५.००, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीनता, वैदिक संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, गीता, सांख्य, पातंजल योग, नाथ सम्प्रदाय, निर्गुण सम्प्रदाय विषयों पर निबन्ध संकलित हैं।

३१७. साहित्यिक निबन्ध मणि : ले. डा० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', मू. ५.००, प्र. भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली।

प्रस्तुत निबंध संग्रह अनुसंधानकर्ताओं, स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों के लिए है।

३१८. हम और वह : ले. दयानन्द वर्मा, मू. २.००, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, काशी।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के विभिन्न पहलुओं पर ८ मनोवैज्ञानिक निबन्ध दिये गये हैं।

३०. पुस्तकालय प्रबन्ध

३१९. पुस्तकालय प्रबन्ध : ले. द्वारका प्रसाद शास्त्री, मू. ५.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

इस पुस्तक में पुस्तकालय प्रबन्ध एवं उसकी व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तकालय के विषय में प्रारम्भिक जानकारी दी गई है।

३१. बाल मनोविज्ञान

३२०. नन्हें मुन्ने की देखभाल : मू. २.२५, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक अमेरिकन सरकार के स्वास्थ्य-शिक्षा, लोक-हित विभाग के सोशल सिक्यूरिटी एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'Infant Care' का हिन्दी रूपान्तर है। पुस्तक में जानकारी के लिए फोटोग्राफ एवं चित्र दिये गये हैं।

३२१. रुचि सुरुचि : ले. अंकिमचन्द्र, मू. १.५०, प्र. परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक बाल एवं किशोरों का मार्ग-दर्शन करने के लिए लिखी गई है।

३२२. हमारे बच्चे : १ से ६ वर्ष : अनु० गणेश शुक्ल, मू. २.५०, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

यह पुस्तक अमेरिकन सरकार के स्वास्थ्य-शिक्षा, लोक-हित विभाग के सोशल एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक के आधार पर है।

३२३. हमारे बच्चे : ६ से १२ वर्ष तक : अनु. मुनी सक्सेना, मू. ३.००.

प्रस्तुत पुस्तक अमेरिकन सरकार के स्वास्थ्य-शिक्षा विभाग, लोकहित विभाग के सोशल एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक के आधार पर है।

३२. बाल साहित्य

३२४. अच्छा कौन : ले. नीरव, मू. १.२५, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

पुस्तक में ईसप की कहानियों का पद्यान्तर किया गया है।

३२५. अच्छा बालक : ले. व्यथित हृदय, मू. १.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रातःजागरण, स्नान, स्वच्छता, भोजन, तत्पश्चात् अध्ययन, बातचीत का ढंग, कसरत आदि दैनिक कृत्यों को समझाया गया है।

३२६. अजन्ता की बोलती तस्वीरें : ले. विमला दत्ता, मू. २.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखिका ने विंध्य की पहाड़ियाँ,

अजन्ता की कहानी तथा उसकी गुफाओं की सैर तीन प्रकरण में प्रस्तुत की है।

३२७. **अनोखी कहानियाँ** : ले. विष्णुदत्त विकल, मू. १.२५, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

पुस्तक में बच्चों को चकित कर देने वाली संक्षिप्त कहानियाँ संकलित हैं। कहानियों में कौतूहल को विशेष महत्व दिया गया है।

३२८. **आओ पुस्तकालय चलें** : ले. एस. आर. मित्तल, मू. १.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में बाल्य-जीवन में पुस्तकालय की उपयोगिता पर संवादों द्वारा चर्चा की गई है।

३२९. **आचार्य चाणक्य और चन्द्रगुप्त** : ले. प्रेमचंद महेश, मू. १.२५, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

इस पुस्तक में आचार्य चाणक्य और चन्द्रगुप्त के महान उद्देश्य और उद्योग का कथा के रूप में वर्णन किया गया है।

३३०. **आदर्श कथाएँ** : ले. युधिष्ठिर कुमार, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में किशोरों को चरित्र-निर्माण की शिक्षा देने के लिए १६ कहानियाँ संकलित हैं।

३३१. **आविष्कार जगत** : ले. भगवतीप्रसाद, श्रीवास्तव, मू. ३.००, प्र. पुस्तक प्रतिष्ठान, इन्दौर।

इस पुस्तक में वैज्ञानिक जगत के प्रमुख आविष्कार और उनके आविष्कारकों का परिचय दिया गया है।

३३२. **डैनियल बैब्स्टर** : ले. एल. फ्रैंड स्टीनवर्ग, मू. १.००, प्र. एस. चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक में डैनियल बैब्स्टर के बचपन, शिक्षा और व्यवसाय के साथ उनके लोक हितैषी कार्यों को व्यक्त किया गया है। अनुवादक श्री हरि प्रतापसिंह हैं।

३३३. **एब्राहम लिंकन** : ले. मेनुअल कामराय, मू. १.५०, प्र. एस. चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक में एब्राहम लिंकन की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अनुवादक श्री राजेन्द्र शर्मा हैं।

३३४. **कार्ल स्टीनमिट्ज** : ले. हेनरी थाऊस, मू. १.००, प्र. एस. चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने कार्ल स्टीनमिट्ज की जीवनी तथा उसकी आकांक्षाओं और सफलताओं का वर्णन किया है। पुस्तक की अनुवादिका हैं कान्ता चोपड़ा।

३३५. **काँच का रास्ता** : ले. राबिन शा 'पुष्प' मू. १.५०, प्र. हेमकुण्ट प्रेस, नई दिल्ली।

इस पुस्तक में एक साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ लड़की की कहानी दी गई है। पुस्तक मूलतः अंग्रेजी भाषा की है जिसका रूपान्तर हिन्दी में हुआ है।

३३६. **कौतकी जीव-जन्तु** : ले. व्यथित हृदय, मू. १.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में विश्व के विविध जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों की बनावट तथा उनके स्वभाव और विशेष गुणों का वर्णन किया गया है।

३३७. **खजाने की खोज** : ले. डा. श्याम सुन्दर व्यास, मू. १.२५, प्र. पुस्तक प्रतिष्ठान, इन्दौर।

इस पुस्तक में एक दीर्घ कथा है। इसे बाल साहित्य में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार मिला है।

३३८. **खरगोश गुसाईं** : लेखक वीणा दर, मू. ३.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने पंचतन्त्र की कहानियों के आधार पर नवीन कहानियों का सृजन किया है।

३३९. **गुड़िया का ब्याह** : ले. कुमारी मधु, मू. १.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में बच्चों के ज्ञान-वर्धन एवं मनोविनोद की कविताएँ संकलित हैं।

३४०. **गुड़ियों का देश** : ले. सरस्वतीकुमार 'दीपक', मू. १.५०, प्रकाशक आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इसमें बालकों के लिए सिने गीतकार दीपक की रचनाएँ संग्रहीत हैं।

३४१. **चिड़ियों की बातें** : ले. पुरुषोत्तम गौड़, मू. २.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने चिड़ियों के सम्बन्ध में जानकारी दी है।

३४२. **चित्रकूट** : ले. विश्वम्भरसहाय प्रेमी, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

इस पुस्तक में भारत के प्रमुख तीर्थ चित्रकूट का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं आधुनिक परिचय दिया गया है।

३४३. जंगली जानवरों की बातें : ले. पुरुषोत्तम गौड़, मू. २.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

इस पुस्तक में लेखक ने जंगली जानवरों के सम्बन्ध में जानकारी दी है।

३४४. जार्ज वेस्टिंग हाउस : ले. हेनरी टामस, मू. १.००, प्र. एस. चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में जार्ज वेस्टिंग हाउस के स्कूल, सैनिक शिविर और कारखाने का नैतिक और कार्यशील जीवन व्यक्त किया गया है। पुस्तक के अनुवादक श्री प्रेमप्रकाशजी हैं।

३४५. जिन्हें हम याद रखते हैं : ले. व्यथित हृदय, मू. १.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में बुद्ध, अशोक, चन्द्रगुप्त, हर्ष, हजरत मोहम्मद आदि सत्रह महापुरुषों के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

३४६. जीवन-निर्माण की कहानियाँ : ले. मनोहरलाल वर्मा, मू. १.२५, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में २४ कथाएँ दी गई हैं, जिनका उद्देश्य चरित्र-निर्माण है।

३४७. चालाक खरगोश : ले. शिवमूर्तिसिंह 'वत्स' मू. १.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में बच्चों के लिए कुछ कहानियाँ संकलित हैं। विनोद के साथ शिक्षा देना उद्देश्य है।

३४८. चाचा की चमत्कारी पगड़ी : ले. जै भारत, म. ६.६० प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

३४९. चाचा चंदेल और चाँदी का पेड़ : ले. राबिन शा 'पुष्प', मू. १.५०, प्र. हेमकुण्ट प्रेस, नई दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में हास्यात्मक कथा को उपन्यास का रूप दिया गया है। यह राबिन शा 'पुष्प' की पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है। के. सी. आर्यन ने हिन्दी रूपान्तर किया है।

३५०. टिंगटिंग : योगेन्द्रनाथ लल्ला, मू. १.००। प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में श्री लल्ला की ५ व्यंग्यात्मक कहानियाँ दी गई हैं।

३५१. दस कहानियाँ—ले. सोहनलाल द्विवेदी, मू. २.२५, प्र. इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने दस बालोपयोगी कहानियाँ पद्य में प्रस्तुत की हैं।

३५२. दिग्विजयी : ले. श्री योगेन्द्र गप्त, मू. २.७५, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

यह पुस्तक इतिहास के सत्य पर आधारित, पुरानी कहानियों का संग्रह है। इसका उद्देश्य किशोर मन में देश प्रेम की भावना जागृत करना है।

३५३. देवता हार गये : ले. देशराजसिंह भाटी, मू. २.००, प्र. उमेश प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत उपन्यास सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथा से सम्बन्धित है।

३५४. नटखट चूहा : ले. शिवमूर्तिसिंह 'वत्स', मू. १.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में बच्चों के मनोविनोद के लिए संक्षिप्त एवं सरल कहानियों का संकलन किया गया है।

३५५. नटखट बच्चों की पार्टी : ले. मारिन ई० फारेस्टर, मू. १.२५, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की दो बालोपयोगी कृतियों, "नाटि चिलड्रन पार्टी" तथा 'दी केयरलैस कोन्ट्री" का अनुवाद श्री शंकर सुलतानपुरी ने किया है।

३५६. नदी का पानी लाल : ले. शिवमूर्तिसिंह 'वत्स', मू. १.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में बच्चों की शिक्षा एवं मनोविनोद के लिए संक्षिप्त कहानियों का संकलन किया गया है।

३५७. नन्हे मुन्ने वैज्ञानिक बनें : ले. रमेशचन्द्र प्रेम, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६।

प्रस्तुत पुस्तक बालकों में विज्ञान विषय के प्रतिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रस्तुत की गई है।

३५८. नयी-नयी कहानियाँ : ले. योगराज थानी, मू. १.५०, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली।

पुस्तक में बाल-मनोविज्ञान की दृष्टि से बालकों के लिए कहानियाँ संकलित हैं। कुछ कहानियों का विषय ऐतिहासिक है, कुछ का पौराणिक है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन गोरखपुर के प्रमुख प्रकाशन

हिंदी-साहित्य

काव्यशास्त्र — डॉ० भगीरथ मिश्र ७.५०
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव — डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा ५.००
साहित्य का मूल्यांकन — ले० डब्लू० बी० वर्सफोल्ड, अनु० डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३.००
मध्ययुगीन काव्य-साधना — डॉ० रामचन्द्र तिवारी ४.५०
रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय — डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह १५.००
दिग्विजय भूषण — डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह १५.००
निबन्ध-नवनीत — सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ३.५०
निबन्ध-नीहारिका — सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी २.५०
लहरपंथी (भावात्मक गद्य) — श्री रामाधार सिंह १.२५
काव्यधारा — सं० डॉ० गोपीनाथ तिवारी तथा डॉ० रामचन्द्र तिवारी ३.००
भूषण मञ्जूषा — डॉ० ब्रजकिशोर मिश्र १.५०
संक्षिप्त रामचन्द्रिका — डॉ० रामचन्द्र तिवारी २.००
बिहारी वैभव — डॉ० रामचन्द्र तिवारी १.२५
तन्दुल (कृष्ण-सुदामा) — श्री रामअधार त्रिपाठी 'जीवन' १.००
नाव के पाँव (कविता) — डॉ० जगदीश गुप्त २.५०
बसन्त और पतझर ,, — श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय १.५०
कला का अनुवाद — पं० माखनलाल चतुर्वेदी २.२५
स्वयंवर — श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय २.२५
लाल हवेली (कहानी संग्रह) — शिवानी (प्रेस में) ३.००
चौदहफेरे (उपन्यास) — शिवानी (प्रेस में) ५.००
जाने अनजाने (संस्मरण) — श्री विष्णु प्रभाकर ३.००
मुद्रिका (नाटक) — श्री सद्गुरुशरण अवस्थी १.००
भारतदुर्दशा (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) — सं० श्री डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १.००
श्रीचन्द्रावली (,, ,) ,, १.५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

वैज्ञानिक अनुसन्धान और आविष्कार — डॉ० रवीन्द्रप्रताप राव ३.००
धरती, सूरज, चांद सितारे — श्री विष्णुकान्त पाण्डेय १.५०
हमारे देश के सिक्के — डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त १.५०
हम सब एक हैं — श्री श्रीराम गोयल १.००

कला, इतिहास, संस्कृति

STUDIES IN INDIAN ART By Dr. Vasudeva Sharan Agrawala (*in Press*) Rs. 25.00
INDIA UNDER WELLESLEY by P. E. Robe ts Rs. 12.50
DUPLEIX AND CLIVE by H. H. Dodwell Rs. 12.50
LORD HASTINGS AND INDIAN STATES by Dr. M. S. Mehta Rs. 15.00
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ — श्री श्रीराम गोयल २०.००
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ — श्री श्रीराम गोयल ६.००
भारतीय संस्कृति — डॉ० लल्लनजी गोपाल तथा डॉ० ब्रजनाथ सिंह यादव ५.००

अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षा

आर्थिक सिद्धांत — डॉ० ब्रजकिशोर सिंह तथा श्री जे० पी० शुक्ल ८.००
राजस्व, राष्ट्रीय आय, रोजगार और आर्थिक प्रणालियाँ — डॉ० ब्रजकिशोर सिंह ७.००
समाज मनोविज्ञान — वी० वी० अकोलकर (प्रेस में) १०.००
SOCIAL PHILOSOPHY OF MAHATMA GANDHI by Dr. Mahadeva Pd. 12.50
A STUDY OF EDUCATIONAL PSYCHOLOGY by R. P. Bhatnagar Rs. 6.00
महान् शिक्षा शास्त्रियों के सिद्धान्त — आर० आर० रस्क (हिन्दी अनुवाद) (प्रेस में) ७.५०
शिक्षा सिद्धान्त एवं दर्शन — सत्यदेव सिंह ६.००

संस्कृत

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी १.४०
रचनानुवाद कौमुदी — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ३.५०
प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ७.५०
संस्कृत शिक्षा, भाग १ — डॉ० कपिलदेव द्विवेदी १.००
चन्द्रालोक सुधा (पंचम मयूख) — श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी ४.००
वेदचयनम् — श्रीविश्वम्भरनाथ त्रिपाठी ४.५०
लघुसिद्धान्त कौमुदी (संज्ञा और सन्धि प्रकरण) — श्री गौरीशंकर सिंह ०.७५
वाल्मीकि रामायण (सुन्दर काण्ड, सर्ग १-५) — माधव अनन्त फड़के १.००
मध्यभारतीय भाषा-चयन — डॉ० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय ६.००
भोज प्रबन्ध (संक्षिप्त) — डॉ० देवर्षि सनाढ्य १.५०
THEORY OF AGGREGATES OF REAL NUMBERS by Dr. K. B. Lal 10.00
VECTOR ANALYSIS by Dr. K. B. Lal 1.50

विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर

उपन्यासकार, कहानीकार, चिन्तक, दार्शनिक

श्री जैनेन्द्र कुमार

का सम्पूर्ण साहित्य, पठनीय, संग्रहणीय व प्रेरक है। पुस्तक-विक्रेताओं के लिए विशेष लाभकारी है क्योंकि प्रत्येक पुस्तकालय में इसकी मांग है।

बहुचर्चित, बहुप्रशसित, बहुपठित

इस वर्ष के महान् ग्रन्थ

समय और हम तथा इतस्ततः

इसी मास जैनेन्द्र का नया कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है

जैनेन्द्र की कहानियां

(नवां भाग)

- **प्रण और परिणाम, वह रानी, विज्ञान आदि १२ कहानियां।**
- **इन कहानियों से रूढ़ और बद्ध सामाजिक तथा धार्मिक मान्यताओं में तीव्र कम्पन पैदा हुआ है।**
- **कहानी और उसके प्रभाव, शिल्प, विधा तथा इतिहास आदि पहलुओं पर उजागर प्रकाश डालने वाले श्री जैनेन्द्र के विस्तृत विचार भूमिका के रूप में संकलित हैं।**

उपन्यास	जयवर्धन, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, परख।
कहानी-संग्रह	जैनेन्द्र की कहानियां, भाग १ से ९ तक।
निबन्ध-साहित्य	पूर्वोदय, मन्थन, सोचविचार, श्रेय और प्रेय, काम प्रेम परिवार, ये और वे।
अनूदित	पाप और प्रकाश, मन्दालिनी, यामा भाग १ से ३
अन्य साहित्य	जवानो, जवानो राह यह है, जीवन झांकी, केरलसिंह, मिट्टी का पुतला, नीति की ओर।

जैनेन्द्र साहित्य–

दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि स्थानों पर विभिन्न रूपों में स्वीकृत हैं।

थोक विक्रेता सीधा सम्पर्क करें—

पूर्वोदय प्रकाशन

फोन : २७४९५६

८, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध
आचार्य चतुरसेन ९.००
अतीत के चित्र
मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर
(मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची ,, ३.५०
छोटी बहू ,, ३.५०
चातकी ,, ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनिकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
कान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
हार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
युग देवता यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ४.००
रायसीना की लपटें
भगवद्दत्त 'शिशु' ३.००
नर्तकी रूपकोसा (प्रथम भाग)
अनु० मनोहरलाल चौहान ४.५०
नर्तकी रूपकोसा (द्वितीय भाग)
अनु० मनोहरलाल चौहान ४.००
प्राणों की प्यास मधुलिका ३.५०

कहानी संग्रह

कुछ पैसे रामसरन शर्मा १.२५
मलयानिल नीलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.५०

नाटक-संग्रह

नीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियां और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा
स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००

एक युग : एक प्रतीक
देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफशे का फूल
खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल
श्री जी. पी. श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात
देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
गांधी गीता प्रो० इन्द्र २.००
अपना इलाज आप खुद कीजिए
आचार्य चतुरसेन २.५०
नई जिन्दगी डा० लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल साहित्य

बड़ों का बचपन
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)
विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ
विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी
विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.००
(दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.५०
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
गुब्बारा दद्दाजी १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५

राधाकृष्ण (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) १.२५
मुगल बादशाहों की सनक
आचार्य चतुरसेन १.७५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज अन्ना दीदी २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा
आ० सुन्दरसिंह ०.६५
तीन नकटे यादवेन्द्र शर्मा १.२५
ललारी और नाई
हरजसराय जैन १.२५
कलन्दरों की आत्म-कथा
हरजसराय जैन १.५०
अनजाने देश में ओमप्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १)
दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) ,, १.५०
चुटियावाले चाचाजी ,, १.५०

भारत-परिचय-माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र ,, १.७५
असम ,, १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायण अग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलाल महतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर ,, १.७५
गुजरात मनहरलाल १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मराडी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

३५९. नयी पुरानी कहानियाँ : ले. योगराज थानी, मू. १.५०, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली ।

इस पुस्तक में बालकों के लिए नई-पुरानी १५ कहानियाँ दी गई हैं। भूमिका श्री मन्मथनाथ गुप्त ने लिखी है।

३६०. नेफा की लोक-कथाएँ : ले. शिवानन्द नौटियाल, मू. १.५०. प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में नेफा का परिचय दिया गया है। आदिम जातियों का संक्षिप्त वर्णन भी है। लेखक का बहुत सा समय इन आदिम जातियों के साथ व्यतीत हुआ है।

३६१. पंचायत का न्याय : ले. सन्तोषनारायण नौटियाल, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।

पुस्तक में ३ ऐसे एकांकी दिए गए हैं जिनका विषय ग्रामीण समाज है।

३६२. प्रकाश की रेखा : ले. रणजीत भट्टाचार्य, मू. १.५०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली ।

इस पुस्तक में कर्तव्यबोध को जागृत करने के उद्देश्य से दैनिक जीवन की २० घटनाएँ दी गई हैं।

३६३. पक्षियों की कहानियाँ : ले. योगराज थानी, मू. १.५०, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली ।

पुस्तक में लेखक ने लोक-साहित्य के आधार पर पक्षियों की कहानियाँ प्रस्तुत की हैं।

३६४. पशु-पक्षी और प्रकृति की बातें : ले. शिवमूर्ति सिंह 'वत्स', मू. १.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ ।

प्रस्तुत पुस्तक में पशु, पक्षी, जीव-जन्तु तथा प्रकृति के सम्बन्ध में जानकारी दी गई है।

३६५. पशु-पक्षियों की शिक्षाप्रद कहानियाँ : ले. राममूर्ति मेहरोत्रा, मू. १.५०, प्र. साहित्य भवन, इलाहाबाद ।

पशु-पक्षियों से सम्बन्धित ये कहानियाँ बालकों को शिक्षा देने के उद्देश्य से प्रस्तुत की गई हैं।

३६६. फूलों की बातें : ले. शिवमूर्तिसिंह 'वत्स', मू. २.००, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ ।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय फूलों की जानकारी दी गई है।

३६७. वुडरो विल्सन : ले. फंग और वंग्लस, मू. १.००, प्र. एस. चाँद एंड कम्पनी, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में वुडरो विल्सन का जीवन, विधि और विवाह, राजनीतिक क्षेत्र में योगदान, युद्धकालीन राष्ट्रपति, समझौते के छलछिद्र, और उसके महान आदर्शों को व्यक्त किया गया है। पुस्तक के अनुवादक श्री राम चन्द्र शर्मा महारथी हैं।

३६८. बच्चे कब क्या सीखते हैं : ले. अ. अ. अनन्त, मू. ३.५०, प्र. एन. डी. सहगल एंड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने, बच्चों की ज्ञान शक्ति कैसे बढ़ती है, अच्छी और बुरी आदतें उन पर कैसे प्रभाव डालती हैं, इन समस्याओं पर मनोवैज्ञानिक एवं सामयिक रूप से विवेचन किया है।

३६९. बच्चों के खेल : ले. गोस्वामी राम बालक, मू. २.५०, प्र. एन. डी. सहगल एंड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बच्चों के स्वास्थ्य और मानसिक विकास के लिए उपयोगी कुछ खेलों का सचित्र विवरण दिया है।

३७०. बेंजमिन फ्रेंकलिन : ले. इरमैन गौड खरले, मू. १.५०, प्र. एस. चाँद एंड कम्पनी, दिल्ली ।

इस पुस्तक में बेंजमिन फ्रेंकलिन की जीवन चर्या, उसके विविध आविष्कार, और उसके द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्माण में जो सहायता प्रदान की गई है, इन सब पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

३७१. बंदर और भालू : ले. जे. भारत दास, मू. ०.६०, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

इसमें बालकों के मनोविनोद के लिए संक्षिप्त एवं सरल पद्य दिये गये हैं।

३७२. बुन्देलखंड की लोक-कथाएँ : ले. हरगोविन्द गुप्त. मू. १.२५, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।

पुस्तक में बच्चों के ज्ञान एवं मस्तिष्क की पुष्टि के लिए कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

३७३. बालिश्तिया : ले. ताजवर सामरी, मू. १.५०, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

प्रस्तुत बाल उपन्यास में लेखक ने एक नन्हें बन्दर की आत्मकथा का वर्णन किया है।

३७४. बहादुर टॉम : ले. मार्क ट्वेन, अनु॰ श्री

प्रकाश, म. १.५०, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में बहादुर टॉम तथा उसकी वीरता एवं उत्साह का चित्रण है।

३७५. भारतीय गौरव की कहानियाँ : ले. मनमोहन सरल, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में भारतीय इतिहास के उन कथानकों को दिया गया है जो राष्ट्रीय एकता का महत्व प्रकट करते हैं।

३७६. भारत की स्वाधीनता की कहानी : ले. राधाकृष्ण शर्मा, मू. १.२५, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत की स्वाधीनता कितने बलिदानों के बाद प्राप्त हुई इसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

३७७. मत्स्य-जगत की बातें : ले. रामाधार, मू. २.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

इस पुस्तक में दो भाग हैं : प्रथम में मछली-पालन और उसके सम्बन्ध में चर्चा की गई है, दूसरे भाग में मछुआ सहकारी समिति पर प्रकाश डाला गया है।

३७८. महापुरुषों के गीत : ले. निरंकार देव 'सेवक' मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

यह पुस्तक बाल-साहित्य की एक कृति है जिसमें एक बालक अपनी मां से महापुरुषों के जीवन का अनुसरण करने की इच्छा व्यक्त करता है।

३७९. महापुरुषों के बीच एक नये ढंग का खेल : ले. जगदेव पाण्डेय, मू १.५०, प्र. साहित्य वाणी, इलाहाबाद-३।

प्रस्तुत पुस्तक में नामों का कौतूहलजनक खेल दिया गया है। और देश के भिन्न-भिन्न विचारधाराओं वाले बत्तीस महापुरुषों पर छोटी-छोटी कविताएँ हैं, जिनमें उनके जीवन और साहित्य का परिचय है।

३८०. मामा जी दिल्ली से आए : ले. ललित गोस्वामी, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक व्यंग्य विनोद-पूर्ण कविता-संग्रह है।

३८१. मुहावरों का मेला : ले. डा. श्यामसुन्दर व्यास, मू. १.२५, प्र. पुस्तक प्रतिष्ठान, इन्दौर।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने मुहावरों का प्रचलन, अर्थ एवं उनको स्मरण करने के लिए एक दीर्घकथा का अवलम्बन लिया है। पुस्तक को केन्द्रीय सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

३८२. ये रणबांकुरे : ले. सावित्री देवी वर्मा, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक भारत-चीन सीमा विवाद की पृष्ठभूमि में लिखी गई है जिसमें भारतीय सैनिकों की वीरगाथा प्रकाशित है।

३८३. रंगभूमि के दो राम : ले. रामवृक्षराय विधुर, मू. १.००, प्र. साहित्यवाणी, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना 'तुलसीदास' जी के 'रामचरित' के एक कथा संदर्भ पर आधारित है।

३८४. राजकुमारी और दो हंस : ले. श्रीमती कुसुम कटारा, मू. १.५०, प्र. माया प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तिका में बालकों के लिए एक वृहद् कथा का वर्णन किया गया है।

३८५. रस भरी कहानियाँ : ले. मनहर चौहान, मू. २.००, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली।

प्रस्तुत कहानी संग्रह में बालकों के लिए कहानियों का संकलन किया गया है।

३८६. वनवासी पाण्डव : ले. उर्मिल सब्बरवाल, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इसमें महाभारत के आधार पर पांडव वनवास की कथा प्रस्तुत की गई है।

३८७. शमा परवाना : ले. योगेन्द्र, मू. १.००, प्र. आयास प्रकाशन, मुजफ्फरनगर।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने नाटकीय रूप में आत्मकथा का वर्णन किया है।

३८८. शान्ति की ओर : ले. रेजिनाटार, मू. १.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

इसमें बालकों और किशोरों के लिए साहस, इतिहास और मानवाभिरुचि के सभी विषय दिये गये हैं।

३८९. शेरों की भगदड़ : ले. शिवमूर्ति सिंह 'वत्स', मू. १.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में बच्चों के विनोद के लिए कहानियों का संकलन है।

३९०. समय और साहस : ले. माता जी, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

इस पुस्तक में अरविन्द आश्रम की माता जी ने समय-समय पर जो अच्छी बातें कहीं और लिखी हैं, उन्हीं का संकलन है।

३९१. **सम्राट अशोक** : ले. प्रेमचन्द, मू. १.२५, प्र. भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली।

इस पुस्तक में सम्राट अशोक की महानता का परिचय देने के लिए इतिहास एवं कल्पना का आश्रय लिया गया है।

३९२. **समुद्र का खजाना** : ले. जे. भारतदास, मू. १.५०, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

३९३. **सीख की कहानियां** : ले. आनन्दकुमार, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इसमें बालकों को मनोरंजन के साथ व्यावहारिक नीति की शिक्षा देने के लिए कथाओं के आधार पर नए ढंग से कहानियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

३९४. **सूरज चांद सितारे** : ले. सन्तराम वत्स्य, मू. १.२५, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।

इस पुस्तक में सूरज, चाँद और सितारों के सम्बन्ध में बच्चों के लिए जानकारी दी गई है।

३९५. **हमारा पड़ोसी चांद** : ले. रमेश वर्मा, मू. १.२५, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में चन्द्रमामा से बच्चों का मिलाप कराया गया है।

३९६. **हमारे नये तीर्थ** : ले. सूर्यकुमार जोशी, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

इस पुस्तक में भारतवर्ष में योजनाओं के अन्तर्गत जिन बड़े उद्योगों का निर्माण हो रहा है उनका परिचय दिया गया है।

३९७. **हमारी प्रगति** : ले. अवनीन्द्रकुमार, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

भारतवर्ष ने तीन पंचवर्षीय योजनाओं में अपनी कितनी उन्नति की है इसका परिचय दिया है।

३९८. **हितोपदेश** : ले. विश्वदेव शर्मा, मू. ५.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

लेखक ने हितोपदेश की कथाओं को कविता का रूप दिया है।

३९९. **हिम्मत वाले** : ले. चन्द्रपाल सिंह यादव, मू. २.००, प्रकाशक : इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में लेखक ने साहस और उत्साह का मंत्र फूंकने के लिए गीतों का संकलन किया है।

४००. **होनहार बालक गांधी** : ले. वी. एन. माथुर, मू. १.५०, प्र. इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में लेखक ने गांधी जी की जीवनी का वर्णन किया है।

३३. भारत परिचय

४०१. **पश्चिमी घाटों की रानी महाबलेश्वर** : ले. कृष्णशंकर व्यास, मू. २.००, प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई-४।

इस पुस्तक में महाराष्ट्र राज्य के प्रमुख नगर महाबलेश्वर का परिचयात्मक विवरण है। जिसमें सांस्कृतिक महत्व एवं प्राकृतिक छटा के साथ वहाँ के जनजीवन का परिचय भी दिया गया है।

३४. भारतीय प्राचीन ग्रन्थ

४०२. **केनोपनिषद** : सं. यमुनाप्रसाद त्रिपाठी, मू. ४.००, प्र. मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली।

पुस्तक में केनोपनिषद का तात्पर्य, उसका हिन्दी भावार्थ तथा अंग्रेजी अनुवाद दिया है, इसी के साथ डा० राधाकृष्णन्, स्वामी गम्भीरानन्द, श्री अरविन्द एवं पं० गंगा प्रसाद झा ने केनोपनिषद पर अपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं उनको दिया गया है।

४०३. **महाभारत के सूक्तिरत्न** : सं. इन्द्रचन्द्र शास्त्री, मू. २.५०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में महाभारत की विचार-प्रेरक और चरित्र निर्माणकारी सूक्तियों का संग्रह किया गया है। संस्कृत श्लोकों का हिन्दी में अर्थ भी दिया है।

४०४. **रामायण कथा** : ले. रघुनाथसिंह, मू. ४.५०, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की गर्व एवं गौरवपूर्ण गाथा को आदर्श रूप में मानकर बालकांड से उत्तरकांड तक का विस्तृत विवरण है। पुस्तक की भूमिका भारत के राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् द्वारा लिखी गई है।

४०५. **संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ :** सं. जनार्दन भट्ट, मू. ४.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत कवियों के अनेक श्लोकों को जो भिन्न-भिन्न विषयों के हैं, संकलित किया गया है। श्लोकों के हिन्दी अर्थ भी दिये गये हैं।

४०६. **भटक् सुक्तरत्नाकर :** ले. रामकृष्ण आचार्य, मू. ६.०-, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत साहित्य का विवेचन किया गया है। जिसमें ऋग्वेद, एवं मूलग्रन्थों की चर्चा की गई है।

३५. मनोविज्ञान

४०७. **मनोविज्ञान एवं मानसिक प्रक्रियाएं :** ले. शम्भूनाथ शर्मा, मू. ७.५०, प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

पुस्तक बी. ए. के छात्रों के लिए लिखी गई है। इस बात का प्रयास भी किया गया है कि इसका उपयोग सभी क्षेत्रों में हो सके।

४०८. **मनोविज्ञान और शिक्षा का मापन एवं मूल्यांकन :** ले. रामनारायण अग्रवाल, मू. १०.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इस पुस्तक की रचना विभिन्न विश्वविद्यालयों के एम. ए. तथा एम. एड. के पाठ्यक्रमों के आधार पर की गई है।

४०९. **बुद्धि, प्रकृति, सिद्धान्त एवं मूल्यांकन :** ले. रामनारायण अग्रवाल, मू ३.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इसकी रचना शिक्षण एवं मनोविज्ञान के आधार पर विद्यार्थियों के लिए की गई है।

४१०. **व्यक्तित्व, प्रकृति एवं मापन :** ले. रामनारायण अग्रवाल, मू. २.५०, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

मनोविज्ञान को सरल ढंग से प्रस्तुत करना इस पुस्तक का उद्देश्य है। पुस्तक पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी गई प्रतीत होती है।

३६. महिलोपयोगी

४११. **गर्भवती की देखभाल :** मू. १.७५, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

यह पुस्तक अमेरिकन सरकार के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा लोकहित विभाग के सोशल सिक्युरिटी एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक पर आधारित है। इसमें विशेष रूप से शिशु के प्रवेश के समय से लेकर उत्पत्ति तक के समय पर प्रकाश डाला गया है।

४१२. **नई बुनाई :** ले. लीला प्रकाश, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस पाकेट बुक में नई बुनाई के नमूने दिये गये हैं तथा जरसी, मोजे, स्वेटर, कोट, जम्पर इत्यादि वस्तुओं के बुनने पर चर्चा की गई है।

४१३. **पकाइये खाइये :** ले. सावित्री देवी वर्मा, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में नए से नए, तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने, मिठाइयाँ, नमकीन आदि बनाने की नई विधियों पर प्रकाश डाला गया है।

४१४. **पति-पत्नी :** ले. डा० लक्ष्मीनारायण, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में सेक्स की समस्याओं एवं विवाहित जीवन को सुखमय बनाने के उद्देश्य से साधनों तथा विचारों का समावेश है।

४१५. **सजिए सजाइए :** ले. सावित्री देवी वर्मा, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इस पुस्तक में आधुनिक जीवन में प्रचलित साज-श्रृंगार के ढंग और कम व्यय में घर को सजाने के लिए नवीन तरीकों की चर्चा की गई है।

४१६. **सुनो कान में :** ले. सावित्री देवी वर्मा, मू. ८.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ६।

प्रस्तुत पुस्तक में वैवाहिक जीवन की समस्या तथा यौन विज्ञान पर चर्चा की गई है।

४१७, **शिशु जन्म :** ले. ओमप्रकाश कृष्ण चोपड़ा, मू. ३.२५, प्र. हेमकुण्ट प्रेस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में शिशु-उत्पत्ति, जनन-क्रिया, दुग्धपान, यमज, वंशानुक्रम, व्याह और संयोग पर विचार किया गया है।

३७ यात्रा और जीवन साहित्य

४१८. **उत्तरी ध्रुव के नीचे सर्व प्रथम :** ले. कमांडर विलियम आर. एण्डर्सन, मू. २.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

१९६४ के श्रेष्ठ नवीन प्रकाशन

'ये रेखाएँ : ये दायरे'

लेखक : श्री विष्णु प्रभाकर

हिन्दी के आज के मूर्धन्य नाटककारों में अन्यतम श्री विष्णु प्रभाकर का यह ग्रंथ उनके नवीनतम एकांकियों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी सोद्देश्य विषयवस्तु, मनोवैज्ञानिक भावचित्रण और नाटकीय गति के लिए सुप्रसिद्ध हैं। मूल्य ४.००

चन्दायन

ले० : डा० परमेश्वरीलाल गुप्त

मौलाना दाऊद का यह सूफी प्रेमाख्यान आज चर्चा का विषय बना हुआ है। इसकी प्राचीनता तो अब सर्वसिद्ध हो चुकी है, किन्तु इसकी प्रामाणिक और पूरी पाण्डुलिपि का अभाव अध्येताओं के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा थी।

कर्मठ संपादक ने विभिन्न देशों की अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियों को खोजकर और उनकी सामग्री का उपयोग करके उसके अध्ययन के मार्ग को प्रशस्त कर दिया है। प्रस्तुत ग्रंथ भाषा की दृष्टि से एक ऐसा इतिहास है जो सूफियों की प्रेम-भावना और उनके मादन-भाव का बड़ा ही मोहक और छू लेने वाला अध्ययन प्रस्तुत करता है। परिशिष्ट में साहित्य और लोक में प्रचलित लोरक चन्दा की प्रेमकथा के अवधी, भोजपुरी, मैथिली, संथाली, छत्तीसगढ़ी, एवं बंगला रूपों को समाविष्ट करके और मैनासत सम्बन्धी अज्ञात सामग्री जोड़कर इसे अत्यन्त उपयोगी बना दिया है। साहित्येतिहास के प्रेमियों के लिए तो यह भाषा के ऐतिहासिक तथ्यों और नई खोजों का भंडार है। **मूल्य २०.००**

'आधुनिक हिन्दी-मराठी में काव्य-शास्त्रीय अध्ययन'

लेखक डा० मनोहर काले

दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त पी. एच-डी. डिग्री से विभूषित यह ग्रन्थ भारतवर्ष की दो प्रमुख भाषाओं के काव्य-शास्त्रों का अत्यन्त गम्भीरता और विस्तार से अध्ययन प्रस्तुत करता है। दोनों भाषाओं की नवीन खोजपूर्ण सामग्री से युक्त यह ग्रंथ हर पुस्तकालय और शोध-प्रेमी के लिए तो आवश्यक है ही, साहित्य का हर विद्यार्थी इसमें से उपादेय सामग्री का चयन कर सकेगा। अध्ययन की नवीन कड़ी। मूल्य २१.००

प्राचीन भारत के कलात्मक-विनोद

ले० : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डी. लिट्

भारतवर्ष के मूर्धन्य विद्वान आचार्य द्विवेदी जी के ग्रंथ का यह सर्वथा संशोधित और संवर्द्धित नवीन संस्करण भारतवर्ष के उस काल के साहित्यिक और सांस्कृतिक पक्षों को प्रस्तुत करता है, जब स्वर्ण-काल था। वह जनजीवन कलामय था, कला में ही नागरिकों के प्राण बसते थे, समाज के हर स्पन्दन में कला नर्तन करती थी, हर क्रीड़ा विनोद था और हर विनोद जीवन के विश्राम का ललित तथा मोहक स्पन्दन। प्रस्तुत ग्रंथ के ९९ परिच्छेदों और चार परिशिष्टों में प्राचीन भारत के हर कलात्मक विनोद का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है; मानो समाज का सांस्कृतिक इतिहास हो। मर्मस्पर्शिनी भाषा-शैली। **मूल्य ५.००**

प्रकाशक :

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड

हीराबाग : बम्बई-४

शाखा : ब्रज भवन, दयानन्द रोड, २१, दरियागंज, दिल्ली-६

७.५०
६.००
३.००
४.००
१.२०
में)
१.००
१.००
१.००
१.००
१.००

प्रस्तुत पुस्तक फस्ट अन्डर दी नौर्थ पोल (Under the North Pole) का हिन्दी अनुवाद है जिसको हरिश्चन्द्र ने अनूदित किया है। इसमें नाटिलस की साहस-पूर्ण यात्रा का वर्णन है।

४१९. **उत्तरी ध्रुव की सतह** : ले. कमांडर जेम्स कालवर्ट, मू. २.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

यह पुस्तक सरफेस एट दी पोल (Surface at the Pole) का हिन्दी अनुवाद है जिसको श्री आर. एस. भारद्वाज ने अनूदित किया है। पुस्तक का उद्देश्य जोश और प्रेरणा देना है।

४२०. **मचान पर उनंचास दिन** : ले. श्रीनिधि, मू. ६.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने शिकार की कहानी का विवरण प्रस्तुत किया है।

४२१. **हिमालय दर्शन** : ले. कृष्ण नारायण गोस्वामी, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक का प्रकाशन मूलरूप से कन्नड़ में हुआ था। उसका यह हिन्दी रूपान्तर है जिसका सम्पादन ठाकुर राजबहादुरसिंह ने किया है। पुस्तक की भूमिका श्रीप्रकाश जी ने लिखी है। पुस्तक में उत्तराखण्ड, गंगोत्री, यमनोत्री, कैलाश मानस यात्रा, काँगड़ा, कुल्लू, कश्मीर, नेपाल एवं दार्जिलिंग तथा नेफा आदि स्थानों का विवरण है।

३८. युद्ध-साहित्य : चीन-सम्बन्धी

४२२. **अग्नि परीक्षा** : ले. देवीसिंह चौहान, मू. २.००, प्र. जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।

इस पुस्तक में कवि ने मुक्तक काव्य के रूप में भारत-चीन सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि में लिखी जाने वाली निजी कविताओं का संकलन किया है।

४२३. **ग्रहण लगा** : ले. कमलेश सक्सेना, मू. ३.००, प्र. साहित्य भवन, प्रा. लि., इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में वे राष्ट्रीय कविताएँ दी गई हैं जिनका आधार भारत-चीन सीमा विवाद है।

४२४. **जननी जन्मभूमि** : ले. गुरुशरण, मू. १.२५, प्र. साहित्य संगम प्रकाशन, ग्वालियर।

इस पुस्तक की रचना चीन-भारत सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि के आधार पर की गई है। लेखक ने इसमें गद्य और पद्य दोनों को ही अपनाया है।

४२५. **देश हमारा धरती अपनी** : ले. विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, मू. २.५०, प्र. बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४।

प्रस्तुत पुस्तक चीन-भारत सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। पुस्तक में कविताओं के साथ इस संघर्ष के इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है।

४२६. **भारत का सीमान्त** : ले. डा० जगदीशचन्द्र जैन, मू. ४.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में सीमान्त में रहने वाले आदिवासियों की सामाजिक अवस्था का वर्णन है। इसी के साथ भारत-चीन सीमा-विवाद के सम्बन्ध में जानकारी दी गई है।

४२७. **हम एक हैं** : ले. कणादऋषि भटनागर, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

यह नाटक भारत-चीन सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। नाटक विभिन्न अवसरों पर खेला जा चुका है।

३९. राजनीति

४२८. **चीन की चेतावनी** : सम्पादक रुद्रकार्तिकेय, मू. १.[illegible], प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के प्रमुख कवियों की रचनाओं का संकलन किया गया है। इसमें प्राचीन ग्रंथों से भी कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं।

४२९. **तटस्थ की पुकार** : ले. सी गोपालाचारी, मू. ३.५०, प्र. सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार।

यह पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में प्रकाशित हुई है जिसमें श्री राजगोपालाचार्य के परमाणुयुद्ध और परीक्षण विस्फोट सम्बन्धी भाषण और वक्तव्यों का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया गया है। श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री इसके अनुवादक हैं।

४३०. **भारत में जनतन्त्र के नवीन आदर्श** : ले. वेरा माइकेलसडीन, अनु. राधेश्याम शर्मा, म. ५.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक का हिन्दी प्रकाशन मैसर्ज हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस के सहयोग से हुआ है। पुस्तक में भारत के राजनीतिक दर्शन पर चर्चा की गई है।

४३१. विकास और सर्वोदय : ले. विद्यासागर पांडेय, मू. २.५०, प्र. साहित्य संगम, लश्कर।

प्रस्तुत पुस्तक में गांधी विचारधारा से प्रेरित सर्वोदय सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने बताया है कि भारत की समाजवादी समाज-व्यवस्था सर्वोदय की ओर किस प्रकार बढ़ सकती है।

४०. रेखाचरित और संस्मरण

४३२. पत्र व्यवहार : सं. रामकृष्ण बजाज, मू. ३.५०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जमनालाल बजाज और उनकी पत्नी के पत्रों का संकलन किया है। ये पत्र सामाजिक, राजनीतिक स्थिति या विशेषकर गांधीयुग से संबंधित हैं।

४३३. बन्दी जीवन : ले. शचीन्द्रनाथ सान्याल, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

बन्दी जीवन पुस्तक सर्वप्रथम सन् १९२२ में प्रकाशित हुई थी। अब उसका नवीन संस्करण परिवर्तित विषय एवं अधिकृत सामग्री का योग देकर इस वर्ष हुआ है। इसमें क्रान्तिकारी आन्दोलन का चित्रण है।

४३४. बातें जिनमें सुगन्ध फूलों की : ले. अहमद सलील, मू. ३.००, प्र. भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

इस पुस्तक में उर्दू साहित्य के १५ साहित्यकारों का जीवन-परिचय संस्मरणात्मक ढंग से दिया गया है।

४३५. मेरी कौन सुनेगा : ले. महावीर त्यागी, मू. २.५०, प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की यथार्थ घटनाओं के संस्मरण हैं।

४३६. वे क्रान्ति के दिन : ले. महावीर त्यागी, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

इसमें लेखक के असहयोग आन्दोलन सम्बन्धी संस्मरण हैं।

४१. लोक साहित्य

४३७. ऐस्कीमो लोक-कथाएँ : ले. रामकृष्ण शर्मा, मू. १.२५, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इन कथाओं का अंग्रेजी में प्रकाशन हुआ था, उसी पुस्तक के आधार पर इसका प्रकाशन हुआ है।

४३८. काश्मीर का लोकसाहित्य : ले. मोहन कृष्ण दर, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत में काश्मीरियों की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दशा के साथ-साथ लोक संस्कृति का विवेचन भी है।

४३९. कोरिया की लोककथाएं : ले. शिवशंकरलाल शेखर, मू. १.२५, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

सचित्र लोककथा माला की इस पुस्तक में कोरिया की कथाएँ दी गई हैं।

४२. व्यंग्य

४४०. ढींग ढींग असेम्बली : ले. फिक्र तौंसवी, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में फिक्र तौंसवी के १३ व्यंग्यात्मक निबंध संग्रहीत हैं। विषयानुकूल कार्टून शैली के रेखाचित्र भी दिये गये हैं।

४४१. जो है सो : ले. आत्मानन्द मिश्र, मू. ४.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पुस्तक में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर हास्यात्मक निबन्ध संग्रहीत हैं। कुछ निबन्धों का विषय दर्शन एवं शास्त्रीय है और कुछ निबन्ध संस्मरण शैली पर हैं। पुस्तक की भूमिका आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने लिखी है।

४४२. फक्कड़ की फाइल : ले. अरुण, मू. ६.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत में हास्य-विनोद के कुछ लेख संकलित हैं।

४४३. मिसिर जी : ले. अन्नपूर्णानन्द, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में ७ व्यंग्य-प्रधान निबन्ध संकलित हैं। पुस्तक की भूमिका डा० सम्पूर्णानन्द ने लिखी है। इन निबन्धों का प्रकाशन लेखक के निधन के पश्चात् हुआ है।

४३ विज्ञान

४४४. अर्धचालक और उनके उपयोग : ले. ए. एफ. मोकी, मू. ३.७५, प्र. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'सीन कंडक्टर एंड देयर यूज़' का हिन्दी रूपान्तर है। मूल पुस्तक रूसी भाषा में उपलब्ध है।

४४५. अन्तरिक्ष स्टेशन : ले. डानल्ड काक्स, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में अन्तरिक्ष के बारे में संक्षिप्त रूप से परिचय है। यह 'स्टेशन्स इन स्पेस' (Stations in Space) का हिन्दी रूपान्तर है। इसका रूपान्तर रमेश वर्मा ने किया है।

४४६. आज की वैज्ञानिक महिलाएं : ले. एडना योस्ट, मू. ३.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में संसार की ग्यारह प्रसिद्ध वैज्ञानिक महिलाओं के जीवन और कार्य का परिचय है। अंग्रेजी पुस्तक 'वेमैन आफ मोडर्न साइंस' (Women of Modern Science) का अनुवाद है।

४४७. घड़ी की कहानी : ले. रमेश कुमार महेश्वरी, मू. २.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में घड़ी का आदि-काल से लेकर आज तक का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक सोवियत इन्जिनियर श्री एम. इलिन की पुस्तक 'ह्वाट टाइम इज इट' (What time is it ?) के आधार पर लिखी गई है।

४४८. ट्रांजिस्टर रेडियो : ले. आर. सी. विजय, मू. ७.५०, प्र. देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक १८० चित्रों और पूर्ण गणित भाग के साथ प्रकाशित हुई है। सिटी एण्ड गिल्ड्ज़ की परीक्षा में बैठने वालों की दृष्टि से लिखी गई है।

४४९. धरती के गर्भ में : ले. चिल्ड्रेसन, मू. १.००, प्र. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भूकम्पों के बारे में विविध प्रश्न समझाये गए हैं। घरघराहट क्यों होती है ? धरती के गर्भ में पानी के फव्वारे क्यों छूटते हैं ? इनका रहस्य क्या है ? आदि-आदि का उत्तर दिया गया है।

४५०. नाभिकीय ऊर्जा : ले. चिल्ड्रेसन, मू. १.००, प्र. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

नाभिकीय उर्जा क्या है ? नाभिकीय का महत्व और प्रयोग क्या है ? इन प्रश्नों का पुस्तक में समाधान किया गया है।

४५१. प्रकाश की कहानी : ले. त्रिलोकचन्द्र गोयल, मू. ३.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाश के विषय में विस्तृत एवं सरल ढंग से वर्णन किया गया है।

४५२. बाल जीवनी माला : आर्किमीडिज : मू. १.५०, प्र. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में आर्किमीडिज की जीवनी, उसके वैज्ञानिक अनुसन्धानों और उसके अगाध ज्ञान को कथा रूप में समझाया गया है।

४५३. बिजली की कहानी : ले. अरनोल मैंन्डलेवम, मू. २.००, प्र. राजपाल एंड संज, दिल्ली।

पुस्तक 'दी स्टोरी आफ पावर' (The Story of Power) का हिन्दी रूपान्तर है।

४५४. भारतीय तेल की कहानी : ले. गोविन्द चातक, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

यह पुस्तक किशोरों के लिए है जिसमें भारतीय तेल के जन्म से लेकर उसके विकास की कहानी दी गई है।

४५५. भारत ज्ञानकोष : मूल्य २.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक पाकेट बुक में इंडियन ईयर बुक 'Indian Year Book' है जिसमें सन् १९६३ के बारे में भारत की संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

४५६. विज्ञान जगत : अनु० देवेन्द्रकुमार, मू० १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली।

पुस्तक में विज्ञान के आविष्कारों की जानकारी दी गई है। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत है।

४५७. समीकरण सिद्धान्त : ले. श्री राम सिन्हा, मू. ५.३५, प्र. शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय में बी. ए० पाठ्यक्रम के लिए गणित की पुस्तक है।

४५८. समस्थानिकों के संसार में : ले. बी० मजन्तसेफ, मू. २.९०, प्र. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'इन दी वर्ल्ड इस ओटोप्स' का हिन्दी रूपान्तर है, पुस्तक मूलतः रूसी भाषा में है जिसके अंग्रेजी अनुवाद से हिन्दी रूपान्तर किया गया है।

४५९. सर्वांगि ट्रांजिस्टर रेडियो : ले. आर० सी० विजय, मू. ७.५०, प्र. देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली।

इस पुस्तक में ट्रांजिस्टरों के सिद्धांत, ट्रांजिस्टर रेडियो में होने वाली खराबी तथा उसमें होने वाले आवश्यक यन्त्रों के उपयोग पर चर्चा की गई है ।

४६०. शुद्ध घन ज्यामिति प्रवेशिका : ले. गणेश सखाराम महाजनी, मू. ४.१५, प्र. हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक 'एन इन्ट्रोडक्शन टू प्योर सोशल ज्योमैट्री' का हिन्दी रूपान्तर है ।

४६१. अजगर : ले. रामेश वेदी, मू. १.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।

इस पुस्तक में सर्प, उनकी जातियों और अजगर सर्प के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है ।

४६२. अनमोल मोती : ले. मानस हंस, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में महान विचारकों, विद्वानों एवं लेखकों के विचारों का संकलन है जिनसे जीवन में समय-समय पर प्रेरणा मिलती है ।

४६३. अपनी उन्नति आप कीजिए : ले. स्वेट मार्डेन, मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

पुस्तक में बताया गया है कि जीवन संघर्ष में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम निराशा और आत्महीनता की भावनाओं से बचें और अपने शरीर और मन को लक्ष्य सिद्धि के लिए सक्रिय बनाएं ।

४६४. कार्यालय कार्य-विधि : ले. रामचन्द्रसिंह सागर, मू. ६.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में दफ्तरों के प्रारम्भिक आलेखन से लेकर उन्नत आलेखन तक के सूक्ष्म पहलू पर प्रकाश डाला गया है ।

४४. विभिन्न

४६५. जापान की शासन व्यवस्था : ले. डा. उदयनारायण शुक्ल, मू. ४.५०, प्र. किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद ।

इस पुस्तक में जापान देश का संविधान, मन्त्रि-परिषद, वहां के भृत्य वर्ग तथा राजनैतिक दलों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी दी गई है ।

४६६. जीवन और व्यवहार : ले. स्वेट मार्डेन, मू. २.५०, प्र. सहगल एण्ड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जीवनोपयोगी तत्वों को सुलझाया है । विश्व का प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफल क्यों है ? इसका कारण है, 'जीना भी एक कला है' । इस सिद्धान्त को ही इस पुस्तक में समझाया गया है ।

४६७. नई जिन्दगी : ले. श्री रामनाथ 'सुमन', मू. १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

पुस्तक में मनुष्य को नया उत्साह, नई उमंग और नई प्रेरणा देकर जिन्दगी में नई आस्था और नया संकल्प उपजाने वाली बातों का वर्णन किया गया है ।

४६८. नवग्रह और भाग्य : ले. शिवमूर्ति शिव, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

प्रस्तुत पुस्तक में नौ ग्रह तथा ज्योतिष विज्ञान की चर्चा की गई है ।

४६९. पंजाब परिचय : ले. श्रीनाथ शाह, मू. २.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि पंचांग को किस प्रकार देखा या जाना जाय ।

४७०. भगोड़े युद्ध बन्दियों की सच्ची कहानियां : वर्दाचारी पंडित, मू. ३.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ।

इसमें ५ कहानियाँ दी गई हैं । ये पाँचों कहानी विदेशी कथाकारों द्वारा लिखी गई हैं । यह उनका हिन्दी रूपान्तर है ।

४७१. यह सच है : सं. प्रकाश पंडित, मूल्य १.००, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली ।

इस पुस्तक में दुनिया की दिलचस्प, रोमांचकारी घटनाएँ और तथ्य संकलित किए गए हैं ।

४७२. सफलता की राह पर : ले. ज्योति, मूल्य २.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य चरित्र विकास है । लेखक ने जितने भी लेख इसमें संकलित किए हैं उसमें उसका एक ही लक्ष्य रहा है 'आराम हराम' है ।

४५. विश्व-परिचय

४७३. अमरीकी चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास :

"सम्मेलन के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन"

१. आचार्य सायण और माधव	मूल्य	६.००
२. तुलसी दर्शन	,,	५.००
३. गोरखबानी	,,	६.००
४. हिन्दी काव्य में प्रकृतिचित्रण	,,	१०.००
५. शिशुपालवध महाकाव्य	,,	८.००
६. राजनीति के सिद्धान्त	,,	८.००
७. आयुर्वेद का इतिहास	,,	३.५०
८. ज्योति विहग	,,	५.००
९. क्रान्तिकारी तुलसी	मूल्य	१०.००
१०. शंकराचार्य का आचारदर्शन	,,	५.००
११. वायु महापुराण	,,	१२.००
१२. मत्स्य पुराण	,,	२०.००
१३. महावंश	,,	५.००
१४. पुराणों में गंगा	,,	३.५०
१५. तपोभूमि	,,	१०.००
१६. आदर्श नगर व्यवस्था	,,	१०.००

प्रकाशक :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

बिहार, मध्यप्रदेश, पंजाब राज्य-सरकारों के शिक्षा विभाग तथा दिल्ली शिक्षा-निदेशालय द्वारा स्वीकृत

ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा विषयक डाइजेस्ट

किशोर भारती

जिसके हर अंक में

अनुभवी और विशेषज्ञ प्राध्यापकों एवं शिक्षाविदों से खास तौर पर लिखाये गये ऐसे लेख रहते हैं जो सेकेण्डरी और हायर सेकेण्डरी के छात्रों के लिए वरदान सिद्ध होते हैं।

जिसके बारे में

हिन्दी ब्लिट्ज ने लिखा है......

......हर अंक में वैज्ञानिक आधार पर लिखे गये ऐसे लेख रहते हैं जो किशोरों को कोई न कोई नयी बात बताते हैं, नया ज्ञान और नयी शिक्षा देते हैं और तारीफ यह कि ऐसी सरल-सुबोध और मनोरंजक शैली में लिखे गये हैं कि मन कहीं ऊबने नहीं पाता। 'किशोर भारती' बातों-बातों में ही अंग्रेजी, हिन्दी और कुछ हद तक बँगला भी शुद्ध बोलने और लिखने का पाठ तो पढ़ा ही देती है, साथ ही और भी बहुत-सी उपयोगी बातों की जानकारी करा देती है...

विशेष जानकारी के लिए लिखें

व्यवस्थापक

किशोर भारती

भारतीभवन, गोविन्द मित्रा रोड, पटना-४

ले. जेम्स टामस फ्लेक्स्नर, मू. २.५०, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में इक्यावन प्रतिनिधि चित्रकारों के विशेष सन्दर्भ में अमरीकी चित्रकला का इतिहास प्रस्तुत है। पुस्तक 'पाकेट हिस्ट्री आफ अमेरिकन पेंटिंग' Pocket History of American Painting का हिन्दी रूपान्तर है जिसका अनुवाद रमेश वर्मा ने किया है।

४७४. **अमेरिकी सभ्यता** : ले. मैक्स लर्नर, मू. १०.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में समकालीन अमेरिकी सभ्यता के नमूने और अन्तरिक्ष अर्थ को हृदयंगम करने और इसका आज की दुनिया से सम्बन्ध वर्णित है। पुस्तक America as a Civilization का हिन्दी रूपांतर है। जिसका रूपांतर श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह ने किया है।

४७५. **संयुक्त राज्य परिचय** : ले. कालिदास कपूर, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में श्री कपूर ने संयुक्त राज्य अमेरिका का पूर्ण रूप से परिचय दिया है। इसके साथ ही अमेरिका तथा भारत के सम्बन्धों पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है।

४६. स्वास्थ्य एवं काम-विज्ञान

४७६. **काम-विज्ञान स्त्री-पुरुष यौन-विज्ञान** : मू. १.००, प्र. स्टार पब्लिकेशन्ज, दिल्ली।

इसमें काम का मानव जीवन से सम्बन्ध, यौन-विकार, प्रेम और काम-वासना, गर्भाधान, गर्भ और प्रसव आदि विषयों पर सूक्ष्म रूप से प्रकाश डाला गया है।

४७७. **गृह-विज्ञान, शरीर एवं स्वास्थ्य** : ले. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव, मू. ४.००, प्र. सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में लेखक ने शरीर की बनावट, मुख्य अंग, एवं गतिवाहक, पेशीय पाचन, स्नायु, प्रजनन आदि संस्थानों के विषयों पर प्रकाश डाला है।

४७८. **चालमुंग्रा** : ले. रमेश बेदी, मू. १.७५, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६।

चालमुंग्रा : तुवरक—प्राचीन औषध शास्त्र की एक विख्यात बूटी है, जिसके सेवन से त्वचा के विकारों, विशेष कर कुष्ठ रोग में विशेष लाभ होता है। लेखक ने इसी पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है।

४७९. **पपीता** : ले. रामेश बेदी, मू. १.२५, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

पुस्तक में पपीते के कच्चे और पके फल, दूध, पत्ते आदि का दवाओं में तथा उद्योग-धन्धों में उपयोग करने की जानकारी दी गई है।

४८०. **पहला सुख निरोगी काया** : ले. विष्णु प्रभाकर, मू. ०.५०, प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

इस पुस्तक में बताया गया है कि मनुष्य किस प्रकार स्वस्थ एवं नीरोग रह सकता है।

४८१. **मानवमिति** : ले. रिपुदमन सिंह, मू. ५.००, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को मानव-मिति की मूल प्रविधियों से परिचित कराना है। पुस्तक के प्राक्कथन लेखक डा. दिलीपकुमार सेन हैं।

४८२. **व्यायाम करो, स्वस्थ रहो** : ले. राधाकृष्ण नेवटिया, मू. १.५०, प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्वास्थ्य और दीर्घ-जीवन के लिए व्यायाम के महत्व और विधि को सरल भाषा में दिया है।

४८३. **स्वयं डाक्टर बनें** : ले. डा. केवल धीर, मू. १.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय पद्धति से चिकित्सा के लिए कुछ योग दिये हैं। लेखक का कहना है कि इनके द्वारा कम कीमत पर अच्छी चिकित्सा हो सकती है और रोग से छुटकारा मिल सकता है।

४८४. **हमारा आहार** : ले. विक्रम, मू. ३.७५, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में पौष्टिक आहार, आहार के शक्तिदायक तत्व, रक्षक व सहायक तत्व, एवं खाद्य पदार्थों का सूक्ष्म वर्णन किया गया है।

४७. समाज-शास्त्र

४८५. **अपराध, अपराधी और अभियुक्त** : ले. परिपूर्णानन्द वर्मा, मू. ७.५०, प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में अपराध, अपराधी और अभियुक्त

आदि संज्ञाओं को सुलझाया गया है। पुस्तक में नवीनतम ग्रंथों और आंकड़ों का समावेश है।

४८६. **कालटी** : ले. श्रीपाद जोशी, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने आदि गुरु शंकराचार्य की जन्मभूमि कालटी का परिचय दिया है।

४८७. **ग्राम स्वयंसेवक दल** : ले. मनमोहन मदारिया, मू. २.००, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में ग्रामीण जगत के उत्थान के लिए बहुत सी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है और बताया गया है कि ग्रामसेवक को किन-किन बाधाओं का सामना करना पड़ता है और उनका हल क्या है।

४८८. **गांव की सेहत और सफाई** : ले. इन्द्रसेन वर्मा, मू. १.००, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

पुस्तक में गांव की सफाई एवं लोगों के स्वास्थ्य के विषय में उपाय बताए गए हैं। समाज शिक्षा माला की यह पुस्तक ग्रामीण समाज एवं नवसाक्षरों के लिए लिखी गई है।

४८९. **गांव की ओर सहकारिता का नया कदम** : ले. प्रेमचन्द सक्सेना, मू. १.२५., प्र. सरस्वती प्रकाशन-मन्दिर, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ग्राम्य जीवन में सहकारिता लाने के लिए अपने ढंग से प्रकाश डाला है।

४९०. **पंचायत और किसान** : ले. शिवमूर्ति सिंह 'वत्स', मू. १.२५, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तिका उत्तर प्रदेशीय पंचायतराज ऐक्ट १९४७ की सहायता से तैयार की गई है। पंचायत सम्बन्धी बातों की जानकारी दी गई है।

४९१. **भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार** : ले. हरि-कृष्ण, मू. १०.००, प्र. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सहयोग से हुआ है। पुस्तक में हिन्दू एवं मुसल-मानों में विवाह संस्कार प्रणाली, उत्तराधिकार कानून इत्यादि विषयों पर चर्चा की गई है।

४९२. **भारतीय सामाजिक संस्थाएं** : ले. रविन्द्रनाथ मुकर्जी, मू. १२.००, प्र. सरस्वती सदन, मसूरी।

इस पुस्तक में भारतीय विश्वविद्यालयों में निर्धारित समाज शास्त्र के पाठ्यक्रम को हिन्दी भाषा में विस्तार के साथ दिया गया है।

४९३. **भारतीय परम्परा** : ले. हुमायून कबीर, प्र. केन्द्रीय निदेशालय, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'Indian Heritage' का हिन्दी रूपान्तर है। पुस्तक में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीयता पर प्रकाश डाला गया है।

४९४. **मानस का सामाजिक दर्शन** : ले. बैजनाथ सिंह, मू. ३.००, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने 'रामचरित मानस' में व्यवहार के लिए जो आदर्श अपनाए हैं, उनका चित्रण किया है।

४९५. **समाज मनोविज्ञान** : ले. एस. एस. शर्मा, मू. ७.५०, प्र. रस्तौगी एण्ड कम्पनी, मेरठ।

यह पुस्तक बी. ए. तथा एम. ए. के समाज मनो-विज्ञान वाले विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। इसमें परिभाषा एवं समूह दो खण्डों के अन्तर्गत विषय का विवेचन है।

४९६. **समाजशास्त्र के मूल तत्व** : ले एस. सी. सक्सेना, मू. ६.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक समाजशास्त्र के बी. ए. पाठ्यक्रम को आधार मानकर लिखी गई है। लेखक ने आगरा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को आधार माना है।

४९७. **सच्ची दौलत** : ले. यशपाल जैन, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने और समाज के सुख के लिए कुछ आवश्यक नियम समझाए हैं।

४९८. **सामाजिक एकता** : ले. अ. अ. अनन्त, मू. २.५०, प्र. आर्य बुक डिपो, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एकता के समान ही सामाजिक एकता पर प्रकाश डाला गया है, जिसके लिए सामाजिक एकता का स्वरूप, सामा-जिक संगठन, व्यक्ति और समाज, परिवार आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

४९९. **सामाजिक पुनर्निर्माण के सिद्धान्त** : ले. बर्ट्रेन्ड रसेल, मू. ६.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में मानव की रचनात्मक मूल-प्रवृत्ति और अन्तः प्रेरणा पर आधारित राजनीतिक दर्शन का प्रतिपादन किया गया है। इसके अनुवादक मुनीश सक्सेना हैं।

५००. **सामुदायिक विकास से नये प्रयोग** : ले. आनंद शंकर शर्मा, मू. ५.००, प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में ग्रामीण समुदाय, पंचायत, सहकारी समाज, कृषि विकास, ग्रामोद्योग, जनसम्पर्क आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

५०१. **सामाजिक सुरक्षा और श्रम कल्याण** : ले. रविन्द्रनाथ मुकर्जी, मू. १०.००, प्र. सरस्वती सदन, मसूरी।

प्रस्तुत पुस्तक में देश की मौलिक प्रगति और जीवन स्तर को उन्नत करने के लिए श्रमिकों का महत्व आवश्यक है, इस पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए है।

५०२. **हरे भरे खेतों की धरती** : ले. बद्रीनाथ, मू. १.००, प्र. प्रवाल प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में लेखक ने कथा के माध्यम से पंचायत पद्धति एवं सहकारिता विषय पर प्रकाश डाला है। 'हरे भरे खेतों की धरती' की सृष्टि में पारस्परिक सहयोग, सहकार, और सुमति के साथ जुट जाए यही इस कथा का मूल सन्देश है।

५०३. **हम और हमारा समाज** : ले. आशारानी व्होरा, मू. १.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

इस पुस्तक में मनुष्य के जन्म, उसके विकास तथा उसके समाज के विकास पर चर्चा की गई है। पुस्तक किशोरों के लिए लिखी गई है।

५०४. **हमारे नए तीर्थ** : ले. सूर्य कुमार जोशी, मू. ०.४०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तिका में लेखक ने पंचवर्षीय योजना की बड़ी-बड़ी नदी घाटी योजनाओं का परिचय दिया है।

५०५. **अन्तर्राष्ट्रीय एकता** : ले. अ० अ० अनन्त, मू. २.५०, प्र. आर्य बुकडिपो, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में अन्तर्राष्ट्रीय एकता के कुछ मूलभूत सिद्धांतों की ओर संकेत किया गया है जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय एकता में वृद्धि हो सकती है। सैनिक संधियों से एकता के मार्ग में बाधा होती है, इस तथ्य पर लेखक ने प्रकाश डाला है।

५०६. **दुनिया सैकड़ों वर्ष पहले** : ले. भास्करानन्द लोहनी, म. २.५०, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

इस पुस्तक में लेखक ने विद्वानों के पौराणिक तथ्यों को अमान्य करके ज्योतिषविज्ञान के आधार पर अपनी दृष्टि से सही तथ्यों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है।

५०७. **नीलोखेड़ी** : ले. एस. के. दे., मू. ५.००, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में पंजाब राज्य के प्रमुख व्यावसायिक प्रशिक्षण नगर नीलोखेड़ी के बिषय में जानकारी दी गई है।

५०८. **भारत के त्यौहार** : ले. सुरेशचन्द्र शर्मा, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत के सौ से अधिक त्यौहारों, पर्वों, राष्ट्रीय उत्सवों का विवरण है।

५०९. **मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास** : ले. माइखेल नैस्तुर्ख, मू. १५.००, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक जीवशास्त्र पर ऐसे तथ्य पाठकों के सामने रखे गये हैं जिनसे मानव-उत्पत्ति-शास्त्र का भौतिकवादी सिद्धांत प्रमाणित होता है। पुस्तक 'The Origin of Man' का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अनुवाद रमेश सिन्हा ने किया है।

४८. संस्कृति

५१०. **गांधी विचाररत्न** : सं. माईदयाल जैन, मू. ३.००, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने गांधीजी के विविध विषयों पर कहे हुए विचारों का संग्रह किया है।

५११. **पौराणिक साहित्य और संस्कृति** : ले. भास्करानन्द लोहनी, मू. ३.००, प्र. रामा प्रकाशन, लखनऊ।

प्रस्तुत पुस्तक में पुराणों के अतिरंजित और रहस्यमय वर्णनों का तर्कसम्मत समाधान किया गया है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक भारतीय संस्कृति और पुराणों के ज्ञानार्जन हेतु विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को देखकर प्रकाशित की गई है।

५१२. भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व : ले. पाण्डेय और जोशी, मू. ३.५०, प्र. साहित्य निकेतन, कानपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय संस्कृति का महत्त्व और उसके अध्ययन की आवश्यकता को प्रस्तुत किया गया है।

५१३. राष्ट्रीय एकता : ले. अ. अ. अनन्त, मू. २.५०, प्र. आर्य बुक डिपो, दिल्ली-५।

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीयता के प्रसंग में विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। राष्ट्रीय एकता के बहुत से कारक संक्षिप्त रूप से वर्णित हैं। धर्म, राष्ट्र और शिक्षा, राष्ट्रीय एकता की प्रतीक लिपि और भाषा दोनों को पुस्तक में दिया गया है।

५१४. विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ : ले. रामगोपाल, मू. २०.००, प्र. विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर।

प्रस्तुत पुस्तक में विश्व की प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन किया गया है जिससे भारतीय संस्कृति और इतिहास का महत्त्व प्रकट होता है। पुस्तक में पश्चिमी एशिया, मिस्र, यूनान, रोम, ईरान, चीन तथा भारत की पुरानी सभ्यताओं पर प्रकाश डाला गया है।

४९. शिक्षा

५१५. इंगलेंड की शिक्षा प्रणाली : ले. एच. एन. सिंह, मू. ४.५०, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इस पुस्तक में इंगलैंड की शिक्षण प्रणाली का परिचय, विवेचन दिया गया है तथा उसके साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली की तुलना की गई है।

५१६. उपनिषदों की शिक्षा प्रणाली : ले. विद्यासागर प्रसाद, मू. ३.००, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पुस्तक में उपनिषदों की शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक प्रकटीकरण है। पुस्तक दो भागों में विभाजित है। पूर्वार्द्ध में शिक्षण सिद्धांतों की चर्चा की गई है और दूसरे अध्याय में उपनिषद शिक्षा परिपाटी तथा आधुनिक शिक्षा परिपाटी की तुलना है।

५१७. बुनियादी शिक्षण सिद्धांत : ले अ. अ. अनन्त एवं बालकृष्ण, मू. ३.००, प्र. आल इंडिया बुक हाउस, दिल्ली।

पुस्तक बी. टी., बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है।

५१८. भारतीय शिक्षा का इतिहास : ले. बी. आर. गुणा, मू. ७.५०, प्र. रस्तौगी एण्ड कम्पनी, मेरठ।

यह पुस्तक बी. टी., बी. एड तथा एम. एड. के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है जिसमें वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा के इतिहास की चर्चा है।

५१९. विश्व के महान शिक्षाशास्त्री : ले. जयजयराम व्यथित, मू. ३.५०, प्र. राजपाल एंड संज़, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में महान शिक्षाशास्त्रियों के विचारों और शिक्षा जगत् को उनकी देन का विस्तृत विवरण एवं तुलनात्मक अध्ययन दिया गया है।

५२०. विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा : ले. डा. माथुर, मू. ६.२५, प्र. रस्तौगी एंड कम्पनी, मेरठ।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना बी. टी., बी. एड. तथा एम. एड. के पाठ्यक्रम के आधार पर की गई है।

५२१. शिक्षात्मक अनुसंधान की प्रस्तावना : ले. श्यामाचरण, मू० १२.००, प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक 'An Introduction to Educational Research' का हिन्दी रूपान्तर है। अनुवाद श्री श्यामाचरण एम० ए० ने किया है।

५२२. शिक्षण कला : ल. दिनेश चन्द्र भारद्वाज, मू. ५.००, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक बी० टी० के विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है। जिसमें परीक्षा के महत्व को सम्मुख रख कर चर्चा की गई है।

५२३. शिक्षा मनोविज्ञान : पाठशाला प्रबन्ध : ले. बालकृष्ण तथा अ० अ० अनन्त, मू. ३.००, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

दोनों पुस्तकें ट्रेनिंग विद्यालय के छात्रों के लिए लिखी गई हैं।

५२४. शिक्षा की रूपरेखा : ले. बर्ट्रेन्ड रसेल, मू. ६.२५, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'On Education' का हिन्दी रूपान्तर है जिसमें प्रारम्भ की शिक्षा समस्याओं पर चर्चा है।

५२५. सफल शिक्षण कला : ले. एल० मुकर्जी, मू. ४.००. प्र. किताब महल, इलाहाबाद।

शिक्षाशास्त्र की इस पुस्तक को लेखक ने शिक्षण विधि एवं विद्यालय संगठन, दो भागों में विभाजित किया है।

हमारे १९६२ व '६३ के प्रमुख नवीन प्रकाशन

१९६२

पुस्तक	लेखक	मूल्य
मालवीयजी के लेख	सं० पद्मकान्त मालवीय	८.००
मालवीयजी : जीवन झलकियाँ	,,	८.००
डा. राधाकृष्णन्	रमेशनारायण तिवारी	१.७५
पुराण कथा-कौमुदी	पं० रघुनाथदत्त बन्धु	१०.००
कामायनी के अध्ययन की समस्याएं	डा० नगेन्द्र	३.००
पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास	चन्द्रकांत बाली	१५.००
उपमा कालिदासस्य	डा. शशिभूषण दासगुप्त	३.००
हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण	महेन्द्र चतुर्वेदी	६.५०
न मीत न मंजिल (उप.)	रेवती सरन शर्मा	५.००
हृदय का काँटा (,,)	तेजरानी पाठक	३.००
चिराग की लौ (नाटक)	रेवती सरन शर्मा	२.५०
दुनिया की दुनिया	मनमोहन मदारिया	२.००
आविष्कार और अन्वेषण	विराज	२.५०
घर की बात (नाटक)	प्रेमनाथ दर	१.५०
डा० नगेन्द्र के आलोचना-सिद्धान्त	नारायण प्रसाद चौबे	७.००
एक वासन्ती रात	मनमोहन मदारिया	३.००
हमारा शरीर	सन्तराम वत्स्य	१.२५
हमारा स्वास्थ्य	,,	१.२५
प्रेमचन्द्र के नारी-पात्र	ओम अवस्थी	५.००
मुन्ने की परेशानी	शशिप्रभा गुप्ता	१.५०
लिच्छवियों के अंचल में	डा० जगदीशचन्द्र जैन	३.५०
ताजमहल पे कौवा बोला	सूर्यकुमार जोशी	२.५०
एक गोली दो शिकार	रमेशनारायण तिवारी	१.२५
बबला	हरिकृष्णदास गुप्त 'हरि'	०.८०
आल्हा (उपन्यास)	नर्मदा प्रसाद गुप्त	५.००

१९६३

पुस्तक	लेखक	मूल्य
कूटकाव्य : एक अध्ययन	डा. रामधन शर्मा	१२.५०
युगचारण दिनकर	डा. सावित्री सिन्हा	१०.००
सौन्दर्य-तत्त्व और काव्य-सिद्धान्त	डा. सुरेन्द्र वारलिंगे	६.५०
आधुनिक हिन्दी-काव्य में रूप-विधाएँ	डा. निर्मला जैन	२५.००
आंध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास	डा. चन्द्रभान पाण्डे	१०.००
धूमकेतु (उपन्यास)	नरेश मेहता	८.००
मेरा समर्पित एकान्त (कविता)	नरेश मेहता	३.००
प्रकृति और काव्य (संस्कृत साहित्य)	डा. रघुवंश	१३.००
साहित्य-समीक्षा	मुद्राराक्षस	६.००
समर्थ जीवन-दर्शन	म० तु० कुलकर्णी	४.००
सम्मोहिता (उपन्यास)	उषादेवी मित्रा	५.००
कारावास (,,)	दोस्तोव्स्की	७.५०
भारत का सीमान्त	डा. जगदीशचन्द्र जैन	४.००
अमिट रेखाएँ	अक्षयकुमार जैन	३.५०
गोरी (उपन्यास)	मेजर गोवर्धन सिंह	३.००
अपनी धरती (नाटक)	रेवती सरन शर्मा	२.५०
अजन्ता की बोलती तस्वीरें	विमला दत्ता	२.५०
श्री हित चौरासी	ललिताचरण गोस्वामी	३.५०
संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ	जनार्दन भट्ट	४.००
खरगोश गुसाईं	वीणा दर	३.००
आर्ट की कहानी	रामनाथ पसरीचा	२.००
सूरज चाँद सितारे	सन्तराम वत्स्य	१.२५

• पाँच रुपये अथवा इससे अधिक मूल्य के आर्डर पर डाक-व्यय फ्री। पुस्तक विक्रेताओं एवं पुस्तकालयों को विशेष सुविधा।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-६

फोन : २२५७४२
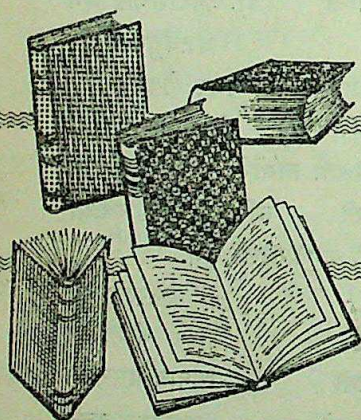
पुस्तक की रचना पाठ्यक्रम के आधार पर की गई है।

५२६. सरल शिक्षा सिद्धान्त शिक्षण कला : ले. भारद्वाज, मू. ४.००, प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षण-सिद्धान्त, शिक्षण-प्रणाली, तथा शिक्षा के विभिन्न अंगों पर विवेचना की गई है।

५०. पाठ्य-पुस्तकें

५२७. अशोक निबन्ध-माला : शिवप्रसाद, मू. ३.००, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह में १०८ विभिन्न विषयों पर विवरणात्मक, भावात्मक, साहित्यिक और विवेचनात्मक निबन्धों का संकलन किया गया है। पुस्तक उच्चमाध्यमिक कक्षाओं के लिए है।

५२८. आचार्य शुक्ल : ले. लक्ष्मणदत्त गौतम, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रश्नोत्तर के रूप में है। पुस्तक की रचना परीक्षा-स्तर की पृष्ठभूमि पर की गई है।

५२९. अच्छी हिन्दी कैसे लिखें : ले. डा. भगीरथ मिश्र तथा शुभकार कपूर, मूल्य ४.००, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में निवन्धों, हिन्दी के कवियों एवं लेखकों तथा हिन्दी साहित्य का इतिहास, रस, अलंकार, पत्र लेखन तथा काव्य आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

५३०. आइयें संयुक्ताक्षर सीखें : ले. सोमदत्त मालवीय, मू. ३.५०, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।

इसमें संयुक्त अक्षर सीखने की प्रणाली बताई गई है। पुस्तक में २७५ शब्दों के प्रयोग से १७५ संयुक्त अक्षर सिखाने का प्रयास किया गया है। विषय सामग्री के साथ रेखाचित्र भी दिए गये हैं।

५३१. आदर्श मुहावरे लोकोक्तियाँ : सुरेशचन्द्र गुप्त, मू. १.५०, प्र. यंग मैन एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक की रचना छात्रवर्ग के पथ निर्देश के लिए की गई है। इसमें मुहावरे और लोकोक्तियों का चयन किया गया है।

५३२. कबीर : ले. प्रो. कृष्णदेव शर्मा, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

इसमें कबीर के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं दार्शनिक विचारों का प्रश्नोत्तर रूप में आलोचनात्मक अध्ययन है।

५३३. किरणमाला, कक्षा ३,४,५ : ले. जयप्रकाश, मू. २.००, २.५०, २.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

हिन्दी की ये पुस्तकें आदर्श हिन्दी रीडर के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। भारतीय एकता, राष्ट्रीय विचारधारा एवं नवीन शिक्षण सिद्धांतों के आधार पर इनकी रचना की गई है।

५३४. गद्य-लतिका : ले. डा. कैलाश प्रकाश, मू. १.७५, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक मगध विश्वविद्यालय के प्रैपैट्री की पाठ्य पुस्तक है जिसमें ९ निबंध संग्रहीत हैं।

५३५. चन्द्रगुप्त समीक्षा : ले. प्रो. कृष्णदेव, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित चन्द्रगुप्त ऐतिहासिक नाटक का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

५३६. चिन्तामणि : ले. प्रो. कृष्णलाल, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'चिन्तामणि' पुस्तक के निबन्धों पर आलोचनात्मक रूप में प्रकाश डाला गया है।

५३७. नवीन निबंध रचना : ले. ओमप्रकाश सिहल, मू. ३.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६।

हायर सेकेण्डरी के लिए लिखी गई इस पुस्तक में विभिन्न विषयों पर ५२ निबंध दिये गये हैं और पत्रलेखन, कहानी लेखन, सार लेखन तथा भाव लेखन की उदाहरण सहित प्रणालियाँ बताई गई हैं।

५३८. नीति-शतकम् : ले. कृष्णकुमार धवन, मू. २.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, अम्बाला छावनी।

प्रस्तुत पुस्तक में महाकवि भर्तृहरि द्वारा रचित नीति शतकम् के पूर्वार्द्ध भाग से प्रमुख पदों को लिया गया है।

५३९. निराला और उनकी अपरा : ले. देशराज भाटी, मू. ४.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में निरालाजी की अपरा नामक कृति का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

५४०. निबन्ध मानस : ले. नलिन विलोचन शर्मा, म. २.००, प्र. विहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह पाठ्य पुस्तक के लिए तैयार किया गया है।

५४१. निबन्ध प्रभाकर : भोलानाथ तिवारी, मू. ६.००, प्र. सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह में ७८ निबन्ध संकलित हैं। अधिकांश निबन्ध हिन्दी की उच्चतम परीक्षाओं बी. ए., एम. ए. के स्तर के हैं।

५४२. पृथ्वीराज रासो के तीन ग्रध्याय : ले. देशराज सिंह भाटी, मू. ३.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में महाकवि चन्दबरदाई कृत रासो की समीक्षा एवं आदि पर्व, पद्मावती समय तथा रेवातट की मूल सहित व्याख्या है।

५४३. प्रमुख कवियों की काव्य साधना : ले. देशराज सिंह भाटी, मू. ३.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं का आलोचनात्मक विवेचन है।

५४४. प्रबंध पराग : ले. तनसुखराम गुप्त, मू. १.२६, प्र. सूर्य-प्रकाशन, दिल्ली-६।

प्रबन्ध की यह पुस्तक विशेषकर मिडिल श्रेणियों के लिए लिखी गई है। इसमें अधिकांश वही प्रबन्ध दिए हैं जिनका परीक्षाओं में प्रचलन है।

५४५. विद्यापति पदावली : ले. रामचन्द्र श्रीवास्तव, मू. ५.५०, प्र. रामप्रसाद एंड संस, अस्पताल रोड, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने विद्यापति के पदों की टीका की है।

५४६. बालकों के प्रिय कवि : ले. पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी, मू. १.२५, प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

प्रस्तुत पुस्तक में कुछ कवियों की जीवनी, शैली, कृतित्व और व्यक्तित्व आदि को संकलित किया गया है। जूनियर बेसिक विद्यालयों के अध्यापकों और छात्रों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है।

५४७. भारतीय काव्य समीक्षा : ले. श्रीनिवास शर्मा, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

पुस्तक में भारतीय काव्य-शास्त्र पर अध्ययन प्रस्तुत है जो प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है।

५४८. भाषा-विज्ञान समीक्षा : ले हेमदेव शर्मा, मू. २.५०, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भाषा-विज्ञान विषय की व्याख्या दी गई है।

५४९. रचनात्मक निबन्ध : ले. कुलदीप नारायणसिंह, मू. ४.००, प्र. साहित्य भवन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में विद्यार्थियों के लिए हायर सैकेन्ड्री स्तर के निबन्ध संग्रहीत हैं जिनका प्रचलन परीक्षाओं में होता है।

५५०. सरल निबन्ध : ले. पद्मनाभ, मू. ३.७५, प्र. रामचन्द एंड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक में माध्यमिक हायरसेकेन्ड्री स्तर के निबन्धों का संकलन है।

५५१. साहित्यिक निबन्ध : ले. डा. कृष्णलाल हंस, मू. ५.७५, प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रस्तुत पुस्तक में ३७ निबन्ध दिये गये हैं जिनका अधिकांश परीक्षाओं में उपयोग होता है।

५५२. हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास : ले. शिवराज शर्मा, मू. १.५०, प्र. आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली-५।

प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय है। यह पुस्तक छात्रों के लिए इतिहास का ज्ञान कराने के लिए लिखी गई है।

५५३. हिन्दी गद्यकार : ले. अमरनाथ, मू. ०.७५, प्र. ज्ञानलोक प्रकाशन, लखनऊ।

इस पुस्तक में हिन्दी गद्य के विकास, और उसके विभिन्न रूपों एवं प्रमुख गद्यकारों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

५५४. हिन्दी के कवि : ले. चन्द्रभाल वाजपेयी 'अलिन्द' मू. १.००, प्र. ज्ञानलोक प्रकाशन, लखनऊ।

उच्चतर विद्यालय के स्तर के छात्रों के लिए इस पुस्तक की रचना की गई है।

५५५. हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना : ले. डा. शरण बिहारी गोस्वामी, मू. १.७५, प्र. हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ।

इस पुस्तक में हायर सैकेन्ड्री विद्यालय के स्तर पर व्याकरण एवं निबंध की रचना पर प्रकाश डाला गया है ।

५५६. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास : ले. सरोजिनी शर्मा, मू. १५०, प्र. यंगमैन एण्ड कम्पनी, दिल्ली ।

प्रस्तुत हिन्दी साहित्य के इतिहास में लेखिका ने स्पष्ट रूप से साहित्य के कालों का विभाजन करके समझाया है ।

परिशिष्ट (क)

जो पुस्तकें विलम्ब से आईं अथवा किसी कारण छूट गईं उनका परिचय यहाँ दिया जा रहा है :

आलोचना

५५७. नाटक के तत्व : ले. कमलिनी मेहता, मू. ३.५०, प्र. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

इस पुस्तक में नाटक, कला और काव्य, नाटक की परिभाषा, रूप तथा परिधि, नाटक के उद्देश्य, मौलिक तत्त्व, कहानी, चरित्रचित्रण, गुंफन, रंगमंच, दृश्य विधान एवं निष्कर्ष पर प्रकाश डाला गया है ।

उपन्यास

५५८. असली हीरा नकली हीरा : ले. विमल वेद, मू. ४.००, प्र. भारती साहित्य सदन, नयी दिल्ली ।

इस सामाजिक उपन्यास में मजदूर और मालिक, पिता पुत्री, पति एवं पत्नी के सम्बन्धों पर चर्चा की गई है । समाज का चित्रण नयी मान्यताओं के अनुसार हुआ है ।

५५९. जमाना बदल गया : ले. गुरुदत्त, मू. १०.००, प्र. भारती साहित्य सदन, दिल्ली ।

उपन्यास की कथावस्तु सामाजिक होने के साथ-साथ राजनैतिक भी है । उपन्यास तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ है । स्वाधीनता के पश्चात् भारत की सामाजिक स्थिति का चित्रण लेखक ने उपन्यास के रूप में किया है ।

५६०. दादा : ले. ओंकार शरद, मू. ३.००, प्र. राज रंजना प्रकाशन, इलाहाबाद ।

'दादा' उपन्यास सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं पर आधारित है । उपन्यास के पात्र समाज के जीवित एवं जाने-पहिचाने पात्र दिखाई देते हैं । उपन्यास में आज के मानव का चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

५६१. दो दिल दो आंखें : ले. कृष्ण गोपाल आबिद, मू. २.५०, प्र. एन. डी. सहगल एण्ड संस, दिल्ली ।

लेखक ने एक निरुद्देश्य मनुष्य की आकांक्षाओं की पूरी कहानी उपन्यास रूप में देने का प्रयास किया है ।

५६२. भवजाल : ले. प्रकाश भारती, मू. ५.००, प्र. भारतीय साहित्य सदन, नई दिल्ली ।

मानवीय वृत्ति, गुण एवं स्वभाव को आधार मान कर इस उपन्यास की रचना की गई है । आसुरी तथा दैवी प्रवृत्तियों का संघर्ष चित्रित हुआ है ।

५६३. मैं न मानूं : ले. गुरुदत्त, मू. ३.००, प्र. भारती साहित्य सदन, दिल्ली ।

लेखक ने अपने इस सामाजिक उपन्यास में मानव के अहंकार और मिथ्या दम्भ के कारण मलीन हो जाने वाली बुद्धि का चित्रण किया है ।

५६४. युद्ध और शान्ति : ले. गुरुदत्त, मू. ६.००, प्र. भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ।

गुरुदत्त जी का यह उपन्यास मानव स्वभाव पर आधारित दैवी एवं आसुरी वृत्ति को लेकर लिखा गया है जिसमें वर्तमान समाज की स्थिति का चित्रण है ।

५६५. हृदयनाद : ले. चिदम्बर सुब्रह्मण्यम्, मू. ३.५०, प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली ।

प्रस्तुत पुस्तक में तमिल भाषा के एक मर्मस्पर्शी उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर किया गया है । अनुवादकर्ता श्री रा० विलिनाथन् हैं ।

काव्य संकलन

५६६. उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएं : सं. अर्श मलसियानी, मू. ७.५०, प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

पुस्तक में उर्दू के २६ कवियों की हास्य-व्यंग की कविताओं का संकलन है, परिचय के साथ कवियों के रेखाचित्र भी दिये गए हैं ।

जीवन-चरित

५६७. नारी रत्न : ले. ओंकार शरद्, मू. २.००, प्र. राजरंजना प्रकाशन, इलाहाबाद ।

इस पुस्तक में सीता, शकुन्तला, मीरा, झांसी की रानी, बा, सरोजिनी नायडू, एनीबीसेन्ट और श्रीमती क्यूरी का

जीवनचरित संक्षिप्त रूप में दिया गया है।

५६८. भारत रत्न : ले. ओंकार शरद्, मू. २.५०, प्र. राजरंजना प्रकाशन, इलाहाबाद।

इस पुस्तक में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों, विचारकों, वैज्ञानिकों, शिक्षा शास्त्रियों आदि महापुरुषों के जीवन संकलित किये गए हैं।

युद्ध-साहित्य

५६९. कुरुक्षेत्र हिमालय : क. आनन्द, मू. २.५०, प्र. बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली।

इस पुस्तक में कवि ने भारत-चीन सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि में काव्य की रचना की है। डा. विनयमोहन शर्मा एवं रक्षामन्त्री चव्हाण ने दो शब्द लिखे हैं।

५७०. चीन का विश्वासघात : ले. शम्भुप्रसाद शाह, मू. ०.६०, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने भारत-चीन सीमा-विवाद को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

५७१. नेफा-लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं : ले. वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी, मू. २.५०, प्र. उमेश प्रकाशन, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय वीरों की गाथाओं का वर्णन किया है। जिन्होंने अपनी वीरता एवं साहसिक कार्यों से शत्रु के दांत खट्टे करके भारत का मस्तक विश्व में ऊंचा किया है।

५७२. परीक्षा की घड़ी : ले. शम्भुप्रसाद शाह, मू. १.००, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक भारत-चीन-सीमा-विवाद की पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है। इसमें संकटकालीन स्थिति में भारतवासियों ने जिस त्याग का परिचय दिया है उसका विस्तार है।

५७३. रोली रंगे पत्र : ले. कौशल्या अश्क, मू. २.००, प्र. नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।

भारत-चीन सीमा-विवाद से प्रेरित होकर भारतीय सैनिकों के लिए कुछ पत्र लेखिका ने भेजे थे। कुछ पत्रों का उत्तर भी लेखिका को प्राप्त हुआ था। पुस्तक में पत्र और उत्तर दोनों का संकलन है।

५७४. विजय के स्वर : रामकृष्ण प्रेस, इलाहाबाद-३।

इसमें चीनी आक्रमण की प्रतिक्रिया में राष्ट्रीय आत्म-विश्वास की अभिव्यक्ति कविताओं के रूप में है। पुस्तक के प्रति राष्ट्रकवि गुप्त का संदेश है कि "विजय के स्वर सामयिक हैं। वे सब ओर गूंजें यही हमारी कामना है।"

परिशिष्ट (ख)

परिवर्द्धित संस्करण

इस सूची में उन पुस्तकों का परिचय दिया जा रहा है जिनके परिवर्द्धित संस्करण इस वर्ष प्रकाशित हुए।

५७५. प्रकृति और काव्य : ले. डा. रघुवंश, मू. १३.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक में संस्कृत काव्य में प्रकृति परिकल्पना अध्याय का समावेश किया गया है जिसमें प्रकृति सम्बन्धी भारतीय दृष्टि के साथ यहाँ के काव्य तथा कला के सौंदर्य-बोध विषयक आदर्श का सामंजस्य प्रस्तुत किया गया है।

५७६. बृहद हिन्दी कोष : सम्पा. कालिकाप्रसाद, मू. ३०.००, प्र. ज्ञानमंडल लि. वाराणसी।

इस संस्करण में २००० शब्दों का योग किया गया है जिसमें कुछ तो यथास्थान हैं और कुछ परिशिष्ट रूप में। पिछले संस्करण की त्रुटियों का आनुपूर्वी परिमार्जन किया गया प्रतीत होता है। शब्दों के नये अर्थ बढ़ाए गये हैं।

५७७. हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध : डा. उदयभानु सिंह, मू. १५.००, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इस पुस्तक में सन् १९५९ से १९६२ तक अनुसंधान एवं शोध क्षेत्र में जितनी प्रगति एवं विकास हुआ है उसको बढ़ाया गया है। प्रथम संस्करण से आकार एवं विषय सामग्री की दृष्टि से पुस्तक में काफी वृद्धि है। अनुबन्ध-२ के रूप में स्वीकृत शोध-प्रबन्धों की विषयानुसार वर्गीकृत सूची बढ़ाई गई है।

५७८. हिन्दी साहित्य कोष (भाग १) : सम्पा॰ धीरेन्द्र वर्मा, मू. २५.०० प्र. ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी।

इस कोष में पारिभाषिक शब्दों का अर्थ एवं प्रयोग दिया गया है। इस संस्करण में सिद्धनाथ तथा सन्त परम्परा में प्रयुक्त होने वाली विशिष्ट शब्दावली पर टिप्पणियों का योग किया है। कोष में विद्वानों के सुझावों के आधार पर यथावश्यक संशोधन एवं परिवर्द्धन भी किया गया है।

नए कहानीकार

[एक नई पुस्तक-माला]

सम्पादक : राजेन्द्र यादव

पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में—
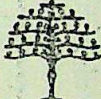
★ पाठकों के लिए जिज्ञासा, समीक्षकों के लिए चिन्तन और लेखकों के लिए प्रयोग का विषय रही है—आज की कहानी।

★ कहानी की इस नई परम्परा को नकारना या नज़र-अन्दाज़ कर सकना अब किसी तरह भी संभव नहीं रह गया है।

★ और इसी लिए हम इस परम्परा के आधार-स्तम्भ कहानीकारों की प्रसिद्ध प्रतिनिधि और सर्वश्रेष्ठ कहानियों के संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहले पांच कहानीकार

१. कमलेश्वर की कहानियाँ और राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित व्यक्ति-चित्र।
२. मन्नू भंडारी " " " " " " " "
३. मोहन राकेश " " कमलेश्वर " " " "
४. फणीश्वर नाथ रेणु " " कमलेश्वर " " " "
५. राजेन्द्र यादव " " मोहन राकेश " " " "

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : २.५० पृष्ठ : १५०

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

Two Important Announcements

A BOOK SHOP

Dealing in :

Out of Print and Rare Books,

New Books and Stationery

All publishers and others are requested to send their Catalogues together with their terms at the following.

हिन्दी प्रकाशनों की समस्त जानकारी के लिए हमें लिखें। हम आपकी प्रत्येक सम्भव सहायता करेंगे।

हिन्दी पुस्तकों की विषयवार सूची के लिए हमें लिखें, हम जिस विषय की सूची आप चाहेंगे बनाकर भेजेंगे।

हमारे यहाँ हिन्दी की समस्त उपलब्ध पुस्तकों की सप्लाई की व्यवस्था है।

KURUKSHETRA UNIVERSITY BOOKS-&-STATIONERY SHOP

UNIVERSITY CAMPUS — KURUKSHETRA

परिशिष्ट (ग)

इस परिशिष्ट में उन पुस्तकों की सूची दी जा रही है जिनकी हिन्दी प्रकाशक, प्रकाशन समाचार तथा हिन्दी प्रचारक में नये प्रकाशन के अन्तर्गत सूचना तो प्रकाशित हुई किन्तु पुस्तकें हमें प्राप्त नहीं हुईं।

१. अर्थी की बरात : ले. श्यामलाल मधुप, मू. ६.०० ।

२. अर्थशास्त्र प्रवेशिका भाग १-२ : ले. सत्यदेव देराश्री, मू. २.७५ ।

३. अधिकार : ले. दत्त भारती, मू. १.०० ।

४. अधखिली कली : ले. श्रीमती स्वर्णमयी देवी, मू. ३.५० ।

५. अन्तराल : ले. डा. महेन्द्र भटनागर, मू. २.०० ।

६. अनुसन्धान का विवेचन : ले. डा. उदयभानुसिंह, मू. ६.०० ।

७. अपना देश अपने दुश्मन : ले. ओमी लाल इलाहाबादी, मू. १.२५ ।

८. अपना भारत : ले. श्रीमती जे. भारतदास, मू. ०.७५ ।

९. अभिनव एकांकी : ले. डा. महेन्द्र भटनागर, मू. २.५० ।

१०. अमृत और विष : ले. दत्त भारती, मू. १.०० ।

११. अलंकार परिचय : ले. नरोत्तम स्वामी, मू. १.०० ।

१२. आकाश खाली है : ले. दत्त भारती, मू. ४.६० ।

१३. आकाश में देखें : ले. श्रीमती जे. भारतदास, मू. ०.७५ ।

१४. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : ले. तिलक शर्मा शास्त्री, मू. २.५० ।

१५. आ. रामचन्द्र शुक्ल : सिद्धान्त और समीक्षा : ले. डा. जयचन्द्र राय, मू. ११.५० ।

१६. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं साहित्य : सम्पा. डा. गणपतिचन्द्र गुप्त, मू. ६.५० ।

१७. आदि पुराण : ले. आचार्य जिन सैन, मू. १०.०० ।

१८. आदर्श पाठ टीकाएँ : मू. २.५० ।

१९. आधुनिक कवि : ले. विश्वम्भर मानव, मू. ४.०० ।

२०. आधुनिक शिक्षा का स्वरूप : ले. उषा वर्मा, मू. ५.०० ।

२१. आलोचना एक परिचय : ले. श्रीनिवास शर्मा, मू. २.५० ।

२२. आवाजों के घेरे : ले. दुष्यन्त कुमार, मू. ४.०० ।

२३. आँसू की मशीन : ले. केशवचन्द्र वर्मा, मू. ३.०० ।

२४. आस्था और सौन्दर्य : ले. रामविलास शर्मा, मू. ५.०० ।

२५. उत्तर रामचरित : ले. आनन्द स्वरूप, मू. ६.०० ।

२६. एक कंठ विषपायी : ले. दुष्यन्त कुमार, मू. ५.०० ।

२७. एक धरोहर : ले. करुणाशंकर पंड्या, मू. १.७५ ।

२८. कबीर : ले. पुष्पाकुमारी शर्मा, बी. डी. भल्ला, मू. ३.२५ ।

२९. कला और कलाकार : ले. मामा वरेरकर, मू. ३.२५ ।

३०. कला, साहित्य और समीक्षा : ले. डा. भगीरथ मिश्र, मू. १०.०० ।

३१. कवि पन्त और उनकी ग्रन्थि : ले. प्रो. नागेश्वर लाल, १.५० ।

३२. कहानी विविधा : ले. डा. देवीशंकर अवस्थी, मू. ३.०० ।

३३. का : ले. कान्हूचरण महान्ति, मू. ४.०० ।

३४. काफी हाउस वाली लड़की : ले. सत्यप्रकाश संगर, मू. ३.०० ।

३५. कामायनी की टीका : ले. विश्वम्भर मानव, मू. ६.५० ।

३६. काव्य का देवता : ले. विश्वम्भर मानव, मू. ४.५० ।

३७. काव्य चिन्ता : ले. रमाशंकर तिवारी, मू. ७.०० ।

३८. काव्यशास्त्रीय निबन्ध : सिद्धान्त पक्ष : ले. डा. सत्यदेव चौधरी, मू. ५.०० ।

३९. काव्यशास्त्रीय निबन्ध : परम्परा तथा सिद्धान्त : ले. डा. सत्यदेव चौधरी, मू. ७.०० ।

४०. कृषि विज्ञान : ले. राय राजेश्वरदास गुप्त, मू. ७.०० ।

४१. खेत लहराये रे : ले. ओंकारेश्वरदयाल नीरज, मू. ०.७५ ।

४२. गोर्की की श्रेष्ठ कहानियां : ले. गोर्की, म. ३.०० ।

४३. गंगा मइया : ले. उदयनारायणसिंह, मू. १.७५ ।

४४. गुजराती साहित्य का नवीन इतिहास : ले. प्रो. सुरेश त्रिवेदी, मू. २.०० ।

४५. गुरुदेव रवीन्द्रनाथ : ले. मनमोहन मदारिया, मू. २.५० ।

४६. गुलिस्ताने कत्आ : ले. राजेश शर्मा, मू. १.०० ।

४७. गाँवों में सहकारिता : ले. सर्वदल सिंह, मू. ५.०० ।

४८. गोस्वामी तुलसीदास : ले. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, मू. १.५० ।

४९. चंचरीक : ले. गुरुदत्त, मू. १.०० ।

५०. चन्नमा : ले. शंकर बाम, मू. ०.७५ ।

५१. चण्डालिका : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. १.२५ ।

५२. चन्द्रकृत पृथ्वीराज रासो, लघु संस्करण : ले. डा. बी. पी. शर्मा, मू. १५.०० ।

५३. चांदनी : ले. रईस अहमद जाफरी, मू. ४.३० ।

५४. चुटकी भर चाँदनी : ले. डा. केशनीप्रसाद चौरसिया, मू. ४.०० ।

५५. तट के बन्धन : ले. के. एल. वैद्य, मू. ३.१० ।

५६. तमिल साहित्य का नवीन इतिहास : ले. प्रो. न. वी. राजगोपालन, मू. ३.०० ।

५७. तालस्ताय की श्रेष्ठ कहानियाँ : ले. तालस्ताय, मू. ३.०० ।

५८. तूफान : ले. शत्रुघ्नलाल शुक्ल, मू. २.०० ।

५९. त्याग का मूल्य : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. १.०० ।

६०. दस तस्वीरें : ले. जगदीशचन्द्र माथुर, मू. ६.०० ।

६१. दाम्पत्य रहस्य : ले. हरिकिशन दास गांधी, मू. ५.०० ।

६२. देश की आन पर : ले. गणेश पांडेय, मू. १.०० ।

६३. नववधू : ले. डा. स्वर्णलता, मू. २.५० ।

६४. निराला : ले. डा. रामविलास शर्मा, मू. ५.०० ।

६५. नील जल सोई परछाइयाँ : ले. जयसिंह नीरज, मू. ३.०० ।

६६. टेलीविजन की कहानी : ले. राजीव सक्सेना, मू. १.२५ ।

६७. पचपन के फेर : ले. विमला लूथरा, मू. ३.०० ।

६८. पल्लविनी : ले. सुमित्रानन्दन पंत, मू. ११.०० ।

६९. पशु : ले. डी. एन. गोपीनाथन नायर, मू. १.८० ।

७०. पहिला नम्बर : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मू. २.०० ।

७१. प्रसाद और उनकी कविता : ले. विश्वम्भर 'मानव', मू. ४.०० ।

७२. प्राचीन कवि : ले. प्रो. न. वी. राजगोपालन, मू. ३.०० ।

७३. प्रारम्भ : ले. जगदीश चतुर्वेदी, मू. ८.०० ।

७४. पालि साहित्य का इतिहास : ले. राजकिशोर सिंह, मू. २.५० ।

७५. प्रीति का पुरस्कार : ले. ब्रजनन्दन, मू. १.०० ।

७६. प्रेम की अन्तिम मोड़ : ले. लक्ष्मीनारायण टण्डन, मू. ५.०० ।

७७. पंखहीन पंछी : ले. ठाकुर पुंछी, मू. ६.६० ।

७८. पंचों में भगवान : ले. रमेशचन्द्र शास्त्री, मू. २.०० ।

७९. फूल और पत्थर : ले. नरेन्द्र शर्मा, मू. ३.३० ।

८०. बच्चों की समस्याएँ : ले. सुदेश बी. ए., मू. १.५० ।

८१. बाल कल्याण के मूल सिद्धान्त : ले. सुखिया तथा शौकी, मू. ३.५० ।

८२. बुलबुल तूफान विस्फोट : ले. अरुण, मू. ४.०० ।

८३. बंसरी : ले. कमल शुक्ल, मू. ३.०० ।

८४. ब्रजभाषा-व्याकरण की रूपरेखा : ले. डा० प्रेमनारायण टंडन, मू. ६.०० ।

८५. ब्रजभाषा सुरकोश : ले. डा. प्रेमनारायण टंडन, मू. २०.०० ।

८६. भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ : ले. कृष्ण दयाल भार्गव, मू. १.५० ।

८७. भारत के दुर्ग : ले. मिथिलेश प्रभाकर, मू. १.५० ।

८८. भारतीय अर्थशास्त्र : ले. डा० कालकाप्रसाद भटनागर, मू. ९.५० ।

८९. भारत के प्रकाश स्तम्भ : ले. माया गुप्त, मू. २.०० ।

९०. भारतीय संयोजन में नई दिशायें : मू. १०.०० ।

९१. भारतीय साहित्य की रूपरेखा : ले. डा० भोलाशंकर व्यास, मू. ७.५० ।

९२. भारतीय सेना का इतिहास : ले. प्रबोध कुमार मजूमदार, मू. २०.०० ।

९३. भिलावां : ले. रमेश बेली, मू. ३.५० ।

९४. भौतिक भूगोल की सरल रूपरेखा : ले. एम. एल. सोलंकी, मू. ३.०० ।

९५. मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : ले. डा० रामरतन भटनागर, मू. ७.५० ।

९६. मनोविज्ञान का इतिहास : ले. डा० रामइकबाल पाण्डेय, मू. ८.०० ।

९७. मराठे और अंग्रेज : ले एन. सी. केलकर, मू. १०.०० ।

९८. महाकवि तिलक का कालिदास : ले. दीनानाथ शरण, मू. २.७५ ।

९९. महादेवी की रहस्य साधना : ले. विश्वम्भर मानव, मू. ३.५० ।

१००. महाराणा प्रतापसिंह : ले. चन्द्रशेखर पाठक, मू. २.५० ।

१०१. माता के हत्यारे : ले. ओमीलाल इलाहाबादी, मू. ५.०० ।

१०२. मुक्तिदान : ले. सिद्धनायक द्विवेदी, मू. १.७५ ।

१०३. मुद्रा और बैंकिंग : ले. विश्वनाथ हुक्कू, मू. २.५० ।

१०४. मूर्तिकला का इतिहास : ले. असगरअली, कादरी, मू. २.५० ।

१०५. मूल्यांकन १९६३ : ले. डा० कन्हैयालाल सहल ।

१०६. मैकबेथ : ले. शत्रुघ्नलाल शुक्ल, मू. २.०० ।

१०७. याद : ले. मनोहर शर्मा 'रिपु', मू. ३.५० ।

१०८. यूगोस्लाविया की कहानी : ले. राजेन्द्र अवस्थी, मू. २.५० ।

१०९. रक्त कमल : ले. डा० लक्ष्मीनारायण लाल, मू. २.२५ ।

११०. रमा : ले. शरत्चन्द्र, मू. १.०० ।

१११. रात खो गई : ले. मनहर चौहान, मू. ५.०० ।

११२. राजस्व : ले. डा० तिलकनरायण हजेला, मू. ९.५० ।

११३. राजा शिवाजी : ले. गोविन्द सखाराम सरदेसाई, मू. ३.५० ।

११४. रामनरेश त्रिपाठी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : ले. डा० रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल, मू. ३.०० ।

११५. रेत की आग : ले. माधवसिंह 'दीपक', मू. २.७५ ।

११६. लहर मंथन : मू. ४.०० ।

११७. लाल पतंग : ले. कमल शुक्ल, मू. ३.०० ।

११८. वाणी : ले. सुमित्रानन्दन पंत, मू. ४.०० ।

११९. विजय : ले. डा. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', मू. २.५० ।

१२०. विश्व एवं भारत का भूगोल : ले. एम० एल० सोलंकी, मू. ४.०० ।

१२१. विश्व इतिहास की रूपरेखा : ले. डा० गोपीनाथ, मू. ५.०० ।

१२२. विज्ञान की बातें : ले. डा० रामेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, मू. १.५० ।

१२३. शरत ग्रंथावली : ले. शरत चट्टोपाध्याय, म. १०.०० ।

१२४. शान्ति के प्रहरी : ले. डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', मू. १.७५ ।

१२५. शोभा निबन्ध नवनीत : ले. दीनानाथ 'शरण', मू. ३.७५ ।

१२६. शेरे महफिल : ले. राजेश शर्मा, मू. १.०० ।

१२७. संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी : ले. मोनीयिर विलियम्स, मू. ८.०० ।

१२८. सरला, बिल्लू और जाला : ले. ई० वी० ह्वाइट, मू. २.०० ।

१२९. सफलता का रहस्य : ले. स्वामी विवेकानन्द, मू. १.०० ।

१३०. सफेद प्रतिमा काले साये : ले. के० एल० वैद्य, मू. ३.०० ।

१३१. साहित्य अनुभूति और विवेचन : ले. डा० संसारचन्द, मू. ६.०० ।

१३२. साहित्यिक निबन्ध : ले. डा० कमलेश, मू. ७.०० ।

१३३. साहित्य संगम : सम्पा. कृष्णचन्द्र, मू. ३.०० ।

१३४. सितारों से आगे : ले. ख्वाजा अहमद अब्बास, मू. १.०० ।

१३५. सुमन : ले. रजिया सज्जाद जहीर, मू. ०.०० ।

१३६. सूदखोर पठान : ले. विश्वामित्र शर्मा, मू. १.२५ ।

१३७. सोना और इन्सान : ले. चार्ल्स गार्विस, मू. ४.०० ।

१३८. सोनजुही और बौने : ले. राबिन शा पुष्प, मू. १.५० ।

१३९. सोवियत संघ का शासन : ले. महेन्द्र प्रकाश अग्रवाल, मू. ३.७५ ।

१४०. स्मृति : ले. हरीश करुण, मू. १.५० ।

१४१. स्मृति के हस्ताक्षर : ले. देवदत्त शास्त्री, मू. ५.०० ।

१४२. संतरण : ले. डा० महेन्द्र भटनागर, मू. १.५० ।

१४३. हमारे आदिवासी : ले. राजेन्द्र अवस्थी, मू. २.५० ।

१४४. हमारे प्रतिनिधि कवि : ले. विश्वम्भर मानव, मू. ६.०० ।

१४५. हिन्दी नाटक की रूपरेखा : ले. दशरथ झा, मू. ५.०० ।

१४६. हिन्दी में सरकारी कामकाज करने की विधि : ले. रामविनायक सिंह, मू. ३.०० ।

१४७. हिन्दी विश्वकोश (भाग ३) मू. १२.५० ।

१४८. हिन्दी शिक्षण विधि : एन० एल० उपाध्याय, मू. ५.७५ ।

१४९. हिन्दी साहित्य सार : ले. यज्ञदत्त शर्मा, मू. ४.५० ।

१५०. हिमालय के वीर : ले. श्यामलाल 'मधुप', मू. १.०० ।

१५१. हीरे का राजकुमार : ले. मन्दाकिनी, मू. १.५० ।

१५२. हैमलेट : ले. शत्रुघ्नलाल शुक्ल, मू. २.०० ।

१५३. श्रमदान : ले. ईशकुमार ईश, मू. ०.८० ।

१५४. ज्ञान-विज्ञान : ले. शंकर सुल्तानपुरी, मू. १.०० ।

कार्य समिति की तीसरी बैठक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्यसमिति की वर्तमान सत्र की तीसरी बैठक मंगलवार, दिनांक ३ मार्च, ६४ को सायं ४ बजे 'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-६ में श्री रामलाल पुरी की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :

सर्वश्री रामलाल पुरी, वाचस्पति पाठक, दीनानाथ मल्होत्रा, रघुवीर शरण बंसल, श्यामलाल गुप्त, तेज नारायण टण्डन, रामदत्त थानवी, रामतीर्थ भाटिया, दयानन्द वर्मा, कन्हैयालाल मलिक।

१. प्रधान मन्त्री ने पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई और वह सर्वसम्मति से सम्पुष्ट की गई।

२. सभापति पद हेतु प्रस्तावित नामों में से, राजकमल प्रकाशन के श्री ओमप्रकाश जी को छोड़कर, सभी सज्जनों ने अपने नाम वापस ले लिए थे, अतः श्री ओमप्रकाश जी सर्वसम्मति से आगामी सत्र (६४-६५) के लिए सभापति चुन लिए गए।

३. पुस्तक विक्रेताओं के पुनः पंजीकरण के सम्बन्ध में निर्मित उपसमिति की रिपोर्ट पर कार्यसमिति ने विचार किया। विषय की महत्ता एवं गम्भीरता को देखते हुए यह निश्चय किया गया कि आगामी अधिवेशन के अवसर पर आम सभा में इस सम्बन्ध में विचार किया जाये।

४. बृहत पुस्तक सूची की प्रकाशन संबंधी योजना के विषय में निश्चय किया गया कि धनाभाव के कारण, योजना के उपयोगी होते हुए भी, इसको कार्यान्वित करना इस समय संघ के लिए सम्भव नहीं है। इस सम्बन्ध में शिक्षा मन्त्रालय से अनुदान प्राप्त करने का प्रयास किया जाय और यदि अनुदान मिल जाता है तो योजना को अवश्य कार्यान्वित किया जाय।

५. श्री वाचस्पति पाठक के निमन्त्रण पर, संघ का आगामी वार्षिक अधिवेशन अप्रैल के अन्तिम सप्ताह अथवा मई के प्रथम सप्ताह में इलाहाबाद में करने का निश्चय किया गया।

—प्रधान मन्त्री

संघ समाचार
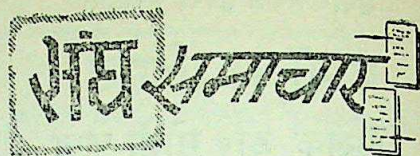
वार्षिक अधिवेशन : प्रधानमंत्री का परिचय

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधान मंत्री ने संघ के सदस्यों, प्रमुख प्रकाशकों तथा प्रतिष्ठित पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन किया है :

प्रिय बन्धु,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का नवाँ वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद में २६ व २७ अप्रैल को होगा। हिन्दी प्रकाशन व पुस्तक व्यवसाय जिन परिस्थितियों में से गुजर रहा है, उनसे आप भलीभाँति परिचित हैं। इस अवसर पर उन सभी समस्याओं पर विचार किया जायगा और उनके समाधान का हल निकालने की कोशिश की जायगी। इस सम्बन्ध में आप अपने अमूल्य सुझाव संघ के कार्यालय को शीघ्र ही भेजने की अनुकम्पा करें ताकि अधिवेशन के अवसर पर उन पर विचार किया जा सके।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि अधिवेशन की महत्ता को देखते हुए आप इसमें अवश्य सम्मिलित होवें और अपने इलाहाबाद पहुंचने की सूचना लोक भारती अथवा भारती भण्डार को शीघ्र ही देने की कृपा करें। जिन महानुभावों की इलाहाबाद पहुंचने सम्बन्धी सूचना उन्हें २० अप्रैल तक मिल जायगी, उनके इलाहाबाद में ठहरने की व्यवस्था करने में स्वागत समिति को सुविधा होगी।

संघ के विशेष अनुरोध पर, इस अवसर पर हिन्दी के प्रमुख समाचार पत्र 'भारत', इलाहाबाद और 'प्रदीप', पटना ने सम्मिलित रूप से ८ पृष्ठों का एक परिशिष्ट २६ अप्रैल को प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि आप उक्त पत्रों में प्रकाशनार्थ अपने लेख और अपने संस्थान का विज्ञापन भेजें। इस अवसर पर दोनों ही पत्रों में एक साथ प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों की दर ४ रु० ५० न० पै० प्रति कालम इंच के

स्थान पर, ३ रु० ५० न० पै० रखी गई है। इसी रियायती दर पर विज्ञापन संयुक्त रूप से दोनों समाचार-पत्रों में प्रकाशित होगा। उनके इस सहयोग के लिए हम अत्यन्त आभारी हैं। आपसे प्रार्थना है कि उक्त विशेषांक की सफलता के लिए आप अपना पूरा सहयोग लेख एवं विज्ञापन भेजकर दें। प्रकाशनार्थ सामग्री एवं विज्ञापन भारत, इलाहाबाद के पते पर १५ अप्रैल, ६४ तक निश्चित रूप से पहुँच जाने चाहिए।

निमंत्रण-पत्र एवं अधिवेशन का कार्यक्रम इलाहाबाद से शीघ्र ही आपकी सेवा में पहुंचेंगे।

विनीत,
प्रधान मंत्री

जाली पुस्तकों की व्याधि

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री ने शिक्षा सचिवों और शिक्षा संचालकों के नाम भेजे गये पत्र में लिखा है :

मान्यवर,

भ्रष्टाचार अब देश के पुस्तक-व्यवसाय के क्षेत्र में भी फूट पड़ा है। बच्चों के हाथों में ऐसी पुस्तकें पहुँचने लगी हैं जो कापीराइट के उल्लघंन का नमूना ही नहीं, वरन् सरासर जालसाज़ी है, जिनमें अशुद्धियों की भरमार है और जो नितांत भद्दे ढंग से छापी जाती हैं।

इस शोचनीय दशा को सुधारने के लिए आवश्यक है कि जाली पुस्तकों की रोकथाम के लिए कोई नया कानून मंज़ूर किया जाए, अथवा इस प्रकार की असामाजिक हर-कतों को दण्डनीय करार देने के लिए इंडियन पेनल कोड की धारा ४८२ में उचित संशोधन किया जाय।

अध्यापक-गण का भी यह पुनीत कर्तव्य है कि वे देखें कि बच्चों के हाथों में गलत पुस्तकें न पहुँचे। इससे कुछ सीमा तक समस्या हल हो सकेगी।

इस सम्बन्ध में सभी संसद-सदस्यों को भेजे गये बुक-लैट की एक प्रति अलग डाक से आपकी सेवा में अवलोक-नार्थ भेज रहे हैं।

हमें आशा है, आपकी सरकार ने भी स्थिति की गंभीरता को विचारा होगा। इस सम्बन्ध में आपके कदम उठाने पर निश्चय ही इस समस्या का हल निकल आयेगा और बच्चों को अच्छी पुस्तकें मिल सकेंगी।

साहित्य-समालोचना

आधुनिक काव्य : रचना और विचार : ले. आ. नंददुलारे वाजपेयी; प्र. साथी प्रकाशन, सागर, म. प्र.; सा. क्रा. ८; पृ. १९२; मू. ३.५० । पु. मु. ।

आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका : ले. डा. शंभुनाथ पाण्डेय; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, अस्पताल रोड, आगरा; सा. डि.; पृ. ४०४; मू. १०.०० ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी : ले. डा. सरला दुआ; प्र. साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर; सा. डि.; पृ. ५००; मू. १५.०० । आगरा विश्वविद्यालय से स्वीकृत शोध-प्रबन्ध ।

कवितावली : टी. चन्द्रशेखर शास्त्री; प्र. साहित्य-भवन प्रा. लि., इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. २००; मू. ३.०० । टीका । पु. मु. ।

कबीर पदावली : प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. २.५० । जीवनी, संकलन, समीक्षा ।

कामायनी : ले. भारतभूषण सरोज; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. ८८; मू. १.०० । पु. मु. ।

चन्द्रगुप्त : ले. डा. शंभुनाथ पाण्डेय; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर आगरा; सा. क्रा.; पृ. १८०; मू. २.५० । पाँचवाँ संस्करण ।

चिन्तामणि दर्शन : ले. डा. हरिहरनाथ टंडन; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. १९४; मू. ३.०० । पाँचवां संस्करण ।

जयशंकर प्रसाद और स्कन्दगुप्त : डा. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. २५४; मू. २.५० । तृतीय संस्करण ।

तुलसी पदावली : प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. २.५० । जीवनी, संकलन, समीक्षा ।

बीसवीं शती की श्रेष्ठतम काव्यकृति : कामायनी : ले. गंगाप्रसाद पाण्डेय; प्र. साहित्य भवन प्रा. लि.; इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. २००; मू. ३.०० । सजिल्द ।

नये प्रकाशन

भाषा विज्ञान : ले. भारतभूषण 'सरोज'; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. १९४; मू. २.५० । ग्यारहवां संस्करण ।

रससिद्धान्त की दार्शनिक एवं नैतिक व्याख्या : ले. डा. तारकनाथ बाली; सा. डि.; मू. ८.०० । शोध-प्रबन्ध ।

संसार के महान उपन्यास : ले. डा. रांगेय राघव; प्र. राजपाल एण्ड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; सा. डि. ८; पृ. ‌८०; मू. १०.०० ।

साकेत की टीका : टी. फूलचन्द जैन 'सारंग'; सा. क्रा.; पृ. ४०७; मू. ५.०० । तृतीय संस्करण ।

सामयिक जीवन और साहित्य : ले. डा. रामरतन भटनागर; प्र. साथी प्रकाशन, सागर; सा. डि.; पृ. ५०४; मू. ७.०० । निबन्ध ।

साहित्य-विज्ञान : साहित्य-सिद्धांतों का वैज्ञानिक विवेचन : ले. डा. गणपतिचन्द्र गुप्त; प्र. भारतेन्दुभवन, सैक्टर १५ ए, चंडीगढ़; सा.डि.; पृ ४७५; मूल्य २०.०० । रैक्सिन जिल्द ।

साहित्य की आत्मा : ले. डा. गणपतिचन्द्र गुप्त; प्र. भारतेन्दु भवन, सैक्टर १५ ए, चंडीगढ़; सा. डि.; पृ. १७५; मू. ५.०० । सजिल्द ।

साहित्य के तत्व : ले. डा. गणपतिचन्द्र गुप्त, प्र. भारतेन्दु भवन, सैक्टर १५ ए, चंडीगढ़; सा. डि.; पृ. १७०; मू. ५.०० । सजिल्द ।

साहित्य की शैली : ले. डा. गणपतिचन्द्र गुप्त; प्र. भारतेन्दु भवन, सै. १५ ए., चंडीगढ़; सा. डि; पृ. २५०; मू. ७.५० । सजिल्द ।

हमारे प्रमुख साहित्यकार : ले. रामनारायण मिश्र; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. २२५; मू. १.५० । छठा संस्करण ।

हिन्दी निबंध साहित्य की प्रमुख समस्याएँ : ले. डा. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी; सा. डि.; पृ. १५०; मू. ५.०० । निबन्ध ।

हिन्दी साहित्य का इतिहास : ले. राजनाथ शर्मा; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. क्रा.; पृ. २६०; मू. २.५० । ग्यारहवाँ संस्करण ।

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : ले. डा. रामरतन भटनागर; प्र. साथी प्रकाशन, सागर; सा. क्रा.; पृ ४१०; मू. ५.०० । पु. मु. ।

कविता

ऋतम्भरा : सं० डा. रामदत्त भारद्वाज एवं अन्य; प्र. भारती साहित्य सदन, ३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली; पृ. १५७; मू. ३.५० । कविता संकलन ।

कविताएं १९६३ : सं.अजितकुमार, विश्वनाथ त्रिपाठी; प्र. किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली के निमित्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १९६; मू. ४.०० । १९६३ की कविताओं का प्रतिनिधि संकलन ।

भारतवाणी : प्र. पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली-६; मू. १.५० । आकाशवाणी द्वारा प्रसारित २०० गीतों का संकलन ।

लोकप्रिय उर्दू गज़लें : सं. प्रकाश पंडित, प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली—३२; सा. फु.-१६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० । सचित्र ।

उपन्यास

एक चादर मैली सी : ले. राजेन्द्रसिंह बेदी ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि. ; दिल्ली-३२ ; सा. फु.-१६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० ।

गिरती दीवार : कांपती आँखें : ले. राबिन शा पुष्प ; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ; मू. २.५० ।

सुभद्रा : ले. रामचन्द्र तिवारी, श्रीमती सिद्धि तिवारी; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली । सा. क्रा.; पृ. २६४, मू. ५.०० ।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई : ले. दत्तात्रेय बलवंत पारसनीस ; प्र. साहित्यभवन प्रा. लि., इलाहाबाद ; सा. क्रा. ८ ; पृ. २६४ ; मू. ४.५० । ऐतिहासिक ।

ठकुरानी : ले. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ; मू. ६.०० ।

धरती और धन : ले. गुरुदत्त ; प्र. भारती साहित्य सदन, ३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली ; पृ. ३०० ; मू. २.०० । पा. बु. ।

धुंध में डूबे हुए : ले. बद्रीनाथ ; प्र. प्रवाल प्रकाशन, सोहबतिया बाग, इलाहाबाद ; सा. क्रा. ; मू. ४.५० ।

नयी धरती नये लोग : ले. अजित पुष्कल ; प्र. प्रवाल प्रकाशन, इलाहाबाद-६ ; सा. क्रा. ; मू. ३.०० ।

नलिनी : ले. माणिकचन्द्र ; प्र. भारती साहित्य सदन, ३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१ ; पृ. १९६ ; मू. ४.०० ।

मरने से पहले : डा. मुल्कराज आनंद ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली-३२ ; सा. फु. १६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० ।

युद्ध और शांति : ले. टालस्टाय ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली-३२ ; सा. फु. १६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० । संक्षिप्त ।

ये लोग यह दुनिया : ले. प्रकाश भारती ; प्र. भारती साहित्य सदन, ३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१ ; पृ. १८० ; मू. ३.५० ।

शिकार और जीवन : ले. मारजौरी किनन रौलिंग्स ; प्र. आत्माराम एण्ड संस ; कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ ; सा. क्रा. ; पृ. ४८८ ; मू. ६.०० ।

शुभदा : ले. शरत्चन्द्र ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली-३२ ; सा. फु. १६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० ।

स्नेह का मूल्य : ले. गुरुदत्त ; प्र. भारती साहित्य सदन, ३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१ ; पृ. ११४; मू. १.०० । पा. बु. ।

सूखा पत्ता : ले. अमरकांत ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, प्रा. लि., दिल्ली-३२ ; सा. फु. १६ ; पृ० १२० ; मू. १.०० ।

सूनी राह : ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी ; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ; मू. ४.०० ।

कहानी

आँखें : ले. मन्मथनाथ गुप्त ; प्र. राजपाल एण्ड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ ; सा. क्रा. ८ ; पृ. १२८ ; मू. २.५० ।

ऐसी होली खेलो लाल : ले. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ; प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६ ; सा. क्रा ; पृ. १४४ ; मू. २.५० । कहानी संग्रह ।

काल कोठरी : ले. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ; प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६ ; सा. क्रा. ; पृ. १२० ; मू. २.५० ।

मंजिल : ले. भैरवप्रसाद गुप्त ; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स प्रा. लि., शाहदरा-दिल्ली-३२ ; सा. फु. १६ ; पृ. १२० ; मू. १.०० ।

नाटक

तपस्विनी : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ; मू. २.०० ।

बांसुरी : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली ; म. २·०० ।

वीरांगना : ले. डा. मालती श्रीखण्डे ; प्र. साथी प्रकाशन, सागर ; सा. क्रा. ; पृ. ९० ; मू. ३.०० ।

मिट्टी की गाड़ी : ले. डा. सत्यव्रत सिन्हा ; प्र. परिमल प्रकाशन, १९४ सोहबतिया बाग, इलाहाबाद ; सा. क्रा. ; मू. ३.०० । मृच्छकटिक का हिन्दी मंच-रूपान्तर, द्वितीय संस्करण ।

राजा : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. २.०० ।

रिमझिम : ले. डा० रामकुमार वर्मा; प्र. साहित्य-भवन प्रा. लि, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. ३९२; मू. ६.०० । एकांकी संग्रह । पु. मु. ।

रूपायन : ले. डा. रामरतन भटनागर; प्र. साथी प्रकाशन, सागर; सा. क्रा; पृ. १६३; मू. ३.०० । पु. मु. ।

बालोपयोगी

कितने बजे : ले. संतराम वत्स्य, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. फु. ८; पृ. ३६; मू. १.२५; सचित्र, रंगीन ।

डा. विश्वेश्वरैया : ले. मनोहर जुनेजा; प्र. राजपाल एण्ड संज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; सा.फु. ८; पृ. ३६; मू. १.५० । जीवनी, सचित्र ।

दुनिया रंगबिरंगी : ले. श्रीकृष्ण, जयप्रकाश भारती; प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा; पृ. १३२; मू. ३.०० । ज्ञान-विज्ञान, सचित्र ।

मुन्नी का सांप काका : ले. दयाशंकर मिश्र 'दद्दा'; प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६; सा. फु. ८; पृ. ४८; मू. १.२५ । सचित्र ।

सोनजुही और बौने : ले. राबिन शा 'पुष्प'; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ. ८८; मू. १.५० ।

इतिहास-संस्कृति

अकबर : मू. ले. लारेंस बिनयन; प्र. पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ३१८; मू. १.५० ।

वैदिक साहित्य का इतिहास : ले. राजकिशोर सिंह; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सा. क्रा; पृ ३१९; मू. ४.०० । एम. ए. के संस्कृत छात्रों के लिए, प्रश्नोत्तर में ।

मनोविज्ञान

फ्राइडवाद : ले. डा. मोहन जोशी, मीरा जोशी; प्र. साथी प्रकाशन, सागर; सा. डि; पृ. २१६; मू. ७.०० । हिन्दी भाषा में प्रथम विवेचन ।

मनोविज्ञान का इतिहास : ले. डा. जे. डी. शर्मा, डा. जी. डी. सारस्वत; प्र. विनोद प्रकाशन मंदिर, आगरा; सा. डि; पृ. ३३८, मू. १०.०० । एम. ए. छात्रों के लिए ।

व्यावहारिक मनोविज्ञान : ले. सुरेशचन्द्र शर्मा, प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि; पृ. ३३६; मू. ६.०० । बी. ए. के लिए प्रश्नोत्तर में ।

समाजविज्ञान-गृहविज्ञान

समाज विज्ञान : ले. राजाराम शास्त्री, प्र. पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ३१८; मू. ४.५० ।

मातृत्व और बाल संगोपन : ले. डा. मालती श्रीखंडे; प्र.साथी प्रकाशन सागर; सा. क्रा; पृ.२००; मू.३.०० ।

वाणिज्य-अर्थशास्त्र

भारत में राजस्व के सिद्धान्त एवं व्यवहार : ले. डा. एस. पी. शर्मा एवं आर. पी. पुरोहित; प्र. मानकचन्द

बुकडिपो, सती दरवाजा, उज्जैन; सा. डि. ८; पृ० ४१६, मू.८.५०। १९६४ का संस्करण।

मुद्रा बैंकिंग तथा विदेशी विनिमय : ले. एस. जी. राजवाड़े एम. काम., प्राक्कथन ले.डा. एस.सी. सक्सेना; प्र. मानकचन्द बुकडिपो, सती दरवाजा, उज्जैन; सा. डि. ८; पृ० ४१८; मू. ७.२५। १९६४ का संस्करण।

लागत लेखे के सिद्धान्त एवं समस्याएँ : ले. डी. पी. गर्ग एवं एम. सी. बडजात्या; प्र. कमल प्रकाशन, खजूरी बाजार, इन्दौर, सा. डि.८; पृ० ३६४; मू. ६.००। १९६४ का संस्करण।

सामुदायिक विकास

विकास कार्यों में जनसहयोग : ले. क्लेरेंस किंग, अ. नारायण चतुर्वेदी, प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. डि. ८; पृ. १४४; मू. ४.५०।

विविध

कीटों में सामाजिक जीवन : ले. डा. आर.रक्षपाल; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ.१४०; मू. ३.००। जीवविज्ञान।

जूड़ी और लक्ष्मी : प्र. पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली-६. सा. क्रा. ८; पृ.१३९, मू.१.५०।

भारत ज्ञान कोश : सं० अवनीन्द्रकुमार; प्र. हिन्द-पाकेट बुक्स, प्रा. लि,.शाहदरा-दिल्ली-३२, सा. फु.-१६; पृ. २००; मू. २.५०।

लेखनकला और आदर्श निबंध : ले. साहित्याचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी, प्र. कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी, वाराणसी; पृ. २५०; मू. ४.००। प्राप्ति स्थान बंबई बुकडिपो, १९४।१ महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता।

शरीर विज्ञान की रूपरेखा : ले. डा० मालती श्रीखण्डे; प्र. साथी प्रकाशन, सागर; सा. क्रा; पृ. १८२; मू. ३.००।

हिन्दीभाषा शिक्षण : ले. दिनेशचन्द्र भारद्वाज; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर; आगरा, सा. डि.; पृ. १६३; मू.३.००। प्रश्नोत्तर में।

हिन्दी प्रकाशक

प्रेस और पुस्तक पंजीकरण की धारा ८ के अनुसार स्वामित्व और अन्य ब्यौरों से सम्बन्धित विज्ञप्ति

फार्म ४

१. प्रकाशन स्थान	२६-ए, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली-६
२. प्रकाशन अवधिक्रम	मासिक
३. मुद्रक का नाम	के० एल० मलिक
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	४/१४, रूप नगर, दिल्ली
४. प्रकाशक का नाम	के० एल० मलिक
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	४/१४, रूप नगर, दिल्ली
५. सम्पादक का नाम	के० एल० मलिक
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	४/१४, रूप नगर, दिल्ली
६. पत्र के उन शेयरहोल्डरों के नाम व पते जो पूरी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के अधिकारी हैं ...	अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, २६-ए, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-६

मैं के० एल० मलिक यहाँ घोषणा करता हूं कि यह विवरण मेरी जानकारी और धारणा के अनुसार पर्णतया प्रामाणिक और सत्य है।

दिनांक ५-३-६४

ह० के० एल० मलिक
प्रकाशक

सूचना सार

ब्लाक-पुस्तकालयों में अश्लील पुस्तकें

वाराणसी के प्रतिष्ठित दैनिक 'आज' में प्रकाशित यह पत्र आश्चर्य के साथ पढ़ा गया है :

महाशय,—कुत्सित यौन भावना की अफीम बेचकर रुपया भुनाने वाली पुस्तकों से बाजार तो पटा पड़ा ही है, अब पता नहीं किस चोर दरवाजे से ये पुस्तकें ब्लाकों के पुस्तकालयों में भी स्थान पाने लगी हैं। ब्लाक रामपुर के पुस्तकालय में चन्द पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं 'दिल चोर आशिक', 'जवानी की रातें', 'सुहाग रात', 'चुम्बन', 'प्रथम रात' आदि। इनमें तथा इसी प्रकार की अन्य बहुत-सी पुस्तकों में अनैतिक, अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों के नग्न, बीभत्स चित्रणों से पृष्ठ के पृष्ठ भरे पड़े हैं। विकास क्षेत्रों में जनता के स्वस्थ ज्ञानवर्धन के लिए जो पुस्तकालय खोले गये हैं उनमें इस तरह की पुस्तकों का क्या प्रयोजन है, समझ में नहीं आता। इन्हें पढ़ने से कुत्सित यौन मनोविकार उत्पन्न होकर दुराचार को प्रोत्साहन मिलने के सिवा और कोई परिणाम नहीं निकलेगा। यौन-शिक्षा ही देनी है तो उसके लिए भी अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं। मेरा निवेदन है कि ऐसी पुस्तकें जिस भी ब्लाक पुस्तकालय में हों वहाँ से तत्काल हटाई जायं, और इस बात की जाँच की जाय कि ये पुस्तकें कैसे इन पुस्तकालयों में पहुँची।

—चन्द्रभान सिंह, घरसन, कंधरापुर, आजमगढ़।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की परीक्षाएँ

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के परीक्षा-मंत्री, श्री रामेश्वर दयाल दुबे सूचित करते हैं कि मणिपुर, असम, बंगाल, काश्मीर और पंजाब को छोड़कर शेष अहिन्दी प्रान्तों में समिति द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा की परीक्षाएं लगभग १६०० केन्द्रों में ता० २२ फरवरी १९६४ में हुई थीं। उपरोक्त प्रान्तों में ये ही परीक्षाएं अप्रैल मास में हुआ करती हैं। फरवरी ६४ में होने वाली 'राष्ट्रभाषा' की परीक्षाओं में ८०,२०० के लगभग परीक्षार्थी सम्मिलित हुए हैं। बम्बई और उत्कल के मिलाकर लगभग ८८,००० संख्या होगी।

टूरिस्ट गाइड जब्त

उत्तर प्रदेश सरकार ने श्री रामकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित और विशाल कार्यालय, नरायण कोठी, गढ़वाल द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तक 'टूरिस्ट गाइड' को आपत्तिजनक मानकर जब्त कर लिया है।

'जिन्दगी की आग' प्रकाशनार्थ प्रस्तुत

श्री बलदेव प्रसाद गुप्त सूचित करते हैं कि उनका नवीन उपन्यास 'ज़िन्दगी की आग' प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है। पो. बा. नं० १०८०५, कलकत्ता-९ के पते पर पत्र-व्यवहार हो सकता है।

छापाखाने की मशीनें

लोक सभा में श्री सी. सुब्रह्मण्यम ने बताया है कि इस समय देश में प्रतिवर्ष ८४ लाख रुपये की लागत के छापाखाने के यंत्रों का उत्पादन हो रहा है। पांच करोड़ ९० लाख रुपये की लागत का उत्पादन करने के लिए नौ नयी योजनाओं को स्वीकार किया गया है। छापाखाने की मशीन का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार ने एक स्थायी नाम-सूची (पैनेल) बनाने का निश्चय किया है।

उन्होंने पूरक-प्रश्नों के उत्तर में कहा कि देश में रौटरी-मशीन और आटोमेटिक मशीनें बनाने की योजना भी है।

पंजाब में वर्तमान पाठ्य पुस्तकें चालू रहेंगी

पंजाब राज्य शिक्षा विभाग ने आगामी पाठ्य वर्ष अर्थात् १९६४, ६५ के दौरान निम्नलिखित विषयों में वर्तमान पाठ्य पुस्तकों को चालू रखने का निर्णय किया है :

१. पहली से आठवीं श्रेणी तक हिन्दी और पंजाबी प्राइमर और रीडर।

२. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणी के लिए हिन्दी और पंजाबी व्याकरण।

३. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणियों के लिए संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकें।

४. दूसरी से आठवीं श्रेणी के लिए गणित की पुस्तकें।

५. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणियों के लिए बीज गणित और रेखागणित, जुमेटरी।

६. पहली से आठवीं श्रेणियों के लिए साधारण विज्ञान वर्क बुक पाठ्य पुस्तकें।

७. छठी से आठवीं श्रेणियों के लिए गृह विज्ञान।

८ छठी से आठवीं श्रेणियों तक के लिए संगीत कंठ और वाद्य :

९. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणियों के लिए ड्राइंग।

१०. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणियों के लिए खेती बाड़ी।

११. छठी और सातवीं श्रेणियों के लिए लकड़ी का काम।

१२. छठी श्रेणी के लिए कताई और बुनाई।

१३. छठी, सातवीं और आठवीं श्रेणियों तक के लिए अंग्रेज़ी की पाठ्य पुस्तकें।

१४. सातवीं और आठवीं श्रेणियों तक के लिए अंग्रेज़ी व्याकरण।

१५. सामाजिक अध्ययन और भूगोल।

क. दूसरी श्रेणी के लिए : केवल पैप्सू क्षेत्र के लिए :

ख. तीसरी श्रेणी के लिए : चौथी कक्षा में भी पढ़ाई जाने वाली :

ग. पाँचवीं से आठवीं श्रेणियों के लिए।

यह भी निर्णय किया गया है कि १-४-६४ से तत्कालीन पैप्सू क्षेत्र में छठी श्रेणी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी के प्राइमर और रीडर तथा इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र की पुस्तकों को बन्द कर दिया जाए और इनके स्थान पर तत्कालीन पंजाब के क्षेत्र में छठी श्रेणी में पढ़ाए जाने वाले अंग्रेजी रीडर और सामाजिक अध्ययन तथा भूगोल की पुस्तकें राज्य भर के सभी स्कूलों में अध्ययन में समरूपता लाने के लिए पढ़ाई जाएं।

राज्य के शिक्षा विभाग ने सातवीं श्रेणी के लिए कताई और बुनाई : हिन्दी और पंजाबी : की नई पुस्तकें तैयार की हैं। ये पुस्तकें नियंत्रक मुद्रण एवं लेखन सामग्री पंजाब चंडीगढ़ द्वारा मुद्रित की गई हैं। ये पुस्तकें सम्बन्धित कक्षा में राज्य भर के सभी स्कूलों में प्रयुक्त की जाएंगी।

जोधपुर विश्वविद्यालय

जोधपुर विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह के सुअवसर पर स्थानीय प्रकाशन संस्थान के हिन्दी साहित्य मन्दिर के मालिक बन्धु युवक साहित्यकार, इतिहासकार एवं लेखक प्रो० श्री महावीरसिंह गहलोत को पी-एच. डी. की उपाधि से विभूषित किया गया।

बाल उपयोगी पुस्तकों पर पुरस्कार : पुस्तकें आमंत्रित

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने दसवीं बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता की घोषणा की है। इसके लिए लेखकों और प्रकाशकों से बच्चों के उपयोग की सुरुचिपूर्ण और आकर्षक पुस्तकें माँगी गई हैं। सर्वोत्तम पुस्तकों या पांडुलिपियों पर १-१ हज़ार रु० के १५ पुरस्कार दिए जाएंगे।

पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि १ मई, १९६४ है। केवल १९६२ और १९६३ में प्रकाशित पुस्तकें ही इस प्रतियोगिता में भेजी जा सकती हैं।

सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, बी—३, नई दिल्ली से पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

काशी विद्यापीठ, वाराणसी, विश्वविद्यालय

लोक सभा में शिक्षा उपमंत्री श्री भक्त दर्शन ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम की धारा ३ के अन्तर्गत, यह घोषित किया गया है कि काशी विद्यापीठ, वाराणसी को विश्वविद्यालय समझा जाए।

नागरी प्रचारिणी सभा को अनुदान

श्री भक्त दर्शन ने श्री विभूति मिश्र के प्रश्न के उत्तर में बताया कि सरकार ने नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (उत्तर-प्रदेश) को उसके द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर के संशोधन एवं संवर्धन के लिए अब तक कुल १,३२,५०० रु० का अनुदान दिया है।

सभा के कार्य के बारे में उन्होंने बताया कि 'अ' से 'औ' तक शुरू होने वाले शब्दों का पुनर्विलोकन पूरा हो चुका है तथा व्यंजन से शुरू होने वाले शब्दों पर कार्य चालू है। कार्य के बारे में नवीनतम प्रगति रिपोर्ट सभा से अभी प्राप्त नहीं हुई है।

पाठ्य-क्रमों में परिवर्तन

दिल्ली के शिक्षा निदेशालय ने पहली से आठवीं कक्षाओं तक के पाठ्य-क्रमों को बदलने का निश्चय किया

है। इसके अनुसार आगामी मई (१९६४) में गणित का नया पाठ्यक्रम बनकर तैयार हो जायगा। इसी प्रकार १९६६ तक हिन्दी और अंग्रेजी का पाठ्यक्रम तैयार किया जाएगा। विज्ञान तथा अन्य विषयों के पाठ्यक्रम भी बनाये जा रहे हैं।

इन नवीन पाठ्यक्रमों को बनाने का यह एक कारण है कि पुराने पाठ्य-क्रमों में बहुत-सी त्रुटियां हैं, जो अब तक भी वैसी की वैसी ही बनी हुई हैं। दूसरे पुराने पाठ्य-क्रमों के अनुसार पुस्तकों का मूल्य बहुत अधिक है। जिसके फलस्वरूप निर्धन छात्रों को पुस्तकें खरीदने में कठिनाई होती है।

उच्च शिक्षा का अधिकार और शिक्षा का माध्यम

लोकसभा में शिक्षा-मंत्री श्री छागला ने बताया कि किसी भी नागरिक को, जो उच्च विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त करना चाहता है, इसकी सुविधा दी जानी चाहिए। हर नागरिक को हमारे देश में यह अधिकार है। विश्व-विद्यालय की शिक्षा के स्तर का अध्ययन करने के लिए जो समिति बनायी गयी थी, उसने अभी अपना प्रतिवेदन नहीं दिया है। आशा है, समिति इस साल में प्रतिवेदन दे देगी। उन्होंने कहा कि समिति के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न शिक्षा के माध्यम का है। उन्होंने स्वीकार किया कि अंग्रेजी एक विदेशी माध्यम है और मातृभाषा का माध्यम होने से विद्यार्थियों को सुविधा हो सकती है, पर इसके साथ ही हमारे सामने राष्ट्रीय एकता का प्रश्न भी है।

त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

लोकसभा में शिक्षामंत्री श्री छागला ने बतलाया कि उत्तर-प्रदेश और महाराष्ट्र के अतिरिक्त अन्य सभी राज्यों में त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम को लागू किया जा चुका है। उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त उत्तरप्रदेश विश्व-विद्यालय शिक्षा समिति ने राज्य सरकार से त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम को अपनाने की सिफारिश की है। राज्य सरकार इस पर विचार कर रही है।

शुद्ध आयुर्वेद मंडल स्थापित

स्वास्थ्य मंत्रालय ने शुद्ध आयुर्वेद मण्डल स्थापित किया है जो शुद्ध आयुर्वेद की शिक्षा के बारे में सरकार को सलाह देगा। इसका मुख्य कार्य, आयुर्वेद शिक्षा के पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों तथा परीक्षाओं की जांच करना और उनमें आवश्यक संशोधनों की सिफारिश करना है। इसका उद्देश्य, देश के सभी आयुर्वेद कालेजों में १९६४-६५ के शिक्षा सत्र से शुद्ध आयुर्वेद की शिक्षा में आयुर्वेद प्रवेशिका और आयुर्वेद प्रवीण के पाठ्यक्रम शुरु करना है।

शुद्ध आयुर्वेद मंडल के सदस्य इस प्रकार हैं:— गुजरात के स्वास्थ्य और श्रममंत्री श्री एम० पी० व्यास, अहमदाबाद (अध्यक्ष); पंडित हरिदत्त शास्त्री, बम्बई; वैद्य श्री एन० एच० जोशी, बम्बई; वैद्य सीताराम मिश्र, जयपुर; आचार्य बद्री विशाल त्रिपाठी, कानपुर; श्री अनन्त त्रिपाठी शर्मा, संसद सदस्य, गंजम, उड़ीसा; कविराज हरिश्चन्द्र भट्टाचार्य, सिल्चर; आयुर्वेदाचार्य श्री सिस्तल सुब्रह्मण्य शास्त्री, गुन्टूर; वैद्य गोस्वामी भैरव गिरि, मुजफ्फरपुर; वैद्य शिवप्रसाद ब्रह्मचारी, जम्मू; पंडितराज त्रिक्कोविल अच्युत वारियर, तिरूप्पुनियुर; आयुर्वेदाचार्य वी० बी० नटराज शास्त्री, तिरूचिरापल्ली; वैद्य रामेश्वर शास्त्री, ग्वालियर; श्री जी० बी० सावानर, कुंजुबेट्टु, उदिपि (दक्षिण कनारा); पंडित कीर्ति शर्मा, पटियाला; कविराज प्रभाकर चटर्जी, कलकत्ता; डा० सी० द्वारकानाथ सलाहकार, देशी चिकित्सा प्रणाली, स्वास्थ्य मंत्रालय, नई दिल्ली; और वैद्यरत्न पंडित शिव शर्मा, अवैतनिक आयुर्वेदिक सलाहकार, योजना आयोग (सदस्य-सचिव)।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की १९६२-६३ की रिपोर्ट

केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री भक्तदर्शन ने २० फरवरी को राज्यसभा में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की १९६२-६३ की रिपोर्ट प्रस्तुत की। आलोच्य वर्ष में देश के कालेजों और विश्वविद्यालयों में कुल १२ लाख ७२ हज़ार विद्यार्थी थे। इनमें से २ लाख २३ हज़ार छात्राएं थीं। इस तरह कुल विद्यार्थियों में से १७·६ प्रतिशत छात्राएं थीं।

१९६२-६३ में उससे पिछले वर्षों की अपेक्षा कालेजों और विश्वविद्यालयों में १ लाख १७ हज़ार अधिक विद्यार्थी भरती हुए। आलोच्य वर्ष में विज्ञान, इंजीनियरी और

शिल्प विषयों में अधिक विद्यार्थी भरती हुए।

नए विश्वविद्यालय और कालेज

१९६२-६३ में ६ नए विश्वविद्यालय; जोधपुर विश्वविद्यालय; शिवाजी विश्वविद्यालय; उड़ीसा कृषि और शिल्प विश्वविद्यालय; भुवनेश्वर विश्वविद्यालय और राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय खोले गए। अब देश ५५ विश्वविद्यालय हैं।

आलोच्य वर्ष में सम्बद्ध और यूनिवर्सिटी कालेजों की संख्या बढ़कर १९३८ हो गई। १९६१-६२ में उनकी संख्या १७८३ थी। इसके अलावा इंटरमीडिएट बोर्डों के अन्तर्गत भी कई कालेज हैं। १९६२-६३ में ८२ नए आर्ट्स, विज्ञान और वाणिज्य कालेज खोले गए। १९६२-६३ में व्यावसायिक कालेजों की संख्या बढ़कर ७३ हो गई। आलोच्य वर्ष में लड़कियों के २४ कालेज खोले गए और अब उनकी संख्या २३५ हो गई है।

पुस्तकालयों को अनुदान

आयोग ने सम्बद्ध कालेजों को पुस्तकालय, प्रयोगशाला, छात्रावास, छात्र-केन्द्र और शिक्षकों के मकान बनाने के लिए अनुदान दिया। आयोग वैज्ञानिक उपकरण और पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें खरीदने के लिए भी अनुदान देता है।

साहित्य अकादमी द्वारा ११ पुस्तकें पुरस्कृत

साहित्य अकादमी के कार्यकारी मंडल ने १९६३ के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए विभिन्न भाषाओं की ११ पुस्तकों को चुना है। पुरस्कार विजेता साहित्यकारों में हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री अमृत राय भी सम्मिलित हैं। जिन्हें उनकी पुस्तक 'प्रेमचन्द कलम का सिपाही' के लिए पुरस्कार मिलने वाला था।

इस वर्ष असमिया, कन्नड, कश्मीरी और पंजाबी की किसी पुस्तक को पुरस्कार के लिए नहीं चुना गया।

शिक्षकों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा

उत्तर-प्रदेश के शिक्षा-मंत्री, श्री कैलाश प्रकाश ने विधान परिषद के प्रश्नोतर काल में बताया है कि सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को निःशुल्क चिकित्सा सहायता प्रदान करने की एक योजना सरकार के विचाराधीन है।

राज्य सरकार द्वारा उत्कृष्ट रचनाओं पर पुरस्कार

राज्य सरकार ने ३३,५०० रुपये के ४६ पुरस्कार हिन्दी, संस्कृत तथा उर्दू के लेखकों को उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए दिये हैं। ढाई हज़ार रुपये का नरेन्द्र देव पुरस्कार डाक्टर मोतीचन्द्र, निदेशक, प्रिन्स आफ वेल्स म्यूज़ियम को उनकी रचना 'काशी का इतिहास' पर दिया गया है। पांच-पांच हजार रुपये के सात पुरस्कार तथा ढाई हज़ार रुपये के पांच पुरस्कार उच्च कोटि की पुस्तकें न प्राप्त होने के कारण इस वर्ष नहीं दिये जा सके।

विद्यार्थी यूनियनें प्रधानाचार्यों के अधीन होना श्रेयस्कर

उत्तर-प्रदेश के शिक्षा-मंत्री श्री कैलाश प्रकाश ने विधान सभा के प्रश्नोत्तरकाल में कहा कि शिक्षा-संस्थाओं में संगठित किये जाने वाले छात्रों के एसोसिएशन, पार्लियामेंट या यूनियनें विद्यालय के प्रधानाचार्य के प्रशासकीय अधिकार में होनी चाहिए जिससे संस्था में अनुशासन बनाये रहने में सहायता मिले। शिक्षा-मंत्री ने कहा कि छात्र यूनियनों को ऐसे अधिकार नहीं मिलने चाहिएं जिससे विद्यालय के प्रबन्ध में गड़बड़ी पैदा होने की गुंजाइश हो। निश्चय ही इस प्रकार के संगठनों को विद्यालय के प्रधानाचार्य के सहयोग से ऐसी सुविधाएं मिलनी चाहिएं जिनसे उन्हें शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के संचालन तथा छात्रों के बौद्धिक विकास में मदद मिले।

उत्तर प्रदेश की हाईस्कूल परीक्षा

उत्तर प्रदेश में हाईस्कूल और इंटरमीडियेट परीक्षा १७ मार्च से प्रारंभ हुई। इस वर्ष साढ़े चार लाख परीक्षार्थियों ने इसमें भाग लिया।

पाठ्य-पुस्तकों में राष्ट्र-विरोधी बातें

पश्चिमी बंगाल के शिक्षा-मंत्री ने स्वीकार किया है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने ७वीं और ८वीं श्रेणी के लिए इतिहास की जिन पुस्तकों को स्वीकृति दी है उनमें राष्ट्र-विरोधी और आपत्तिजनक बातें हैं।

बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ की परीक्षाएँ

बम्बई हिन्दी-विद्यापीठ की आगामी परीक्षाएँ ता० २५ अप्रैल से आरम्भ होंगी। परीक्षार्थियों के क्रमांक परीक्षा-केन्द्र संचालक को ता० २० अप्रैल से पूर्व भेज दिए जाएंगे। परीक्षार्थी अपने क्रमांक अपने-अपने केन्द्र-संचालक से प्राप्त करें।

ये राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकें

मध्यप्रदेश में रद्दी के अंबार

मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकें काफी मात्रा में रद्दी में टेंडर द्वारा बेची जा रही हैं। राजस्व मंत्री श्री कुन्ज बिहारी लाल गुरु ने बताया कि इस प्रकार की पुस्तकों का वज़न लगभग २९।। मीटरिक टन है। इनका बिक्री-मूल्य एक लाख २९ हजार १७६ रुपया है। उक्त पाठ्य-पुस्तकों के वास्तविक बिक्री-मूल्य के स्थान पर रद्दी में बेचने से राज्य को अनुमानतः एक लाख १२ हजार १७६ रुपये कीं हानि होने की संभावना है।

गैर-सरकारी सूत्रों के अनुसार राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की इस रद्दी का भार ८५० मन और मूल्य ढाई लाख रुपये है। कहा जाता है कि इनकी तैयारी में ५ लाख रुपये खर्च हुए हैं।

जबलपुर पाठ्य-पुस्तक जांच समिति के अध्यक्ष श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' ने एक सार्वजनिक वक्तव्य में कहा है कि पाठ्य-पुस्तकों की इस रद्दी के पीछे भ्रष्टाचार का रहस्य छिपा है। आवश्यकता है कि इस मामले की सार्वजनिक जांच करवाई जाय।

बिहार में धर-पकड़

बिहार की पुलिस ने पटना के मछुवा टोली मुहल्ले के एक मकान से २००० जाली पाठ्य-पुस्तकें और कुछ ब्लाक आदि पकड़े हैं। जाली पाठ्य-पुस्तकों की भयंकर व्याधि से चिंतित बिहार सरकार ने इसकी जांच के लिए एक शक्ति-शाली समिति बनाई है।

राजस्थान में परिवर्तन का विरोध

जयपुर के एक दैनिक पत्र से यह जानकारी प्राप्त कर लोग हैरान रह गये हैं कि कक्षा ६, ७ और ८ की अंग्रेज़ी पुस्तकों को आगामी वर्ष के पाठ्यक्रम में परिवर्तित किया जा रहा है। लोगों का कहना है कि राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों में बारंबार परिवर्तन महँगाई की मार से परेशान जन-साधारण के लिए घातक है।

उड़ीसा में नए कदम

उड़ीसा के प्राइमरी शिक्षा बोर्ड ने ४थी श्रेणी की सब पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का निश्चय किया है। इस श्रेणी की अंग्रेज़ी की पुस्तक पहले ही राष्ट्रीयकृत हैं, अब गणित, सामाजिक अध्ययन और सामान्य विज्ञान आदि के साथ उड़िया रीडर भी राष्ट्रीयकृत हो जायगी।

पंजाब में बिक्री का नया ढंग

पंजाब सरकार ने राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की चालू प्रणाली के अतिरिक्त राज्य में कार्यरत सहकारी उपभोक्ता भंडारों के द्वारा बेचने का भी निर्णय किया है। यह निर्णय आगामी शैक्षणिक वर्ष से लागू होगा।

पंजाब सरकार को ६२-६३ में राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री से १५,००,६९४ रुपये का विशुद्ध लाभ हुआ है। गत वर्ष इससे एक लाख रुपया अधिक मिला था।

गृहस्थ साहित्य

- **भाई के पत्र**
  श्री रामनाथ 'सुमन' ४.००
- **आनंद निकेतन**
  श्री रामनाथ 'सुमन' ४.५०
- **घर की रानी**
  श्री रामनाथ 'सुमन' २.००
- **कन्या**
  श्री रामनाथ 'सुमन' १.५०
- **नारी गृहलक्ष्मी कल्याणी**
  श्री रामनाथ 'सुमन' २.५०
- **नारी जीवन कुछ समस्याएँ**
  श्री रामनाथ 'सुमन' १.५०
- **स्त्रियों की समस्याएँ**
  श्री रामनाथ 'सुमन' १.५०

लोकप्रिय साहित्य

- **दामाद** (हास्य उपन्यास)
  शौकत थानवी २.००
- **अहंवादी** (उपन्यास)
  डास्टाएव्सकी ३.००
- **विश्वकथा साहित्य** (कहानी संग्रह)
  श्री रंजन ३.००
- **वातायन** (संस्मरण)
  चतुरसेन शास्त्री ३.००
- **श्रीयुत घनचक्कर** (हास्य व्यंग)
  शिक्षार्थी ३.००
- **योग के चमत्कार**
  श्री रामनाथ 'सुमन' २.००
- **दो और दो** (हास्य उपन्यास)
  शिक्षार्थी ५.००

संस्कारदायी साहित्य

- **जीवन यज्ञ**
  श्री रामनाथ 'सुमन' २.००
- **हमारे नेता**
  श्री रामनाथ 'सुमन' ३.००
- **हमारे राष्ट्र निर्माता**
  श्री रामनाथ 'सुमन' ५.००
- **सेवा धर्म**
  अनु० : श्री हरिभाऊ उपाध्याय २.५०
- **जीवन सूत्र**
  अनु० : श्री रामनाथ 'सुमन' २.००
- **वेदी के फूल**
  श्री रामनाथ 'सुमन' १.२५
- **कटघरे से पुकारती वाणी**
  श्री रामनाथ 'सुमन' १.५०

श्रेष्ठ सात कृतियां

- **चारुमित्रा** (एकांकी संग्रह)
  डा० रामकुमार वर्मा ३.००
- **एशिया के दुर्गम भूखण्डों में** (यात्रा)
  राहुल सांकृत्यायन ५.००
- **निबन्ध कला**
  राजेन्द्रसिंह गौड़ ३.५०
- **प्राचीन कवियों की काव्यसाधना**
  राजेन्द्रसिंह गौड़ ५.००
- **गांधीवाद की रूपरेखा**
  श्री रामनाथ 'सुमन' २.५०
- **गांधीमार्ग**
  आचार्य जे० बी० कृपलानी ३.००
- **अहिंसक क्रान्ति**
  आचार्य जे० बी० कृपलानी ०.६२

साधनासदन, लूकरगंज, इलाहाबाद-१

रजिस्टर्ड नं० डी० 13

प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।

★ हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।

★ आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।

★ क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीनं वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मँगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।
२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।
३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।
४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।
५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।
६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पांच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मंगाइये।

ग्रामपंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान-भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी माँगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आपको सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स देशबन्धु गुप्ता रोड़, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ मई, १९६४ अंक ६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ६ | मई, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ के संकल्प

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के इलाहाबाद अधिवेशन की कार्यवाही 'हिन्दी प्रकाशक' के इस अंक में यथासंभव विस्तार के साथ प्रस्तुत की जा रही है। इस कार्यवाही के अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट रूप में सामने आ जायगा कि संघ के कार्य की दिशा उत्तरोत्तर रचनात्मक होती जा रही है और संघ पुस्तक-व्यवसाय के सामूहिक हितों को राष्ट्रीय हितों की पृष्ठभूमि में ही पुष्ट करने का प्रयास कर रहा है। अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री बी. पी. ठाकुर, उद्घाटनकर्ता कविवर सुमित्रानंदन पंत, अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश, विशेष गोष्ठी की सभानेत्री श्रीमती महादेवी वर्मा और अन्यान्य वक्ताओं ने अपने विचारपूर्ण भाषणों में इसी दिशा की ओर संकेत किए हैं और कई क्रियात्मक एवं बहुमूल्य सुझाव दिए हैं। अपने निश्चयों में संघ ने मार्गदर्शकों के आदेश शिरोधार्य किए हैं और इनको अमल में लाने के संकल्प कर लिए हैं। वितरण की सहकारी योजना और संदर्भ पुस्तकों के प्रकाशन से संबंधित प्रस्ताव इसी बात के निदर्शन हैं। यहाँ हम इनके सिलसिले में दो शब्द कहने की अनुमति चाहते हैं।

अब यह जानी-मानी बात हो गई है कि बिक्री के मंदी के कारण विक्रेता बन्धु अपने यहाँ सब प्रकार की और नई-से-नई पुस्तकों का भण्डार करने के लिए पूंजी नहीं लगाते, उनका प्रयास यही रहता है कि आवश्यकता पड़ने पर पुस्तकें मँगा ली जायंगी और ग्राहक को दे दी जायंगी। ग्राहकों की स्थिति अधिकांश में ऐसी हो गई है कि वे खड़े घाट कपड़े धुलाना पसंद करने लगे हैं—अपने आदेश की पूर्ति के लिए समुचित समय देना उनके लिए संभव नहीं होता। परिणाम यह होता है कि पुस्तकों की सप्लाई ठीक नहीं हो पाती या आदेश अधूरा ही रह जाता है। पुस्तकों का भण्डार सामने न होने से कई ग्राहक अपने लिए उपादेय पुस्तकों की जानकारी से वंचित रह जाते हैं या जानते हुए भी अपनी आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाते क्योंकि फुटकर ग्राहकों के लिए डाक द्वारा, बढ़े हुए महसूल के कारण, पुस्तकें मँगाना सुगम नहीं रहा। प्रकाशक अपनी ओर से माल भेजकर विक्रेताओं के भण्डार भरे रख सकते हैं परन्तु उनको अपनी रकम की वापसी का कोई निश्चित समय नहीं दीख पड़ता जिसके आधार पर वे अपना कार्यक्रम बना सकें और उसे चालू रख सकें। कई बार उन्हें अपनी रकम के डूब जाने का अंदेशा भी रहता है। यह स्थिति उस बिक्री को भी घटा रही है जो थोड़ी-बहुत बाकी रह गई है।

पुस्तक-व्यवसाय के हितचिंतकों ने इस गंभीर स्थिति पर काफी विचार-विमर्श किया है। वितरण की सहकारी योजना उसी का निष्कर्ष है। इस योजना के अनुसार भारत के विभिन्न केन्द्रों में ऐसे सहकारी भण्डार खोले जायंगे जिनमें हिन्दी की सब प्रकार की और नई-नई पुस्तकें मौजूद होंगी। स्थानीय विक्रेता उन भण्डारों से अपनी आवश्यकता के अनुसार लगभग उन्हीं सुविधाओं पर पुस्तकें प्राप्त कर लेंगे जिन पर उनको उनके प्रकाशकों से मिलती हैं। भण्डारों के सुसज्जित शो-रूमों से फुटकर ग्राहकों को हिन्दी के बहुविध-प्रकाशनों का प्रत्यक्ष परिचय मिलेगा और वे अपनी आवश्यकताएँ अनायास पूरी कर सकेंगे। इस व्यवस्था से पुस्तक-विक्रेताओं को सुविधा मिलेगी, प्रकाशक अपनी रकम की वापसी पर निर्भर हो सकेंगे और

बिक्री में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। भविष्य में यह योजना नेट बुक समझौते को पुनः लागू करने का आधार भी बन सकेगी। समझौते की उपादेयता से सभी सहमत हैं—कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों ने ही उसके मार्ग में बाधा डाली है। इस योजना से वे कठिनाइयाँ दूर होंगी क्योंकि भण्डार किन्हीं नियमों के अन्तर्गत ही काम करेंगे। भण्डारों से लाभ उठाने वाले बन्धु उन नियमों को प्रत्यक्ष लाभ के कारण अधिक तत्परता के साथ मानेंगे। कुछ केन्द्रों में सफलता मिलने के बाद योजना क्रमशः विस्तृत होती जायगी। संघ ने कार्य-समिति को तीन महीने में योजना को लागू कर देने का आदेश दिया है। योजना की सफलता सबके आंतरिक सहयोग पर ही निर्भर करती है। विश्वास है कि वह सहयोग मिलेगा और योजना अवश्य सफल होगी।

संदर्भ पुस्तकों संबंधी प्रस्ताव ऐसे ग्रन्थ देने की दिशा में पग है जिनका अभाव राष्ट्रभाषा की चतुर्दिक प्रगति में बाधक माना जाता है। कई सरकारी संस्थाएँ भी इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। परन्तु उनकी अपनी सीमाएँ हैं। प्रकाशकों का संगठित और योजनाबद्ध प्रयास इस क्षेत्र में अधिक सफल हो सकता है और तुरंत परिणाम दे सकता है। योजनानुसार और सबके सहयोग से होने के कारण 'डुप्लीकेशन' न होगा और समय तथा धन की बचत भी होगी। संघ के सब सदस्य इसकी बिक्री में भी सहायक होंगे अतएव ऐसी पुस्तकें छापने में आर्थिक प्रश्न बाधक न रहेगा।

इस वर्ष में इन दोनों संकल्पों को क्रियान्वित करने के उपरान्त अगले वर्ष में संघ रचनात्मक दिशा में और भी आगे बढ़ेगा। उसकी प्रगति से पुस्तक-व्यवसाय को तो सामूहिक लाभ होगा ही, राष्ट्रभारती की श्री और शोभा में भी वृद्धि होगी।

१९६३ के हिन्दी साहित्य का परिचय विशेषांक

'हिन्दी प्रकाशक' के इस विशेषांक का सर्वत्र उन्मुक्त स्वागत हुआ है—इसे बड़े काम की चीज बताया गया है और कहा गया है कि ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष अवश्य प्रकाशित किया जाय। स्थानाभाव के कारण वे प्रेरणापूर्ण पत्र इस अंक में प्रकाशित नहीं किये जा सके। परन्तु यह निश्चय हो गया है कि ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा और ऐसे रूपरंग में तथा ऐसे समय पर प्रकाशित होगा कि और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो सके। इस सिलसिले में जो योजना बनेगी वह शीघ्र ही सबकी सेवा में प्रस्तुत होगी। विश्वास है कि हमें प्रत्येक क्षेत्र से पूरा सहयोग मिलेगा और हम हिन्दी-जगत् की यह माँग पूरी करने में सफल होंगे।

पंजाब यूनिवर्सिटी में सबमिशन

१९६७ की मैट्रिक परीक्षा के लिए ९ विषयों की पुस्तकों के सबमिशन की अंतिम तिथि ३० जून है। डोमेस्टिक इकानमी और ड्राइंग की पुस्तकें ३१ अगस्त तक ली जायंगी।

१९६७-६८ की हायर सेकण्डरी परीक्षा के लिए पुस्तकों के सबमिशन की अन्तिम तिथि ३० जून है। फिजिक्स और कैमिस्ट्री की पुस्तकें ३१ अगस्त तक ली जायंगी।

शिक्षा मंत्रालय का पुनर्गठन

केन्द्रीय शिक्षामंत्री श्री मोहम्मद अली करीम भाई छागला ने लोक सभा में बताया कि शिक्षा मंत्रालय के पुनर्गठन का काम हाल में पूरा हो गया। इसकी शुरुआत शिक्षा और विज्ञान के दो अलग-अलग विभागों की समाप्ति से हुई। पुनर्गठन करते समय सारे मंत्रालय का काम दो सचिवों के अधीन दो भागों में बांट दिया गया। उन्होंने बताया कि पुनर्गठन का मुख्य आधार, एक दूसरे से संबन्धित कामों को केन्द्रित करना है।

उन्होंने बताया कि स्कूली शिक्षा का सारा काम, एक ब्यूरो करेगा तथा शिल्प और विश्वविद्यालयों की शिक्षा का काम, उच्च शिक्षा, ब्यूरो करेगा। छात्रवृत्तियों आदि का काम अब तक बंटा हुआ था लेकिन अब यह काम छात्रवृत्ति ब्यूरो करेगा। इसी तरह भाषा, साहित्य और ललित कलाओं का काम भी एक अलग ब्यूरो पर सौंपा जाएगा। साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यक्रम बनाने और प्रकाशन हुआ आँकड़े इकट्ठा करने का काम भी एक ब्यूरो करेगा। उन्होंने बताया कि इस पुनर्गठन से काम जल्दी होगा और कोई काम दोहराया नहीं जाएगा।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ : ९वां वार्षिक अधिवेशन (इलाहाबाद)

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का ९वां वार्षिक अधिवेशन, इलाहाबाद में २६ और २७ अप्रैल, सन् १९६४ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय भवन में हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश जी ने की। इस सम्मेलन में दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा, पटना, गया तथा भारत के अन्य विभिन्न स्थानों से आये प्रकाशन-व्यवसाय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

स्वागत और उद्घाटन

अधिवेशन का प्रारम्भ २६ अप्रैल को सायंकाल ५ बजे हुआ। अधिवेशन के उद्घाटन के लिए कविवर श्री सुमित्रानन्दन पन्त उपस्थित थे। स्वागत समिति के अध्यक्ष थे लीडर प्रैस एवं भारती भण्डार के प्रधान व्यवस्थापक श्री बी. पी. ठाकुर। आपने अपने स्वागत-वचन में कहा कि प्रकाशक संघ को व्यवसाय के सामूहिक चिन्तन का कार्य करना चाहिए। प्रकाशक संघ द्वारा प्रस्तावित 'नेट बुक' समझौता आज किन्हीं परिस्थितियों के कारणवश नहीं चल पा रहा है। इसको पुनः चलाना चाहिए।[१]

स्वागताध्यक्ष के वक्तव्य के बाद संघ के प्रधानमंत्री श्री कन्हैयालाल मलिक ने ६३-६४ की कार्यवाही तथा ६३-६४ के आय-व्यय का विवरण सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया। आपने आय-व्यय पर लेखा निरीक्षक की रिपोर्ट भी प्रस्तुत की।[२]

तदनन्तर संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्द जैन ने श्री सुमित्रानन्दन पंत से अधिवेशन के उद्घाटन के लिए प्रार्थना की। श्री पन्त ने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि प्रकाशकों को उपयोगी साहित्य प्रकाशित करना चाहिए। इस समय जो अनूदित प्रकाशन हो रहा है इस पर भी प्रकाशकों को ध्यान देना अति आवश्यक है। प्रकाशक एवं लेखक साहित्य-सृजन के द्वारा ही समाज का कल्याण कर सकता है।[३]

उद्घाटन भाषण के पश्चात् श्री जैन ने संघ के नव-निर्वाचित सभापति श्री ओमप्रकाश जी का परिचय देते हुए कहा कि हिन्दी प्रकाशक संघ के निर्माण से आज तक संघ के लिए श्री ओमप्रकाश जी ने अनवरत कार्य किया है। आपके सहयोग एवं सूझ-बूझ से संघ का कार्य द्विगुणित आशा और उत्साह के साथ होगा, इसकी मुझे पूर्ण आशा है।

अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए श्री ओमप्रकाश जी ने व्यवसाय की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला। आपने सरकार से कागज, गते पर लगे उत्पादन शुल्क लौटाने के बारे में, पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की समस्या, सहकारिता के आधार पर पुस्तकों का प्रचार और प्रसार, अंग्रेजी में कम दामों की पाठ्य-पुस्तकों और संघ द्वारा 'सोर्स बुक्स' आदि विविध प्रश्नों के प्रकाशन पर चर्चा की। आपने सदस्यों से प्रार्थना की कि वह संघ मंच को एक व्यावसायिक मंच समझकर ही इन पर विचार करें। व्यर्थ की नारेबाजी से संघ को लाभ नहीं होगा। परस्पर सहयोग की भावना से संघ का काम बढ़ेगा और व्यवसाय की सामूहिक समस्याओं का निराकरण भी किया जा सकता है।[४]

संघ के उपाध्यक्ष श्री वाचस्पति पाठक ने आगत व्यक्तियों का आभार प्रदर्शित किया। श्री पाठक के कविवर पन्त, श्री बी. पी. ठाकुर तथा स्वागत समिति के सदस्यों को धन्यवाद देने के साथ अधिवेशन की २६ तारीख के कार्य की समाप्ति हुई।

---

१. संपूर्ण स्वागतभाषण 'हिन्दी प्रकाशक' के इसी अंक में पृष्ठ ७ पर देखें।
२. कार्यवाही और रिपोर्ट पृष्ठ ९ पर देखें।
३. श्री पन्त जी का भाषण पृ० १३।
४. अध्यक्ष का पूरा भाषण 'हिन्दी प्रकाशक' के इसी अंक में पृष्ठ १५ पर देखें

अनौपचारिक चर्चा

इस कार्यवाही के पश्चात् आए हुए प्रतिनिधियों में अनौपचारिक रूप से पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की समस्या पर विचार-विनिमय हुआ। इस गोष्ठी में पराग प्रकाशन के संचालक श्री अखिलेश जी, श्री रामतीर्थ भाटिया, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, श्री वाचस्पति पाठक, श्री मोहित, श्री हंसकुमार तिवारी आदि प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

विचार-गोष्ठी

२७ अप्रैल को प्रातः चायपान के पश्चात् श्रीमती महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में एक विचार-गोष्ठी 'लेखक एवं प्रकाशक के सम्बन्ध' विषय पर हुई। इस गोष्ठी में डा. रघुवंश, डा. एतशामहुसैन, श्री कृष्णचन्द्र बेरी, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, श्री हंसकुमार तिवारी, श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन और श्री श्रीकृष्णदास ने भाग लिया। लेखक और प्रकाशक दोनों पक्षों ने अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में अध्यक्ष-पद से भाषण करते हुए श्री महादेवी ने कहा कि लेखक और प्रकाशक दोनों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। हम लेखक कभी प्रकाशक से दुर्भाव नहीं कर सकते। प्रकाशक सरस्वती के मंदिर के प्रहरी हैं और लेखक उसके उपासक। दोनों के सहयोग एवं सद्भावना से सत् साहित्य का सृजन हो सकता है और ऐसा साहित्य ही कल्याणकारी है।[१]

गोष्ठी के समारम्भ के अवसर पर श्री वाचस्पति पाठक ने आगत व्यक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए कहा कि आज हिन्दी के पाठकों की कमी है। प्रयाग में हिन्दी के १०० से अधिक साहित्यकार एवं अध्यापक रहते हैं किन्तु महादेवी जी की नयी कृति की भी एक सप्ताह में १०० प्रतियां नहीं बिकतीं। स्वयं क्रय करके पढ़ने की रुचि का यहां अभाव है।

खुला अधिवेशन

सायंकाल ५ बजे श्री ओम प्रकाश जी की अध्यक्षता में खुला अधिवेशन हुआ जिसमें प्रकाशन व्यवसाय संबंधी १० महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। शोक प्रस्ताव अध्यक्ष ने सदन के सम्मुख प्रस्तुत किया। दिवंगत आत्माओं के प्रति सभी प्रतिनिधियों ने दो मिनट मौन खड़े होकर प्रार्थना की। इसके बाद श्रीकृष्णचन्द्र बेरी, श्री वाचस्पति पाठक, श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, श्री कन्हैयालाल मलिक, श्री दयानन्द वर्मा, श्री दिनेश और श्री सीताशरण द्वारा प्रस्तुत ८ प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। विधान में संशोधन का प्रस्ताव श्री रघुवीर शरण बंसल ने प्रस्तुत किया जिसमें संशोधन की तीन धाराएं वापिस ले ली गईं, शेष धाराएं सर्वसम्मति से स्वीकृत हुईं। इस प्रस्ताव पर श्री ओंकार शरद्, श्री सीताशरण सिंह, श्री वाचस्पति पाठक ने विशेष रूप से भाग लिया।[२]

सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने अध्यक्ष से प्रार्थना की कि विगत वर्षों की परम्परा के अनुसार वह आगामी वर्ष के लिए कार्यकारिणी का चयन अपनी इच्छानुसार कर लें। इस सुझाव का सम्पूर्ण सदन ने स्वागत किया। कार्यकारिणी की सूची सदन के सम्मुख उसी दिन अध्यक्ष ने प्रस्तुत की।[३]

अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी ने सदस्यों से अपील की कि यदि संघ का कार्य सुचारु रूप से चलाना है तो उसके लिए धन की आवश्यकता है। धन के लिए उस समय के उपस्थित व्यक्तियों ने ३०००) रुपये से अधिक देने की घोषणा की।[४]

इस अधिवेशन के लिए केन्द्रीय उप-शिक्षामंत्री श्री भक्तदर्शन, सेठ गोविन्ददास, श्री वृन्दावनलाल वर्मा तथा विभिन्न साहित्य संस्थाओं एवं प्रकाशक सदस्यों के सन्देश, सुझाव एवं विचार प्राप्त हुए।

कुछ अन्य प्रकाशकों ने भी इस कोश में बाद में रुपये भेजने का आश्वासन दिया।

---

१. विचार-गोष्ठी का विवरण पृ. २७
२. प्रस्ताव पृष्ठ ३१ पर देखें।
३. सूची पृ. ३५
४. अपील पर प्राप्त धन का विवरण पृ. ३५

स्वागताध्यक्ष श्री बी० पी० ठाकुर का स्वागत-वचन

सभापति महोदय, महिलाओ एवं बन्धुओ,

आज प्रयाग की इस पुण्य-भूमि में आप आगत बन्धुओं का स्वागत करते हमें बहुत हर्ष हो रहा है। इस नगर की बहुविध महत्ता के संबंध में, जिसे सम्यक् रीति से बताने में अत्यधिक समय-सापेक्ष है, हम नहीं पड़ेंगे। हम यह जानते हैं कि आप सभी प्रयाग के गौरव को किसी से कम नहीं जानते। सिर्फ इस अवसर पर यह स्मरण करना हम नहीं भूलेंगे कि हम हिन्दी के प्रकाशकों के लिए केवल इस कारण भी यह नगर वन्द्य है, कि यह हिन्दी के लिए दधीचि की तरह अपने को उत्सर्ग कर देने वाले प्रातःस्मरणीय पुरुषोत्तमदास जी टंडन की कर्मभूमि रही है। आप लोग, उन्हीं टण्डन जी के जीवनव्यापी महत उद्देश्यों में से एक, हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में संलग्न हैं। अतः आप सब बन्धुओं को जो हिन्दी साहित्य के साधनारत प्रकाशक हैं, यहाँ एकत्र पाकर हम प्रयाग के नागरिकों और प्रकाशकों की ओर से आपका पुनः स्वागत करते हैं।

आप सभी गण्यमान्य प्रकाशक हैं। हम समझते हैं कि आप लोग वर्तमान प्रकाशन की गतिविधि से और उसकी सभी समस्याओं से भलीभाँति परिचित हैं। आप प्रकाशन जगत की समस्याओं पर विचार करने के लिए सुदूर स्थानों से यहाँ आये हैं; अतः हम निश्चिन्त हैं, और हमें विश्वास है कि आप अपने विचार-विमर्श से आज की ज्वलन्त समस्याओं का निराकरण करने में सफल होंगे।

'नेटबुक एग्रीमेंट' की आवश्यकता

इस अवसर पर दो-एक बातों की ओर संकेत करने का लाभ मैं लूँगा। 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ' का अपने प्रारम्भिक जीवन में सबसे बड़ी सफलता नेटबुक-एग्रीमेंट का चालू करना था। यह नीति हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय में एक स्थिरता और संरक्षण ला रही थी। कमीशन के होड़ और टेण्डर-प्रथा पर भी इसका उचित प्रभाव पड़ रहा था। अनेक राज्य-सरकारों ने तथा पुस्तकालयों ने हमारी नीति को मानकर अपनी खरीदारी में अनुकूल परिवर्तन किए थे। यह सब हो ही रहा था कि दुर्भाग्य से छिटपुट उभरती दुर्नीतियों को देखकर हम उससे विरत हो गये। आज हममें से बहुतों का यह विश्वास है कि संघ ने उसे चलाने में जिस धैर्य की आवश्यकता थी, उससे काम नहीं लिया। उचित प्रयत्न के द्वारा उसका नियमन न कर उसे त्याग दिया। यह अपने गले में आप फाँसी की रस्सी डालनी थी। नेटबुक-एग्रीमेंट को पुनः जीवित करने का प्रयत्न हम सब लोगों का प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए। हम जागरूक प्रकाशक वर्ग से कहना चाहते हैं कि अनुष्ठित संकल्प बुद्धि से इसे आप ग्रहण करें—इसके लिए प्रयत्न करें, इसके बिना प्रकाशन का व्यवसाय, रेगिस्तान का नापना सिद्ध होगा।

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का यह रूप भी चिन्त्य है कि इसमें उत्पादन और वितरण का काम प्रायः सभी प्रकाशक स्वतः करते हैं। इसका भी मुख्य कारण नेटबुक-एग्रीमेंट का अभाव है। नेटबुक-एग्रीमेंट के अभाव के कारण पुस्तक विक्रेता निश्चित लाभांश की आशा नहीं रखता। उसे भय रहता है कि प्रकाशक जो अपना तथा अन्य प्रकाशकों का माल भी अपने पास बटोर रहा है, उससे वह जब चाहे उसे शिकस्त दे सकता है। दूसरी ओर प्रकाशक भी, वितरक बन कर अपने माल का बहुत कुछ देकर अन्य का प्रकाशन ही उपलब्ध कर पाता है। फलतः, प्रकाशन और वितरण की अपनी-अपनी दिशाओं में जो गति होनी चाहिए थी—वह है नहीं। संघ को, जो मात्र प्रकाशकों की संस्था है, पुस्तक-विक्रय-व्यवसाय को पनपाने के लिए ऐसी व्यवस्थाओं को उत्पन्न करना चाहिए जिससे शुद्ध पुस्तक-विक्रेता मैदान में आवें और अपनी शक्ति पुस्तक के प्रचार में लगा दें।

विविध क्षेत्रों का महत्त्व

हम इस ओर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि हमारा प्रकाशन सब तरफ से प्रायः एक ही तरह का आ रहा है, अर्थात् हमारा अधिकांश प्रकाशन ललित-साहित्य पर निर्भर करता है। हमने अलग-अलग से क्षेत्र अपने लिए नहीं चुने हैं। इस कारण हमारा प्रकाशन

विविध रुचि रखने वाले पाठकों के सब वर्ग को प्रभावित नहीं कर पाता। व्यावसायिक दृष्टि से विभिन्न विषय वार प्रकाशन जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक राष्ट्रीय दृष्टि से भी हमें इस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। क्योंकि हम सभी हिन्दी को राजभाषा के रूप में व्यवहार करने की माँग करते हैं, उधर शिक्षा में इसकी अनिवार्य आवश्यकता मानते हैं तथा न्यायालयों की भाषा भी चाहते हैं, आदि। सब तरफ ध्यान दें तो हमें अगणित विषयों पर साहित्य उपलब्ध करना है। अब आप केवल एक विषय को लेकर अनुमान कीजिए—जैसे, अगर केवल न्यायालय आज हिन्दी माध्यम से काम करना चाहे तो उसके लिए कम से कम हमारे पास एक लाख पृष्ठ का साहित्य तो चाहिए ही। यह यदि हम प्रस्तुत करना चाहें तो कितना समय और कितनी शक्ति चाहिए। इस प्रकाशन के प्रस्तुत होने के मध्य में प्रतिवर्ष कुछ नहीं तो, पाँच हजार पृष्ठ का साहित्य जिसे प्रकाश में लाना होगा, तैयार होता रहेगा। यही स्थिति विविध क्षेत्रों में है। ऐसी स्थिति में नये-नये क्षेत्रों में अपना कोटा स्थिर कर हम, हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में अपना योग तो देंगे ही, व्यावसायिक दृष्टि से भी हमारी समृद्धि का द्वार उन्मुक्त होगा।

प्रिय बन्धुओ, हम आपका अधिक समय नहीं लेंगे। हमें कुछ विशेष कहना भी नहीं है। केवल यह भावना हमारे भीतर अवश्य है कि, आप सब लोग अब ऐसे निश्चय पर पहुँचें जिससे इस संघ का होना हमारे लिए अनिवार्य महत्त्व का हो जाए। हमारी सहयोग-भावना क्रियाशील हो उठे। संघ के निर्णयों के प्रति हम अपना दायित्व अनुभव करें, एक-दूसरे के हित में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हो तथा अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक-संघ हमारी शक्ति का प्रतीक हो।

अन्त में, मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहूँगा, उस स्नेह के लिए, जो इस अवसर के लिए आपने सहज ही मुझे दिया है।

●

वार्षिक रिपोर्ट

इस वर्ष में कार्यसमिति की चार बैठकें क्रमशः ४ अगस्त, ६३, १३ अक्तूबर, ६३, ३ मार्च, ६४ और २६ अप्रैल, ६४ को हुईं। इन बैठकों में निम्नलिखित विषयों पर विचार कर निर्णय किये गए :

दिल्ली में हिन्दी की सभी पुस्तकों की उपलब्धि, मार्केट रिसर्च, हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की बृहत् सूची, सामूहिक विज्ञापन, कागज की समस्या, राष्ट्रीय पुस्तक समारोह, पुस्तक-प्रदर्शनी, पुस्तकों की सरकारी खरीद में अनियमितता, पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण, रेल-भाड़े में वृद्धि तथा पुस्तक-विक्रेताओं का पुनः पंजीकरण।

संघ के पिछले वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर ऐसी योजना बनाने का प्रस्ताव हुआ था कि हिन्दी पुस्तकें सर्वत्र सुलभ हों जिससे उनकी बिक्री बढ़े और पाठकों को भी पुस्तकें प्राप्त करने में असुविधा न हो। सर्वप्रथम दिल्ली में सभी प्रकाशकों की हिन्दी-पुस्तकें उपलब्ध कराने की बात सोची गई। इस सम्बन्ध में लगभग २०० प्रकाशकों को पत्र लिखे गये। प्रकाशक बन्धुओं से जो उत्तर प्राप्त हुए हैं, उनमें संघ के इस कार्य को सराहनीय प्रयास माना गया है और कहा गया है कि इससे सबको लाभ होगा। साथ ही हिन्दी-पुस्तकों की बिक्री निश्चित रूप से बढ़ेगी। इस संबंध में विभिन्न प्रकाशकों से जो जानकारी कार्यालय को मिली उसकी सूचना 'हिन्दी प्रकाशक' के फरवरी, ६४ अंक में प्रकाशित की गई है।

मार्केट रिसर्च का कार्य श्री कृष्णचन्द्र बेरी की देख-रेख में हो रहा है। जिन शोधार्थी के सहयोग से यह कार्य होना था, उनके साथ एक आकस्मिक दुर्घटना होने से, इसमें विलम्ब हो गया है।

हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की बृहत् सूची की आवश्यक रूप-रेखा तैयार कर ली गई है। यह कार्य काफी बड़ा है और इसके लिए काफी धन की आवश्यकता है। धन के अभाव में, योजना के महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हुए भी, संघ इसे कार्यान्वित नहीं कर सका है। कार्यसमिति ने अपनी बैठक दिनांक ३ मार्च, ६४ में इस कार्य हेतु शिक्षा मंत्रालय से अनुदान प्राप्त करने तथा अनुदान मिल जाने पर इस योजना को अवश्य कार्यान्वित करने का निश्चय किया है।

पुस्तकों के सामूहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने तथा कागज सम्बन्धी समस्या के बारे में सभी सदस्यों को पत्र लिखे गये किन्तु किसी की ओर से कोई उत्तर न मिलने के कारण कार्यसमिति ने अपनी बैठक दिनांक ४-८-६३ में इन कार्यों को स्थगित कर दिया।

पुस्तकों की बिक्री की समस्या सम्बन्धी सहकारिता तथा अन्य उपायों के विषय में सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर कार्यसमिति ने विचार किया। काफी विचार-विमर्श के उपरान्त निश्चय किया गया कि विक्रय-सहकार की योजना अच्छी है, किन्तु यह कार्य संघ के तत्वावधान में न होकर, विभिन्न संस्थानों के समुदायों द्वारा किया जाय।

प्रकाशक संघ की प्रेरणा से १४ से २० नवम्बर, ६३ तक भारत के प्रमुख नगरों में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह काफी उत्साह के साथ मनाया गया। प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के साथ प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकारों और प्रभावशाली समाचार-पत्रों ने भी इसमें रुचि ली। किन्तु अधिकारियों और

सार्वजनिक क्षेत्रों से पर्याप्त सहयोग नहीं मिल सका। ऐसा अनुभव किया गया कि इन क्षेत्रों में अभी तक पुस्तकों का महत्व हृदयंगम नहीं हुआ।

इस अवसर पर संघ की ओर से पुस्तकों के पढ़ने, खरीदने और भेंट करने की रुचि को जागृत करने के लिए एक आकर्षक पोस्टर भारत के सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं को छापकर भेजा गया तथा सार्वजनिक स्थानों पर लगाया गया। इस सिलसिले में हिन्दी के प्रमुख दैनिक पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कराये गए और सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया गया।

खेद है कि धनाभाव के कारण प्रस्तावित साहित्येतर पुस्तकों की प्रदर्शनी न हो सकी। आशा थी कि शिक्षा मंत्रालय से इस कार्य हेतु अनुदान मिल जायेगा, किन्तु आपत्कालिक स्थिति के कारण उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। प्रकाशक बन्धुओं से भी पर्याप्त सहयोग न मिल सका। प्रदर्शनी के लिये जो पुस्तकें प्राप्त हुई थीं, उनमें से कुछ पुस्तकों का उपयोग 'हिन्दी प्रकाशक' का '६३ के प्रकाशनों का परिचय-विशेषांक तैयार करने में किया गया है। सभी पुस्तकें सम्बन्धित प्रकाशकों को लौटाई जा रही हैं।

सरकारी खरीद में अनियमितता तथा पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में 'हिन्दी प्रकाशक' में लेख तथा अग्रलेख प्रकाशित करके इन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया।

१ अक्तूबर, '६३ से रेल-भाड़े में कम-से-कम किराये के सम्बन्ध में की गई वृद्धि का संघ ने विरोध किया और रेलवे-मन्त्रालय के अधिकारियों से भेंट करके, बढ़े हुए रेल-भाड़े से पुस्तक-व्यवसाय को होने वाली हानि और परिणामस्वरूप शिक्षा पर पड़ने वाले कुप्रभाव से अवगत कराया। फलतः यह स्पष्ट हो गया है कि २५ क्यूबिक सेंटीमीटर आकार तथा २ किलो वज़न तक के बंडलों पर भाड़ा १ रु० ही होगा। पुस्तकों के सभी वज़न के बंडलों पर पूर्ववत् रेल-भाड़ा रखने के सम्बन्ध में रेलवे-मन्त्रालय से पत्र-व्यवहार जारी है।

पुस्तक विक्रेताओं के पुनः पंजीकरण के सम्बन्ध में निर्मित उपसमिति की रिपोर्ट पर कार्यसमिति ने विचार किया। विषय की महत्ता और गम्भीरता को देखते हुए, खुले अधिवेशन में इस पर विचार करने का निश्चय किया गया।

जाली पुस्तकों की समस्या को भी संघ ने उठाया है। संघ की ओर से एक बुकलैट सभी संसद-सदस्यों की सेवा में भेजा गया है और इस समस्या की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया गया है। साथ ही उनसे अनुरोध किया गया है कि वे तत्सम्बन्धी कानून में आवश्यक संशोधन करायें ताकि जाली पुस्तकों को छापने और बेचने वालों को कठोर दण्ड दिया जा सके। विभिन्न राज्यों के शिक्षा-मंत्रियों और शिक्षा-संचालकों को इस सम्बन्ध में पत्र भेजे गये हैं कि वे भी इस समस्या को हल करने के लिए समुचित प्रयास करें।

संघ का मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' भी नियमित रूप से संघ के सदस्यों और पुस्तक-जगत् की सेवा करता रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी यह आत्म-निर्भर रहा है। संघ पर इसका कोई भार नहीं पड़ा। इस वर्ष में इसके दो विशेषांक क्रमशः 'राष्ट्रीय पुस्तक समारोह विशेषांक' और 'सन् १९६३ के हिन्दी-साहित्य का परिचय विशेषांक' प्रकाशित किये गये हैं। इसकी उपयोगिता का अनुभव तो आप स्वयं ही करते होंगे। मुझे इस विषय में कहने की आवश्यकता नहीं।

धन्यवाद !

२६ अप्रैल, १९६४

कन्हैयालाल मलिक,
प्रधान मंत्री

चिट्ठा (३१-३-६४)

देनदारियाँ		
लेनदार		८०६·४४
सेमीनार खाता		
पिछले वर्ष का शेष	२१६३·१४	
यूनेस्को से प्राप्त	२६००·००	
	४७६३·१४	
इस वर्ष में किये गए भुगतान	३२३५·३३	
		१५२७·८१
सामान्य कोश		
पिछले वर्ष के अनुसार शेष	३०२१·५२	
वर्ष में प्राप्त दान	३३५०·१८	
	६३७१·७०	
धन दिया गया	३·८४	
इस वर्ष का घाटा	२५७१·४३	
		३७९६·४३
		६१३०·६८

लेनदारियाँ	
देनदार	३३५४·४६
बैंक में जमा :	
पंजाब नेशनल बैंक दिल्ली	२५१९·०१
इलाहाबाद बैंक	२४६·६१
नकद	१०·६०
	६१३०·६८

आय-व्यय लेखा (३१-३-६४)

कार्यालय-व्यय		
वेतन	७२०·००	
डाक-व्यय	३९४·०६	
स्टेशनरी	२३४·६५	
यातायात	४४·२६	
विविध व्यय	११३·५९	
आडिट फीस	१५०·००	
बैंक चार्जेज	२३·५०	
मनोरंजन व्यय	८२९·८३	
प्रदर्शनी व्यय	४·०७	
		२५१३·९६
हिन्दी प्रकाशक के प्रकाशन सम्बन्धी व्यय		११२९२·४५
राष्ट्रीय पुस्तक समारोह (६१-६२) अंकेक्षित विवरण दिनांक १६ अक्टूबर ६२ के अनुसार व्यय	५३७३·९९	
बाद में प्राप्त व्यय	६११·३५	
		५९८५·३४
राष्ट्रीय पुस्तक समारोह (६३-६४) नकद व्यय		१७७२·०६
		२१,५६३·८१

आय		
सदस्यता शुल्क		१८३०·००
हिन्दी प्रकाशक		
चन्दा	१५०·००	
विज्ञापन	११२३२·००	
		११३८२·००
संघ-प्रकाशन बिक्री		३४·८८
प्रदर्शनी फीस		१४४·५०
राष्ट्रीय पुस्तक समारोह (६१-६२) (अंकेक्षित विवरण दिनांक १६-१०-६२ के अनुसार)		
विज्ञापन	३५००·००	
दान	१०१·००	
उत्तर प्रदेश सरकार से प्राप्त अनुदान	२०००·००	
		५६०१·००
घाटा : (सामान्य कोश से पूरा किया गया)		२५७१·४३
		२१,५६३·८१

आडीटर की रिपोर्ट

प्राप्त पुस्तकों और दी गई रचना के आधार पर हिसाब सही पाया।

एम. पाल एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स

२१, लक्ष्मी इंश्योरेंस भवन,
आसफअली रोड, नई दिल्ली
२१-४-६४

काला हंस

टॉमस मान

नोबेल पुरस्कार विजेता १९२९

The Black Swan का

अनुवाद

काशीनाथ मिश्र

सम्पादन

रतनलाल जोशी

मूल्य—तीन रुपये

पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन :

१—५ प्रति— २५ प्रतिशत

६ प्रतियाँ या उपहार $33\frac{1}{3}$ प्रतिशत

पैकिंग और रेल किराया हम देते हैं

डाक से मंगवाने पर डाक खर्च अलग लगता है।

रूपा एण्ड कम्पनी

१५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,
कलकत्ता-१२

•

११, ओक लेन, फोर्ट,
बम्बई-१

•

९४, साउथ मलाका
इलाहाबाद-१

'काला हंस' एक ५० वर्षीया विधवा रोज़ेलि-वान-टम्लर की संवेदनापूर्ण व्यंगात्मक कहानी है। यह महिला अपना जीवन बिता रही थी। उसके परिवार में उस समय एक सजीवता आ जाती है जब उसके एक पुत्र को २४वर्षीय अमरीकी युवक 'केन कीटन' एडवर्ड अंग्रेजी की शिक्षा देने के लिए आना आरम्भ करता है। रोज़ेलिवान्-टम्लर इस अमरीकी युवक के शारीरिक आकर्षण से प्रभावित हो जाती है। रोज़ेलि इस घातक रोग के प्राथमिक लक्षणों की गलत व्याख्या करते हुए यह विश्वास रखती है कि उसमें वासना को तृप्त करने की क्षमता अब भी है, अतः हाल्टर-डार्फ की यात्रा करते हुए वह केन कीटन से अपना प्रेम व्यक्त कर देती है।...टामस मान ने एक ऐसे साहसिक और जटिल विषय पर कलम उठायी है जिसे निभाना उसी लेखक के वश की बात है जिसमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने की अद्भुत क्षमता हो। इसमें मान को—गोथियन शैली और साहस, दोनों में—असाधारण पराकाष्ठा तक सफलता प्राप्त हुई है।

टामस मान

"१८७५—१९५५"

जर्मनी के महान् साहित्य-मर्मज्ञ, उपन्यासकार, कहानी तथा निबन्ध-लेखक, मानवतावादी तथा नोबेल-पुरस्कार-विजेता टामस मान का जन्म ६ जून सन् १८७५ में हुआ था।

मान साइकिल चलाना बहुत पसन्द करते थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी टाइपराइटर का प्रयोग नहीं किया और न कभी कोई कार ही चलायी। तीस वर्ष की आयु में मान का विवाह म्युनिख के पास एक समृद्ध गणित के प्रोफेसर की एकमात्र पुत्री केथ प्रिंशिम से हुआ।

'बडेन ब्रुक्स' के प्रकाशन से टामस मान की साहित्यिकों की अग्रिम श्रेणी में गणना होने लगी। मुख्यतः इसी कृति के कारण उन्हें सन् १९२९ में 'नोबेल पुरस्कार' मिला। इस उपन्यास के अब तक लगभग १५० संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, और संसार की प्रायः सभी भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो चुका है।

कविवर सुमित्रानंदन पंत का उद्घाटन-भाषण

प्रकाशक संघ के वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कविवर श्री पंत ने अपने भाषण में कहा कि मैं इस प्रकाशक संघ का प्रकाशक सदस्य तो नहीं हूं किन्तु लेखक होने के नाते इस अधिवेशन का उद्घाटन करने में मुझे प्रसन्नता है। लेखक और प्रकाशक का सम्बन्ध ज्यों-ज्यों घनिष्ठ होता जाएगा त्यों-त्यों राष्ट्रभाषा में नये-नये ग्रंथों का प्रकाशन होता जायेगा। लेखक का कार्य बीज बोना है और प्रकाशक का कार्य है क्षेत्र (खेत) को बीज बोने योग्य बनाना। दोनों के पारस्परिक सहयोग से ही उत्तम फसल पैदा होगी। प्रकाशन का कार्य केवल व्यावसायिक नहीं है। अपितु इसके पीछे राष्ट्रनिर्माण का एक उद्देश्य है। प्रकाशकों का अपना नैतिक दायित्व कम नहीं।

आज कहा जाता है कि हिन्दी के पाठक नहीं हैं। यदि इस तथ्य को भी सत्य मान लिया जाय तो केवल ऐसा कहने से ही कार्य नहीं चल सकेगा। अनेक अन्य भारतीय प्रादेशिक भाषाओं में पाठक अधिक हैं तो हिन्दी में पाठकों की कमी समझ में नहीं आती। प्रकाशकों का कर्तव्य है कि वे उपयोगी साहित्य का प्रकाशन करें, समाज में पठन-पाठन की रुचि की अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहें। हमें जनता का ध्यान सत साहित्य की ओर आकर्षित करना होगा। प्रकाशक और लेखक ग्राम, नगर एवं लोक-जीवन का अनुभव करके उनकी समस्याओं का अध्ययन करें और उसके अनुकूल साहित्य का निर्माण करें, इससे समाज का निर्माण होगा।

प्रकाशक केवल मनोरंजन के लिए ही साहित्य का सृजन न करें इससे समाज का कल्याण न होगा अपितु वह समाज को पतन की ओर ले जाएगा। हमें देश की आवश्यकता का अनुभव करके साहित्य का निर्माण करना चाहिए। ललित साहित्य के साथ अन्य विषयों में राजनीति, समाज-शास्त्र, वैज्ञानिक, मानविकी, तकनीकी विषयों में प्रकाशन करना चाहिए। जीवन की समस्या, स्त्रियोपयोगी एवं बालोपयोगी साहित्य का निर्माण करना भी आज के युग की आवश्यकता है। सुरुचिपूर्ण एवं स्तरानुकूल साहित्य-उत्पादन समाज में जीवन जागृत करेगा। हिन्दी में प्राचीन साहित्य के स्पष्टीकरण की कमी है। शुद्ध पाठ की कमी है। प्रकाशन-जगत् में अच्छे से अच्छा साहित्य प्रकाशित करने की स्पर्धा का होना आवश्यक है। नये-नये बिषय के प्रकाशन से अनुचित होड़ समाप्त होगी, और प्रकाशन के क्षेत्र का विस्तार होगा।

प्रत्येक विषय की जानकारी के लिए प्रकाशक का प्रबुद्ध होना आवश्यक है। जब प्रकाशन-जगत् में नये-नये क्षेत्र मिलेंगे तब पाठकों का विस्तार होगा। हिन्दी प्रकाशन के साथ समाचार पत्रों के पाठकों की कमी है। आज पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री निर्जीव होती जा रही है। हमें युग की समस्याओं के समाधान की बात सोचनी चाहिए। प्रबन्ध सम्पादक अधिक हों तो पाठकों की रुचि में अभिवृद्धि होगी। प्रकाशक संघ जीती-जागती संस्था है इससे राष्ट्र-हित एवं लोक-हित की कल्पना की जा सकती है।

आज हमारे देश में विदेशी साहित्य का अनुवाद बड़ी तेजी के साथ हो रहा है। हमें सोच-समझकर साहित्य का अनुवाद करना चाहिए। प्रकाशक संघ एक सलाहकारी बोर्ड बनाये जिससे ठीक अनुवाद हो सकें। आज हमारे समाज में पतनकारी अनूदित साहित्य तेजी से प्रकाशित हो रहा है। हमें इस पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। भारत की अपनी एक भिन्न संस्कृति है। विश्व के सामाजिक ह्रास को आज भी भारत ही दूर कर सकता है। आज नए चैतन्य दृष्टिकोण की कमी है।

हमारा देश तेजी के साथ बढ़ रहा है। सामूहिकवाद, संगठनवाद एक शक्ति है। नैतिक बल, आत्मबल के संगठन से विश्व का कल्याण होगा। संस्कृति की स्वच्छता के साथ देश-समाज के लिए उपयोगी साहित्य चाहिए। नैतिक पक्ष को विकसित करने से आर्थिक स्तर उठ सकेगा। प्रकाशकों को आशीर्वाद देते हुए मान्य श्री पंत जी ने अपने भाषण के समापन में कहा कि लेखक और प्रकाशक दोनों के पारस्परिक सहयोग से साहित्य निर्माण सुरुचिपूर्ण एवं समाज के लिए कल्याणकारी हो, यही मेरी शुभ कामना है।

अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश का अभिभाषण

माननीय पंतजी तथा बन्धुओ,

प्रकाशन-जगत् की गतिविधियों का वार्षिक लेखा-जोखा देखने-जाँचने के लिए प्रतिवर्ष हम एक जगह एकत्रित होते हैं और उसी उद्देश्य से एक बार फिर मिल रहे हैं। यदि ऐसे अवसरों का उपयोग औपचारिक रूप से अनेकानेक प्रस्ताव स्वीकृत करने और कुछ जोशीले नारे लगाने के बजाए हम मिलकर अपने व्यवसाय की वस्तुस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करने में किया करते तो अधिक लाभ होता। दूर-दूर से आए हुए प्रकाशक यदि ऐसे अवसरों पर सहजभाव से एक दूसरे की कठिनाइयाँ जानने की कोशिश करते, एक दूसरे द्वारा किए गए प्रकाशनों अथवा उनके प्रचार सम्बन्धी नए-नए प्रयोगों और परीक्षणों की सफलता और असफलता के तथ्य एक-दूसरे को बतलाते, सद्भाव से एक दूसरे से विचार परिवर्तन करते, तो काफी लाभ हो सकता था। लेकिन यह मान लेने में कोई हानि नहीं है कि कुछेक वर्षों से वार्षिक सम्मेलनों का सदुपयोग हम नहीं कर पाए हैं; हम जो प्रस्तावादि स्वीकृत करते रहे हैं, उनका हमने कार्यान्वयन नहीं किया है; अनेक प्रस्तावों के कार्यान्वियन में बाधाएं आई हैं और इन बाधाओं और असफलताओं के लिए हमने एक दूसरे को कोसा भी है। लगता यह है कि अनेक ऐसे प्रस्तावों को हम स्वीकृत करने के आदी हो गए हैं, जिनके सम्बन्ध में पक्ष और विपक्ष तथा व्यापारिक दृष्टि से गहरा सोच-विचार हमने नहीं किया होता। इससे उन प्रस्तावों तथा उस मंच के प्रति, जिस पर उन्हें स्वीकृत किया जाता है, एक क्षोभ सा उत्पन्न होता है। एक दूसरे के प्रति सन्देह पैदा होता और फैलता है। इस सच्चाई की उपेक्षा नहीं की जा सकती है कि आज संघ के प्रति कुछ सदस्यों के मन में ऐसी ही स्थिति बन चुकी है।

यदि संघ द्वारा हम कोई ऐसे कदम उठा सकने की संभावना में यकीन न करते होते जिनसे प्रकाशकीय जगत् को सामूहिक लाभ होने की आशा होती, तो शायद बहुत से प्रकाशक अपना मूल्यवान समय अपने-अपने धन्धे में लगाना ही पसन्द करते। लेकिन हमारी सामूहिक कठिनाइयाँ भी हैं जिनका हल भी सामूहिक ही होगा, इसीलिए हम संघ में शामिल होते हैं, उसके अधिवेशनों में आते हैं और उसकी कार्यवाहियों में भाग लेते हैं।

प्रकाशन : एक सोद्देश्य व्यवसाय और टेक्नालोजी का प्रभाव

बहुत बार दोहराया जा चुका है कि प्रकाशन अनेक अन्य व्यवसायों की तरह केवल व्यवसाय ही नहीं है। यह एक ऐसा व्यवसाय है, जो समाज के लिए परम उपयोगी है, जिसका समाज पर प्रभाव पड़ता है। यह एक सोद्देश्य व्यवसाय है। समाज के प्रति अपने दायित्व को समझने वाला प्रकाशक नैतिक रूप से स्वयं अपने लिए यह व्यावसायिक सीमाएं निर्धारित कर लेता है।

मुद्रण के आधुनिक यन्त्रों ने और शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने प्रकाशन की भलाई और बुराई की, दोनों दिशाओं में अनन्त सम्भावनाएं बढ़ा दी हैं और प्रकाशन को अन्य उद्योगों की तरह एक बड़ा लाभकारी उद्योग बना दिया है। पश्चिम में समाज के प्रति नितांत अनुत्तरदायी अनेक प्रकाशक इस माध्यम का मुनाफे के लिए इस्तेमाल करके आज मालामाल हो रहे हैं। अच्छी पुस्तक हर रोज लिखी नहीं जा सकती, लेकिन कोई भी पुस्तक आज बड़ी तादाद में हर रोज छापी अवश्य जा सकती है। जब बड़ी पूंजी लगाकर छपाई की बड़ी-बड़ी मशीनें खड़ी कर दी गयी हैं, तो उन्हें खाली नहीं रखा जा सकता। उनका निरन्तर उपयोग ऐसी पत्र-पत्रिकाएं और ऐसी पुस्तकें छापने में करना ही होगा जो मुनाफे के साथ काफी संख्या में बिक सकें। जिस यन्त्र का बड़े पैमाने पर समाज की शिक्षा के लिए सदुपयोग हो सकता था और अनेक समाजों में हुआ भी है, उसका आज मुनाफे के लिए, या समाज-विरोधी विचारों और दृष्टिकोणों का भ्रमजाल फैलाने के लिए दुरुपयोग भी हो रहा है। पश्चिम में नैतिक मूल्यों के ह्रास के लिए काफी हद तक वहाँ का प्रकाशन-व्यवसाय उत्तरदायी है, वही प्रकाशन-व्यवसाय, जिसने वहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी

शिक्षा के प्रचार में महत्वपूर्ण सहयोग दिया था, आज सांस्कृतिक स्तर पर उसी समाज को खोखला करने पर उतारू भी है।

हमारे देश में उद्योगीकरण की प्रक्रिया जारी हो चुकी है। मुद्रण के क्षेत्र में अभी तक यह प्रक्रिया सीमित है। यहां का प्रकाशन-व्यवसाय भी अभी सुविकसित नहीं कहा जा सकता। शिक्षा, पुस्तकों के पठन-पाठन में रुचि और उपयुक्त क्रय-क्षमता के अभाव में हमारा प्रकाशन-व्यवसाय पश्चिम की तरह, अभी बड़े व्यवसायों की गिनती में नहीं आ सका। लेकिन छपा हुआ अक्षर पढ़ने की क्षमता शिक्षा के प्रचार के साथ नए-नए वर्गों में पैदा हो रही है; देश के नेताओं के वक्तव्य सही मान लिए जाएं, तो इन वर्गों की क्रय-क्षमता में भी एक दो आगामी पंच-वर्षीय योजनाओं की पूर्ति के बाद काफी वृद्धि हो जायगी। यदि इस बीच जनता की रुचि पुस्तकों के पढ़ने की ओर बढ़ी, तो पुस्तकों की मांग में बहुत वृद्धि होनी चाहिए; और वे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ेंगे, यह एक हद तक हम प्रकाशकों पर निर्भर करेगा कि हम किस प्रकार की पुस्तकें छाप कर उन के लिए सुलभ करते हैं। तब यह परखने का अवसर आयगा कि प्रकाशन हमारे लिए व्यक्तिगत लाभ का माध्यम मात्र ही है या एक सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का महत्वपूर्ण माध्यम भी।

देश में प्रकाशन के दो पहलू

आज भी, समय की परिस्थिति-जनित सीमाओं में, सभी प्रकार का प्रकाशन देश में हो रहा है। जहां अपने व्यवसाय को एक दायित्व समझने वाले प्रकाशक हैं, वहां उसके केवल व्यावसायिक पक्ष को देखकर, विकृतियां उभारने वाली पुस्तकों को प्रकाशित करने वालों की संख्या में भी कमी नहीं है। सच तो यह है कि सस्ता साहित्य का प्रचार-प्रसार मानव व्यक्तित्व को पस्त, विकृत और पंगु बनाने वाले साहित्य की अपेक्षा कहीं कम है। सरल और अहानिकर मनोरंजन करने वाले साहित्य की ही बात होती तो ठीक था, लेकिन यहां तो उस साहित्य का अधिक बोल बाला है जो विकृतियों को सहने की आड़ में विकृतियों को उभारता है और व्यक्ति के दृष्टिकोण को असामाजिक बनाता है। प्रकाशनों में केवल नंगी अश्लीलता न हो तो प्रकाशक को आज इस हद तक 'स्वतन्त्रता' है कि वह समाज की स्वस्थ परम्पराओं को चुनौती देने वाले साहित्य को छापे; अपराध और यौन-भूख को उत्तेजित करने वाले सस्ते प्रकाशन निकाले और समाज की नीव प्रत्येक व्यक्ति के जिस नैतिक और स्वस्थ दृष्टिकोण पर निर्भर होती है उसे उखाड़ने में, चाहे अनजाने में, लगा रहे। जिस विचार और व्यवहार की 'स्वतन्त्रता' के लिए देश-देश के लोग महान से महान बलिदान देने के लिए प्रेरित रहते है, वही 'स्वतन्त्रता' अर्थ-विकृति और दृष्टिकोण-हीनता के कारण आज खतरा भी बन रही है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्य प्रकाशक अपने विधान के उद्देश्यों और अपनी परंपराओं से स्वस्थ साहित्य के प्रकाशन में विश्वास रखते हैं, यह हर्ष की बात है। हमारे विधान ने असामाजिक प्रवृत्तियों को उभारने वाली पुस्तकों के प्रकाशकों के लिए सदस्यता का द्वार खुला नहीं रखा है।

राज्यभाषा हिन्दी और हिन्दी के प्रकाशकों का कर्त्तव्य

हिन्दी के राज्यभाषा पद पा लेने के बाद से हिन्दी-प्रकाशकों का दायित्व एक विशिष्ट दिशा में बहुत बढ़ गया है। राज्यभाषा होने के नाते हिन्दी में केवल ललित साहित्य ही नहीं, विभिन्न प्रकार के मानविकी, शास्त्रीय, वैज्ञानिक, तकनीकी और रचनात्मक साहित्य के प्रचुर भंडार की आवश्यकता है। न केवल विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के लिए सभी विषयों की पाठ्य और सन्दर्भ पुस्तकों की बड़ी संख्या में जरूरत है वरन् इन विषयों की जनरल पुस्तकों की भी, जिन्हें कि विद्यार्थी इनके गूढ़तर ज्ञान के लिए चाहें तो प्रयोग कर सकें। यह मान लेने में संकोच नहीं होना चाहिए कि विज्ञान और तकनीक की शिक्षा के लिए ही नहीं, मानविकी शिक्षा के लिए भी, हिन्दी में प्रामाणिक ग्रन्थों की कमी है। अंग्रेजों से दो सौ वर्षों के घनिष्ठ सम्पर्क की विरासत का आज भी प्रभाव है, और हम अंग्रेजी में सोचते-समझते, पढ़ते-पढ़ाते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विकास अपनी ही भाषा के माध्यम से हो सकता है। देश की केवल राज्यभाषा के रूप में ही चाहे हिन्दी प्रतिष्ठित हो सके पर वह देश के

एक बड़े अंश की मातृभाषा भी है। अभी तक लगभग २० करोड़ के इस प्रदेश के नागरिकों के लिए भी हिन्दी के माध्यम से उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो सकी है। इस असफलता के लिए एक हद तक जिम्मेवारी हिन्दी के प्रकाशकों पर भी है जो पिछले १७ वर्ष में अपने प्रकाशनों की दिशा का रुख अधिक नहीं मोड़ सके। आज भी हिन्दी के प्रकाशक अधिकांश में उपन्यास, कहानी, नाटक और कविता छापकर सन्तोष कर रहे हैं। यदि उन्होंने गत वर्षों में अपनी पूंजी और समय का उपयोग हिन्दी पर आए हुए नए दायित्व की पूर्ति में सहायक हो सकने वाले साहित्य के प्रकाशन में भी किया होता, तो हिन्दी उस निरीह स्थिति में नहीं होती जिसमें कि आज वह है। देश में अंग्रेजी ही शिक्षा का माध्यम बनी रहे, इस ओर केवल हमारे देश के कुछ अहिन्दी भाषी प्रदेश ही प्रयत्नशील नहीं हैं, कुछ अन्तरर्राष्ट्रीय शक्तियां भी हैं, जो सांस्कृतिक दृष्टि से हमें अँग्रेजी भाषा का गुलाम बनाकर रखना चाहती हैं। इस सांस्कृतिक गुलामी की पृष्ठभूमि में राजनीतिक स्वाधीनता भी बहुत हद तक सार्थक नहीं रह जाती। इस तर्क में कोई सार नहीं है कि विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के लिए अँग्रेजी का देश में बना रहना आवश्यक है। विश्व के सब स्वतन्त्र देश, जिनकी मातृभाषा अँग्रेजी नहीं है, उच्चतर शिक्षा के लिए अपनी मातृभाषा का ही उपयोग करते है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क के लिए भी देश में विश्व की एक या दो भाषाओं का सीखना आवश्यक होता है; अंग्रेज़ी की शिक्षा को इस देश में केवल इस रूप में लिया जा सकता है।

अंग्रेजी में सस्ती पाठ्य-पुस्तकें

इस प्रसंग में एक बात ध्यान देने योग्य है। देश में अंग्रेजी का प्रभुत्व बना रहे, इसलिए इंगलैंड और अमरीका की सरकारें लाखों रुपयों की आर्थिक सहायता देकर अपने देश के अथवा खुद भारत के प्रकाशकों से विश्वविद्यालयों में प्रयोग के योग्य पाठ्य-पुस्तकों को भारी संख्या में और बहुत कम दामों में प्रकाशित और प्रचारित करवा रही हैं। यह नीति हिन्दी के प्रचार-प्रसार की वैधानिक और सरकारी नीति के एकदम विरोध में है और शायद उसे ही परास्त करने की दृष्टि से अपनाई गई है। यह सरकार के नेताओं को ही मालूम होगा कि क्यों विदेशी सरकारों को देश की राष्ट्रीय नीति में इस प्रकार हस्तक्षेप करने दिया जाता है? यदि भारत की सहायता और विद्यार्थियों को सस्ते दामों में पाठ्य-पुस्तकें सुलभ करना इस विदेशी नीति का उद्देश्य होता तो इंगलैंड और अमरीका की सरकारों और उनकी भारत स्थित एजेंसियों के लिए उचित था कि उन पाठ्य-पुस्तकों के हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवादों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देती, जिससे देश की नीतियों के पालन में किसी प्रकार की बाधा न आती। अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के लिए उचित है कि विदेशी सहायता प्राप्त अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तकों के प्रश्न पर इस दृष्टि से विचार करे और अपना मंतव्य सरकार तक पहुंचाए।

हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के लिए सरकारी सहायता

साथ ही एक प्रश्न उठता है। विदेशी सरकारें अंग्रेजी में छपी अपनी पाठ्य-पुस्तकें भारत के विद्यार्थियों के लिए सस्ते दामों में सुलभ करने को इतनी आतुर दिखाई पड़ती हैं; पर भारत की सरकार की क्यों कोई ऐसी ही नीति नहीं है? क्यों भारत का शिक्षा मंत्रालय अनुदान की कोई ऐसी योजना नहीं बनाता कि विद्यार्थियों को हिन्दी में प्रकाशित विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें कम दामों में उपलब्ध हो सकें?

आज विभिन्न सरकारी नीतियों के फलस्वरूप व्यवहार में इससे बिल्कुल उलटा हो रहा है। कागज और जिल्दबंदी के लिए आवश्यक गत्ते के दामों में पिछले १० वर्षों में बढ़ते हुए उत्पादन-शुल्को के कारण निरंतर वृद्धि हुई है और परिणामतः पुस्तकों के मूल्य बढ़ रहे हैं। सामान्य वजन के प्रिंटिंग पेपर को छोड़कर इधर के बजट में कागज की अच्छी और वजनी किस्मों पर उत्पादन-शुल्क काफी बढ़ा दिया गया है। कागज की मिलों के उत्पादन का अधिकांश सरकार अपनी जरूरतों के लिए नियंत्रित किए हुए है। मुद्रण के आधुनिक यंत्रों के आयात पर कड़ी पाबन्दियाँ हैं और अच्छे कागज और अच्छी छपाई की कोई सुविधाएं न होने पर भी प्रकाशकों के प्रति बराबर यह शिकायत मुखर की जाती है कि देश में पुस्तक-मुद्रण और प्रकाशन का स्तर अच्छा नहीं है और पुस्तकों

के मूल्य ज्यादा रखे जाते हैं।

यदि सरकार को यह अभीष्ट है कि देश के विद्यार्थियों और पाठकों को सस्ते दामों में पुस्तकें मिलें, तो कोई ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि प्रकाशकों द्वारा खरीदे गए कागज पर लगा उत्पादन-शुल्क उन्हें वापिस मिल जाया करे। कच्चे माल के दामों में लगातार वृद्धि होते रहने पर पुस्तकों का मूल्य किस प्रकार कम हो सकता है ? और जब तक पुस्तकों का मूल्य कम न हो, देश की कम क्रय-क्षमता की जनता किस प्रकार उन्हें खरीद सकती है ?

प्रकाशकों का कर्त्तव्य

कोई भी भाषा सही मानो में राष्ट्रभाषा या राज्य भाषा तभी बन सकती है जब कि वह शिक्षा, विचारों और अभिव्यक्ति का वाहन बनने की क्षमता रखती हो, जिसमें विभिन्न प्रकार के विचारों, विषयों, ज्ञान और शिक्षा की अनेकानेक पुस्तकें उपलब्ध हों। हम प्रकाशक ऐसी पुस्तकों को उपलब्ध करने की ओर सहायक हो सकते थे, लेकिन हम इस ओर अधिक सजग नहीं रहे। अब भी संभव है कि हम हिन्दी के उस साहित्य के अभाव और कमियों को पूरा करने की कोई योजना बनाएँ और उसे कार्यान्वित करें। यह योजना बहुत महत्वाकांक्षी नहीं हो सकती; अभीष्ट यही है कि प्रकाशक संघ के तत्वावधान में एक उचित दिशा का संकेत किया जाये।

मेरे मन में इस प्रकार की योजना की रूपरेखा इस प्रकार है : विश्वविद्यालयों में मानविकी और वैज्ञानिक शिक्षा के प्राध्यापकों से एक वर्ष में ऐसे छः उत्कृष्ट संदर्भ-ग्रंथों की सूची बनवाई जाय, जिन्हें 'सोर्स बुक' कहा जा सकता है। संघ के सदस्यों में से जो प्रकाशक इनका प्रकाशन करना चाहें, उनकी योग्यता देखकर इन ग्रंथों के प्रकाशन का भार उन्हें सौंप दिया जाय। इन पुस्तकों की उतनी ही प्रतियाँ छापी जायँ जो कि छपते ही प्रकाशक सदस्यों में, जो पुस्तक-वितरण का कार्य भी करते हैं, बाँट ली जा सकें। यह कार्य दूभर नहीं है, और किसी एक प्रकाशन-संस्था को अधिक जोखिम भी नहीं उठानी पड़ेगी।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और वैज्ञानिक पुस्तकें

प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में विभिन्न विषयों के प्रकाशन छापने की एक इसी प्रकार की योजना शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की भी है, लेकिन कई वर्षों से यह योजना अधिकांशतः कागजी उल्लेख तक सीमित रही है, कार्यान्वित नहीं हो सकी है। सरकारी काम-काज फाइलों और लाल फीताशाही से इतना ग्रसित है कि कोई काम आगे नहीं बढ़ पाता; उद्देश्य, नीति, कथ्य और व्यवहार में कहीं सामंजस्य नहीं हो पाता। यदि सरकार चाहे तो हिन्दी में उस साहित्य के प्रकाशन को, जिसके प्रकाशन के लिए अपने दावों के अनुसार वह चिंतित और उत्सुक है, बहुत प्रोत्साहन मिल सकता है। पुस्तकालयों को पुस्तकें खरीदने के लिए केन्द्रीय कोश से लाखों रुपयों का अनुदान प्रतिवर्ष दिया जाता है। यदि ऐसा संकेत भर कर दिया जाता कि इस अनुदान का एक निश्चित भाग एक विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें खरीदने में ही प्रयुक्त हो सकता है, तो शीघ्र ही वैसी पुस्तकें प्रकाशित होने लगेंगी। लेकिन नीति और नारा तो यह है कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा और विश्वविद्यालयों की शिक्षा के लिए आवश्यक और वांछित साहित्य को प्रोत्साहन दिया जाय, आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग के अनुकूल वातावरण बनाने वाली पुस्तकें देश में छपें, लेकिन सरकारी अनुदान के उपयोग का जब वक्त आता है, तो उस नीति को व्यवहार में अपनाया नहीं जाता। जान पड़ता है कि सब काम एकदम अलग-अलग विभागों में बँटा हुआ है और उन विभागों में कहीं तालमेल नहीं है, और सब विभाग किसी भी निर्णय के लेने में एक समान हिचकिचाते हैं।

हिन्दी साहित्य के कुछ अभावों की पूर्ति में यदि सरकार का कुछ सहयोग मिल सके तो अच्छा ही है। यदि प्रकाशक संघ द्वारा विश्वविद्यालयों की सहायता से बनी हुई सूची के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों की कुछ संख्या सरकार खरीद सके या अपने अनुदानों से खरीदवा सके, तो ऐसी पुस्तकें अधिक संख्या में प्रकाशित की जा सकती हैं, वरना किसी भी उपयोगी पुस्तक की एक हजार प्रतियाँ छाप कर खपा लेना स्वयं संघ के समर्थ प्रकाशकों के लिए कठिन नहीं होना चाहिए।

जनरल पुस्तकों की कम बिक्री

यह सर्वविदित है कि जिन्हें जनरल प्रकाशन कहा जाता है, उनकी व्यावसायिक सफलता कठिनसाध्य होती है। हिन्दी के प्रकाशक जनरल पुस्तकों के प्रथम संस्करणों की

कभी एक हजार प्रतियां छापते थे और अब वे चाहें दो हजार प्रतियां छापें या तीन हजार, इनकी बिक्री में पिछले वर्षों में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। पहले वर्ष औसत लेखक की किसी पुस्तक की औसत बिक्री पाँच-सात सौ, आठ सौ प्रतियों की ही होती है, बाद के वर्षों में यह औसत दो-तीन सौ या चार सौ प्रतियों की रह जाती है। सौ पुस्तकों में दस पुस्तकें भी मुश्किल से ऐसी छपती होंगी जिनकी बिक्री पहले वर्ष एक हजार या इससे अधिक प्रतियों की हो सकती हो, और बाद के वर्षों में पाँच-सात सौ प्रतियों की। यह स्थिति हिन्दी में जनरल पुस्तकों के प्रकाशन पर गलघोंट फांसी की तरह है प्रकाशक इस स्थिति को बदलने में क्या सहयोग दे सकता है ? इसका संबंध हमारे समाज के सांस्कृतिक स्तर से है ; इसका संबंध उस शिक्षा से है जो हमारे बच्चे और नवयुवक और नवयुवतियों को आज दी जा रही है। इसका संबंध पाठकों की क्रय-क्षमता से है। इसका गहरा संबंध उन लेखकों और कृतिकारों की रचनाओं से भी है, जिन्हें हम प्रकाशित करते हैं।

पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन

जनरल पुस्तकों के दूभर प्रकाशन-व्यवसाय को दुनिया भर में अगर राहत मिलती है तो पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन से प्राप्त लाभ से, लेकिन पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का क्षेत्र देश की अधिकांश राज्य-सरकारों ने अपने हाथ में लेने की नीति अपना ली हुई है। यह परीक्षण, देश में अनेक पिछले वर्षों से हो रहा है लेकिन क्या उसे सफल कहा जा सकता है ? आए दिन देशभर के समाचार-पत्र इन खबरों से भरे रहते हैं कि राष्ट्रीयकृत पुस्तकें भूलों से भरी रहती हैं, वे भद्दे ढंग से छपती हैं, उनका मूल्य भी इतना अधिक रखा जाने लगा है कि राज्यों के शिक्षा-विभाग उनके प्रकाशन से मुनाफा कमाने के आदी होने लगे हैं, पुस्तकें विद्यार्थियों को समय पर नहीं मिल पातीं; फलतः उनमें चोरबाजारी होती है या उनके जाली और नकली संस्करण बाजार में छा जाते हैं। प्रकाशकों के हाथ से जब पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन छीना जाने लगा, तो आरोप यह था कि उनकी स्वीकृति में प्रकाशकों की पहल से भ्रष्टाचार पनपता है। यह नहीं है कि इस आरोप में सच्चाई नहीं थी। लेकिन यह भी सच ही था कि इस भ्रष्टाचार के लिए पुस्तकें स्वीकृत करने वाले बोर्ड स्वयं कम जिम्मेवार नहीं थे। लेकिन आज राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की जो दशा हो गई है, वह उस भ्रष्टाचार से अधिक अनर्थकारी और दयनीय है।

देश के भावी नागरिकों के चरित्र-निर्माण और उनकी प्रारम्भिक शिक्षा में पाठ्य-पुस्तकों का महत्त्व अत्यधिक है। यदि उन्हें बेहतर से बेहतर बनाना सरकार की नीति हो तो उसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। इस ओर जितनी भी कड़ाई बरती जाय, उसका स्वागत होगा। लेकिन पुस्तकों के सही मुद्रण और वितरण की व्यवस्था सरकारी विभागों के अधिकारियों के वश से बाहर की बात है ; इसके लिए विशिष्ट अनुभव और निपुणता की आवश्यकता है और शिक्षाविभागों के अधिकारियों में ये अनुभव और निपुणताएं उनकी नियुक्ति के समय नहीं देखी जातीं क्योंकि उनका चुनाव कभी भी इस दृष्टिकोण से नहीं होता है और न यह सम्भव है। अच्छा हो कि पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति की एक बार फिर से जाँच की जाए। क्या यह संभव नहीं है कि पांडुलिपि को स्वीकृत करने के पश्चात् निश्चित दामों पर उसके मुद्रण और वितरण का दायित्व अनुभवी प्रकाशकों पर डाल दिया जाय ? व्यक्तिगत प्रकाशकों से इस प्रकार का सहयोग लेने में यदि कोई कठिनाई पेश आती है, तो प्रकाशकीय सहकारों को यह काम सौंपा जा सकता है। प्रकाशक संघ भारत की केन्द्रीय तथा राज्यों की सरकारों के शिक्षा-विभागों से इस दिशा में विचार-विनिमय करने के लिए तथा अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर मिलेगा। प्रकाशक संघ केन्द्रीय शिक्षामंत्री से विशेष रूप से अनुरोध करता है कि वे इस सुझाव पर मंत्रालय में विस्तार से विचार करवाएं।

यदि शिक्षा-विभाग पाठ्य-पुस्तकों की पांडुलिपियां तैयार करने का तथा प्रकाशक अथवा प्रकाशकीय सहकार निश्चित दामों पर, उनके मुद्रण और वितरण का कार्य परस्पर बांट लेते हैं तो दो बड़े उद्देश्य एक साथ पूरे हो सकते हैं : (१) पांडुलिपियां सरकारी समझ-बूझ और आवश्यकतानुसार अच्छी से अच्छी बन सकेंगी; (२) वे निश्चित दामों पर प्रकाशकीय अनुभवों के उपयोग से, अच्छे ढंग से छप सकेंगी और वक्त पर विद्यार्थियों के हाथों में

पहुँच सकेंगी ।

एक और महत्त्वपूर्ण लाभ

इसका एक लाभ और भी होगा जो कि स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। उन प्रकाशकों को, जो जनरल पुस्तकों का प्रकाशन करके एक कठिन लेकिन बहुत ही उपयोगी दायित्व निभा रहे हैं, बहुत सीमित लाभ का एक नया साधन भी मिल जायगा, जिससे वे जनरल प्रकाशनों के अपने कार्य में निरंतर साहस दिखलाने और जोखिम उठाने के अधिक योग्य बन सकेंगे। देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि देश में जनरल पुस्तकों के प्रकाशन के दूभर कार्य का क्षेत्र संकुचित न होता जाय। सरकार द्वारा पोषित कुछ प्रकाशन-संस्थाओं को जनरल प्रकाशन का कुछ-कुछ अनुभव प्राप्त हो चुका है और केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय को विदित है कि किस प्रकार गत वर्ष नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें तो बिलकुल ही नहीं बिक सकीं, कुछ की बिक्री ५ प्रतिशत हुई और अधिक से अधिक कुछ अन्य पुस्तकों की बिक्री केवल ४२ प्रतिशत हुई। नेशनल बुक ट्रस्ट को ४४ उन पुस्तकों का प्रकाशन भी छोड़ देना पड़ा जिन पर काफी व्यय किया जा चुका था, २२ का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा और १३ अन्य को व्यक्तिगत प्रकाशकों को प्रकाशनार्थ सौंपने का निश्चय लेना पड़ा। साहित्य अकादमी की स्वयं प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री २९ प्रतिशत से ५९ प्रतिशत तक हुई है—कुछ पुस्तकों की बिक्री तो १० प्रतिशत से कम की रही, और ८ पुस्तकों की १ प्रतिशत से भी कम। यह सब देखते हुए जनरल पुस्तकों के व्यक्तिगत प्रकाशक निश्चय ही समर्थन के योग्य हैं; वे एक ऐसा बीहड़ दायित्व निभा रहे हैं जिसे कि किसी अर्थ में व्यावसायिक नहीं कहा जा सकता।

सरकारी कर्त्तव्य

हमारी सरकार देश में समाजवादी व्यवस्था लाने की नीति अपना चुकी है और कृषि, व्यापार एवं उद्योगों का नियमन किया गया है। केवल सांस्कृतिक क्षेत्र में ही वह एक ऐसी निरपेक्ष और शिथिल नीति को अपनाए हुए है, जिससे विचार-स्वातंत्र्य को नहीं वरन् परोक्ष रूप से सस्ती असामाजिक और हल्की किस्म की किताबों के प्रकाशन और वितरण को बराबर प्रोत्साहन मिल रहा है। घटिया किस्म की किताबें, जिनसे समाज के पुनर्निर्माण और स्वस्थ संगठन में किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिलता, बल्कि जो कि समाज में अस्वस्थ विचारधारा की प्रवर्तक और पोषक सिद्ध होती हैं, सरकारी अनुदानों से खरीदी जाकर देश के अधिकांश पुस्तकालयों में पहुँच रही हैं।

व्यापार और उद्योगों पर लगाए गये नियंत्रणों को तो शायद कहीं चुनौती भी दी जा सकती है लेकिन यदि समाज की दृष्टि से स्वच्छ और स्वस्थ साहित्य की खरीद के बारे में सरकारी अनुदान के व्यय को दिशा देने वाला कोई नियंत्रण प्रचलित किया जाए तो उसका कौन विरोध करेगा? इस प्रश्न का साहित्य के प्रकाशकों से सीधा सम्बन्ध है। व्यावसायिक दृष्टि से प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री संबंधी सफलता उनके सामने स्थायी प्रलोभन बनकर खड़ी रहती है।

हमारी कल्याणकारी सरकार के लिए इस प्रलोभन को प्रकाशकों से दूर रखना आसानी से संभव है; उन्हें केवल इसी का प्रबन्ध करना है कि घटिया किस्म की पुस्तकें देश की कड़ी कमाई की आय से दिए गए अनुदानों से न खरीदी जाया करें।

अच्छी पुस्तकों की बिक्री और लेखकों का लाभांश

अच्छे साहित्य के प्रोत्साहन के पक्ष में एक और, और शायद अधिक प्रबल, तर्क इनके लेखकों के प्राप्य लाभांश से है। पंचवर्षीय योजनाओं के और केन्द्रीय व राज्य सरकारों के कोषों से दिये गए लाखों रुपयों के अनुदान से ज्यादातर जो साहित्य खरीदा जा रहा है, वह वही है जिस पर अधिक कमीशन दिया जाता है। अधिक कमीशन तभी दिया जा सकता है जब कि पुस्तक के मूल्य से लेखक का प्राप्य लाभांश गायब हो। सरकार जब नगर-नगर में खादी की बिक्री को अपना समर्थन देती है तो यह तर्क पेश करती है कि इससे कताई व बुनाई करने वाले मजदूर के हाथ में एक रुपये में से अमुक हिस्सा आता है। लेकिन जब कलम के मजदूर लेखक का प्रश्न आता है तो वही सरकार, या उसके विभागीय अधिकारी, उन्हीं पुस्तकों को खरीदते हैं जिनसे कि उसे कुछ नहीं मिलता। भारत का लेखक, विशेषतः हिन्दी का लेखक, अपने लेखन से जीविका नहीं कमा

सकता। उसकी स्थिति आज से कहीं बेहतर हो सकती है यदि सरकारी अनुदान से ज्यादातर उन्हीं पुस्तकों की खरीद हुआ करे जिनसे कि लेखक को रायल्टी भी मिलती हो।

पुनर्मुद्रण संबंधी झंझटें

अब मैं प्रकाशकों की अपनी समस्याओं पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हूँ। यदि हम किसी पुस्तक के पहले संस्करण को सफलता से बेच लेते हैं, तो उसके दूसरे संस्करण पर हमें उतनी ही मेहनत और उतना ही व्यय करना पड़ता है जितना कि किसी एक नई पुस्तक पर। इसका कारण है पुस्तकों के मुद्रण के लिए छपाई के केवल लेटरप्रेस यंत्रों का उपयोग। विदेशों में सब जगह पुस्तकों की छपाई के लिए जब आफ़सेट की मशीनों का प्रयोग होता है, हमारे देश में पुस्तकें छापने वाले आफ़सेट प्रेसों की नितांत कमी है; जो कुछ प्रेस हैं भी, उनकी छपाई की दरें प्रकाशन-व्यवसाय को नहीं पुसातीं। आफ़सेट मशीनों का मूल्य लगभग वही होता है जो कि लेटरप्रेस मशीनों का, लेकिन लेटरप्रेस मशीनों से उनकी रफ्तार अधिक होती है। परिणामस्वरूप छपाई की दरें इन मशीनों पर कम होनी चाहिएँ। जापान और अमरीका में आफ़सेट की छपाई की दरें लेटरप्रेस की अपेक्षा कहीं कम हैं। ये प्रेस एक और दो हजार की छपाई के आर्डर भी बिना किसी आनाकानी के स्वीकार कर लेते हैं; नए संस्करणों में प्रयोग आने वाले फिल्म नेगेटिव्स को भी संभाल कर रखते हैं। इस प्रकार किसी पुस्तक के पुनर्मुद्रण की स्थिति में खर्च पहले संस्करण की अपेक्षा १० से १५ प्रतिशत के लगभग कम पड़ता है।

आफ़सेट प्रेसों के अभाव में और विवश होकर केवल लेटरप्रेसों का उपयोग करने की दशा में, हमें सोचना चाहिए कि पुस्तकों का संस्करण-खर्च किस तरह कम किया जा सकता है और फिर एक बार टाइप को नए सिरे से सेट करने, प्रूफ पढ़ने और गलतियाँ शोधने के झंझट से किस प्रकार बचा जा सकता है। शायद एक तरीका फ्लांग बनाने के यंत्रों में मिल सके। इस पर तहकीकात की जरूरत है। संघ की एक विशेष समिति मुद्रण विशेषज्ञों की मंत्रणा से मुद्रकों और प्रकाशकों को कोई रास्ता सुझा सकती है। फ्लांग बनाने की मशीन अधिक महँगी नहीं होती; उसे प्रकाशकों के विभिन्न सहकार अपने-अपने सदस्यों की जरूरतें पूरा करने के लिए कुछेक प्रमुख शहरों में लगा भी सकते हैं। बहुत थोड़ी पूँजी से मिलकर ऐसा साधन प्रकाशक अपने लिए सुलभ कर सकते हैं कि पुनर्मुद्रण के वक्त आज लगने वाले व्यय और श्रम में कमी हो सके।

एक सहकारी आफ़सेट प्रेस

संघ का दूसरा एक प्रयत्न सहकारी आधार पर आफ़सेट मशीनों से युक्त मुद्रणालय की स्थापना का होना चाहिए। हम अपने प्रकाशनों के मुद्रण आदि के स्तर में तभी उन्नति कर सकते हैं, जबकि हमारे लिए उचित दरों पर आधुनिक यंत्रों के उपयोग की सुविधाएँ मौजूद हों। आज आफ़सेट प्रेसों की प्रकाशकों के काम में विशेष दिलचस्पी नहीं है। यदि प्रकाशक मिलकर ऐसे प्रेस की व्यवस्था करें, तो यूनेस्को अथवा भारत सरकार से पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलने की संभावना भी हो सकती है। यदि ५ लाख रुपयों की लागत से एक ऐसे प्रेस के संगठन की संभावना हो तो १ लाख रुपये की रकम के ऐसे सहकार के हिस्से हम प्रकाशकों को लेने होंगे, जो कि कठिन नहीं होना चाहिए; शेष पूँजी की व्यवस्था लम्बे समय के, कम ब्याज पर मिले, उधार से की जा सकती है।

पुस्तकों का मूल्य-निर्धारण

मैं सोचता हूँ कि हिन्दी की पुस्तकें, मौजूदा कई कारणों से प्रतिबद्ध स्थितियों में भी, आज की अपेक्षा अधिक बिक सकती हैं; मूल्यों के उन्हीं स्तरों पर, जिन पर कि हम उन्हें आज बेचते हैं। पुस्तकों का मूल्य उनके लागत-व्यय तथा लेखक, पुस्तक-विक्रेता के और प्रकाशक के प्राप्य लाभांशों को जोड़कर रखा जाता है। लागत-व्यय दो प्रकार का होता है: एक—मूल व्यय (या प्लांट कॉस्ट) जोकि कागज, छपाई, जिल्दबंदी और पुस्तक की डिजाइनिंग आदि से संबंधित है; दूसरा—व्यवस्था-व्यय (या मैनुफ़ैक्चरिंग कॉस्ट) जोकि प्रकाशक के उन खर्चों—कर्मचारियों के वेतन, कार्यालय और पुस्तकें भेजने के रेल के भाड़े, गोदाम, बिजली, पैकिंग, पोस्टेज, ब्याज आदि—से संबंधित है, जिनके बिना कि पुस्तक के मुद्रण और प्रकाशन की व्यवस्था नहीं हो सकती। इन्हें 'ओवरहेड्स' या 'ट्रेडिंग एक्सपेंसिज़' भी कहा जाता है। इन दोनों को मिलाकर ही लागत-व्यय का अनुमान किया जा सकता है।

पुस्तक-विक्रेता की कठिनाइयाँ

पुस्तकों की बिक्री में सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन पुस्तक-विक्रेता ही हैं। कोई प्रकाशक कितना ही समर्थ क्यों न हो, किसी पुस्तक की हज़ारों प्रतियाँ देश के कोने-कोने में पाठकों तक पहुँचा देना उसके बूते की बात नहीं है। यह कार्य केवल पुस्तक-विक्रेता द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है, जोकि अपने क्षेत्र के पाठकों और खरीदारों से परिचित है या उन तक पहुँच सकता है। उसे दर्जनों प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हज़ारों पुस्तकों में से प्रत्येक की दो-दो, चार-चार करके प्रतियाँ खरीदनी हैं, और बड़ी मेहनत से उनको निकालना है। प्रकाशक इस अर्थ में थोक व्यापारी है, उसे प्रति पुस्तक लाभ का अनुपात अधिक नहीं चाहिए; प्रत्येक बिकी पुस्तक में से थोड़ा-थोड़ा करके भी उसका लाभ अधिक फैल जाता है। अपनी जीविका चलाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को किसी पुस्तक की एक-एक प्रति से उस अनुपात में कहीं अधिक मात्रा में लाभ चाहिए। मैं समझता हूँ, आज हिन्दी के औसत पुस्तक-विक्रेता को उचित लाभांश नहीं मिल रहा है। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि पुस्तकों के प्रकाशित मूल्य पर बिक्री के अभाव में, जब कि अधिकांश में पुस्तकालय ही खरीदार हैं, उसके हिस्से का १० या साढ़े १२ प्रतिशत तो वैसे ही निकल जाता है। और यदि प्रकाशक से मँगवाई हुई ३ प्रतियों में से १ भी अनबिकी रह गई तो उसे ३३ प्रतिशत की हानि एक साथ हो गई। पुस्तक-विक्रेता का रिस्क, इस कारण, कहीं अधिक है और वह निश्चित ही प्रत्येक पुस्तक के मूल्य में से अधिक लाभांश का हकदार है।

लेखक का लाभांश

आज प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता को प्रायः २५ या ३० प्रतिशत कमीशन ही दे पाते हैं। इसके कारण शायद दो हैं : एक—वे स्वयं लाभ का अधिक अंश अपने लिए सुरक्षित रख रहे हैं; दो—शायद लेखक को वे पुस्तक के मूल्य में से लाभ का अधिक अनुपात दे रहे हैं।

यदि मेरा यह विश्लेषण सही है, तो प्रकाशक स्वयं अपना और लेखकों का वास्तविक हित नहीं पहचान रहे हैं। लाभ का अनुपात चाहे आज प्रकाशक अथवा लेखक को अधिक मिल रहा हो, रुपयों-पैसों में लाभ की मात्रा उन्हें निश्चित ही कम मिल पा रही है क्योंकि पुस्तकों की निकासी गति से नहीं हो पा रही। अनबिकी पुस्तकों का जो स्टाक उनके गोदामों में इकट्ठा होता जाता है, उसे किन अर्थों में लाभ में गिना जा सकता है? अधिकांश पुस्तकों की जिन्दगी इतनी लम्बी नहीं होती कि वे आए वर्ष एक गति से बिकती जाएँ। लेखक के लिए रायल्टी की दर का १५ या २० प्रतिशत रहना क्या माने रखता है जबकि उसकी पुस्तकें अनबिकी प्रकाशक के पास धरी रह जायें और उसे वर्ष में अपनी बिकी हुई पुस्तक से कुछेक सौ रुपये या इससे भी कम प्राप्त हों? यदि अपने लाभ के अनुपात कम करने पर भी प्रकाशक और लेखक को पहले के बजाय वर्ष में अधिक रुपया मिल सके, तो क्या यह बेहतर नहीं है? दोनों को फायदा तभी है जबकि वर्ष में लाभ की मात्रा अधिक हो; लाभ का अनुपात ही अधिक होने में कोई तुक नहीं है।

एक उदाहरण

मैं अपनी बात एक उदाहरण देकर ज्यादा अच्छी तरह समझा सकूँगा। क्राउन १६-पेजी साइज़ की एक पुस्तक लीजिए, २५६ पृष्ठों की, या १६ फार्म की। आज के भावों में इसकी २००० प्रतियों पर मूल-व्यय इस प्रकार होगा :

कागज़ ३३ रीम, वेस्टेज मिलाकर, दर २७ रु० प्रति रीम	—८९१.००
छपाई १६ फार्म, ४४ रुपये प्रति फार्म, २००० की	—७०४.००
जिल्दबंदी, २५ रुपये प्रति १००	—५००.००
कवर डिजाइन ३ रंगों में, ब्लाक, कागज़ और छपाई	—३९५.००
प्रूफ रीडिंग	— ५०.००
योग	२५४०.००

२००० प्रतियाँ छापने पर एक प्रति पर मूल-व्यय इस प्रकार १ रुपया २७ नये पैसे का हुआ जो पूरे उत्पादन का १५% है।

अब समझिये कि इस पुस्तक पर प्रकाशक का व्यवस्था-व्यय २५ प्रतिशत का है, पुस्तक-विक्रेता को औसत ३० प्रतिशत कमीशन दिया जाता है तथा लेखक की रायल्टी २० प्रतिशत है तथा प्रकाशक अपने लिए १० प्रतिशत का लाभ चाहता है। इन सब अनुपातों का योग ८५ प्रतिशत

हुआ और परिणामस्वरूप, मूल व्यय १ रुपया २७ नये पैसे होने के कारण, २५६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ८ रुपया ४६ नये पैसे हुआ।

ऊपर के हिसाब में प्रकाशक और लेखक के लाभांश का अनुपात अधिक है। यदि प्रकाशक और लेखक अपने अनुपात में से ५-५ प्रतिशत की कमी कर दें और पुस्तक-विक्रेता के लिए केवल ५ प्रतिशत कमीशन बढ़ा दें तो पुस्तक का मूल्य ६ रुपये ३५ नये पैसे रखा जा सकता था। अर्थात् खरीदार को पुस्तक २ रुपये से भी अधिक कम दामों में मिलेगी और पुस्तक-विक्रेता को उस पुस्तक को खरीदने और उसकी बिक्री करने के लिए अधिक कमीशन, अधिक प्रेरणा मिलेगी।

यहां पर इसका उल्लेख समीचीन होगा कि विदेशों में जहां लेखकों को अपनी पुस्तकों से काफी कमाई हो जाती है, रायल्टी की दरें अनुपात में कहीं कम हैं। ये दरें साढ़े ७ प्रतिशत से आरम्भ होती हैं और पुस्तकों की अधिक बिक्री होने के साथ-साथ बढ़ती हैं और लगभग साढ़े १२ प्रतिशत तक जाती हैं। आरंभ में ये दरें कम इसलिए होती हैं कि पुस्तक के पहले संस्करण में प्रकाशक का लागत-व्यय—पाण्डुलिपि से टाइप सेट करने, प्रूफ रीडिंग और नेगेटिव आदि बनाने में—कहीं अधिक करना पड़ता है। पुस्तक की अच्छी बिक्री होने पर और नया संस्करण निकालने की स्थिति में इस व्यय में कमी हो जाती है और अधिक लाभ को प्रकाशक के लाभांश और लेखक की रायल्टी की दर को बढ़ाकर बाँट लिया जाता है।

अब देखना यह है कि प्रकाशकों और लेखकों को अपने-अपने लाभों के अंश के अनुपात में कमी करने के बावजूद लाभ होता है या नहीं। पुस्तक का मूल्य जब ८ रुपये ४६ नये पैसे था, पुस्तक-विक्रेता को, जिस पर कि आज के व्यावसायिक संगठन में पुस्तक को पाठकों और खरीदारों तक पहुंचाने का मुख्य दायित्व है, केवल ३० प्रतिशत कमीशन मिलता था : इस स्थिति में, जो कि आज की स्थिति ही है, खरीदार और पुस्तक-विक्रेता, दोनों के प्रतिरोध का सामना प्रकाशक को करना पड़ता था। अपने और लेखक के लाभांश के अनुपात में कमी करके, इसे पुस्तक का मूल्य घटाने और पुस्तक-विक्रेता के कमीशन को बढ़ाने में उपयोग करके प्रकाशक ने इन दोनों प्रतिरोधों का एक हद तक निवारण करने की कोशिश की है। यदि ८ रुपये ४६ नये पैसे के मूल्य पर, पुस्तक-विक्रेता को कम कमीशन मिलने की स्थिति में, पुस्तक की ५०० प्रतियां बिकती थीं तो ६ रुपये ३५ नये पैसे के मूल्य पर, विक्रेता को अधिक कमीशन दिये जाने पर, उससे दुगनी प्रतियाँ बिकने की आशा करनी चाहिए। रायल्टी के २० के स्थान पर १५ प्रतिशत होने के बावजूद लेखक के लाभ की मात्रा ८४० रुपये के स्थान पर एक वर्ष में ९५० रुपये हो जायेगी। अधिक पुस्तकों की बिक्री होने पर प्रकाशक की पुस्तक पर लगी पूँजी तेजी से लौटेगी और गोदाम, पूँजी के ब्याज आदि के कई खर्च कम होंगे और अन्ततः उसके व्यवस्था-व्यय का अनुपात भी कम होगा। यदि प्रकाशक पुस्तकों की बिक्री बढ़ाकर व्यवस्था-व्यय के अनुपात को २५ प्रतिशत के स्थान पर २० प्रतिशत तक घटा सकें, तो या तो उनका अपना लाभांश बढ़ सकता है, अथवा वह पुस्तक के मूल्य में और भी कमी कर सकते हैं, अथवा लेखक को अधिक रायल्टी और पुस्तक-विक्रेता को अधिक कमीशन दे सकते हैं।

रायल्टी की दर में ५ प्रतिशत के अन्तर से इतना असर पुस्तक के मूल्य और उसकी बिक्री की संभावनाओं पर पड़ता है, यही दिखाने के लिए इस प्रश्न पर इतने विस्तार से मैंने बात की है। मैं समझता हूँ कि हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय की आज की परिस्थितियों को देखते हुए रायल्टी की दरें सामान्यतया १० से साढ़े १२ प्रतिशत तक दी जानी चाहिए और विशिष्ट लेखकों को, जिनकी प्रतिष्ठा और नाम के कारण भी पुस्तक की बिक्री स्वतः अधिक होती है, १५ प्रतिशत।

२५६ पृष्ठों की जिस पुस्तक का ऊपर जिक्र किया गया है, यदि उसके नये लेखक को १० प्रतिशत रायल्टी ही दी जाती तो अन्य अनुपातों के वही रहते हुए भी, पुस्तक का मूल्य, ५ रुपये ८ नये पैसे रखा जा सकता था। एक नये लेखक की पुस्तक का मूल्य, पृष्ठों के उतना रहने पर भी, उतना नहीं रखा जा सकता जितना कि एक लब्धप्रतिष्ठ लेखक की पुस्तक का।

हिन्दी-वर्तनी की एकरूपता

अब मुद्रित पुस्तकों के एक जटिल पक्ष की ओर आऊं। वर्तनी की एकरूपता का अभाव एक जंगल के समान है और आज प्रत्येक लेखक, प्रत्येक प्रकाशक और प्रत्येक प्रेस अपनी-अपनी समझ के अनुसार वर्तनी के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर रहा है। इससे हिन्दी छपाई की शुद्धता में कितनी खामियां रह जाती हैं, उनका अन्त नहीं है। हिन्दी के नए विद्यार्थियों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा ; अहिन्दी भाषी राज्यों के छात्र कितना भटकते होंगे। और फिर प्रत्येक पुस्तक में वर्तनी के अलग-अलग रूपों के प्रयोग को देखकर पाठकों की क्या हालत होती होगी!

प्रकाशक-संघ इस क्षेत्र में पहल करने की स्थिति में नहीं है। यह केवल यह अपील ही कर सकता है कि जहाँ देश में इतने सेमिनार आए दिन होते रहते हैं, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय वर्तनी की एकरूपता को स्थिर करने के लिए राज्य सरकारों के शिक्षा-विभागों, शिक्षाविदों, अध्यापकों, हिन्दी के गण्यमान्य लेखकों और कृतिकारों, कोषकारों, मुद्रण संस्थाओं, टाइपराइटर बनाने वाली और टाइप ढालने वाली कम्पनियों तथा प्रकाशकों का एक सम्मिलित सेमिनार बुलवाए, जहां कि तीन-चार दिनों में वर्तनी संबंधी एकरूपता के बारे में अंतिम निर्णय लिए जा सकें। सेमिनार बुलाने से पहले एक विस्तृत प्रश्नावली प्रचारित होनी चाहिए और उस प्रश्नावली के उत्तरों का विश्लेषण सेमिनार के सामने विचारार्थ प्रस्तुत हो। इस प्रकार के विचार-विनिमय का जो भी परिणाम होगा, उसे मुद्रित करवाकर प्रचारित कर दिया जाय। प्रकाशक-संघ के सभी सदस्य तथा अन्य प्रकाशक भी तत्काल इस प्रकार स्वीकृत वर्तनी का प्रयोग कर सकते हैं, और आज जो वर्तनी के क्षेत्र में स्वच्छन्दता चल रही है, उसकी रोकथाम का प्रबन्ध हो सकता है।

पुस्तकों के थोक-वितरण की व्यवस्था की कमी

कोई भी वस्तु, जिसका उत्पादन बड़ी तादाद में होता हो, थोक और खुदरा वितरण-स्तरों से होकर ही खरीदार तक पहुँचाई जा सकती है। हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय के क्षेत्र में अभी तक थोक वितरण के महत्व को ठीक तरह नहीं समझा गया। लन्दन और टोकियो जैसे शहरों में भी, जहाँ कि इंगलैण्ड और जापान के प्रकाशन-व्यवसाय का अधिक भाग स्थित है, थोक-विक्रेताओं के महत्व की उपेक्षा नहीं की जाती। हिन्दी का क्षेत्र इतना अधिक विस्तृत है कि इसमें प्रकाशकों के लिए थोक-वितरण की व्यवस्था की सहायता लेना अनिवार्य समझना चाहिए। लेकिन अभी तक हमारे यहाँ पुस्तकों के थोक-वितरण की व्यवस्था पनप नहीं पाई, और इसके मूल में एक हद तक पुस्तकों का मूल्य निर्धारित करने के संबंध में प्रकाशकों की ही अदूरदर्शिता है जिसके कारण वे थोक वितरकों को उचित कमीशन नही दे पाते।

थोक-वितरण के व्यक्तिगत प्रयासों को यदि प्रकाशक पर्याप्त समर्थन नहीं दे रहे, तो समय है कि पुस्तकों के थोक वितरण का एक सहकारी प्रयास स्थापित किया जाय। यह प्रयास दिल्ली में सफलता से आरम्भ किया जा सकता है। प्रकाशक-संघ को इस प्रयास की स्थापना पर विचार करने और उसे कार्यान्वित करने के लिए एक उप-समिति का आयोजन करना चाहिए ताकि ऐसा पहला सहकारी प्रयास सफलता से कायम किया जा सके और बाद में अन्य स्थानों पर भी सहकारी थोक-वितरण केन्द्र खोले जा सकें।

प्रचार-प्रसार के सहकारी प्रयत्न

पुस्तकों के अधिक प्रचार-प्रसार में हम प्रकाशक जिन साधनों और समायोजनों का प्रयोग कर सकते हैं, उनमें प्रचार-प्रसार और विज्ञापन के सहकारी प्रयास को भी गिना जा सकता है। इससे पहले भी कई बार संघ के मंच से इस विषय में चर्चा हुई है। ऐसे प्रयासों द्वारा यदि पठन-पाठन की रुचि में विशेष वृद्धि नहीं की जा सकती तो विशिष्ट अवसरों पर पुस्तकें खरीदने के लिए पाठकों को प्रवृत्त और प्रेरित तो किया ही जा सकता है। हिन्दी में विभिन्न शुभ अवसरों पर पुस्तकें भेंट करने का रिवाज नहीं के बराबर है ; एक सुनियोजित विज्ञापन-अभियान द्वारा इस रिवाज की शुरुआत निश्चित रूप से की जा सकती है। इस प्रचार-कार्य के आरम्भ से पहले यह देखना भी आवश्यक होगा कि हिन्दी में भेंट के देने योग्य पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हों। प्रत्येक पुस्तक भेंट में नहीं दी जा सकती। इसके लिए विशेष रूप से पुस्तकें प्रकाशित

करनी होगी, जो कि बहुत दूभर काम नहीं है।

विभिन्न शहरों के प्रकाशक अपनी सूचियाँ, परिपत्र और प्रतिनिधियों तक को एक साथ भेजने का काम मिल-जुलकर कर सकते हैं ताकि संबंधित खर्चों में कमी हो और परस्पर मेल-जोल भी बढ़े।

संघ द्वारा केन्द्रीय प्रचार-विभाग में एक बड़ा कोष इकट्ठा करने की जरूरत है। यदि प्रकाशक-संघ के सदस्य अपने प्रकाशनों की नेट बिक्री का २५ नये पैसे प्रतिशत मात्र के हिसाब से भी रुपया इस प्रचार-कोष में देने को तैयार हो जाएँ, तो प्रतिवर्ष काफी रुपया एकत्रित किया जा सकता है। इस कोष के लिए केन्द्रीय सरकार तथा यूनेस्को से भी इतनी आर्थिक सहायता ली जा सकती है कि एक अच्छा खासा प्रचार-अभियान चलाया जा सके और लोगों में पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की प्रवृत्ति जगाई जा सके। नेट बिक्री के १ प्रतिशत का चौथाई भाग इस उद्देश्य से देना प्रकाशकों के लिए कोई बहुत बड़ा बलिदान भी नहीं है और हिन्दी के प्रकाशकों का स्वार्थ भी इसी में है कि हिन्दी में पुस्तकें पढ़ने, खरीदने और भेंट में देनेवालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो।

अन्त में

अन्त में संघ के सदस्यों से और अन्य प्रकाशकों से एक निवेदन करके अपने वक्तव्य का समापन करूँगा। मेरी दृष्टि में यह संघ पुस्तक प्रकाशन के व्यवसाय में लगे हुए व्यवसायियों की एक व्यापारिक संस्था है। इसकी स्थिति राजनीतिक या सामाजिक दलों के मंचों जैसी नहीं है। हर प्रकाशक के लिए, जो इसके उद्देश्यों और नियमों का पालन करने को उद्यत हो, इसके द्वार खुले हैं। संघ का मंच नारे लगाने का स्थान नहीं है। व्यापार नारे लगाकर या भावावेश पैदा कर या तालियां पिटवा कर या किसी संस्था विशेष की ठकुरसुहाती या निन्दा करके नहीं चलाया जा सकता। अपना-अपना व्यापार तो हम सब अपने-अपने ढंग से करते ही हैं; संघ से हमारे व्यापार को हमारे लिए चलाने की आशा नहीं की जा सकती। संघ जैसी कोई भी व्यापारिक संस्था वस्तुतः स्वार्थ-प्रेरित होती है; फ़र्क इतना ही है कि यह स्वार्थ सामूहिक होता है। अपनी सामूहिक स्वार्थ-साधना करते हुए भी हमारे लिए यह देखते हुए चलना परम आवश्यक होता है कि हम परस्पर, तथा अन्य संबंधित स्वार्थों से कितना सामंजस्य रख रखते हैं? प्रकाशक-संघ की सदस्य संख्या कम है, इसमें हताश होने की भी कोई बात नहीं। जापान के २९०६ प्रकाशकों में से केवल ३०६ ही वहाँ के प्रकाशक संघ के सदस्य हैं। यही हाल अमरीका और इंगलैण्ड का भी है। इस दृष्टि से हमारे संघ के प्रकाशकों की सदस्यता का अनुपात कम नहीं अधिक ही है, यद्यपि अन्य प्रकाशक भी संघ के सदस्य बनें और इसके कार्य-कलाप में अपना सहयोग दें, इसकी चेष्टा बराबर बनी रहनी चाहिए।

आप सबको मेरे इस वक्तव्य को सुनने के लिए धन्यवाद!

●

प्रतिभाशाली छात्रों की खोज

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री मोहम्मद अली करीम भाई छागला ने लोकसभा में बताया है कि प्रतिभाशाली छात्रों की खोज के लिए राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद दो योजनाएं चला रही है। एक योजना, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के छात्रों में प्रतिभा खोजने की है। यह योजना तीन साल में पूरी होगी। इसके अन्तर्गत प्रतिभाशाली बच्चों की खोज के उपाय निकाले जाएंगे। दूसरी योजना, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक प्रतिभा को प्रोत्साहन करने के लिए है। इस योजना का नाम 'वैज्ञानिक प्रतिभा की खोज' रखा गया है। उन्होंने यह सूचना श्री सिद्धेश्वर प्रसाद के प्रश्न के उत्तर में दी।

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

राजनीति :

१. शासन पथ निदर्शन	राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन	६.००
२. भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास	गुरुमुख निहालसिंह	१०.००
३. भारतीय राजनीति और शासन	के. आर बम्बवाल	१०.००

लोक-साहित्य :

४. बज्जुर है छाती किसान की	श्रीचन्द्र जैन	३.००
५. गाँव का मेरुदण्ड किसान (सचित्र)	हरगोविन्द गुप्त	१.५०
६. बेला हुई अबेर	शैलेश मटियानी	२.००
७. कश्मीर का लोक-साहित्य	मोहनकृष्ण दर	१०.००

ज्ञान-विज्ञान :

८. भारत के प्रमुख फूल (सचित्र)	लाल बहादुरसिंह चौहान	२.००
९. सड़कों की कहानी (सचित्र)	आशालता मलैया	२.००
१०. आक्सीजन और जीवन (सचित्र)	रामेश्वर भटनागर	२.००
११. शक्ति और इंजन (सचित्र)	कृष्ण गोपाल	२.००
१२. गर्मी और हमारा जीवन (सचित्र)	रमेशचन्द्र प्रेम	२.००
१३. खेल-खेल में विज्ञान (रंगीन)	श्रीकृष्ण : लल्ला	४.००

हास्य :

१४. कहे पैरुडोदास (सचित्र)	चिरंजीत	३.००
१५. जवानी का नशा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
१६. मास्टर सिलबिल (सचित्र)	चिरंजीत	३.००

महिलोपयोगी :

१७. घर की सफाई (सचित्र)	माया	२.५०
१८. भोजन बनाना सीखो	शैल खन्ना : कमला : कमलेश पुरी	३.००
१९. वस्त्र-विज्ञान (सचित्र)	आशारानी व्होरा	६.५०
२०. गृह-विज्ञान (सचित्र)	आशारानी व्होरा	६.५०

बाल-साहित्य :

२१. करामाती कद्दू (सचित्र)	द्रोणवीर कोहली	२.००
२२. फूलों की टोकरी (सचित्र	" "	१.५०
२३. कच्छु-बच्छु (सचित्र)	हरीश नायक	१.२५
२४. टेसू के गीत (सचित्र)	निरंकार देव सेवक	१.००
२५. ईश्वर की मिठाई (सचित्र)	शैलेश मटियानी	१.००
२६. प्रतिनिधि बाल-सामूहिक गान (रंगीन)	लल्ला : श्रीकृष्ण	३.००
२७. प्रतिनिधि बाल-एकांकी (रंगीन)	श्रीकृष्ण : लल्ला	६.५०
२८. बाल-गीत (सचित्र)	शीला गुजराल	१.५०
२९. गुड़िया का ब्याह (सचित्र)	कुमारी मधु	१.५०

मनोविज्ञान :

३०. नैतिक जीवन का सिद्धान्त	जान ड्यूई	५.००
३१. मानव-प्रकृति और आचरण	जान ड्यूई	९.००

आत्माराम एण्ड संस, पो बा. १४१९ कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

लेखक-प्रकाशक विचार-गोष्ठी

२७ अप्रैल सन् ६४ को अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के ९वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर एक विचार-गोष्ठी श्रीमती महादेवी की अध्यक्षता में हुई। गोष्ठी का प्रारम्भ प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा. रघुवंश ने किया। डा. रघुवंश ने अपने भाषण में कहा कि लेखक और प्रकाशक दोनों ही इस व्यवसाय के समान भागीदार हैं। दोनों की स्थिति सम्मानीय है, दोनों का एक-दूसरे को सम्मान देना आवश्यक है। आज बड़े लेखक अपने नाम और प्रतिष्ठा की ओट लेते हैं। व्यक्ति के नाम पर प्रकाशन-व्यवसाय नहीं चल सकता, नयी माँग, नवीनता, विभिन्नता का प्रसव आवश्यक है।

आज प्रकाशन क्षेत्र में कापीराइट का दुरुपयोग हो रहा है, ज्ञान के नाम पर अज्ञान, साहित्य के नाम पर असाहित्य का प्रकाशन हो रहा है। रायल्टी-भोगी लेखक, प्रकाशक के समान ही इस व्यवसाय में भागीदार हैं। आज पाठ्य-पुस्तक एवं सरकारी खरीद के क्षेत्र में विशेष षड्यंत्र चल रहा है। इस प्रकार का व्यवसाय सट्टा या चोर बाजारी में कम नहीं है।

आज लेखक भी समाज की माँग के साथ ही साहित्य-सृजन कर रहा है। लेखक समाज को नयी चेतना, नयी दिशा दें जो कल्याणकारी हो। प्रकाशन क्षेत्र में पाठकों की कमी होती जा रही है। लेखक केवल लेखन से प्रतिष्ठा के साथ आजीविका प्राप्त नहीं कर सकता। इस विषमता को दूर करना चाहिए।

उर्दू के प्रमुख लेखक डा० एहतशाम हुसैन ने अपने भाषण में कहा कि विदेशों में लेखकों को मिलनी वाली रायल्टी की दर बड़ी कम है किन्तु वहाँ पर पाठकों की इतनी अधिक संख्या है कि अच्छे लेखक को १०,००० डालर तक मिल जाते हैं और वह सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकता है।

प्रत्येक देश और भाषा की विभिन्न समस्यायें हैं। लेखक और प्रकाशक दोनों का एक दूसरे से चोली-दामन का साथ है। लेखक और प्रकाशक दोनों ही किसी रचना को कापीराइट पर बेचते या खरीदते समय उसकी संभावनाओं से अनभिज्ञ होते हैं। लेखकों को रायल्टी मिलनी चाहिए। लेखक की पुस्तकें उसके कृतित्व के आधार पर ही बिकती हैं। कुछ लेखक केवल लेखनी के सहारे ही जीते हैं। वे अपनी निर्धनता के कारण चन्द पैसों में अपने अधिकार बेच देते हैं, यह अच्छा नहीं। आज लेखक और प्रकाशक की समस्या को आदर्शवाद के साथ यथार्थवाद की तराजू पर तौलना चाहिए।

प्रमुख प्रकाशक श्रीकृष्णचन्द बेरी ने कहा कि आज की जनता, लेखक तथा जो भी और कोई चाहे, प्रकाशक के प्रति गलत मन्तव्य दे देता है। पिछले समय में, लेखक स्वान्तःसुखाय लिखता था; उसके सामने लेखनी से धनोपार्जन की भावना नहीं थी। आज का प्रकाशक सचेष्ट है; वह जनरुचि को बदलने में योग दे रहा है। आप प्रकाशकों को अछूत न समझें। आपका सम्मान प्रकाशक करता है, आप भी थोड़ा सा मान प्रकाशकों को दें।

आज का जागरूक प्रकाशक कृतियों का चुनाव करता है, व्यक्ति का नहीं। प्रकाशक के लिए पाठकों को खोजना एक कठिन-साध्य कार्य है। जिस समय देश आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध होगा उन्नति होगी, पाठक बढ़ेंगे और लेखक भी प्रकाशक के साथ आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होंगे।

मित्र प्रकाशन के व्यवस्थापक एवं प्रसिद्ध लेखक श्री श्रीकृष्णदास ने कहा कि लेखक और प्रकाशक परस्पर सहयोगी हैं। वस्तु का निर्माण लेखक करता है और उसका उत्पादन एवं वितरण प्रकाशक करता है। दोनों का क्षेत्र अलग-अलग है। किन्तु साहित्य-सृजन में दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आज दोनों ही पक्ष में इस बात के कितने ही उदाहरण मिलते हैं। प्रकाशकों ने लेखकों का शोषण किया इसके साथ लेखकों ने भी अग्रिम लेकर कृति नहीं दी। आज कोई भी प्रबुद्ध प्रकाशक कापीराइट के पक्ष में नहीं है। आज पाठकों की कमी है, सस्ता मनोरंजन समाज में कल्याणकारी नहीं बन सकता। प्रकाशक और लेखक दोनों

में सामंजस्य बने, प्रेम और सद्भावना बढ़े तब ही कार्य हो सकता है।

प्रमुख साहित्यकार हंसकुमार तिवारी ने कहा कि आज का दिन बड़े ही सौभाग्य का दिन है, आज दो विपरीत धाराएं एक स्थान पर बैठी हैं। शिकायत और विरोध से कोई लाभ नहीं, हमें आज मिलकर यह सोचना है कि ये दो विपरीत दिशाएं किस रूप में एक दूसरे की पोषक बनें। लेखक के पास बीज है और प्रकाशक के पास क्षेत्र; दोनों के पारस्परिक योग और सद्भावना से ही उत्तम कृषि तैयार होगी।

उपन्यास लेखक एवं नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ अश्क ने कहा कि कापीराइट खरीदना उत्तम नहीं। आज कई प्रकाशक खरीदी हुई कापीराइट वाली सामग्री को न तो प्रकाशित ही करते हैं और न लेखक को उसे वापिस ही देते हैं, यह अनाचार है। प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता को अधिक कमीशन दे तो यह व्यवसाय बढ़ेगा। प्रकाशक स्वयं पुस्तक-विक्रेता न बने तो इससे प्रकाशन-व्यवसाय को लाभ होगा। हिन्दी में रायल्टी की दर अधिक होने पर लेखक को पैसे अधिक नहीं मिलते। स्वयं मेरी पत्नी, जोकि प्रकाशक है, मुझे ठीक समय पर रायल्टी नहीं दे पाती। आप लेखकों की रायल्टी कम करके प्रसार अधिक करें, इससे प्रकाशन-व्यवसाय को भी लाभ होगा और लेखकों को भी रायल्टी से अधिक आय प्राप्त होगी।

भारतीय ज्ञानपीठ के संचालक श्री लक्ष्मीचन्द जैन ने कहा कि आज हिन्दी का लेखक भी व्यवसाय को काफी समझता है। मूल समस्या पाठकों की कमी है, पुस्तक नहीं विकती, रायल्टी कम मिलती है, लेखक को प्रकाशक के प्रति असन्तोष हो जाता है। प्रादेशिक भाषाओं में पाठक अधिक हैं हिन्दी में नहीं। इस समस्या का निराकरण करना चाहिए।

आज लेखक का आदर होता है। जहाँ कहीं भी अन्याय

दिखाई देता है वहीं पर उसको दूर करने का प्रयास किया जाता है। जैसा कि इस गोष्ठी में कहा गया है (श्री अश्क ने कहा था कि उन्हें 'गिरती दीवारें' का कापीराइट बेचने के लिए १२ हजार रुपये देने को एक प्रकाशक ने कहा था) कि आज से ३०-४० वर्ष पूर्व कापीराइट के नाम पर २०० रु० मिलते थे, और आज १२००० रु० तक मिलने लगे हैं, इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। हिन्दी की यह प्रगति सन्तोषजनक है।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्रीमती महादेवी ने कहा कि प्रकाशक और लेखक दो विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्ति हैं। समाज के विभिन्न स्वरूप को एकरूपता देने का कार्य लेखक और प्रकाशक ही कर सकते हैं। पहले लेखन तथा प्रकाशन व्यवसाय न होकर एक समाज सेवा का कार्य था। आज लेखक भी प्रकाशक के साथ व्यवसायी बनने लगा है। इस अवसर पर देवी जी ने निराला जी के कुछ मर्मस्पर्शी संस्मरण सुनाये और यह भी बताया कि किस प्रकार श्री मैथिलीशरण जी गुप्त स्वयं प्रकाशक बने। आज भी हिन्दी के अधिकांश लेखक पीड़ित हैं।

प्रकाशन से पूर्व उसका मूल्यांकन जरूरी है। लेखक, प्रकाशक और सरकार इन तीनों का सामंजस्य होना अति आवश्यक है। लेखक और प्रकाशक दोनों ही अर्थनीति से हटकर बात करें तो समाज एवं राष्ट्र का कल्याण होगा। साहित्यकार असन्तोष में रहकर सत साहित्य का सृजन नहीं कर सकता। यदि लेखक भी व्यापारी बन गया तब इस देश का क्या बनेगा यह चिन्ताजनक है।

आज का लेखक स्वतन्त्र चिन्तन को छोड़कर राज्याश्रय ढूंढ रहा है। वह कैंची और गोंद का आश्रय लेकर साहित्य सृजन करना चाहता है। प्रादेशिक भाषा के लेखक हिन्दी में आ रहे हैं। क्योंकि हिन्दी का क्षेत्र व्यापक है। प्रकाशक धैर्य रक्खें, एक निश्चित योजना बनाकर कार्य करें, लेखक और प्रकाशक दोनों ही संवेदनशील रहें, इससे ही लाभ होगा। आज प्रत्येक व्यापारी प्राणों से खेल रहा है। प्रकाशक इन सब कृत्यों से दूर रहें।

अन्त में देवी जी ने कहा कि आप सरस्वती के मंदिर के प्रहरी हैं और हम पुजारी। हम आपका सम्मान करते हैं, हम आप से कभी दुर्भाव नहीं रख सकते। यदि देश को प्रबुद्ध करना है तो आप सभी का सहयोग आवश्यक है।

स्वीकृत प्रस्ताव

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का यह नवां वार्षिक अधिवेशन संसद-सदस्य डा. रघुवीर, श्री राधेश्याम कथावाचक, श्री रविशंकर दीक्षित, श्री पूसमल जैन, (श्री सौभाग्यमल जैन के पिता) के निधन पर शोक प्रकट करता है तथा उनके परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति दे।

हल्की पुस्तकों की सरकारी खरीद

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ इस बात पर चिन्ता प्रकट करता है कि भारत सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों द्वारा देश में पुस्तकालय आन्दोलन के स्थापन और पोषण के लिए दिए गये अनुदान का एक बड़ा अंश ऐसी हल्की किस्म की पुस्तकों की खरीद में व्यय हो रहा है जिससे पुस्तकालय आन्दोलन और उस अनुदान का मूल प्रयोजन ही निरर्थक हो जाता है। मुख्यतः ऐसी पुस्तकों की खरीद उन पर दी गई कमीशन की अधिक दरों के कारण ही होती है और उन पुस्तकों पर अधिक कमीशन मुख्यतः तभी दिया जा सकता है जब कि लेखकों को उनके लाभांश से वंचित रखा जाय।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ भारत सरकार और राज्य सरकारों के उन विभागीय अधिकारियों से, जिन पर कि पुस्तकें खरीदने का दायित्व है, अनुरोध करता है कि वे अनुदान प्राप्त पुस्तकालयों से सत्साहित्य की पुस्तकों को ही सुलभ करने का प्रबन्ध करें और विशेषतः उन पुस्तकों को जिन पर लेखकों को भी लाभांश एवं पारिश्रमिक मिलता हो।

प्रस्ताव : श्री कृष्णचन्द्र बेरी
अनुमोदक : श्री दिनेशचन्द्र

कागज और दफ्ती पर लिया गया उत्पादन शुल्क

पिछले कुछ वर्षों से पुस्तकों के प्रयोग में आने वाले कच्चे माल—कागज और दफ्ती आदि के भाव इतने बढ़ गये हैं कि प्रकाशकों को पुस्तकों के मूल्य में निरन्तर वृद्धि करनी पड़ रही है। भारत सरकार ने कागज और दफ्ती पर पिछले कुछ वर्षों से उत्पादन शुल्क भी लगाया है और इस वर्ष के वित्तीय बजट में यह शुल्क बढ़ा भी है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ भारत सरकार से यह मांग करता है कि प्रकाशकों द्वारा प्रयोग में आने वाले कागज और दफ्ती पर वसूले गए उत्पादन शुल्क को लौटाने की कोई व्यवस्था करें ताकि पुस्तकों के दाम कम रखे जा सकें और इस प्रकार देश के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करने की साधन पुस्तकों की खपत में बाधा न आये।

प्रस्तावक : श्री दयानन्द वर्मा
अनुमोदक : श्री रामतीर्थ भाटिया

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

पिछले अनेक वर्षों से भारत के विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभागों एवं विश्वविद्यालयों ने पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति अपनाई है। देश के भावी नागरिकों की शिक्षा के लिए सब प्रकार से जांची-परखी और अच्छी से अच्छी पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी का जहां तक प्रश्न है संघ को उसमें आपत्ति नहीं है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों के देश भर में मुद्रण और वितरण की वर्तमान स्थिति पर असंतोष प्रगट करता है। जिसके कारण पाठ्य-पुस्तकें सुरुचिपूर्ण ढंग से छप नहीं रही, समय पर वितरित नहीं हो पातीं और परिणाम-स्वरूप पाठ्य-पुस्तकों में काला बाजारी होती है और उनके नकली और जाली संस्करण निकलने लगे हैं। संघ के विचार में उचित यह है कि राजकीय शिक्षा विभाग पाठ्य-पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ तैयार करके उन्हें निश्चित मूल्यों पर मुद्रित और वितरित करने के लिए प्रकाशकों अथवा प्रकाशकीय सहकारों को सौंप दिया करें। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ प्रकाशकों से अपील करता है कि इन शिक्षा विभागों को उचित सहयोग देने के लिए प्रकाशकीय सहकारों की स्थापना को प्रोत्साहन दे।

प्रस्तावक : श्री वाचस्पति पाठक
अनुमोदक : श्री रघुवीरशरण वंसल

वितरण की सहकारी योजना

हिन्दी में पुस्तकों के थोक वितरण की व्यवस्था की कमी को देखते हुए अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ कार्यसमिति को यह आदेश देता है कि पुस्तकों के वितरण की एक सहकारी योजना बनाकर उसे तीन मास के भीतर प्रचारित और कार्यान्वित करे।

प्रस्तावक : श्री दिनेशचन्द्र

अनुमोदक : श्री रामकुमार कपूर

संदर्भ पुस्तकों की सूची

हिन्दी में मानविकी, वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य की पूर्ति में अपना सहयोग देने के लिए अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ कार्य-समिति को यह आदेश देता है कि वह देश के प्रमुख शिक्षाविदों एवं विश्वविद्यालयों की सहायता से कुछ ऐसी सन्दर्भ (सोर्स) पुस्तकों की सूची तैयार करे जिन्हें कि संघ के प्रकाशक सदस्य प्रकाशित करें और जिनकी संघ के अन्य सदस्यों की सहायता से बिक्री की व्यवस्था भी की जाए।

प्रस्तावक : श्री कन्हैयालाल मलिक

अनुमोदक : श्री राधेनाथ चोपड़ा

वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ यह निश्चय करता है कि वह अपने वार्षिक अधिवेशन विभिन्न स्थानों पर पुस्तक व्यवसाय में सर्वत्र एकरूपता लाने की दृष्टि से वहां के पुस्तक प्रकाशकों और विक्रेताओं के सहयोग से स्वतः आयोजित किया करे।

प्रस्तावक : श्री वाचस्पति पाठक

अनुमोदक : श्री रघुवीरशरण बंसल

हिन्दी विरोधी चेष्टा

भारतीय संविधान के अनुसार यथासाध्य निकट भविष्य में देवनागरी में लिखी और मुद्रित की गई हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में सर्वांगीण रूप में स्वीकृत किया जायेगा। भारत सरकार का यह कर्तव्य और दायित्व है कि हिन्दी के लिए ऐसी परिस्थितियां पैदा करे कि वह इस दायित्व को शीघ्र ही पूरा कर सके।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ इस बात पर चिन्ता प्रकट करता है कि भारत सरकार इस ओर विशेष रूप से सक्रिय नहीं रही। इसके विपरीत हिन्दी को उसकी पदच्युति के लिए कुछ विदेशी सरकारें अतीव सक्रिय दिखलाई देती हैं और इसका एक प्रमाण अंग्रेजी में प्रकाशित और उनसे सहायता प्राप्त विभिन्न विषयों की वे पाठ्य-पुस्तकें हैं जो कि बहुत कम दामों में देश भर में सुलभ की जा रही हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ भारत सरकार से अनुरोध करता है कि वह विदेशी सरकारों को मंत्रणा दे कि यदि वे भारत को और भारत के विद्यार्थियों को सहायता देने के लिए उत्सुक हैं तो हिन्दी को देश की राज्यभाषा प्रमाणित करने की नीति के अनुरूप पाठ्य-पुस्तकों के हिन्दी में प्रकाशन को प्रोत्साहन दें। भारत सरकार का यह कर्तव्य भी है कि जिस प्रकार भारत में अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार के लिए विदेशी सरकारें चिन्तित हैं और वित्तीय सहायता देकर कम दामों में अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तकों को सुलभ करने की योजना बनाए हुए हैं, वह हिन्दी में भी कम दामों पर पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन की कोई योजना अविलम्ब बनाए जो कि अधिक आवश्यक है।

प्रस्तावक : श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

अनुमोदक : श्री रामकुमार कपूर

संविधान में संशोधन

संघ के संविधान में निम्नलिखित संशोधन स्वीकार किये जाते हैं :

१. धारा ४ (अ) में 'प्रकाशन संस्थाओं को ही सदस्य माना जायेगा' के साथ 'कार्यसमिति द्वारा स्वीकृत' बढ़ाया जाता है।

२. धारा ५ (आ) में 'तथा विभिन्न पत्रों और अनुबन्ध पत्रों की' के स्थान पर 'तथा उनके कार्य और दायित्व की' रखा जाता है।

३. धारा ६ (अ) में पहली पंक्ति को इस संशोधित रूप में रखा जाता है 'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशन संघ अथवा उसकी कार्यसमिति द्वारा समय-समय पर स्वीकृत किये गए निर्णयों के अनुसार संघ से सम्बद्ध होने वाले पुस्तक विक्रेताओं के'।

४. धारा ६ (आ) तीसरी पंक्ति में 'समिति के सदस्य'

के आगे इस प्रकार संशोधन किया जाता है : 'सदस्यता का निमन्त्रण भेजे और उनसे केवल सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर उन्हें सदस्य'।

५. धारा ६ (इ) : जहां ६ (आ) में यह वाक्य शुरू होता है 'केवल ऐसे' उसे निम्नलिखित रूप से नयी उपधारा का रूप दिया जाता है। 'केवल ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं का सहयोजन ही धारा ६ (आ) के अनुसार कार्यसमिति कर सकेगी जिनकी पुस्तक-विक्रय के कार्य के लिए नियमित दुकान या कार्यालय हो और वे पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त कार्यसमिति की दृष्टि में जनरल पुस्तकों का उपयुक्त स्टाक भी रखते हों।

प्रस्तावक : श्री रघुवीर शरण बंसल
अनुमोदक : श्री कृष्णचन्द्र बेरी

जांच

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्यसमिति एक उपसमिति बनाकर यह जांच करे कि विधान की धारा ४ की उपधारा (ख) के नियमानुसार क्या सभी सदस्यों की सदस्यता प्रमाणित है या नहीं।

प्रस्तावक : श्री सीताशरण सिंह
अनुमोदक : श्री ओंकार शरद्

संदर्भ पुस्तकों की सूची

बेसिक एस. टी. सी. स्कूलों के शिक्षकों तथा विद्यार्थियों दोनों के लिए संदर्भ पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों तथा पुस्तकालय पुस्तकों की विस्तृत सूची तैयार करने का निश्चय किया गया है। अतः प्रकाशकों तथा पुस्तक विक्रेताओं को 'प्रिंसिपल्स आफ एज्यूकेशन, एज्यूकेशनल साइकोलोजी, मेथड्स आफ टीचिंग, बेसिक एज्यूकेशन, स्कूल मैनेजमेंट एण्ड हाइजिन, तथा टीचिंग आफ वेरियस क्राफ्ट्स-संबंधी विषयों में से प्रत्येक की तीन पुस्तकें श्री वी. जी. तिवाड़ी, डाईरेक्टर, स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ एज्यूकेशन, उदयपुर तथा चेयरमैन, स्टेडी ग्रुप फार टीचर ट्रेनिंग प्रोग्रेम, के पास ३१ मई, १९६४ तक भेजनी चाहिये।

इन पुस्तकों के साथ पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, प्रकाशक का नाम, पुस्तक का मूल्य तथा पुस्तक की छपाई में उपयोग किये गए कागज की किस्म संबंधी विस्तृत ब्यौरा भी भेजना चाहिये।

नए प्रकाशन

अप्रैल 1964

पथ की खोज — थोरो — ६.००

एक महान् दार्शनिक का जीवन-दर्शन। एक प्रेरणाप्रद ग्रन्थ

प्रतिशोध — नानकसिंह — ३.५०

प्रस्तुत उपन्यास श्री नानकसिंह की नवीनतम रचना है। इसमें एक ऐसी नवयुवती की मनोव्यथा का चित्रांकन किया गया है, जो अपने यौवन के प्रवेश-द्वार पर पहुंचते ही विधवा होकर स्वार्थी समाज के क्रूर हाथों की कठपुतली बन जाती है।

सागर तल की खोज — रूथ ब्रिड्ज — २.००

ज्ञान-विज्ञान सीरीज़ की इस नई पुस्तक में समुद्र की आंतरिक बनावट, तल के जीव-जन्तु और सागर-गर्भ के अन्य रहस्यों का अभूतपूर्व विवरण प्रस्तुत किया गया है। अनेक चित्रों सहित।

नींव की दरारें — कृष्णकिशोर श्रीवास्तव — २.५०

१९६२ में भारत सरकार द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय एकता' विषय की अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में हिन्दी का पुरस्कृत सर्वश्रेष्ठ नाटक।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

कार्यसमिति १९६४-६५

१. प्रधान : श्री ओंप्रकाश, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ।

२. उपप्रधान : सर्वश्री रामलाल पुरी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

३. „ लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ।

४. „ मदनमोहन पाण्डेय, ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना ।

५. „ दीनानाथ मल्होत्रा, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली ।

६. „ श्रीमती सूरजमुखी अग्रवाल, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद ।

७. प्रधानमंत्री : श्री कन्हैयालाल मलिक, इंडियन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

८. संयुक्त मंत्री : सर्वश्री कृष्णचन्द्र बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

९. „ रघुवीर शरण बंसल, बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली ।

१०. „ राधेनाथ चोपड़ा, लोकभारती, इलाहाबाद ।

११. कोषाध्यक्ष : श्री दयानन्द वर्मा, पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली ।

१२. सदस्य : सर्वश्री वाचस्पति पाठक, भारती भण्डार, इलाहाबाद ।

१३. „ देवनारायण द्विवेदी, ज्ञानमण्डल लि०, वाराणसी ।

१४. „ श्रीमती प्रकाशवती पाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ ।

१५. „ श्रीमती कौशल्या अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।

१६. „ भोलानाथ अग्रवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।

१७. „ तेज नारायण टण्डन, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ ।

१८. सदस्य ओंकार शरद, साहित्य भवन, प्रा० लि०, इलाहाबाद ।

१९. „ मार्तण्ड उपाध्याय, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।

२०. „ श्यामलाल गुप्त, एस० चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली ।

२१. „ त्रिलोकीनाथ भार्गव, नंदकिशोर एण्ड ब्रदर्स वाराणसी ।

२२. „ पुरुषोत्तम मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर ।

२३. „ सीताशरण सिंह, पुस्तक भण्डार, पटना ।

२४. „ रामकुमार कपूर, अत्तरचन्द कपूर एण्ड संस, दिल्ली ।

२५. „ रामतीर्थ भाटिया, राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली ।

अध्यक्ष की अपील पर प्राप्त सहायता का वचन

१.	मैसर्स हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।	२५०.००
२.	मैसर्स भारतीय ज्ञानपीठ, काशी	२५०.००
३.	मैसर्स नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	२५०.००
४.	मैसर्स बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली	२५०.००
५.	मैसर्स राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली	२५०.००
६.	लोकभारती, इलाहाबाद	२५०.००
७.	मैसर्स किताब महल प्रा. लि., इलाहाबाद	२५०.००
८.	मैसर्स विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	२५०.००
९.	मैसर्स मित्र प्रकाशन प्रा. लि., इलाहाबाद	२५०.००
१०.	मैसर्स ज्ञानपीठ प्रा. लि., पटना	१०१.००
११.	पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली	१०१.००
१२.	मैसर्स नंदकिशोर एण्ड संस, वाराणसी	१०१.००
१३.	मैसर्स अत्तरचन्द कपूर एण्ड संस, दिल्ली	१०१.००
१४.	मैसर्स उमेश प्रकाशन, दिल्ली	१०१.००
१५.	मैसर्स कौशाम्भी प्रकाशन, इलाहाबाद	१०१.००
१६.	मैसर्स व्होरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा. लि., बम्बई	१०१.००
१७.	मैसर्स न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद	१०१.००

९वें वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधि

१. सर्वश्री ओमप्रकाश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
२. लक्ष्मीचन्द्र जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ।
३. श्रीमती कौशल्या अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।
४. श्रीमती सूरजमुखी अग्रवाल, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
५. सर्वश्री देवनारायण द्विवेदी, ज्ञानमण्डल लि०, वाराणसी ।
६. ,, कैलाशनाथ भार्गव, नन्दकिशोर एण्ड संस, वाराणसी ।
७ ,, रामकुमार कपूर, अत्तरचन्द कपूर एण्ड संस, दिल्ली ।
८. ,, गिरिधर शुक्ल, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद ।
९. ,, रमेश सन्त, उमेश प्रकाशन, दिल्ली ।
१०. ,, भोलानाथ अग्रवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।
११. ,, ओंकार शरद्, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
१२. ,, राधेनाथ चोपड़ा, लोकभारती, इलाहाबाद ।
१३. ,, दिनेशचन्द्र, लोकभारती, इलाहाबाद ।
१४. ,, दयानन्द वर्मा, पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।
१५. अमरनाथ, पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।
१६. ,, त्रिलोकी नाथ भार्गव, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी ।
१७. ,, श्रीकृष्णदास, मित्र प्रकाशन प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
१८. ,, मुरलीधर उपाध्याय, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।
१९. ,, सीताशरणसिंह, पुस्तक भण्डार, पटना ।
२०. ,, वहस्पति उपाध्याय, सस्ता साहित्य मण्डल, इलाहाबाद शाखा ।
२१. ,, लक्ष्मणदास, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद ।
२२. ,, ठाकुरचन्द्र द्वादशश्रेणी, विश्वविद्यालय प्रेस, इलाहाबाद ।
२३. सर्वश्री श्री गर्ग, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद ।
२४. ,, उमेश अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।
२५. ,, प्रदीपकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली ।
२६. ,, सुरेशचन्द अग्रवाल, नवीन पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद ।
२७. ,, अखिलेश, पराग प्रकाशन, पटना ।
२८. ,, बी० एन० माथुर, इंडियन प्रेस (पब्लि०) प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
२९. ,, मोहित मोहन बोस, भारती भवन, पटना ।
३०. ,, हंसकुमार तिवारी, मानसरोवर, गया ।
३१. ,, शारदानन्द, आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी ।
३२. ,, श्रीरंजन, साधना सदन, इलाहाबाद ।
३३. ,, जगदीश शर्मा, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
३४. ,, बालकृष्ण त्रिपाठी, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
३५. ,, जगदीशप्रसाद शुक्ल, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद ।
३६. ,, ओमप्रकाश शर्मा, सुबोध प्रकाशन, दिल्ली ।
३७. ,, लक्ष्मीकान्त मालवीय, महामना प्रकाशन, इलाहाबाद ।
३८. ,, श्रीनिवास अग्रवाल, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
३९. ,, काशीप्रसाद जैन, व्होरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ।
४०. ,, रामजी वाजपेयी, विद्या मंदिर, वाराणसी ।
४१. ,, एम० सिन्हा, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद ।
४२. ,, गणेश पाण्डेय, छात्र हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद ।
४३. ,, रामेश्वर तिवारी, नवयुग ग्रंथागार, लखनऊ ।
४४. ,, राजकुमार जौहरी, न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद ।
४५. ,, शिवमूरत सिंह, रमा प्रकाशन, लखनऊ ।
४६. ,, ओमप्रकाश, भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद ।
४७. ,, वाचस्पति पाठक, भारती भण्डार, इलाहाबाद ।
४८. ,, कृष्णचन्द्र बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

४९. सर्वश्री मदनमोहन पाण्डेय, ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना।
५०. „ कन्हैयालाल मलिक, इंडियन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
५१. „ उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।
५२. „ प्रभात मिश्र, कौशाम्भी प्रकाशन, इलाहाबाद।
५३. „ श्रीधर शास्त्री, भारती परिषद, इलाहाबाद।
५४. „ अशोक मित्र, मित्र प्रकाशन प्रा० लि०, इलाहाबाद।
५५. „ रघुवीर शरण बंसल, बंसल एण्ड कम्पनी, दिल्ली।
५६. „ रामतीर्थ भाटिया, राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली।

बुनियादी स्कूल

केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री श्रीमती सुन्दरम् रामचन्द्रन ने निम्नलिखित विवरण दिया है, जिसमें बताया गया है कि विभिन्न राज्यों में तीसरी योजना में कितने बुनियादी स्कूल खोले जा चुके हैं:

राज्य	बेसिक स्कूलों की संख्या	
	जूनियर बेसिक स्कूल	सीनियर बेसिक स्कूल
(१)	(२)	(३)
आंध्र प्रदेश	१७०	१
आसाम	७	२
बिहार	९७	२७
गुजरात	--१५	२२४
जम्मू-कश्मीर	कुछ नहीं	७८९
केरल	२	कुछ नहीं
मध्य प्रदेश	--३८७	१५
मद्रास	११५	२६८
महाराष्ट्र	३१७	२२५
मैसूर	२७	१३०
उड़ीसा	कुछ नहीं	कुछ नहीं
पंजाब	६७१	१
राजस्थान	--५८	२
उत्तर प्रदेश	६३४९	२३६
प० बंगाल	१०६	--६७
नागालैंड	कुछ नहीं	कुछ नहीं

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

आधुनिक हिन्दी काव्य की भूमिका : ले. डा. शम्भूनाथ पाण्डेय; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ४०६; मू० १०.०० ।

आलोचना : इतिहास तथा सिद्धान्त : ले. डा. एस. पी. खत्री; प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ४४६; मू. ९.०० ।

केशव और उनकी रामचन्द्रिका : ले. डा. देशराज सिंह भाटी; प्र. अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ. ५००; मू. ७.०० ।

प्रतिनिधि महाकाव्य : ले. डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ४००; मू. १२.०० ।

विद्यापति वैभव : डा० गुणानन्द जुयाल व विश्वम्भर 'अरुण'; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; सा. क्रा. ८; पृ. १७०; मू. २.२५ ।

वैदिक साहित्य : प्र. पब्लिकेशन डिवीजन, दिल्ली; सा. डि. ८; पृ. ४४; मू. ०.६० । संशोधित संस्करण ।

रस सिद्धांत की दार्शनिक व नैतिक व्याख्या : ले. डा. तारकनाथ बाली; प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; सा. डि. ८; पृ. २२२; मू. ८.०० । शोध प्रबन्ध ।

हिन्दी प्रमेय रत्नमाला : व्याख्याकार हीरालाल जैन; प्र. चौखम्बा विद्याभवन; पो. बा. ६९, वाराणसी; मू. १५.०० । जैन आलोचना ग्रन्थ ।

हिन्दी रेखाचित्र : ले. कृपाशंकर सिंह; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि. ८; मू. ५.०० ।

कविता

पथ प्रवाह : क. सुशीला कुमारी; प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६; सा. क्रा.; पृ. २२८; मू. २.५० । संग्रह ।

प्रतिनिधि रुबाइयां : प्र. गिरिधर प्रकाशन, ५९९२ जवाहरनगर, दिल्ली-६; सा. क्रा. ८; मू. ३.०० । १४३ तरुण कवियों की रुबाइयों और मुक्तकों का संग्रह ।

रणभेरी बज उठी : प्र. पूर्वोक्त; सा. क्रा. ८; मू. १.७५ । राष्ट्रीय कविताओं का संकलन ।

लोकायतन : क. सुमित्रानन्दन पंत, प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ६८८; मू. २५.०० । महाकाव्य ।

स्मृति : ले. हरीश करुण; प्र. गिरिधर प्रकाशन, दिल्ली; सा. क्रा. ८; मू. १.०० ।

उपन्यास

अंगारे : ले. दत्त भारती; प्र. रतन प्रकाशन, दरीबा दिल्ली-६; सा. क्रा. ८; पृ. ११२; मू. २.५० ।

एक औरत : एक पहेली : ले. गोविन्दसिंह; प्र. रतन प्रकाशन, दरीबा, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २०६; मू. ३.५० ।

एक थी सुनीता : ले. ओमीलाल इलाहाबादी; प्र. राष्ट्रभाषा प्रचारक, इलाहाबाद-३; सा. फु. १६; पृ. १९२; मू. ४.०० ।

गुनाहों के आंचल : ले. गोविन्दसिंह; प्र. रतन प्रकाशन, दरीबा, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १९२; मू. ३.५० ।

जिन्दगी दांव पर : ले. स्टीफेन ज्विग; प्र. सस्ता-साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १५०; मू. ३.०० ।

तीन चम्मच गंगाजल : ले. ओमीलाल इलाहाबादी; प्र. राष्ट्रभाषा प्रचारक इलाहाबाद-३; सा. फु. १६; पृ. २०६; मू. ४.५० ।

निर्माता : ले. मनोज बसु, प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २४०; मू. ५.०० ।

पतिव्रता : ले. साधना प्रतापी; प्र. गिरिधर प्रकाशन ५९९२ जवाहरनगर दिल्ली; सा. क्रा. ८; मू. २.७५ ।

फूल और कांटे : ले. अलेक्जेण्डर सुन; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३६ दरियागंज दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २१८; मू. २.५० ।

बन्धन विहीना : ले. प्रतापनारायण श्रीवास्तव; प्र. जिज्ञासा प्रकाशन, ८६/३३७ देवनगर; कानपुर; मू. ५.०० ।

मिट्टी के देव : ले. पद्मा त्रिवेदी; प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर प्रा. लि., बंबई-४; मू. ३·५० ।

राजपथ : ले. भगवतीप्रसाद वाजपेयी; प्र. जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर; मू. ६·०० ।

रानी बहू : ले. ओमीलाल इलाहाबादी; प्र. राष्ट्र-भाषा प्रचारक, इलाहाबाद; सा. फु. १६; पृ. २१२; मू. ४.५० ।

विपथगा : ले. प्रतापनारायण श्रीवास्तव, प्र. जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर; मू. ३.०० ।

विसर्जन : ले. प्र. पूर्वोक्त; मू. ८.०० ।

कहानी

अर्चना : सं. राजकुमार आनन्द; प्र. गिरिधर प्रकाशन, ५९९२ जवाहर नगर, दिल्ली; सा. क्रा. ८; मू. ३·०० । १७ कहानीकारों की रचनाओं का परिचय संग्रह ।

ऐसी होली खेलो लाल : ले. पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; मू. २.५० ।

दुनिया रंगबिरंगी : ले. श्रीकृष्ण व जय प्रकाश भारती; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १३२; मू. ३·००

मार्मिक रहस्य : अ. श्रवणकुमार दिव्य; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ११४; मू. २.००; स्टीफन ज्विग की 'बर्निंग डिजायर' और 'मून बीम एलेज' का रूपान्तर ।

हीरे मोती : ले. श्रीकृष्ण; प्र. लोक-प्रिय प्रकाशन; ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १२६; मू. ३·०० । सचित्र ।

नाटक-एकांकी

कालिख और लाली : ले. राजेन्द्रकुमार शर्मा; प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; मू. २·०० ।

धर्मवीर : ले. राजकुमार आनन्द; प्र. गिरिधर प्रकाशन, जवाहरनगर, दिल्ली, मू. ०·५० । सिख इतिहास पर आधारित ।

मोहिनी : ले. परितोष गार्गी; प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ८०, मू. १·५० ।

हृय तथा गुद्स : ले. वारिस, अ. राजेन्द्रकुमार, प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; मू. २·५० ।

जीवनी-यात्रा संस्मरण

जमना-गंगा के नैहर में : ले. विष्णु प्रभाकर; प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २३६; मू. ४.०० ।

मेरा वकालती जीवन : ग. वा. मावलंकर; प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १८०; मू. ४.०० ।

राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द' : ले. बिन्ध्याचल दुबे; प्र. सुलभ साहित्य सदन, पटना १; सा. क्रा. ८; पृ. २०; मू. ०·५० ।

किशोर-बालोपयोगी

कमलेश्वर के बाल नाटक : (भाग १ तथा २) : ले. कमलेश्वर, प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली; मू. प्र. भाग, १·५० ।

खीर की गुड़िया : ले. अरबिंद कुमार; प्र. पब्लिकेशंस डिवीजन, दिल्ली; सा. फु. ४ टू; पृ. ४६; मू. ०·७५ ।

डाक्टर के डंक : ले. अरुण; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; मू. १.२५ ।

नदी पर बांध : ले. जे. भारतदास; प्र. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. १६; मू. ०·६० । रंगीन ।

पाजामे की कहानी : ले. सिंगविंग; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३६, दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १०६; मू. १·०० । सचित्र ।

फिर क्या करोगे राम : ले. शर्ले एल. अरोड़ा; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १६८; मू. २.५० । सचित्र बाल उपन्यास ।

बहादुर बलराज (भाग १-२) : ले. किशन चन्दर; प्र. हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई-४; मू. प्र. भाग १·९० ।

मजाक और मजा : ले. अरुण; प्र. आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; मू. १.२५ ।

राष्ट्रीय एकांकी : सं० योगेन्द्रकुमार लल्ला; प्र. आर्टस एण्ड लेटर्स, ५७ दरियागंज, दिल्ली; सा. फु. ८; पृ. १४४; मू. ४·०० । बालोपयोगी ।

क्रिकेट कैसे खेलें

फुटबाल कैसे खेलें

बैडमिंटन कैसे खेलें

बालीवाल कैसे खेलें

हाकी कैसे खेलें

ले. सरदार इन्द्रसिंह 'भूकंप'; प्र. जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर; मू. प्रत्येक २·०० ।

स्वस्थ कैसे रहें : ले. डा. हीरालाल; प्र. जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर; कानपुर, मू. २.०० ।

ज्ञान-विज्ञान

कृत्रिम उपग्रह और अन्तरिक्ष राकेट : अ. रमेश वर्मा; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. फु. ८; पृ. ७४; मू. ३·०० । ऐरिक बरगास्ट के 'सेटेलाइटस् एण्ड स्पेस प्रोब' का अनुवाद ।

धातुओं की कहानी : ले. डा. धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया, प्र. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६; सा. डि.; पृ. ११२; मू. २.०० । सचित्र ।

पृथ्वी से अन्तरिक्ष तक : अ. हरीशचन्द्र; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २१०; मू. ४.०० । डेबिड ओ. बुडबरी के 'आउट बाउण्ड फार स्पेस' का अनुवाद ।

भारतीय विज्ञान की कहानी : ले. डा. विश्नोई; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३६ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १६४; मू. ३·५० । सचित्र ।

सरल साज समाज के वैज्ञानिक प्रयोग :-प्र. पब्लिकेशंस डिवीजन, दिल्ली; सा. क्रा. ४ टू; पृ. ४०६; मू. ६·०० । विज्ञान शिक्षण के लिए यूनेस्को का आकर ग्रंथ ।

इतिहास

आधुनिक भारत का सरल इतिहास (१७०७-१९५०)

मध्यकालीन भारत का सरल इतिहास (१०००-१७०७)

ले. चार; प्र. सुरजीत बुकडिपो, नई सड़क दिल्ली, सा. क्रा. ८; पृ. क्रमश: ७२७, ५८०; मू. क्र. : १२.००, १०.०० ।

आधुनिक योरोप का सरल इतिहास : (१७८९-१९४५) ले. चार; प्र. सुरजीत बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ६६८; मू. १०.०० ।

१७८६-१८७० पृ. ३८५, मू. ५.०० ।
१८७१-१९४५ पृ. ३१२, मू. ५.०० ।

इंग्लैंड का सरल इतिहास (१६८८-१९४५) ले. चार; प्र. सुरजीत बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ७४७; मू. १२.०० ।
१४८५-१६८८, पृ. २६३; मू. ६.००
१८१५-१९४५, पृ. ४१३, मू. ८.०० ।

प्राचीन भारत का सरल इतिहास (आदि से १००० ई.) : ले. चार; प्र. सुरजीत बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ५६५; मू. १०.०० ।

भारत और पश्चिम : अ. आर. एस. भारद्वाज; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ४टू; पृ. २६८; मू. ६.०० । बारबारा वार्ड की 'इण्डिया एण्ड दी वेस्ट' का अनुवाद ।

भारत के गौरव (भाग ३) : प्र. पब्लिकेशन्स डिवीजन, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ १०८; मू. १.७५ । पु. मु. ।

भारत सजग है : ले. अ. अ. अनन्त; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १३०; मू. ३.०० । सचित्र ।

भारतीय एकता की कहानी : ले. ओमप्रकाश; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १०४; मू. २.७५ । सचित्र ।

यूरोप का इतिहास : ले. आर. आर. सेठी तथा चावला; प्र. सुरजीत बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ५७९; मू. १२.०० ।

राजनीति

भारतीय प्रशासन तथा संविधान (सरल अध्ययन) : ले. चार; प्र. सुरजीत बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ५८४; मू. १२.०० ।

लोकतंत्र का लक्ष्य : ले. इन्द्रचन्द्र शास्त्री; प्र. सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; मू. ४.५० ।

मनोविज्ञान-शिक्षा

बालमनोविज्ञान : ले. भाई योगेन्द्र जीत; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ३६४; मू. ८.०० ।

भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास : ले. डा. पी. एल. रावत; प्र. रामप्रसाद एंड संस, आगरा; सा. डि.; पृ. ३७४; मू. ५.७५ । तृतीय संस्करण ।

मनोविज्ञान का इतिहास : ले. डा. जे. डी. शर्मा, डा. जी. डी. सारस्वत; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि. ८; पृ. ३२१; मू. १०.०० ।

महान पश्चिमी शिक्षाशास्त्री : ले. डा. रामशकल पाण्डेय; प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; सा. डि. ८; पृ. १९६; मू. ४.५० ।

मित्र बनाने की कला : ले. सी. एच. टीअर; प्र. राजकमल प्रकाशन दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. ८३; मू. २.५० ।

व्यावहारिक मनोविज्ञान : ले. सुरेशचन्द्र शर्मा, प्र. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ; सा. डि. ८; पृ. ३३२; मू. ६.०० ।

शैक्षिक एवं माध्यमिक शिक्षालय व्यवस्था : ले. डी. एन. गैंड, आर. पी. शर्मा; प्र. रामप्रसाद एंड संस, आगरा ; सा. डि. ; पृ. ४१४; मू. ६.५० । द्वितीय संस्करण ।

जीव-विज्ञान

कीटों में सामाजिक जीवन : ले. डा. आर. रक्षपाल; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; मू. ३.०० ।

सांप : ले. जगमोहनलाल माथुर; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन; ३६ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ४; पृ. ३६; मू. १.७५ । सचित्र रंगीन ।

सामुदायिक विकास

ग्राम स्वयं सेवक दल : ले. विद्यासागर शर्मा, प्र. नवनीत प्रकाशन, ३६ दरियागंज, दिल्ली, सा. क्रा. ८, पृ. ८४, मू. २.३० । सचित्र ।

तकनीकी

इलैक्ट्रिसिटी इंजीनियरिंग : ले. किशनचन्द माथुर; प्र. रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ४६०, मू. ६.०० ।

माडर्न स्माल स्केल इंडस्ट्रीज : ले. सुरेशचन्द्र दुबे, प्र. रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ४९०, मू. ८.०० ।

समाजशास्त्र-दर्शन

पाश्चात्य दर्शन की रूपरेखा : ले. जयदेवसिंह; प्र. रामप्रसाद एंड संस, आगरा ; सा. डि. ; पृ. १९८; मू. ६.२५ ।

मानव समाज : ले. के. सी. मलैया, प्र. राजकमल प्रकाशन दिल्ली-६; सा. क्रा. पृ. १७२; मू. १.१०, सचित्र ।

समाज शास्त्र : सिद्धांत और विश्लेषण : ले. डा. शम्भूलाल दोषी; प्र. रामप्रसाद एंड संस, आगरा ; सा. डि. ; पृ. ५४४ ; मू. १०.०० ।

कोश

अभिधान चिंतामणी : व्याख्या. हरगोविन्द शास्त्री; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, पो. बा. ६९, वाराणसी ; मू. २०.०० । सटिप्पण, मणिप्रभा, हिन्दी व्याख्या विमर्श सहित ।

सामान्य अंग्रेजी हिन्दी कोष : ले. राममूर्तिसिंह; प्र. हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर; बंबई-४ ; मू. १२.०० ।

गाइड

अशोक आयुर्वेद रत्न गाइड : (प्रथम खण्ड) ले. आचार्य ज्ञानेन्द्र पाण्डेय; अशोक प्रकाशन, दिल्ली मू. ६.००; पृ. ६०० ।

अशोक आयुर्वेद रत्न गाइड : [द्वितीय खण्ड] ले. आचार्य शिवकुमार वैद्य, प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली; मू. ८.००, पृ. ७०० ।

स्कन्दगुप्त समीक्षा : ले. कृष्णदेव शर्मा; प्र. अशोक प्रकाशन, दिल्ली ; मू. २.५०, पृ. २०० ।

विविध

गणेशशंकर विद्यार्थी के श्रेष्ठ निबन्ध : सं. राधाकृष्ण; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; मू. ४.०० ।

जवानो उठो : ले. महात्मा भगवान दीन; प्र. सस्ता-साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १५०; मू. २.५० ।

तर्जुमा कुरान शरीफ : अ. इकबाल अहमद लायलपुरी एवं के. सी. माथुर देहलवी; प्र. रतन एण्ड कम्पनी; दरीबा दिल्ली; सा क्रा. ८; पृ. ८०८; मू. ८.०० ।

शिकार और जीवन : ले. रोलिंग्स, अ. सत्यकाम वर्मा; प्र. आत्माराम एंड संस, दिल्ली; मू. ६.०० ।

संगीत रत्नाकर : (भाग १) अ. लक्ष्मी नारायण गर्ग; भूमिका आचार्य बृहस्पति; प्र. संगीत कार्यालय, हाथरस; सा. डि. ८; पृ. २१०; मू. ७.०० । आचार्य शारङ्गदेव विरचित ग्रंथ के स्वरगताध्याय का हिन्दी अनुवाद ।

हमारा झंडा : प्र. पब्लिकेशन्ज डिवीजन, दिल्ली, सा. क्रा. ८; पृ. ३२, मू. ०.७५ । संशोधित संस्करण ।

हमारे उपयोगी साहित्यिक ग्रन्थ

शोध-प्रबन्ध

हिन्दी अलंकार-साहित्य : डॉ० ओमप्रकाश ६.००
हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य : „ „ ८.००
सूर की काव्य-कला : डॉ० मनमोहन गौतम १०.००
अपभ्रंश-साहित्य : डॉ० हरिवंश कोछड़ १०.००
हिन्दी और बंगला के वैष्णव-कवि : डॉ० रत्नकुमारी १०.००
मतिराम : कवि और आचार्य : डॉ० महेन्द्रकुमार १०.००
राजस्थानी कहावतें : डॉ० कन्हैयालाल सहल ८.५०
हिन्दी उपन्यासों में चरित्रचित्रण का विकास : डॉ० रणवीर रांग्रा १५.००
केशवदास : जीवनी, कला और कृतित्व : डॉ० किरणचन्द्र शर्मा १५.००
गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्तित्व, दर्शन, साहित्य डॉ० रामदत्त भारद्वाज १८.००
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सिद्धान्त और समीक्षा : डॉ० जयचन्द्र राय १०.००
गुरुमुखी लिपि में हिन्दी-काव्य : डॉ० हरभजनसिंह १६.००
'रामचन्द्रिका' का विशिष्ट अध्ययन : डॉ० गार्गी गुप्ता १५.००

विश्वविद्यालयस्तरीय साहित्यिक निबन्ध-ग्रन्थ

कला, साहित्य और समीक्षा : डॉ० भगीरथ मिश्र १०.००
मूल्य और मूल्यांकन : डॉ० रामरतन भटनागर ७.५०
साहित्य, अनुभूति और विवेचन डॉ० संसारचन्द्र ६.००
साहित्य, शोध, समीक्षा : डॉ० विनयमोहन शर्मा ५.५०
साहित्य, संदर्भ और मूल्य : डॉ० रामदरश मिश्र ४.००
आलोचना के पथ पर : डॉ० कन्हैयालाल सहल ५.००
विचार और निष्कर्ष : डॉ० वासुदेव ७.५०
आलोचना के द्वार पर : डॉ० ओमप्रकाश कुलश्रेष्ठ ४.५०
आलोचना की ओर : „ „ ४.००

साहित्यवार्त्ता : श्री गिरिजादत्त शुक्ल ५.५०
चिन्तन और कला : प्रो० जयनाथ 'नलिन' ३.५०
साहित्य के आलोक-स्तम्भ : श्री विश्वम्भर 'मानव' १.००
आधुनिक हिन्दी निबन्ध : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त तथा कृष्णचन्द्र विद्यालंकार ५.००
सरल साहित्यिक निबन्ध : डॉ० सुरेशचन्द्र ३.००
सरल सामयिक निबन्ध : श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार ३.००

समीक्षाशास्त्र के सैद्धान्तिक ग्रन्थ

समीक्षाशास्त्र के सरल सिद्धान्त—१ : डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ४.००
शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त—१ : „ „ ८.००
„ „ „ —२ : „ „ १०.००
भाषा और साहित्य का विवेचन : जियालाल हण्डू तथा रघुनाथ सफाया ३.००
साहित्य प्रबोध : डॉ० सोमनाथ गुप्ता १.५०
काव्यांग-परिचय : बद्रीप्रसाद पंचोली १.६२

साहित्यिक इतिहास-ग्रन्थ

हिन्दी साहित्यानुशीलन : स्नातक सत्यकाम वर्मा ९.००
हिन्दी का आधुनिक साहित्य : „ „ ४.००
हिन्दी साहित्य दिग्दर्शन : संकटाप्रसाद उपाध्याय ३.५०

समीक्षात्मक-ग्रन्थ

महाकवि प्रसाद : विजयेन्द्र स्नातक ३.५०
रामचन्द्र शुक्ल और उनका साहित्य : डॉ० जयचन्द्र राय ३.००
रत्नाकर काव्य : श्री लल्लनराय ४.००
प्रतिनिधि कवि : डॉ० सत्यदेव चौधरी ३.५०
गद्य-विवेचन : फूलचन्द पाण्डेय २.५०
भारतीय गद्य साहित्य : सं. डा. नगेन्द्र १२.००
आलोचना और आलोचक : डा० मोहनलाल ३.००
सेठ गोविन्द दास की नाट्य कला तथा कृतियाँ : डॉ० रामचरण महेन्द्र ५.००
गोविन्ददास : व्यक्तित्व तथा कृतित्व : „ ६.००

साहित्यिक ग्रन्थों के प्रमुख प्रकाशक

भारती साहित्य मन्दिर फव्वारा, दिल्ली

सूचना सार

पुस्तकों के लिए अनुदान

उत्तरप्रदेश के कालेजों की सूची

उत्तरप्रदेश सरकार ने ९५ डिग्री कालेजों को ४५०००० रु. की सहायता सन् ६४ के लिए प्रदान की है। इनमें से जिन कालेजों को पुस्तकों के लिए सहायता मिली है उनके नाम यहाँ दिए जा रहे हैं :

डी. ए. वी. कालेज, देहरादून ।

जे. बी. एस. महाविद्यालय, हरिद्वार ।

एस. डी. कालेज, मुजफ्फरनगर ।

राष्ट्रीय बिसान डिग्री कालेज, शामली, जिला मुजफ्फरनगर ।

के. के. जैन कालेज, खतौली (उ. प्र.)

दिगम्बर जैन कालेज, बरौत (जिला मेरठ)

आर. एस. के. डिग्री कालेज, सिम्भावली, मेरठ ।

एन. ए. एस. कालेज, मेरठ ।

गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद ।

शम्भूदयाल डिग्री कालेज, गाजियाबाद ।

इस्माइल नेशनल गर्ल्स कालेज, मेरठ ।

दिगम्बर कालेज, डिबाई, जिला बुलन्दशहर ।

बलवन्त राजपूत कालेज, आगरा ।

आर. एस. वूमैन् कालेज, दयालबाग, आगरा ।

चित्रगुप्त डिग्री कालेज, मैनपुरी ।

वर्धमान डिग्री कालेज, बिजनौर ।

आर. एस. एम. डिग्री कालेज, धामपुर (उ. प्र.)

डी. एस. एम. कालेज, कांठ, जिला मुरादाबाद ।

जे. एस. हिन्दू कालेज, अमरोहा (उ. प्र.) ।

कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ ।

महिला विद्यालय कालेज, लखनऊ ।

दयानन्द सुभाष नेशनल कालेज, उन्नाव ।

हिन्दू कन्या पाठशाला, सीतापुर ।

एम. एल. के. डिग्री कालेज, बलरामपुर ।

कुलभास्कर आश्रम डिग्री कालेज, इलाहाबाद ।

अग्रवाल डिग्री कालेज, इलाहाबाद ।

एग्रीकल्चर इन्स्टीच्यूट, नैनी (उ. प्र.) ।

हलीम मुस्लिम कालेज, कानपुर ।

बी. बी. एस. कालेज, कानपुर ।

बी. एन. वी. डिग्री कालेज, राठ, जि. हमीरपुर ।

के. डी. डिग्री कालेज, मिरजापुर ।

आर. एस. के. डिग्री कालेज, जौनपुर (उ. प्र.) ।

हिन्दू डिग्री कालेज, जमानिया (उ. प्र.) ।

जनता कालेज, अजीतमल, इटावा ।

डी. एन. कालेज, फतेहगंज (उ. प्र.) ।

बद्री विशाल डिग्री कालेज, फतेहगढ़ (उ. प्र.) ।

कमलादेवी बाजोरिया डिग्री कालेज, दुबहर, ज़िला बलिया ।

उदित नारायण डिग्री कालेज, पडरौना ।

मदनमोहन मालवीय कालेज, भाटपूरन (उ. प्र.) ।

म्यूनिसिपल डिग्री कालेज, मसूरी ।

एस. एन. सैन बालिका विद्यालय, कानपुर ।

जुहारीदेवी कन्या महाविद्यालय, कानपुर ।

ज्वालादेवी विद्यामंदिर डिग्री कालेज, कानपुर ।

संस्कृत कालेज, औरय्या, इटावा ।

वेद आदर्श संस्कृत महाविद्यालय संदीकाला, रुद्रनगर, (जिला बस्ती) ।

श्री वैष्णवभवन देसराज सूरी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, उदयमानपुर, शंकरगंज, जौनपुर ।

डी. ए. वी. कालेज, आजमगढ़ (उ. प्र.) ।

कन्हैयालाल स्वामी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, ग्वालियर मार्ग, झांसी ।

श्री सांवेद संस्कृत महाविद्यालय, नवार, नरोरा, बुलन्दशहर ।

श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्य आश्रम संस्कृत आदर्श महाविद्यालय, ऋषिकुल रोड, मुरादाबाद ।

श्री सनातनधर्म संस्कृत आदर्श विद्यालय, लखीमपुर, खेरी ।

रघुनाथ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, देवप्रयाग, गढ़वाल (उ. प्र.) ।

तिवारी वैदिक आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, पुराना कानपुर।

श्री १०८ स्वामी सच्चिदानन्द आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, रुद्रप्रयाग, चमोली, गढ़वाल।

गान्धी गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, भवरनाथ, आजमगढ़।

श्री आकर्षणानन्द आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, मैनपुरी।

श्री ऋषिकुल विद्यापीठ ब्रह्मचर्य आश्रम, मथुरा।

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार।

श्री संस्कृत महाविद्यालय परिषद्, खेकड़ा, मेरठ।

श्री काशी विद्यामंदिर, डी.-४८।२०२, मिसिर पोखरा, वाराणसी।

संन्यासी संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी।

द्वारकेश संस्कृत महाविद्यालय, मथुरा।

संस्कृत आदर्श शास्त्रार्थ महाविद्यालय, दशाश्वमेध, वाराणसी।

आदर्श श्री वासुदेव संस्कृत पाठशाला, गुलवान, जौनपुर।

श्री माधव संस्कृत महाविद्यालय, गोवर्धन, मथुरा।

श्री लक्ष्मणदास आयुर्वेद महाविद्यालय, खुर्जा।

पुस्तकों के लिए दो लाख रुपये का अनुदान

सहायता प्राप्त ७३ विद्यालयों की नामावली

उत्तर प्रदेश राज्य के ७३ सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को, पुस्तकालय-सुविधा प्रदान करने के लिए दो लाख रुपये दिये गये हैं। इनमें से १४ लड़कियों के तथा शेष लड़कों के विद्यालय हैं। लड़कों के विद्यालयों को प्रत्येक को ढाई हज़ार के हिसाब से और लड़कियों के विद्यालयों को प्रत्येक को ३७५० रु० के हिसाब से दिए गये हैं। सहायता प्राप्त विद्यालयों की नामावली इस प्रकार है।

लड़कों के विद्यालय

नानकचन्द जनता हायर सैकण्डरी स्कूल, सौंदा, जिला मेरठ।

गान्धी स्मारक जनता हा० सै० स्कूल पटला, जिला मेरठ।

मुस्लिम जाट इण्टर कालेज असारा, जिला मेरठ।

जनता इण्टर कालेज खरखण्ड, जिला मेरठ।

के. आर. इण्टर कालेज चिरौरी, जिला मेरठ।

सर्वहितकारी हाई स्कूल बिनौली, जिला मेरठ।

एस. एस. धनौरे शिवनगर, जिला मेरठ।

सालवै हा. सै. स्कूल सालवै, जिला मेरठ।

सनातन धर्म हा. सै. स्कूल, जिला मेरठ।

डी. एन. हा. सै. स्कूल, गुलौठी, जिला बुलन्दशहर।

पब्लिक हा, सै. स्कूल जैवलीगढ़, जिला बुलन्दशहर।

जनता आदर्श हा. सै. स्कूल गढैय्या मानपुर, जिला बुलन्दशहर।

जनता हा. सै. स्कूल चोला बंचौली, जिला बुलन्दशहर।

सी. एल. हा. सै. स्कूल भौपा, जिला मुजफ्फरनगर।

नेशनल हा. सै. स्कूल धनौरा, जिला सहारनपुर।

जनता हा. सै. स्कूल साहपुर, जिला मथुरा।

ब्रज आदर्श हा. सै. स्कूल, मथुरा,

हिन्दू हा. सै. स्कूल कोसी कलां, जिला मथुरा।

जी. एस. के. हा. सै. स्कूल बैरा, जिला मथुरा।

के. जी. हा. सै. स्कूल हींग की मण्डी, आगरा।

नेशनल माडल स्कूल मोती कटरा, आगरा।

गीता विद्यालय हा. सै. स्कूल गंजगांगनी, आगरा।

सर्वोपयोगी हा. सै. स्कूल पलसारा, जिला अलीगढ़।

जे. पी. नारायण इण्टर कालेज नवाब गंज, जिला बरेली।

किसान हा. सै. स्कूल खांड गूजर गजरौला, जिला मुरादाबाद।

कृष्ण सहाय राष्ट्रीय हा. सै. स्कूल कम्पिल, जिला फरुखाबाद।

आदर्श इण्टर कालेज, कोड़ा जहानाबाद, जिला फतेहपुर।

चौ. एस. एस. एस. इण्टर कालेज, जयरामपुर, जिला फतेहपुर।

अकबरपुर हा. सै. स्कूल, अकबरपुर, जिला कानपुर।

चिन्तामणि मुकर्जी हा. सै. स्कूल, वाराणसी।

राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कालेज, कमालपुर, जिला वाराणसी।

पब्लिक इण्टर कालेज, केराकत, जिला जौनपुर।

बलभद्र इण्टर जालेज, काली सुभाषपुर रामदयालगंज, जिला जौनपुर।

गान्धी स्मारक हा. सै. स्कूल, समोधपुरा, जिला जौनपुर।

जनता हा. सै. स्कूल, रामपुर, बैजपुर, जिला जौनपुर।

मुस्लिम राजपूत हा. सै. स्कूल, दिलदार नगर, जिला गाजीपुर।

इण्टर कालेज, खालिसपुर, जिला गाजीपुर।

हार्टमैन इण्टर कालेज, गाजीपुर।

नेहरू विद्यापीठ हा. सै. स्कूल, रेवतीपुर, जिला गाजीपुर।

राष्ट्रीय विद्यापीठ हा. सै. स्कूल, करमवैर, जिला बलिया।

आर. एस. इण्टर कालेज, शिवपुर, बसन्तपुर, जिला बलिया।

जनता हा. सै. स्कूल, टकवा बिजौली, जिला आजमगढ़।

सर्वोदय हा. सै. स्कूल, घूसी, जिला आजमगढ़।

हा. सै. स्कूल, तैहबरपुर, जिला आजमगढ़।

वाल्मीकि हा. सै. स्कूल, विक्रमज्योति, शंकरपुर, जिला बस्ती।

रामबाबा विद्यामन्दिर हा. सै. स्कूल, फैजाबाद

जनता हा. सै. स्कूल, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ।

वैष्णव अग्रवाल हा. सै. स्कूल, चौक, लखनऊ।

आर. आर. दयाल इण्टर कालेज, सीतापुर।

कालविन हा. सै. स्कूल, महमूदाबाद, जिला सीतापुर।

हनुमन्त आर. डी. कपूर हा. सै स्कूल, बिसवां, जिला सीतापुर।

आर के. ए. इण्टर कालेज, रुझई, जिला उन्नाव।

महात्मा गान्धी हा. सै. स्कूल, पाटन, जिला उन्नाव।

एम. जी. इण्टर कालेज, सफीपुर, ज़िला उन्नाव।

जी. पी. तिवारी नेशनल इण्टर कालेज, ऊगू, जिला उन्नाव।

कैन ग्रोवर्स हा. सै. स्कूल, जंगबहादुर गंज, जिला खीरी।

जनपद हा. सै. स्कूल, हरख, जिला बाराबंकी।

कापकोट हा. सै. स्कूल, कापकोट, जिला अल्मोड़ा।

कुमायूं रैजीमैण्टल सैण्टर हा. सै. स्कूल, रानीखेत, जिला अल्मोड़ा।

लड़कियों के विद्यालय

कन्या शिक्षा सदन हा. सै. स्कूल, जिला बुलन्दशहर।

इन्दिरा गान्धी कन्या विद्यालय, सियाना, जिला बुलन्दशहर।

केदारनाथ सक्सेरिया गर्ल्स हा. सै. स्कूल बेलनगंज, आगरा।

आर. सी. अग्रवाल गर्ल्स हा. सै. स्कूल, हाथरस जिला अलीगढ़।

रामप्रसाद कन्या हा. सै. स्कूल, रामपुर।

एस. के. जे. पी. गर्ल्स हा. सै. स्कूल, बिसालपुर, जिला पीलीभीत।

मुस्लिम जुबली गर्ल्स इण्टर कालेज, चमनगंज, कानपुर।

सरस्वती बालिका विद्यालय हा. सै. स्कूल, कानपुर।

कान्यकुब्ज गर्ल्स हा. सै. स्कूल, किदवई नगर, कानपुर।

आर. बी. आर. डी. एस. डी. महापालिका हा. सै. स्कूल, नवाबगंज, कानपुर।

आर्य कन्या हा. सै. स्कूल, उरई, जिला जालौन।

गंगाराम बजाज म्युनिसिपल गर्ल्स हा. सै. स्कूल, औरैया, जिला इटावा।

गुलाबदेवी बालिका विद्यालय हा. सै. स्कूल, बलिया।

रानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्या मन्दिर, उन्नाव। ●

पहाड़ी क्षेत्रों के लिए विश्वविद्यालय

शिक्षा मंत्री श्री मोहम्मद अली करीम छागला ने लोकसभा में बताया कि शिक्षा मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मिलकर एक समिति नियुक्त की है, जो नागालैंड, नेफा, मणिपुर और आसाम के अन्य पहाड़ी क्षेत्रों के लिए एक नया विश्वविद्यालय खोलने और वहां उच्च शिक्षा के विकास आदि का अध्ययन कर रही है। अभी इस समिति ने अपनी रिपोर्ट नहीं दी है।

पाठ्य और संदर्भ-पुस्तकों के लिए भारत के सब कालेजों को अनुदान

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग ने भारत के सब कालेजों को ऐसी पुस्तकों की अच्छी संख्या अपने पुस्तकालय में रखने के लिए अनुदान प्रदान किया है जो पाठ्यपुस्तकें हैं या संदर्भ पुस्तक के रूप में विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकती हैं। उद्देश्य यह है कि जो निर्धन विद्यार्थी पुस्तकें नहीं खरीद सकते वे कालेज के पुस्तकालय से सुविधा के साथ पुस्तकें ले सकें।

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ ने अपने प्रकाशक सदस्यों द्वारा प्रकाशित कालेज स्तर की एजुकेशनल (शैक्षणिक) पुस्तकों की एक सम्मिलित सूची छापने और सब कालेजों को भेजने का निर्णय कर लिया है। संघ के कार्यालय से एक परिपत्र द्वारा इसकी सूचना सदस्यों को भेज दी गई है। आशा है कि सदस्य बन्धु परिपत्र के अनुसार तुरन्त कार्यवाही करेंगे जिससे सूची समय पर प्रकाशित हो जाय।

सस्ती ब्रिटिश पाठ्य-पुस्तकें

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में श्री छागला ने बताया कि शिक्षा मंत्रालय और एक ब्रिटिश पुस्तक प्रकाशन संस्था के बीच सस्ती पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने के बारे में एक समझौता हुआ है। इन पुस्तकों से विद्यार्थियों को फायदा होगा और भारत सरकार की इस सम्बन्ध में कोई वित्तीय जिम्मेदारी नहीं होगी।

दिल्ली के हा. से. स्कूल और छात्र

दिल्ली के शिक्षा निदेशक श्री बी. डी. भट्ट ने बताया है कि इस वर्ष अनुमानतः १५००० अधिक विद्यार्थी हायर सेकेण्डरी स्कूलों में प्रविष्ट होंगे। उनकी सुविधा के लिए दिल्ली में २३ नये हायर सेकेण्डरी स्कूल खोले जा रहे हैं। नये स्कूल ६००० विद्यार्थियों को स्थान दे देंगे, शेष ९००० को मौजूदा ३४४ हायर सेकेण्डरी स्कूलों में नये सेक्सन खोलकर स्थान दिया जायगा। आपने कहा कि इस वर्ष ५वीं श्रेणी से आये लगभग ५०,००० छात्रों में से ३५,००० के लिए प्रशासन व्यवस्था करेगा और १५,००० के लिए नगर निगम। ८वीं से आने वाले ३६,००० छात्रों में से प्रत्येक को प्रवेश प्राप्त होगा।

दिल्ली में श्री चन्द्रहासन का अभिनंदन

५ मई को नई दिल्ली के हिन्दी भवन में केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री ए. चन्द्रहासन और उनके नेतृत्व में आये ज्ञान-यात्री दल का अभिनंदन तथा स्वागत किया गया। केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री श्री भक्तदर्शन समारोह के अध्यक्ष थे। इस अवसर पर भारतीय साहित्य का विकास एवं आदान-प्रदान पर चर्चा भी हुई जिसमें श्री भालचन्द्र आप्टे, डा. विश्वनाथ प्रसाद, श्री जैनेन्द्र-कुमार, श्री चन्द्रहासन और अध्यक्ष महोदय ने विचार प्रकट किए। श्री यशपाल ने सम्मानित अतिथि का परिचय दिया और श्री विष्णुप्रभाकर ने उपस्थित सज्जनों से अतिथियों को परिचित कराया। समारोह में राजधानी के प्रमुख साहित्यकारों के अतिरिक्त श्री रामलाल पुरी, श्री ओमप्रकाश, श्री दीनानाथ, श्री विश्वनाथ और श्री यशोधर मोदी आदि प्रमुख प्रकाशक भी उपस्थित थे।

देश भर में ४३ केन्द्रीय स्कूल

१९६४-६५ के शिक्षा-सत्र में देश भर में ४३ केन्द्रीय स्कूल खोले जाएंगे। ये हायर सेकेंडरी स्कूल होंगे, जिनमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी और अंग्रेजी होगा। इन स्कूलों में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली की हायर सेकेंडरी परीक्षा के लिए छात्र तैयार किए जाते हैं।

तिरुमलगरे, दीनापुर कैंट, अम्बाला, पंचमढ़ी सागर, अहमदनगर, खड़कवासला, किरकी, नासिक रोड कैंप, पूना बंगलौर, अम्बाला कैंट, बीकानेर, आगरा कैंठ, बरेली कैंट, बरेली, झांसी, लखनऊ, मनोरी (इलाहाबाद) मेरठ (२ स्कूल) और रुड़की के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। बड़ौदा, जामनगर, कोचीन, आवड़ी, मद्रास, तांबरम्, बंबई, देहू रोड कैंट, लोनवला, बंगलौर, (२ स्कूल) अम्बाला कैंट, फिरोजपुर कैंट, जालंधर कैंट, शिमला, जोधपुर, आगरा, कानपुर और दिल्ली (२ स्कूलों) के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है।

लेखकों की ओर से

नवीन जी पर शोध ग्रन्थ

सागर विश्वविद्यालय से डा. लक्ष्मीनारायण दुबे सूचित करते हैं कि उनका शोध प्रबन्ध 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्ति एवं काव्य' हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग से प्रकाशित हो रहा है। विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग ने उसके प्रकाशन का आधा व्यय ३३५० रु. देना स्वीकार किया है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डा. नगेन्द्र ग्रंथ के परीक्षक थे।

छत्तीसगढ़ का आंचलिक उपन्यास : प्रकाशनार्थ प्रस्तुत

श्री प्रमोदकुमार पाण्डेय लिखते हैं कि छत्तीसगढ़ के अंचल पर मेरा नवीन उपन्यास 'गाँव : एक मनःस्थिति' प्रकाशन के लिए प्रस्तुत है। अनसमझी भाषा से मुक्त इस आंचलिक उपन्यास के लिए डी. एम. ई. टी. पी. १९ तारातल्ला रोड, कलकत्ता-५३ के पते पर चर्चा की जा सकती है।

महिलोपयोगी पाण्डुलिपियां : प्रकाशनार्थ प्रस्तुत

श्रीमती कुंतल गोयल जैन एम. ए. सूचित करती हैं कि मेरे पास 'हम देश के हैं', 'स्वस्थ जीवन की कला', 'बघेल खण्ड के लोकगीत', 'विविधा', 'सरस व्यंजन', और 'नये नमूने काढ़िए' शीर्षक पाण्डुलिपियाँ प्रस्तुत हैं। द्वारा प्रो. उत्तमचंद गोयल, गवर्नमेंट डिग्री कालेज, सीधी, म. प्र. के पते पर चर्चा हो सकती है।

केन्द्र-शासित प्रदेशों में श्रीप्रकाश समिति की सिफारिशें लागू होंगी

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय केन्द्र-शासित प्रदेशों में नैतिक व धार्मिक शिक्षा सम्बन्धी श्रीप्रकाश समिति की सिफारिशों को आगामी शिक्षा सत्र से लागू करेगा।

मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने संवाददाताओं को बताया कि मंत्रालय का हिन्दी निदेशालय स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकों के लिए आवश्यक हिन्दी शब्दावली को अंतिम रूप दे रहा है।

पंजाब में पाठ्य-पुस्तकों का अभाव नहीं

पंजाब के मुख्य संसदीय सचिव श्री गुलाबसिंह ने एक वक्तव्य में कहा है : पंजाब पुस्तक-विक्रेताओं के संगठन के

सचिव की ओर से जारी बयान मेरे ध्यान में लाया गया जिस में १४ पाठ्य-पुस्तकों के अभाव का वर्णन है।

इन पाठ्य-पुस्तकों का कोई अभाव नहीं। मैंने स्वयं सम्बन्धित विभाग से इसकी स्थिति का पता किया है। मुझे प्राप्त सूचना के अनुसार ऊपर लिखित पाठ्य-पुस्तकें स्टाक में पर्याप्त हैं।

१ जनवरी, १९६४ को स्टाक में हिन्दी प्रायमर-१ की संख्या ३.७० लाख थी। ३१ मार्च, १९६४ तक पुस्तक विक्रेताओं को २.७० लाख प्रायमर सप्लाई किए गए तथा एक लाख प्रायमर अभी तक स्टाक में पड़े हैं। १ अप्रैल, १९६४ तक १.८१ लाख पंजाबी रीडर-२ की सप्लाई की गई और स्टाक में १.१२ लाख शेष थे। १ अप्रैल को राजकीय मुद्रणालय के पास गणित-२ की ४.१० लाख से अधिक प्रतियां थीं। इसी प्रकार पंजाबी रीडर-३ की ६८ हजार, हिन्दी गणित-३ की १.६० लाख, हिन्दी गणित-४ की २.२० लाख, हिन्दी गणित-५ की २.५६ लाख तथा हिन्दी गणित-६ की २ लाख से भी अधिक प्रतियां १ अप्रैल, १९६४ को राजकीय मुद्रणालय के स्टाक में थीं।

स्कूलों के पाठ्यक्रम

शिक्षामंत्री ने श्री सिद्धेश्वर प्रसाद के प्रश्न के उत्तर में बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने देश के विभिन्न राज्यों में प्रयोग में आने वाले विभिन्न विषयों के वर्तमान पाठ्य विवरणों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया। उससे पता चला कि प्राथमिक शिक्षा के पाठ्य विवरण पहले की अपेक्षा अधिक सरल नहीं हैं, बल्कि पहले से अधिक व्यापक हो गए हैं।

उन्होंने बताया कि पाठ्य पुस्तकें तैयार करने तथा उन पाठ्य पुस्तकों में विभिन्न आयु वर्गों के पाठ्यविवरणों की विषयवस्तु को और अधिक व्यापक बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने विभिन्न विषयों के पैनल बनाए हैं, जिनमें विभिन्न विषयों के प्रमुख जानकार व्यक्ति हैं।

अहिन्दी भाषी राज्यों के हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहन
१५-१५ सौ रु० के १२ पुरस्कार

अहिन्दी भाषी राज्यों के हिन्दी लेखकों का उत्साह बढ़ाने के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने उनके लिखे हुए 'कथा-साहित्य' पर १५-१५ सौ रु० के १२ पुरस्कार देने का निर्णय किया है। ये पुरस्कार उनकी पिछले ३ वर्षों—१९६१, १९६२ और १९६३—में तथा पुस्तकें भेजने की अन्तिम तिथि तक प्रकाशित पुस्तकों पर दिए जाएंगे। निम्नलिखित भाषा-वर्गों के लेखक प्रतियोगिता के लिए अपनी पुस्तकें भेज सकते हैं :

१. उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी।
२. मराठी, गुजराती।
३. बंगला, उड़िया, असमी।
४. तमिल, कन्नड, तेलुगु, मलयालम।

पहले दो भाषा-वर्गों की पुस्तकों पर २-२ और बाकी अन्तिम दो भाषा वर्गों की पुस्तकों पर ४-४ पुरस्कार दिए जाएँगे।

पुस्तकें भेजने की अन्तिम तारीख ३० जून १९६४ है। लेखक को पुस्तक की चार प्रतियां इस पते पर भेजनी चाहिए। निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षामंत्रालय भारत सरकार, यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन बिल्डिंग, मथुरा रोड़, नई दिल्ली।

साहित्य अकादमी की कारगुजारी

शिक्षा मंत्री श्री मुहम्मदअली करीम भाई छागला ने लोकसभा में श्री मन्नूलाल द्विवेदी और श्रीमती सावित्री निगम के प्रश्न के उत्तर में बताया कि अकादमी ने अब तक कुल २९७ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें से ६९ मूल कृतियां हैं और २२८ पुस्तकें भारतीय और विदेशी भाषाओं से अनूदित हैं। इनके प्रकाशन पर १९६०-६१ में ३ लाख ५९ हजार रु० और व्यवस्था पर १ लाख ९६ हजार रु०; १९६१-६२ में १ लाख ८८ हजार रुपये और व्यवस्था पर २ लाख २६ हजार रुपये तथा १९६२-६३ में २ लाख ५३ हजार रु० और व्यवस्था पर २ लाख ६५ हजार रुपये खर्च हुआ।

उड़ीसा में महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की खरीद

उड़ीसा सरकार ने राजकीय म्यूज़ियम में रखने योग्य बहुमूल्य पाण्डुलिपियों की खरीद के लिए एक समिति नियुक्त करने का निर्णय किया है। श्री परमानन्द आचार्य समिति के चेयरमैन और श्री के. एन. महापात्र, सहायक निदेशक पुरातत्व, संयोजक हैं। राजकीय म्यूज़ियम के क्युरेटर श्री एम. पी. दास और संस्कृत के प्रोफेसर श्री कुंजविहारी त्रिपाठी समिति के सदस्य हैं।

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध आचार्य चतुरसेन ९.००
अतीत के चित्र मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर (मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची " ३.५०
छोटी बहू " ३.५०
चातकी " ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनिकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
शान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
हार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
युग देवता यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ४.००
रायसीना की लपटें भगवद्दत्त 'शिशु' ३.००
नर्तकी रूपकोसा (प्रथम भाग) अनु० मनोहरलाल चौहान ४.५०
नर्तकी रूपकोसा (द्वितीय भाग) अनु० मनोहरलाल चौहान ४.००
प्राणों की प्यास मधुलिका ३.५०

कहानी संग्रह

कुछ पैसे रामसरन शर्मा १.२५
मलयानिल नीलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.५०

नाटक-संग्रह

नीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियां और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००

एक युग : एक प्रतीक देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफशे का फूल खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल श्री जी. पी. श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
गांधी गीता प्रो० इन्द्र २.००
अपना इलाज आप खुद कीजिए आचार्य चतुरसेन २.५०
नई जिन्दगी डा० लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल साहित्य

बड़ों का बचपन (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.०० (दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग) रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.५०
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग) रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
गुब्बारा दद्दाजी १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ) जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएँ) जहूरबख्श १.२५
राधाकृष्ण (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) १.२५
मुगल बादशाहों की सनक आचार्य चतुरसेन १.७५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज अन्ना दीदी २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा आ० सुन्दरसिंह ०.६५
तीन नकटे यादवेन्द्र शर्मा १.२५
ललारी और नाई हरजसराय जैन १.२५
कलन्दरों की आत्म-कथा हरजसराय जैन १.५०
अनजाने देश में ओमप्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १) दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) " १.५०
चुटियावाले चाचाजी " १.५०

भारत-परिचय-माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र " १.७५
असम " १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायण अग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलाल महतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर " १.७५
गुजरात मनहरलाल १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मराठी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

... टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल व ... प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।

★★ हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दुकान व लाइब्रेरी अधूरी है। आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।

★ क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफ़ाफ़े में भेजकर मँगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।
२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।
३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।
४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।
५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।
६. म्यूज़िक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये।

मल्टीपरपज़ शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्रामपंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज़, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान-भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी माँगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आपको सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षा, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाजार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स देशबन्धु गुप्ता रोड़, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ जून, १९६४ अंक ७

डा० नगेन्द्र की नवीन कृति

रस-सिद्धान्त

शीघ्र प्रकाशित होगी

इस नवीन और बहुप्रतीक्षित कृति में रस-शब्द का अर्थ विकास, रस-सम्प्रदाय का इतिवृत्त, रस की परिभाषा, रस का स्वरूप, करुण रस का आस्वाद, रस की निष्पत्ति, रस का स्थान, साधारणीकरण, भाव का विवेचन, रस संख्या, रसों का परस्पर संबंध आदि का विवेचन-विश्लेषण हुआ है।

निकट भविष्य में ही प्रकाशित होने वाले अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

भक्तिकाव्य में रहस्यवाद :
उत्तरप्रदेश के उपशिक्षामंत्री डा. रामनारायण पाण्डे द्वारा दार्शनिक विवेचन

ध्यान-सम्प्रदाय :
डा. भरतसिंह उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत संत-साहित्य की प्रहली और लुप्त कड़ी।

आधुनिक हिन्दी कविता में चित्र-विधान :
डा. रामयतनसिंह भ्रमर का बहुप्रशंसित शोध-प्रबन्ध

हिन्दी की छायावादी कविता का कला-विधान :
डा. बलवीरसिंह रत्न का शोध-प्रबन्ध, संदर्भ ग्रन्थ।

गुसाईं गुरुवानी : गुरु नानकदेव के समकालीन अज्ञात संत कवि की रचना

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ७ | जून, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

पं० जवाहरलाल नेहरू स्वाधीनता-संग्राम के अजेय सेनानी, स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री, नवीन भारत के निर्माता और भारतीय जनता के दुलारे हृदय-सम्राट थे। एशिया और अफ्रीका के त्राता तथा विश्व को अणु-परीक्षण की सर्वनाशी ज्वाला से बचानेवाले, मानवता के महान् उन्नायक के रूप में भी उनकी कीर्ति दिगन्त-व्यापिनी हो गई थी। वे विश्वविश्रुत लेखक भी थे और हम प्रकाशकों को भी उनके निकट संपर्क में पहुँचने का अवसर मिला था—हमारी समस्याओं को उन्होंने आन्तरिकता के साथ समझा था और उनके निराकरण में अपना तत्पर योग प्रदान किया था। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने का कर्तव्य हमारे सामने है परंतु हमारे शब्द असमर्थ हैं और हमारी लेखनी जड़ हो गई है। मौन ही अभिव्यक्ति का सब से बड़ा माध्यम बन गया है!

वे तो उस लोक में चले गये जहाँ अमरों का निवास है। परमात्मा हमें इतना बल दे कि हम उनके पावन चरण-चिह्नों पर चल सकें।

नये प्रधान मंत्री

पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय की तेजस्वी वाग्मिता, राजर्षि टंडनजी की तपःपूत दृढ़ता और पं० गोविन्दवल्लभ पंत की शांत दूरदर्शिता भारत के नये प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री में एकत्रित हो गई हैं। नेहरूजी के निकटतम संपर्क ने उन्हें सबको साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता भी प्रदान कर दी है। समय ऐसे ही व्यक्तित्व की माँग कर रहा था। अतएव कांग्रेस कार्य-समिति और कांग्रेस संसदीय दल के सदस्य इस निर्वाचन के लिए हार्दिक बधाई के पात्र हैं। भारत की जनता को उन्होंने ऐसा नेतृत्व प्रदान किया है जिसके पैर बिवाइयों से खुद फटे हैं और जो आज भी उनकी पीर नहीं भूल पाया। हमें विश्वास है कि श्री शास्त्रीजी जनता के साथ अपना संपर्क प्रगाढ़ रखेंगे, नेहरूजी की नीति को आगे बढ़ायेंगे और सबसे पहले उस महँगाई की ओर ध्यान देंगे जो देश के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित और त्रस्त कर रही है और प्रगति के मार्ग में भयंकर बाधा बन गई है।

श्री शास्त्रीजी का हिन्दी-प्रेम अगाध है—संस्कृत, संस्कृति और साहित्य से उनका अनुराग सबको विदित है। विश्वास है कि उनके द्वारा राष्ट्र की भाषा और राष्ट्र की भारती को समुचित प्रोत्साहन मिलेगा और वे क्यारियां लहलहा उठेंगी जो पोषण की प्रतीक्षा में हैं।

हम गुरुतर उत्तरदायित्व के इस पद पर श्री शास्त्रीजी का सादर अभिनंदन करते हुए कामना करते हैं कि उनका कार्यकाल भी उनके पूर्ववर्ती की भाँति यशस्वी हो जाय। ●

इंगलैंड के अस्पतालों के लिए पुस्तकें

आल इंडिया विमैन्स कांग्रेस की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती कुप्पुस्वामी ने लिखा है कि इंगलैंड के अनेक अस्पतालों में ऐसे भारतीय रोगी भी दाखिल होते हैं जो अंग्रेजी भाषा पढ़-लिख नहीं सकते। प्रकाशक बन्धु उनके लिए कुछ हल्की-फुल्की पुस्तकें दे दें तो वह संस्था उन्हें इंगलैंड भेज देगी। प्रकाशक बन्धुओं से निवेदन है कि वे इस पुण्य कार्य में पूरी उदारता के साथ सहयोग दें और पुस्तकें प्रकाशक संघ के कार्यालय को भेजने का अनुग्रह करें। ●

बीते दिवसों का अंधकार
घेरे था जिसका क्षुद्र द्वार
उस हृदय-कूप का नीर क्षार
कंपित होता है बार बार

—'नवीन'

उनसे जब-जब मिला . . .

श्री मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

"तुम कल ११।। बजे आ जाना। तुमको उनसे मिला दूंगा। तब तुम्हीं उनसे अपनी बातें कर लेना।" "पर बिना आपके कुछ कहे वह मेरी बात पर विचार करेंगे? सुना है वह बड़ी जल्दी नाराज हो जाया करते हैं।"

"घबराते क्यों हो? जब मैं परिचय कराऊँगा तो वह क्यों नहीं विचार करेंगे।"

सन् १९३५ के फरवरी महीने में एक दिन श्रद्धेय स्व० श्री जमनालाल जी बजाज से मेरी उपरोक्त बातें हुईं। पंडित जवाहरलाल नेहरू विलायत से लौट आये थे। (उनकी पत्नी) कमलाजी का स्वर्गवास हो चुका था। पंडितजी इसी वर्ष अप्रैल में होने वाली लखनऊ कांग्रेस के सभापति चुने गये थे। दिल्ली में हरिजन कालोनी में महात्माजी और बहुत-से बड़े-बड़े नेता ठहरे हुए थे। वर्किंग कमेटी की बैठकें हो रही थीं। उन्हीं दिनों पंडितजी की आत्मकथा के अंग्रेजी में, विलायत से प्रकाशित होने की बड़े जोरों से राह देखी जा रही थी। मैं उसका हिन्दी अनुवाद 'मण्डल' से प्रकाशित करना चाहता था। इसके लिए मैंने पंडितजी से परिचय करा देने के लिए श्री जमनालाल जी बजाज से प्रार्थना की। यह भी कहा कि आप ही 'मण्डल' की ओर से पंडितजी से कहें कि वह पुस्तक 'मण्डल' को दे दें।

दूसरे दिन ठीक समय पर मैं हरिजन कालोनी पहुँचा। मन में डर सा लग रहा था। साबरमती में रहने के कारण महात्माजी से बातचीत के प्रसंग आये थे और वहां उनके विद्यार्थियों के झुंड में एक होने के कारण उनसे बातचीत में झिझक नहीं रही थी। 'कांग्रेस इतिहास' के अनुवाद के प्रकाशन के बारे में माननीय श्री राजेन्द्रबाबू से भी मिलना हो चुका था। उनसे मिलने और बातचीत करने में डर नहीं मालूम होता था। लेकिन जवाहरलालजी से मिलने जाते हुए दिल धड़क रहा था।

मैं जमनालालजी के पास गया। पंडितजी और वह साथ ही साथ भोजनालय से भोजन करके निकल रहे थे। मुझे देखते ही जमनालालजी पंडितजी से बोले :

"जवाहरलाल, यह मार्तण्ड आपसे मिलने आया है। सस्ता साहित्य-मण्डल का काम देखता है और कहता है कि आपने कोई किताब अंग्रेजी में लिखी है, उसे यह हिन्दी में 'मण्डल' से निकालना चाहता है। तुम इससे बातें कर लो।" इतना कहकर जमनालालजी मुझे पंडितजी के हवाले कर मौलाना आजाद के साथ आगे बढ़ गए।

पंडितजी ने अपनी लुभावनी मुस्कराहट से मुझे एक बार देखा और मेरा हाथ अपनी बगल में लेकर कुटिया की ओर चले। और जैसे किसी बराबरी के सुपरिचित आदमी से बातें करते हों बोले, "किताब अभी मेरी छप रही है। गालिबन दो तीन महीने और लगेंगे। आप छापना चाहें हिन्दी में तो शौक से उसे छापें। तर्जुमा उसका किससे करावेंगे। जरा ढंग का हो वह।"

मैं इसके लिए तैयार होकर ही नहीं आया था कि इतनी जल्दी स्वीकृति मिल जायगी। और मुझे अनुवादक का नाम भी बताना होगा। मुझे पंडितजी से यह कहते हुए भी झेंप लगी कि मैं सोचकर तथा श्री पारसनाथजी आदि से पूछकर बताऊंगा। जमनालालजी ने तो कह दिया कि यह 'मण्डल' में काम देखता है पर वस्तुस्थिति यह थी कि मैं दिल्ली में नया ही नया था और 'मण्डल' के दूसरे सदस्यों के, खासकर उसके मंत्री श्री पारसनाथजी के निर्देशन के अनुसार काम करता था। पर उस समय पंडितजी को तुरन्त जवाब देना था।

मैंने कहा, "हमने डा० पट्टाभि का कांग्रेस का इतिहास हाल ही में छापा है। श्री हरिभाऊजी से उसका अनुवाद कराया था। आपकी किताब का भी उनसे कराने का विचार है।"

"ठीक है। मैं अंग्रेजी के पब्लिशर को लिख दूंगा कि आपको मेरी किताब की एक एडवान्स कापी भेज दें

और किताब मिलने पर तर्जुमा शुरू करा दें।"

मैंने डरते-डरते पूछा, "पंडितजी, अंग्रेजी में आपने किताब किस शर्त पर दी है? 'मण्डल' के लिए आपकी क्या सूचना है!"

"अंग्रेजी में दो तरह का कायदा है। ज्यादा बिकने वाली किताब पर कम रायल्टी और कम बिकने वाली पर ज्यादा। दूसरा यह कि पहले एडीशन पर ज्यादा रायल्टी ले ली जाय और फिर जैसे-जैसे एडीशन होते जायं रायल्टी कम होती जाय। मैंने तो पहला रास्ता पसन्द किया है। सब एडीशनों पर दस फीसदी रायल्टी तय हुई है। तुमसे भी यही ठीक रहेगा।"

मैंने अंग्रेजी-प्रकाशक का नाम पूछना चाहा कि इतने में जैसे उनको कोई बात एकाएक याद आ गई हो, जल्दी में बोले, "माफ करें, मैं १५-२० मिनट रिलैक्स करना चाहूंगा। एक बजे से फिर वर्किंग कमेटी की बैठक है।" और एकदम कमरे में चले गये। मैं भौंचक्का-सा खड़ा देखता रहा। समझ में नहीं आया कि क्या करूं और कहां जाऊं?

पंडित जवाहरलाल नेहरू से मेरी यह पहली भेंट थी।

× × ×

दूसरी भेंट सन् ३६ की जुलाई में इलाहाबाद में हुई। श्री जमनालालजी बजाज प्रयाग गये थे और मुझे साहित्य भवन लिमिटेड, हिन्दी मंदिर तथा सस्ता-साहित्य मण्डल की व्यवस्था के एकीकरण के संबंध में सलाह के लिए प्रयाग बुलाया था। बारिश हो रही थी। तो दिन बाद वहां का काम खतम करके जमनालालजी वर्धा चले गये। मैंने सोचा कि दिल्ली लौटने के पहले पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिलता चलूं। इस बार उनकी दूसरी बड़ी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलक' को मण्डल से प्रकाशित करने की बात करनी थी। पहले श्री वेंकटेशनारायणजी तिवारी के तत्वावधान में अनुवाद मासिक रूप में निकल चुका था। कुछ खण्ड निकले थे। बाद में बन्द हो गया। 'मेरी कहानी' के प्रकाशन से पंडितजी प्रसन्न थे। तो मैंने चाहा कि पंडितजी मन्जूर करें और मदद करें तो 'झलक' का भी अनुवाद मंडल से निकाला जाय।

आनन्द भवन पहुंचकर पंडितजी के पास अपना विजिटिंग कार्ड भिजवा दिया। भाग-दौड़ में तथा जल्दी में रहने के कारण हजामत नहीं बना पाया था। कपड़े भी साफ नहीं थे। विजिटिंग कार्ड हाथ में लेकर पंडितजी बरामदे में आए और अपनी चिर-परिचित मुस्कराहट बखेरते हुए बोले, 'जमनालालजी को पहुंचाने के बाद ही जनाब विजिटिंग कार्ड लेकर पहुंचे हैं। कहिए क्या हुक्म है? और यह हुलिया ऐसी क्यों बना रखी है। सब खैरियत तो है?"

मैंने झेंपते हुए कहा, "जरा भाग-दौड़ में ज्यादा रहा।"

"तो क्या जमनालालजी हजामत बनाने को मना कर गए थे और कह गए थे कि साफ कपड़े मत पहनना?"

मैं धरती में गड़ा जा रहा था और अपनी भूल पर पछता रहा था। मुझे इस तरह सकपकाता देख वह हाथ पकड़ कर अन्दर ले गये। चलते-चलते जेब से सिगरेट निकाली और सुलगाने वाले ही थे कि बैठकखाने में राजेन्द्रबाबू दिखाई दिये। वह कुछ पढ़ रहे थे। चुपचाप उन्होंने सिगरेट वापस जेब में रख ली और मुझसे बोले "दिन भर काम में घिरा रहा। राजेन्द्रबाबू आये हुए हैं। सुबह से उनसे मिलने का वक्त नहीं निकाल पाया हूं। कहो तुम क्या चाहते हो?" और यह कहकर साथ में लगे भोजनालय में टेबल पर ले गये। माता सरूपरानीजी वहां बैठी थीं। और भी एक दो व्यक्ति थे। मैं वहां अपनी इस हुलिया में बैठने में सकुचा रहा था। पर पंडितजी ने बातों में लगा दिया। 'मेरी कहानी' की बिक्री आदि के बारे में पूछा। 'झलक' के प्रकाशन के बारे में मैंने चर्चा छेड़ी। कहने लगे, "आप चाहें तो जरूर छापें। मैं तिवारीजी से कह दूंगा कि उनका इरादा आगे न हो तो आपको दे दें। उनका तर्जुमा आप रखना चाहें तो रख लें वरना नया भी कर लें। मेरे ख्याल में नया करना ज्यादा ठीक रहेगा।" और इस प्रकार की बातें करके मैंने उनसे विदा ली।

लेकिन तब से मैंने यह बना लिया है कि जब कभी पण्डितजी से मिलने जाना हो तो हजामत करके और साफ धुले कपड़े पहन कर ही जाता हूँ। इसमें कभी गफलत नहीं करता।

सन् १९४६ की बात है। पंडितजी नई दिल्ली में अपने भतीजे श्री आर० के० नेहरू से साथ ठहरे हुए थे।

अहमदनगर किले के कारावास के दिनों में लिखी उनकी 'डिस्कवरी आव इण्डिया' को हिन्दी में 'मंडल' निकाल रहा था। एक दिन अनुवाद के कुछ पन्ने उनको दिखाने ले गया। सुबह का वक्त था। सत्ता-परिवर्तन की महत्व-पूर्ण चर्चाओं के वे दिन थे। उनके पास कई मिलने-जुलने वाले आते रहते थे। किसी को पहुँचाने मोटर तक आते और फिर अन्दर चले जाते। किसी खास आदमी का स्वागत करने मोटर के आते ही आगे चले आते। इस प्रकार कोई एक घण्टा बीत गया। मैं बरामदे में खड़ा-खड़ा आते-जाते लोगों को देखता था। पण्डितजी की व्यस्तता अनुभव करके मैं चुपके से, जब वे जरा खाली थे, उनके पास पहुंचा और धीमे से बोला "पंडितजी, आज तो आप बहुत घिरे हैं। फिर कभी आ जाऊँगा।"

"नहीं, नहीं फिर कब आओगे? लाओ क्या लाये हो?"

मैंने डरते-डरते शुरू के १६ पन्नों के प्रूफ हाथ में रख दिये। उन्होंने तो बारीकी से पढ़ना शुरू कर दिया। पहला वाक्य पढ़ते ही एकदम तेज होकर बोले, 'आप लोग तर्जुमा करते हैं या मजाक करते हैं? अरे इस जुमले का सीधा सा तर्जुमा करते 'ईद का चाँद' या 'दूज का चाँद'। इतना लम्बा अंग्रेजी जैसा ही तर्जुमा कर डाला। कुछ नहीं। लोग तर्जुमा करना जानते ही नहीं। जैसा अंग्रेजी में लिखा है, वैसा ही हूबहू हिन्दी में उतार देते हैं। अरे भाई, अंग्रेजी के मुहावरे, अंग्रेज़ी का ढंग अलग है, अपनी जबान का अलग। अंग्रेज़ी को पढ़कर, हजम करके, उसे अपनी जबान में लिखो। महादेव भाई ने मेरी किताब का जो तर्जुमा गुजराती में किया था उसे सामने रखो। उन्होंने बहुत मेहनत की थी उस पर। जरा-सी बात समझ में नहीं आती तो चिट्ठी लिखकर पूछ लेते थे।"

मैं सुनता रहा। उन्होंने फिर दूसरा पन्ना उलटा, तीसरा उलटा और एक जगह नये अध्याय पर फिर अटक कर बोले, "यह तर्जुमा कौन कर रहा है? अरे भाई, आप लोग जुगराफिया भी पढ़े हैं? शहरों के नामों के ठीक से हिज्जे भी नहीं करना जानते। यह 'लुजां' क्या बला है?"

मैंने कहा "वह गलती हो गई मालूम होती है। 'लोसान' करना था, जल्दी में वह रह गया।"

एकदम जैसे उनको कोई झटका लगा। बोले—

"जानते न बूझते, 'लोसान' चाहिए था। अरे साहब, वह न 'लुज़ां' है न 'लोसान'। वह है 'लोज़ान'।"

मैं हक्का-बक्का-सा खड़ा रहा। देखकर बोले, "आपकी समझ में नहीं आया मालूम होता है। लाइये कागज-कलम।........." और यह कहते-कहते उन्होंने अपनी जेब से कलम निकाली और बोले, "ऐसे लिखा जाता है लो—ज़ा—न।" और उसी कागज पर तीन बार 'लोज़ान' शब्द उन्होंने लिख डाला। फिर एकदम विचारमग्न और गंभीर होकर बोले, "असल में तर्जुमा का काम है बड़ा कठिन। सब ठीक से नहीं कर पाते। कोशिश करना कि ठीक तर्जुमा हो।"

मैं खड़ा-खड़ा देखता और सुनता रहा। इतने में कोई खास व्यक्ति मिलने आ गये और मुझे छुट्टी मिली।

× × ×

इसके बाद मैं उनसे मिला १७ नवम्बर यार्क रोड में। वे अन्तरिम सरकार के उपाध्यक्ष बन चुके थे। नई राष्ट्रीय सरकार बन गई थी।

'डिस्कवरी आव इंडिया' का अनुवाद 'हिन्दुस्तान की कहानी' के नाम से प्रकाशित हो चुका था। अनुवाद कराने और छपाने में एक साल लग गया था। एकाध बार पंडित जी के दफ्तर से उसके लिए कुछ पूछताछ की गई थी। इसलिए मैं पुस्तक की दो प्रतियाँ लेकर पंडितजी के निवास-स्थान पर पहुँचा। उन्हीं दिनों स्वामी करपात्रीजी गिरफ्तार कर लिये गए थे। इस कारण पंडितजी के निवास-स्थान पर स्वामीजी के कुछ शिष्य धरना दे रहे थे। उनकी माँग थी कि 'स्वामी करपात्रीजी को छोड़ दिया जाय और उनकी माँगें पूरी की जायं।'

ग्यारह बजे का वक्त था। दफ्तर जाने के लिए तैयार होकर पंडितजी आये और मैंने 'हिन्दुस्तान की कहानी' उनको देते हुए कहा—

"यह पुस्तक बड़ी कठिनाइयों के बाद अब निकल पाई है।"

मुस्कराते हुए उन्होंने पुस्तक हाथ में ली। कमरे से निकलते हुए पुस्तक को उलट-पलट कर वे देखते भी जाते थे।

"ऊपर से तो अच्छी दिखाई देती है। तर्जुमा भी ठीक ही हुआ होगा।"

"कोशिश तो यही की गई है। आपको पसन्द आ जाय जब है।"

"मुझे कहाँ इतना वक्त है कि इसे पढ़ सकूँ?"

इस प्रकार बातें करते-करते दरवाजे तक पहुँचे, जहाँ करपात्रीजी के स्वयंसेवकों द्वारा धरना दिया जा रहा था। पंडितजी को देखते ही स्वयंसेवक चिल्ला उठे—"धर्म की रक्षा कीजिये, पंडितजी। हमारे गुरुजी को छोड़ दीजिए।"

"देखिये शोर न कीजिए।" पंडितजी ने किताब पर से ध्यान हटाकर उन स्वयंसेवकों को देखा और एक स्वयंसेवक के कंधे पर हाथ रखकर बोले—"अरे भाई, धर्म की बात करते हो, पर जानते भी हो कि धर्म क्या है? धर्म बहुत बड़ी चीज है।"

"हाँ पंडितजी, लेकिन हमारी प्रार्थना आपसे यह है कि हमारे गुरु महाराज को छोड़ दीजिए।"

"हाँ, छूटेंगे, तुम्हारे गुरुजी भी। लेकिन........."

पंडितजी का पहला वाक्य सुनते ही स्वयंसेवक चिल्ला उठे "स्वामी करपात्रीजी की जय। सनातन धर्म की जय।"

मुस्कराते हुए पंडितजी यह देखते-सुनते रहे और बोले, "देखो गुल न मचाओ। जय बोलने से और धरना देने से धर्म की जय नहीं होती। समझना होता है कि धर्म क्या चीज है? देखो इस पुस्तक को पढ़ो। इसमें समझाया गया है कि धर्म क्या है? उसके असली मानी क्या हैं? जेल में मैंने अंग्रेजी में इसे लिखा था। हिन्दी में अब यह निकली है।" यह कहते हुए मुझसे बोले—"इनको एक किताब मेरी ओर से दे दें। यहाँ बैठे-बैठे ये पढ़ेंगे।"

मैं दो प्रतियाँ ले गया था। एक पंडितजी के लिए और दूसरी उनकी सुपुत्री इन्दिराजी के लिए। पंडितजी के आदेश पर दूसरी पुस्तक मैंने उन स्वयंसेवकों को दे दी।

पंडितजी ने मुस्कराते हुए कहा, "अच्छा, अब देरी हो गई है। हट जाइये रास्ते से और बैठकर इसे पढ़िए।"

लेकिन स्वयंसेवक का ध्यान पंडितजी की बातों की ओर नहीं था। उनकी तो एक ही रट थी "हमारे गुरुजी को छुड़ाइये, धर्म की रक्षा कीजिए।"

लेकिन, पंडितजी थे कि बड़ी शान्ति और मधुरता से उनको समझाते रहे। जब वे नहीं माने और रास्ते से नहीं हटे तो धीरे-धीरे उनके बीच होकर पंडितजी दरवाजे से बाहर निकलने लगे। दो-चार स्वयंसेवक रास्ते में लेट भी गए थे, लेकिन पंडितजी इस बात का ध्यान रखते हुए कि किसी को चोट न लगे आगे बढ़ने लगे। इतने में एक स्वयंसेवक ने पंडितजी के पैर पकड़ लिए। पैर पकड़ते ही जैसे पंडितजी को किसी बिच्छू ने काट खाया। एकदम उछल पड़े और जोर से स्वयंसेवकों को धक्का देकर और कुछ को लांघते हुए एकदम बरामदे में आ गये। एकाध पर-उनका थप्पड़ भी पड़ा। क्रोध के कारण उनकी आँखें लाल हो गईं।

"निकल जाओ यहाँ से, नहीं छूटेंगे तुम्हारे गुरु जी, ऐसा करने से तो कभी नहीं छूटेंगे। समझा कर कहने से मानते नहीं हैं। बदतमीज कहीं के......" और इस प्रकार एकाध मिनट तक झुंझलाते रहे। मैं खड़ा-खड़ा देखता रहा। विजयालक्ष्मीजी और इन्दिराजी ने पंडितजी को शान्त करके गाड़ी में बिठाया और दफ्तर को रवाना किया। मैं विस्मित-सा अपने दफ्तर चला गया।

× × ×

पंडितजी की तीनों बड़ी पुस्तकों 'मेरी कहानी,' 'विश्व-इतिहास की झलक,' 'हिन्दुस्तान की कहानी' के संक्षिप्त संस्करण निकालने का विचार था। इसी बीच एक मित्र आये और बोले, "कल पंडितजी से मिलने जाने का विचार है।"

मैंने कहा—"मैं भी चलने की सोच रहा हूँ।"

वे बोले—"तो कल दोनों साथ-साथ चले चलें।"

यह उन दिनों की बात है जब श्रद्धेय श्री टंडनजी कांग्रेस अध्यक्ष थे और उनसे मतभेद हो जाने के कारण पंडितजी ने कांग्रेस की कार्यकारिणी से त्यागपत्र दे दिया था। सब ओर तनाव और चिन्ता का वातावरण था। लेकिन पंडितजी सदा जैसे प्रसन्न और फुर्तीले दिखाई देते थे। नाश्ते से उठते ही वे दालान में हम लोगों से मिलने आ गये। आते ही मित्र से बोले—"कहो, सेठ क्या खबर लाये हो?"

" 'बालकनजी बारी' के उत्सव में आपका बंबई आना

कब का तय हुआ है ?" मित्र ने कहा ।

"दिवाली के आसपास जाने का है। पक्का तय होने पर इत्तिला करूंगा ।" पंडितजी ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा ।

"पंडितजी, कुछ लोगों का सुझाव है कि जैसे राष्ट्रपति जी ने स्वीकार कर लिया है, आप भी 'बालकनजी बारी' के पेट्रन (संरक्षक) क्यों न बन जायं ।"

बातचीत बड़ी शांति और विनोद के वातावरण में चल रही थी लेकिन ऊपर का वाक्य सुनते ही पंडितजी जैसे उछल पड़े ।

"क्या बात करते हो ? पेट्रन के मानी क्या होते हैं ? मैं नहीं बन सकता । मैं इन सारी बातों से नफरत करता हूँ—घृणा करता हूँ। मुझे ये सब सिस्टम पसन्द नहीं। ये सब ढोंग है, मेरे उसूल के खिलाफ है, ढकोसले हैं ये सब। राष्ट्रपतिजी पेट्रन बन सकते हैं। वे बुजुर्ग हैं। उनको शोभा देता है, पर मैं तो बच्चों के बीच जाऊँगा हँसने, खेलने-कूदने, मिलने और उनसे दो बातें करके अपना और उनका जी बहलाने, और तुम लोग चले हो पेट्रन बनाने। अजीब बातें हैं। हैरान हूँ मैं तो यह सब देख और सुनकर।"

और वे मित्र तथा मैं चित्रलिखित-से खड़े थे। थोड़ी देर बाद बरामदे के दो-तीन चक्कर लगाने के बाद पंडितजी बोले—

"सेठ, अपने दोस्तों से कह देना। यह सब कुछ नहीं हो सकता अगर मुझे बुलाना चाहते हो तो ।"

"और आप क्या खबर लाये हैं ?" मेरी ओर मुखातिब होकर वे बोले ।

पंडितजी का वह मूड देखकर मैं तो अपनी सब बातें भूल गया था। मैंने मित्र की ओर अर्थभरी दृष्टि से देखा। वे बोले, "पंडितजी यह कहते हैं कि आपकी पुस्तकें आजकल कम बिकती हैं। और......"

पंडितजी गंभीर होकर बगीचे के दूर के पेड़ की ओर देखने लगे। सिगरेट के धुएँ में उनका गंभीर चेहरा और भी गंभीर नजर आता था। मैंने अपने मन में कहा कि बुरी शुरुआत हुई। पंडितजी का मूड पहले ही ठीक नहीं है। और जैसे एकाएक मुझे हिम्मत आ गई। मैंने कहा—

"पंडितजी, बात यह है कि ये सब पुस्तकें बड़ी हैं, और इस वजह से उनके दाम ज्यादा हो गये हैं। कम आमदनी वाले नहीं ले पाते। इसलिए सोचा यह है कि आपकी इजाजत हो तो तीनों पुस्तकों के संक्षिप्त संस्करण निकाले जायं। बापू की बड़ी आत्मकथा की अपेक्षा संक्षिप्त आत्मकथा ज्यादा बिकती है। दाम कम हो जाने से विद्यार्थी भी उसका लाभ उठा सकते हैं। कोर्स में भी लग जाने की संभावना रहती है।"

"जाहिर है।" जूते के पंजे से फर्श पर पड़ी सिगरेट की राख को एक ओर हटाते हुए वे बोले।

"पहले हम 'हिन्दुस्तान की कहानी' का संक्षेप पहले निकालेंगे। उसका संस्करण खत्म भी हो रहा है। उसके बाद और दोनों किताबों को हाथ में लेंगे।"

"छोटा किनसे करावेंगे ?"

"जिन्होंने अनुवाद किये हैं उनसे ही छोटा करने को कहेंगे। 'हिन्दुस्तान की कहानी' का संक्षेप श्री रामचंद्र टण्डन से कराने का विचार है।"

"ठीक है, कराते जाइये। यह देख लीजिए कि चीज़ ठीक बने।"

इतने में श्री रफी साहब आ गये और पंडितजी उनसे बातें करने चले गये।

× × ×

हम लोगों ने 'मण्डल' की रजत-जयंती मनाने का संकल्प किया और एक-एक हजार रुपये के सहायक सदस्य बनाने की योजना बनाई। राष्ट्रपतिजी का उसे आशीर्वाद मिल चुका था। हमने सोचा कि पंडितजी का भी आशीर्वाद प्राप्त करें। लेकिन वह बहुत व्यस्त थे। प्रधानमंत्री कान्फ्रेंस के लिए लन्दन जाने वाले थे। मैंने उपाध्यायजी (पंडितजी के भूतपूर्व निजी मंत्री, अब पार्लियामेन्ट के सदस्य, श्री शिवदत्त उपाध्याय) से कहा तो बोले कि बड़ी मुश्किल है। मुझे भरोसा नहीं कि वक्त दे सकें। लेकिन चले आना। मौका देखकर बातें कर लेंगे।

मैं ९ बजे प्रधानमंत्री-भवन पहुँच गया। उपाध्यायजी ने ऐसी जगह बिठा दिया कि पंडितजी की निगाह फौरन मुझ पर पड़ जाय। पाँच-सात मिनट बाद ही पंडितजी अपने कमरे से निकले। जल्दी-जल्दी कोई चीज लेने दूसरी तरफ जा रहे थे। मैंने नमस्कार किया। मुस्करा कर

उन्होंने भी दोनों हाथ ऊपर किये और नमस्कार किया। ठिठके और बोले, "क्यों, कैसे आये ?"

"आपका एक संदेश चाहिए।"

"कैसा संदेश ? मुझे फुरसत कहां है जो संदेश दे सकूं।"

मैं उदास हो गया। उनको जल्दी थी, बोले, "एक मिनट पास के कमरे में बैठो। मैं अभी आया।"

१० मिनट के बाद बड़ी गंभीर मुद्रा में आकर सोफे पर बैठ गये। पास की कुर्सी पर मुझे बिठाया और बोले "क्या बात है ?"

मैंने कहना शुरू किया :

"'मण्डल' को प्रकाशन का काम करते-करते २६ वर्ष हो गये। सन् १९२५ में श्री जमनालालजी ने स्थापित किया था। हमने अब यह सोचा है कि एक जयंती-उत्सव करें, जिसमें मंडल के लेखकों, हितैषियों, साथियों को बुलावें और पिछले काम के बारे में सोच-विचार करें और आगे के काम के लिए योजना बनावें।......"

मैं डरते-डरते कह रहा था। यह ख्याल था कि थोड़े में सारी बात पंडितजी को बतानी है और यह डर भी था कि कहीं कोई ऐसी-वैसी बात मुंह से निकल गई तो वह कहीं नाराज न हो जायं।

और पंडितजी थे कि गंभीर मुद्रा में मुट्ठी पर ठोड़ी रखे छत में घूमते पंखे की ओर देख रहे थे। मैंने समझा कि पंडितजी दूसरे किसी ध्यान में हैं। मैं जरा देर को रुक गया। एकदम निगाह मेरे मुंह पर डालकर बोले—

"रुक क्यों गये ? कहते जाओ।"

और मैंने अपनी कहानी फिर शुरू की।

"आगे काम करने की योजना कोई बने इसके लिए पैसों की जरूरत है। आजकल दान में पैसा मिलता नहीं। इसलिए कमलनयनजी की मदद से एक सहायक-सदस्य-योजना बनाई है। उसमें एक-एक हजार रु० के ५०० सदस्य बनाने का तय किया है। ये एक हजार रुपये हम ५ वर्ष अपने काम के लिए रखेंगे और ५ वर्ष बाद अगले पाँच वर्षों में लौटा देंगे। इसकी सफलता के लिए तथा उत्सव की सफलता के लिए आपके आशीर्वाद की जरूरत है।"

"आशीर्वाद तो है ही भाई। चाहोगे तो चन्द सतरें लिख भेजूंगा। लेकिन तुम्हारी योजना में क्या ये १००० रुपये ज्यादा नहीं हैं ? १००० रु० देने वाले लोग मिल जायेंगे ?"

"जी, सब लोगों की सलाह से यह योजना बनाई है। हमें ५०० लोग चाहिए। उम्मीद तो है कि रुपये देने वाले मिल जायंगे।"

और पंडितजी फिर जैसे विचारमग्न हो गये। कुछ देर बाद बोले :

"फ्रांस और इंगलैण्ड में 'बुक क्लब' की स्कीमें बहुत चलती हैं। कुछ रुपये लोगों से जमा कर लेते हैं और जब-जब नई किताबें निकलती हैं बिना पैसे के भेज दी जाती हैं। साल के आखिर में हिसाब पूरा कर लिया जाता है। ऐसा तुम अपने यहाँ भी कर सकते हो।"

मैंने कहा—

"आपका सुझाव अच्छा है। इसका भी प्रयत्न करेंगे। लेकिन हमें तो प्रकाशन में लगाने के लिए पूंजी चाहिए। जब ज्यादा पूंजी हो जायगी और किताबें भी ज्यादा हो जायंगी तब बुक क्लब की योजना ठीक से चल सकेगी।"

पंडितजी फिर सोचकर बोले, "हां ज्यादा पैसे एक साथ मिल सकें इसके लिए आपकी योजना ठीक हो सकती है।"

इस प्रकार पंडितजी कोई आध घण्टे तक बात करते रहे। जानकारी लेते रहे और अपने सुझाव देते रहे। फिर मुस्करा कर बोले, "अच्छा, अभी तो रुख्सत चाहता हूं। बहुत काम है। फुर्सत होती तो और बहुत से सुझाव किताबों के बारे में देता। आपको संदेश के रूप में कुछ सतरें लिख भेजूंगा।" इतना कहकर पंडितजी उठे और अपने कमरे में चले गये।

इस प्रकार पंडितजी से जब-जब मिला एक नया ही रूप उनका देखा। लेकिन एक बात जो सदा देखी वह थी उनकी दिल लुभाने वाली मुस्कराहट, बच्चों का सा सरल हृदय और प्रेमल वाणी। इससे पता चलता है कि वे क्यों भारत के करोड़ों लोगों के दिलों में स्थान बनाये हुए थे और लोग क्यों उन्हें इतना प्यार करते थे। ●

शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें

- शिक्षा संगठन — ६·००
  के० सी० मलैया
- स्वतंत्र भारत में शिक्षा — ५·५०
  हुमायुन कबिर
- शिक्षा में नये प्रयोग — ४·००
  डा० सूरजभान
- विश्व के महान शिक्षाशास्त्री — ३·५०
  जयजयराम शाक्य
- विश्व ज्ञान कोश — ३·००
  अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

राजपाल एण्ड सन्ज़

इस मास के नए प्रकाशन

पथ की खोज
थोरो
६·००

●

प्रतिशोध (उपन्यास)
नानकसिंह
३·००

●

नींव की दरारें (नाटक)
कृष्णकिशोर श्रीवास्तव
२·५०

●

सागरतल की खोज (ज्ञान-विज्ञान)
रुथ ब्रिडज़
२·००

कश्मीरी गेट — दिल्ली-६

पाण्डुलिपि

श्री वीरेन्द्र खन्ना
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

(इस लेख का पहला भाग 'हिन्दी प्रकाशक' के फरवरी ६४ के अंक में प्रकाशित हुआ था)

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, पुस्तक के माध्यम से लेखक के विचार लिपिबद्ध होकर पाठक तक पहुँचते हैं। यदि पाठक लिपिबद्ध नेत्रग्राह्य शब्दों के सहारे लेखक के समीप सा पहुँच जाता है और लेखक का एक-एक लिपिबद्ध शब्द उसके विचारों का सही प्रतिबिम्ब देने में समर्थ हो जाता है तो वास्तव में लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है और तब ही उसकी कृति समाज व साहित्य की वास्तविक सेवा कर सकती है।

रचना की पाण्डुलिपि साफ व सुपाठ्य लिखी हो व उसकी भाषा रसपूर्ण हो इसी से समस्या का समाधान नहीं हो जाता; इसके बाद भी प्रकाशक को 'पाण्डुलिपि' को 'पुस्तक' का रूप देने से पूर्व कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। कोई भी कृति एक योग्य व अनुभवी प्रकाशक के टेकनिकल ज्ञान का सहारा लेकर और भी निखारी जा सकती है। प्रकाशक का ध्येय प्रकाशित रचना को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाना है (निःसन्देह इसमें उसका अपना स्वार्थ—थोड़ा आर्थिक लाभ भी निहित रहता है) और वह पुस्तक को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए अपने अनुभव व ज्ञान से अनेकों तरीके निकाल सकता है अतः 'प्रकाशक के कार्यालय में पाण्डुलिपि की तैयारी' का विषय भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अच्छी से अच्छी पाण्डुलिपि विषय के महत्व व भाषा की दृष्टि से एक अनुभवहीन प्रकाशक के हाथों में पड़कर रद्दी के भाव बिकने वाली पुस्तकों का रूप ले लेती है।

यदि लेखक रचना की पांडुलिपि स्वयं टाइप करवा कर भेजता है तब तो उत्तम ही है; यदि वह टाइप नहीं करवा पाता तो प्रकाशक को यदि सम्भव हो, पांडुलिपि की दो या तीन प्रतियां अपने कार्यालय में टाइप करा लेनी चाहिएँ। यदि पाण्डुलिपि साफ न लिखी हो तब तो टाइप करा लेना ही हितकर है—यहीं आरम्भ में ही थोड़ा सा खर्चा करके आगे बहुत सी परेशानी व खर्चे से बचा जा सकता है। फुलस्केप के कागज पर पर्याप्त मार्जिन छोड़कर टाइप कराया जावे फिर लेखक को भेजकर उसे शुद्ध करा लिया जावे। पाण्डुलिपि को प्रेस में पहुँचने पर कई कम्पोज़िटरों में बाँट दिया जाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि हर पृष्ठ पर नम्बर डाल दिए जावे, किसी पृष्ठ के साथ कोई स्लिप लगी हो तो उसे पिन से न लगाया जावे बल्कि मार्जिन पर थोड़ा सा चिपका दिया जावे व उस पर भी पृष्ठ संख्या किसी अक्षर के संकेत के साथ लिख दी जावे (जैसे ९६ अ) जिससे यह ज्ञात हो जावे कि यह उस पृष्ठ से संलग्न है। जिस स्थान पर स्लिप का मैटर आना है उस स्थान पर भी पाण्डुलिपि में संकेत दे दिया जावे (जैसे—प्रेस स्लिप ९६ अ देखें)। एक बड़े प्रेस में यदि इस प्रकार की स्लिप कहीं खो जाती है तब वास्तव में कितनी कठिनाई पड़े।

पुस्तक के लिए उचित टाइप का चुनाव करना व उसके आकार के विषय में निर्णय करना भी प्रकाशक का ही काम होता है और प्रकाशक के कार्यालय को उसके लिए पांडुलिपि में उचित संकेत व निर्देश देने होते हैं—यदि प्रकाशक का कार्यालय इस काम में इतना समर्थ नहीं तो उसे यह काम अपने किसी भरोसे के प्रेस पर छोड़ देना पड़ता है। उपन्यास, कहानी-संग्रह, आलोचना, दर्शन-शास्त्र, महाकाव्य, विज्ञान ग्रन्थ, रेफरेन्स पुस्तकें, बच्चों की पुस्तकें, नव साक्षरों की पुस्तकें आदि-आदि के लिए अलग-अलग टाइप व अलग-अलग आकार चुनने पड़ते हैं। फिर यह भी नहीं है कि एक वर्ग में आने वाली सब पुस्तकें सदा एक ही आकार में एक ही टाइप से छापी जावें। हर पुस्तक की अपनी अलग-अलग समस्याएँ होती हैं और उनके टाइप, आकार व रूप-सज्जा के विषय में वास्तव में कोई वर्गीकरण के नियम नहीं अपनाए जा सकते। टाइप का चुनाव करते समय यह भी ध्यान में रखना होता है कि पुस्तक कौन से कागज पर छपेगी। एक ही फेस का टाइप दो अलग-अलग प्रकार के कागजों पर अलग-अलग प्रकार के इम्प्रेशन देता है। किसी टाइप का फेस खुरदरे कागज

के लिए उपयुक्त है तो किसी का चिकने कागज के लिए । यदि पुस्तक में चित्र, डाइग्राम या फिगर भी छपने हैं तो यह देखना है कि यह मैटर के साथ ही छपेंगे या अलग; यदि मैटर के साथ ही छपने हैं तो ऐसे टाइप का चुनाव करना है जो इनके साथ छापा जा सके और प्रयोग होने वाले कागज पर छपाई ठीक हो। एक दो सीरीज (कुटुम्ब) में कई पाइन्ट के छोटे-बड़े टाइपों के अतिरिक्त हर पाइन्ट के टाइप में तीन प्रकार के टाइप और उपलब्ध हैं—काला, सफेद व इटेलिक (अंग्रेजी में तो पाँच हैं—एन्टीक, रोमन, इटेलिक, स्माल केप व केप) इस प्रकार टाइप हस्तलिखित लिपि के मुकाबले में लेखक के विचार व ज्ञान और अच्छे रूप में प्रस्तुत कर सकता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, पुस्तक से ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नेत्र ग्राह्य मुद्रित (लिपिवद्ध) शब्द हैं और इन शब्दों को इन उपलब्ध टाइपों के सहारे, एक अनुभवी, मनोविज्ञान व प्रकाशन के टेकनिकल ज्ञान से भली भाँति परिचित, प्रकाशक व मुद्रक, उचित रूप में प्रस्तुत करके पुस्तक को रोचक व लेखक के विचार ठीक प्रकार से व्यक्त करने में सार्थक बना सकते हैं। छपे मैटर में लाइन की लम्बाई व छपे पृष्ठ के आकार के विषय में सही निर्णय करना भी महत्वपूर्ण है। पाठक के नेत्र जब छपे मैटर की लाइन पर 'तैरते' हुए से जाते हैं, उन छपे हुए शब्दों का प्रतिविम्ब मस्तिष्क में हमारी नसों द्वारा पहुँचता है। एक लाइन समाप्त होने पर नेत्र फिर उल्टी तरफ लौटकर दूसरी लाइन पकड़ते हैं। छपे मैटर में लाइन की लम्बाई अधिक होने पर और साथ-साथ टाइप छोटा होने पर नेत्रों को अधिक दूर लौटना पड़ता है और दूसरी लाइन का सिरा पकड़ने में परेशानी सी होती है और इस प्रकार पढ़ने में जो एक प्रकार की 'तरंग' अथवा 'लहर'-सी बनी रहती है वह नहीं बन पाती। पाठक के नेत्र लेखक के लिपिवद्ध विचारों व ज्ञान को ग्रहण करने में समर्थ नहीं होते या हिचकते से हैं। माना लेखक ने वास्तव में बहुत अच्छा लिखा है—उसकी शैली अच्छी है, भाषा सरस है, विषय भी महत्वपूर्ण है—पर वह ऐसे मुद्रित शब्दों में प्रस्तुत है जिनसे हमारा मस्तिष्क नेत्रों के द्वारा भली भाँति ग्रहण करने में असमर्थ रहता है। ऐसी दशा में रचना छपने के बाद कहाँ तक सफल होगी यह विदित ही है। हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति अच्छा भाषण दे सकता है पर अपने विचारों को अच्छा लिपिवद्ध रूप नहीं दे सकता; कोई लिख अच्छा लेता है पर बोल नहीं सकता। इसी प्रकार लिखे हुए को मुद्रित रूप में प्रस्तुत करना भी एक कला है। टाइप स्याही लगने पर कागज पर इम्प्रेशन तो देगा ही पर इस इम्प्रेशन का उचित रूप होना आवश्यक है—जो सही प्रतिविम्ब दे सके, जो लेखक के विचार पाठक तक भली-भाँति पहुँचा सके।

हमारे यहाँ पुस्तकों के कुछ चालू साइज़ हैं व इसी प्रकार छपे पृष्ठ के आकार के लिए भी कुछ चालू नाप हैं; बहुत से प्रकाशक तो यही कहेंगे कि इनको अपना लिया जावे तब बहुत सी समस्याओं से बचा जा सकता है। पर वे यह भूल जाते हैं कि जमाने की रफतार बहुत तेज है व आज का इन्सान बराबर परिवर्तन चाहता है। अगर समय के साथ कोई चीज नहीं बदलती तो उसे पीछे फेंक दिया जाता है। पिछे वर्षों में पुस्तकों के आकार, टाइप, रूप-सज्जा (गेटअप), मेजर इत्यादि में जो बराबर परिवर्तन हो रहे हैं वह इस बात के साक्षी हैं। देश के अंग्रेजी के कुछ प्रकाशकों के साथ-साथ हिन्दी के प्रकाशकों ने भी कुछ अमरीकन पुस्तकों की रूप-सज्जा की भी नकल की, पर यह देखना है कि हमारा समाज इसका कहाँ तक स्वागत करता है।

मेरे एक अध्यापक मित्र कहते हैं कि प्रकाशक का काम ही क्या है : पाण्डुलिपि प्राप्त होते ही प्रेस भेज दी व पुस्तक छपने पर उसकी बिक्री का प्रबन्ध करो; उनकी दृष्टि में कोई भी आदमी अन्य कुछ व्यवसायों की तरह—पैसा लगाने पर 'प्रकाशक' बन सकता है। किसी बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय में लगी पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशक के लिए उनका यह कहना उचित हो सकता है पर जहाँ तक समाज व साहित्य की सच्ची सेवा करने वाली पुस्तकों का प्रश्न है यह धारणा उचित नहीं है। सुविख्यात लेखक की प्रभावशाली लेखनी से लिखी रचना को भी रोचक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करने के लिए एक अनुभवी प्रकाशक की आवश्यकता है। जिस प्रकार एक सुन्दर व अच्छा मकान बनाने के लिए अनुभवी कर्मचारियों के साथ-साथ एक आर्कि-

टेक्ट की आवश्यकता है उसी प्रकार पुस्तक प्रकाशन में भी प्रकाशन की कला व टेकनिकल ज्ञान रखने वाले व्यक्ति की आवश्यकता है। प्रकाशक में व्यावसायिक सूझबूझ के साथ-साथ प्रकाशन की कला व टेकनिक का भी ज्ञान होता है और वह ही पाण्डुलिपि को सुन्दर व उपयोगी पुस्तक का रूप देने का हर प्रकार का प्रयत्न करता है।

पुस्तक में उचित टाइप के प्रयोग, पुस्तक के आकार व मेजर के विषय में निर्णय आदि विषयों के साथ-साथ प्रकाशक को और भी बातों पर ध्यान देना होता है। मूल पाण्डुलिपि के साथ अन्य सम्बन्धी विषयों पर प्रायः प्रकाशक के परामर्श से ही अध्याय जोड़े जाते हैं। अनुमानतः हर लेखक अपनी रचना को पूर्णरूप से सम्पन्न समझता है और वह नहीं चाहता कि उसमें कोई भी परिवर्तन किया जावे, पर मैं तो यही उचित समझता हूँ कि प्रकाशक को बिना किसी हिचकिचाहट के उस विषय का पर्याप्त ज्ञान रखने वाले अन्य व्यक्तियों से, आवश्यकता पड़ने पर, परामर्श ले लेना चाहिए—यदि उन्हें रचना में कोई भी कमी दृष्टिगोचर होती है।

प्रकाशक के लिए एक और भी महत्वपूर्ण काम है—वह है मुख्य विषय की पाण्डुलिपि के अध्यायों को ठीक प्रकार से लगाना तथा मुख्य विषय के पहले व बाद में आने वाले पृष्ठों व टाइटिल पेज आदि को उचित स्थान देना। पुस्तक में जहाँ तक सम्भव हो, अलग-अलग अध्यायों को न तो बहुत ही बड़ा कर देना चाहिए न ही बहुत छोटा; उनको इस प्रकार प्रस्तुत किया जावे कि एक अध्याय में एक ही विषय रोचक ढंग से दिया जावे। भिन्न-भिन्न अध्यायों के पहले पृष्ठों के डिजाइनों के साथ-साथ मुख-पृष्ठ (टाइटिल), आधा टाइटिल, विषय सूची (कन्टेन्ट्स)।

बाहरी कवर (डस्ट कवर या फोल्डर), उपसंहार, समर्पण (डेडीकेशन) आदि के डिजाइन भी नयनाभिराम होने चाहिएँ। पुस्तक के नाम से विषय का बोध हो तथा वह नाम सुनने व पढ़ने में आकर्षक हो।

पुस्तक को उपयोगी के साथ-साथ रसपूर्ण बनाने के लिए मुख्य विषय की पाण्डुलिपि से पहले और बाद में निम्नलिखित विषयों पर कुछ पृष्ठ दे दिए जाते हैं; इनका मैटर भी प्रकाशक को लेखक तथा अपने विभागीय कर्मचारियों की सहायता से पहले ही बनवा लेना चाहिए :—

१. आधा टाइटिल (यह जिल्द खोलने के बाद पहला पृष्ठ है, इस पर कम से कम मैटर होना चाहिए—उचित तो यह ही है कि इस पर केवल पुस्तक का नाम एक लाइन में अच्छे ढंग से दिया जावे क्योंकि यह पोस्तीन से थोड़ा चिपका होता है और थोड़ा ही खुलता है)।
२. यदि कोई फ्रन्टिस पीस (चित्र) दिया जाता है तब वह इसके बाद देना चाहिए और उसके सम्मुख सीधे हाथ वाले पृष्ठ पर मुखपृष्ठ हो।
३. मुखपृष्ठ (सारी पुस्तक की रूप-सज्जा में मुखपृष्ठ की रूप-सज्जा सबसे महत्वपूर्ण है और इसके विषय में काफी सोच-विचार कर के निर्णय करना चाहिए)।
४. मुखपृष्ठ की पीठ वाले पृष्ठ पर प्रिन्ट लाइन (मुद्रक सम्बन्धी सूचना) व पुस्तक के संस्करण के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना हो।
५. समर्पण पृष्ठ (डेडीकेशन) यदि कोई है तो वह इस स्थान पर दिया जावे।
६. विषय-सूची (कन्टेन्ट्स) व चित्र-सूची (यदि पुस्तक में चित्र भी हों) तो यहाँ दी जावें।
७. आमुख (फोरवर्ड) व भूमिका (इन्ट्रोडक्शन) इसके बाद आने चाहिए। (कभी-कभी आमुख विषय-सूची से पहले भी होता है)।
८. मुख्य विषय के अध्याय
९. इसके बाद के पृष्ठों में आवश्यकतानुसार एपेंन्डिक्स, नोट्स, एब्रीवियेशन, ग्लोसरी, बिबलियोग्रेफी, आभार प्रदर्शन (एकनोलिजमेन्ट) व इन्डेक्स दिए जा सकते हैं (कुछ लोग आभार प्रदर्शन वाले पृष्ठ को मुख्य विषय से पहले वाले पृष्ठों में, विषय-सूची से पहले देना उचित समझते हैं)।

ऊपर दिए गए विषयों के पृष्ठों के क्रम में सुविधानुसार थोड़ा हेर-फेर किया जा सकता है पर आधा टाइटिल व टाइटिल अपने स्थान से नहीं हट सकते। इन विषयों के पृष्ठों के मैटर के सम्बन्ध में स्थानाभाव के कारण यहां वर्णन करना कठिन है और फिर कभी इनके विषय में वर्णन करने का प्रयत्न किया जावेगा।

पुस्तक में यदि चित्र डाइग्राम आदि भी छपने हैं तब उन पर भी नम्बर डाल दिया जावे व तीर (एरो) के निशान से संकेत कर दिया जावे कि वह किस प्रकार से छपेंगे—जिससे वे उल्टे अथवा टेढ़े न छप जावें। पाण्डुलिपि में भी चित्र छपने वाले स्थानों के लिए संकेत कर दिया जावे व वहाँ चित्र का नम्बर भी दे दिया जावे।

कुछ पुस्तकों में, सन्दर्भ देने के लिए अथवा किसी उद्धृत किए शब्द अथवा शब्द-समूह का आशय बताने के लिए, फुटनोट देने की आवश्यकता पड़ जाती है, इनको उचित स्थान पर छापने का भी ध्यान रखना पड़ता है। हर अध्याय में जिन शब्दों अथवा लाइनों के सम्बन्ध में फुटनोट देना है ऊपर नम्बर दे देने चाहिएँ व उन्हीं नंबरों का संकेत देते हुए फुटनोट सम्बन्धित पृष्ठ भी पाण्डुलिपि में दे दिया जाये। पूरे अध्याय में लगातार अंत तक इसी प्रकार नम्बर चलने चाहिएँ। हर पृष्ठ के अलग-अलग नंबर देने से गलती की सम्भावना रहती है। कम्पोज करते समय कम्पोजीटर उन नम्बरों को देखकर उचित स्थान पर फुटनोट लगा देंगे। चित्रों के शीर्षक (केपशन) के लिए भी पाण्डुलिपि में उचित संकेत होना आवश्यक है। केवल यह सोचकर कि लेखक तो प्रूफ देखेगा ही यह काम लेखक पर छोड़ देना उचित नहीं। अनुभवी से अनुभवी लेखक भी इस प्रकार की त्रुटियाँ छोड़ जाते हैं; जब वे अपनी रचना पढ़ते हैं तो अनुमानतः वे एक प्रकार की आनन्द की लहरों में खो से जाते हैं।

पृष्ठों के शीर्षक (फोलियो हैडिंग) के विषय में भी प्रारम्भ से ही निर्णय कर लेना उचित है व इसके लिए भी

पाण्डुलिपि के साथ आवश्यक संकेत व आदेश मुद्रक को दे देने चाहिएँ।

इस प्रकार प्रकाशक पांडुलिपि अपने पास आने के बाद जब वह उसे आँक कर प्रकाशित करने का निर्णय कर लेता है तब वह उसे अधिक रोचक व उपयोगी पुस्तक का रूप देने का हर प्रकार से भरसक प्रयत्न करता है। यदि आवश्यकता होती है तो वह उसकी भाषा परिवर्तित करवा कर ठीक करवाता है और नए अध्याय जुड़वाता है, फिर उचित मुद्रण व रूप-सज्जा का प्रबन्ध करता है। कहाँ कौन-सा टाइप लगेगा इसके लिए उचित निर्देश देता है। आकार व कागज के लिए निर्णय करता है, आवश्यक डिजाइन बनवाता है, आदि-आदि। और इन सबके साथ प्रूफ शुद्ध कराने का भी उचित प्रबन्ध करता है। ●

सम्पादक के नाम पत्र

अवैध पुस्तक न खरीदिये

अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ ने एक पुस्तिका द्वारा संसद-सदस्यों का ध्यान अवैध पुस्तकों के प्रचलन की ओर आकर्षित किया है। कोई मार्ग निकलेगा, यह अपेक्षा है। इस संबंध में यह एक सुझाव है कि यदि पुस्तक-विक्रेता से पुस्तक लेते समय पुस्तक पर पुस्तक-विक्रेता के हस्ताक्षर तथा उसकी दूकान के नाम-पते की मुहर ले ली जाय तो नकली पुस्तक कहाँ से प्रचारित हुई तथा कहाँ छापी गई आदि सूत्रों का पता लगाने में सहायता मिल सकती है। अमुक पुस्तक अमुक पुस्तक-विक्रेता से ले गई है—यह मालूम होते हुए भी यह सूत्र प्रमाणित कर पाना कठिन है तथा तस्कर-व्यापार के लिए यह एक वरदान है। तस्कर-व्यापारी क्यों स्वीकार करेगा कि वह अवैध पुस्तक बेचता है, यदि वह भली प्रकार जानता है कि यह तथ्य प्रमाणित नहीं किया जा सकता। हस्ताक्षर और दूकान के नाम-पते आदि की मुहर से वह स्वयं प्रमाण होगा कि अमुक पुस्तक का वह विक्रेता है। यदि वह पुस्तक नकली है तो उसके स्रोत का पता लगाने का वह उत्तरदायी है। इस प्रयोग की प्रतिक्रिया यह होगी कि तस्कर-व्यापारी नकली पुस्तक की बिक्री से सावधान हो जायगा।

पाठ्य-पुस्तकों पर यह प्रयोग तत्काल आवश्यक है। थोड़े से समय में अगणित पुस्तकों की बिक्री, पाठ्य-पुस्तकों का अभाव आदि कारणों से यह व्यापार पनपता है। हस्ताक्षर करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाई आ सकती है। किन्तु नकली पुस्तक के प्रचलन से उत्पन्न हानि पर विचार करते हुए पुस्तक-विक्रेता और ग्राहक दोनों धैर्य से काम लें। शासन इस दिशा में अन्य प्रयासों के साथ यह कानून बनावे कि, "कोई पुस्तक-विक्रेता कोई पाठ्य-पुस्तक जिस पर उसके हस्ताक्षर और नाम-पते आदि की मुहर न हो, न बेचे अन्यथा ऐसी पुस्तक चोरी की समझी जायगी तथा उसे खरीदने वाला इस अवैधानिकता का उत्तरदायी होगा। पुस्तकों पर अनिवार्य रूप से यह छपा रहना चाहिए कि पुस्तक-विक्रेता के हस्ताक्षर और उसकी दूकान के नाम-पते की मुहर पुस्तक पर लेकर पुस्तक खरीदी जाय अन्यथा यह पुस्तक पास रखना अपराध है।"

इस प्रयोग में पुस्तक-विक्रेता, जन-साधारण तथा शासन के पारस्परिक सम्मिलित सहयोग की आवश्यकता है।

बनवारीलाल दुबे
वाराणसी

हिन्दी पुस्तकों के पुस्त (पीठ) पर पुस्तकों का नाम

आज की हिन्दी पुस्तकों को देखा जाए तो दिन पर दिन उनकी छपाई, साजसज्जा का ध्यान रखते हुए उनको सुन्दर बनाने की हर प्रकाशक कोशिश कर रहा है। फिर भी एक जरा-सी भूल देखी गई है कि इसका शायद प्रकाशकों को ध्यान न रहता हो अथवा वह इस भूल को भूल न मानते हों। आशा है कि प्रकाशक अवश्य इस ओर ध्यान देकर मेरी अथवा अपनी भूल का सुधार शीघ्र ही कर लेंगे।

बात इस प्रकार है कि अपने भ्रमण पर एक कालेज की लाइब्रेरी में अपना खाली समय लाइब्रेरियन महोदय के पास काट रहा था। उनकी मेज पर कई पुस्तकों की १-२ ऊँची गड्डियाँ रखी थीं। इस व्यवसाय में होने के नाते हर पुस्तक की ओर ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक है ही, कुछ पुस्तकों के नाम कुर्सी पर बैठे-बैठे पढ़ने में दिक्कत हुई। कारण यह था कि पुस्तक की पीठ (पुस्त) पर छपे मोटे अक्षर बिलकुल उल्टे थे। ख्याल आया कि शायद पुस्तक गड्डी में उल्टी रखी होगी। लेकिन इस विचार-संघर्ष के बीच ही एक दृष्टि लाइब्रेरियन महोदय के आफिस में रखी हुई हिन्दी पुस्तकों की अलमारी पर पड़ी कि बात साफ हो गई। अलमारी में भी कुछ खड़ी पुस्तकों के नाम पुस्त पर नीचे से शुरू थे।

प्रश्न यह है कि यदि कोई सज्जन लाइब्रेरी में अथवा पुस्तकों की दूकान में हिन्दी पुस्तकों की अलमारी के पास

जाने का कष्ट करें तो उनको पुस्तक का नाम जानने के लिए दायें खड़े होकर ऊपर से नीचे देखने में सुविधा रहेगी अथवा बायें खड़े होकर पुस्तक का नाम (खड़ी पुस्तकों में से) नीचे से ऊपर देखने में ? इस विषय में अब एक निर्णय तो करना आवश्यक हो जाता है। मेरे कुछ विचार इस प्रकार हैं कि : पुस्तक की पुस्त (पीठ) पर पुस्तक का नाम जहाँ तक हो सामने हो तो अच्छा है। यदि पुस्तक की जिल्द पतली है या पुस्तक का नाम बड़े अक्षरों में पुस्त पर देना ही है तो पुस्तकों को खड़ी करके (ध्यान रहे पुस्तक सीधी हो) ऊपर से नीचे नाम देना चाहिये यानी पुस्तक की जो भी भाषा हो उसकी पुस्त पर ऊपर से नाम 'शुरू' करना अति उत्तम रहेगा। इससे मेज पर पड़ी हुई सीधी पुस्तक का नाम दूर से ही पढ़ा जा सकेगा साथ ही अलमारी में हिन्दी, इंगलिश अथवा उर्दू की रखी हुई पुस्तकों का नाम अलमारी के दरवाजे पर लगी पट्टी भी नहीं ढक सकेगी। इस क्रम को यदि हम ध्यान में रखें तो पाठकों को लाइब्रेरी की अलमारी में या मेज पर पड़ी हुई पुस्तकों का नाम दूर से पढ़ने में कोई कठिनाई कभी नहीं होगी। साथ ही अलमारी में एक ही तरफ खड़े होकर हर पुस्तक का नाम आसानी से एक ही क्रम में पढ़ा जा सकेगा।

आशा है प्रकाशक इस ओर अवश्य ध्यान देने की कृपा करेंगे।

बी. एन मेहरा
प्रतिनिधि—लक्ष्मीनरायण अग्रवाल
एजूकेशनल पब्लीशर्स, आगरा

'हिन्दी प्रकाशक' के प्रति

बड़े काम की चीज़

आपके स्नेह-स्वरूप 'हिन्दी प्रकाशक' की प्रति नियमित मिल रही है। इसका '१९६३ के हिन्दी साहित्य का परिचय विशेषांक' देखा। बड़े काम की चीज़ बन पड़ी है। यह क्रम प्रतिवर्ष रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

सत्यनारायण मिश्र
बम्बई-६०

उपयोगी सूचनाएं

आपकी लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'हिन्दी प्रकाशक' प्रकाशक और लेखक दोनों की दृष्टियों से उपयोगी सूचनाएँ प्रदान कर महत्वपूर्ण सेवा कर रही है। नवीनतम हिन्दी प्रकाशनों की प्रगति एवं भावी प्रकाशनों से अवगत कराने वाले मासिकों में उक्त पत्रिका का स्थान सदा से ही ऊंचा रहा है और उसे मैं हमेशा चाव से पढ़ती रहती हूं।

श्रीमती कुन्तल गोयल, एम० ए०
सीधी (मध्य प्रदेश)

जानकारी से लाभ

आपकी ओर से 'हिन्दी प्रकाशक' गत वर्ष से हमें पहुंचता रहा है। जानकारी से बहुत लाभ हो रहा है।

मन्त्री
वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार, शहर समिति,
कोल्हापुर

पुस्तकें खरीदने में कामधेनु

कृपया 'हिन्दी प्रकाशक' की एक प्रति नियमित रूप से भेजकर इसकी उपयोगिता से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान करेंगे यह विनय है। पुस्तकालय के हेतु पुस्तकें क्रय करने में यह कामधेनु सिद्ध हुई है।

एस० एल० सैनगुरिया,
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार केन्द्र,
इन्दौर-२

- पुस्तकें पढ़िये
- हिन्दी की पुस्तकें पढ़िये
- खरीद कर पढ़िये
- उपहार में दीजिए !

अनूदित पुस्तकें

उपन्यास (Translated Novels)

(The Picture of Dorian Grey by Oscar Wilde)
सौन्दर्य की रेखाएं अनु० रामस्वरूप दुबे ५·००

(Scorlite Patrol by Dorian Manros)
पाप की गली अनु० महावीर अधिकारी ३·००

(The Yearling [Selections] by Marjorie Kinnan Rawlings)
हमराही अनु० श्रीमती शारदा गोयल २·००

(Sidharth by Harman Hess)
सिद्धार्थ अनु० महावीर अधिकारी ३·००

(The Yearling by Marjorie Kinnan Rawlings)
शिकार और जीवन अनु० सत्यकाम वर्मा (1964) ६.००

(Burning Secret and Beam Moon Alley by Stefan Zweig)
प्रायश्चित (by Guy De Maupassant) अनु० सन्तोष गार्गी २.००

(Mr. Tutt at His Best by Arthur Train)
एक महान वकील अनु० ओमप्रकाश वर्मा (1964) ४·००

नाटक एवं कहानी (Translated plays and Stories)

(Pillars of Society by Ibsen)
समाज के स्तम्भ अनु० सीताचरण दीक्षित २.५०

(The Hypocrite by Moliar)
ढोंगी अनु० विनोद रस्तोगी १.५०

(Stop News by Mihail Sebastain)
छपते-छपते अनु० विनोद रस्तोगी (1963) ३.००

कुलीन घराना तुर्गनेव अनु० सावित्री व्होरा ३.००

बाप-बेटे तुर्गनेव अनु० रामगोपालसिंह ३.५०

मार्मिक रहस्य अनु० श्रवणकुमार 'दिव्य' (1964) २.००

ऐण्टन चेखब ऐण्टन चेखब, अनु० अरुण १.५०

मैक्सिम गोर्की अनु० अरुण ३.००

(Antigone by Sophocles)
ऐन्टीगोने अनु० डॉ० रांगेय राघव १.२५

(Oedipus : Sin, Love and Death by Sophocles)
ईडीपस : पाप, प्रेम और मृत्यु अनु० डॉ० रागेय राघव (1963) ३.००

(The Heiress by Ruth and Augustus Goetz)
वारिस अनु० राजेन्द्रकुमार शर्मा (1964) १.५०

विज्ञान, शिक्षा-मनोविज्ञान आदि की अनूदित पुस्तकें

(Modern Science and Modern man by James B. Conant)
आधुनिक विज्ञान और आधुनिक मानव रूपा० हंसराज 'रहबर' २.२५

(Science and Common Sense by James B. Conant)
विज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान अनु० विश्वमित्र शर्मा (सचित्र, 1962) ९.५०

(Atomic Age Physics by Henry Semat and White)
परमाणुयुगीन भौतिकी अनु० रमेश वर्मा (सचित्र 1963) ६·००

(The Origin of Man by Mikhail Nesturkh)
मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास अनु० रमेश सिन्हा (1963) १५.००

(Station in Space by Donald Cox)
अन्तरिक्ष स्टेशन अनु० रमेश वर्मा (रंगीन, 1963) ३.००

(A Living Bill of Rights by William O. Douglas)
एक जीवन्त अधिकार-पत्र अनु० विश्वदेव शर्मा (1963) २.००

आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

१.५०
३.००
१.२५
phocles)
३.००
Goetz)
१.५०
पुस्तकें
२.२५
s B.
शर्मा
६.५०
and
६.००
urkh)
१५.००
३.००
m
s)
र्ग
२.००
ी-६

संघ समाचार

नयी कार्यसमिति की पहली बैठक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की नव निर्वाचित कार्यसमिति की इस सत्र की पहली बैठक रविवार दिनांक १७ मई, १९६४ को सायं ४-०-० बजे 'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली—६ में श्री ओमप्रकाश जी की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :

सर्वश्री राधेलाल चोपड़ा
" रघुवीरशरण बंसल
" दीनानाथ मल्होत्रा
" सीताशरण सिंह
" दयानन्द वर्मा
" कन्हैयालाल मलिक
" रामलाल पुरी
" रामकुमार कपूर
" श्यामलाल गुप्त
श्रीमती सूरजमुखी अग्रवाल

संघ के वार्षिक अधिवेशन में पारित प्रस्तावों के कार्यान्वयन के सम्बन्ध में कार्यसमिति ने निम्नलिखित निर्णय लिये :

१. निश्चय किया गया कि दिवंगत आत्माओं के सम्बन्ध में पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि उनसे संबंधित परिवार वालों के पास कार्यालय द्वारा भेजी जाय।

२. निश्चय किया गया कि हल्की पुस्तकों की सरकारी खरीद संबंधी प्रस्ताव की प्रतिलिपि एक पत्र के साथ केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय, सामुदायिक विकास मंत्रालय, विभिन्न राज्यों के शिक्षा-मंत्रियों, शिक्षा-संचालकों, पंचायत संचालकों, विकास आयुक्तों तथा उन सभी विभागीय अधिकारियों को भेजी जाय जो बड़ी संख्या में पुस्तकें खरीदते हैं। इस पत्र में यह भी माँग की जाय कि :

(अ) सर्वप्रथम खरीदी जाने वाली श्रेष्ठ पुस्तकों की सूची बनाई जाय।

(आ) सूची बनाने वाले ज्ञात श्रेष्ठ व्यक्ति हों।

(इ) यदि पुस्तकों की खरीद टेंडर माँगकर ही करनी है तो सूची बनने से पूर्व टेंडर न माँगे जायं। सूची के आधार पर ही टेंडर हों।

(ई) जब इस प्रकार की सूची बनाई जाय उसकी सूचना देश के प्रमुख हिन्दी पत्रों को, विशेषतः संघ के मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' को प्रकाशनार्थ अवश्य भेजी जाय ताकि अधिक से अधिक प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं को उसकी सूचना मिल सके। 'हिन्दी प्रकाशक' ऐसी सूचनाओं को निःशुल्क प्रकाशित करेगा।

३. निश्चय किया गया कि कागज और दफ्ती पर लिये गये उत्पादन शुल्क सम्बन्धी प्रस्ताव की प्रतिलिपि केन्द्रीय वित्त-मंत्रालय एवं शिक्षा-मंत्रालय को भेजी जाय।

४. निश्चय किया गया कि पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण संबंधी प्रस्ताव की प्रतिलिपि शिक्षा मंत्रालय, विभिन्न राज्यों के शिक्षा-मंत्रियों, शिक्षा-संचालकों, विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा बोर्डों को भेजी जाय।

५. निश्चय किया गया कि पुस्तकों के वितरण की सहकारी योजना की रूप-रेखा संघ के सभी सदस्यों को प्रेषित की जाय। सदस्यों से निवेदन किया जाय कि वे इस सम्बन्ध में अपने सुझाव एवं विचार ६ जून तक संघ-कार्यालय को भेज दें। इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाई गई जिसकी पहली बैठक ७ जून, १९६४ को होगी। उपसमिति की सिफारिशों पर कार्यसमिति की आगामी बैठक में विचार किया जायगा।

सदस्य : सर्वश्री ओमप्रकाश, रामलाल पुरी, दीनानाथ मल्होत्रा, श्यामलाल गुप्त, रघुवीरशरण बंसल, राधेलाल चोपड़ा तथा कन्हैयालाल मलिक (संयोजक)।

६. संदर्भ पुस्तकों (सोर्स बुक्स) की सूची के सम्बन्ध में निश्चय किया गया कि प्रधान एवं प्रधान मंत्री मिलकर सर्वप्रथम ऐसी १२ पुस्तकों की सूची तैयार करें और कार्यसमिति की आगामी बैठक में यह सूची प्रस्तुत की जाय।

७. निश्चय किया गया कि हिन्दी में सस्ती पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने हेतु सरकारी सहायता प्राप्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव की प्रतिलिपि केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय को भेजी जाय और इस सम्बन्ध में अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित करके प्रस्ताव को कार्यान्वित करने का प्रयास किया जाय।

८. निश्चय किया गया कि संविधान में किए गये संशोधनों को पृथक् से छपवा कर संविधान के अन्त में चिपका दिया जाय।

९. निश्चय किया गया कि संघ के सदस्यों की सदस्यता की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में कार्यालय जांच करके अपनी रिपोर्ट कार्यसमिति की आगामी बैठक में प्रस्तुत करे।

१०. विधान की धारा ६ (आ) के अनुसार पुस्तक-विक्रेताओं में से निम्नलिखित पाँच व्यक्तियों को कार्यसमिति की सदस्यता के लिए आमंत्रित किया जाय।

(क) सर्वश्री प्रेमनारायण शर्मा, सुबोध ग्रंथमाला कार्यालय, रांची
(ख) ,, गोकुलदास धूत, नवयुग साहित्य सदन, इंदौर
(ग) ,, धूमीमल, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
(घ) ,, रामदत्त थानवी, किताबघर, जोधपुर
(ङ) ,, अजय चौहान, जिज्ञासा, जबलपुर।

उपर्युक्त सदस्यों से जो संघ के सदस्य नहीं हैं, वार्षिक शुल्क ३० रुपया मात्र ७ जून, ६४ तक संघ-कार्यालय को प्राप्त होने पर उन्हें कार्यसमिति का सदस्य मान लिया जाय।

११. वर्तमान सत्र के लिए कार्यसमिति ने कार्यालय-व्यय की निम्न प्रकार स्वीकृति दी :

(क) कार्यालय का किराया : १००.०० रु० प्रतिमास

(ख) कार्यालय मंत्री तथा टाइपिस्ट : २००·०० रु० मासिक

(ग) चपरासी : ६०·०० रु० मासिक

१२. निश्चय किया गया कि प्रधान अथवा प्रधान-मंत्री द्वारा लिखे गए पत्रों की प्रतिलिपि वाराणसी एवं इलाहाबाद स्थित संयुक्त मंत्रियों के पास भेजी जाय।

१३. संघ के मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' के सम्बन्ध में भी कार्यसमिति ने विचार किया।

"निश्चय किया गया कि नये प्रकाशनों सम्बन्धी सूचना सपरिचय प्रकाशित की जाय।"

"विशिष्ट सूचनाओं के सम्बन्ध में निश्चय किया कि वे 'हिन्दी प्रकाशक' में प्रकाशित न की जायं, बल्कि परिपत्र द्वारा संघ-सदस्यों में प्रचारित की जायं।"

१४. निश्चय किया गया कि हिन्दी के जो प्रमुख प्रकाशक अभी तक संघ के सदस्य नहीं बने हैं, उनकी एक सूची तैयार की जाय और उन्हें सदस्य बनाने के प्रयास किये जायं।

१५. संघ के सदस्यों की एक विवरण-पत्रिका हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया।

१६. वर्तमान सत्र में संघ के सदस्यों के प्रकाशनों की तीन सम्मिलित सूचियाँ भी प्रकाशित करने का निश्चय किया गया :

(क) एजुकेशनल प्रकाशनों की सूची। यह सूची जुलाई, ६४ के अन्त तक प्रकाशित होगी।

(ख) सन् १९६४ के प्रकाशनों की सूची। यह सूची दिसम्बर, ६४ तक प्रकाशित होगी।

(ग) संघ के सदस्यों की प्राप्त पुस्तकों की सूची। इस सूची में सन् १९६३ तक के साहित्य को विषयानुसार प्रकाशित किया जायगा।

सभापति को धन्यवाद देकर सायं ६-३० बजे बैठक समाप्त हुई।

पुस्तक-वितरण सहकार की विचारणीय रूपरेखा

वार्षिक अधिवेशन और कार्यसमिति के निर्णय के अनुसार यह रूपरेखा प्रधान मंत्री ने संघ के सब सदस्यों को भेजी है और उनसे अनुरोध किया गया है कि वे इस पर अपने सुझाव तथा सम्मति ६ जून तक दे दें।

उपसमिति ७ जून को उन पर विचार कर सहकार के नियमादि प्रस्तुत करेगी।

१. अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्य-समिति हिन्दी प्रकाशनों के सहकारी वितरण के लिए एक लाभ-निरपेक्ष संस्था का आयोजन करती है जिसका नाम 'पुस्तक-वितरण सहकार' होगा।

२. इस 'पुस्तक-वितरण सहकार' के, जिसे आगे 'सहकार' कहकर पुकारा गया है, निम्नलिखित दो उद्देश्य होंगे :

(क) सहकारी आधार पर हिन्दी के प्रकाशनों का थोक और खुदरा वितरण तथा

(ख) सहकारी आधार पर हिन्दी में पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की रुचि के लिए उचित प्रचार-प्रसार।

३. यह 'सहकार' अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारत के किसी भी नगर में स्वयं अपने कार्यालय स्थापित कर सकता है अथवा किसी भी व्यक्तिगत प्रकाशक अथवा पुस्तक-विक्रय की संस्था को अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर सकेगा।

४. 'सहकार' किसी भी देश में, कोई पूंजी पुस्तकों की खरीद में नहीं लगायेगा। वितरण के लिए इसे पुस्तकें 'बिक्री अथवा वापसी' के आधार पर ही मिलनी चाहियें।

५. उचित, अतिरिक्त कमीशन पर प्राप्त पुस्तकों की बिक्री का हिसाब संबंधित प्रकाशकों को नियत अवधि में बिकी हुई पुस्तकों की रकम के साथ भेजा जाया करेगा। अतिरिक्त कमीशन की उचित दर क्या है और किस अवधि में बिक्री का हिसाब भेजा जाया करे, इसका निर्णय 'सहकार' की प्रबंध समिति या 'सहकार' द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि किया करेंगे।

६. सामान्यतया प्रकाशकों द्वारा अपनी जनरल पुस्तकों पर पुस्तक-विक्रेताओं को दिये जाने वाले कमीशन की दर से १० प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन को उचित अतिरिक्त कमीशन माना जायेगा लेकिन जो प्रकाशक पहले ही इससे अधिक अतिरिक्त कमीशन की सुविधा देते हैं, उनसे अधिक सुविधा ही ली जाएगी।

७. 'सहकार' द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों को वितरण के लिए पुस्तकें भेजने के संबंध में किसी भी प्रकार का

आर्थिक या वैध दायित्व, किसी भी दशा में 'सहकार' पर या अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ पर नहीं माना जायगा। 'सहकार' ऐसी ही प्रतिष्ठित प्रकाशन और पुस्तक-विक्रय की संस्थाओं को अथवा ऐसे ही व्यक्तियों को अपना प्रतिनिधि नियुक्त करेगा जिन पर सामान्यतया पुस्तक-व्यवसाय के जगत् की निष्ठा और आस्था हो।

८. 'सहकार' द्वारा वितरण के कार्यभार को उठाने के लिए संघ की कार्यसमिति द्वारा ऐसे ही प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जायगी जिनके पास बड़े पैमाने पर पुस्तक-वितरण करने का संगठन, उसे विकसित करने का सामर्थ्य और इस कार्य के लिए उचित व्यय आदि करने की शक्ति हो और जिनके पुस्तक-व्यवसाय के विभिन्न पक्षों से अच्छे सम्बन्ध हों, लेकिन कार्य-समिति का इस ओर निर्णय अन्तिम रूप से मान्य होगा और उस पर वाद-विवाद की गुंजाइश नहीं होगी।

९. पुस्तकों के वितरण अथवा प्रचार-प्रसार संबंधी कार्यों की देखभाल, संबंधित नियमों के निर्धारण करने तथा प्रतिनिधियों की नियुक्ति आदि करने के लिए 'सहकार' की एक प्रबन्ध-समिति होगी जिसके ५ सदस्य होंगे: अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रधान तथा प्रधान मंत्री, एवं तीन अन्य जिनका निर्वाचन अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्य-समिति अपने सदस्यों में से किया करेगी।

१०. अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ, उसकी कार्य-समिति, अथवा 'सहकार' की प्रबंध-समिति द्वारा बनाये गये पुस्तकों की बिक्री से संबंधित नियमों का स्वयं 'सहकार' अथवा उस द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों द्वारा कड़ाई से पालन आवश्यक होगा। ●

दिल्ली में सब प्रकाशनों की उपलब्धि

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ इस प्रयत्न में है कि हिन्दी के सभी प्रकाशन दिल्ली में उपलब्ध हों और उनकी जानकारी संघ के कार्यालय में रहे। इस सन्दर्भ में फरवरी

के 'हिन्दी प्रकाशक' में विभिन्न स्थानों के ३३ प्रकाशकों के नामों और दिल्ली में उनके प्रकाशनों की उपलब्धि के ठिकानों का विवरण दिया जा चुका है। उसके बाद जो जानकारी मिली है वह यहां दी जा रही है। इसमें प्रकाशक के नाम के बाद डैश(—) के साथ दिल्ली में उनके प्रकाशन उपलब्ध होने के ठिकाने हैं।

१. **जिज्ञासा प्रकाशन**, ८६।३३७ देवनगर, कानपुर—इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क; देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार; भारतीय साहित्य मंदिर, फव्वारा; आत्मा राम एण्ड संस, कश्मीरी गेट; स्टार बुक सेंटर, दरियागंज; दिल्ली पुस्तक सदन, बंगलो रोड, दिल्ली।

२. **मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड**, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद—इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क; दिल्ली पुस्तक सदन, बंगलो रोड; मुंशीराम मनोहर लाल, नई सड़क, दिल्ली।

३. **हिन्दी साहित्य भंडार**, गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ—इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क (सम्पूर्ण); स्टार बुक सेंटर, दरियागंज (सम्पूर्ण); भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा (आंशिक); भारती ग्रंथ भण्डार, अनसारी रोड, (आं०); मुन्शीराम मनोहरलाल, नई सड़क; आत्माराम एण्ड सस, कश्मीरी गेट; हिन्दी साहित्य संसार, बंगलो रोड; दिल्ली पुस्तक सदन, बंगलो रोड; राजकमल प्रकाशन, फैज बाजार, दिल्ली।

४. **हिन्दी साहित्य मन्दिर**, मेड़ती द्वार, जोधपुर—विभिन्न पुस्तक विक्रेता बेचते हैं। कोई खास विक्रेता नहीं है।

५. **ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी**—दिल्ली पुस्तक सदन, बंगलो रोड, दिल्ली में भी उपलब्ध है। अन्य ठिकाने फरवरी के अंक में लिखे जा चुके हैं।

भूलसुधार

मार्च-अप्रैल १९६४ के 'हिन्दी प्रकाशक' पृष्ठ ८४ पर संघ समाचार शीर्षक के अंतर्गत, 'भारत' और 'प्रदीप' में सम्मिलित रूप से प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों की दर भूल से ३.५० प्रति कालम इंच छप गई है। वास्तव में वह ३.५० प्रति कालम सीएम है। जिन बन्धुओं ने अपने विज्ञापन दिये हैं वे ३.५० प्रति कालम सीएम के हिसाब से ही भुगतान करने का अनुग्रह करें।

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

प्रतिभा दर्शन : ले. हरिशंकर जोशी; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, पो. बा. नं० ६९, वाराणसी; सा. रा. ८; पृ. ५८०; मू. २५.०० । भाषा विज्ञान ।

व्यक्ति विवेक : व्याख्या. रेवा शंकर त्रिवेदी; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; सा. रा. ८; पृ. ५०२; मू. १६.०० । संस्कृत टीका, भाषा टीका, अलंकार ।

हमारे प्रतिनिधि लेखक : ले. विश्वम्भर 'मानव'; प्र. लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. ३५०; मू. ६.०० ।

काव्य

मधुबाला : क. बच्चन; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १.०० ।

मेघदूतम् : शेषराज शर्मा; प्र. चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी; सा. क्रा. ८; पृ. २८८; मू. ५.५० ।

संधिनी : क. महादेवी वर्मा; प्र. लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद; सा. क्रा. ८; पृ. १७०; मू. ४.५०; विद्यार्थी संस्करण ३.०० ।

उपन्यास

आडम्बर : ले. प्रकाश भारती; प्र. भारती साहित्य सदन, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१; सा. क्रा. ८; पृ. १३६; मू. ३.२५ ।

एक महान वकील : मू. ले. आर्थर ट्रेन, अनु. ओमप्रकाश शर्मा; प्र. आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २०८; मू. ४.०० ।

जात न पूछे कोय : ले. गुरुदत्त; प्र. भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१; सा. क्रा.; पृ. १२०; मू. पा. बु. १.००; सजिल्द २.५० । पु. मु. ।

जीवन और संघर्ष : ले. कानराड टिक्टर; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन; ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १६०; मू. २.०० ।

दो एकांत : ले. नरेश मेहता; प्र. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद; सा. डि. ८; पृ. २००; मू. ५.५० ।

नारी : ले. अखिलन; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १.०० ।

परिवर्तन : ले. गुरुदत्त; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १.०० ।

परिवर्तन : ले. गुरुदत्त; प्र. भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली १; सा. क्रा. ८; पृ. १२०; मू. २.५० ।

प्रतिशोध : ले. नानक सिंह; प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली; मू. ३.५० ।

प्रवृत्ति : ले. गुरुदत्त; प्र. भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१; पृ. २८०; मू. २.०० । पा. बु. संस्करण ।

फिर से कहो : ले. मधुकर गंगाधर; प्र. पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना-१; मू. २.५० ।

यतिभंग : ले. ताराशंकर वन्द्योपाध्याय; प्र. वोरा एण्ड कंपनी; कालबा देवी रोड, बंबई; सा. क्रा.; पृ. १२०; मू. ३.०० ।

रति विलाप : ले. ताराशंकर वन्द्योपाध्याय; प्र. वोरा एण्ड कम्पनी, बंबई; सा. क्रा.; पृ. २४०; मू. ५.०० ।

विश्वास : ले. गुरुदत्त; प्र. भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१; सा. क्रा. ८; पृ. १३६; मू. ३.००; पु. मु. सजिल्द; पा. बु. पृ. १२०, मू. १.०० ।

वैशाली की नगरवधू : ले. चतुरसेन शास्त्री; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. २.०० ।

शाम से पहले : ले. मधुकर सिंह; प्र. पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना; मू. ३.०० ।

संगम : ले. नानक सिंह; प्र. वोरा एण्ड कम्पनी, बंबई; सा. क्रा.; पृ. ३२०; मू. ६.०० ।

सपनों के मीत : ले. गोविन्दसिंह; प्र. रतन एण्ड कंपनी; दरीबा दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १५२; मू. ३.५० ।

सरकण्डों में मूर्ख : ले. चेन-ची यंग; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २८८; मू. ३.०० ।

सुबह होने तक : ले. मधुकर गंगाधर; प्र. पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना; मू. ३.०० ।

कहानी

नई पड़ोसिन तथा अन्य कहानियाँ : ले. वीणा सेठ; प्र. पारिजात प्रकाशन, पटना; मू. ३.०० ।

पठान का बच्चा : ले. कामता प्रसाद सिंह 'काम'; प्र. पारिजात प्रकाशन, पटना; मू. २.०० ।

फूल माला (भाग ३) : ले. सुदर्शन; प्र. वोरा एण्ड कंपनी, बंबई; सा. क्रा; पृ. १२०; मू. २.५० ।

महौषध पंडित : ले. भदंत आनन्द कौसल्यायन; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १४३; मू. ३.०० ।

हीरे की कनी : ले. अमृता प्रीतम; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १.०० ।

नाटक

नींव की दरारें : ले. कृष्ण किशोर श्रीवास्तव; प्र. राजपाल एण्ड संस, दिल्ली; मू. २.५० ।

प्रतिनिधि एकांकी : सं. फ. च. पाण्डेय; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा. क्रा.; पृ. २००; मू. ३.०० ।

पाणिनीय नाटकम् : ले. गोपाल शास्त्री दर्शनकेशरी; प्र. चौखम्बा विद्याभवन; सा. क्रा. ८; पृ. ९२; मू. २.०० ।

यात्रा-संस्मरण

चित्र और चिंतन : ले. शांतिप्रिय द्विवेदी; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; सा. क्रा. ८; पृ. ९६; मू. २.५० ।

सच्चे दोस्त और बहादुर दुश्मन : ले. राबर्ट एफ. कैनेडी; अनु. दीवान; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १९१; मू. ४.५० ।

निबन्ध—हास्य

उड़ते फूल : ले. काका कालेलकर; प्र. वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई; सा. क्रा.; पृ. ११२; मू. २.०० ।

दुनिया रंगबिरंगी : ले. देवराज दिनेश; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स; दिल्ली; मू. १.०० । हास्यव्यंग्य ।

बालोपयोगी

पुरखों के दर्शन : ले. योगेन्द्र कुमार लल्ला; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. फु.; पृ. ८२; मू. १.०० । लोककथा, सचित्र ।

बलिष्ठ बनियन : ले. जी प्रकाश; प्र. वोरा एण्ड कंपनी, बम्बई; सा. क्रा. ८; पृ. ३२; मू. १.०० ।

बालएकादशी : ले. शांति गुप्ता; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. फु. ८; पृ. ५२; मू. १.२५ । सचित्र कहानियां ।

सागरतल की खोज : ले. रूथ बिडज़े; प्र. राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली; मू. २.००। ज्ञान-विज्ञान ।

आर्थिक

आबादी की समस्या : ले. मार्गरेट ओ. हाइड, अनु. बी. आर. जोबार; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १३४; मू. २.५० ।

प्रगति के बढ़ते चरण : अनु. कृष्णचन्द्र; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. २५८; मू. ३.७५ । सचित्र ।

राजस्व के सिद्धांत एवं भारतीय वित्त व्यवस्था : ले. डा. जी. पी. गुप्त; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा. डि; पृ. ४९६; मू. ७.५० । चतुर्थ संस्करण, कामर्स ।

हमारी योजनाएँ और प्रगति : ले. वाचस्पति गैरोला; प्र. वोरा एण्ड कंपनी, बंबई; सा. क्रा.; पृ. ११८; मू. २.२५ ।

राजनीति

प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड : ले. डा.

हरिहरनाथ त्रिपाठी; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; सा. क्रा. ८; पृ. २३०; मू. ६·०० ।

मृत्युदण्ड प्रथा और इतिहास : ले. परिपूर्णानंद वर्मा; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा. डि.; पृ. ३५८; मू. ६·२५ ।

कामविज्ञान

कामसूत्र : टी. देवदत्त शास्त्री; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; सा.रा. ८; पृ. ७५४; मू. १६·०० । जयमंगला भा. टी. ।

सेक्स की समस्याएँ : ले. डा. लक्ष्मीनारायण; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १·०० ।

विविध

डाकुओं के बीच : ले. रामकुमार भ्रमर; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १·०० ।

नागरिक सुरक्षा : ले. रामशंकर मिश्र; प्र. लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १०८; मू. २·७५ ।

भारतीय फिल्मों की कहानी : ले. बच्चन श्रीवास्तव; प्र. हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू. १·०० ।

भौतिकी का प्रामाणिक परिचय : ले. एडवर्ड जी. हुई; अनु. हरिश्चन्द्र वेदालंकार; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. १६७; मू. ३·५० । सचित्र ।

मन की यात्राएँ : ले. रिचर्डजुएलसन, अनु. नेमिचन्द्र जैन; प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा. क्रा. ८; पृ. ३३९; मू. ५·०० । मनोविज्ञान ।

वैज्ञानिक उद्यान शास्त्र : ले. स. द. श्रीवास्तव; प्र. रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा; सा. डि.; पृ. २४०; मू. ३·०० । पु. मु. ।

शिवस्तोत्रावली : उत्पल देवाचार्य; प्र. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; सा. रा. ८; पृ. ३६०; मू. १०·०० । भा. टी. अनु. राजानन्द लक्ष्मण ।

हिन्दी टंकण कला : ले. गयाप्रसाद अग्रवाल; प्र. श्री विष्णु आर्ट प्रेस, जीरो रोड, इलाहाबाद; सा. क्रा. ४; मू. २·५० । नये की-बोर्ड के अनुसार, चतुर्थ संस्करण ।

सूचना सार

पुस्तकालयों के पते

'हिन्दी प्रकाशक' के कार्यालय में ऐसे पत्र प्रायः आते हैं जिनमें पुस्तकालयों की डायरेक्टरी के लिए जानकारी माँगी जाती है या कहा जाता है कि कार्यालय में ऐसी कोई सूची हो तो भेज दी जाय। खेद है कि ऐसी कोई डायरेक्टरी हमारी जानकारी में इस समय उपलब्ध नहीं है। कुछ पुस्तकालयों के पते हमें प्रयत्न करने पर मिले हैं, वे यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

एयर हैडक्वार्टर्स टेक० रेफ० इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

अजमेर म्युनिसिपल लाईब्रेरी, अजमेर।

अलवर्ट एडवर्ड इन्स्टीच्यूट एण्ड लाईब्रेरी, पूना।

आल इंडिया इन्स्टीच्यूट आफ हाईजिन एण्ड पब्लिक हैल्थ लाईब्रेरी, कलकत्ता-१२

आल इंडिया रेडियो लाईब्रेरी, मद्रास।

आल इंडिया रेडियो लाईब्रेरी, आकाशवाणी भवन, नई दिल्ली।

आल इंडिया रेडियो लाईब्रेरी, त्रिचिनापल्ली (मद्रास)।

अमरावती नगर वाचनालय, अमरावती (मध्यप्रदेश)

आपाराव भोलानाथ लाईब्रेरी, अहमदाबाद।

आरा नगर प्रचारिणी सभा लाईब्रेरी, आरा (बिहार)।

आशफिया स्टेट लाईब्रेरी, हैदराबाद, (आंध्र प्रदेश)

ए० एस० डाही लक्ष्मी लाईब्रेरी, नडियाद।

बाग बाजार रीडिंग लाईब्रेरी, बाग बाजार, कलकत्ता।

वाई जेरबाई वाडिया लाईब्रेरी, फरगुसन कालेज, पूना-४।

बांसबेरिया पब्लिक लाईब्रेरी, बांसबेरिया (बंगाल)।

बंगाल डाइरेक्टोरेट आफ इण्डस्ट्रीज लाईब्रेरी, कलकत्ता।

भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, पूना।

बिहार हितैषी लाईब्रेरी, पटना-८।

बीरबल साहनी इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, लखनऊ।

बिरला सेण्ट्रल लाईब्रेरी, पिलानी (राजस्थान)

बोनहुगली लाईब्रेरी, आलमबाजार, कलकत्ता-३५।

सेण्ट्रल बोर्ड आफ रेवेन्यू लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

सेण्ट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, लखनऊ।

सेण्ट्रल एजूकेशन लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

सेण्ट्रल जैन ओरियण्टल लाईब्रेरी, आरा (बिहार)

सेण्ट्रल लाईब्रेरी, ग्वालियर।

सेण्ट्रल पंजाब लाईब्रेरी, संगरूर (पंजाब)।

सेण्ट्रल रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, कसौली (पंजाब)।

सेण्ट्रल राइस रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, कटक (उड़ीसा)।

सेण्ट्रल सेक्रेटेरियेट लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

सेण्ट्रल टोबेको रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, राजमुन्द्री (मद्रास)

चन्द्रनगर पुस्तकागार, चन्द्रनगर (बंगाल)।

चित्रा तिरूनल लाईब्रेरी, त्रिवेन्द्रम (ट्रावनकोर)।

देशबन्धु पुस्तकालय, मथुरा (उत्तरप्रदेश)।

ठाकुरजा पब्लिक लाईब्रेरी, कलकत्ता-३१।

डाईरेक्टोरेट जनरल आफ हेल्थ सरविसेज लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

डी० एस० जनरल लाईब्रेरी, धोलिया पूर्वी खानदेश।

द्वारिकादास लाईब्रेरी, शिमला (पंजाब)।

फ्रेण्डस् यूनियन क्लब लाईब्रेरी, हावड़ा (पश्चिम बंगाल)।

गनेश मुफ्त वाचनालय एण्ड ग्रन्थालय, पूना।

गया प्रसाद लाईब्रेरी एण्ड रीडिंग रूम, कानपुर (उत्तरप्रदेश)।

जनरल लाईब्रेरी, बेलगाँव (महाराष्ट्र)।

जियोलोजिकल सरवे आफ इंडिया लाईब्रेरी, कलकत्ता-१३।

गोपाल राव पब्लिक लाईब्रेरी, कुम्भकोणम् (मद्रास)।

गवर्नमेण्ट कर्माशियल इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, कलकत्ता।

गवर्नमेण्ट लाईब्रेरी, जूनागढ़ (सौराष्ट्र)।

गवर्नमेण्ट पब्लिक लाईब्रेरी, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)।

गुजरात विद्यासभा लाईब्रेरी, अहमदाबाद।

हाल आफ थियोसोफी लाईब्रेरी, मदुरा।

हंसराज लाइब्रेरी, अम्बाला (पंजाब)।

हारवे लाईब्रेरी, मदुरा (मद्रास)।

हेमाभाई इस्टीच्यूट लाईब्रेरी, अहमदाबाद।

हाईकोर्ट लाईब्रेरी, मद्रास।

हिन्दी संग्रहालय लाईब्रेरी, इलाहाबाद।

हिन्दी वाचनालय, इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)।

हैदरे सरकुलेटिंग लाईब्रेरी, हैदराबाद।

इंडियन कौंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

इंडियन कौंसिल आफ मैडिकल रिसर्च लाईब्रेरी, कसौली (पंजाब)।

इंडियन डोगी रिसर्च इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, बंगलौर (मैसूर)।

इन्दौर जनरल लाईब्रेरी, इन्दौर (मध्य भारत)

जे० बी० पारिट फ्री लाईब्रेरी, बिलीमोरिया (बम्बई)।

जे० बी० पारिट रीडिंग रूम एण्ड लाईब्रेरी, दादर (बम्बई)।

जज्स लाईब्रेरी, पटना।

कला भवन लाईब्रेरी, बड़ौदा।

कमलाबाई वी० निम्बाकर पुस्तकालय, खार (बम्बई)।

काराजान सार्वजनिक पुस्तकालय, मिथागाम (बम्बई)।

करनाटक ग्रन्थालय, धारवाड़।

कारवीर नगर वाचन मंदिर, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)।

करवार जनरल लाईब्रेरी, करवार (बम्बई)।

किग्गइपुर जार्ज ५ सिलवर जुबली लाईब्रेरी, बीकानेर।

कोन्नगढ़ पब्लिक लाईब्रेरी, एण्ड फ्री रीडिंगरूम, कोन्नगढ़ (पश्चिम बंगाल)।

कृष्णराजेन्द्रा डिस्ट्रिक्ट लाईब्रेरी एंड रीडिंगरूम, चितलदुर्ग (मैसूर)।

कृष्णराजेन्द्र लाईब्रेरी, तुमकुर (मैसूर)।

लंग लाईब्रेरी, राजकोट (सौराष्ट्र)।

लक्ष्मीचन्द सुन्दरजी लाईब्रेरी, सीधापुर (बम्बई)।

लोकमान्य वाचनालय, अरवी (मध्यप्रदेश)।

लैटन लाईब्रेरी, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

माधव मैमोरियल लाईब्रेरी, सलकिया (बंगाल)।

मगनलाल चुन्नीलाल हँसौती हिन्दू पुस्तकालय अंकेश्वर (बम्बई)।

महाराजा गजपतिराव हिन्दू रीडिंगरूम लाईब्रेरी, विसाख (मद्रास)।

महाराष्ट्र ग्रन्थालय, पूना।

महात्मा खुशीराम पब्लिक लाईब्रेरी एंड रीडिंगरूम, देहरादून (उत्तरप्रदेश)।

महेश्वर पब्लिक लाईब्रेरी, पटना।

महिलामंडल लाईब्रेरी, उदयपुर।

मैट्रोलोजिकल औफिस लाईब्रेरी, नई दिल्ली।

नव साक्षर साहित्य की ग्यारहवीं पुरस्कार प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने नव-साक्षरों के लिए पुस्तकों की ग्यारहवीं पुरस्कार प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए लेखकों और प्रकाशकों को आमंत्रित किया है। प्रतियोगिता सम्बन्धी विवरण केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के एस० डब्ल्यू० २ अनुभाग, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। प्रतियोगिता के लिए पुस्तक या पाण्डुलिपि ३१ अगस्त, १९६४ तक पहुंच जानी चाहिए।

विदेशों में शिक्षा सुविधाएं : त्रैमासिक पत्रिका

शिक्षा मंत्रालय देश और विदेशों में शिक्षा की सुविधाओं की जानकारी देने के लिए तिमाही पुस्तिका प्रकाशित करने लगा है। पुस्तिका का दूसरा अंक हाल में प्रकाशित हुआ है। इसमें उच्च शिक्षा के बारे में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं। पुस्तिका छात्र सूचना केन्द्रों और विश्वविद्यालयों से निःशुल्क मिल सकती है। जो लोग उच्च शिक्षा के विषय और संस्थाएं, विदेशों में रहने आदि की स्थिति, छात्रवृत्ति और अन्य जानकारी चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन

विप्लव कार्यालय लखनऊ के व्यवस्थापक सूचित करते हैं: "हमें ज्ञात हुआ है कि श्री कृष्णदास पोरवार नामक व्यक्ति, पता ३९।१० गोलघर, वाराणसी, हमारी संस्था विप्लव कार्यालय, लखनऊ के प्रतिनिधि के रूप से पुस्तक विक्रेताओं से व्यापार कर रहे हैं। यह केवल ३ जनवरी, १९६३ से ३० अप्रैल, १९६३ तक हमारे प्रतिनिधि थे। इसके पश्चात् उनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा। इन के ३० अप्रैल, १९६३ के बाद हमारे प्रतिनिधि के रूप में किसी कार्य के लिए हम उत्तरदायी न होंगे।"

जाली 'तितली' से बचें

भारती भंडार लीडर प्रेस, प्रयाग के व्यवस्थापक लिखते हैं कि—

कोई अपराधी मनोवृत्ति के सज्जन हमारी प्रकाशित पुस्तक 'तितली' जाली छापकर बेचने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी पुस्तकें खरीदना, दूकान में रखना और बेचना दण्डनीय अपराध है।

पुस्तक-विक्रेताओं से हमारा अनुरोध है कि वे इस अपराध को प्रश्रय न दें और खतरा मोल न लें। हम उन की सहूलियत के लिए अपने यहाँ की प्रामाणिक पुस्तक हस्ताक्षरित कर ग्राहकों को भेजेंगे। बिना हस्ताक्षरित पुस्तक बेचने वालों के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए हम बाध्य हैं।

पुस्तक विक्रेताओं का पंजिकरण

दिल्ली और नई दिल्ली के जो स्थापित पुस्तक विक्रेता शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन के द्वारा प्रकाशित विद्यालयों की पाठ्य पुस्तकों की बिक्री के लिए अधिकृत व्यापारी के नाते अपने को पंजीकृत कराने के इच्छुक हैं वे **पी० ए० स्वामीनाथन** प्रकाशन प्रवन्धक प्रकाशन शाखा: सिवल लाईन, नई दिल्ली–६ के पास पंजीकृत होने के लिए ८-६-१९६४ तक आवेदन करें। इस तिथि के बाद जो भी आवेदन रजिस्ट्रेशन के लिए आयेगा उस पर इस वर्ष के लिए विचार नहीं किया जायगा। माँग करने पर आवेदन प्रपत्र निःशुल्क प्राप्त हो सकता है।
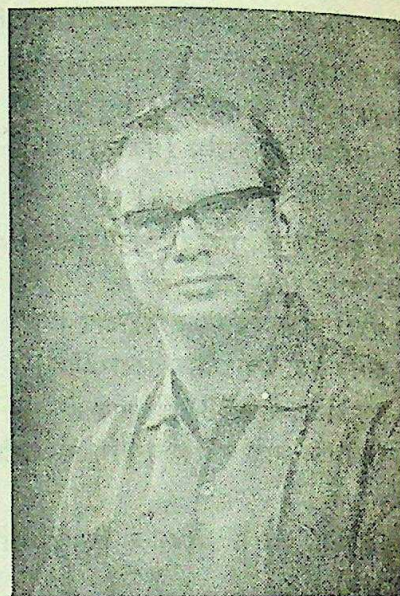
श्रीलंका बुकसेलर्स संघ के अध्यक्ष भारत में

सिलोन बुकसेलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री डब्लू० डी० ई० बैस्टिन यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से प्रदत्त स्कालरशिप पर अध्ययन भ्रमण के सिलसिले में भारत पधारे हैं। उन्होंने अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष श्री रामलाल पुरी से दिल्ली में भेंट की और संघ के संयुक्त मंत्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी से वाराणसी में भारतीय प्रकाशन के विषय पर वार्ता की। अपने दौरे में श्री बैस्टिन ने कलकत्ता में बंगाल पब्लिशर्स एसोसिएशन तथा बंगाल प्रिन्टर्स ऐसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सैलेन गुहा राय से भी भेंट की। बैस्टिन का पता निम्नलिखित है—

श्री डब्लू० डी० ई० बैस्टिन, डब्लू ई० बैस्टिन एन्ड कम्पनी, २३, कैनल रो, फोर्ट, पो० वा० नं० १० कोलम्बो-१

मथुरा पशु चिकित्सा विद्यालय में प्रवेश

पशु चिकित्सा और पशु-पालन महाविद्यालय मथुरा, उत्तर प्रदेश में बी० वी० एस० सी० तथा पशुपालन उपाधि पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए एक पूर्व-परीक्षा ली जायगी। यह परीक्षा मथुरा और गोरखपुर में आगामी जून मास में होगी।

SHAKSPERE
AND
HIS PREDECESSORS

by FREDERICK S. BOAS, O. B. E.

In spite of the ever-increasing mass of Shaksperean literature, there is, it seems, no English work dealing in some detail with all the dramatist's writings in their approximate chronological order. The present volume is an attempt in this direction. Professor Dowden's fine study of Shakspere's Mind and Art, to which Boas's debt is manifest, is, by virtue of its scope, most intimately concerned with the historical plays and the tragedies, and especially with those elements in them which help to reveal the personality of their author. What Boas has here aimed at is to discuss Shakspere's works in relation to their sources, to throw light on their technique and general import, and to bring out some of their points of contact with the literature of their own and earlier times. Hence in the opening chapters he has sketched the rise of the English drama, and has briefly indicated Shakspere's bond of kinship, not only with his immediate predecessors, but also with the mediaeval playwrights. And throughout the volume he has given greater prominence than has, it seems, been usual to those features in his works which link them to the pre-Renaissance period. But, as is always the case with consummate genius, Shakspere looks 'before' as well as 'after', and in discussing his important plays, Professor Boas has sought to interpret the dramatist's attitude towards some problems, which are often supposed to be distinctively modern.

Professor Boas has adopted the uniform spelling 'Shakspere'.

FIRST INDIAN EDITION Rs. 16·50

Rupa & Co.

Post Box No. 7808
15 Bankim Chatterjee Street
Calcutta-12

94 South Malaka
Allahabad-1

11 Oak Lane, Fort
Bombay-1

प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।

★ हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।

★ आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।

★ क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मँगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।
२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।
३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।
४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।
५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।
६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पांच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मंगाइये।

ग्रामपंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकलचरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य।

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान-भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी माँगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आपको सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाजार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ जुलाई, १९६४ अंक ८

श्री गुरुदत्त की

दो अनुपम रचनाएँ

१. धर्म, संस्कृति और राज्य

धर्म, संस्कृति और राज्य—तीनों की व्याख्या, विवेचना एवं परस्पर सम्बन्ध—विद्वान् लेखक की एक अनुपम रचना सिद्ध होगी।

एक पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय ग्रंथ मूल्य ८.००

२. गंगा की धारा

एक समय गिरिराज की अनुमति से देवता गंगा को देवलोक में ले गये थे और पीछे महाराज सगर, अंशुमान, दिलीप तथा भगीरथ की घोर तपस्या व परिश्रम से गंगा पुनः भारत भूमि पर आ सकी थी।

गंगा आयी, अनेकानेक महापुरुषों की घोर तपस्या, त्याग और परिश्रम से। कई पीढ़ियाँ लगीं, इस कार्य में। परन्तु ...... गंगा की लोक-पावनी धारा के अभाव में शोषित, त्रसित और दुःखी भारतीय जनता ने जब इसके आने का भास पाया तो क्या हुआ? इसी की कथा है यह पुस्तक। मुगल सम्राट् अकबर के काल में इस प्रयास में क्या हुआ?

प्रथम भाग है

गंगा की धारा

अकबर के राज्यारोहण काल में मूल्य १०.००

श्री गुरुदत्त की सम्पूर्ण रचनाओं के लिए हमें लिखें।

भारती-साहित्य-सदन

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ८ | जुलाई, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

नेहरूजी के स्मारक और पुस्तक समारोह

कहते हैं प्रातःस्मरणीय नेहरू जी का जन्म हिमालय के एक तपस्वी की जीवन-व्यापी साधना से हुआ था। आज इस कहानी की वास्तविकता को जांचने का कोई उपाय नहीं है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि पंडित जी जन्मजात योद्धा, स्वप्नदर्शी कवि और सत्य के साधक साहित्य-मनीषी थे। इसीलिए कानून की दलाली का व्यवसाय उन्हें आकर्षित नहीं कर पाया और वे देश की छटपटाती हुई आत्मा के बंधन तोड़ने के लिए संग्राम में कूद पड़े, और जब तक लड़ते रहे तब तक भारत स्वतन्त्र नहीं हो गया। स्वतन्त्र भारत में वे आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहे। साहित्य की सीधी सेवा के लिए उन्हें समय ही नहीं मिला। फिर भी वे जो कुछ दे गये हैं वह विश्व-साहित्य की अक्षय निधि है। नागपुर के लायंस क्लब ने पंडित जी के इसी स्वरूप की स्मृति में बाल-साहित्य से पूर्ण एक पुस्तकालय स्थापित करने का निश्चय किया है और उदयपुर के साहित्यकारों ने सोचा है कि नेहरू-जयन्ती पर उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जाय। ऐसे ही कुछ प्रयत्न अन्यत्र भी हो रहे हैं। आवश्यकता है कि पंडित जी के इस स्वरूप पर फूल चढ़ाने के लिए व्यापक एवं प्रभावशाली प्रयत्न किये जायें। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ इस दिशा में पहले से ही प्रयत्नशील है और नेहरू-जयन्ती को राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के रूप में मनाता चला आ रहा है। उसकी ओर से इस अवसर पर जनरुचि को साहित्य के प्रति जाग्रत करने के लिए प्रदर्शनियाँ और गोष्ठियाँ होती हैं तथा प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता अपनी-अपनी दूकानें सजाते हैं। खेद है कि सरकारी अधिकारियों ने इस समारोह को समुचित प्रोत्साहन नहीं दिया और जनता इसकी ओर पूरी तरह आकर्षित नहीं हो पाई। इन क्षेत्रों की ओर से समुचित प्रोत्साहन मिले और सरकारी अधिकारी तथा कर्मचारी प्रत्येक स्थान पर होने वाले समारोह में अनिवार्य रूप से उपस्थित हों एवं स्वयं पुस्तकें खरीदें तथा दूसरों को प्रेरणा दें तो समारोह अधिक व्यापक एवं प्रभावशाली रूप ग्रहण कर सकता है। प्रकाशक इस अवसर पर विशेष साहित्य प्रस्तुत कर सकते हैं और विक्रेता उसे घर-घर तक पहुँचाने की उपयोगी योजनाएँ बना सकते हैं।

नेहरू-जयन्ती में तीन-चार महीने का समय है। पारस्परिक परामर्श से अभी कुछ निश्चय कर लिये जायें तो उनको क्रियान्वित करने में कठिनाई न होगी। समारोह की समूची रूपरेखा भी परामर्श से ही निश्चित हो सकती है। आशा है कि सम्बन्धित महानुभाव हमारे इस निवेदन पर विचार करेंगे और पंडित जी के उस साहित्यिक स्वरूप को उजागर करने का पुण्य लेंगे जिसे राजनीति ने ढक लेने का प्रयास किया है। प्रकाशक संघ इस दिशा में प्रत्येक प्रकार से प्रस्तुत एवं सन्नद्ध मिलेगा।

राजस्थान में जाली पाठ्य-पुस्तकें

दिल्ली के दैनिक 'नवभारत' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार जयपुर के केन्द्रीय उपभोक्ता भंडार ने आरोप लगाया है कि—"राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों में एक करोड़ रु० से अधिक रकम की नकली पाठ्य-पुस्तकें बिकी हैं। ये पुस्तकें पहली से आठवीं कक्षा तक की थीं।" समाचार के विस्तार में कहा गया है: भंडार ने पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता और पूर्ति का एक विस्तृत विवरण तैयार किया है जिससे मालूम हुआ है कि "राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री कई मामलों में वस्तुस्थिति के विपरीत ९० प्रतिशत तक कम हुई है। साधारणतः वे ४० प्रतिशत कम बिकी हैं। सन् ६१-६२ में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या ३५ लाख थी। पाठ्य-पुस्तक मंडल ने केवल १६ लाख पुस्तकें बेचीं। शेष आवश्यकता नकली पुस्तकों से पूरी हुई। अवैध पुस्तकों की बिक्री का सहायक कारण यह रहा कि सरकारी पुस्तकों की कीमतें अधिक थीं।"

बीकानेर के साप्ताहिक 'सेनानी' ने इस आरोप की वास्तविकता में गंभीर संदेह प्रकट किया है। अपने एक अग्रलेख में उसने लिखा है: "हमारी जानकारी यह है कि नकली पाठ्य-पुस्तकों की कोई बिक्री राजस्थान में नहीं हुई है। राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री ९० प्रतिशत कम होने की बात में बिलकुल सच्चाई नहीं लगती है। सरकारी पुस्तकों की कीमतें अधिक नहीं कम हैं।" उसने यहाँ तक कह दिया है कि "भंडार के इस आरोप की तह में यह स्वार्थ हो सकता है कि पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री का समूचा कार्य व्यापारियों से छीन कर उसे दे दिया जाय।"

नकली या जाली पाठ्य-पुस्तकों के संबंध में अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ का दृष्टिकोण दिवालोक की भांति स्पष्ट है। अगस्त सन्' ६३ में इन्हीं पंक्तियों में जाली पुस्तकों के लिए प्रभावशाली कानून की आवश्यकता पर बल दिया गया है। बाद में संघ की ओर से एक पुस्तिका भी इसी सिलसिले में प्रकाशित हुई है। संघ उन सब प्रयत्नों में भरपूर सहयोग देने के लिए प्रस्तुत है जो पुस्तक-व्यवसाय की इस गंदगी को दूर करने के लिए किये जांय। इस दृष्टि से उपभोक्ता भंडार के आरोप को भी हम पर्याप्त महत्व देना चाहते हैं परन्तु 'सेनानी' के मंतव्य की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस सिलसिले में यह स्मरण करना भी शायद प्रासंगिक ही हो कि जोधपुर के श्री रामदत्त थानवी सितम्बर मास में इस बात पर रोष प्रकट कर चुके हैं कि पुस्तक-विक्रेताओं पर राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों की चोर बाजारी का आरोप लगाया जा रहा है। नारों के अद्भुत उपयोग भी आजकल आम हो गये हैं।

अच्छा हो कि इस मामले पर पूरी तरह विचार किया जाये। इसकी पूरी और निष्पक्ष जांच हो और उसका पूरा विवरण सामने आ जाय तो रोष का निदान और उपचार करने में अधिक आसानी होगी। वैसे ही कोई पग उठाया गया तो उसकी सफलता संदिग्ध ही रह जायेगी। ●

पढ़िये
पुस्तकें पढ़िये
हिन्दी की पुस्तकें खरीद कर पढ़िये !

पुस्तक और परिपाटी के प्रेमी नेहरूजी

श्री श्रीप्रकाश

१६२१ के आरम्भ में मैं उत्तर-प्रदेश (तब संयुक्त प्रान्त) की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का सचिव था। श्री जवाहरलालजी अध्यक्ष थे। इस सम्बन्ध में हमारा उनका बराबर सम्पर्क था। एक बार हम दोनों कांग्रेस के कार्य के लिए लखनऊ गये हुए थे। दोनों ही अपने मित्र और सहयोगी श्री मोहनलाल सक्सेना के यहाँ अमीनुद्दौला पार्क के मकान में ठहरे थे। उनकी पुस्तकों की आलमारी में जवाहरलालजी ने एक पुस्तक देखी जो उनकी ही थी और जिसे मोहनलालजी पढ़ने के लिए ले आये थे। वह पुस्तक ठीक प्रकार से नहीं रखी हुई थी। गन्दी हो रही थी। जवाहरलालजी ने उस पुस्तक को आलमारी पर से उठाया। उसको साफ किया और मोहनलालजी से क्रुद्ध होकर कहा कि "सुनो, मोहनलाल पुस्तक जीवित पदार्थ है, इसकी बहुत फिक्र रहनी चाहिए। इसके साथ इस तरह दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

यह छोटी-सी घटना कई बातों की प्रदर्शक है। एक तो इससे स्पष्ट होता है कि उन्हें पुस्तकों से कितना प्रेम था। दूसरा यह कि वे सबके साथ अच्छा व्यवहार करने पर बहुत जोर देते थे। केवल मनुष्यों के साथ ही नहीं, जन्तुओं के साथ उनके व्यवहार की कितनी ही गाथाएँ हैं। जिन पदार्थों को हम साधारणतः निर्जीव मानते हैं उन पर भी उनका बड़ा प्रेम रहता था। वृक्षों की रक्षा के लिए उनका बड़ा आग्रह था। पुस्तक ऐसी वस्तुओं से तो वे विशेष स्नेह रखते थे। विविध विषयों की पुस्तकों को बराबर पढ़ते रहते थे। सबको बड़ी फिकर से देखते थे। सभी वस्तुओं को सुव्यवस्थित रखना उनके लिए साधारण-सी बात थी। उनकी सब चीजें स्वच्छ रहती थीं और ठीक स्थान पर रखी जाती थीं। वे बहुत-सा काम स्वयं करते थे। ऐसा कोई न समझे कि वे धनी थे, इस कारण ऐसा कर सकते थे।

टेबुल स्वच्छ रखते थे

मुझे यह देखकर सदा आश्चर्य होता था कि उनका टेबुल ऐसा स्वच्छ कैसे रहता था। मैंने एक बार उनसे कहा भी कि 'तुमको जितने पत्रादि से काम रहता है उससे कम ही मुझे रहता है। पर मेरे टेबुल पर तो कागजों का अंबार सदा लगा रहता है। अपने घर में अन्य सब स्थान तो मैं साफ और सुव्यवस्थित रख सकता हूं पर अपने टेबुल से हार जाता हूँ। तुम कैसे उसे इस प्रकार रख सकते हो।' उन्होंने कहा—'मेरे सब पत्र भिन्न-भिन्न बक्सों में भरे रहते हैं।' प्रत्येक विभाग के पत्रों के लिए उनका अलग-अलग 'डिस्पैच बक्स' रहता था, जिसमें उनके सब कागज रखे जाते थे। भिन्न-भिन्न विषयों के कागज वे फौरन ही भिन्न-भिन्न उपयुक्त मिसिलों में रख देते थे। गन्दा टेबुल और उस पर रखे हुए अव्यवस्थित पत्रादि उन्हें बहुत नापसन्द थे।

अपने घर पर या राज्यपाल की अवस्था में अपने दफतर के कमरे में मैं उनका आना पसन्द न करता था। एक समय की बात है, बम्बई में मैं राज्यपाल था। वे राजभवन में ठहरे हुए थे। एक दिन तीसरे पहर वे एकाएक मेरे दफतर में आये। चाय का वक्त नहीं हुआ था, नहीं तो मैं स्वयं ही चाय के लिए उनके पास चला जाता। किसी कारण उन्हें उस दिन जल्दी चाय की इच्छा हुई और उन्होंने मेरे दफतर में आकर कहा—'प्रकाश चाय मँगाओ।' मैं टेबुल पर काम कर रहा था। चारों तरफ पत्रादि लदे थे। उन्होंने कहा—'क्या तुम्हें इतना काम करना पड़ता है? इतने मिसिलों को तुम देखते हो?' मैंने कहा—'जितना काम तुम करते हो उससे तो यह बहुत कम है। खेद है कि मैं अपने टेबुल को तुम्हारी तरह साफ नहीं रख सकता। मुझे तुमसे शिकायत है कि एकाएक तुमने मुझे इस अवस्था में देखा।' खैर, अपनी कुर्सी से मैंने उठ कर बगल के सोफे पर उन्हें बैठाया और खुद बैठा। चाय आयी और इधर-उधर की बातें होती रहीं।

१९२९ में हमारे संयुक्त प्रान्त अथवा उत्तर प्रदेश का प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन फर्रुखाबाद में हुआ। श्री गणेशशंकर विद्यार्थी उसके अध्यक्ष थे। सम्मेलन के बाद हम सब साथ ही कानपुर आये और विद्यार्थी जी के पास गये। हम दोनों को अपने दैनिक 'प्रताप' पत्र के दफतर में छोड़ कर विद्यार्थी जी भोजन के प्रबन्ध के लिए बगल में अपने घर गये। विद्यार्थी जी के टेबुल की अवर्णनीय दुर्व्यवस्था थी। विद्यार्थी जी की अनुपस्थिति में जवाहरलालजी ने उनके टेबुल को पूर्णरूप से सुव्यवस्थित कर दिया, कागज, पैंसिल, कलम, घड़ी, रोशनाई आदि सब को तरतीबवार लगाया। उनके पत्रों और मिसिलों को समुचित रूप से सहेज कर टेबुल पर उचित स्थान पर रखा। थोड़ी देर के बाद जब विद्यार्थी जी आये तो उनको टेबुल की परिवर्तित दशा देखकर असमंजस हुआ। जिस प्रकार से गोस्वामी तुलसीदास जी को जो दुःख हुआ था कि चोरों से रक्षा करने के लिए रामचन्द्र जी को उनके यहाँ पहरेदारी करनी पड़ती थी, उसी प्रकार गणेश जी को भी खेद हुआ कि उनकी लापरवाही के कारण जवाहरलालजी को इतना 'कष्ट' उठाना पड़ा।

यह घटना इस बात को प्रमाणित करती है कि जवाहरलालजी में किसी प्रकारका आलस्य नहीं था—न शारीरिक न मानसिक। प्रमाद उनमें किसी भी दशा में नहीं पाया जाता था। कहीं भी कुछ गड़बड़ी देखते थे तो उसे स्वयं ठीक करने को तैयार हो जाते थे। किसी भी प्रकार की दुर्व्यवस्था उनको अत्यन्त नापसन्द थी। बहुत साफ-सुथरे वे स्वयं थे और सबका ही वैसा रहना पसन्द करते थे। उन्हें बहुत कष्ट होता था जब किसी को लापरवाही से वस्त्र आदि पहने देखते थे। पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त से अप्रसन्न होते और उन्हें नेक सलाह देते मैंने देखा है। वे स्वयं समय का बड़ा पालन करते थे और जो नहीं करता था उससे वे दुखी रहते थे। वे बड़े जिम्मेदार आदमी थे। चाहे छोटी बात हो चाहे बड़ी जो कहते थे, उसे अवश्य करते थे।

(दैनिक 'आज' से आभार सहित)

●

शिक्षा सलाहकार मण्डल की अगली बैठक

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मण्डल की अगली बैठक ८ से १२ अक्टूबर, १९६४ तक बंगलौर में होगी।

लोकप्रिय वैज्ञानिक पुस्तकों की अनुवाद-योजना

श्री कृष्णानन्द गुप्त

प्रवीण पत्रकार और यशस्वी साहित्यकार श्री कृष्णानन्द गुप्त के ये सुलझे हुए और रचनात्मक विचार इस विश्वास के साथ प्रकाशित किये जा रहे हैं कि संबंधित क्षेत्र इन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे। निःसंदेह भारतीय जनता के लिए वही साहित्य उपयोगी होगा जो उसकी प्रकृति और स्थिति की मांग पूरी करता हो। विदेशों में प्रस्तुत ज्ञानराशि का मंथन इस दिशा में अधिक लाभदायक हो सकता है। उसका कोरा अनुवाद यह परिणाम नहीं दे सकता।--सं०

अभी यहां आने पर मुझे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से 'प्रकाशकों के सहयोग से अनुवाद प्रकाशन की योजना' की एक प्रति मिली। वह तो मुझे बड़ी अव्यावहारिक लगी। अव्वल तो सामान्य ज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों के लिए अनुवाद का अत्यधिक आश्रय नहीं लिया जाना चाहिए। इस प्रकार की पुस्तकें तो भारतीय पाठकों के सीमित ज्ञान एवं भारतीय संस्कृति और परिस्थितियों का ध्यान रखकर स्वतन्त्र रूप से ही तैयार करवाई जानी चाहिएं। पुस्तक चाहे जितनी अच्छी हो परन्तु उसका मक्षिका स्थाने मक्षिकाः अनुवाद तो कदापि नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त सरकारी शासनतन्त्र जिस मंथर गति से चलता है उसको देखते हुए योजना के अनुसार किसी एक प्रकाशक द्वारा कोई एक पुस्तक शायद एक वर्ष में भी छप कर तैयार नहीं हो सकेगी।

सरकार प्रकाशित पुस्तक की केवल एक हजार प्रतियाँ खरीदेगी और उस पर २५ प्रतिशत कमीशन भी चाहेगी। इसमें तो मैं समझता हूं कि प्रकाशक का प्रारम्भिक पूरा खर्चा (छपाई, लेखक या अनुवादक का पारिश्रमिक) भी नहीं निकलेगा। सरकार जब इतने बन्धन प्रकाशकों पर लगा रही है तब योजना में कुछ आकर्षण भी उनके लिए होना चाहिए। अन्यथा ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो जानबूझकर इतनी झंझट मोल ले। पुस्तक की कम-से-कम दो हजार प्रतियां तो खरीदी ही जानी चाहिए।

वास्तव में निदेशालय को तो एक सुयोग्य पथ-प्रदर्शक के रूप में ही काम करना चाहिए और प्रकाशकों के मार्ग में जो कठिनाइयां हों उन्हें सुलझाने का यत्न करना चाहिएं। मेरी तुच्छ सम्मति में निदेशालय के कार्य निम्नलिखित होने चाहिएं :

१. प्रकाशकों के सामने वह प्रकाशन की कोई एक सुनिश्चित योजना रखे।
२. उन्हें अनुवाद योग्य अच्छी पुस्तकों के नाम सुझाये।
३. उन पुस्तकों के कापी राइट-प्राप्त करने में प्रकाशकों की सहायता करे।
४. उन्हें लेखकों के नाम सुझाये। परन्तु इस विषय में प्रकाशकों पर कोई बन्धन न डाले।
५. लेखकों और प्रकाशकों के उपयोग के लिए सामान्य ज्ञान और सहज विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों की एक बढ़िया लाईब्रेरी वह रखे।
६. वह जिस तरह की भाषा और शैली में पुस्तकें लिखवाना चाहता हो स्वयं उसके नमूने तैयार करे।
७. दो-एक ऐसे सुयोग्य व्यक्ति अपने यहाँ रखे जो इस भाषा और शैली के विषय में नये लेखकों का पथ-प्रदर्शन कर सकें।
८. प्रकाशकों पर वह किसी प्रकार का कोई बंधन न लगाये। उन्हें बिल्कुल स्वतन्त्र छोड़ दे। उसके सुझावों के अनुसार जो प्रकाशक काम करें उनके प्रकाशनों को वह प्रश्रय दे और उन्हें उचित संख्या में खरीदता रहे। निस्संदेह सभी प्रकाशकों की सभी पुस्तकों को खरीदने के लिए वह बाध्य नहीं होगा।

कुछ दिन पहले ऐसी पुस्तकों के अनुवाद की एक योजना सोची थी, वह आवश्यक संशोधन के बाद यहां प्रस्तुत करता हूँ।

सरल सुबोध और रोचक शैली में लिखी गई ऐसी छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित की जायें जिनसे हिन्दी पाठकों को विविध विषयों का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त हों सके। यह कार्य एक व्यवस्थित ढंग से किया जाना चाहिए। एक

वर्ष में नहीं तो पहले दो वर्ष में कम-से-कम १०० पुस्तकें अवश्य प्रकाशित की जायें। ऐसी प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ संख्या १५० से २०० क्राउन अठ-पेजी हो। आवश्यकतानुसार पुस्तकें सचित्र एवं अंग्रेजी पुस्तकों की पद्धति की भाँति विषयानुक्रमणिका, शब्दानुक्रमणिका आदि से सुसज्जित हों। जहां तक हो वे अधिकारी व्यक्तियों द्वारा मौलिक लिखाई जायें या अंग्रेजी के प्रसिद्ध ग्रन्थों के आधार पर तैयार कराई जायें। यह सब होते हुए भी प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १.५० से अधिक नहीं होना चाहिए।

सुविधा की दृष्टि से इस प्रकाशन को चार समूहों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम दो समूहों की पुस्तकें बालकों तथा साधारण पाठकों की आवश्यकता का ध्यान रखकर लिखी जायें। भाषा सरल हो। पारिभाषिक शब्दों का कम-से-कम प्रयोग किया जावे। मन बहलाव के साथ पढ़ने वालों के ज्ञान का क्षेत्र भी विस्तृत हो। अंग्रेजी की सातवीं-आठवीं कक्षा की योग्यता रखने वाले विद्यार्थी तथा कम पढ़ी-लिखी जनता इन पुस्तकों के विषय को अपने मस्तिष्क पर किसी प्रकार का अधिक जोर दिए बिना समझ सके, यह उद्देश्य हो। अंग्रेजी ग्रन्थों के आधार पर लिखी गई पुस्तकों का दृष्टिकोण पूर्ण भारतीय हो और यथास्थान उनमें भारतीय उदाहरण ही दिये जायें, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इन चार समूहों की रूपरेखा इस प्रकार सोचता हूँ—

प्रथम समूह—इस समूह में संसार के प्राचीन इतिहास, कला, पुरातत्व, साहित्य, सभ्यता और समाज के विकास तथा मानव जाति की क्रमिक उन्नति का ज्ञान कथा-कहानी के रूप में पाठकों को इस प्रकार कराया जाये कि आगे चलकर इन विषयों के गम्भीर अध्ययन की रुचि उनमें जाग्रत हो। कथा-कहानी से हमारा आशय कल्पना-प्रसूत कहानियों से नहीं है, बल्कि उस लेखन प्रणाली से है जिससे पाठकों का मन किताब पढ़ने में लगे। जो कुछ भी इस समूह में लिखा जायेगा वह अपने विषय के मान्य सिद्धान्तों के अनुरूप हो। ये किताबें संसार के प्राचीन इतिहास और सभ्यता के विकास से सम्बन्ध रखने वाली एक प्रकार की प्रारम्भिक पोथियाँ होंगी। भारत, चीन, जापान, स्याम, कम्बोडिया, जावा, सुमात्रा तथा रोम, ग्रीस, बेबीलोनिया, असीरिया, मिस्र आदि देशों की प्राचीन संस्कृति का सजीव और सच्चा वर्णन तो हो ही, साथ ही विभिन्न देशों की सृष्टयुत्पत्ति की कहानियाँ, देवी-देवताओं की कथाएं, किंवदन्तियां, पौराणिक काव्यों और नाटकों के आख्यान, जिनका कि मानव संस्कृति और ज्ञान के विकास में एक विशेष स्थान रहा है, सम्मिलित रहें।

दूसरा समूह—यह समूह विविध वैज्ञानिक विषयों से सम्बन्ध रखे। इसमें सौर जगत की उत्पत्ति, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, नक्षत्रों आदि का विवरण, पृथ्वी की बनावट, जीवों का क्रमिक विकास, मानव की प्राचीनता और उसकी उत्पत्ति, प्राचीन सामाजिक संस्थाएं, पृथ्वी तल पर मनुष्य की विभिन्न जातियों का विकास और फैलाव, भाषा का विकास, नाना प्रकार के धार्मिक विश्वासों और देवी-देवताओं की उत्पत्ति, वृद्धि और सभ्यता के विकास में उनका हाथ, तथा मानव की अतीत से लेकर वर्तमान तक की बौद्धिक, आर्थिक और सामाजिक उन्नति आदि विषयक पुस्तकें प्रकाशित हों।

इन दोनों ही समूहों की पुस्तकों का आदर्श और आधार अंग्रेजी की कुछ निम्नलिखित पुस्तकें हों :

1. J.A. Hammerton द्वारा सम्पादित Universal History of the World की प्रथम जिल्द जिसमें सृष्टि तत्व एवं मानव समाज के प्रारम्भिक विकास और इतिहास के विषय में J.H. Jeans, Sir Arthur Keith, H.J. Fleure, R.R. Marett, G. Eliot Smith, Harold Laski, Leonard Woolley, जैसे उद्भट विद्वानों के पुस्तकाकार निबन्ध समाविष्ट हैं।

2. Myths and Legends नाम की प्रसिद्ध सीरीज़। तथा

3. Men of the Dawn (Dorothy Darison), Progress and Archaeology (Gordon Childe), In the Beginnong (Elliot Smith), The Growth of Civilization, The origin of Magic and Religion, Goods and Men (W.J.Perry), The Diffusion

of Culture (Elliot Smith), The Races of Men, The Wanderings of Peoples(A.C. Haddon), The Races of Europe (W.Z. Repley) The Peoples of Asia (L.H. Dudley) आदि ग्रन्थ होंगे। इनसे उन विद्वान लेखकों और साहित्य-सेवियों पर हमारी आवश्यकता भी प्रकट हो जायेगी, जिनके सहयोग के हम भविष्य में अभिलाषी हैं।

तीसरा समूह—तीसरे समूह में मेकमिलन एण्ड को० द्वारा प्रकाशित साइन्स प्राइमर की तरह की ज्योतिष, गणित, रसायनशास्त्र, भौतिक विज्ञान, तर्कशास्त्र, राजनीति, प्राणिशास्त्र आदि विषयों पर छोटी-छोटी अधिक ठोस और गम्भीर पुस्तकें प्रकाशित होंगी। प्रत्येक विज्ञान की खोज का इतिहास, प्राचीन काल के समाज में उसकी स्थिति और उपयोगिता एवं उसकी वर्तमान कालीन प्रगति तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और आविष्कारकों की जीवनियाँ, प्राचीन भारत में रसायन शास्त्र, ज्योतिष, गणित आदि की उन्नति, भारत के जीव-जन्तु, वनस्पति, कीड़े-मकोड़े तथा आधुनिक समय की विविध राजनीतिक संस्थाओं और सिद्धान्तों का वर्णन आदि भी इसी के अन्तर्गत होगा। इस प्रकार की सब पुस्तकों का आदर्श और आधार The Peoples' Books, The Vanguard Series. The World of Youth Library, Thinker's Library, The Useful Knowledge Library, Peoples Library, Benn's Six-penny Library, The Home University Library आदि ग्रन्थमालाओं में प्रकाशित विविध ग्रन्थ रहें। किन्तु वे सब भारतीय पाठकों की आवश्यकता और आकांक्षा का पूरा ध्यान रखकर ही लिखवाये जायें।

चौथा समूह—इस समूह में अंग्रेजी के उन मौलिक ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित होंगे जो कि बीसवीं सदी की वैज्ञानिक विचारधारा से सम्बन्ध रखते हैं और जिनका हमारी वर्तमान सभ्यता और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जैसे डार्विन, हर्बर्ट स्पेन्सर, हक्सले आदि के कुछ प्रमुख ग्रन्थ। बर्नार्ड शा, इबसन, अनातोले फ्रांस, अप्टन सिनक्लेयर, स्टीफन ज्विग जैसे साहित्यकारों और विचारकों की रचनाएं भी इसमें सम्मिलित होंगी।

पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय विषयों पर गत १०० वर्ष के भीतर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। हिन्दी पाठकों को उनका बहुत कम पता है। इस चौथे समूह के एक खंड में इन ग्रन्थों के यथावश्यक संक्षिप्त या पूरे अनुवाद भी प्रकाशित किये जायें।

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध
आचार्य चतुरसेन ९.००
अतीत के चित्र
मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर
(मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची ,, ३.५०
छोटी बहू ,, ३.५०
चातकी ,, ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनीकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
कान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
हार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
युग देवता यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द' ४.००
रायसीना की लपटें
भगवद्दत्त शिशु ३.००
नर्तकी रूपकोशा (प्रथम भाग)
अनु० मनोहरलाल चौहान ४.५०
नर्तकी रूपकोशा (द्वितीय भाग)
अनु० मनोहरलाल चौहान ४.००
प्राणों की प्यास मधुलिका ३.५०

कहानी-संग्रह

कुछ पैसे रामशरण शर्मा १.२५
मलयानिल निलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.५०

नाटक-संग्रह

नीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियाँ और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा
स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००
एक युग : एक प्रतीक
देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफ्शे का फूल
खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल
श्री जी०पी० श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात
देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
गांधी गीता प्रो० इन्द्र २.००
अपना इलाज आप खुद कीजिए
आचार्य चतुरसेन २.५०
नई जिन्दगी
डॉ०लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल-साहित्य

बड़ों का बचपन
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)
विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ
विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी
विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.००
(दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.५०
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
गुब्बारा दद्दाजी १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
राधाकृष्ण (भारत सरकार
द्वारा पुरस्कृत) १.२५
मुगल बादशाहों की सनक
आचार्य चतुरसेन १.७५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज ,, २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा
आ० सुन्दरसिंह ०.६५
तीन नकटे यादवेन्द्र शर्मा १.२५
ललारी और नाई
हरजसराय जैन १.५०
कलन्दरों की आत्म-कथा
हरजसराय जैन १.५०
अनजाने देश में ओमप्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १)
दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) ,, १.५०
बुढ़ियावाले चाचाजी ,, १.५०

भारत-परिचय-माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र ,, १.७५
असम ,, १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायणअग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलालमहतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर ,, १.७५
गुजरात मनहरलाल १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मण्डी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

सम्पादक के नाम पत्र

'नये प्रकाशन'!

प्रिय महोदय,

'नये प्रकाशन' के अन्तर्गत जो पुस्तकें सूची में प्रकाशित होती हैं उनका कोई आधार नहीं होता।

कृपया इन बातों के लिए सावधान रहें और जहाँ तक सम्भव हो नये प्रकाशन में उन्हीं पुस्तकों को प्रकाशित करें जिनको बाजार में प्रकाशक द्वारा खरीद के लिए प्रस्तुत कर दिया गया हो।

आशा है आप मेरा यह पत्र हिन्दी प्रकाशक में प्रकाशित करेंगे।

भवदीय
र० शरण

नये प्रकाशनों की सूचनाएँ प्रस्तुत करने में हम यथासंभव सावधान रहते हैं। वैसे हमारा आधार प्रकाशक बन्धु ही हैं। उनसे कई बार सतर्क हो कर सूचनाएँ भेजने के निवेदन भी कर चुके हैं। श्री रघुवीरशरण बंसल के इस पत्र की मार्फत अपना निवेदन हम फिर दुहराते हैं।

श्री बसंलजी ने इस पत्र में अपनी पुष्टि में कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं। उनको निकाल देने का अधिकार हमें नहीं था। बंसलजी की सदाशयता के भरोसे पर ही हमने यह अनधिकार चेष्टा की है। भविष्य में हम ऐसा न कर सकेंगे और उदाहरण भी पाठकों के सामने रख देने के लिए विवश हो जायेंगे। विश्वास है कि प्रकाशक बंधुओं की सतर्कता अब ऐसी शिकायत के लिए मौका ही न आने देगी। सं०

NOBEL PRIZE WINNERS

IN PAPER-BACKS

Title		Author	Price
The Prodigy	....	by Hermann Hesse	Rs. 3.00
The Transposed Heads & the Black Swan (in one volume)	...	by Thomas Mann	Rs. 3.50
Growth of the Soil	...	by Knut Hamssun	Rs. 5.00
Hunger	...	by Knut Hamsun	Rs. 2.50
Pan	....	by Knut Hamsun	Rs. 2.50
The Happy Warriors	....	by Halldor Laxness	Rs. 3.00
Second Thoughts	...	by Francois Mauriac	Rs. 2.50

Rupa & Co.

Publishers :

15 Bankim Chatterjee Street, Calcutta-12

94 South Malaka, Allahabad-1

11 Oak Lane, Fort, Bombay-1

संघ समाचार

भारत सरकार के उपशिक्षा मंत्री के नाम पत्र

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष ने निम्नलिखित पत्र संघ के वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्तावों की प्रतिलिपि के साथ भारत के उपशिक्षा मन्त्री श्री भक्तदर्शन को लिखा है :

मान्यवर,

इस पत्र के साथ अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के ६वें अधिवेशन में स्वीकृत कुछ प्रस्तावों की प्रतिलिपियां आपकी सेवा में भेजी जा रही हैं।

१. पहला प्रस्ताव कागज़ और गत्ते के निरन्तर बढ़ते हुए मूल्यों के बारे में चिन्ता प्रकट करता है। इस बार के वित्तीय बजट में भी अच्छे क़िस्म के कागज़ और सामान्य गत्ते पर भी काफी उत्पादन-शुल्क लगाया गया है। परिणाम यह हुआ है कि प्रकाशकों को विवश होकर पुस्तकों का मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है। हम अनेक पुस्तकों के उदाहरण आपके सामने रख सकते हैं जिनके पिछले वर्षों से लगातार नये-नये संस्करण प्रकाशित होते रहे हैं, यह सिद्ध करने के लिए कि किस प्रकार नये संस्करणों का लागत-व्यय बढ़ता जा रहा है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि भारत सरकार कोई ऐसी योजना बनाये जिसके फलस्वरूप ऐसे कागज और गत्ते पर उत्पादन-शुल्क माफ़ किया जाय जिसका प्रकाशकों द्वारा पुस्तकों के मुद्रण में उपयोग होता हो।

पुस्तकें देश में ज्ञान और शिक्षा के प्रचार का महत्वपूर्ण साधन हैं और यदि उनका मूल्य, कागज़ और गत्ते के बढ़ते हुए मूल्यों के कारण, बढ़ता गया तो आम शहरी जनता भी उन्हें नहीं खरीद सकेगी। पहले ही वह आवश्यकता की अन्य वस्तुओं के बढ़ते हुए मूल्यों से आक्रान्त है और पुस्तकों को अपनी आवश्यकता की वस्तुओं में नहीं गिनती। पुस्तकोंके बढ़ते हुए मूल्यों के कारण वह उनसे और भी विमुख हो जायेगी।

आपसे प्रार्थना है कि इस सम्बन्ध में भारत सरकार के वित्त मन्त्रालय से विचार विनिमय अवश्य करें। इस सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञापन की आवश्यकता हो तो संघ उसे आपके सामने प्रस्तुत कर सकता है।

२. दूसरे प्रस्ताव का विषय भी बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रस्ताव में कुछ विदेशी सरकारों द्वारा अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन में दी जाने वाली आर्थिक सहायता पर चिन्ता प्रकट की गई है। देश की राज्य-भाषा का स्थान हिन्दी को लेना है और हिन्दी को ही उत्तरोत्तर विश्व-विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में समुचित स्थान मिलना है। लेकिन अमरीका और इंग्लैण्ड की सरकारें अंग्रेज़ी में छपी पाठ्य-पुस्तकों को हिन्दुस्तान में काफी सस्ते मूल्यों पर उपलब्ध करने में आर्थिक सहायता दे रही हैं। जिन कम मूल्यों पर अंग्रेज़ी की अनेक पाठ्य-पुस्तकें मिलने लगी हैं उन मूल्यों पर तो भारत में छपी हुई वही पाठ्य-पुस्तकें भी उपलब्ध नहीं हो सकतीं। जब विद्यार्थियों को हिन्दी में तुलना में वैसी पाठ्य-पुस्तकें काफी अधिक मूल्य पर मिलेंगी तो वे अंग्रेज़ी की पाठ्य-पुस्तकों को ही खरीदना पसन्द करेंगे और इस प्रकार हिन्दी के प्रचार-प्रसार की सरकारी नीति के कार्यान्वयन में बाधा उपस्थित होगी। इस प्रस्ताव में भारत सरकार से अनुरोध किया गया है कि हिन्दी में भी सस्ते मूल्य पर पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध करने की कोई नीति वह बनाये और यह भी कि वह विदेशी सरकारों से यह कहे कि यदि उनका उद्देश्य भारत के विद्यार्थियों को सस्ती पुस्तकें उपलब्ध करना ही है तो वह हिन्दी में इसी प्रकार की सस्ती पुस्तकें उपलब्ध करने में सहायक हो।

यदि हिन्दी क्षेत्र के विद्यार्थियों को इन दामों में पाठ्य-पुस्तकें सुलभ होना कठिन हो गया, जैसा कि उत्तरोत्तर हो रहा है, तो हिन्दी के विस्तार में काफी अंकुश लग जायेगा। इस दृष्टिकोण से पाठ्य-पुस्तकों के क्षेत्र में विदेशी

सहायता के पुनरावलोकन की आवश्यकता की ओर यह प्रस्ताव भारत सरकार का ध्यान आकृष्ट करता है।

३. तीसरे प्रस्ताव में देश में पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति और क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला गया है। प्रकाशक संघ इस बात का विरोध नहीं करता कि बेहतर पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक हो तो वह न किया जाये। लेकिन प्रकाशक संघ का यह निश्चित मन्तव्य है कि पांडुलिपियाँ तैयार हो जाने के बाद उनके मुद्रण और वितरण का दायित्व प्रकाशकों पर अथवा प्रकाशकीय सहकारों पर डालना चाहिए क्योंकि उन्हें इस क्षेत्र में विशेष निपुणता प्राप्त होती है। राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों पर जितनी भी टीका-टिप्पणी हुई है वह मुख्यतः उनके वितरण और मुद्रण के पक्षों को लेकर ही है। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि सरकारी विभागों के जो अधिकारी मुद्रण और वितरण का कार्य देखते हैं उनकी नियुक्ति सम्बन्धित निपुणताओं को देख-जाँच करके नहीं की गई होती। मुद्रण और वितरण का काम अपने में एक विशिष्ट कार्य है और उसी ओर अपना सहयोग देने के लिए प्रकाशक पूरी तरह तैयार हैं। प्रकाशक इस बात के लिए भी तैयार हैं कि वे लाभनिरपेक्ष प्रकाशकीय सहकार बनायें जिन्हें पाठ्य-पुस्तकों के वितरण और मुद्रण का कार्य सौंपा जाय। ऐसे सहकार प्रत्येक राज्य में बनाये जा सकते हैं और यह भी आवश्यक नहीं कि एक राज्य में केवल एक ही सहकार इस काम को अपने जिम्मे ले।

आपसे अनुरोध है कि इन तीनों प्रस्तावों पर अपने मन्त्रालय से परामर्श करके हमें भेंट करने का समय दें। यह मैं आपके पत्रांक एफ-१६।३१।६४-एच। १ दिनांक ४ जून, १९६४ के उत्तर में भी लिख रहा हूं जिसमें कि आपने विस्तारपूर्वक बातचीत करने के लिए मुझे मन्त्रालय में बुलाया है। हिन्दी प्रकाशक संघ के अधिवेशन में दिये गये अध्यक्षीय भाषण में दिये गये सुझावों तथा इन तीनों प्रस्तावों पर एक साथ बातचीत हो सकेगी तो आपके समय की काफी बचत होगी।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं।

सादर आपका

ओमप्रकाश, अध्यक्ष

संघ के नये सदस्य

संघ की कार्यसमिति ने अपनी १७ मई, १९६४ की बैठक में निम्नलिखित संस्थानों के फार्म स्वीकार कर उन्हें संघ का सदस्य मान लिया है :

१. इण्डियन प्रेस (पब्लिकेशंस) प्रा० लि० इलाहाबाद
२. रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, कटरा रोड, इलाहाबाद
३. विद्या मन्दिर, ब्रह्मनाल, वाराणसी ।
४. रानी प्रकाशन, कृष्णनगर, दिल्ली
५. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली

एजूकेशनल पुस्तकों की सम्मिलित सूची

संघ ने अपने सदस्यों द्वारा प्रकाशित हिन्दी की एजूकेशनल पुस्तकों की सूची प्रकाशित करने का निश्चय किया है। सूची की सामग्री प्रेस को दे दी गई है। आशा है कि वह शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगी। सूची में सदस्य प्रकाशकों की एक हजार से अधिक पुस्तकों का समावेश होगा।

सदस्यों से निवेदन

संघ के जिन सदस्यों ने अभी तक सन् ६४-६५ का चंदा नहीं भेजा वे शीघ्र भेज देने की कृपा करें।

क० ल० मलिक
प्रधानमंत्री

नये प्रकाशन

हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास : ले० राजनाथ शर्मा एम० ए० ; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृ० २४१; मू० १.५० । संशोधित परिवर्द्धित संस्करण ।

हिन्दी साहित्य: युग प्रवृत्तियाँ : ले० शिवकुमार; प्र० अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० ६७८; मू० ८.०० । पु० मु० ।

काव्य

खालिकबारी : ले० डा० श्रीराम शर्मा; प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; सा० डि० ८; मू० २.७५ ।

नीलकण्ठ विजय : व्याख्या, रामचन्द्र मिश्र; प्र० चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी; सा० क्रा० ८, पृ० २००; मू० ४.०० । संस्कृत चंपू ।

बिहारी सतसई : सं० देवेन्द्र शर्मा इन्द्र एम० ए०; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृ० ३५२; मू० ५.०० । सटीक, पु० मु० ।

रंगीनियाँ : कं० शकील बदायूनी; प्र० स्टार पब्लिकेशंस २७१५ दरियागंज, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ११२; मू० १.०० । पा० बु० ।

रश्मिबन्ध : क० सुमित्रानन्दन पन्त; प्र० राजकमल प्रकाशन लि० दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १४४; मू० २.५० ।

उपन्यास

अन्धेरे चिराग : ले गुलशननन्दा; प्र० स्टार पब्लिकेशंस दरियागंज दिल्ली; पृ० २५६; मू० २.०० । पा० बु० ।

आज और कल : ले० ग्लैडिस एच० करोल; प्र० पंजाबी पुस्तक भंडार, दरियागंज, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० १२६

आंसू नहीं मुस्कान : ले० ओमप्रकाश शर्मा; प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा कलां, दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० १६८; मू० ३.०० ।

साहित्य-समालोचना

आधुनिक नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन : ले० : डा० गणेशदत्त गौड़ ; प्र० सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा, आगरा; मू० १५.०० । शोधग्रन्थ ।

आलोचना : इतिहास तथा अध्ययन : ले० डा० एस० पी० खत्री तथा शिवदानसिंह चौहान; प्र० राजकमल प्रकाशन लि० दिल्ली; सा० डि०; पृ० ४४७; मू. १०-०० ।

पद्मावत का अनुशीलन : ले० इन्द्रचन्द्र नारंग; प्र० हिन्दी भवन, जालंधर सा० क्रा० ८; मू० ५.०० ।

बानभट्ट की आत्मकथा समीक्षा : ले० देशराजसिंह भाटी; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० २२५; मू० २.५० ।

भरतेन्दु और नर्मद का तुलनात्मक अध्ययन ले०: डा० अरविन्द देसाई; प्र० सरस्वती पुस्तक सदन, मोतीकटरा आगरा; मू० १२.५० । शोधग्रन्थ ।

महाकवि भास एक अध्ययन : ले० बल्देव उपाध्याय; प्र० चौखम्बा विद्याभवन चौक, वाराणसी-१; सा० क्रा० ८; पृ० १७५; मू० ४.०० ।

महादेवी वर्मा और 'अतीत के चलचित्र' : ले० राजनाथ शर्मा एम० ए०; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड आगरा; मू० ३.०० ।

महादेवी वर्मा और स्मृति की रेखाएं : ले० राजनाथ शर्मा एम० ए०; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा; पृ० ११८; मू० १.०० ।

सुमित्रानन्दन पन्त और आधुनिक कवि : ले० तारकनाथ बाली एम० ए०; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृ० २७८; मू० ४.०० । पु० मु० ।

हिन्दी खड़ी बोली काव्य में विरह वर्णन : ले० डा० राम प्रसाद मिश्र; प्र० सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा आगरा; मू० १६.०० । शोधग्रन्थ ।

हिन्दी में प्रत्यय विचार : ले० डा० मुरारीलाल उप्रैति; प्र० विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा; पृ० ३८०; मू० १५.०० ।

प्रशिक्षण एवं मनोविज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तकें

प्रशिक्षण

History of Education

१. भारतीय शिक्षा का इतिहास
—बी०पी० जौहरी,—पी० डी०पाठक ७.००

२. भारत में शिक्षा
(इतिहास, समस्याएँ तथा प्रयोग) ,, ८.००

३. भारतीय शिक्षा की रूपरेखा ,, ५.००

४. भारतीय शिक्षा की समस्याएँ ,, ६.००

5. An Outline of Indian Education 9,00

६. भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएं (आगरा विश्वविद्यालय के नवीन पाठ्यक्रमानुसार) ,, ६.००

Educational Psychology

७. शिक्षा मनोविज्ञान
—डा० एस०एस० माथुर १२.५०

8 Educational Psychology (English Edition) Dr. *S.S. Mathur* 16.00

९. शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा
—डी० एस० रावत ६.००

Principles of Education

१०. शिक्षा सिद्धान्त के मूलाधार
—पी०डी० पाठक, गुरुसरनदास त्यागी ८.००

11. Basic principle of Education
—*B.P. Johri*
(English Edition)—*P.D. Pāthak* 10.00

१२. शिक्षा सिद्धान्त (दार्शनिक तथा सामाजिक आधार) —डा० एस० एस० माथुर ६.००

१३. शिक्षण कला Methods of Teaching
—डा० एस० एस० माथुर ७.००

१४. कक्षाध्यापन एवं पाठ-संकेत निर्माण
—भाई योगेन्द्रजीत ५.००

School Organization

१५. विद्यालय : संगठन एवं संचालन
—बी० डी० सिंह, भूदेव शास्त्री ६.००

School Hygiene

१६. स्वास्थ्य शिक्षा —जी०पी० शेरी ८.००

17. Health Education—*S.B. Chaule* 10.00

Comparative Education

१८. सोवियत जन शिक्षा का स्वरूप
—प्रो० नरेन्द्रसिंह चौहान
—प्रो० राजेन्द्रपाल सिंह ४.००

१९. इंगलैण्ड की शिक्षा प्रणाली
—एच० एन० सिंह ४.५०

Measurement

२०. मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन —आर० एन० अग्रवाल ११.००

21. Educational and Psychological Measurement (English Edition)
—*R. N. Agarwal* 12.50

२२. व्यक्तित्व : प्राकृतिक एवं मापन ,, २.५०

२३. बुद्धि : प्रकृति, सिद्धान्त एवं मापन ,, ३.००

General

२४. महान पश्चिमी शिक्षा शास्त्री
—डा० रामशकल पाण्डेय ५.००

२५. राष्ट्रभाषा और हिन्दी
—राजेन्द्रमोहन भटनागर २.००

Methods

२६. हिन्दी-भाषा शिक्षण भाई योगेन्द्रजीत ४.५०

२७. इतिहास शिक्षण —गुरुसरनदास त्यागी ४.५०

२८. सामाजिक अध्ययन तथा नागरिक शास्त्र शिक्षण —गुरुसरनदास त्यागी ४.००

२९. भूगोल शिक्षण —एच० एन० सिंह ४.००

३०. विज्ञान शिक्षण —डी० एस० रावत ४.००

३१. गणित शिक्षण —एम० एस० रावत ४.००
—मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल ४.००

३२. गृह विज्ञान शिक्षण —जी०पी० शेरी ६.००

३३. अर्थशास्त्र-शिक्षण—गुरुसरनदास त्यागी ४.००
(प्रेस में)
३४. संस्कृत-शिक्षण
35. Essentials & English teaching
--*R.K. Jain, P.D. Pathak* 6.00
३६. सरल शिक्षा सिद्धान्त तथा
शिक्षण-कला—डी०सी० भारद्वाज ४.००
३७. सरल शिक्षा मनोविज्ञान " ४.००
३८. पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक संगठन
तथा स्वास्थ्य विज्ञान
—डी० सी० भारद्वाज ४.००
३९. चर्मकला शिक्षण (Leather Crafts)
—मानकचन्द गुप्त १.२५

For Basic Training Students

४०. बुनियादी शिक्षा-शास्त्र
—राममोहन तिवारी ४.५०
४१. बुनियादी शिक्षा-सिद्धान्त
—बी०डी० शर्मा—राममोहन तिवारी २.५०
४२. बुनियादी पाठन-पद्धतियाँ " २.५०

प्रश्नोत्तर शैली में

४३. शिक्षा सिद्धान्त —भाई योगेन्द्रजीत ३.००
४४. शिक्षा मनोविज्ञान " ३.००
४५. भारतीय शिक्षा का इतिहास
—कपूरचन्द जैन ४.००
४६. पाठशाला प्रबन्ध—डी०सी० भारद्वाज ३.५०
४७. स्वास्थ्य विज्ञान " ३.००
४८. शिक्षण विधियाँ " ५.००
४९. शिक्षण-कला " ५.००
५०. हिन्दी भाषा शिक्षण " ३.००
५१. इतिहास शिक्षण —जी०डी० सत्संगी २.००
५२. सामाजिक अध्ययन शिक्षण २.००
५३. नागरिक-शास्त्र शिक्षण " २.००
५४. अर्थशास्त्र शिक्षण " २.००

मनोविज्ञान

History of Psychology

५५. मनोविज्ञान का इतिहास
—डा० जे० डी० शर्मा
—डा० जी० डी० सारस्वत १०.००

General Psychology

५६. सामान्य मनोविज्ञान
—डा० एम०एस० माथुर ७.००

Social psychology

५७. समाज मनोविज्ञान
—डा० एस० एस० माथुर १२.५०

58. Social Psychology (English Edition)--Dr. *S.S. Mathur* 14.00

Educational Psychology

५९. शिक्षा मनोविज्ञान
—डा० एस०एम० माथुर १२.५०

60. Educational Psychology (English Edition)—*S.S. Mathur* 16.00

६१. शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा
— डी०एस० रावत ६.००

Applied Psychology

६२. व्यावहारिक मनोविज्ञान
—सुरेशचन्द्र शर्मा एम०ए० ६.००

Physiological Psychology

63. Physiological Psychology (English Edition) दैहिक मनोविज्ञान
—Dr. *J.D. Sharma* 10.00

प्रकाशक

विनोद पुस्तक मन्दिर, होस्पिटल रोड, आगरा

एक गधा नेफ़ा में : ले० कृश्नचन्दर; प्र० राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली-६; मू० ३.०० ।

कैदी : ले० विलियम फाकनर; प्र० पंजाबी पुस्तक-भंडार, दरियागंज दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० १२८; मू० २.५० । अनुवाद ।

कैदी : ले० विलियम; प्र० स्टार पब्लिकेशंस दरियागंज दिल्ली; पृ० १२८, मू० १.०० । पा० बु० ।

गृहसंसद : ले० गुरुदत्त; प्र० स्टार पब्लिकेशंस दिल्ली; पृ० २६४; मू० २.०० । पा० बु० ।

तुम्हारी कसम : ले० ओमप्रकाश शर्मा; प्र० रतन एण्ड कम्पनी दरीबा कलां, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १४४; मू० २.५० ।

द्रष्टा : ले० गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य सदन, ३० । ९० कनाट सरकस, नई दिल्ली; पृ० २६४; मू० २.०० । पा० बु० ।

निष्णात : ले० गुरुदत्त; प्र० पंजाबी पुस्तक भंडार दरियागंज दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १४४; मू० ३.०० ।

नीला एक लड़की : ले० भारद्वाज; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दरियागंज दिल्ली; पृ० १२०; मू० १.०० । पा० बु० ।

परछाई : ले० आदिल रशीद; प्र० पंजाबी पुस्तक भंडार दरियागंज, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ११६; मू० २.२५ ।

परछाई : ले० आदिल रशीद; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दिल्ली; पृ० ११२; मू० १.०० । पा० बु० ।

पर्वतों के आंचल में : ले० ओलिवर ला फाजे; प्र० पंजाबी पुस्तक भंडार, दरियागंज, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १३६; मू० २.०० । अनुवाद ।

लौटती लहरों की बांसुरी : ले० भारतभूषण अग्रवाल प्र० राजपाल एण्ड संज़ दिल्ली-६; मू० ३.०० ।

संघर्ष की राहें : ले० लक्ष्मी रघुमैय्य; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दरियागंज, दिल्ली; पृ० ११२; मू० १.०० । पा० बु० ।

सितारों से आगे : ले० गुलशननन्दा; प्र० स्टार पब्लिकेशंस दिल्ली; पृ० १५२, मू० १.००; पा० बु० ।

प्रकाशकं

१२.००
१५.००
५.००
२०.००
११.००
१०.००
१०.००
५.००
१०.००
१०.००
२५.००
२५.००
५.००
१५.००
६.००
६.००
४.००

कहानी

दस तस्वीरें : ले० जगदीशचन्द्र माथुर; प्र० राजकमल, प्रकाशन लि०, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० १६१; मू० ६.०० । रेखाचित्र ।

मन्नू भण्डारी : सं० राजेन्द्र यादव; प्र० राजपाल एण्ड संज, दिल्ली-६; मू० २.५० । नये कहानीकार पुस्तकमाला ।

महामाया : ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दरियागंज, दिल्ली; पृ० १२८; मू० १.०० । पा० बु० ।

मोहन राकेश : सं० राजेन्द्र यादव; प्र० राजपाल एंड-संज दिल्ली; मू० २.५० । नये कहानीकार पुस्तकमाला ।

नाटक

अमर आन : ले० हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० हिन्दीभवन, जालंधर; सा० क्रा०; मू० १.५० ।

दर्पन : ले० लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० राजपाल एण्ड संज, दिल्ली; मू० २.०० ।

बालोपयोगी

अशोक के शेर : ले० सावित्री देवी वर्मा; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा०-फु० ८; मू० २.०० । सचित्र ।

नदी पर बांध : ले० जे० भारतदास; प्र० राजकमल प्रकाशन लि०, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० १६; मू०-०.६० । सचित्र, रङ्गीन ।

नार्वे की लोक कथाएँ : (दूसरा भाग): ले० शुभा वर्मा; प्र० हिन्दीभवन, जालंधर; सा० क्रा० ८; मू० १.३०

यह दुनिया : (३ भाग) : ले० मन्दाकिनी; प्रकाशक आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; स० फु० ८; मू० ३.०० । सचित्र ।

नवसाक्षरोपयोगी

आम बराबर गेहूँ
कितनी जमीन
जीवन मूल

देर हो अन्धेर नहीं

धर्मपुत्र

प्रेम में भगवान्

मूरखराज (दो भाग) : ले० टाल्सटाय, अनु० जैनेन्द्र-कुमार; प्र० पूर्वोदय प्रकाशन, ८ नेताजी सुभाषमार्ग, दिल्ली-६; मू० सजिल्द ०.९०, अजिल्द ०.६५ । सचित्र, लोकविकास कथामाला के भाग ८ से १५ ।

कोश

लघुशब्द सागर : सं० करुणापति त्रिपाठी; प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; सा० डि० ८; पृ० १४२ फार्म; मू० ११.०० ।

लघुतर शब्दसागर : सं० करुणापति त्रिपाठी; प्र० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; सा० डबल क्रा-३२; पृ० ३५ फार्म, मू० ६.०० ।

दर्शन

केनोपनिषद् : यमुनाप्रसाद त्रिपाठी; प्र० मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली; मू० ४.०० ।

शंकराचार्य ग्रन्थावली : (भाग ३) प्र. मोतीलाल, बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली; मू. ११.७५; ईशादि दशोपनिषद, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता ।

सर्वदर्शन संग्रह : व्याख्या, उमाशंकर-ऋषि; प्र० चौखंबा विद्याभवन, चौक, वाराणसी; सा० डि०, पृ० ११५०; मू० २५.०० ।

शिक्षा मनोविज्ञान

इतिहास शिक्षण : ले० जी० डी० सत्संगी; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, हास्पिटल रोड, आगरा, पृ० ११८; मू० २.०० । नवीन संस्करण ।

बालक की समस्याएँ : ले० एस० पी० कनल; प्र० आत्माराम एन्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; सा० डि० ८; मू० २.०० ।

शिक्षण-कला

शिक्षा सिद्धान्त : ले० डा० एस० एस० माथुर; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा; पृ० ३६५, ३३२; मू० प्रत्येक ७.०० । संशोधित ।

स्कूल से पूर्व बच्चों का पालन : ले० एल० क्रास्नोगोर्स्कामा; प्र० राजकमल प्रकाशन लि०, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १६२; मू० ३.०० । सचित्र ।

सरल शिक्षा मनोविज्ञान : ले० दिनेशचन्द्र भारद्वाज; प्र० विनोद पुस्तक मंदिर आगरा; पृ० २४४; मू० ४.०० ।

अर्थशास्त्र

अन्नपूर्णा धरती : ले० ह्वीलर मैकमिलन, अनु० कृष्णचन्द्र; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; सा० क्रा० ८; मू० ३.५० । सचित्र ।

उदारता की घड़ी

समृद्ध समाज : ले० जान कैनेथ गैलब्रेथ, अनु० [१] डा० रामस्वरूप शास्त्री, [२] हरिप्रतापसिंह; प्र० आत्माराम एन्ड संस, दिल्ली; सा० क्रा० ८; मू० [१] ४.०० [२] ६.०० ।

स्वास्थ्य

आयुर्वैदिक गाइड : ले० अत्रिदेव गुप्त; प्र० मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली; मू० ५.०० ।

तन्दुरुस्त रहने के उपाय : ले० धर्मचन्द सरावगी; सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ८० मू० १.२५ ।

गाइड

अशोक हिन्दी प्रथमा गाइड

अशोक हिन्दी मध्यमा गाइड : ले० शिवप्रसाद शास्त्री; प्र० अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा० का०; पृ० ७५०, ९६०; मू० ७.००, ८.०० । पु० मु० ।

विविध

अन्तरिक्ष यात्रा की प्रथम पुस्तक : ले० जीन वैंडिक, अनु० उदयवीर विराज; प्र० आत्माराम एंड संस, दिल्ली; सा० फु० ८; मू० ४.०० । सचित्र ।

दशहरा-दीवाली बनाम रावण-वध रामराज्याभिषेक : ले० इन्द्रचन्द्र नारङ्ग; प्र० हिन्दी-भवन, जालंधर; सा० का० ८; मू० ०.५० ।

धरती लहराई : ले० राजेन्द्र अवस्थी; प्र० लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा० फु० ८; पृ० ३६; मू० १.५६ । सचित्र ।

विवाहित आनन्द : ले० कविराज हरनामदास; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दरियागंज दिल्ली; पृ० १५२; मू० १.०० । पा० बु० ।

वे महान् कैसे बने : प्र० राजपाल एन्ड संज दिल्ली-६; मू० १.०० । सचित्र जीवनोपयोगी ।

सच्ची आज़ादी : ले० महात्मा भगवानदीन; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा० का०; पृ० ११२; मू० २.५० ।

सर्वोदय समाज के लक्षण : ले० झवेरभाई पटेल; प्र० ग्राम आयोजन प्रकाशन दिल्ली-९; पृ. १५०; मू० ३.०० । पक्की जिल्द ।

सूचना सार

पुस्तकालयों के पते

पुस्तकालयों के कुछ पते 'हिन्दी प्रकाशक' के पिछले अंक में प्रकाशित हो चुके हैं। शेष इस अंक में प्रस्तुत हैं :

मेट्रोलौजिकल औफिस लाईब्रेरी, पूना।
मिचेल मधुसूदन लाईब्रेरी, कलकत्ता।
एम० के० सार्वजनिक पुस्तकालय, बांदरा (बम्बई)
एम० एन० अमीन सार्वजनिक पुस्तकालय, वासू (बम्बई)
मोतीभाई दयाभाई सार्वजनिक लाईब्रेरी, धारमाज, खेड़ा बम्बई।
मोतीलाल नेहरू म्यूनिसिपल पब्लिक लाईब्रेरी, अमृतसर।
मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय, बम्बई।
म्यूनिसिपल सेण्ट्रल लाईब्रेरी, शिमला।
मैसूर एजूकेशनल लाईब्रेरी, बंगलौर।
नारायण मार्तण्ड सार्वजनिक लाईब्रेरी, वावल (बम्बई)।
नरेन्द्रा ग्रन्थालयम्, गोवाडा (मद्रास)।
औरियण्टल मनु लाईब्रेरी, त्रिवेन्द्रम (कोचीन)।
परेख छगनलाल पीताम्बरदास सार्वजनिक पुस्तकालय, मेहसाना (बम्बई)
परेख परशोत्तमदास हरगोविन्ददास महाजन लाईब्रेरी, कापडवंज (बम्बई)।
पेस्चर इन्स्टीच्यूट लाईब्रेरी, शिलांग (आसाम)
पी० के० मेमोरियल लाईब्रेरी, अम्बालापुभा (मद्रास)
प्रेम भवन पुस्तकालय, इलाहाबाद।
पब्लिक लाईब्रेरी, इलाहाबाद।
पब्लिक लाईब्रेरी, गया।
पब्लिक लाईब्रेरी, जयपुर।
पब्लिक लाईब्रेरी, मैसूर।
पब्लिक लाईब्रेरी, बंगलौर।
पब्लिक लाईब्रेरी, त्रिचूर (त्रिवेन्द्रम व कोचीन)।
पंजाब हाईकोर्ट लाईब्रेरी, शिमला।
रजनीकान्त गुप्ता मेमोरियल लाईब्रेरी, कलकत्ता।
रामवला भक्त पुस्तक भंडग्राम, राजामुन्द्री (मद्रास)।
रामाकृष्णा सेण्ट्रल लाईब्रेरी, मद्रास।
रामकृष्णा मठ लाईब्रेरी, लच्छीपुरम् (मद्रास)।
रामाकृष्णामिशन लाईब्रेरी, पुरी (उड़ीसा)।
रामवचन मंदिर क्रीड़ा भवन, सतंटवाड़ी (बम्बई)।
रनवीर लाईब्रेरी, जम्मू (कश्मीर)।
राष्ट्रीय वाचनालय, नागपुर।
रायचन्द दीपचन्द लाईब्रेरी, भड़ौच।
आर० एस० दीक्षित लाईब्रेरी, नागपुर।
साधूसेशय्या औरियण्ट लाईब्रेरी, कुम्भकोणम (मद्रास)
सारदा लाईब्रेरी, अंकापल्लाई (मद्रास)।
सरस्वती निकेतनम् वेटापेलम (मद्रास)।
सार्वजनिक पुस्तकालय, कार्डी (बम्बई)।
सार्वजनिक वाचनालय एण्ड डि० ग्रंथालय, अलीबाग (बम्बई)
सार्वजनिक वाचनालय, बीजापुर।
सार्वजनिक वाचनालय, नासिक।
सोलात पब्लिक लाईब्रेरी, रामपुर (उत्तरप्रदेश)।
सयाजीराव गायकवाड़ लाईब्रेरी, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
एस० बी० एम० ए० ग्रंथालयम्, विजयवाडा।
सरवेण्ट्स आफ इंडिया सोसायटी लाईब्रेरी, पूना।
सरवेण्ट्स आफ इंडिया सोसायटी लाईब्रेरी, रोयापेट्टाह।
शेरे काश्मीर लाईब्रेरी, श्रीनगर।
सेठ भाईलालभाई मबनदास पब्लिक लाईब्रेरी, मेहलाव (बम्बई)।
सेठ मानिकलाल जेठाभाई पुस्तकालय, अहमदाबाद।
सेठ एम० आर० पब्लिक लाईब्रेरी, उनभा।
शोलापुर जिला वाचन मंदिर, शोलापुर।
सिद्धेश्वर मोफत वाचनालय, अठनी (बम्बई)।
सिलवर जुबली पब्लिक लाईब्रेरी, चिकमगलौर (मैसूर)।
एस० एस० रामाबाई साहेब वाचनालय, जामखण्डी (बम्बई)।

सुमेर पब्लिक लाईब्रेरी, जोधपुर।
टेकनिकल लाईब्रेरी, टाटा ग्राइरन स्टील कम्पनी लिमिटेड जमशेदपुर (बिहार)।
तिलक लाईब्रेरी, रानीगंज (बंगाल)।
त्रिवेन्द्रम पब्लिक लाईब्रेरी, त्रिवेन्द्रम (कोचीन)।
यूनाइटेड सरविसेज लाईब्रेरी, पूना।
उत्तरपाड़ा पब्लिक लाईब्रेरी, उत्तरपाड़ा (पश्चिम बंगाल)
ब्रह्मचर्य पुस्तकालय, पटना।
विक्टोरिया सेण्ट्रल लाईब्रेरी, ग्वालियर।
विक्टोरिया जुबली लाईब्रेरी, ग्रमालनेर (बम्बई)।
विश्व भारती सेण्ट्रल लाईब्रेरी, बोलपुर (बंगाल)।
वी० वी० लाईब्रेरी, जलगांव (बम्बई)।
यंग मैन हिन्दू ग्रसोशियेन फ्री रीडिंग रूम एण्ड लाईब्रेरी, एलुरू (मद्रास)।
वाई० एम० सी० ए० लाईब्रेरी, मदुरा (मद्रास)।
युवराज जनरल लाईब्रेरी, उज्जैन।

बोर्ड ग्राफ हायर सेकेण्डरी एजूकेशन, राजस्थान में 'सबमिशन'

बोर्ड ग्राफ सेकेण्डरी एजूकेशन, राजस्थान के सेक्रेटरी महोदय ने सूचना दी है कि ११वीं श्रेणी की १९६६ वाली परीक्षा के लिए विचारार्थ पुस्तकें सबमिट करने की अन्तिम तिथि १ अगस्त १९६४ ही है।

१९६७ की सेकेण्डरी स्कूल परीक्षा तथा १९६८ की ९वीं १०वीं की परीक्षा के लिए विभिन्न विषयों की पुस्तकें विचारार्थ लेने की अंतिम तिथि १ सितंबर रखी गई है।

राजस्थान हिन्दी विद्यापीठ में 'सबमिशन'

राजस्थान हिन्दी विद्यापीठ (हिन्दी विश्वविद्यालय) की परीक्षा समिति पाठ्य पुस्तकों को मान्यता प्रदान करने के लिए १७ जुलाई के दिन उदयपुर में ग्रामंत्रित की गई है। विद्यापीठ द्वारा संचालित हिन्दी प्रवेश, हिन्दी प्रवेशिका, हिन्दी विशारद एवं हिन्दी साहित्यरत्न के लिए पुस्तकें १० जुलाई तक माँगी गई हैं।

राजस्थान साहित्य ग्रकादमी में टेंडर की मांग

राजस्थान साहित्य ग्रकादमी (संगम), उदयपुर, को ग्रपने पुस्तकालय के लिए संस्कृत, हिन्दी ग्रौर ग्रंग्रेजी की पुस्तकें खरीदनी हैं। बंद टेंडर ३१ जुलाई १९६४ तक मांगे गये हैं। टेंडर १ ग्रगस्त को खोले जायेंगे। विवरण ग्रकादमी के कार्यालय से लिया जा सकता है।

संग्रहणीय अभिनव शोध-ग्रन्थ

★

नवीन-प्रकाशन : १९६४

हिन्दी-उपन्यास की शिल्पविधि का विकास	डा० (श्रीमती) ओमशुक्ल	१६.००
अज्ञेय का काव्य	सुश्री सुमन झा	१०.००
हिन्दी की नई कविता	श्री वी० नारायण कुट्टी	१०.००
डिंगल-साहित्य	डा० गोवर्धन शर्मा	१६.००
हिन्दी-साहित्य में निबन्ध का विकास	डा० ओंकार नाथ शर्मा	१६.००
कविवर बिहारी लाल और उनका युग	डा० रणधीर सिंह	१६.००
प्रयोगवाद	श्री नरेन्द्रदेव वर्मा	१२.५०

अन्य प्रकाशन : १९६३

आधुनिक हिन्दी-कविता में अलंकार-विधान	डा० जगदीश नारायण त्रिपाठी	१५.००
नया हिन्दी-काव्य	डा० शिवकुमार मिश्र	१६.००
हिन्दी उपन्यास : समाज-शास्त्रीय विवेचन	डा० चण्डी प्रसाद जोशी	१६.००
तुलसीदास : जीवनी और विचार-धारा	डा० राजाराम रस्तोगी	१६.००
निराला का परिवर्तो काव्य	श्री रमेशचन्द्र मेहरा	१०.००
छायावादी काव्य : स्वरूप और व्याख्या	श्री राजेश्वर दयाल सक्सेना	८.००
हिन्दी की सैद्धान्तिक समीक्षा	डा० रामाधार शर्मा	१६.००
रामचरित मानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन	डा० राजकुमार पाण्डेय	१६.००

●

अनुसन्धान प्रकाशन

(शोध ग्रन्थों के प्रकाशक)

८७/२५६, आचार्यनगर, कानपुर-३

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ : आगामी परीक्षाएं

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ की आगामी परीक्षाएं २६, २७, २८, २९, ३० सितम्बर १९६४ को होंगी। इन परीक्षाओं के सशुल्क आवेदन-पत्र ता० ५ अगस्त १९६४ तक विद्यापीठ के प्रधान कार्यालय (आनन्दनगर, फारजेट स्ट्रीट, बम्बई-२६) द्वारा स्वीकार हो सकेंगे। इस तिथि के उपरांत कोई भी आवेदन-पत्र किसी भी अवस्था में स्वीकार नहीं हो सकेगा।

विद्यापीठ की परीक्षाएं भारत सरकार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, प० बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात तथा गोवा सरकार द्वारा मान्य हैं।

स्कूलों में धर्म और नैतिक शिक्षा की व्यवस्था

छात्रों में समुचित नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामाजिकता विकसित करने के विचार से पंजाब राज्य शिक्षा विभाग ने स्कूलों में धर्म और नैतिक शिक्षा प्रचलित करने का निर्णय किया है।

काशी विद्यापीठ को अनुदान

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, श्री मोहम्मद अली करीम भाई छागला ने लोकसभा में बताया है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने काशी विद्यापीठ, वाराणसी की आवश्यकताओं की जाँच करने के लिए नियुक्त निरीक्षण समिति की सिफारिशें स्वीकार कर ली हैं और ६,५३,६०० रु० की सहायता की मंजूरी दी है। मंत्री महोदय ने बताया कि आयोग आवश्यकता पड़ने पर विद्यापीठ के विकास के लिए आवश्यक अन्य सुविधाएं भी देगा।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाएं : अतिरिक्त विषयों में परीक्षा देने की सुविधा

नई दिल्ली के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने उन व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त विषयों में परीक्षा देने की स्वीकृति सम्बन्धी कुछ नियम बनाए हैं, जो हायर सैकंडरी मल्टीपर्पज परीक्षाएं पास कर चुके हों। ये नियम मार्च-अप्रैल, १९६५ की परीक्षाओं के समय से लागू होंगे।

हमारे कुछ प्रकाशन

हाई स्कूल, इंटर मिडिएट, हायर सेकेंडरी तथा स्नातक कक्षाओं के लिए

नागरिक शास्त्र तथा राजनीति शास्त्र

हाई स्कूल नागरिक शास्त्र : प्रो० कन्हैयालाल वर्मा २.००
नागरिक शास्त्र के मूलतत्त्व : प्रो० कन्हैयालाल वर्मा तथा डा० हीरालाल सिंह ४.००
भारतीय नागरिक की भूमिका प्रो० कन्हैयालाल ५.५०
पाश्चात्य राजनैतिक विचारों का इतिहास (लूथर से वेंथम तक) प्रो० कन्हैयालाल तथा प्रो० बी. एल. गर्ग १२.००
भारत का संविधान प्रो० कन्हैयालाल ८.००
अमेरिका का संविधान " ६.००
भारतीय राजनीति और शासन पद्धति " ८.००
" " " विकास " ७.५०
भारतीय विचार धारा डा० हरिहर नाथ त्रिपाठी ८.००
Some Critical Problems of Australian Federalism *Prof. D.N. Vohra* 8.00

गणित

माध्यमिक निर्देशांक ज्यामिति (द्वितीय संस्करण) श्री जे. डी. वैश्य तथा श्री एच. पी गुप्त ४.५०
उच्चतर माध्यमिक त्रिकोण मिति द्वि० सं० " ४.५०

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास : डा० अवधबिहारी पाण्डेय ४.००
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास भाग १ " डा० परमात्मा शरण ५.००
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास भाग २ " १०.००
मध्यकालीन भारत " ३.००
विश्व सभ्यता की संक्षिप्त झाँकी श्री विमलादेवी, रमेशचंद माथुर ७.००
आधुनिक योरप का इतिहास डा० हीरालालसिंह तथा डा० रामवृक्षसिंह ८.००
प्राचीन भारत डा० राजवली पाण्डेय १२.००
History of Chauhan *Dr. R.B. Singh* 20.00
India from A.D. 711 to 1206 *Dr. R.S. Tripathi* 1.50

विज्ञान

Inter Practical Chemistry *M.G. Mishra* 4,25

तर्क शास्त्र

तर्कशास्त्र भाग १ प्रो० विमलकुमार कोदिया जैन ४.००
तर्कशास्त्र भाग २ प्रो० विमलकुमार कोदिया जैन ४.००

व्यापार

Effective Correspondence *Dr. R. L. Agrawal & Porf. B.N. Tripathi* 6.00
दोहरेलेखे के मूल सिद्धान्त *Dr. Agrwal, Prof. Tripathi & Chandapuri* 7.50
Hand Book of Business English *Dr. Agrwal Prof. Tri. & Prof. Kulkarni* 4.50
Guide to Precies Writing *Dr. Agrawal & Prof. Kulkarni* 1.50

मनोविज्ञान तथा शिक्षा सम्बन्धी

सरल मनोविज्ञान (११ वां संस्करण) प्रो० लालजी राम शुक्ल ७.००
आधुनिक मनोविज्ञान " ७.००
मनोविज्ञान परिचय " ७.००
मनोविज्ञान चिंतन " ७.००
शिक्षा मनोविज्ञान और सांख्यिकी प्रो० विनय कुमार राय १२.००
वैकासिक मनोविज्ञान " ७.००
शिक्षा की दार्शनिक मीमांसा : प्रो० कल्पनाथ चौबे ७.००
शिक्षा प्रणालियां और उनके प्रवर्त्तक आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ८.५०
अध्यापन कला " ४.२५
व्यक्तिगत मनोविज्ञान प्रो० राजाराम शास्त्री ६.००
इतिहास शिक्षण शैली श्री वैजनाथलाल श्रीवास्तव २.००
चित्रकला पाठन शैली " १.७५
कविता की शिक्षा : डा० शिवनारायण श्रीवास्तव २.००
गणित शिक्षा के सिद्धांत श्री के० एल० किचलू २.००
शिक्षा शास्त्र डा० सीताराम जायसवाल ७.००
नार्मल शिक्षण " ४.२५
" शिक्षा सिद्धांत " १.२५
" शिक्षण विधि " १.७५

साहित्यिक प्रकाशन

पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त डा० केसरीनारायणशुक्ल ३.००
तुलसी के गीत काव्य श्र हरे कृष्ण देवसरे ३.००
नया हिन्दी काव्य विवेचना डा० शंभूनाथ चतुर्वेदी १०.००
हिन्दी के आंचलिक उपन्यास श्री प्रकाश वाजपेयी ५.००
भारतीय साहित्य शास्त्र भाग १ आचार्य सीतारामं चतुर्वेदी १५.००
" " २ " ८.००
केशवदास आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ४.००

तार नंदसंस

नंद किशोर एण्ड संस

टेलीफोन निवास ४३७०
दुकान २४२५

पो० बो० १७, चौक वाराणसी

तकनीकी शिक्षा के अंशकालिक पाठ्यक्रम : पंजाब टैक्नीकल बोर्ड के निर्णय

पंजाब सरकार के राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड ने यह निर्णय किया है कि वह उद्योग या व्यवसाय में काम कर रहे व्यक्तियों के लिए अंशकालिक पाठ्यक्रम चालू करेगा। यह पाठ्यक्रम चार वर्षों का होगा। पहला दाखिला जुलाई-अगस्त, १९६४ में होगा। ये पाठ्यक्रम चंडीगढ़ में सिविल इंजीनियरिंग, पटियाला में इलैक्ट्रिक इंजीनियरिंग तथा लुधियाना में मकैनीकल इन्जीनिरिंग का होगा।

पंजाब के तकनीकी शिक्षा के निदेशक श्री परमजीत सिंह ने बताया है कि विभिन्न तकनीकी संस्थाओं में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए २६७० छात्र तथा डिग्री के लिए ८७० छात्र होंगे। उन्होंने आगे बताया कि राज्य में तकनीकी शिक्षा की सुविधाओं के विस्तार के लिए २·२० करोड़ रु० रखे गए हैं।

भैयाजी बनारसी का सम्मान

वाराणसी की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं ने पत्रकार और हास्यरस के विख्यात लेखक श्री मोहनलाल गुप्त, भैयाजी बनारसी का सम्मान किया है।

राष्ट्रीय इंडियन मिलिटरी कालेज देहरादून में प्रवेश की परीक्षा

राष्ट्रीय इंडियन मिलिटरी कालेज देहरादून में प्रवेश के लिए परीक्षा विभिन्न केन्द्रों में २० तथा २१ अगस्त को ली जायगी। फार्म भेजने की अन्तिम तिथि १५ जुलाई है। फार्म और नियमादि राज्यों के चीफ सेक्रेटरियों से तथा कालेज के प्रिंसिपल से मिल सकते हैं। भरे हुए फार्म राज्यों के चीफ सेक्रेटरियों को भेजे जायेंगे।

दिल्ली में तीन नये कालेज

दिल्ली प्रशासन जुलाई से तीन नये कालेज प्रारम्भ करेगा। कालेज डिफेंस कालोनी, कीर्तिनगर और मोतीबाग में खुलेंगे। इनमें बी० ए० प्रथम वर्ष के ४०० विद्यार्थी होंगे। कालेज फिलहाल हायर सेकेण्डरी स्कूलों में खुलेंगे।

दिल्ली की देहातों में शिक्षा-प्रसार :

दो वर्ष में ७०००० को शिक्षा दी जायगी

दिल्ली प्रशासन ने देहातों के ७०००० अशिक्षितों को शिक्षा देने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया है। शिक्षा निदेशालय के उपशिक्षानिदेशक (समाजशिक्षा) श्री एन० आर० गुप्त ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ मेहरौली क्षेत्र के ५० ग्रामों में काम शुरु कर दिया है। इस वर्ष में तीस हजार और अगले वर्ष में ४० हज़ार को शिक्षा प्रदान करने की योजना है।

नगर के अशिक्षितों के लिए चार नये स्कूल खोलने की योजना है। अभी ऐसा एक स्कूल तिमारपुर में ही है।

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का अभिनन्दन

वयोवृद्ध साहित्य मनीषी और पत्रकार श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की ७०वीं वर्ष गांठ पर उनका सार्वजनिक और समारोह पूर्ण अभिनन्दन हुआ है। आशा प्रकट की गई है कि बख्शीजी का नेतृत्व अभी बहुत कुछ प्रदान करेगा।

प्रस्तुत पाण्डुलिपियाँ

भारत सरकार के गृह मंत्रालय की हिन्दी शिक्षण योजना के एक शिक्षणक श्रीरामनाथ वर्मा लिखते हैं कि मैंने कुछ पुस्तकें लिखी हैं जिनसे प्राप्त धनराशि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दी जायगी। पुस्तकें भारत सरकार द्वारा देखी जा चुकी हैं

श्री वर्मा जी चाहते हैं कि प्रकाशक इन पुस्तकों को प्रकाशित करने का भार लेकर उनकी सहायता करें। पुस्तकें ये हैं—

१. किरण प्रकाश और वीणा—सामाजिक उपन्यास
२. बापू हमें अफसोस तो है—राष्ट्रपिता पर शब्दचित्र
३. संतकवि त्यागराज—बालोपयोगी

श्री रामनाथ वर्मा हिन्दी टीचर, द्वारा पोस्टमास्टर, जी० पी० ओ०, पटना से पत्र-व्यवहार हो सकता है।

पंचायत और समाज-सेवा संचालनालय इन्दौर में विचारार्थ पुस्तकों की मांग

मध्यप्रदेश के पंचायत एवं समाजसेवा संचालनालय, इंदौर, के परिचालित पुस्तकालयों के लिए विचारार्थ पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि ३० जुलाई है। संचालनालय नवसाक्षर और बाल तथा महिला साहित्य के अतिरिक्त कार्यकर्त्ताओं एवं अधिक शिक्षित ग्रामीणों के लिए भी पुस्तकें लेता है। पुस्तक तीन रुपये से अधिक मूल्य की न हों। १९६१ से पहले की प्रकाशित तथा संचालनालय को पहले भेजी गई पुस्तकों पर विचार न होगा।

नवसाक्षर साहित्य की पाण्डुलिपियां भेजें : पंचायत एवं समाज-सेवा संचालनालय का लेखकों से निवेदन

पंचायत व समाज सेवा संचालनालय,इंदौर के परिपत्र में कहा गया है कि वह नवसाक्षरों के उपयोग के लिए प्रतिवर्ष नियमित रूप से साहित्य प्रकाशित करता आ रहा है। इस कार्य में वह देश-प्रदेश के ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों का सहयोग लेता रहा है। इस वर्ष भी उपर्युक्त सन्दर्भ में लेखकों से निवेदन किया जाता है कि वे उपयुक्त साहित्य प्रदान कर सहयोग का हाथ बढ़ायें।

विषय : ग्राम जीवन से संबंधित हो, तथा लोक जीवन विषयक साहित्य, पंचायत, कृषि, समाज कल्याण, सहकारिता, सामान्यविज्ञान, पशु पालन, मत्स्योद्योग, इतिहास, संस्कृति, मध्यप्रदेश के महापुरुषों की जीवनियां, आदर्श ग्राम नेताओं तथा पंचों की जीवनियां, कृषि पण्डितों की पुस्तक माला, प्रेरक नाटिका, छोटे प्रहसनों का संकलन, लघुतम उपन्यास, कहानियों का संकलन, सरस काव्य संकलन तथा स्थल विशेष का परिचय, आदि। शैली एवं भाषा सरलतम एवं सुबोध हो। २० पृष्ठों की टाइप की गयी सामग्री पर्याप्त होगी। पाण्डुलिपि की तीन प्रतियाँ भेजी जायें।

पारिश्रमिक : गद्य के प्रति १५० शब्द तथा पद्य के प्रति १०० शब्दों के लिए ६ रुपये की दर से पारिश्रमिक दिया जाएगा। **पुस्तिकाओं की पाण्डुलिपि १५ जुलाई १९६४ तक सम्पादक, पंचायत एवं समाज सेवा संचालनालय, मध्यप्रदेश, इन्दौर—२ के पते पर भेजी जायें।**

पंजाबी में पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए अनुदान

निदेशक, पंजाबी विभाग, पंजाब पटियाला ने व्यक्तियों और साहित्यिक संस्थानों (संगठनों) से पंजाबी में साहित्यिक (वैज्ञानिक) अनुसंधान की पुस्तकें प्रकाशित आदि करने के लिए अनुदान प्राप्त करने के वास्ते आवेदन पत्र आमंत्रित किये हैं। यह आवेदन पत्र निदेशक, पंजाबी विभाग, पंजाब पटियाला के कार्यालय से निःशुल्क प्राप्त फार्म पर आने चाहिए। अनुदान के लिए पंजीकृत साहित्यिक संस्थाओं को अधिमान दिया जाएगा। कहानियों,कविताओं, उपन्यासों, नाटकों आदि के उत्पादन और प्रकाशन के लिए कोई अनुदान नहीं दिया जाएगा। आवेदन के साथ परियोजना सम्बन्धी अनुमान और खर्चे का विवरण भेजना भी आवश्यक है। कार्यालय में आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि ३० सितम्बर, १९६४ है। उन्हीं आवेदकों को अनुदान दिया जाएगा जो सभी तरह से पूर्ण पांडुलिपियाँ विभाग को प्रस्तुत करेंगे।

प्रकाशक बन्धुओं की सेवा में आवश्यक सूचना

हिन्दी साहित्य : १९६४

[परिचय विशेषांक]

'हिन्दी प्रकाशक' ने १९६३ में प्रकाशित संपूर्ण हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने वाला जो विशेषांक मार्च-अप्रैल के संयुक्त अंक के रूप में प्रस्तुत किया है वह कई तरह की असुविधाओं में और काफी जल्दी में प्रकाशित हुआ है फिर भी उसका सर्वत्र स्वागत किया गया है और कहा गया है कि ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाय। आदेश को शिरोधार्य करते हुए १९६४ में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने के लिए जनवरी मास में विशेषांक प्रस्तुत करने का निश्चय हो गया है। विशेषांक की तैयारी का काम भी हाथ में ले लिया गया है। प्रकाशक बन्धुओं के सक्रिय सहयोग से ही यह बड़ा काम समय पर और सर्वांग संपूर्ण रूप में सम्पन्न हो सकता है। अतएव निवेदन है कि—

प्रकाशक बन्धु अपने जनवरी १९६४ से लगाकर अब तक के प्रकाशनों की एक-एक प्रति तत्काल भेज दें और दिसम्बर तक प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की एक-एक प्रति प्रतिमास भेजते रहें।

कार्यालय प्राप्त पुस्तकों का परिचय तैयार करता जायगा और १५ दिसंबर को सामग्री प्रेस को दे देगा। ऐसी व्यवस्था भी सोची जा रही है कि 'हिंदी प्रकाशक' में प्रकाशनों का कुछ अधिक परिचय दिया जाया करे। यदि यह संभव हुआ तो प्राप्त पुस्तकों का उपयोग इस दिशा में भी हो जायगा। प्राप्त पुस्तकें लौटाई नहीं जायेंगी बल्कि अ० भ० हिन्दी प्रकाशक संघ की निधि बन जायेंगी। विशेषांक और 'हिन्दी प्रकाशक' में उनके परिचय से होने वाले दुहरे लाभ को देखते हुए प्रकाशक बन्धुओं को इतना सहयोग निःसंकोच होकर देना चाहिए।

विश्वास है कि अब तक के प्रकाशन १५ जुलाई तक कार्यालय को मिल जायेंगे और आगामी प्रकाशन निरंतर पहुँचते रहेंगे। और इस प्रकार हम यह सेवा करने में समर्थ हो जायेंगे।

—संपादक

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

• हमने टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल व एग्रीकल्चरल-सम्बन्धी लगभग २५० प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।

• हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।

• आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।

• क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मंगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।

२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।

३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।

४. खेती-बाड़ी कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।

५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।

६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये।

मल्टीपरपज़ शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्राम-पंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी मांगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आप को सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान
हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी,
धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की
पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्कशास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स, देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक
संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ अगस्त, १९६४ अंक ९

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ९ | अगस्त, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

नेट बुक समझौते की भूमिका

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति ने नेट बुक समझौता इस धारणा के अन्तर्गत स्थगित किया था कि जो प्रकाशक और विक्रेता आज इसका महत्व नहीं समझते और निष्ठा के साथ इसका पालन नहीं करते, इसकी अनुपस्थिति में वे भी इसकी उपयोगिता समझेंगे और इसे सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। संघ के लखनऊ अधिवेशन ने इसी धारणा के अनुसार उचित वातावरण में समझौते को फिर लागू करने का आदेश दे दिया था। कार्य समिति और अधिवेशन की यह धारणा ठीक सिद्ध हुई है। आज स्थिति यह है कि कमीशन की आत्मघाती होड़ फिर आगे आ गई है और पुस्तकों की उपयोगिता का प्रश्न पीछे चला गया है। पुस्तकों के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं। प्रकाशन के मान दण्ड पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है—वह गिरने लगा है। परिणाम स्वरूप प्रकाशक और विक्रेता ही नहीं ग्राहक भी परेशान होने लगे हैं और मानने लगे हैं कि नेट बुक समझौते जैसी कोई चीज़ अवश्य होनी चाहिए। परन्तु वह उत्साह और दृढ़ संकल्प अभी तक प्रकट नहीं हुआ जो ऐसे निश्चयों को सफल करने के लिए आवश्यक होता है। फलतः संघ नेट बुक समझौते को व्यावहारिकता की दृष्टि से संशोधित करके फिर लागू नहीं कर पाया।

इधर कुछ मित्र समझौते को किसी न किसी रूप में और तुरन्त क्रियान्वित करना अनिवार्य मानते हैं। वे अपनी यह धारणा दृढ़ शब्दों में प्रकट करते हैं कि नेट बुक समझौता लागू नहीं होता तो संघ की भी कोई उपयोगिता नहीं है।

कुछ अन्य मित्रों ने इस परिस्थिति पर काफी विचार करने के बाद एक मध्य मार्ग सुझाया है। उनका आशय यह है कि कुछ प्रकाशक निजी रूप में नेट बुक समझौते के आधार पर अपने कमीशन संबंधी नियम निश्चित कर दें और कह दें कि जो लोग इन नियमों का पालन न करेंगे वे हमसे कोई व्यापारिक सुविधा नहीं प्राप्त कर सकते। कतिपय प्रकाशकों की एक सशक्त मंडली इस मध्य मार्ग को ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत हो गई है।

संघ की कार्य समिति ने इस मध्य मार्ग पर अभी विचार नहीं किया। आशा है कि वह इस पग को नेट बुक समझौते का शुभारंभ ही मानेगी और अपना आशीर्वाद ही देगी परन्तु निजी रूप से अपने व्यावसायिक नियम निश्चित करने वालों के मार्ग में कोई बाधा नहीं है। वे नियम जब नेट बुक समझौते को क्रियान्वित करने की दिशा देते हैं तब तो वे प्रशंसनीय भी हो जाते हैं।

आशा है कि निश्चय करने वाले मित्रों के नियम शीघ्र ही घोषित होंगे और इस प्रकार नेट बुक समझौते की भूमिका आरम्भ हो जायगी।

नेशनल बुक ट्रस्ट की नई दिशा

'हिन्दी प्रकाशक' के पिछले अंक में हमने निवेदन किया था कि प्रातःस्मरणीय नेहरूजी के साहित्यिक स्वरूप पर बल देने के लिए उनकी जयन्ती के अवसर पर सद्ग्रन्थों के प्रचार और प्रसार की दिशा में प्रयत्न किये जांय। इस संदर्भ में हमने यह भी कहा था कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ कई वर्ष से नेहरूजी की जयन्ती को राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के रूप में मनाता आ रहा है। इस समारोह को सब के सहयोग से अधिक व्यापक रूप दिया जा सकता है और ऐसे ही समारोह सर्वत्र मनाये जा सकते हैं। प्रसन्नता की बात है कि इस सुझाव का कई प्रतिष्ठित पत्रों और क्षेत्रों ने स्वागत किया है और नेशनल बुक ट्रस्ट नवम्बर मास में भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों की एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन करने के लिए प्रस्तुत हो रहा है। इस अवसर पर वह ऐसी संगोष्ठियां भी करना चाहता है जिनमें प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की समस्याओं पर विचार हो और सत्साहित्य को पर्याप्त प्रसार मिले।

हम समझते हैं कि ट्रस्ट इस प्रकार एक स्तुत्य कार्य तो हाथ में लेने जा ही रहा है, सरकारी या सरकारी संरक्षण में काम करने वाली संस्थाओं के लिए उसने एक नई दिशा का संकेत भी प्रस्तुत किया है। कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन अपने आप में सारगर्भित कार्य है परन्तु भारत के समूचे प्रकाशन व्यवसाय को सहारा और संगठित मार्ग देना, उससे भी बड़ा और आवश्यक काम है। नेहरू जयन्ती के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन करने के साथ-साथ ट्रस्ट यदि इस दिशा में और भी अधिक अग्रसर हुआ तो उसे प्रत्येक क्षेत्र से सराहना मिलेगी।

आशा है कि ट्रस्ट अपने विचार को शीघ्र ही संकल्प का रूप दे देगा और उसका विस्तृत कार्यक्रम हमारे सामने आ जायगा। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का पूरा सहयोग इस पुनीत कार्य में ट्रस्ट के साथ होगा। ●

केरल में पुस्तकालय आन्दोलन

तिरुपति के वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय भवन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने कहा है: प्रत्येक घर में एक पुस्तकालय होना चाहिए और हमें पुस्तकें पढ़ने की रुचि बढ़ानी चाहिए। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए एकान्त, मौन और लगन ही पर्याप्त है। अच्छी पुस्तकें हमारी आत्मा से बात करती हैं और अपनी गहरी छाप छोड़ जाती हैं।

केरल राष्ट्रपति के इस सत्परामर्श पर पहले से ही आचरण कर रहा है। वहाँ लगभग तीन हजार पुस्तकालय नियमित रूप से काम कर रहे हैं। सरकार उनको पाँच लाख रुपये का अनुदान दे रही है परन्तु यह राशि उनकी आवश्यकताओं के देखते हुए पर्याप्त नहीं है। अतएव केरल ग्रन्थालय समिति ने १५ अगस्त को सांस्कृतिक दिवस मनाने का निर्णय किया है। उसने यह निर्णय भी किया है कि ९ अगस्त से १५ अगस्त तक के सप्ताह में घर-घर पहुंच कर जनता का ध्यान पुस्तकालय आन्दोलन की ओर आकर्षित किया जाय और ग्रन्थालय निधि के लिए एक लाख रुपया एकत्रित किया जाय।

केरल इस साधु-प्रयास के लिए बधाई का पात्र है। क्या अन्यत्र ऐसी ही समितियाँ नहीं बन सकतीं और वे इसी प्रकार पुस्तकालय आन्दोलन नहीं चला सकतीं?

●

आज की समस्या

पुस्तक-व्यवसाय को भ्रष्टाचार से बचाएँ !

—श्री राधारमण शर्मा

आज जनरल पुस्तकों की खरीद-बिक्री के सिलसिले में भी भ्रष्टाचार की कहानियां सुनी जा रही हैं। कहा जाता है कि "पुस्तक-व्यवसायी अपनी पुस्तकें कोर्स में लगवाने के लिए तो भ्रष्टाचार का सहारा लेते ही थे, जाली पुस्तकें छपती ही थीं, अब जनरल पुस्तकों की खरीद-बिक्री के मैदान में भी भ्रष्टाचार के घोड़े दौड़ने लगे हैं।

ज्ञान और विद्या का प्रसार करने वाले पुस्तक-व्यवसाय के सम्बन्ध में ऐसी बातें सुन कर दुख होता है, गुस्सा भी आता है, जी चाहता है कि कहने वालों को चुनौती दी जाय, उनसे प्रमाण माँगे जायं और इस प्रकार इस पवित्र व्यवसाय को इस कलंक से बचाया जाय। फिर ख्याल आता है कि भ्रष्टाचार आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पहुंच गया है, परिस्थितियों के दोष और अनायास सिद्धि प्राप्त करने की लालसा ने नतिकता को लगभग निर्वासित कर दिया है। इस परिस्थिति नें कहीं जनरल पुस्तकों के क्षेत्र पर भी आक्रमण तो नहीं किया ? जिसके कारण सारा पुस्तक-व्यवसाय बदनाम हो रहा है ? अच्छा होगा कि लोगों से विवाद करने के पहले जनरल पुस्तकों की खरीद और बिक्री की स्थिति पर विचार किया जाय और देखा जाय कि कहीं यह स्थिति ही तो इस क्षेत्र में भ्रष्टाचार को पैर पसारने की सुविधा नहीं दे रही है।

जनरल पुस्तकों की बिक्री की स्थिति आज यह है कि फुटकर बिक्री समाप्त ही हो गई—पुस्तकालयों, विद्यालयों और सरकारी संस्थाओं में ही इनकी थोड़ी-बहुत खरीद हो रही है। यह खरीद केन्द्रीकरण की प्रणाली के आधार पर इस प्रकार होती है कि प्रान्त, डिवीजन या जिले भर के विद्यालय पुस्तकालयों अथवा सब संस्थाओं के लिए पुस्तकें एक ही स्थान पर बड़ी मात्रा में खरीद ली जाती हैं। यह काम कहीं विशिष्ट सरकारी अधिकारी करते हैं, कहीं उनके साथ ऐसी कमेटियाँ जुड़ी हैं जिनमें राजनीतिज्ञों का प्राधान्य है। अपने प्रकाशनों की खपत के लिए यत्किंचित मार्ग बना कर अपने व्यवसाय को किसी न किसी प्रकार चालू रखने का प्रयत्न करने वाले प्रकाशक को इन्हीं अधिकारियों या राजनीतिज्ञों की शरण लेनी पड़ती है—इनकी कृपा-दृष्टि प्राप्त करने के लिए दौड़-धूप करनी पड़ती है। यह दौड़-धूप इसलिए भी जरूरी हो जाती है कि अधिकारियों या राजनीतिज्ञों की कृपा से लायसेन्स, कोटा, परमिट आदि प्राप्त करके धन कमाने का एक नया तरीका भी इस जमाने में निकल आया है। अधिकारियों या राजनीतिज्ञों के कृपा-पात्रों की संख्या थोड़ी नहीं हो सकती। विशेषतः आज के राजनीतिज्ञ के लिए सबसे बड़ा सिर दर्द यही है कि वह अपने मतदाताओं को या उनके मुड्ढों को अपनी मुट्ठी में रखे रहें। उसके हाथ में आये सब अधिकारों और सब साधनों का विनियोग इसी प्रयत्न में हो जाय तो इसे परिस्थितिवश स्वाभाविक ही कहा जायगा। परिणामस्वरूप सरकारी खरीदों के अवसर पर कुछ ऐसे सज्जन भी कहीं-कहीं दीख पड़ते हैं जो सरकार की खरीद-विशेष को ही सामने रख कर दो-चार उल्टी-सीधी किताबें छाप लेते हैं। नियमित रूप से पुस्तक-व्यवसाय करने वाले और वर्ष में १००-५० छोटी-बड़ी पुस्तकें छापने तथा बेचने वाले प्रकाशकों तथा विक्रेताओं को अपने सहयोगी बन्धुओं के अतिरिक्त इन नवागन्तुकों के साथ भी प्रतिद्वन्द्विता करनी पड़ती है। इस प्रतिद्वन्द्विता में विजय प्राप्त करने के बाद ही वह अपनी व्यावसायिक योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए थोड़ी बहुत पूंजी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता अपनी पुस्तकों की उपयोगी सामग्री और उनकी सफाई-छपाई तथा विषयानुकूल रूपसज्जा के आधार पर इस प्रतिद्वन्द्विता के मैदान में स्वस्थ रूप से विजय प्राप्त कर सकते हैं परन्तु पुस्तकों की

सरकारी खरीदों में भी टेंडर प्रणाली का दौरदौरा प्रमाणित करता है कि पुस्तकों की इन विशेषताओं को कोई महत्व ही नहीं दिया जाता। इस प्रणाली के अनुसार खरीदने वाले अधिकारी पुस्तकों पर दिए जाने वाले कमीशन का टेंडर मांग लेते हैं और जो अधिक से अधिक कमीशन देता है उसे आर्डर दे देते हैं। अच्छी पुस्तकों का चुनाव करने, उनकी सूची बनाने और उनके लिए कमीशन पूछने की आवश्यकता भी प्रायः नहीं समझी जाती। ऐसी स्थिति में उपयोगी सामग्री और उपयुक्त रूपसज्जा लेकर आगे बढ़ने वाले को भी अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी अन्य उपाय की खोज भी आवश्यक प्रतीत हो सकती है और वह उपाय सर्वाधिक सरल यही हो सकता है कि संबंधित अधिकारी या राजनीतिज्ञ को प्रसन्न कर लिया जाय। यदि किसी ने यही सरल मार्ग ले लिया तो भ्रष्टाचार का जन्म हो गया! भारत में भ्रष्टाचार के इतिहास पर एक दृष्टि डाली जाय तो मालूम होगा वह यहाँ मांग और संभरण (डिमाण्ड और सप्लाई) के ऐसे ही चक्र से बढ़ा है। द्वितीय महायुद्ध के समय वस्तुओं के सैनिक उपयोग को प्राथमिकता दी गई, नियंत्रण तथा वितरण के कई कायदे-कानून बने जिनसे वस्तुओं का वितरण केन्द्रीभूत हो गया। जिनको वस्तुओं की अधिक या तीव्र आवश्यकता पड़ी उन्होंने उन केन्द्रों को प्रभावित किया और भ्रष्टाचार की मात्रा बढ़ गई, उसके क्षेत्र फैल गये। महायुद्ध के बाद वस्तुओं के सैनिक उपयोग की प्राथमिकता का प्रश्न समाप्त हो गया परन्तु जिन दाढ़ों को भ्रष्टाचार के नये खून का स्वाद लग गया था वे खुली रह गईं। नियन्त्रण और वितरण के कायदे-कानून किसी न किसी रूप में बरकरार रहे—बल्कि जनता के दैनिक जीवन में उनका हस्तक्षेप बढ़ता ही गया। आज स्थिति यह हो गई है कि भ्रष्टाचार की लानत से कोई भी क्षेत्र सुरक्षित नहीं दीख पड़ता।

जनरल पुस्तकों की बिक्री और भ्रष्टाचार के इतिहास के इस विहंगावलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनरल पुस्तकों के क्षेत्र में भ्रष्टाचार का प्रवेश हुआ है तो उसके लिए पुस्तकों की सरकारी खरीद की केन्द्रीकरण वाली प्रणाली उत्तरदायी है। यदि यह प्रणाली न होती तो पुस्तकों के लिए ५० या १०० या २०० रुपये का अनुदान पाने वाले विद्यालय आदि स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से या पासवाले नगर के पुस्तक-विक्रेता से पुस्तकें खरीदते। जाहिर है कि इस राशि के लिए विक्रेता व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता के कारण उन्हें कुछ देना भी चाहता तो हाथी-घोड़े न दे सकता—विक्रेता के लिए उसकी ओर से प्रस्तुत प्रलोभन आकर्षण विहीन रहता और वह ठोंक-बजा कर उपयोगी पुस्तकें ही लेता और उनके लिए उपयुक्त दाम ही देता। केन्द्रित खरीद की प्रणाली से छोटी-छोटी रकमें एकत्रित रूप में लाखों में जमा हो जाती हैं—उनके लिए भ्रष्टाचार के दोनों किनारों की लार टपक सकती है।

इस निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद जनरल पुस्तकों के व्यवसाय को भ्रष्टाचार से बचाने के लिए आवश्यक हो जाता है कि पुस्तकों की सरकारी खरीद की प्रणाली बदली जाय अर्थात् केन्द्रित खरीद का विकेन्द्रीकरण कर दिया जाय। विकेन्द्रीकरण से अनुदान प्राप्त करने वाली प्रत्येक इकाई स्वयं और थोड़ी मात्रा में अपने निकटस्थ विक्रेता से पुस्तकें खरीदेगी जिससे भ्रष्टाचार को पनपने की गुंजायश न रहेगी। केन्द्रीकरण की नीति का एक दुष्परिणाम यह भी हुआ है कि छोटे-छोटे स्थानों के पुस्तक-विक्रेता खत्म हो रहे हैं—पुस्तक-व्यवसाय का भी केन्द्रीकरण शुरू हो गया है। डाक की बढ़ी हुई दरों के कारण जब छोटे स्थानों तक फुटकर पुस्तकों की पहुँच कठिन हो गई है तब व्यवसाय की यह केन्द्रित अवस्था उसे पंगु ही बना रही है। विकेन्द्रीकरण से छोटे-छोटे स्थानों पर भी पुस्तक-विक्रेता बढ़ेंगे और पनपेंगे जिससे जनरल पुस्तकों की बिक्री में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। केन्द्रीकरण की प्रणाली के स्थान पर विकेन्द्रीकरण आ जायगा तो मौसमी प्रकाशक भी समाप्त हो जायंगे और प्रकाशन-व्यवसाय अधिक स्थिर एवं उपयोगी हो जायगा। भारत के गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने जब भ्रष्टाचार के उन्मूलन का दृढ़ संकल्प कर लिया है तब हम संबंधित महानुभावों से आग्रह करेंगे कि पुस्तकों की सरकारी खरीद से केन्द्रीकरण की प्रणाली को समाप्त कर दें और उसके स्थान पर विकेन्द्रीकरण की प्रतिष्ठा करें।

आशा है कि हमारे इस आग्रह पर ध्यान दिया जायगा और पुस्तकों का पवित्र व्यवसाय इस नये रोग से बचाया जायगा परन्तु प्रकाशक और विक्रेता बन्धु इस

आशा की पूर्ति की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रख कर बैठे न रहें। अपने आपको इस कलंक से बचाने के लिए वे आज से ही प्रयत्न प्रारम्भ कर दें। वे इस समस्या पर इस दृष्टि से भी विचार करें कि संसार में 'बदनाम करो और मार दो' की नीति भी चलती है। पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से पहले उस क्षेत्र में भ्रष्टाचार के नारे गूंजे थे। उन नारों की संतोषप्रद छानबीन तक नहीं हुई और प्रकाशकों को उसका दण्ड मिल गया—पाठ्यपुस्तकों का क्षेत्र प्रकाशकों के हाथ से निकल गया—अब विक्रेताओं के हाथ से उनकी बिक्री का क्षेत्र भी जा रहा है और जनरल पुस्तकों के मैदान में भ्रष्टाचार का नारा आ गया है। सरकारी और अर्ध-सरकारी प्रकाशनों की बहुविध योजनाओं के मौसम में प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता दूरदर्शिता से काम लें और जनरल-पुस्तकों के क्षेत्र में भ्रष्टाचार को किसी मूल्य पर भी पैर न रखने दें। कहीं ऐसा न हो कि प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के लिए यह मैदान भी रेगिस्तान बन जाय, इसमें लगी करोड़ों की पूंजी रद्दी में चली जाय और इससे रोजी-रोटी कमाने वाले लाखों आदमी बेकार होकर महंगाई के इस विकराल समय में बिल्कुल पिस जायें। ●

विदेशों में प्रकाशन

ईरान में पुस्तक-व्यवसाय

ईरान के शिक्षामंत्रालय ने नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य प्रस्तुत करने की एक योजना बनाई और सर्वोत्तम पाण्डुलिपि पर लंबे पुरस्कार की घोषणा की परन्तु व्यवसायी प्रकाशकों ने उस योजना में अधिक उत्साह के साथ भाग नहीं लिया। इस उदाहरण से वह उदासीनता ही उजागर हुई है जो ईरानी प्रकाशकों में अपने व्यवसाय के प्रति साधारणतया फैली हुई है। वहाँ छपाई के आधुनिकतम साधन उपलब्ध हैं परन्तु प्रकाशकों की उदासीनता के कारण प्रेसों की स्थिति भी संकटापन्न हो रही है। जांच-पड़ताल के बाद ईरानी प्रकाशकों की उदासीनता के निम्नलिखित कारण ज्ञात हुए हैं :

- ईरान के अधिकांश प्रकाशक अपने देश के सामाजिक

और शैक्षणिक परिवर्तनों से अपरिचित हैं। अपनी जनता की आवश्यकताओं की खोज के साधन उनके पास नहीं हैं। वे अस्त-व्यस्त ढंग से काम करते हैं। वर्ष में पाठ्य-पुस्तकों को छोड़ कर वे लगभग ८० पुस्तकें प्रकाशित कर देते हैं परन्तु दो वर्ष में उनकी दो-तीन हज़ार से अधिक प्रतियाँ नहीं बेच पाते, इसीलिए उनमें नये क्षेत्र उत्पन्न करने का उत्साह नहीं रह गया।

- ईरानी प्रकाशक अपने भ्रमणशील एजेंट नहीं रखते। अपनी पुस्तकें शहरों में ही पुस्तक-विक्रेताओं के द्वारा ही बेचते हैं। फलतः उनको नई आवश्यकताओं की उपयोगी सूचनाएँ नहीं मिलतीं। थोक पुस्तक-विक्रेताओं की कुल संख्या वहाँ ३० है, फुटकर-विक्रेता अवश्य ३०० हैं परन्तु ये सबके सब शहरों में हैं—गाँवों में कोई पुस्तक-विक्रेता नहीं है।
- ईरानी प्रकाशक तुरत मिलने वाले लाभ पर अधिक ध्यान देते हैं। देर में मिलने वाले मुनाफे का उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं है। राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों में उनको अपनी पूंजी के डूब जाने का भय भी रहता है। इसीलिए वे किसी ऐसे प्रकाशन में पैसा नहीं लगाते जिसमें मुनाफा देर में मिलने वाला हो।
- ईरानी प्रकाशकों का कोई संगठन नहीं है। इसलिए निरर्थक प्रतियोगिता बढ़ गई है—वे एक दूसरे की टाँग खींचने की दिशा में दौड़ते अधिक दीख पड़ते हैं।
- ईरान में कागज़ बनाने वाली कोई कम्पनी नहीं है और १,८९,५४,७०४ की जनसंख्या में से दो-तिहाई गाँवों में रहते तथा अशिक्षित हैं।

इन कारणों से ईरान का पुस्तक-व्यवसाय लाभदायक स्थिति में तो नहीं है, इस व्यवसाय में लगे लोगों को सामाजिक सम्मान भी प्राप्त नहीं है। अर्थकष्ट तो उन्हें सदा घेरे ही रहता है।

अब प्रतिवर्ष दो लाख व्यक्ति शिक्षित होने लगे हैं और शिक्षा प्रसार की योजनाएँ गाँवों तक पहुँच रही हैं। इधर प्रकाशकों ने भी अपने आपको संगठित करना शुरू किया है। सम्भव है कि परिस्थिति कुछ पलट जाय और ईरान में पुस्तक-व्यवसाय भी सम्पन्न हो जाय। ●

नागरी प्रचारिणी सभा
काशी

हिंदी शब्द सागर

और

संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर

के उपरांत

लघु शब्द सागर

मूल्य ११.००

लघुतर शब्द सागर

मूल्य ६.००

प्रकाशित

तथा

हिंदी विश्वकोश प्रथम खंड

(परिवर्द्धित एवं संशोधित) यंत्रस्थ

पुस्तकालयों से लाभ कैसे उठाएँ

—श्री परमानन्द दोषी, एम०ए०

पुस्तकालय खोल देना और बात है और उनसे अपेक्षित लाभ उठाना और बात। पुस्तकालय खोल देने से विशेष कुछ होता-जाता नहीं है। उनका उपयोग करना चाहिए।

उनका उपयोग कैसे किया जाए—यह पुस्तकालय-विज्ञान के जाने-माने लेखक श्री दोषीजी ने आकाशवाणी के पटना केन्द्र से अपनी वार्ता प्रसारित करते हुए बतलाया था। उसी वार्ता को आकाशवाणी के सौजन्य से यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। —संपादक

पुस्तकालय उपयोगी संस्था है। इसका उपयोग करके लाभ उठाया जा सकता है। इसके द्वारा हर किसी का हित और कल्याण संभव है। पुस्तकालय बहुत प्रकार के होते हैं—सार्वजनिक, व्यक्तिगत, विभागीय, शासकीय आदि। परन्तु आमतौर पर पुस्तकालय का मतलब सार्वजनिक अथवा लोक पुस्तकालय ही होता है। पुस्तकालय चाहे किसी प्रकार का हो, सबका उद्देश्य अपने पाठकों को फायदा ही पहुंचाना रहता है। पाठक किसी पुस्तकालय-विशेष के स्वामी हों अथवा उसके सामान्य सदस्य, जब वे उसकी शरण में जाएंगे, उन्हें हर प्रकार से लाभ ही पहुँचेगा। पुस्तकालय से किसी प्रकार की हानि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। कहना चाहें, तो कह सकते हैं कि पुस्तकालय कल्पवृक्ष है और उसकी पाठ्य-सामग्रियाँ कामधेनु गाय। जिस प्रकार जो भी, जब कभी, चाहे कल्पवृक्ष की शीतल-सुखद छांव में बैठकर अपने तन-मन की थकान मिटाकर नई चेतना और नई स्फूर्ति हासिल कर सकता है, उसी प्रकार पुस्तकालय के प्रांगण में जाकर हर कोई नई प्रेरणा, नया संबल और नूतन संदेश भली भांति प्राप्त कर सकता है। जिस तरह कामधेनु गाय से जब कोई चाहे पुष्टिकारक सरस दूध की सहजतापूर्वक प्राप्ति कर ले सकता है, उसी तरह हर क्षण और हर घड़ी पुस्तकालय की पाठ्य-सामग्रियों के द्वारा हर व्यक्ति बड़ी आसानी से अपना मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन कर सकता है।

इन्हीं गुणों के कारण पुस्तकालयों की महिमा अपार समझी गई है। शिक्षण-संस्थाओं और मनोरंजन-केन्द्रों में पुस्तकालयों को ही सबसे ऊंचा स्थान दिया गया है। आप स्वयं देखते होंगे कि प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्चतम शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालय में उनके पुस्तकालय जुड़े हुए हैं। यदि इनके साथ पुस्तकालय संलग्न न करें, तो इन से प्राप्त शिक्षा अधूरी और एकांगी रहेगी। यही बात मनोरंजन केन्द्रों के साथ है। आप छोटे या बड़े किसी क्लब अथवा प्रमोदगृह को लेकर देखें, आप देखेंगे कि उनके साथ-साथ एक छोटा या बड़ा पुस्तकालय अवश्य ही लगा हुआ रहता है। पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और अन्य पाठ्य-सामग्रियों के अभाव में मनोरंजन का हर साधन अधूरा रहता है।

इन बातों से पुस्तकालयों की उपयोगिता और महत्ता पूर्णतः प्रमाणित हो जाती है। और इस महत्ता और उपयोगिता की बात से विश्व के समस्त देश प्रभावित हैं। हर सभ्य और शिक्षित मनुष्य पुस्तकालयों की आवश्यकता और अनिवार्यता का कायल है। आप विश्व के किसी भी कोने में चले जाएँ, आपको हर जगह पुस्तकालयों के दर्शन होंगे। पुस्तकालयों को देश-विदेश की महानता का सर्वत्र प्रतीक समझा जाता है। शिक्षित और सभ्य घरों तथा परिवारों में भी आपको पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को देखने का सुयोग मिलेगा। इससे पुस्तकालयों की व्यापकता का परिचय मिलता है।

पुस्तकों में ज्ञान-रश्मियां छिपी होती हैं। उनमें विद्या बुद्धि की समस्त बातें सन्निहित रहती हैं। हमारे पूर्वजों के प्रेरक विचार और अनमोल अनुभव पुस्तकों और पोथियों के पन्नों में लिपिबद्ध रहते हैं। उन्हें संगृहीत करके पुस्तकालयों के खजानों में रखा जाता है, जिनका सर्वसाधारण पठन-पाठन कर अपने जीवन को सजाता और सँवारता है। मनुष्य मरणशील होता है। मृत्यु आती है और अपनी गोद में उसे सुला लेती है। मनुष्य की नश्वर काया नष्ट हो जाती है। रह जाते हैं तो सिर्फ उसके विचार, उसके

अनुभव। पुस्तकों का रूप धारण करके व्यक्ति-विशेष का विचार उसे अमर बना देता है। ऐसी हालत में पुस्तकें महान विभूतियों के व्यक्तित्वों का ही प्रतिनिधित्व करती हैं। अतएव पुस्तकों को पढ़ना क्या है, उनके प्रणेताओं के व्यक्तित्व का संपर्क-लाभ करना है। इस दृष्टि से देखने पर भी पुस्तकालयों की उपयोगिता सहज में ही सिद्ध हो जाती है।

पर पुस्तकालय की उपयोगिता की बात और है और उस उपयोगिता को समझते हुए वास्तविक रूप में पुस्तकालयों से लाभ उठाने की बात और है। आयें, हम संक्षेप में उनसे लाभ उठाने की बातें करें। अपने देश में पुस्तकालयों की उतनी कमी नहीं है। यहाँ बड़े-बड़े पुस्तकालय तो हैं ही, छोटे-छोटे पुस्तकालयों की भी भरमार है। बड़े-बड़े शहरों और नगरों में तो पुस्तकालय खुले हुए हैं ही, छोटे-छोटे कस्बों और गांवों में भी इनकी प्रचुरता है और जहाँ यह नहीं है, वहाँ तेजी से इसकी स्थापना के लिए प्रयत्न हो रहा है। और वह दिन दूर नहीं है, जब एक-एक शहरी मुहल्ले और प्रत्येक गांव और कस्बों में एक-एक पुस्तकालय हो जाएगा। मगर पुस्तकालय के रहने अथवा हो जाने मात्र से ही हमारा काम चलने का नहीं। गुड़ कहने से नहीं, खाने से मुँह मीठा होता है। प्रायः यह देखा जाता है कि पुस्तकालय होने के बावजूद लोग उससे लाभ नहीं उठाते। उनकी ओर नहीं जाते यह गलत बात है। पुस्तकालय कोई ऐसा 'शो केस' अथवा दिखावे का बक्स नहीं है, जहाँ रंग-बिरंगी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएं सजाई सँवारी रखी हों। पुस्तकालय की पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ देखने के लिए नहीं, अध्ययन-मनन और पढ़ने-पढ़ाने के लिए होती हैं। अतएव हर किसी का यह प्रयास होना चाहिए कि वह पुस्तकालयों और वाचनालयों में जाकर पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़े। समय का रोना आलसी लोग रोते हैं।

अच्छे काम के लिए थोड़ी फुर्सत निकाल लेना बुद्धिमानी है, बेवकूफी नहीं। कुछ कम पढ़े-लिखे लोग, अथवा जो एकदम अनपढ़ हैं, उनकी भी पुस्तकालयों के प्रति अजीब धारणा होती है। ऐसे लोग प्रायः कहा करते हैं कि पुस्तकालय तो विद्वानों और पूर्ण शिक्षितों के लिए होता है—हमें उनसे क्या फायदा होगा? मगर ऐसी धारणा भ्रममूलक है। पुस्तकालय मात्र उपयोगी नहीं, बल्कि सर्वोपयोगी संस्था है। इससे विद्वान और निरक्षर सभी लाभ उठा पाते हैं। क्योंकि पुस्तकालयों में सब प्रकार की पुस्तकें और सामग्रियाँ होती हैं। पुस्तकालय-सेवाओं का उत्तरोत्तर विकास भी दिनों-दिन होता जा रहा है। पुस्तकालयों द्वारा पुस्तक पढ़कर सुनाए जाने की व्यवस्था होने लगी है। श्रव्य दृश्य उपकरणों के सहारे, भाषण और चलचित्र के द्वारा भी शिक्षा दी जाने लगी है। भ्रमणशील पुस्तकालय के द्वारा पाठकों के घरों तक पुस्तकें पहुँचाई जाने की व्यवस्था भी हो गई है। पाठ्य सामग्रियाँ भी विविध प्रकार की वहाँ संग्रहीत रहने लगी हैं। जिनसे विद्वान और उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के साथ-साथ साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। स्वास्थ्य-सफाई, नैतिक सुधार, सफल जीवन आदि बहुतेरे विषय ऐसे हैं, जिनसे संबंधित साहित्य पढ़ कर सभी अपने जीवन को उन्नत और सफल बना सकते हैं। गाँव के लोगों के लिए उनके व्यवसाय तथा कुटीर उद्योग, कृषि, बागबानी, पशुपालन सम्बन्धी पुस्तकें विशेष रूप से उपादेय हो सकती हैं और वे अपने-अपने पुस्तकालयों से संपर्क स्थापित करके अपने जीवन और व्यवसाय को उन्नत कर सकते हैं।

अभी कुछ क्षण पहले हमने कहा है कि पुस्तकालयों से लोग इस बहाने पर भी लाभ उठा नहीं पाते कि उन्हें समय का अभाव है। पर यह बात नहीं है। शहरों और गाँवों में हम देखते हैं कि अपने व्यवसाय से लोगों का जो समय बच जाता है, उसे सोकर अथवा ताश खेलकर या अन्य दुर्व्यसनों में योंही गुजार देते हैं और जो लोग ऐसा नहीं करते, वे निठल्ले बैठे रहते हैं या लम्बी तान कर सोते हैं। बेकार बैठे रहने से तरह-तरह की खुराफात उनके मन में उपजती है और वे आपस में झगड़े-फसाद किया करते हैं। हमारी स्त्रियों के साथ यह बात ज्यादा होती है।

ऐसे तमाम लोगों के लिए हमारी सलाह होगी कि वे पुस्तकालयों की सेवाएँ प्राप्त करें और जीवन की हर अनमोल घड़ी का उचित उपयोग करें।

यह बड़ी ही खुशी की बात है कि हमारी सरकार पुस्तकालयों की उपयोगिता समझ कर इनके संस्थापन में हर प्रकार का सहयोग देती जा रही है। बहुतेरे समाज-सेवक, शिक्षा-आन्दोलन के कार्यकर्त्ता भी इस दिशा में बड़ी मुस्तैदी से कार्य कर रहे हैं। सामान्य जनता में भी इधर विगत पन्द्रह वर्षों से देश के आजाद होने के कारण बड़ी ही चेतना जगी है। शिक्षा के प्रति उनका अनुराग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। ये सारी बातें देश में पुस्तकालयों के समुचित प्रचार-प्रसार के लिए बड़ी ही उत्साहवर्द्धक, प्रेरक और अनुकूल हैं। इस स्थिति से समस्त लोगों को अपेक्षित लाभ उठाना आवश्यक है।

★

नई हिन्द पॉकेट बुक्स

- **सच और झूठ** (उपन्यास) मन्मथनाथ गुप्त
  'सच और झूठ' की भूलभुलैयों में घिरे एक पिता, पुत्र और उनके प्रेम-सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक कहानी।
- **तीसरा आदमी** (उपन्यास) कमलेश्वर
  नए कहानीकारों में कमलेश्वर प्रमुख हैं और 'तीसरा आदमी' उनका नवीनतम उपन्यास है।
- **सोया हुआ सपना** (उपन्यास) राजेन्द्र अवस्थी
  एक चित्रकार और एक विवाहिता नवयुवती की कसक भरी प्रेम-कहानी।
- **महापुरुषों के साथ** (संस्मरण) सेठ गोविंद दास
  भारतीय महापुरुषों के निकट सम्पर्क पर आधारित रोचक एवं सजीव संस्मरण।
- **पथ के दावेदार** (उपन्यास) शरत्‌चन्द्र की श्रेष्ठ कृति।
- **नीरज की पाती** (काव्य) नीरज
  'नीरज' का बहुचर्चित चिरप्रतीक्षित कविता संग्रह
- **नेहरू ने कहा** (संकलन) केवल धीर
  नेहरूजी के भाषणों, लेखों और पुस्तकों से संग्रहीत सूक्तियां तथा उनके व्यक्तिगत संस्मरण एवं विचार।
- **संतवाणी** (सूक्तियां) मानसहंस
  संसार के महान संतों की प्रेरणाप्रद अमर वाणी।

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

- **भारत ज्ञान कोश : १९६४**

भारत और संसार के बारे में आधुनिकतम प्रामाणिक जानकारी से भरपूर अत्यन्त उपयोगी पुस्तक।

(केवल इसका मूल्य दो रुपये—पृष्ठ संख्या २५०)

हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लि०, शाहदरा, दिल्ली-३२

19/8/67

सम्पादक के नाम पत्र

पुस्तकों का मूल्य

मान्यवर,

पुस्तकों की समालोचना करने वाले कई कृपालु प्रायः लिख देते हैं कि मूल्य कुछ अधिक है, कम होता तो अच्छा रहता। मौखिक रूप में भी ऐसी शिकायतें सुनने का मौका मिला है कि प्रकाशक पुस्तकों का मूल्य बहुत अधिक रखने लगे हैं। इतने पन्ने की किताब और इतनी कीमत!

ऐसी आलोचनाएँ पढ़ते और ऐसी शिकायतें सुनते समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ है कि ये सब महानुभाव उस ऊँची श्रेणी से संबंध रखते हैं जो जागरण में ही स्वप्न देखने की आदी हो चुकी है। यह कह कर इनको जगाया नहीं जा सकता कि दैनिक जीवन की प्रत्येक अनिवार्य वस्तु जब महँगी ही नहीं दुर्लभ भी हो रही है तब पुस्तकें सस्ती और सुलभ कैसे रह जायेंगी! कागजी, प्रेस वाले, बाइंडर और प्रकाशन संस्थाओं के कर्मचारी क्या किसी दूसरी दुनिया में रहते हैं जो उन पर महँगाई का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा? आप सब समर्थ महानुभाव यदि इस सर्वग्रासी महँगाई का मुँह बंद करने में समर्थ नहीं हैं तो बिचारी पुस्तक की गरदन नापने का सद्प्रयास क्यों कर रहे हैं?

आज एक ऐसे महानुभाव की लेखनी से यह बात निकली है जो स्वयं काफी बड़े और विख्यात प्रकाशक हैं। इसलिए आपकी सेवा में ये पंक्तियाँ भेज रहा हूँ।

उपरोक्त सज्जन ने अपने प्रकाशन संस्थान के मासिक बुलेटिन में लिखा है कि "ग्रेजुयेट और पोस्ट-ग्रेजुयेट विद्यार्थियों को अच्छी पुस्तकें नहीं मिलतीं, क्योंकि वे महँगी होती हैं, क्योंकि प्रकाशन गृह पूंजीपतियों के हाथ में हैं—वे यथासंभव अधिक मुनाफा कमाने के लिए लागत का तिगुना-चौगुना दाम रखते हैं। उधर अपने दिमाग का तेल निकालने वाला लेखक अपने श्रम का उचित पुरस्कार भी नहीं पाता।" अंत में अपील की गई है कि शिक्षामंत्रालय इस काम को अपने हाथ में ले जिससे किसी हद तक बेकारी भी दूर हो और विद्यार्थियों को अच्छी तथा सस्ती पुस्तकें भी मिलने लगें।

भगवान् से प्रार्थना है कि वह इन पंक्तियों में निहित मनोरथ को सफल करे परंतु इन पंक्तियों के बगल में इसी प्रकाशन संस्थान की विद्यार्थियोपयोगी पुस्तकों की जो विज्ञापनी प्रस्तुत की गई है उसमें डिमाई साइज़ की १०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १०.०० और ५५८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २०.०० घोषित हुआ है। यह क्या लागत का तिगुना-चौगुना बल्कि पंचगुना-छगुना मूल्य नहीं है? तो क्या लेखक महोदय भी उन पूंजीपतियों में सम्मिलित हैं जिनके प्रति उनकी पंक्तियों ने घृणा उत्पन्न करने का प्रयास किया है?

वास्तविकता यह जान पड़ती है कि यह टिप्पणी (यदि इसका उद्देश्य जान-बूझकर भ्रम फैलाना और कुल्हाड़ी का बेंट बनाना नहीं है तो) किसी ऐसे अनाड़ी आदमी ने लिखी है जिसे प्रकाशन व्यवसाय का ककहरा भी मालूम नहीं है। पुस्तक में लागत का अर्थ उसके कागज़, छपाई, ब्लाक, कवर, जिल्द और बाइंडिंग का खर्च माना जाता है। लागत का कम से कम चौगुना मूल्य इसलिए रखना पड़ता है कि यदि २५ प्रतिशत लागत आ गई तो प्रकाशक को उसके बाद विक्रेता को कमीशन और लेखक को रायल्टी भी देनी पड़ती है। कमीशन सवा तैंतीस और कहीं-कहीं ४० प्रतिशत से कम नहीं जाता, रायल्टी की औसत १५ प्रतिशत बैठती है। ५० या ५५ प्रतिशत के इस व्यय में लागत के २५ प्रतिशत मिलाये गये तो ७५ या ८० प्रतिशत हो गये। अब जो २०-२५ प्रतिशत बचे उसी में प्रकाशक को पुस्तक का विज्ञापन करना है, अपने दफ्तर और गोदाम का खर्च चलाना है, अपनी पूंजी का ब्याज निकालना है और उस हानि का भी ध्यान रखना है जो पुस्तकों के बच जाने की स्थिति में दीमकों द्वारा चाट जाने के कारण उसे उठाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वह पुस्तक पर लागत का तिगुना मूल्य रखता है तो घर फूंककर तमाशा देखने का इंतजाम करता है और चौगुना मूल्य रखता है तो अपने पेट पर पट्टी बांधकर ही धंधा चलाता है। यही कारण है कि आज लागत का चौगुना मूल्य प्रकाशकों में असंतोष उत्पन्न कर रहा है और वे इस व्यवसाय से खिचते जा रहे हैं।

कुछ प्रकाशक इस खींचतान में भी रुपया कमा रहे होंगे परंतु उनकी आय के मार्ग पुस्तकों पर छपे मूल्य नहीं, कोई और हथकण्डे होंगे। उन हथकण्डों का विरोध करने के लिए इन पंक्तियों का लेखक भी तैयार है परंतु अनर्गल प्रलाप के द्वारा सब प्रकाशकों को बदनाम करने की चेष्टा एक अपराध है जिसके लिए बुलेटिनी संपादक को प्रकाशक समुदाय से माफी माँगनी चाहिए।—'निर्गुण', दिल्ली

१५ अगस्त '६४ को नया सैट

उमेश प्रकाशन की परम्परा और आगे.........

हमारा समुद्र —भगीरथ मूल्य ३.००

समुद्र—विचित्रताओं का अद्वितीय भण्डार ! और इसके बारे में यह पुस्तक, जो समुद्र को हिन्दी में पहली बार इतने रोचक ढंग से प्रस्तुत कर रही है।

किशोर-उपन्यास-माला के नए पुष्प

प्रत्येक दो रुपए

सन्त कबीर —रामकृष्ण शर्मा

साप्ताहिक हिन्दुस्तान में धारावाही प्रकाशन का गौरव लेने के बाद अब पुस्तक रूप में नए-नए आकर्षक चित्रों से सुसज्जित।

गुरु अंगद देव —राजेश शर्मा

सिक्खों के द्वितीय गुरु की आकर्षक जीवनी—उपन्यास रूप में

शेक्सपियर-साहित्य-सीरीज़ के अन्तर्गत तीन उपन्यास

प्रत्येक दो रुपये

जूलियस सीज़र —रूपा० शत्रुघ्नलाल शुक्ल
राई से पहाड़ ,,
राजा लियर ,,

विश्वप्रसिद्ध शेक्सपियर के इन नाटकों पर आधारित किशोरों के लिए रोचक, सरस और सचित्र उपन्यास।

स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें या हमें लिखें।

नोट :—जो पुस्तक-विक्रेता अभी तक हमारी आकर्षक स्थायी-ग्राहक-योजना के सदस्य नहीं बने, वे हमारी यह योजना मंगा लें और सदस्य बन जाएँ ताकि उनको हमारे प्रकाशन छपने पर तुरन्त मिल जाया करें। हमारे प्रकाशन किसी भी पुस्तकालय में आसानी से बेचे जा सकते हैं।

उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

निबंध निचय : ले० सूरजप्रसादसिंह; प्र० राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआटोली, पटना-४; मू० ३.०० ।

नीलकंठ निराला : ले० रामेश्वरसिंह काश्यप; प्र० राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, पटना-४; मू० २.०० ।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : ले० डा० लक्ष्मीनारायण दुबे; प्र० हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग; सा० रा०; पृ० ५०३; मू० १५.०० । शोध प्रबंध ।

भूषण, मतिराम और अन्य भाई : ले० डा० किशोरी लाल गुप्त; प्र० विद्यामंदिर, ६० ब्रह्मनाल, वाराणसी; सा०डि०-८; पृ० ३५०; मू० ६.०० ।

हिन्दी काव्य विश्लेषण और मूल्यांकन : सं० डा० केसरीनारायण शुक्ल; प्र० विद्यामंदिर, वाराणसी; सा० डि०-८; मू० ५.०० ।

हिन्दी जैन भक्ति-काव्य और कवि : ले० डा० प्रेमसागर जैन; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५ । शोध प्रबंध ।

कविता

पंछी : क० स्व० गोपालसिंह नेपाली; प्र० राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, मछुआटोली, पटना-४; मू० १.०० । पु० मु० ।

रागनी : क० स्व० गोपालसिंह नेपाली; प्र० पूर्वोक्त; मू० १.५० । पु० मु० ।

उपन्यास

गंगा की धारा : ले० गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ४६४; मू० ९.०० । ऐतिहासिक ।

कहानी

आधुनिक हिन्दी कहानियाँ : सं० आचार्य नंददुलारे वाजपेयी; प्र० विद्यामंदिर, ६० ब्रह्मनाल, वाराणसी; सा० क्रा०-८; पृ० २२०; मू० ३.२५ । पु० मु० ।

झाड़ी : ले० श्रीकान्त वर्मा; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी ।

धूपछाँह : ले० प्रो० केशव महाँगाँवकर; प्र० गायत्री प्रकाशन, मेनरोड, गुलबर्गा; पृ० ९२; मू० २.०० ।

रेशम की गुड़िया : ले० चन्द्रकांत कुसनूरकर एम० ए०; प्र० गायत्री प्रकाशन, मेनरोड, गुलबर्गा; पृ० १३०; मू० २.०० ।

नाटक

आधुनिक एकांकी : डा० बच्चनसिंह, आचार्य आनंद; प्र० विद्यामंदिर, ब्रह्मनाल, वाराणसी; सा० क्रा०-८; पृ० २००; मू० ३.०० ।

संस्मरण

एक साहित्यिक की डायरी : ले० गजानन माधव मुक्तिबोध; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी । डायरी-कथा-निबंध ।

पुरंदर दास : ले० एस० के० रामचन्द्रराव; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० १०४; मू० १.५० ।

लोकमान्य तिलक और उनका युग : ले० स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ४००; मू० ४.५० । पु० मु० ।

साहित्यिकों के संस्मरण : ले० ज्योतिलाल भार्गव; प्र० राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआटोली, पटना-४; मू० ४.०० ।

किशोरोपयोगी

अमर जवाहरलाल : ले० प्रकाश नगायच; प्र० पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा कलां, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० ९६; मू० १.५० ।

नेहरू के हास्यविनोद : प्रकाश नगायच; प्र० स्टार पब्लिकेशंस, दरियागंज, दिल्ली-६; सा०फु०-१६; पृ० १२८; मू० १.०० ।

धार्मिक-सांस्कृतिक

धर्म, संस्कृति और राज्य : ले० गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१; सा० डि०-८; पृ० २१६; मू० ८.०० ।

भारत सावित्री : ले० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा०क्रा०; पृ० ३००; मू० ५.०० ।

वर्ष के व्रत और त्यौहार : ले० रामकृष्ण दास; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० १८०, मू० ४.५० ।

सत्यार्थप्रकाश : ले० महर्षि दयानंद; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा०क्रा०-२; पृ० ५८०; मू० १५.०० ।

टैकनिकल

इलैक्ट्रिक मोटर्स : ले० नरेन्द्रनाथ; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०-८, पृ० ५७२; मू० ८.२५ । पु० मु० ।

ट्रांजिस्टर डेटासर्किट : ले० आर० सी० विजय; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ३५६; मू० १०.५० ।

सचित्र रेडियो गाइड : ले० के० सी० माथुर; प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ३०६ मू० ६.०० ।

विविध

उद्यान शास्त्र : ले० एस०डी० श्रीवास्तव; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; मू० ३.०० द्वि० सं०; कृषि ।

तिब्बी इनसाइक्लोपीडिया : ले० हकीम राधेश्याम; प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली; सा० क्रा०-४, पृ० १८२; मू० ३.०० । पु० मु०; चिकित्सा ।

माध्यमिक रेखा गणित : ले० रमेशचन्द्र अग्रवाल, प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा, सा० क्रा०, पृ० ३२४, मू० २.५० ।

मृत्युदंड की प्रथा और इतिहास : ले० परिपूर्णानंद वर्मा; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा; सा० क्रा०; पृ० ३६०; मू० ६.२५ । अपराधविज्ञान ।

राजस्व के सिद्धांत : ले० डा० गिरिराज प्रसाद; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस, अस्पताल रोड, आगरा, सा० डि०; पृ० ४६२; मू० ७.५० । अर्थशास्त्र ।

लोहासिंह का नया मोर्चा : ले० रामेश्वर सिंह काश्यप; प्र० राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआटोली, पटना-४; मू० ३.०० ।

हमारा उत्तरी सीमांत : लेखिका माया; प्र० संक्रान्ति प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली । सा० फु०-८; पृ० १००; मू० ३.५० । सचित्र ।

ज्ञान-सागर : सं० रमेशचन्द्र 'प्रेम'; प्र० लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा० क्रा०-४; पृ० १०४; मू० ६.०० । संपूर्ण रंगीन ।

'सबमिशन' की अंतिम तिथि बढ़ी

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी लेखकों को 'कथा साहित्य' पर १५०० रु० के १२ पुरस्कार देने का निश्चय किया है। प्रविष्टि की अंतिम तिथि ३० सितम्बर, १९६४ कर दी गई है। अन्य शर्तें वही हैं।

संघ समाचार

सदस्यों से विशेष अनुरोध

अ०भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधान मन्त्री ने संविधान की धारा ४ (घ) की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए संघ के सदस्यों से कहा है कि इसके अनुसार प्रत्येक वित्तीय वर्ष के समाप्त होने के तीन मास के भीतर जिन सदस्यों का नये वर्ष का शुल्क प्राप्त नहीं होगा वे सदस्यता से स्वयमेव वंचित हो जायेंगे।

जिन सदस्यों का वार्षिक चन्दा अभी तक नहीं आया उनसे विशेष अनुरोध किया गया है कि वे अपना चन्दा अविलंब भेज दें।

सूचना सार

दिल्ली के कुछ पुस्तकालय

लाईब्रेरियन, हार्डिंग लाईब्रेरी, फव्वारा, दिल्ली-६
" सेण्ट्रल सेक्रेटेरियट लाईब्रेरी, नई दिल्ली
" दिल्ली पोलीटेकनीक, दिल्ली-६
" मिनिस्ट्री ग्राफ फाइनेन्स, भारत सरकार, नई दिल्ली
" डिफेन्स सरविस विंग लाईब्रेरी, नई दिल्ली
" इन्स्टीच्यूट ग्राफ इकोनोमिक ग्रोथ, नई दिल्ली
" प्लानिंग कमीशन, भारत सरकार, नई दिल्ली
" इंडियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीच्यूट, मथुरा रोड, नई दिल्ली-१
" ब्रिटिश कौन्सिल, २१, जोर बाग, नई दिल्ली
" दिल्ली विश्वविद्यालय लाईब्रेरी, दिल्ली
" यू०एस० ग्राई० एस० लाईब्रेरी, २४, करजन रोड, नई दिल्ली-१

लाईब्रेरियन, नेशनल कौंसिल ग्राफ एप्लाइड इकोनोमिक रिसर्च, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, दिल्ली

लाईब्रेरियन, ग्रमेरिकन लाईब्रेरीज़ बुक प्रोक्यूरमेण्ट सेंटर, शीला थियेटर बिल्डिंग, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, मारवाड़ी लाईब्रेरी, चांदनी चौक, दिल्ली-६
" जैन लाईब्रेरी, चांदनी चौक, दिल्ली-६

डायरेक्टर, लाईब्रेरी इन्स्टीच्यूट, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लाईब्रेरियन, सामुदायिक विकास ग्रौर सहयोग मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, रक्षामंत्रालय लाईब्रेरी, साउथ ब्लोक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, पब्लिकेशन यूनिट, शिक्षामंत्रालय, १, करजन रोड बैरिक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, हिस्टारिकल डिवीज़न, विदेश मंत्रालय, कपूरथला हाउस, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, डिपार्टमेन्ट ग्राफ रेवेन्यू, वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लोक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, खाद्य एवं कृषि मंत्रालय, डिपार्टमेण्ट ग्राफ फूड, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, गृहमंत्रालय, साउथ ब्लाक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, उद्योग मंत्रालय, उद्योग भवन, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, डिपार्टमेण्ट ग्राफ कम्पनी ला एडमिनिस्ट्रेशन लाईब्रेरी, रिजर्व बैंक बिल्डिंग, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन मिनिस्ट्री ग्राफ लेबर एण्ड एम्प्लायमेण्ट, नार्थ ब्लोक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, रेलवे बोर्ड (मंत्रालय) रेल भवन, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन मिनिस्ट्री ग्राफ स्टील, माइन एण्ड हैवी इन्जीनियरिंग लाईब्रेरी, उद्योग भवन, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन मिनिस्ट्री ग्राफ वर्क्स, हाउसिंग एण्ड रिहेब्लिटेशन, नार्थ ब्लोक, नई दिल्ली

सुपरिटेण्डेण्ट, लाईब्रेरी एण्ड रिसर्च सेक्शन डिपार्टमेण्ट ग्राफ लीगल एफेयर्स, मिनिस्ट्री ग्राफ ला, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी, ४२५, लक्ष्मीबाई नगर, ईस्ट विनय नगर, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन महोदय, दीवान चन्द पब्लिक लाईब्रेरी फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

सुपरिण्टेण्डेण्ट, लाईब्रेरी एण्ड रिसर्च सेक्शन, लेजिस्लेटिव डिपार्टमेण्ट, मिनिस्ट्री ग्राफ ला, नार्थ ब्लोक, नई दिल्ली

लाईब्रेरियन, ला कमीशन, मिनिस्ट्री ग्राफ ला, ५, जोर बाग, नई दिल्ली ३

लाईब्रेरियन, माइन एण्ड फ्यूल मिनिस्ट्री, नार्थ ब्लोक, नई दिल्ली

ग्रखिल भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी
नेशनल बुक ट्रस्ट की योजना

ज्ञात हुग्रा है कि नेशनल बुक ट्रस्ट ग्राफ इंडिया नवम्बर मास में ग्रखिल भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी करने का निश्चय कर रहा है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया है। समझा जाता है कि शिक्षा मंत्रालय के ग्रतिरिक्त यूनेस्को भी इसमें सहायक होगा। ट्रस्ट इस ग्रवसर पर ऐसी संगोष्ठियां भी ग्रामंत्रित करना चाहता है जिनमें भारत के प्रकाशक ग्रौर पुस्तक-

इस मास के नए प्रकाशन

★ **एक गधा नेफ़ा में** अपनी आत्मकथा सुनाने के बाद अब कृश्नचन्दर का जगत्-विख्यात गधा आपको नेफ़ा और नेफ़ा से पेकिंग तक की सैर कराने का प्रोग्राम लेकर आया है। चीन-सम्बन्धी अप्रिय तथ्यों पर व्यंगाघात। ३.५०

★ **लौटती लहरों की बांसुरी** इस उपन्यास द्वारा प्रसिद्ध कवि भारत भूषण अग्रवाल एक समृद्ध उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। प्रेमी-प्रेमिका की बीस वर्ष बाद की मुलाकात की पृष्ठभूमि में डूबती-उतराती मार्मिक कहानी। ३.००

★ **दर्पन** प्रसिद्ध नाटककार डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने इस नये, सशक्त एवं भावपूर्ण नाटक में आज के समाज को दर्पन दिखाया है। २.००

★ **ये महान कैसे बने** (लेखक राष्ट्रबन्धु) संसार के निर्धन घरों में जन्म लेनेवाले बालक जीवन में कैसे महान बने, यह सचित्र बाल पुस्तक इसी का सरस उत्तर प्रस्तुत करती है। १.००

★

नये कहानीकार : नई पुस्तकमाला

सम्पादक : राजेन्द्र यादव

★ **मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियां**
कमलेश्वर द्वारा लिखित व्यक्तिचित्र २.५०

★ **मन्नू भण्डारी की श्रेष्ठ कहानियां**
राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित व्यक्तिचित्र २.५०

राजपाल एण्ड सन्ज़,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

विक्रेता भाग लेंगे जिनमें पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के उपायों पर तथा प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं की अन्य समस्याओं पर विचार होगा। प्रदर्शनी में सब भारतीय भाषाओं की दो-तीन वर्ष में प्रकाशित उत्तम पुस्तकों को समाविष्ट करने का विचार है। बिक्री के लिए स्टालों की व्यवस्था भी हो सकती है।

कराची में पुस्तकालय और पुस्तकें

कराची विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा हुए सर्वे से मालूम हुआ है कि वहां कुल २५० पुस्तकालय हैं, उनमें ३७१६४२ पुस्तकें हैं। कराची की जनसंख्या इस संख्या से सात गुना अधिक है। कराची कारपोरेशन की ओर से केवल दो पुस्तकालय हैं, इनमें से एक में एक हजार और दूसरे में ३०६ पुस्तकें हैं। सब पुस्तकालयों में अश्लील और लचर पुस्तकों का औसत १० प्रतिशत है। जैकब लाइन, जेटलैण्ड लाइन और सदर की अंग्रेजी पढ़ी-लिखी आबादियों वाले पुस्तकालयों में यह औसत ६८ प्रतिशत हो गया है। मसजिदों में से केवल दो के साथ पुस्तकालय हैं। शेष हज़ारों मसजिदें 'बेकिताब' हैं।

(दै० 'कोहिस्तान' लाहौर)

मैट्रिक के बाद हिन्दी का अध्ययन

अहिन्दी भाषी राज्यों के विद्यार्थियों को १ हजार छात्रवृत्तियाँ

केन्द्रीय सरकार १९६४-६५ में मैट्रिक के बाद हिन्दी की पढ़ाई के लिए १ हजार छात्रवृत्तियाँ देगी।

जिन उम्मीदवारों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, जिन्होंने इस वर्ष (१९६४) हिन्दी विषय लेकर मैट्रिक या कोई समकक्ष परीक्षा पास की है, और जो अहिन्दी भाषी क्षेत्र या राज्य के रहने वाले हैं, उन्हें ये छात्रवृत्तियाँ दी जाएंगी। पर यह आवश्यक है कि छात्रवृत्ति के लिए अर्जी देने वाला विद्यार्थी किसी मान्य संस्था में पढ़ रहा हो।

जिन उम्मीदवारों ने १९६४ से पहले परीक्षा पास की है, यदि उनका नाम राज्य सरकार या केन्द्रशासित प्रदेश भेजते हैं, तो उन्हें छात्रवृत्ति देने पर विचार किया जायेगा।

अर्जी के फार्म और अन्य जानकारी के लिए उम्मीद-

वारों को अपने राज्य के शिक्षा निदेशक से सम्पर्क करना चाहिए। मान्य हिन्दी सेवा संस्थाओं द्वारा संचालित कालेजों में बी० ए० या समकक्ष कक्षा या उससे ऊँची कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को संस्था के अध्यक्ष से सम्पर्क करना चाहिए।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन के लिए केन्द्रीय ब्यूरो

शिक्षा मन्त्रालय पुस्तक प्रकाशन के एक केन्द्रीय ब्यूरो की स्थापना करने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अच्छी पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य पुस्तकों के अनुवाद एवं प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

इस योजना द्वारा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने का विचार है। ब्यूरो हिन्दी के उन वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों को भी व्यापक बनाने का प्रयत्न करेगा जिन्हें मन्त्रालय ने गत १० वर्षों के अन्दर तय किया है। संविधान में केन्द्रीय सरकार पर हिन्दी के प्रसार और विकास का दायित्व सौंपा गया है।

यदि योजना आयोग ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो उस पर संभवतः चौथी योजना में अमल किया जायगा।

चौथी योजना में सम्भवतः गैरहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रसार के लिए हिन्दी माध्यम वाले स्कूलों एवं कालेजों की स्थापना होगी। हिन्दी सीखने के इच्छुक लोगों के लिए डाक द्वारा शिक्षा की व्यवस्था करने के प्रस्ताव पर भी विचार किया जा रहा है।

कहा जाता है कि प्रस्तावित ब्यूरो विश्वविद्यालय स्तर की अच्छी पुस्तकों के प्रकाशकों तथा अकादमिक संस्थाओं द्वारा अनुवाद तथा प्रकाशन सम्बन्धी वर्तमान दी योजनाओं का स्थान लेगा, क्योंकि यह अनुभव किया गया है कि इन योजनाओं ने कुछ कठिनाइयों के कारण, जिनमें कापीराइट भी है, कोई विशेष प्रगति नहीं की है।

यह अनुभव किया गया है कि पूरे समय काम करने वाला कोई स्वतन्त्र विभाग हो जिसमें अनुभवी और योग्य

अनुवादक ही, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने में सहायक हो सकता है। इसके लिए २ करोड़ रुपये निश्चित करने का सुझाव दिया गया है।

मेरठ, कानपुर और नैनीताल में आगामी वर्ष विश्वविद्यालय खोलने का विचार

मेरठ, कानपुर और नैनीताल में विश्वविद्यालय कायम करने की तृतीय आयोजन काल में व्यवस्था है। आगरा विश्वविद्यालय में सौ से अधिक कालेज सम्बद्ध हैं। व्यवस्था की दृष्टि से यह संख्या बहुत अधिक है। इसलिए सरकार इन तीन विश्वविद्यालयों को शीघ्र कायम करना चाहती है जिससे आगरा विश्वविद्यालय की व्यवस्था ढंग से हो सके और शिक्षा का स्तर कायम रखा जा सके।

शिक्षामन्त्री ने कहा कि धनाभाव के कारण पहले तो ये नये विश्वविद्यालय परीक्षा लेने वाले विश्वविद्यालय होंगे और इनसे कालेज सम्बद्ध रहेंगे लेकिन बाद में इनमें पढ़ाई न होगी और ये आवासीय विश्वविद्यालय बना दिये जायेंगे।

नई पंजाब सरकार के नये इरादे

लोकतंत्रीय समाजवादी समाज की स्थापना के लिए, जिसका उद्देश्य धर्मनिरपेक्षता और विकास पर आस्था रखते हुए सभी के लिए समान अवसर प्रदान करना है, सरकार एक सुविस्तृत और प्रगतिशील शिक्षा नीति पर अमल करेगी। पात्र छात्रों की आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी।

अध्यापक चरित्र के सच्चे निर्माता होते हैं। अतः उन्हें समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलवाने के लिए पग उठाए जायेंगे।

शिक्षा सुविधाओं के विस्तार और वर्तमान शिक्षा पद्धति के सुधार के कार्यक्रम को एक नया रूप दिया जाएगा, ताकि आधुनिक समाज की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रारम्भिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालीय शिक्षा विस्तृत हो सके।

ग्राम तथा नगर उद्योगों की बढ़ रही आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सरकार एक ऐसे नियमित कार्य पर अमल करेगी जिससे उच्चतम कुशल और पूर्णतः प्रशिक्षित तकनीकी संवर्गों का प्रबन्ध हो सके। शिक्षा के ढांचे और पद्धति को संशोधित करने के भी पग उठाए जाएंगे।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की आगामी परीक्षाएं

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, के परीक्षा-मन्त्री, श्री रामेश्वर दयाल दुबे सूचित करते हैं कि समिति की 'प्राथमिक' से लेकर 'रत्न' तक की आगामी परीक्षाएँ ता० २६ सितम्बर ६४ से सभी प्रांतों में प्रारम्भ होने जा रही हैं।

उक्त परीक्षाओं में प्राथमिक से प्रवेश तक कोई भी परीक्षार्थी शामिल हो सकते हैं। किन्तु परिचय, कोविद, रत्न परीक्षाओं में सीधे सम्मिलित होने के लिए वर्धा कार्यालय में पूर्व स्वीकृति 'प्रार्थना-पत्र' भरकर ४ जुलाई ६४ तक अवश्य मंगा लेना चाहिए। सभी आवेदन-पत्र भरने की अन्तिम तारीख १०-८-६४ है।

छात्रवृत्तियां देने में देर न होगी

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने गरीब छात्रों को वृत्तियां देने की दो महत्वपूर्ण योजनाएँ पिछले तीन सालों में शुरू कीं। सन् १९६१-६२ में राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना शुरू हुई, इसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष २४०० छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। दूसरी योजना राष्ट्रीय शिक्षा ऋण देने की है, इसके अन्तर्गत छात्रों को बिना ब्याज का ऋण दिया जाता है। १९६४-६५ में २२,३०० शिक्षा-ऋण दिए जाएंगे।

छात्रों को वृत्तियाँ समय पर न मिलने से बहुत कठिनाई पड़ती है। इसे दूर करने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने नया तरीका निकाला है। सांस्कृतिक कार्य-मंत्री श्री आर० एम० हाजरनवीस ने सभी मुख्य मंत्रियों को लिखा है कि सुयोग्य गरीब छात्रों के नाम शीघ्र भेजे जाएं, जिससे ऋण मंजूर करने का कार्य शीघ्रता से हो सके। यह नया तरीका सफल हुआ तो छात्रवृत्तियाँ परीक्षा-फल निकलने के १५ दिन के भीतर छात्रवृत्ति पाने वालों के नाम भी प्रकाशित हो सकेंगे। विश्वविद्यालयों तथा परीक्षा-मंडलों से भी कहा गया है कि परीक्षा में उच्च स्थान पाने वालों के नाम जल्दी प्रकाशित करें।

प्रकाशक बन्धुओं की सेवा में आवश्यक सूचना

हिन्दी साहित्य : १९६४

[परिचय विशेषांक]

'हिन्दी प्रकाशक' ने १९६३ में प्रकाशित संपूर्ण हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने वाला जो विशेषांक मार्च-अप्रैल के संयुक्त अंक के रूप में प्रस्तुत किया है वह कई तरह की असुविधाओं में और काफी जल्दी में प्रकाशित हुआ है फिर भी उसका सर्वत्र स्वागत किया गया है और कहा गया है कि ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाय। आदेश को शिरोधार्य करते हुए १९६४ में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने के लिए जनवरी मास में विशेषांक प्रस्तुत करने का निश्चय हो गया है। विशेषांक की तैयारी का काम भी हाथ में ले लिया गया है। प्रकाशक बन्धुओं के सक्रिय सहयोग से ही यह बड़ा काम समय पर और सर्वांग संपूर्ण रूप में सम्पन्न हो सकता है। अतएव निवेदन है कि—

प्रकाशक बन्धु अपने जनवरी १९६४ से लगाकर अब तक के प्रकाशनों की एक-एक प्रति तत्काल भेज दें और दिसम्बर तक प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की एक-एक प्रति प्रतिमास भेजते रहें।

कार्यालय प्राप्त पुस्तकों का परिचय तैयार करता जायगा और १५ दिसंबर को सामग्री प्रेस को दे देगा। ऐसी व्यवस्था भी सोची जा रही है कि 'हिंदी प्रकाशक' में प्रकाशनों का कुछ अधिक परिचय दिया जाया करे। यदि यह संभव हुआ तो प्राप्त पुस्तकों का उपयोग इस दिशा में भी हो जायगा। प्राप्त पुस्तकें लौटाई नहीं जायेंगी बल्कि अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ की निधि बन जायेंगी। विशेषांक और 'हिन्दी प्रकाशक' में उनके परिचय से होने वाले दुहरे लाभ को देखते हुए प्रकाशक बन्धुओं को इतना सहयोग निःसंकोच होकर देना चाहिए।

विश्वास है कि अब तक के प्रकाशन १५ जुलाई तक कार्यालय को मिल जायेंगे और आगामी प्रकाशन निरंतर पहुँचते रहेंगे। और इस प्रकार हम यह सेवा करने में समर्थ हो जायेंगे।

—संपादक

- हमने टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल व एग्रीकल्चरल-सम्बन्धी लगभग २५० प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।
- हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।
- आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।
- क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों की मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मंगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।
२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।
३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।
४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।
५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।
६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये।

मल्टीपरपज़ शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्राम-पंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी मांगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आप को सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान
हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्कशास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाज़ार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रकाशमंत्री [illegible] द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स, देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ सितम्बर, १९६४ अंक १०

इस मास के नये प्रकाशन

ध्यान सम्प्रदाय

डॉ० भरतसिंह उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत पूर्वी एशिया में प्रचलित आध्यात्मिक सम्प्रदाय का अध्ययनपूर्ण परिचय। भारत के संत-साहित्य की पहली और लुप्त कड़ी का उद्धार। भारत की अनेक साहित्यिक और ऐतिहासिक समस्याओं का समाधान।

मूल्य : १०.००

नाली से…

मलयालम के प्रतिष्ठित उपन्यासकार श्री पी० केशवदे के 'ओटियल निन्तु' नामक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास का सुधांशु चतुर्वेदी द्वारा सरस अनुवाद। केरल के जन-जीवन की पृष्ठ-भूमि पर आधारित अत्यधिक लोकप्रिय उपन्यास। मलयालम में अ… तक इसके तेर… संस्करण हो चुके हैं।

मूल्य : २.५…

कृषि उद्योगों का विकास और पंचायतें

श्री रामनारायण उपाध्याय द्वारा कृषि-उद्योग का सरल एवं सरस विवेचन। खेती-उद्योगों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने हेतु पंचायतों के सहयोग पर विचार; व्यावहारिक सुझाव। एक अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण कृति।

मूल्य : १.२५

पौधों की कहानी

श्री संतराम वत्स्य द्वारा पौधों के सम्बन्ध में सरल सुबोध भाषा में रोचक जानकारी; रंगीन चित्रों से भरपूर। प्रतिदिन के जीवन और व्यवहार में उपयोगी 'बाल-मित्र ज्ञान-विज्ञान माला' की पांचवी पुस्तक। बच्चे बिना किसी सहायता के इसे पढ़ और समझ सकते हैं।

मूल्य : १.२…

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक १०　　सितम्बर, १९६४　　मूल्य, वार्षिक ३.००

घातक उदासीनता

'हिन्दी प्रकाशक' के अगस्त अंक में एक लेख में ईरानी प्रकाशकों की उदासीनता पर कुछ प्रकाश डाला गया है। भारत के, विशेषतः हिन्दी के प्रकाशकों में भी, ऐसी उदासीनता इतनी बड़ी मात्रा में दीख पड़ती है कि वे बिक्री के नवीन साधनों की भी उपेक्षा कर जाते हैं। उनकी समझ में यह सीधी बात भी नहीं आती कि पुस्तक का प्रकाशन कर लेना ही बड़ा काम नहीं है, उन लोगों तक उसकी सूचना पहुँचाना भी अत्यन्त आवश्यक है जिनके लिए पुस्तक प्रकाशित की गई है। विक्रेताओं और संस्थाओं आदि को प्रकाशनों से संबंधित साहित्य भेजना तथा पत्रों में विज्ञापन निकलवाना इस दिशा में लाभदायक उपाय है परन्तु ऐसी वर्गीकृत सूचियों का प्रकाशन और वितरण भी कम उपयोगी नहीं होता जिनसे क्रेता अपनी आवश्यकता के अनुसार आसानी के साथ पुस्तकों का चयन कर सके। व्यय की दृष्टि से सस्ती होने के कारण ऐसी सूचियाँ कई बार अधिक लाभदायक भी सिद्ध हो जाती हैं। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने इसी दृष्टि को सामने रख कर विभिन्न प्रकार की सूचियों के प्रकाशन और वितरण का काम अपने हाथ में लिया। इस काम का प्रारम्भ १९६३ के प्रकाशनों की सूची से हुआ जो 'हिन्दी प्रकाशक' के विशेषांक के रूप में प्रस्तुत की गई। पुस्तकालयों, विद्यालयों, संस्थाओं और फुटकर पाठकों ने विशेषांक का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया। उसके आधार पर लेखादि लिखे गये और पुस्तकें खरीदी गईं। फलतः ऐसे विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने का निश्चय किया गया और कहा गया कि संघ शैक्षणिक पुस्तकों की एक सूची उसके पहले ही दे देगा। अब देखिए कि प्रकाशक बन्धुओं ने इस प्रयास को कितना सहयोग दिया है तथा कार्यकर्त्ताओं का कितना उत्साह बढ़ाया है।

१९६३ की प्रकाशनों की सूची फरवरी के अंत तक प्रकाशित करने का निश्चय किया गया था और प्रकाशक बन्धुओं से एक-एक प्रति की माँग की गई थी। दिसम्बर से फरवरी तक बहुत लिखा-पढ़ी करने के बाद फरवरी के अंत तक ५७८ पुस्तकें एकत्रित हुईं, उनके साथ १५४ पुस्तकों की निजी जानकारी मिलाकर ७३२ पुस्तकों की परिचयात्मक सूची अप्रैल के पहले सप्ताह में दी जा सकी परन्तु कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय ने जो संक्षिप्त सूचना अभी-अभी प्रस्तुत की है उसके अनुसार सन् ६३ में हिन्दी की ३५०० पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि २७५० पुस्तकों की जानकारी संघ को नहीं मिली। सम्भव है कि इनमें से कुछ पुस्तकें इतनी दूर छपी हों कि संघ की पुकार उनके प्रकाशकों तक न पहुंची हो और कुछ पुस्तकें ऐसी हों, जिनकी सूचना देना उपयोगी न हो

फिर भी ये अंक प्रकाशक बन्धुओं की उदासीनता का कच्चा चिट्ठा रख देते हैं।

शैक्षणिक पुस्तकों की सूची के सन्दर्भ में अपेक्षाकृत अधिक उत्साह दीख पड़ा है परन्तु १९६४ के प्रकाशनों की सूची के सम्बन्ध में ऐसी बात नहीं कही जा सकती। इसके लिए तीन महीने से 'हिन्दी प्रकाशक' के द्वारा निवेदन किया जा रहा है परन्तु अभी तक प्रकाशकों में चेतना के कोई चिह्न नहीं दीख पड़े। इसका कारण कुछ मित्रों ने यह बताया है कि शैक्षणिक सूची के लिए पुस्तकें नहीं माँगी गई हैं और प्रकाशनों के वार्षिक विवरण के लिए एक प्रति की माँग की गई है।

हम इस कारण को सही मानकर प्रकाशक बन्धुओं की व्यावसायिक सूझ का अपमान नहीं करना चाहते। अपने प्रकाशनों की दो-दो प्रतियां तो वे पत्रों में समालोचना के लिए भेज देते हैं, जहाँ कई बार उनके प्रकाशन का नाम भी प्रकाशित नहीं होता। वे समझते हैं कि प्रकाशक संघ उनसे एक ही प्रति मांग रहा है और ऐसी सूची में स्थान देने के लिए मांग रहा है जिससे उनकी पुस्तक स्थायी रिकार्ड में आती है और पुस्तकों की खरीद बढ़ती है।

हमारी समझ से मूल कारण प्रकाशक बन्धुओं की वही उदासीनता है जो अब धीरे-धीरे घातक होती जा रही है। हमारा निवेदन है कि अब इस उदासीनता का परित्याग किया जाय और ऐसे सब सामूहिक प्रयत्नों को पूरा एवं तत्पर सहयोग दिया जाय जिनसे प्रकाशन व्यवसाय को निश्चित रूप से वैज्ञानिक आधार मिलता है तथा उसकी प्रगति होती है। आशा है कि यह निवेदन व्यर्थ नहीं जायगा और भविष्य में हमें कभी इसकी ओर उंगली उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। •

राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

नेशनल बुक ट्रस्ट ने नवम्बर मास में विशाल राष्ट्रीय पुस्तकप्रदर्शनी के आयोजन का निश्चय कर लिया है। ट्रस्ट के सेक्रेटरी श्री मनोचा का इस आशय का पत्र 'हिन्दी प्रकाशक' के इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित हो रहा है। पत्र में प्रकाशकों और पुस्तकविक्रेताओं से सहयोग की माँग की गई है और कहा गया है कि वे अपनी पुस्तकें समय से भेज दें। प्रकाशकों और विक्रेता बन्धुओं के निकट प्रदर्शनी का महत्व स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। विश्वास है कि वे ट्रस्ट के अनुरोध के साथ हमारे निवेदन को भी सम्मिलित समझेंगे और इस आयोजन में पूरे उत्साह के साथ भाग लेंगे। पुस्तकें ट्रस्ट के कार्यालय में जितनी जल्दी पहुँच जायेंगी, उनकी सूची बनाने में उतनी ही सुविधा होगी। आशा है कि ट्रस्ट प्रदर्शन के लिए कोई फीस न लेने का ही निर्णय करेगा और पुस्तकों के संचयन के लिए जो समिति नियुक्त करेगा उसमें प्रकाशकों और विक्रेताओं के प्रतिनिधि भी रहेंगे। इस व्यवस्था से ट्रस्ट को सुविधा ही होगी।

प्रदर्शनी के अवसर पर ट्रस्ट प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के सम्मेलन का आयोजन भी करना चाहता है। आशा है, कि अंतिम निर्णय इसके पक्ष में ही होगा। खेद है कि सरकारी और अर्धसरकारी क्षेत्रों ने उस शक्ति के सदुपयोग की दिशा में उतने प्रयत्न नहीं किये जो भारतीय प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के पास है। ट्रस्ट इस दिशा में अग्रसर होगा तो उसके परिणाम सबके लिए कल्याणकर होंगे।

प्रस्तावित सम्मेलन इस उपयोगी कार्य के लिए आधारशिला बन जायगा। ट्रस्ट रहे-सहे निर्णय भी शीघ्र ही कर ले और उनकी सूचना इसी प्रकार प्रदान कर दे जिससे प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं का उत्साह बढ़ जाय और ट्रस्ट का आयोजन पूर्ण सफल हो जाय। •

राजभाषा सम्मेलन और हमारा कर्त्तव्य

संविधान का पूर्ण रूप से पालन किया जाता तो जनवरी १९६५ से हिन्दी पूर्णरूप से संघ की भाषा हो जाती। खेद है कि कई चीजों ने मिलकर प्रगति के मार्ग में बाधा प्रस्तुत की और १९६३ में एक अधिनियम पारित हुआ कि अंग्रेजी का प्रयोग सन् ६५ के बाद भी जारी रहेगा। दूसरे शब्दों में वैधानिक स्थिति यह हो गई है कि सन् ६५ के बाद कोई भी सरकारी काम हिन्दी में हो सकता है परंतु अंग्रेजी के प्रयोग पर भी कोई प्रतिबंध न होगा। केन्द्र और अहिन्दी-भाषी प्रांतों के लिए यह छूट सुविधा जनक हो सकती है परंतु उन हिन्दी-भाषी प्रान्तों के लिए

इसका सहारा लेकर अंग्रेजी की लकीर पीटते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है जो हिन्दी को वर्षों पहले अपनी राजभाषा बना चुके हैं। स्व० नेहरू जी ने पिछले वर्ष में ही यह मार्मिक प्रश्न किया था कि 'हिन्दी भाषी क्षेत्रों को हिन्दी में काम करने से कौन रोकता है ?' वर्तमान प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने भी ऐसे ही शब्दों के द्वारा हिन्दी क्षेत्रों को मार्ग दिखाया था। इन स्पष्ट चेतावनियों की उपस्थिति में भी उत्तर प्रदेश और राजस्थान में ऐसे विधेयक आये जिनके द्वारा अंग्रेजी को किसी न किसी प्रकार से टिकाये रखने की चेष्टा होती जान पड़ी। अतएव आवश्यकता समझी गई कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों का एक राजभाषा सम्मेलन आमंत्रित किया जाय जो सरकारों के साथ अन्य क्षेत्रों को भी इस कार्य के लिए संकेत करे और सहायता दे।

भारत की राजधानी में वह राजभाषा सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। यह भी उसकी सफलता ही है कि राजस्थान में अंग्रेजी वाला विधेयक वापस ले लिया गया है। आशा है कि उत्तर प्रदेश पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ेगा और अन्य क्षेत्र भी सन्नद्ध हो जायेंगे। यहाँ हम प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता बन्धुओं का ध्यान विशेष रूप से उस दिशा में आकर्षित करना चाहते हैं। सन् ६५ की जनवरी में कोई देर नहीं है। अतएव हम सब हिन्दी भाषी क्षेत्रों से संबंधित सभी काम हिन्दी में करने का संकल्प ले लें और अहिन्दी क्षेत्रों तथा केन्द्र से सम्बन्धित कार्यों में भी जहाँ तक हो सके हिन्दी का ही प्रयोग करें। हमारे साइनबोर्ड, हिसाब-किताब, पत्र-व्यवहार आदि हिन्दी में हो जायें। इसके अतिरिक्त हम ऐसा साहित्य प्रस्तुत करने की दिशा में भी प्रयत्नशील हों जिससे सर्वत्र हिन्दी अपनाने वालों को सहायता मिले। देश की स्वतंत्रता को सम्पूर्णता देने के लिए यह उद्योग आवश्यक है। विश्वास है कि हम सब इसे अपनायेंगे और अपना मस्तक ऊँचा कर लेंगे।

●

अपनी भाषा है भली
भलो आपनो वेश
जो कछु अपनो है भलो
यही राष्ट्र संदेश !

नागरी प्रचारिणी सभा
काशी

हिंदी शब्द सागर

और

संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर

के उपरांत

लघु शब्द सागर

मूल्य ११.००

लघुतर शब्द सागर

मूल्य ६.००

प्रकाशित

तथा

हिंदी विश्वकोश प्रथम खंड

(परिवर्द्धित एवं संशोधित) यंत्रस्थ

राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं से सहयोग के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट के सेक्रेटरी का आह्वान

नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया के सेक्रेटरी श्री एम. सी. मिनोचा ने अ. भा. हिंदी प्रकाशक संघ के प्रधानमंत्री के नाम निम्नलिखित पत्र भेजा है और प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं से अनुरोध किया है कि वे ट्रस्ट द्वारा संयोजित राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लेकर अपना तत्पर सहयोग प्रदान करें।

प्रिय महोदय,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि नेशनल बुक ट्रस्ट एक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन करने जा रहा है। प्रदर्शनी नवम्बर, १९६४ के प्रथम सप्ताह में रवीन्द्र भवन की प्रदर्शनी गैलरी में होगी। प्रदर्शनी का आयोजन अपने ढंग का पहला होगा और यह भारत के विभिन्न प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता संगठनों के सहयोग से किया जायगा। यूनेस्को और शिक्षा मंत्रालय उसे सहायता प्रदान करेंगे। ट्रस्ट को आशा है कि वह प्रदर्शनी में विभिन्न भाषाओं की भारत में प्रस्तुत १५ हज़ार पुस्तकें उपस्थित करने में समर्थ होगा।

प्रदर्शनी वाले सप्ताह में ट्रस्ट प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं का एक राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित करना चाहता है जिसमें लेखक संघों तथा पुस्तकालयों के प्रतिनिधि भी निमंत्रित होंगे। इस सम्मेलन में उत्तम पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के उपाय सोचे जायेंगे और उन समस्याओं पर विचार होगा जो प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, लेखकों तथा पुस्तकों से संबंधित अन्य व्यक्तियों के सामने हैं। सम्मेलन का पूरा व्योरा आपकी सेवा में शीघ्र ही भेजा जायगा।

ट्रस्ट एक ऐसी स्मारिका प्रकाशित करने की योजना भी कर रहा है जिसमें प्रदर्शनी में प्रस्तुत सब पुस्तकों की सूची हो। ऐसी सम्भावना भी है कि प्रदर्शित पुस्तकों में से कुछ चुनी हुई पुस्तकें अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के लिए बाहर भी भेजी जायँ। प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के अतिरिक्त विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी साहित्यिक संस्थाएं, राज्यसरकारें और भारत सरकार के मंत्रालय भी सम्मिलित होंगे अतएव ट्रस्ट आशा करता है कि दर्शकों की बहुत बड़ी संख्या प्रदर्शनी में समवेत होगी और उसमें प्रस्तुत पुस्तकों से सीधा परिचय प्राप्त करेगी।

सानुरोध निवेदन है कि आप इस विशाल आयोजन में भाग लेने की कृपा करें और प्रदर्शनी के लिए अपनी पुस्तकें समय से ही भेज दें। विश्वास है कि आपके तत्पर सहयोग की सूचना का पत्र अविलंब मिलेगा और आप यह भी लिखने की कृपा करेंगे कि आपकी पुस्तकें किस तिथि तक पहुँच जायँगी।

प्रदर्शनी सम्बन्धी सामान्य जानकारी इस प्रकार है—

१. पुस्तकें भाषावार रखी जायँगी; उनका कला और स्थापत्य, जीवनी, कथा-कहानी, कविता, नाटक, यात्रा और जीवन, बालोपयोगी, तकनीकी, चिकित्सा सम्बन्धी, क्लासिक और विज्ञान आदि विषयों के अनुसार वर्गीकरण किया जायगा। विभिन्न विषयों की विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकें भी प्रदर्शित होंगी।

२. १९६१ से भारत में प्रस्तुत पुस्तकें प्रदर्शन के लिए उपयुक्त मानी जायगीं। व्यापक महत्व वाली ऐसी पुस्तकों पर भी विचार हो सकेगा जो इससे पहले प्रकाशित हुई हों।

३. पुस्तकों का संचयन ट्रस्ट द्वारा नियुक्त समिति करेगी, उसका निर्णय अंतिम होगा।

४. प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति सेक्रेटरी, नेशनल बुक ट्रस्ट, २३ निज़ामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली—१३ के पते पर ऐसे भेजी जाय कि सितम्बर १९६४ के अन्त तक वहाँ पहुँच जाय।

५. प्रत्येक पुस्तक का निम्नलिखित व्यौरा अंग्रेज़ी तथा पुस्तक की भाषा में पहले ही भेज दिया जाय।

नाम
लेखक
भाषा
विषय
प्रकाशन-वर्ष
मूल्य

६. इस व्यौरे की एक प्रति पुस्तक के साथ भी भेजी जाय तो सुविधा होगी।

७. पुस्तकें रेलवे पार्सल से भेजी जायँ तो हज़रत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के लिए बुक की जायँ और उनका किराया चुका दिया जाय।

८. निश्चय किया जा रहा है कि प्रदर्शन के लिए कोई फीस न ली जाय और पुस्तकें इच्छा प्रकट करने पर लौटा दी जायँ।

९. पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि संभव हो सके तो प्रदर्शकों की सुविधा के लिए बिक्री के कुछ काउन्टरों की व्यवस्था भी की जाय। ●

६ सितम्बर, १९६४

को

किशोर-भारती

के

वर्षगांठ-समारोह के लिए

भारत के उप-शिक्षा मंत्री माननीय श्री भक्तदर्शन के उद्‌गार

"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'किशोर-भारती' के चतुर्थ वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में एक समारोह का आयोजन कर रहे हैं। मेरी शुभकामनाएँ "

इस समारोह का उद्‌घाटन

माननीय श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह, शिक्षामंत्री, बिहार

सभापतित्व

डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' अध्यक्ष, बिहार विधान सभा,

कर रहे हैं।

इस अवसर पर निबंध एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विजित छात्र-छात्राओं के लिए

भारत के संचार एवं संसत्कार्य मंत्री माननीय श्री सत्यनारायण सिंह ने लिखा है

"किशोर-भारती विगत ३ वर्षों से अपनी सुन्दर किशोरोचित सामग्री द्वारा देश की··· बड़ी सेवा करती आई है।··· इसके वार्षिक समारोह की सफलता के लिए मैं अपनी शुभ-कामनाएँ प्रकट करता हूं। साथ ही मैं उन छात्र-छात्राओं को भी बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते।"

बिहार, मध्यप्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल एवं दिल्ली शिक्षा निर्देशालय द्वारा स्वीकृत

ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा विषयक डाइजेस्ट

किशोर-भारती

उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है।

विशेष जानकारी के लिए लिखें : व्यवस्थापक, किशोर-भारती, पटना-४

१९६४ के रोचक, ज्ञानवर्धक, महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

अंतरिक्ष यात्रा की प्रथम पुस्तक (सचित्र) — जान बेण्डिक ४.००
परमाणुयुगीन भौतिकी — हेनरीसमेट : ह्वाइट ५.००
कृत्रिम उपग्रह और अन्तरिक्ष राकेट (सचित्र) — इरिक बरगास्ट ३.००
पृथ्वी से अन्तरिक्ष तक (सचित्र) — डेविड ओ० वुडकरी ४.००
भौतिकी का प्रामाणिक प्रथम परिचय (सचित्र) — एडवर्ड जी० ह्वीवे ३.५०
कहे पैरुडीदास (सचित्र) — चिरंजीत २.५०
अनाड़ीराम और उसके साथी (सचित्र) — (रूपा०) योगेन्द्रकुमार लल्ला ५.००
दुनिया रंग बिरंगी (सचित्र) — सं० श्रीकृष्ण ३.००
बज्जुर है छाती किसान की — श्रीचन्द्र जैन ३.००
ऐस्कीमो लोक-कथाएँ — रामकृष्ण शर्मा १.२५
यह दुनिया-१ (रंगीन-सचित्र) — मन्दाकिनी १.००
यह दुनिया-२ (रंगीन-सचित्र) — मन्दाकिनी १.००
यह दुनिया-३ (रंगीन-सचित्र) — मन्दाकिनी १.००
डाक्टर के डंक (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
निकी परिहास (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
विद्रोहिणी अम्बा (नाटक) — उदयशंकर भट्ट २.००
आग, राख और रोशनी — रेवतीसरन शर्मा १.००
कालिख और लाली (एकांकी-संग्रह) — राजेन्द्रकुमार शर्मा २.००
वारिस (नाटक) — रूथ तथा आगस्टस २.५०
मोहिनी (सचित्र नाटक) — परितोष गार्गी १.५०
माटी जागी रे — ज्ञानदेव अग्निहोत्री २.००
चित्रकार (उपन्यास) — रणवीर ३.००
महोषध पण्डित (उपन्यास) — भदन्त आनन्द कौशल्यायन २.००
एक महान वकील (उपन्यास) — आर्थर ट्रेन ४.००
पोली इमारत (कहानी-संग्रह) — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ३.००
यह कंचन-सी काया (क० सं०) — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
चित्र-विचित्र (क० सं०) — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
काल कोठरी (क० सं०) — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
ऐसी होली खेलो, लाल (क० सं०) — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' २.५०
मालविकाग्निमित्रम् — अनु० पी०डी शास्त्री ३.००

मार्मिक रहस्य (उपन्यास) — स्टीफन ज्वैग २.००
महापुरुषों के छींटे (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
अदालत, वकालत, हजामत (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
सैक्सों की लड़ाई (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
नहले पर दहला (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
हास्य का व्यापार (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
मजाक और मज़ा (हास्य-व्यंग्य) — अरुण १.२५
कमलेश्वर के बाल नाटक-१ (सचित्र) — १.५०
कमलेश्वर के बाल नाटक-२ (सचित्र) — १.५०
मुन्नी का साँप काका (सचित्र) — दयाशंकर मिश्र 'दद्दा' १.२५
गुड़िया का व्याह — कुमारी मधु १.२५
आचार्य श्री तुलसी (भ्रमण) — महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम' २.००
जनपद विहार — महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम' ३.००
भरत मुक्ति — आचार्य श्री तुलसी ८.००
सिंहासन (राष्ट्रीय कविताएँ) — बलबीरसिंह 'रंग' १.५०
सच्चे दोस्त : बहादुर दुश्मन — राबर्ट एफ० कैनेडी ४.५०
गणेशशंकर विद्यार्थी के श्रेष्ठ निबन्ध — (सम्पा०) राधाकृष्ण ४.००
भारत और पश्चिम — बरबारा वार्ड ६.००
आबादी की समस्या (अर्थशास्त्र) — मारग्रेट ओ० हाइड २.५०
मन की यात्राएँ — टूर्लसन ५.००
मेरा देश : मेरे देशवासी — परमपावन दलाई लामा ७.५०
भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन — लियोनार्ड मोसले ७.५०
प्रगति के बढ़ते चरण — अनु० कृष्णचन्द्र ३.५०
शिकार और जीवन — मारजौरी किनन रौलिंग्स ६.००
कीटों में सामाजिक जीवन — डा० आर० रक्षपाल ३.००
उदारता की घड़ी — जॉन केनेथ गैलब्रेथ ४.००
समृद्ध समाज — जॉन केनेथ गैलब्रेथ ६.००
मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास — मिखेल नैस्तुर्ख १५.००
एक जीवन्त अधिकार पत्र — विलियम ओ० डगलस २.००
अमेरिकी सभ्यता — मैक्सलर्नर १०.००
आधुनिक विज्ञान और आधुनिक मानव — जेम्स बी० कानेट २.२५
विज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान (सचित्र) — जेम्स बी० कानेट ७.५०
खोज की राहें (विज्ञान) — राल्फ इ० लाच ३.५०

आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

शाखाएँ : नई दिल्ली, जयपुर, लखनऊ, चण्डीगढ़

विक्रेता वार्ता

पुस्तक-व्यवसाय में भ्रष्टाचार

छोटे दूकानदार खत्म हो रहे हैं !

'हिंदी प्रकाशक' के अगस्त १९६४ के अंक में आज की समस्या स्तम्भ के अंतर्गत 'पुस्तक व्यवसाय को भ्रष्टाचार से बचाएं' शीर्षक से जो तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं, वे सचमुच पुस्तक व्यवसायियों के लिए और हमारे राष्ट्र-नायकों के लिए विचारणीय हैं। इन दोषों को दूर करने के लिए सक्रिय प्रयास समय रहते करने चाहिएँ।

इस लेख में जहाँ पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हो जाने से व्यक्तिगत प्रकाशकों के हाथ से व्यवसाय का एक पहलू निकल जाने की बात कही गई है वहीं जनरल पुस्तकों की फुटकर बिक्री न होने पर भी गहरी चिंता प्रगट की गई है। जनरल पुस्तकों की सरकारी खरीद के केन्द्रीय-करण की स्थिति समझाते हुए सरकारी अधिकारियों एवं कुछ वरिष्ठ राजनीतिज्ञों के एकाधिपत्य की चर्चा भी अप्रासंगिक नहीं है। इस तरह की जनरल पुस्तकों की सरकारी खरीद को केन्द्रीभूत न रखकर विकेन्द्रित कर दिया जाय तो वह युक्तिसंगत ही होगा तथा सरकार की उपयोगी योजना का सही स्वरूप ही बनेगा।

आज जनपदीय स्तर के पुस्तक व्यवसायियों का तो बड़ा बुरा हाल है। इस जनरल पुस्तकों की खरीद का बड़ा कटु अनुभव स्थानीय पुस्तक-व्यवसायियों को है। प्रायः देखा गया है कि शिक्षा विभाग की ऐच्छिक सूची में से जनपदों में उन पुस्तकों की खरीद को प्राथमिकता मिलती है जिनके लेखक स्वयं किसी विभाग की अच्छी पोस्ट पर हों या उसके प्रकाशक के संबंधी इलाहाबाद या लखनऊ में काम करते हों। ये लोग अपने प्रभाव का प्रयोग करके अपनी पुस्तकें खरीद की सूची में ले आते हैं और फिर उनको खुद ही सप्लाई करते हैं। यदि कोई विक्रेता भूल से इनकी पुस्तकें सप्लाई करने का काम अपने जिम्मे ले लेता है तो उस गरीब का पित्ता पानी एक हो जाता है।

ये बरसाती व्यवसायी, जिनकी खोज इनके बताये पते पर भी नहीं हो पाती, बड़ी आन-बान से कहते हैं कि १२।। प्रतिशत से अधिक का बिजनेस हम नहीं करते। बड़ी मुश्किल से कहने-सुनने पर जब अधिकारी को भी बात बढ़ जाने का भय होता है तब यह कृपा करके २५ प्रतिशत कमीशन काट देंगे और उस पर तुर्रा यह कि पैकिंग चार्ज और बिल्टी तथा बैंक कमीशन तक ले लेंगे। अब आप ही बताएं इस तरह के घाटे के सौदे को कौन व्यवसायी करने का साहस कर सकता है। इन मौसमी प्रकाशकों को पुस्तक-व्यवसायियों से अपना बिजनेस तो चलाना नहीं होता और यह इस तरह उन्हें परेशान कर लेते हैं। इस प्रकार सरकार की नाक के नीचे ही भ्रष्टाचार का वृक्ष हरा-भरा तो रहा है। इस व्यवस्था को जितनी जल्दी हो तोड़ना चाहिए। और उन्हीं प्रकाशकों या पुस्तक व्यवसायियों की किताबें खरीद की लिस्ट में लानी चाहिएँ जिनकी मुख्य आजीविका ही पुस्तक-व्यवसाय है। इस मैदान में यदि अधिकारियों और शिक्षा विभाग के कर्मचारियों के रिश्तेदार या सहयोगी आवेंगे तो उनका भी स्वागत किया जायेगा लेकिन वे आवें खुले रूप से और ईमानदारी के साथ।

दिल्ली, लखनऊ व इलाहाबाद आदि नगरों में पुस्तक-व्यवसाय भ्रष्टाचार के कारण नष्ट होने जा रहा होगा परन्तु जनपदों में तो पुस्तक-व्यवसाय बिल्कुल ही खत्म हो गया है। यहाँ तक कि ईमानदारी से कमाने वाला दूकान-दार सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को भी बेचना अपमान समझता है। बेसिक स्कूल की किताबों का काला-बाजार तो सबके लिए सिरदर्द बना है। निर्धारित मूल्य

से अधिक में ये पुस्तकें प्रायः सर्वत्र बिकती हैं और सम्मानीय पुस्तक व्यवसायी इस धन्धे को ही नहीं करते।

जहाँ एक ओर यह पुस्तक बिक्री में भ्रष्टाचार फैला है वहाँ एक बात यह भी है कि विद्यालयों की पाठ्य-पुस्तकें जो बिकने आती हैं उनमें छपाई की गलतियों आदि के साथ-साथ उनके महंगे होने की भी शिकायतें सुनने को नित्य मिलती रहती हैं। पाठ्य-पुस्तकें भी प्रायः नहीं बिकतीं, सेकेण्डहैण्ड और उनकी कुंजी की बिक्री का बाजार गरम रहता है। आज यदि पुस्तक-व्यवसायी स्लेट, कापी, पेंसिल आदि स्टेशनरी साथ न रखे तो उसे अपना और परिवार का रूखा-सूखा भोजन जुटाना भी मुश्किल पड़ जाय।

अतः हमारा सभी से बल्कि अखिल भारतीय प्रकाशक संघ से यह विनम्र अनुरोध है कि वह पुस्तक-व्यवसाय में व्याप्त गन्दगी को दूर करने के लिए कोई ठोस कदम उठाए और जनपदीय स्तर के पुस्तक-व्यवसायियों के व्यौपार को चौपट न होने दे।

यह हम एक बार फिर स्पष्ट कर दें कि जनरल पुस्तकों की सरकारी खरीद का विकेन्द्रीकरण हो जाय तो उससे जनपदीय पुस्तक-विक्रेताओं को सहारा मिलेगा और वह साँस लेने लगेगा।

रामसेवक त्रिवेदी
ग्रामीण पुस्तक भंडार
उन्नाव

पंजाब में प्राइमरी में २० लाख से अधिक विद्यार्थी

पंजाब राज्य में प्राइमरी कक्षाओं में बच्चों की संख्या २०.७२ लाख से भी अधिक हो गई। इस वर्ष में ३,५७० से अधिक अध्यापकों की नियुक्तियाँ की गईं।

बाएँ से—उद्घाटन करते हुए गृहमंत्री श्री नंदा, बैठे हुए सर्वश्री वसंतराव ओक, स्वागताध्यक्ष लाला जगन्नाथ, श्री नंदा, अध्यक्ष डॉ० सुधांशु और दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पं० उदयशंकर भट्ट; प्रादेशिक सम्मेलन के महामंत्री श्री गोपाल प्रसाद व्यास प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए।

सन् ६५ से सभी स्तरों और सभी विभागों में हिन्दी का प्रयोग हो !

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत की राजधानी दिल्ली में राजभाषा सम्मेलन का समारोहपूर्ण अधिवेशन हुआ। इसमें बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, मध्यप्रदेश और राजस्थान से आये हुए प्रतिनिधि, गण्यमान्य नेता, मूर्धन्य साहित्यकार, तपे हुए कार्यकर्त्ता और मंजे हुए पत्रकार उपस्थित थे। भारत सरकार के गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। सभापति के पद पर बिहार विधान सभा के अध्यक्ष और हिन्दी के तेजस्वी नेता डाक्टर लक्ष्मीनारायण सुधांशु विराजमान थे।

सुधांशुजी का भाषण बहुत ही प्रभावशाली था। उनके भाषण की यह विशेषता थी कि एक प्रमुख कांग्रेसी नेता होते हुए भी उन्होंने स्पष्ट रूप से हिन्दी के प्रति उपेक्षा की आलोचना की और सरकार को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के नेता चाहे वे किसी भी दल के हों, चाहे किसी भी स्तर का चुनाव हो, मुख्यतया हिन्दी द्वारा जनता से वोट माँगते हैं। इसलिए भी इस क्षेत्र के प्रशासन की भाषा हिन्दी ही हो सकती है। किंतु यह दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना है अथवा अंग्रेजीपरस्त नौकरशाही का व्यापक षड्यंत्र है, जिस कारण आज तक उस भूखण्ड के शासन में भी हिन्दी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका जिसका उसको पूर्ण अधिकार है।

प्रादेशिक भावना

उन्होंने आगे बताया कि कुछ लोग अपनी प्रादेशिक भावना के वशीभूत होकर ऐसा सोचते हैं कि यदि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी राजकाज की भाषा हो जायगी, तो सरकारी

नौकरियों में अंग्रेजी के माध्यम से आज उनका जो स्थान और प्रभाव है, उसमें कमी आ जायगी तथा सरकारी नौकरियों में हिन्दी-भाषी व्यक्तियों का प्राधान्य हो जायगा जिसमें उनके और उनकी सन्तान के स्वार्थों की हानि होगी। इसी कारण वे राजकाज में अंग्रेजी के प्रभाव को कायम रखना चाहते हैं। हिन्दी विरोधियों का यह प्रयास सर्वथा स्वार्थमूलक है। परन्तु जिस गति से वे हिन्दी का विरोध और अंग्रेजी का समर्थन कर रहे हैं उससे यह आशंका सहज ही पैदा होती है कि हिन्दी-भाषी राज्यों के राजकाज में भी वे अंग्रेजी को रखने का भरपूर प्रयत्न करेंगे। श्री सुधांशु ने चेतावनी दी कि यदि ऐसा हुआ तो इस क्षेत्र की जनता, जो अब तक प्रादेशिकता की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना से अभिभूत थी, अपनी सुरक्षा के लिए प्रादेशिक भावना को अपनाने के लिए मजबूर हो जायेगी और यह बहुत बड़ी राष्ट्रीय क्षति होगी, जिसकी जिम्मेदारी हिन्दी प्रदेशों में भी अंग्रेजी रखने वालों पर होगी।

सरकार की उपेक्षा की नीति

सुधांशुजी ने यह भी कहा कि चारों हिन्दी-भाषी राज्यों के मंत्रियों ने भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन यथेष्ट ध्यान से नहीं किया। आवश्यक था कि वे राजकर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए बाध्य करते। यदि इन चारों हिन्दी-भाषी राज्यों के मंत्रिगण राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन करते तो निश्चय ही इन चारों हिन्दी-भाषी राज्यों का हिन्दीकरण हो गया होता, किन्तु दुःख है कि अधिकतर मंत्रियों ने अपने सचिवों की हिन्दी टिप्पणियों का अंग्रेजी में ही समर्थन अथवा विरोध किया और अंग्रेजी में आदेश या निर्देश दिया। फलतः सचिवों की बन आयी। अतः इन चारों राज्यों में राजभाषा हिन्दी प्रायः कागज पर ही बनी रही और आधे से अधिक कार्य अंग्रेजी में ही होते रहे। यदि केवल अंग्रेजीपरस्त अधिकारी ही ऊंचे पदों पर आयेंगे तो इसी प्रकार इन राज्यों में हिन्दी का नुकसान होता रहेगा।

आवश्यकता क्या है

सुधांशुजी ने यह चेतावनी भी दी कि ये सरकारी अधिकारी एकरूपता के नाम पर फिर अंग्रेजी को ही लादने का प्रयत्न करेंगे और हिन्दी-भाषी राज्यों के कुछ मंत्रियों पर उनका जादू चल भी जायगा। उन्होंने कहा कि यह वर्ग केन्द्रीय नेताओं से इसके लिए राज्यों पर दबाव भी डलवाने का प्रयत्न करेगा। यदि ऐसा विधेयक इन राज्यों में पास हो गया तो हिन्दी का भविष्य विनष्ट हो जायगा। हिन्दी-भाषी राज्यों में पूर्ण हिन्दीकरण का एकमात्र उपाय है पूर्ण रूप से अंग्रेजी का निष्कासन। जब तक हिन्दी-भाषी राज्यों में पूर्ण हिन्दीकरण नहीं होगा, तब तक केन्द्रीय सरकार के कार्यों में हिन्दी का विकास असम्भव है।

भाषावार राज्य

श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु ने महात्मा गांधी के विभिन्न भाषणों और लेखों को उद्धृत करते हुए बताया कि किस प्रकार कांग्रेस भाषा के आधार पर राज्यों के गठन को स्वीकार कर चुकी है। उन्होंने पूछा कि आंध्र राज्य की स्थापना के पूर्व तथा महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्यों के गठन के समय जो बीभत्स घटनाएँ घटित हुईं, उनके लिए कौन जिम्मेदार है। यदि अंग्रेजी के माध्यम से ही राजकाज करना था तो सारे देश में प्रान्तों को काटछाटकर इतना तूफान क्यों पैदा किया गया!

उत्तरप्रदेश जैसे राज्य में प्राथमिक श्रेणियों से अंग्रेजी की पढ़ाई की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि स्कूल-कालेज के परीक्षा परिणामों से यह प्रकट हो गया है कि १० प्रतिशित से अधिक विद्यार्थी अंग्रेजी में अच्छे प्राप्तांक से उत्तीर्ण नहीं हो सकते। फिर नियम और कानून के बल पर अंग्रेजी ठूंसकर बालक-बालिकाओं की प्रतिभा के साथ खिलवाड़ क्यों किया जाता है। यह असहनीय व्यापार है। निम्न प्राथमिक श्रेणियों से अंग्रेजी पढ़ने वाले विद्यार्थी जब १५-२० वर्षों के बाद अपनी योग्यता का परिचय देने दिल्ली पहुँचेंगे, तब वे विस्मित होकर देखेंगे कि दिल्ली में अंग्रेजी दम तोड़ चुकी है और वे अत्यधिक निराश होंगे तथा अपनी प्रतिभा के अपव्यय के लिए आंखों में आंसू भर कर अपने नेताओं को कोसेंगे।

श्री नन्दा का आश्वासन

सुधांशुजी जब भाषण कर रहे थे तब स्वराष्ट्र मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा भी उपस्थित थे। उन्होंने इस बात की शिकायत की कि कुछ ऐसी जगह थीं, जहाँ रुकावटें नहीं थीं फिर भी वहाँ हिन्दी नहीं चली। हिन्दी भाषी प्रदेशों में कोई ऐसा सवाल नहीं उठता कि हिन्दी पढ़ने के लिए मजबूर किया जाता और इस प्रकार वहां पर कोई रुकावट नहीं थी। जो कुछ तैयारी हुई उससे बहुत ज्यादा हो सकती थी।

श्री नन्दा ने यह भी कहा कि देश की एकता के लिए हिन्दी पढ़ना बहुत जरूरी है। उन्होंने इस बात का भी आश्वासन दिया कि हिन्दी के काम के लिए धन की कमी नहीं होगी और सम्मेलन जो सुझाव देगा, उस पर सरकार विचार करेगी।

श्री जगजीवनराम की सलाह

दूसरे दिन श्री जगजीवनराम और डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी के भाषण प्रमुख थे। श्री जगजीवनराम ने इस बात पर जोर दिया कि देश का नेतृत्व बुद्धिवादियों के हाथ से हटकर राजनीतिज्ञों के हाथ में चला गया है और राजनीतिज्ञ केवल स्वार्थपरक दृष्टि से ही विचार करते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि बुद्धिवादी लेखक, पत्रकार और विचारक समाज के नेतृत्व को अपने हाथ में लें। जब तक बुद्धिजीवी अपनी लगाम को राजनीतिज्ञों के हाथ में छोड़े रहेंगे, तब तक यही गड़बड़ी चलती रहेगी। आज अंग्रेजी के बाद अंग्रेजियत और ज्यादा चल गयी है। अंग्रेजी का बोलना प्रतिष्ठा का मानदण्ड हो गया है। उन्होंने कहा कि आवश्यकता है कि हम अंग्रेजी का अनादर करें। जब तक अंग्रेजी का अनादर नहीं होगा, हिन्दी का आदर नहीं होगा। उन्होंने तो यहां तक कहा कि अंग्रेजियत को उखाड़ फेंकना अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने से भी ज्यादा जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजी हमारी भारतीय संस्कृति को नष्ट कर रही है। श्री जगजीवनराम ने यह भी कहा कि कभी-कभी तो मैं डाक्टर लोहिया से भी सह-

मत हो जाता हूं कि अंग्रेजी को उखाड़ फेंको, फिर कौन-सी भाषा करनी है, वह हम देख लेंगे ।

गांधीजी क्या चाहते थे

डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा कि हमारे राजनीतिज्ञों की समझ में यह बात नहीं बैठती है कि यह स्वराज्य इंग्लैंड के राज से शक्ति प्राप्त करके नहीं आया है, बल्कि जनता की शक्ति का प्रतीक है । हमारा शासन नीचे से चलना चाहिये, इसकी हमें चेतना नहीं है । उन्होंने कहा कि गांधीजी ने कहा था कि हमें अंग्रेजी को उखाड़ फेंकना चाहिये और जो कोई हमारी चेष्टा में बाधा डालें उसे भी उखाड़ फेंकना चाहिये । गांधीजी हमारे नेता थे और हमें उनके कथन पर चलना ही चाहिये ।

इस सम्मेलन ने कुछ प्रस्ताव भी पास किये और यह निश्चय लिया कि डाक्टर सुधांशु के नेतृत्व में राजभाषा सम्मेलन का एक स्थायी संघठन बनाया जाये, जिसके लिए एक स्थायी समिति की नियुक्ति भी कर दी गयी । यह बहुत महत्वपूर्ण निश्चय है । यह संघठन हिन्दी प्रदेशों के हिन्दी-प्रेमियों और संघठनों को एक साथ हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगा ।

सम्मेलन का आयोजन दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने किया था । राजधानी के विख्यात समाजसेवी लाला जगन्नाथजी उसके स्वागताध्यक्ष थे । प्रादेशिक सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री गोपालप्रसाद व्यास और उनके अनन्य सहयोगियों ने सम्मेलन की सफलता के लिए रात दिन अनथक परिश्रम किया था । १४ अगस्त की संध्या से १५ अगस्त को दोपहर तक राजधानी में जो निरन्तर और घनघोर वर्षा हुई उससे कई तरह की आशंकाएँ खड़ी हो गई थीं परन्तु कार्यकर्त्ता उसी उत्साह के साथ जुटे रहे । अंत में इन्द्रदेव ने भी सम्मेलन के लिए मार्ग साफ कर दिया ।

राजभाषा सम्मेलन के प्रस्ताव

सम्मेलन के दूसरे दिन के अधिवेशन में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये :

(एक) भारत के समस्त हिंदी-भाषी प्रदेशों के प्रतिनिधियों का यह सम्मेलन अपना दृढ़ मत प्रकट करता है कि भारत के स्वातंत्र्य आन्दोलन के समय से घोषित और प्रतिज्ञात आदर्शों के अनुसार राष्ट्रीय क्रांति की सार्थकता और उसके उद्देश्यों की पूर्ति तभी हो सकेगी, जब भारत के जन-मानस की प्रेरणाओं के साथ शासन का सामंजस्य होगा और यह तभी होगा, जब शासन जनता की भाषाओं के माध्यम से जनता के साथ तादात्म्य स्थापित करेगा । यह नितान्त अस्वाभाविक और लोकतंत्र की भावना के सर्वथा विरुद्ध है कि निर्वाचन के समय जिस भाषा का आश्रय लेकर मत संग्रह किया जाता है, निर्वाचन के बाद उस भाषा का तिरस्कार कर अंग्रेजी को राज भाषा के सिंहासन पर आसीन रखा जाय । राष्ट्रपिता गांधी जी के शब्दों में एक सांस्कृतिक उपहार के रूप में अंग्रेजी को भी हमें उसी तरह निकाल फेंकना चाहिये जिस तरह हमने अंग्रेजों के राजनीतिक शासन को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका ।

यह और बड़ी विडम्बना होगी कि २६ जनवरी, १९६५ को संविधान के अनुसार हिंदी के राजभाषा हो जाने पर भी वस्तुतः अंग्रेजी यथावत् चलती रहे । जो संविधान हमारे राष्ट्र का आधार है और जिसके पालन की शपथ सभी राष्ट्र कर्मी लेते हैं यह उसकी अवहेलना होगी ।

यह सम्मेलन विशेष कर हिंदी भाषी प्रदेशों और राज्य क्षेत्रों से आग्रह करता है कि वे १९६५ की जनवरी से शासन के सभी स्तरों और सभी विभागों में हिंदी का प्रयोग अवश्य चालू करें। जनता की यह न्यायपूर्ण माँग है, इसकी पूर्ति न होने का परिणाम राष्ट्र के हितों के लिए अत्यन्त घातक होगा । २६ जनवरी सन् १९६५ के बाद अंग्रेजी को हिंदी भाषी प्रदेशों में बनाए रखने के लिये जो विधेयक विधान-सभाओं में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, यह सम्मेलन उनको राष्ट्रीय स्वाभिमान के विरुद्ध तथा जनहित विघातक मान कर उनका प्रबल विरोध करता है और सभी विधायकों से साग्रह अनुरोध करता है कि वे अपनी विधान सभा में ऐसे विधेयक पारित न होने दें ।

(दो) यह सम्मेलन भारत सरकार से साग्रह अनुरोध करता है कि संविधान का समादर करते हुए २६ जनवरी १९६५ से हिंदी को राजभाषा का स्थान देने के लिए निम्न कदम उठायें—

(क) संघीय लोक सेवा आयोग तथा केन्द्रीय विभागों

द्वारा संचालित परीक्षाओं का मुख्य माध्यम हिंदी कर दिया जाय।

(ख) जिन राज्यों से प्रशासक हिंदी में केन्द्र से लिखा-पढ़ी करें, उनके साथ हिंदी में ही पत्राचार किया जाय।

(ग) जनता से प्रत्यक्ष सम्पर्क में आने वाले केन्द्रीय विभाग रेल, डाक, तार, बीमा, बैंक, आयकर, कम्पनी-विधान आदि में सार्वजनिक स्तर पर हिंदी ही का प्रयोग किया जाय।

(घ) समस्त औपचारिक अवसरों और राजकीय उत्सवों आदि पर हिंदी का प्रयोग किया जाय।

(ङ) देश के राष्ट्रीय सम्मान की दृष्टि से विदेशों के साथ औपचारिक पत्राचार हिंदी ही में किया जाय।

(च) हिंदी प्रदेशों के न्यायालयों से अनुरोध किया जाय कि वे अभियोगों के निर्णयों, दस्तावेजों तथा साक्ष्य आदि के कागजपत्रों को हिंदी में उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें।

(छ) महालेखा परीक्षक से परामर्श करने के उपरांत हिंदी प्रदेशों से सभी लेखा कार्यालयों को अपना पत्राचार आदि हिंदी में कराने की व्यवस्था करें।

(तीन) यह सम्मेलन हिंदी संस्थाओं से विशेष रूप से अनुरोध करता है कि वे आपस में सहयोगपूर्वक हिंदी के उत्थान, विकास और प्रसार के लिए एक व्यापक योजना बनायें और उसमें संकल्पित कार्यों को पूरा करने के लिए अपना-अपना कार्यक्षेत्र और दायित्व बांट लें तथा निश्चित समय में निर्दिष्ट कार्य पूरा करने का व्रत लें।

(चार) यह सम्मेलन हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में स्थित विश्व-विद्यालयों से अनुरोध करता है कि अंग्रेजी की अनिवार्यता के मिथ्या मोह को त्याग कर हिन्दी माध्यम अपनायें, जिससे विद्यार्थियों की प्रतिभा अकुंठित रहे और ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में यह राष्ट्र दूसरों के समान गौरवपूर्ण योगदान कर सके। साथ ही सब विश्वविद्यालयों को यह भी सुझाव देता है कि हिन्दी भाषा और साहित्य तथा हिन्दी माध्यम से पढ़ाए जाने वाले विषयों में पाठ्यक्रमों का विधान तथा पुस्तकों की मांग की पूर्ति

आदि के विषय में परस्पर समन्वय स्थापित करें और नए साहित्य के सृजन के लिए योजनाबद्ध कार्य करें ।

(पाँच) यह सम्मेलन हिन्दी भाषी क्षेत्रों के नगर-निगम तथा नगर पालिकाओं से अनुरोध करता है कि वे अंग्रेजी का व्यवहार बंद कर केवल हिन्दी में ही अपना सब कार्य करें ।

(छः) उपर्युक्त संकल्प की पूर्ति में कार्य करने के लिए यह सम्मेलन राजभाषा सम्मेलन के रूप में एक संगठन की स्थापना करता है तथा उसके लिए एक स्थायी समिति का गठन करता है, जिसके सदस्य निम्नलिखित व्यक्ति होंगे और इस समिति को अधिकार देता है कि वह अपने कार्य के संचालनार्थ आवश्यक विधान तैयार करें तथा सदस्य समयोजित कर लें ।

(सात) राजभाषा सम्मेलन का यह अधिवेशन उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के विधान मण्डलों में १९६५ के पश्चात् भी अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने संबंधी विधेयकों को अत्यंत अवांछनीय, जनतंत्र-विरोधी तथा संविधान की मूल भावनाओं पर कुठाराघात मान कर इन विधेयकों का घोर विरोध करता है । इन राज्यों में पहले ही केवल हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया जा चुका है । अतएव यह विधेयक वहां की जनता के सर्वसम्मत निर्णयों के प्रतिकूल अवहेलना है । यह सम्मेलन दोनों राज्य सरकारों से मांग करता है कि प्रस्तुत विधेयकों को तुरंत वापस लें । साथ ही यह सम्मेलन इन विधान मण्डलों के समस्त सदस्यों से अनुरोध करता है कि यदि सरकारें न मानें तो इन विधेयकों को पारित न होने दें और अपने क्षेत्र की जनता की सद्भावनाओं का प्रतिनिधित्व करें ।

स्थायी समिति के सदस्य

(निर्वाचित और समयोजित)

अध्यक्ष डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, अध्यक्ष बिहार विधान परिषद

कार्यकारी अध्यक्ष—सेठ गोविन्ददास, संसद-सदस्य

उपाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण राव (प्रयाग)

श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी (राजस्थान)

प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र (बिहार)

श्री बसंतराव ओक (दिल्ली)

श्री यश, सदस्य विधान सभा, (पंजाब)

कोषाध्यक्ष—लाला जगन्नाथ

प्रधान मंत्री—श्री गोपालप्रसाद व्यास

संयुक्त मंत्री—श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

सदस्य—श्री रामधारी सिंह दिनकर (कुलपति, भागलपुर, विश्वविद्यालय)

श्री गंगाशरण सिंह, संसद-सदस्य

श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, सं० सरस्वती

श्री प्रकाशवीर शास्त्री, संसद-सदस्य

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, संयोजक कार्यकारी दल, हिन्दी सलाहकार समिति

श्री मन्नूलाल द्विवेदी, संसद-सदस्य

डॉ० नगेन्द्र, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ० राजबली पाण्डेय, जबलपुर विश्वविद्यालय

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री लल्लनप्रसाद व्यास, सं० ज्ञानभारती

श्री सत्यनारायण बंसल

श्री मोहनलाल भट्ट, मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

श्री विश्वंभर सहाय प्रेमी (उत्तरप्रदेश)

डॉ० सोमनाथ गुप्त (राजस्थान)

श्री दौलतराम शर्मा (राजस्थान)

श्री कुंवरलाल गुप्त (दिल्ली)

श्री श्यामलाल (दिल्ली)

लाला किशनलाल कटपीस वाले

लाला मुरलीधर डालमिया

लाला हंसराज

श्री के. एल. मलिक, प्रधानमन्त्री अ. भा. हिन्दी प्रकाशक संघ

श्री अक्षयकुमार जैन, सं० नवभारत टाइम्स

श्री बाँकेबिहारी भटनागर, सं० साप्ताहिक 'हिंदुस्तान'

श्री भवानीप्रसाद तिवारी, संसद सदस्य

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पंजाब विश्वविद्यालय

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

अध्ययन आलोक : ले० विवेकीराय; प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, ५८ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता; सा० क्रा० ८; पृ० ८८; मू० २.०० ।

एक आलोचक की नोट बुक : ले० शरद देवड़ा; प्र० अपरा प्रकाशन, ४१ ए, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता-१; सा० डि०; पृ० १२८; मू० ४.५० ।

कवितावली : स्व० चन्द्रशेखर शास्त्री; प्र० साहित्य-भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद; मू० ६.०० । सटीक ।

गंगालहरी : ले० प्रो० दीनानाथ शरण; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, १३६१ वैदवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली; स० क्रा०; पृ० ११२; मू० १.५० ।पु० मु० ।

तुलसी के भक्तयात्मक गीत : ले० डा० वचनदेव कुमार; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली; सा० डि०; पृ० ३२०; मू० २०.०० । शोधप्रबंध ।

ध्यान सम्प्रदाय : ले० डा० भरतसिंह उपाध्याय; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली । ६; सा० डि०; पृ० २४० । मू० १०.०० ।

प्रेममाधुरी और स्फुट कविताएँ : ले० प्रो० भूषण स्वामी; प्र० हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १२८; मू० २.५० ।

रस, छन्द और अलंकार : ले० प्र० पूर्वोक्त, सा० क्रा०, पृ० ४८; मू० ०.७५ ।

विद्यापति का अमर काव्य : ले० डा० गुणानंद जुआल; प्र० साहित्य निकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर; सा० क्रा० ८; पृ० १३०; मू० २.०० । पु० मु० ।

संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास : ले० रामबिहारी लाल शास्त्री, प्र० साहित्यनिकेतन, कानपुर; सा० क्रा० ८; पृ० १७५; मू० २.५० । पु० मु० ।

हिन्दी का भावी रूप : प्र० पब्लिकेशन डिवीजन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पो० बा० २०११, दिल्ली-६; सा० डि० ८; पृ० ३५, मू० ०.३५ । पु० मु० । डा० धीरेन्द्र वर्मा, सुमित्रानंदन पंत और काका कालेलकर आदि के दृष्टिकोण ।

हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य : ले० डा० सियाराम तिवारी; प्र० हिन्दी साहित्य ससार, नई सड़क, दिल्ली; सा० डि०; पृ० ४४०; मू० २२.०० । शोधप्रबंध

हिन्दी नाटक साहित्य और रंगमंच की मीमांसा : ले० कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह; प्र० भारती ग्रंथ भंडार, १ अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० ४०२; मू० १२.५० ।

हिन्दी साहित्य : परंपरा, चिंतन तथा अनुभूति : ले० शंकरदयाल सिंह, प्र० पारिजात प्रकाशन, पटना १; मू० ३.०० ।

कविता

चतुर्मुखी : क० ब्रज किशोर नारायण; प्र० पारिजात प्रकाशन, पटना-१; मू० २.०० ।

चांद का मुंह टेढ़ा है : क० गजानन माधव मुक्तिबोध; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी । कवि की विशिष्ट रचनाओं का पहला संकलन ।

रजनीगन्धा : क० विवेकी राय; प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, ५८ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता; सा० डि०, पृ० ६४; मू० २.०० ।

हिमविद्ध : क० डा० जगदीश गुप्त; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी। एक विशेष भाव-स्वर वाली कविताओं का संकलन।

उपन्यास

जो : ले० डा० प्रभाकर माचवे, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।

टूटती इकाइयाँ : ले० शरद देवड़ा; प्र० अपरा प्रकाशन ४१ ए, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता-१; सा० क्रा०८; पृ० १३१; मू० ३.००।

नाली से : ले० पी० केशवदेव, अनु० सुधांशु चतुर्वेदी; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली-६; सा० क्रा० ८; पृ० ११६; मू० २.५०।

पारि : ले० जरासंध; प्र० साहित्यभवन, प्रा० लि०, इलाहाबाद; मू० ३.००।

बंसत फिर आयेगा : ले० हेमराज 'निर्मम'; प्र० भारतेन्दु-भवन, सेक्टर १५-ए, चण्डीगढ़-२; सा० क्रा०; पृ० ३५०; मू० ६.५०।

कहानी

सोन चिरैया : ले० गिरिजा सक्सेना; प्र० साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद; मू० ३.००।

नाटक

तस्वीर उसकी : ले० चिरंजीत; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, सा० क्रा०, पृ० ७६, मू० १.५० राष्ट्रीय।

मालविकाग्निमित्र : अनु०, पी० डी० शास्त्री; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १६०; मू० ३.००।

जीवनी

भारतीय वैज्ञानिक : ले० श्यामनारायण कपूर; प्र०

साहित्य निकेतन, कानपुर; सा० क्रा० ८; पृ० ४८०; मू० विद्यार्थी सं० ७.००, पु० सं० ८.०० । संशोधित परिवर्धित नवीन संस्करण ।

बालोपयोगी

ईसप की गीत कथाएं (भाग २) : अनु० निरंकारदेव 'सेवक'; प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, पो० बा० २०११, दिल्ली-६; सा० फु-४; पृ० १४२; मू० २.५०; सचित्र, प्रथम भाग ।

चिड़ियों का दरबार : प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, दिल्ली-६; सा० फु० ४; पृ० १२०; मू० १.७५ । १९ लोककथाएं ।

पौधों की कहानी : ले० संतराम वत्स्य; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-६; सा० फु०४; पृ० ३२; मू० १.२५; सचित्र, बहुरंगी छपाई ।

सरल पंचतंत्र (खण्ड-१) : प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, दिल्ली-६; सा० फु० ४, पृ० १०२, मू० १.४० । तृतीय संस्करण ।

हीरे की लौंग : प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, दिल्ली-६; सा० फु० ४; पृ० ५९; मू०. ७५; विभिन्न राज्यों और विदेशों की १८ कथाएं । पु० मु० ।

सामुदायिक विकास

कृषि उद्योगों का विकास और पंचायतें : ले० रामनारायण उपाध्याय; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर दिल्ली-६; सा० डि० ८; पृ० ४८ मू० १.२५ ।

राजनीति-अर्थशास्त्र-विज्ञान

आधुनिक अर्थशास्त्र : ले० एम० एल० सेठ; प्र० रामचन्द्र एन्ड कम्पनी, १ अंसारी रोड़; दरियागंज, दिल्ली; सा० डि०; पृ० ४२०, मू० ७.५० । बी० ए० के लिए ।

खोज की राहें : ले० राल्फ ई० लाच; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० १९९, मू० ३.५० । अणुसंबंधी ।

राजनीति के सिद्धांत : ले० जी० पी० मेहरोत्रा, विद्या भूषण, विष्णुभगवान; प्र० रामचन्द्र एण्ड कम्पनी, १ अंसारी रोड, दिल्ली-६; सा० डि०; पृ० ६००, मू० १२.५० । बी० ए० के लिए ।

धर्म-दर्शन

तांत्रिक साधना : मूल० माधव पुण्डलीक पंडित, अनु० देवदत्त; प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ।

न्यायदर्शन

मीमांसा दर्शन

योगदर्शन

वेदान्त दर्शन

वैशेषिक दर्शन

सांख्य दर्शन : सं० आचार्य पं० श्रीराम शर्मा; प्र० संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली (उ० प्र०); सा० क्रा०८; पृ० क्रमशः २६०, २५६, २४७, २८५, २४३,२६७; मू० प्रत्येक ४.०० । सूचार्थ व सरल व्याख्या सहित हिन्दी टीका ।

विविध

आकाशवाणी विविधा खंड ४ : प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, दिल्ली-६; सा० रा०-८; पृ० २३२; मू० ४.०० । आकाशवाणी से प्रसारित महत्वपूर्ण हिन्दी कार्यक्रमों का संग्रह ।

आज़ादी के सत्रह कदम : प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न दिल्ली-६; सा०डि० ८; पृ० १३६; मू० १.०० । जवाहरलाल नेहरू के स्वातंत्र्य दिवसीय भाषणों के अविकल रूप का संग्रह ।

उथल-पुथल का युग : ले० डा० गोविन्ददास; प्र० पब्लिकेशंस डिवीज़न, दिल्ली-६; सा० डि० ८; पृ० १६६; मू० ३.०० । १६०० से १६४७ तक की आत्मकथा ।

गांधी जी के तीन उत्तराधिकारी : प्र० पारिजात प्रकाशन, पटना-१; मू० ५.०० ।

युगचिन्तन : प्र० रूपा एण्ड कम्पनी, कलकत्ता; सा० डि०; पृ० १६०; मू० ६.०० ।

सूचना सार

अहिन्दी भाषी क्षेत्रों को हिन्दी की पुस्तकें
केन्द्रीय-शिक्षा मन्त्रालय की उपहार-योजना

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय गैर-हिन्दी भाषी क्षेत्रों के उन स्कूलों, कालेजों और सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए उपहारस्वरूप हिन्दी की पुस्तकें देगा जहाँ कि हिन्दी को अनिवार्य या स्वेच्छया विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

इस कार्य के लिए उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रा वर्णन सम्बन्धी पुस्तकें, रेखा-चित्र, जीवनियाँ तथा संस्कृति और इतिहास सम्बन्धी पुस्तकों को खरीदा जाएगा। एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि मौलिक पुस्तकों के अलावा उक्त विषय की लोकप्रिय कृतियों के अनुवाद भी खरीद कर उपहार स्वरूप दिए जायेंगे।

हिन्दी, राजस्थानी व मराठी की
सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों को पुरस्कार

मारवाड़ी सम्मेलन (बम्बई) ने हिन्दी, राजस्थानी और मराठी भाषाओं की दो-दो सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के लेखकों को प्रतिवर्ष पुरस्कार देने की योजना बनाई है। प्रथम पुरस्कार ५०० रु० का और द्वितीय पुरस्कार २५० रु० का होगा। इस वर्ष १९६२ और १९६३ में प्रथम बार प्रकाशित मौलिक रचनाओं पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

'लेडी चैटर्लीज लवर' अश्लील : सुप्रीम कोर्ट का फैसला

उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया है कि डी० एच० लारेंस लिखित पुस्तक 'लेडी चैटर्लीज लवर' (मूल रूप में) अश्लील है।

न्यायाधीश श्री हिदायतुल्ला खाँ ने अपने फैसले में कहा है : स्पष्ट है कि लारेंस ने सेक्स में कविता व संगीत मिलाने का जो प्रयत्न किया है वह ज्यादा समय तक नहीं टिकेगा। और उसके बगैर पुस्तक कुछ भी नहीं है।

संस्कृत के विद्वानों को आर्थिक सहायता

राजस्थान सरकार ने संस्कृत के विद्वानों को आर्थिक सहायता देने का निश्चय किया है।

१०० रु० मासिक आर्थिक सहायता उन विद्वानों को दी जायेगी जो संस्कृत साहित्य के सृजन अथवा अन्वेषण अथवा संचालक संस्कृत शिक्षा द्वारा निर्देशित कोई रचना लिखते हैं। उन विद्वानों को भी, जिन्होंने संस्कृत ज्ञान की प्रगति में महत्वपूर्ण योग दिया है और जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, आर्थिक सहायता दी जायेगी बशर्ते कि वे इस समय शासकीय अथवा अशासकीय सेवा में न हों और उनकी वार्षिक आय ३००० रु० वार्षिक से कम हो।

इसी प्रकार उन विद्वानों को, जिन्होंने पिछले १५ वर्षों में मौलिक रचनाएं करके संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाया है, १,००० रुपये से ३००० रुपये तक योग्यता छात्र-वृत्ति दी जायगी।

राजस्थान साहित्य अकादमी के पांच पुरस्कार
पुस्तकें आमंत्रित

राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) ने निश्चय किया है कि इस वर्ष १९६४-६५ के अकादमी पुरस्कार सर्वोच्च रचनाओं पर निम्नलिखित प्रकार से दिये जाएं। इसके लिए राजस्थान के लेखक १५ सितम्बर, ६४ तक अपनी कृतियाँ कार्यालय में निम्न नियमों के अंतर्गत भेजने की कृपा करें।

अकादमी गद्य पुरस्कार—

१. निबन्ध ५००) रु०; २. कहानी ५०० रु०

अकादमी काव्य पुरस्कार—

१. मुक्तक काव्य ५००) रु०; २. प्रबन्ध काव्य५००)

अकादमी राजस्थानी भाषा और साहित्य पुरस्कार—

१. राजस्थानी गद्य ५००) रु०; २. राजस्थानी पद्य ५००) रु०

अकादमी उर्दू पुरस्कार १. अफसाना ५००) रु०; २. मजूमनिगारी खजीमीन ५००)

अकादमी संस्कृत पुरस्कार १. काव्य ५००) रु० २. गद्य ५००)

अकादमी विविध पुरस्कार—

१. विज्ञान ५००) रु०; २. महिला साहित्य ५००) रु०

१५ सितम्बर, १९६१ से १५ सितम्बर १९६४ तक प्रकाशित या लिखित रचनाएं ही पुरस्कार के लिए विचारार्थ स्वीकार की जायेंगी।

१०० से कम पृष्ठों की रचना पुरस्कार के लिए स्वीकार नहीं की जायगी।

प्रकाशित पुस्तकों अथवा पाण्डुलिपियों की चार-चार प्रतियां अकादमी कार्यालय में भेजना अनिवार्य है।

उत्तरप्रदेश में दस और सीनियर बालिका विद्यालय

इस वर्ष १० राजकीय बालिका सीनियर बेसिक स्कूल और खोले गये हैं। इस तरह की शिक्षण संस्थाओं की संख्या अब बढ़कर ४९ हो गयी है। ये स्कूल हरद्वार, पांडुनगर (कानपुर), पिपराइच (गोरखपुर), शिकारपुर (बुलन्द शहर), उत्तरी विजयनगर कालोनी (आगरा), हस्तिनापुर, गोला गोकर्णनाथ (खीरी), जगनेर (आगरा, पबाऊ (गढ़वाल) और बांदा में खोले गये हैं।

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के बच्चों के लिए ५२ स्कूल

भारत सरकार ने केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के बच्चों के लिए देशभर में जो ५२ हायर सेकेंडरी स्कूल खोले हैं, उनमें इस साल से पढ़ाई शुरू हो गई है। १९६४-६५ में इस प्रकार के पांच और स्कूल खोले जाएंगे।

ये स्कूल सैंट्रल एजुकेशन बोर्ड, नई दिल्ली की हायर सेकण्डरी परीक्षा के लिए छात्र तैयार करते हैं। हर स्कूल में शिक्षा का माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी है। आन्ध्र प्रदेश में इस प्रकार के २, बिहार में १, गुजरात में २, केरल में २, मध्य प्रदेश में ५, मद्रास में ३, महाराष्ट्र में ८, मैसूर में ३, पंजाब में ५, राजस्थान में २, उत्तर प्रदेश में ३५, पश्चिम बंगाल में १, दिल्ली में २, और मणिपुर में १ स्कूल खोले गए हैं।

पंजाब में अल्पकालिक पुस्तकालय पाठ्यक्रम

चंडीगढ़ में पुस्तकालय विज्ञान के चार मास के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का पांचवां सत्र १ नवम्बर, १९६४ से प्रारम्भ हो रहा है।

इस पाठ्यक्रम में केवल ३० स्थान हैं। इसमें से २५ प्रतिशत स्थान नए प्रशिक्षणार्थियों के लिए और ७५ प्रतिशत स्थान ऐसे उमीदवारों के लिए सुरक्षित हैं जो आगे ही इस व्यवसाय में काम कर रहे हैं या इसका कुछ अनुभव रखते हैं। नए दाखिल होने वालों के लिए न्यूनतम शैक्षणिक अर्हता प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण मैट्रिक या हायर सैकेंडरी परीक्षा है। अन्य स्थितियों में न्यूनतम अर्हता मैट्रिक है। इसके लिए श्रेणी का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। आवेदन पत्र प्राप्त करने की अन्तिम तिथि १५ सितम्बर, १९६४ है। इस सम्बन्ध में निर्धारित आवेदन पत्र फार्म १ रुपये का भुगतान करने पर सचिव, सैंट्रल लाइब्रेरी कमेटी सिविल सैक्रेटेरिएट, चंडीगढ़ से प्राप्त हो सकते हैं।

एक लाख रु० वाले पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन भाषावर्ग-समितियों द्वारा विचार

भारतीय भाषाओं में से सर्वश्रेष्ठ कृति पर प्रतिवर्ष एक लाख रुपया पुरस्कार देने की भारतीय ज्ञानपीठ की योजना के अनुसार संगठित चौदहों भाषा-परामर्श समितियां सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में एक-एक पुस्तक चुन चुकी हैं।

सन् १९६५ में घोषित होने वाले प्रथम पुरस्कार के लिए निर्वाचित इन पुस्तकों पर अब भाषावर्ग समितियों द्वारा विचार हो रहा है, ताकि प्रवर परिषद पाँच या छह पुस्तकों पर अन्तिम रूप से विचार कर सके। प्रवर परिषद् के सदस्य हैं १. डा० सम्पूर्णानन्द २. श्री काका कालेलकर, ३. डा० रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर ४. डा० हरेकृष्ण मेहताब ५. डा० वी० राघवन ६. डा० नीहार रंजन राय ७. डा० बी० गोपाल रेड्डी ८. प्रो०एम० मुजीब और ९. डा० कर्णसिंह। भारतीय ज्ञानपीठ का प्रतिनिधित्व श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीमती रमा जैन और श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन कर रहे हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ ने अभी हाल में १९६६ में घोषित होने वाले द्वितीय पुरस्कार के लिए पुस्तक प्रस्ताव-पत्रों का आमन्त्रण घोषित किया है। कोई भी व्यक्ति जो कि भारतीय संविधान में आठवें परिशिष्ट में अनुसूचित भाषाओं के किसी भी साहित्य में रुचि लेता है, पुरस्कार योग्य पुस्तक के बारे में अपना सुझाव भेज सकता है। यह आवश्यक है कि १९६६ में घोषित होने वाले पुरस्कार के लिए वही कृति प्रस्तावित की जाय, जो १९२१ से १९५९ की अवधि में प्रकाशित हुई हो और उसका लेखक जीवित हो।

इस सम्बन्ध में सारी जानकारी और सम्बन्धित पुस्तक-प्रस्ताव-पत्र मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ, ९. अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता, २७ से प्राप्त हो सकते हैं। १९६६ के पुरस्कारार्थ पुस्तक-प्रस्ताव-पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अक्तूबर, १९६४ है।

अहिंदी राज्यों में हिन्दी माध्यम से पढ़ाई वाले स्कूलों को वित्तीय सहायता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि सार्वजनिक हिन्दी संगठनों को सहायता देने की भारत सरकार की योजना के अंतर्गत अहिंदी राज्यों के उन हाई स्कूलों को भी अनुदान दिया जाता है, जहाँ पढ़ाई का माध्यम हिंदी है। उन स्कूलों को राज्य सरकार के प्रमाणपत्र पर शिक्षा मंत्रालय तदर्थ अनुदान भी दे सकता है, जिससे उनकी पिछले वित्तीय साल की कमी पूरी हो सके।

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग

स्वराष्ट्र मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति द्वारा नियुक्त एक उपसमिति के आग्रह पर केन्द्रीय सरकार ने हिंदी भाषी राज्यों से यह बताने को कहा है कि उनके यहाँ सरकारी काम में हिंदी प्रयोग की प्रगति कितनी हुई है।

समझा जाता है कि अनेक हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी में सरकारी कामकाज ज्यादातर अनुवाद के स्तर पर हो रहा है और कर्मचारी मूलतः हिंदी में काम करने का प्रोत्साहन नहीं पा रहे हैं। एक राज्य में तो विधेयक पहले अंग्रेज़ी में लिखे जाते हैं और फिर उनके हिंदी संस्करण को मूल तथा मूल-अंग्रेज़ी को अनुवाद के नाम से पेश किया जाता है।

स्वराष्ट्रमंत्री श्री नंदा इस बात के लिए बहुत उत्सुक बताये जाते हैं कि कम-से-कम हिंदी-भाषी क्षेत्रों में तो १९६५ से हिंदी को राज्यभाषा का पूर्ण स्थान मिल जाना चाहिए। इसलिये उक्त प्रश्न राज्य सरकारों के पास शीघ्र उत्तर के लिए भेजा गया है।

छः राज्यों में मिडिल तक शिक्षा का विकास धीमा

एक सरकारी सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार बिहार, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और जम्मू व काश्मीर में शिक्षा के विकास की गति विशेषकर प्रारंभिक तथा मिडिल स्तर पर धीमी पड़ गई है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इन राज्यों के ६ से ११ वर्ष की आयु के ६२ प्रतिशत बच्चे स्कूल नहीं जाते। इन राज्यों में ६० प्रतिशत छात्र प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करने से पहले ही पढ़ाई छोड़ बैठते हैं।

ऐसा अनुमान है कि तीसरी योजना की समाप्ति तक इन राज्यों में प्रारम्भिक स्तर पर स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या ७८.२ प्रतिशत तक पहुंच जाएगी। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इन राज्यों में पढ़ाई का स्तर भी अन्य राज्यों की अपेक्षा गिरा हुआ है। उत्तर प्रदेश और बिहार में अध्यापकों के वेतन बहुत कम हैं।

केन्द्रीय सरकार ने योजना आयोग से कहा है कि यदि इन राज्यों को विशेष सहायता की व्यवस्था नहीं की गई तो इनमें चौथी योजना के दौरान भी शिक्षा के विकास की दिशा में कोई प्रगति नहीं होगी।

प्रधानमंत्री का निश्चय : अभिनन्दन-ग्रन्थ न लेंगे

प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने अभिनंदन-ग्रंथ तैयार करने के प्रस्ताव का विरोध किया है और एक वक्तव्य में कहा है कि मैं नहीं चाहता कि मेरे जन्मदिन पर अभिनंदन-ग्रंथ मुझे भेंट किया जाय। आपने कहा है, मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मेरे जन्म-दिवस पर मुझे अभिनंदन-ग्रंथ भेंट करने की तैयारी की जा रही है। मैं अपने जन्मदिन पर ऐसा कोई ग्रंथ स्वीकार नहीं कर सकूंगा।

हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन में २८ प्रतिशत वृद्धि दिल्ली सबसे आगे

देश में पिछले साल की अपेक्षा १९६३-६४ में हिन्दी की २८.२ प्रतिशत अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इस साल कुल, ३५०० पुस्तकें छपीं जब कि १९६२-६३ में २,७३० पुस्तकें छपी थीं। इसी अवधि में अंग्रेजी की पुस्तकों के प्रकाशन में भी २२.३ प्रतिशत वृद्धि हुई।

सबसे अधिक वृद्धि उड़िया पुस्तकों में हुई। इस साल इनका प्रकाशन २७२. ८ प्रतिशत पिछले वर्ष से अधिक रहा। असमिया पुस्तकों के प्रकाशन में गिरावट आई। १९६३-६४ में उड़िया की ६९१ और असमिया की १४४ पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जब कि १९६२-६३ में उड़िया की १८८, असमिया की ४४० पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं।

इस वर्ष भाषावार प्रकाशन इस प्रकार रहा :— अंग्रेजी— ११,२५६, हिन्दी--३५००, मराठी--१७६३, और बंगला-१६६६। सबसे कम पुस्तकें (केवल पांच) कश्मीरी में प्रकाशित हुईं।

राज्यवार प्रकाशन की दृष्टि से सबसे अधिक पुस्तकें, ४११७ दिल्ली में प्रकाशित हुईं। महाराष्ट्र में ३८५८, पश्चिम बंगाल में ३२०१ और मद्रास ३०७८ पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

यह जानकारी कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय में पुस्तक (सार्वजनिक पुस्तकालय) कानून १९५४ के अंतर्गत प्राप्त होने वाली पुस्तकों के आधार पर दी गई है।

उड़ीसा में १४ लाख पाठ्यपुस्तकें छपीं

१९६३-६४ में उड़ीसा सरकार ने प्राइमरी की १४ लाख पाठ्य पुस्तकें छापीं और वितरित की हैं। इस वर्ष में लड़कियों के ११ हाई और ३८ मिडिल स्कूल नये खोले गये हैं। जनरल कालेजों की संख्या ३९ से ४३ हो गई है। संभलपुर और ब्रह्मपुर में नये सांध्य कॉलेज खुले हैं।

उत्तरप्रदेश में शिक्षा का प्रसार

१९६३-६४ में राज्य के विभिन्न भागों में ६,२५० नये स्कूल खोले गये। इनमें १,५०० मिश्रित (लड़कों और लड़कियों के लिए) और १,००० बालिका प्राथमिक विद्यालय हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में खोले गये। इसमें ८० स्कूल लड़कों के लिए और ७० स्कूल लड़कियों के लिए भी शामिल हैं जो नागर क्षेत्रों में खोले गये हैं।

राज्य में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या अब ५२,००० तक पहुंच गई है जिनसे ५७,००,००० बालक-बालिकाओं को शिक्षा दी जा रही है। इस प्रकार ६ से ११ वर्ष तक की अवस्था के ५५ प्रतिशत बालक-बालिकाएँ इन विद्यालयों में शिक्षा पा रही हैं।

प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों की बढ़ती हुई माँग को देखते हुए ३,००० अदीक्षित अध्यापकों तथा ४,००० प्रधानाध्यापकों की नियुक्ति की गई। फिर भी राज्य में १४,००० अध्यापकों की कमी रह जाने के कारण गत दिसम्बर में ११,२६५ अनट्रेन्ड अध्यापक और नियुक्त किये गये।

बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में ५०० स्कूल माताओं की नियुक्ति की गई और ६० क्रमिक कन्टीनुएशन कक्षाएँ खोली गईं।

प्राथमिक शिक्षा के स्तर में सुधार करने के लिए गत वर्ष इलाहाबाद में एक प्राथमिक शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना की गई।

जूनियर हाईस्कूल के स्तर पर २१ और नये स्कूल खोले गये। इसके अतिरिक्त लड़कियों के लिए ४७ जूनियर हाईस्कूल और लड़कों के लिए १७० जूनियर हाईस्कूल राजकीय अनुदान सूची में सम्मिलित किये गये।

माध्यमिक शिक्षा प्रसार के लिये ६ गवर्नमेंट हाई-स्कूलों को इन्टर कालेज बना दिया गया और ९ जूनियर हाईस्कूलों का स्तर ऊंचा करके हाईस्कूल बना दिया गया। इसके अलावा ७० अन्य प्राइवेट माध्यमिक विद्यालयों को राजकीय अनुदान सूची में सम्मिलित किया गया।

राज्य में उच्च शिक्षा का विस्तार करने के अभिप्राय से पिथौरागढ़ में एक नया डिग्री कॉलेज खोला गया। साथ ही राज्य के विभिन्न भागों में लड़कियों के लिए भी पाँच डिग्री कॉलेज खोले गये। इसके अतिरिक्त ३२ डिग्री कालेजों को राजकीय अनुदान सूची में सम्मिलित किया गया।

अगस्त १९६३ से पूरे राज्य में स्नातक परीक्षा से नीचे के सभी छात्रों के लिए एन० सी० सी० की ट्रेनिंग अनिवार्य कर दी गई। राष्ट्रीय आपत्काल की घोषणा होने के बाद से एन० सी० सी० कैडेटों की संख्या में १,५०,०००

की वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय अनुशासन योजना का प्रसार लगभग १,००० माध्यमिक विद्यालयों में किया जा चुका है।

देशभर में हिन्दी परीक्षाओं का समान स्तर हो

श्री भक्तदर्शन की हिन्दी संस्थाओं से अपील

हिंदी संस्थाओं के अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय शिक्षा उपमन्त्री, श्री भक्त-दर्शन ने सुझाव दिया कि विभिन्न संस्थाओं की हिन्दी परीक्षाओं का समान स्तर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन परीक्षाओं के नाम भी समान होने चाहिएं।

यह सम्मेलन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने बुलाया था और इसमें हिन्दी संस्थानों के २६ प्रतिनिधियों, राज्य सरकारों और केन्द्रशासित प्रदेशों के द्वारा नामजद १३ व्यक्तियों और केन्द्रीय गृह तथा शिक्षा मन्त्रालयों के कई उच्च अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

सम्मेलन में संविधान को मंजूरी दी गई, जिसके अधीन नई दिल्ली में अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ की स्थापना की गई है। १५ हिंदी संस्थाओं के दो-दो प्रतिनिधि, राज्य सरकारों और केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा नामजद एक-एक व्यक्ति और केन्द्रीय सरकार द्वारा नामजद दो व्यक्ति संघ के सदस्य होंगे। संघ की कार्यकारिणी को समिति कहा जाएगा। निम्न-लिखित व्यक्तियों को सर्वसम्मति से समिति का सदस्य चुना गया है: श्री गंगासरण सिंह, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर (अध्यक्ष); श्री जे० पी० नैने, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पूना, (मंत्री); और श्री भालचन्द्र आप्टे, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास (कोषाध्यक्ष)।

प्रत्येक व्यक्ति को हिन्दी अवश्य जाननी चाहिए

हिन्दी-शिक्षा समिति की बैठक में

शिक्षा मंत्री श्री छागला का भाषण

हिन्दी-शिक्षा समिति की १६वीं बैठक का समारभ करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री छागला ने कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को कम-से-कम एक समान भाषा अवश्य जाननी चाहिए और वह है हिन्दी। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिन्दी को और आगे बढ़ना चाहिए ताकि वह वास्तविक रूप में राष्ट्रीय भाषा के पद पर आसीन हो सके। शिक्षा मंत्री ने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि दक्षिण भारत में लोग बड़े उत्साह से हिन्दी सीख रहे हैं। पुरुषों से अधिक स्त्रियों में हिन्दी सीखने की इच्छा है।

श्री छागला ने कहा कि हमारे देश में भाषा की उतनी कठिनाई नहीं है, जितनी कि अन्य देशों में। सोवियत रूस में एक समान भाषा है और पचास क्षेत्रीय भाषाएँ जबकि भारत में केवल १६ क्षेत्रीय भाषाएं हैं।

'नव संगम' परिवार: छिपी प्रतिभाओं को प्रकाश में लाने का प्रयत्न

पटना में जोगिया टोला मुहल्ले में श्री सुरेश दूबे 'सरस' के निवास-स्थान पर 'नवसंगम परिवार' के सदस्यों की एक बैठक श्री शिवजी मिश्र की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सर्व-सम्मति से चुनाव द्वारा 'नव-संगम-परिवार' की कार्य-कारिणी समिति का संगठन इस प्रकार सम्पन्न हुआ:

अध्यक्ष श्री सुरेश दूबे 'सरस', मंत्री श्री नन्दा चक्रपाणि, संयुक्त मंत्री–श्री गोपालशरण पाण्डेय एवं श्री शिवकुमार लाल, प्रबन्धमंत्री–श्री राम सागर मिश्र 'स्नेही' एवं श्री रामनाथ उपाध्याय 'संतोषी', प्रकाशन-मंत्री–श्री किशोरी लाल 'गुप्त' एवं श्री जनक किशोर यादव 'किशोर', कला-मंत्री–श्री विमलेन्दु सरकार एवं श्री बालेश्वर झा 'दीन', संगीत मंत्री–श्री प्रेमनाथ ठाकुर, प्रचारमंत्री–श्री रामराज दूबे 'राजेश', कोषाध्यक्ष–श्री शिवजी मिश्र।

'नव-संगम परिवार' का उद्देश्य 'नवांकुर' के माध्यम से हिन्दी की छिपी प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना है। 'नवांकुर' के प्रत्येक अंक में नौ नये कलमकारों की रच-नाएं प्रकाशित की जा रही हैं तथा अब तक अखिल भारतीय स्तर पर गीत और नई कविता के इसके दो अंक प्रकाश में आ चुके हैं। तीसरा अंक कहानी-संकलन शीघ्र प्रकाश्य है। इसी भांति साहित्य की विविध विधाओं के अनूठे संग्रह 'नवांकुर' की अगली क्यारियों में प्रकाशित करने की योजना है, जिसके लिए देश के विभिन्न भागों से रचनाएँ प्राप्त हो रही हैं।

१७ अगस्त १९६४ की एक घटना ......

ओंकार शरद की पचासवीं कृति 'देश, काल, पात्र' के प्रकाशनोत्सव पर प्रयाग में आयोजित एक गोष्ठी की अध्यक्षता डा० राममनोहर लोहिया ने की और उद्घाटन किया श्रीमती महादेवी वर्मा ने

गोष्ठी का एक दृश्य—ओंकार शरद, डॉ० लोहिया, श्रीमती महादेवीजी

महादेवी जी ने कहा : इस छोटी उम्र में शरद ने जितना काम किया वह हिन्दी के लिए एक उदाहरण है..................।

डॉ० लोहिया ने कहा : ओंकार शरद गद्य के राजकुमार हैं......................।

ओंकार शरद की पचासवीं कृति

देश, काल, पात्र

अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर रही है।

संस्मरणों, रेखाचित्रों, और बीती बातों का ऐसा अनूठा संकलन अन्यथा दुर्लभ है।

बहुमूल्य चित्रों से सुसज्जित मूल्य : ४.०० मात्र।

ओंकार शरद की अन्य कृतियां भी हमसे प्राप्त करें।

प्रकाशक

राजरंजना प्रकाशन

ऋषि कुटी, जीरो रोड, इलाहाबाद–३

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकों की इनाम प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने नवसाक्षरों के लिए लिखी गयी पुस्तकों की चौथी पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें मांगी हैं। इस प्रतियोगिता का आयोजन यूनेस्को ने किया है और उसमें ग्यारह-ग्यारह सौ रुपये के सत्रह पुरस्कार दिये जायेंगे। हिन्दी की पुस्तकों को चार पुरस्कार और असमी, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु, और उर्दू की पुस्तकों पर एक-एक पुरस्कार दिया जायगा।

प्रतियोगिता के लिए भेजी जानेवाली पुस्तकें निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर हो सकती हैं: अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सामुदायिक विकास, सामान्य विज्ञान, आर्थिक और सामाजिक विकास और सामान्य सांस्कृतिक विषय। पुस्तक का लेखक और प्रकाशक भारतीय होना चाहिए और पृष्ठ संख्या ९६ से लेकर १४४ तक होनी चाहिए। पुस्तक की प्रकाशन तिथि एक जनवरी ६३ से लेकर ३० दिसम्बर ६४ के बीच होनी चाहिए।

सरल पौराणिक साहित्य का अनुवाद भी इस प्रतियोगिता में भेजा जा सकता है, किन्तु उस पुस्तक की पृष्ठ संख्या १६० से २५६ के बीच ही होनी चाहिए।

जो व्यक्ति इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपनी पुस्तक की पाँच प्रतियां और दस रु० प्रवेश शुल्क खजाने के चालान के रूप में एस० डब्ल्यू० २ सेक्शन शिक्षा-मंत्रालय को ३१ मई, १९६५ तक अवश्य भेज दें।

प्रकाशनों के सर्वोत्तम मुद्रण पर पुरस्कार

सर्वोत्तम मुद्रण और डिजाइन के प्रकाशनों को पुरस्कार देने के लिए सूचना और प्रसारण मन्त्रालय का विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय यह प्रतियोगिता करता है। इस बार ९वीं प्रतियोगिता में २४ वर्गों में पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों को सर्वोत्तम मुद्रण और डिजाइन पर पुरस्कार दिये गये हैं। कुछ विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं: बाल पुस्तकें : सशाच कान (मराठी), एसोपेर गल्प (बंगला), चिन्व चिन्व चिमनी (मराठी), और पायासन कुदिव कुरुव्वी (तमिल)। पुस्तकें (अंग्रेजी), चतुरंग, दि

ल्यूट एण्ड दि प्लो और हिमाल्यान पोलिएंडरी। (भारतीय भाषाएं): हरि वारिस (गुरुमुखी) ब्रांड (मराठी), नन्द-लाल बोस (बंगला) और प्रेमेर कविता (बंगला)। सर्वोत्तम सजिल्द पुस्तकें: समप्रातिक (बंगला) और 'हाउ दि ब्रिटिश आकुपाइड बंगाल'।

देवनागरी टाइप फेस: बारह प्वाइंट विष्णु और बारह प्वाइंट अनुपम।

नवसाक्षरों के लिए ४० पुस्तकों को पुरस्कार

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने नवसाक्षरों के लिए पुस्तकों पर पुरस्कार देने की दसवीं प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिये हैं। इनके आधार पर विभिन्न भारतीय भाषाओं की ४० पुस्तकों के लेखकों को ५००-५०० रुपये के पुरस्कार दिए गए हैं।

हिन्दी की पुरस्कृत पुस्तकों और लेखकों के नाम इस प्रकार हैं:

धर्म क्या कहता है—१ धर्मों की फुलवाड़ी (श्री कृष्णदत्त भट्ट); लोकतंत्र का जन्म (श्री विश्वेश्वर प्रसाद); इंसान बनो (श्री विष्णुदत्त विकल); पाँच सिपाही (श्री राम कुमार भ्रमर); अब हम आजाद हैं (श्री जे. भारतदास); बत्तियाँ कई दीप एक (श्री व्यथित हृदय); भारत के महान ऋषि (श्री प्राणनाथ वानप्रस्थी); भारतीय तेल की कहानी (डा. गोविन्द चातक) हमारा पड़ोसी चाँद (श्री रमेश वर्मा); भारतीय एकता की कहानी (श्री जी. डी. नागर); पंचायत का न्याय (श्री संतोष नारायण नौटियाल)।

विशेष सूचना

अगले महीने से 'हिन्दी प्रकाशक' उन पुस्तक विक्रेताओं को नहीं भेजा जायगा जो अब तक इसके ग्राहक नहीं बने। ऐसे जो बन्धु 'हिन्दी प्रकाशक' निरंतर प्राप्त करना चाहते हैं वे ३.०० मनीआर्डर से भेज कर तुरंत ग्राहक बन जायँ।

—प्रधान मंत्री

संघ समाचार

कार्य समिति की बैठक के लिए सूचना

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ की कार्यकारिणी की वर्तमान सत्र की दूसरी बैठक रविवार दिनांक १३ सितम्बर, १९६४ को मध्याह्न ३ बजे संघ के कार्यालय २६-ए, जवाहरनगर, दिल्ली-६ में निम्नलिखित विषयों पर विचार करने के लिए होगी:

१. पिछली बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि
२. राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का आयोजन
३. पुस्तक-वितरण की सहकारी योजना विषयक उपसमिति की सिफारिशों पर विचार
४. सन्दर्भ पुस्तकों (सोर्स बुक्स) की सूची का बनाना
५. एजुकेशनल पुस्तकों की सम्मिलित सूची के संबंध में विचार
६. सदस्यों की प्रामाणिकता के संबंध में कार्यालय की रिपोर्ट पर विचार
७. सभापति की अनुमति से कोई अन्य आवश्यक विषय

—प्रधान मंत्री

पुस्तकों के मूल्य की चर्चा

बुलेटिन द्वारा स्पष्टीकरण

अगस्त के 'हिन्दी प्रकाशक' में संपादक के नाम पत्र शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तकों के मूल्य की चर्चा की गई है। उस संदर्भ में एक प्रकाशन संस्थान के बुलेटिन का उल्लेख हुआ है और आग्रह किया गया है कि बुलेटिन में प्रकट विचारों के लिए क्षमा मांगी जाय। प्रसन्नता की बात है कि उक्त बुलेटिन के नये अंक में स्पष्टीकरण करते हुए लिखा गया है कि हमने दूसरों के विचार अंकित किये थे और उनका उत्तर देना चाहते थे। असावधानीवश हमारा उत्तर संयुक्त नहीं हो सका और दूसरों के विचार हमारे विचारों के रूप में चले गये।

भूल चाहे जितनी बड़ी हो, क्षम्य होती है। अतएव पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे इस संदर्भ से उक्त बुलेटिन को पृथक कर देने का अनुग्रह करें। —सं०

प्रकाशक बन्धुओं की सेवा में आवश्यक सूचना

हिन्दी साहित्य : १९६४

[परिचय विशेषांक]

'हिन्दी प्रकाशक' ने १९६३ में प्रकाशित संपूर्ण हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने वाला जो विशेषांक मार्च-अप्रैल के संयुक्त अंक के रूप में प्रस्तुत किया है वह कई तरह की असुविधाओं में और काफी जल्दी में प्रकाशित हुआ है फिर भी उसका सर्वत्र स्वागत किया गया है और कहा गया है कि ऐसा विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाय। आदेश को शिरोधार्य करते हुए १९६४ में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों का परिचय देने के लिए जनवरी मास में विशेषांक प्रस्तुत करने का निश्चय हो गया है। विशेषांक की तैयारी का काम भी हाथ में ले लिया गया है। प्रकाशक बन्धुओं के सक्रिय सहयोग से ही यह बड़ा काम समय पर और सर्वांग संपूर्ण रूप में सम्पन्न हो सकता है। अतएव निवेदन है कि—

प्रकाशक बन्धु अपने जनवरी १९६४ से लगाकर अब तक के प्रकाशनों की एक-एक प्रति तत्काल भेज दें और दिसम्बर तक प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की एक-एक प्रति प्रतिमास भेजते रहें।

कार्यालय प्राप्त पुस्तकों का परिचय तैयार करता जायगा और १५ दिसंबर को सामग्री प्रेस को दे देगा। ऐसी व्यवस्था भी सोची जा रही है कि 'हिंदी प्रकाशक' में प्रकाशनों का कुछ अधिक परिचय दिया जाया करे। यदि यह संभव हुआ तो प्राप्त पुस्तकों का उपयोग इस दिशा में भी हो जायगा। प्राप्त पुस्तकें लौटाई नहीं जायेंगी बल्कि अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ की निधि बन जायेंगी। विशेषांक और 'हिन्दी प्रकाशक' में उनके परिचय से होने वाले दुहरे लाभ को देखते हुए प्रकाशक बन्धुओं को इतना सहयोग निःसंकोच होकर देना चाहिए।

विश्वास है कि अब तक के प्रकाशन शीघ्र ही कार्यालय को मिल जायेंगे और आगामी प्रकाशन निरंतर पहुँचते रहेंगे। और इस प्रकार हम यह सेवा करने में समर्थ हो जायेंगे।

—**संपादक**

- हमने टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल व एग्रीकल्चरल-सम्बन्धी लगभग २५० प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।
- हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।
- आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।
- क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मंगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।
२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।
३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।
४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।
५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।
६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये।

भारत की समस्त लाइब्रेरियाँ

मल्टीपरपज़ शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्राम-पंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी मांगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आप को सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्कशास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाजार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेन्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, पुरी प्रिंटर्स, देशबन्धु गुप्ता रोड, नई दिल्ली में मुद्रित एवं २६।ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ अक्टूबर १९६४ अंक ११

17.10.64.

भारत के निर्माता तथा प्रेरणा-स्रोत स्व० नेहरूजी के आदर्शों के प्रसार और नई पीढ़ी में उनकी भावनाओं को क्रियान्वित करने के लिए शिक्षा संस्थाओं, अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा पुस्तकालयों एवं वाचनालयों को विशेष रियायत।

संपूर्ण नेहरू-साहित्य लेनेवालों को रु० ६७-६५ का सैट डाक-भाड़ा-व्यय सहित ५२-५० में दिया जायगा। यह सुविधा १४ नवम्बर १९६४ तक है।

मेरी कहानी (नेहरूजी की आत्मकथा) १०.००
गौरवपूर्ण ग्रंथ जिसकी बातें हृदय-पटल पर अंकित हो जाती हैं।

मेरी कहानी (संक्षिप्त) २.५०
युवकोपयोगी संस्करण

राजनीति से दूर २.००
नेहरूजी के व्यक्तित्व का वह पहलू जिससे अधिकांश देशवासी अपरिचित हैं।

राष्ट्रपिता २.००
गांधीजी के संपर्क के प्रकाश में स्वाधीनता संग्राम की ज्ञानवर्द्धक कहानी।

विश्व-इतिहास की झलक (संपूर्ण दो खण्डों में) २०.००
विश्व-राजनीति का ज्ञानवर्द्धक चित्रण।

हिन्दुस्तान की कहानी १०.००
नई दृष्टि का चमत्कार।

हिन्दुस्तान की कहानी (संक्षिप्त) ३.००

नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन ०.४०

लड़खड़ाती दुनिया ३.००
विश्व की प्रमुख समस्याओं का विवेचन।

हिन्दुस्तान की समस्याएं २.५०
राष्ट्रीय समस्याओं पर ओजस्वी विचार।

कुछ पुरानी चिट्ठियां १०.००
श्री नेहरू के निजी संग्रह के ६६८ महत्वपूर्ण पत्र।

इतिहास के महापुरुष १.५०
महापुरुषों के जीवन का निचोड़।

जनता के जवाहर ०.७५

गांधी डायरी १९६५

(गांधी जयन्ती पर प्रकाशित)

टेबल डायरी	जेबी डायरी
२.५० पैसे	१.५० पैसे

- आर्डर के साथ १० रु० अग्रिम भेजने की कृपा करें।
- अपना रेलवे स्टेशन अवश्य लिखें।

सस्ता साहित्य मण्डल

प्रधान कार्यालय	शाखा कार्यालय
कनॉट सर्कस	जीरो रोड
नई दिल्ली	इलाहाबाद

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक ११ | अक्टूबर, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

उत्तर प्रदेश के विकास विभाग का अनोखा आदेश

अ०भा० हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति ने उत्तर प्रदेश के विकास विभाग के इस आदेश पर खेद प्रकट किया है कि विकास-खण्डों को पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता नहीं है। आदेश इस आधार पर दिया गया बताया जाता है कि विकास खण्डों की सीमा में रहने वाली जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि नहीं है अतएव पुस्तकों पर पैसा खर्च करना अपव्यय है। उत्तर प्रदेश के विकास-खण्ड वर्ष में कई लाख रुपये की पुस्तकें खरीदते हैं। ऐसी खरीद की बंदी पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय के लिए काफी बड़ी चोट है परन्तु जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि के अभाव की सूचना इस से भी अधिक गहरी और व्यापक प्रभाव वाली बात है इसलिए इस पर विचार करना आवश्यक है।

दो वर्ष पहले उत्तर प्रदेश के विकास विभाग ने उपन्यासों की खरीद पर रोक लगाई थी। अ०भा०हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति ने अपनी २५-१०-६२ की बैठक में उस पर विचार किया था और अपने दो सदस्यों को विभागीय अधिकारियों से भेंट करने का आदेश दिया था। विभागीय अधिकारियों का दृष्टिकोण कुछ ऐसा था कि विकास-खण्डों में उपन्यास ही खरीद लिए जाते हैं और वही पढ़े जाते हैं—उपयोगी साहित्य को कोई छूता भी नहीं। संघ के प्रतिनिधियों ने कार्य समिति का यह दृष्टिकोण उनके सामने रखा था कि उपन्यास एक ऐसी विधा है जिसमें समाज की प्रगति और विकास, सभी दिशाओं का सर्वांगीण निरूपण और निर्देश पाया जाता है अतः स्वस्थ उपन्यासों की खरीद पर रोक नहीं लगानी चाहिये। परंतु अधिकारी अपने निष्कर्ष पर जमे रहे। उनकी नई आज्ञा और विचारधारा के अनुसार पूरी बात इस प्रकार कही जायेगी कि लोग उपन्यासों के सिवा अन्य पुस्तकें पढ़ने में रुचि नहीं रखते और विभाग उपन्यास खरीदने का आदेश देना नहीं चाहता इसलिए पुस्तकों की खरीद ही समाप्त की गई है।

जन साधारण में हल्के साहित्य के प्रति अभिरुचि किसी प्रदेश या देश की नहीं सम्पूर्ण विश्व के लिए समस्या हो गई है। अमरीकन उपन्यासों को खतरा समझने वाले इंगलैंड में इस बाढ़ को रोकने के लिए कुछ प्रयत्न भी हुए हैं परन्तु उनमें बुद्धि और धैर्य का स्थान बल या क्रोध को नहीं दिया गया। बल या क्रोध से संसार का कोई भी प्रवाह आज तक रोका नहीं जा सका। प्रवाह की दिशा को मोड़ने और उसे कल्याणकारी बनाने का उद्योग ही समुचित माना जा सकता है। प्रयत्न को छोड़ देना और प्रवाह को अपने मार्ग पर जाने देना पलायनवाद का परिचायक माना जायगा और उस चिकित्सक का चित्र सामने लायेगा जो कड़वी औषधि के प्रति अरुचि प्रकट करने वाले रोगी को औषधि देना ही बंद कर देता है—उसके स्थान पर मीठे 'कैपसूल' का उपयोग करने वाला चिकित्सक निःसंदेह अधिक बुद्धिमान और व्यवहार कुशल माना जायगा और पीयूषपाणि का यश प्राप्त करेगा।

हमारी नम्र सम्मति में उचित मार्ग यही है कि उपन्यासों की खरीद पर लगी हुई रोक भी वापस ली जाय और विकास विभाग अपनी स्वीकृत सूची को अधिक

उपयोगी के साथ मनोरंजक स्वरूप भी दे। इसके लिए उन्हीं पुस्तकों का सहारा न लिया जाय जो विभाग की मेज पर अपने आप पहुँच जायँ अपितु स्वयं खोज पूर्ण दृष्टि से देखा जाय। आवश्यकता हो तो ऐसे साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहित भी करे। इसका यह अर्थ अवश्य नहीं है कि विभाग स्वयं साहित्य ढालने की फैक्टरी का रूप धारण कर ले। इस काम में लगे लेखकों और प्रकाशकों की शक्ति का ही उपयोग किया जाय। सरकारी विभागों में दुनिया भर के काम समेट लेने की प्रवृत्ति बहुत बढ़ गई है। परंतु उनका निर्वाह कैसे होता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि गेहूँ रुपये में बारह छटांक मिल रहा है!

आशा है कि उत्तर प्रदेश का विकास विभाग प्रकाशक संघ की कार्य समिति के प्रस्ताव पर विचार करेगा और अपने नाम को सार्थक करता हुआ सही दिशा में ही अग्रसर होगा।

राजस्थान के संचालक का सराहनीय पग

अजमेर से मिली एक सूचना के अनुसार राजस्थान के शिक्षा संचालक ने स्कूलों और कालेजों के प्रधानाअध्यापकों आदि को स्वतंत्रता दे दी है कि वे किसी भी उपयोगी पुस्तक को अपनी स्वेच्छानुसार किसी भी दुकानदार से शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत कमीशन पर बिना टेंडर मांगे खरीद सकते हैं। शिक्षा संचालक के इस आदेश का जो स्वरूप हमारे सामने है उससे यह स्पष्ट नहीं होता कि विभाग पुस्तकें स्वीकृत करने और उनकी सूची प्रसारित करने की परिपाटी जारी रखेगा या वह भी समाप्त हो जायगी। प्रतीत यही होता है कि स्वीकृत सूची नाम की कोई चीज़ रहेगी परंतु वे उपयोगी पुस्तकें भी खरीदी जा सकेंगी जो सूची में सम्मिलित नहीं हैं। जो भी हो, टेंडर की बहुत बड़ी बाधा पर इस आदेश से स्पष्ट रूप में प्रहार हुआ है। इस साहस पूर्ण पग के लिए शिक्षा संचालक महोदय निश्चित रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। वे अपने इस आदेश को अधिक से अधिक प्रसारित करने की कृपा करें और वह प्रणाली भी स्पष्ट कर दें जो अब राजस्थान में ग्रहण की जायगी।

श्रद्धांजलियां

आधुनिक समीक्षा के सिद्धांतों के प्रकाश में
एक नया हस्ताक्षर
जो प्रभाववादी, विश्लेषणात्मक और मार्क्सवादी समीक्षा
से आगे लाकर
कवि-मन को युग के केन्द्र में खड़ा कर देता है
कीलित-चेतना और जकड़े साहित्य-बोध से
ऊपर, सौंदर्य-बोध के ऐसे गन्तव्य
जो हमें नए काव्य-संस्कार और शिल्प के सम्बन्ध में जागरूक
होने के लिए निमन्त्रित करते हैं।

नयी कविता : संस्कार और शिल्प
रामशंकर मिश्र

रचनातत्व और शिल्प का एक ऐसा इतिहास, जो तीस वर्षों के समीक्षा साहित्य में, स्वर्ण युग को प्रतिष्ठित करता है।

रचनाओं की स्वतन्त्र, निरपेक्ष और निजी व्यक्तित्व की सौंदर्य-मूल्यों के आधार पर एक ऐसी समीक्षा, जो शाश्वत सौंदर्य-बोध और आत्मानुभूति के उच्चतम संदर्भों के शिखर पर पहुँचकर, इतिहास के ऋणी और उधार दृष्टि के समीक्षकों को चुनौती सिद्ध होगी।

पश्चिम और विज्ञान की वैसाखियों पर चल रही, आधुनिक समीक्षा के लिए एक दिशा, जिसे परिपार्श्व, संस्कार, प्रकृति, विधान और शिल्प-प्रयोग से नैकव्य अनुभव कर, प्रस्तुत कृति को हम जीवन धर्मी पायेंगे।

नई कविता के एक और महान् शिल्पी
काव्य संस्कार के एक और महान् प्रणेता
एक और वेद मानव
गजानन माधव मुक्तिबोध
को समर्पित

अर्पित करते हैं,

साथी प्रकाशन
सागर म० प्र०
मूल्य ५.००

संग्रह करने योग्य कुछ पुस्तकें

विवेकहीन सरकारी सहायता

श्री पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी
संपादक 'सरस्वती'

हमारी सरकार ने उपयोगी और सत्साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए भी योजनाएँ बनायी हैं। इनमें एक योजना यह है कि जिन अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रकाशक तैयार नहीं होते, उनके प्रकाशन के व्यय का एक अच्छा अंश सरकार अनुदान के रूप में दे देती है। उत्तर प्रदेश में यह योजना चल रही है। किन्तु कभी-कभी यह सहायता बिना आवश्यक छानबीन के और बिना यह देखे कि पुस्तक ठीक है या नहीं दे जाती है। इसका एक उदाहरण हमारे सामने आया है।

पुस्तक का नाम है—नव जीवन-ज्योति-प्रवेशिका। उसके नीचे दो पंक्तियों में लिखा है (बाल मनोविज्ञान) (For Mentally Retarded Children) उसके नीचे ये वाक्य लिखे हैं :

"यू० पी० के राज्यपाल (गवर्नर) द्वारा, मानसिक और अविकसनशील बच्चों के लिए यह पुस्तक प्रकाशनार्थ लेखक को सरकारी सहायता स्वीकृत।" इसके लेखक हिन्दी के एम० ए० और साहित्यरत्न हैं। ये उपाधियां आवरण पर उनके नाम के नीचे छपी हुई हैं। पुस्तक में कुल ३३० पृष्ठ हैं। बीच-बीच में रेखाचित्र भी हैं। जिल्द बंधी है। सरकारी सहायता है 'अविकसनशील' बच्चों के लिए प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य केवल साढ़े दस रुपये है! आरम्भ में श्रीमती इंदिरा गांधी का आशीर्वाद और राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली, के सचिव श्री पी० एन० नातू की भूमिका भी है। वे कहते हैं कि लेखक ने "यह व्यावहारिक और उपयोगी पुस्तक, अपने अनेक वर्षों तक, ऐसे बच्चों को पढ़ाने के अनुभव के आधार पर लिखी है, जो कि उनके अध्यापन-कार्य के सफलता का द्योतक है।" शायद उन्होंने यह भूमिका अंग्रेजी में लिखी थी। यह उसका अनुवाद मालूम होता है।

यही नहीं, पुस्तक के अंत में कई प्रभावशाली और महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सम्मतियाँ भी छपी हैं। इनमें श्री त्रिभुवननारायणसिंह, श्री श्यामधर मिश्र, चाइल्ड गाइडैन्स क्लिनिक के डाइरेक्टर श्री भाटिया, इंडियन काउंसिल ऑफ चाइल्ड वेलफेयर के डाइरेक्टर श्री डी० पाल चौधरी, डा० दशरथ ओझा के प्रशंसापत्रों पर पाठकों का ध्यान अवश्य जायगा।

अब इस प्रशंसित और सरकार से सहायता प्राप्त पुस्तक की कुछ बानगी देखिए। 'इतिहास' के अंश में शाहजहाँ पर यह पैराग्राफ अविकल उद्धृत किया जाता है :

"शाहजहाँ का नाम इसलिए संसार के इतिहास में प्रसिद्ध है कि उसे इमारत बनवाने का शौक था। उसने बड़ी-बड़ी और मजबूत ईमारतें बनवाईं। जैसे जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, लाल किला और ताजमहल। अपनी प्यारी स्त्री नूरजहाँ के अंतिम इच्छा की पूर्ति के लिए शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाई, जो केवल संगमरमर पत्थर का बना हुआ है। इसके बनाने में करोड़ों रुपये खर्च हुए और कई वर्ष तक हजारों मजदूर कार्य करते रहे। वास्तव में नूरजहाँ के अंतिम इच्छा, ताजमहल के निर्माण ने ही, उसके नाम को अमर कर दिया। इसमें शाहजहाँ और नूरजहाँ के मकबरे पास-पास हैं।"

एक उद्धरण कृषि सम्बन्धी भी देख लीजिए :

"शीतकाल में गेहूँ, जौ, चने, सरसों और तम्बाकू पैदा होता है। इसे अषाढ़ की फसल कहते हैं। ग्रीष्म ऋतु में चावल, गन्ना, चाय, पटसन, और बाजरा आदि की खेती होती है। इसे सावनी की फसल कहते हैं।"

'राज्य-सरकार' शीर्षक के नीचे लिखा है :

"बड़े-बड़े सूबों में प्रबन्ध करने के लिए जनता द्वारा चुने हुए सदस्य विधान-मंडल में भेजे जाते हैं। इसमें दो सभाएँ होती हैं :

१—राज्य परिषद्।

२—विधान सभा।

ये सूबे के स्थानीय मामलों का स्वतन्त्रतापूर्वक प्रबन्ध करते हैं।"

लेखक ने 'नगरपालिका' शब्द का प्रयोग न करके 'नगर परिषद्' शब्द का प्रयोग किया है। 'नगर निगम' का कर्त्तव्य यों बतलाया है :

"बड़े-बड़े शहरों जैसे कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली आदि में नगरवासियों के सामूहिक जीवन सम्बन्धी असुविधाओं को दूर करने के लिए यह संस्था नगर परिषद् की तरह चुनी जाती है।"

हम समझते हैं कि पुस्तक का 'महत्व' बतलाने के लिए इतनी बानगी पर्याप्त है। शायद ही कोई ऐसा पृष्ठ हो जिसमें भाषा, व्याकरण या तथ्य सम्बन्धी अशुद्धियाँ न हों। सामान्य अशुद्धियों के कुछ नमूने देखिए :

"सदस्य संख्या पहिले ही से निश्चित होते हैं।"

"लोकसभा में ५०० सदस्य और राज्यसभा में ३५० सदस्य होते हैं।"

"बच्चा को रोते हुए सुनकर एक दम्पति नीमा और नीरू नामक जुलाहा उसे घर लाकर पालन पोषण किया।"

"आपस में वैमनस्यता थी।"

"आपने राजदूत पद पर बड़ी सरलतापूर्वक कार्य किया है।"

The Idealist View of Life का अनुवाद लेखक ने 'आदर्शवादी दृष्टिकोण में जीवन' किया है। लेखक ने बालकों के लिए कुछ शिक्षाप्रद कहानियाँ भी दी हैं। एक कहानी यह है :

साहस की जीत

"एक दिन दो चूहे भोजन की तलाश में संयोगवश एक दही के मटके में गिर पड़े। दोनों ने बहुत प्रयत्न बाहर निकलने का किया, परन्तु असफल रहे। उनमें से एक चूहा हताश होकर अपना उछल-कूद बन्द करने के परिणामस्वरूप उसी में मर गया, परन्तु दूसरे ने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। उनके उछल-कूद से मटके में मक्खन का मोटा तह जम गया। दूसरा चूहा मक्खन के ऊपर से छलाँग लगाकर बाहर निकल गया।"

आजकल जगह-जगह से पाठ्य-पुस्तकों में अशुद्धियों की प्रचुरता की शिकायतें आ रही हैं। महाराष्ट्र में एक अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तक में व्याकरण की अशुद्धियाँ पायी गईं इससे एक तूफान खड़ा हो गया और सरकार को वह पुस्तक निकाल देनी पड़ी। हमारी सरकार की शिक्षा सम्बन्धी शुभ कामनाएँ और शिव संकल्प असंदिग्ध हैं। किन्तु उसके यंत्र में कुछ ऐसी खराबी आ गयी है कि कुशलता, सावधानी, कार्यक्षमता का एकदम अभाव हो गया है। अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए सरकारी सहायता देने की योजना प्रशंसनीय है, किन्तु यदि उस योजना से इस प्रकार की पुस्तकों को प्रोत्साहन और सहायता मिले तो उस योजना से लाभ के बदले हानि अधिक होगी। लेखक की भाषा के लिए क्या कहा जाय ? वे किसी विश्वविद्यालय के (हिन्दी में) एम०ए० हैं। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने भी उन्हें साहित्यरत्न की उपाधि दी है। ऐसी भाषा को लिखने वाले जब हिंदी भाषा की ये सर्वोच्च उपाधियाँ प्राप्त कर सकते हैं, तब हाईस्कूल, बी० ए० आदि में हिन्दी का स्तर कैसा होगा? दुख तो इस बात का होता है कि हमारे बड़े उच्च पदासीन और योग्य सज्जन, जिन्हें हम लोग उत्तरदायी अधिकारी समझते हैं, ऐसी पुस्तकों को अपने हृदय की कोमलता के कारण 'प्रशंसापत्र' दे देते हैं जिनके बल पर उन्हें सरकारी सहायता भी मिल जाती है और उनकी पुस्तकों का प्रचार भी होता है। यदि सरकार इस बात का निश्चित प्रबंध नहीं कर सकती कि केवल बहुत अच्छी और त्रुटिहीन पुस्तकों को ही सहायता दी जाय, तो अच्छा तो यही हो कि अनुदान की यह योजना ही समाप्त कर दी जाय।

'सरस्वती' से साभार

चार अभिनव उपन्यास

रति विलाप
ताराशंकर बन्द्योपाध्याय
४.५०

मझधार
नानक सिंह
५.००

संगम
नानक सिंह
६.००

यतिभंग
ताराशंकर बन्द्योपाध्याय
३.००
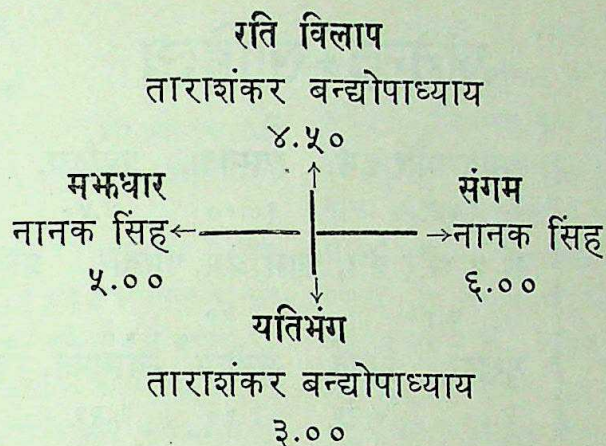
धूमकेतु के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास

अवन्तीनाथ ५.५०

चौलादेवी	राज संन्यासी	कर्णावती
५.५०	५.५०	६.००
राजकन्या	वैशाली	नगर सुन्दरी
६.००	५.५०	४.२५

मगधपति ५.००

महामात्य चाणक्य	चन्द्रगुप्त मौर्य	सम्राट् चन्द्रगुप्त
४.००	६.००	४.००
चंड अशोक	प्रियदर्शी अशोक	राज्य क्रान्ति
४.५०	४.५०	४.००
महारानी कुमारदेवी	सोरठ विजेता	बर्बरक विजेता
५.००	६.००	६.००

जयसिंह सिद्धराज (प्रेस में)

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउण्ड बिल्डिंग, बम्बई-२

लेखक और प्रकाशक : उत्पादक और सर्जक

श्री दयानन्द वर्मा
पंजाबी पुस्तक भंडार, दिल्ली

लेखक वर्ग की लेखनी द्वारा प्रकाशक का जो रूप उभर कर अक्सर सामने आता है वह खलनायक का रूप है। उस सम्बन्ध में प्रकाशक वर्ग की ओर से सफाई पेश करने की जरूरत मैं नहीं समझता। लेखकों का शोषण करने वाले प्रकाशक होते हैं, होते थे और भविष्य में भी होंगे और ऐसे लेखक भी हैं जो पारिश्रमिक एक प्रकाशक से पेशगी प्राप्त करते हैं, पाण्डुलिपि दूसरे को देते हैं। हर व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन-दर्शन है, यदि संयोग से वह व्यक्ति प्रकाशन का धन्धा करता है, या लेखनी को अपनी जीविका का साधन बनाता है, तो अपने सम्पर्क में आए दूसरे लोगों से अपने जीवन-दर्शन के अनुसार बरतता है। किसी एक व्यक्ति को उसके पूरे व्यवसाय या वर्ग का प्रतिनिधि समझकर, उसके पूरे वर्ग के बारे में कोई धारणा बना लेना जल्दबाजी है।

लेखकों की बात लेखक जाने अलबत्ता प्रकाशकों के सम्बन्ध में कुछ तथ्य हैं, एक प्रकाशन संस्था से सम्बद्ध होने के नाते मैं उन्हें जानता हूँ, ये तथ्य यहाँ प्रस्तुत करना मैं आवश्यक समझता हूँ।

जहाँ तक आर्थिक स्थिति का सवाल है लेखक से प्रकाशक की स्थिति अच्छी होती है। क्यों होती है? उसके कारणों की जाँच करना प्रकाशक-वर्ग को बुरा-भला कहने से अधिक रचनात्मक काम है।

प्रकाशक को लेखक से शिकायत हो सकती है, लेखक को प्रकाशक से भी हो सकती है। जहाँ दो व्यक्ति एक-दूसरे के पूरक बनते हैं, वहाँ कभी-कभी कटु अनुभवों का आदान-प्रदान भी हो जाता है। कटु अनुभव का कारण चाहे कोई भी हो, देखने-सुनने वाले की सहानुभूति दो में से सदा उस एक के साथ होती है जो साधन सम्पन्नता के मामले में कुछ कम दिखाई देता हो। जैसे यातायात का नियमोल्लंघन चाहे पैदल ने किया हो लेकिन एक्सीडैंट की जिम्मेवारी सदा सवार व्यक्ति की समझी जाती है। वैसे ही प्रकाशक चूंकि लेखक से अधिक सम्पन्न समझा जाता है, इसलिए लेखक की शिकायत मुनासिब समझ ली जाती है। लेखक की सृजनात्मक प्रतिभा के फल को पूंजी का बल देने वाला प्रकाशक लेखक से अधिक सम्पन्न बन जाए और लेखक दाने-दाने को तरसे, यह बात कुछ मुनासिब नहीं लगती। इस स्थिति को पलटा जा सकता है या नहीं, यह सोचना जरूरी है। लेकिन यह सोचने की क्रिया वास्तविकता के धरातल पर बैठकर होनी चाहिए, न कि भावनाओं के अंतरिक्ष में उड़कर।

लेखक की आर्थिक विफलता का एक कारण कापी राईट एक्ट है। इस एक्ट में लेखक के हित को सामने रखते हुए संशोधन होना चाहिए। क्या, किस रूप में? उसकी चर्चा फिर करूँगा। लेकिन मात्र कापी राईट कानून को ही लेखक की सारी उलझनों का कारण समझकर आगे सोचना बन्द कर देना भी समस्या से पलायन करना होगा।

कापी राईट कानून को यदि बिल्कुल तिलांजलि देकर, बिकी हुई प्रत्येक पुस्तक का लाभांश यदि लेखक को दिया जाने लगे तो भी वर्तमान स्थिति से बहुत अच्छी स्थिति लेखक के लिए, यदि वह किसी पाठ्य-क्रम में लगी पुस्तक का लेखक नहीं है, नहीं बनेगी। सुनिये कि कैसे—

मान लीजिए एक लेखक दो सौ पृष्ठ की एक पुस्तक लिखने में छः मास व्यतीत करता है। प्रकाशक उस पुस्तक की दो हजार प्रतियाँ छापता है। पुस्तक का मूल्य तीन रुपया रखा जाता है। आइए हिसाब लगायें कि उसमें से कौन कितना लेगा:—

(१) उत्पादन खर्च (कागज, प्रिंटिंग, ब्लाक आर्टिस्ट, बाइंडिंग, इत्यादि) ४०%
(२) विक्रेता को मिलने वाला सामान्य कमीशन २५ "
(३) विक्रेता को मिलने वाला अतिरिक्त कमीशन, तथा For आदि अन्य सुविधाएँ ७½ "
(४) लेखक की रायल्टी १२½ "

(५) विज्ञापन तथा संस्थान खर्च	५%
टोटल	९० प्रतिशत

शेष १० प्रतिशत लाभ प्रकाशक का है। वह भी उस दशा में जब कि सारी पुस्तकें बिक जाएँ, और पूंजी उसकी अपनी हो। यदि पूंजी उसने सूद पर लेकर लगाई हुई हो या सारी पुस्तकें बिक न सकें तो लाभ की दर और भी कम हो सकती है।

यदि पुस्तक का दूसरा संस्करण छपता है तो उत्पादन खर्च लगभग पांच प्रतिशत कम हो जाता है, वह प्रकाशक की अतिरिक्त बचत है। लेकिन प्रकाशक की हर दस में से मुश्किल से दो पुस्तकें ऐसी होती हैं जिनके दूसरे या तीसरे संस्करण छपने की नौबत आती है। तीन ऐसी होती हैं जिनका पहला संस्करण दो वर्षों में समाप्त हो पाता है, प्रकाशक उनकी पुनरावृत्ति नहीं करता। शेष पाँच में से तीन पुस्तकें मन्थर गति से बिकती हैं, ५-७ वर्ष में कहीं खत्म होती हैं और दो पुस्तकें ऐसी भी होती हैं जो विरासत के तौर पर प्रकाशक की अगली पीढ़ी को मिलती हैं। यह सारा विवरण जान लेने के बाद यह बात रहस्य नहीं रहती कि प्रकाशक क्यों नामी लेखक की पुस्तक छापना चाहता है।

उपर्युक्त विवरण आम धारणा के विपरीत है। लेकिन वह सवाल अपनी जगह स्थिर है कि पुस्तक के लाभ में से थोड़ा अंश लेने वाला प्रकाशक आर्थिक दृष्टि से लेखक से अधिक सम्पन्न कैसे बन जाता है। इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करता हूँ।

एक दरम्याने दर्जे के लेखक की पुस्तक के सम्बन्ध में

आशा होती है कि उसका दो हजार का पूरा संस्करण दो वर्ष में बिक जाएगा। पुस्तक का मूल्य तीन रुपये हो तो रायल्टी के १२½ प्रतिशत के हिसाब से ७५० रुपये बनते हैं। यह साढ़े सात सौ रुपये उसे दो वर्ष की अवधि में मिलते हैं और यह ७५० रुपये उसके छः मास के परिश्रम का पारिश्रमिक हैं। वह भी उस दशा में जब कि पुस्तक सचमुच दो वर्ष में खत्म हो जाए और प्रकाशक ईमानदार मिले। इन दो के अलावा कोई तीसरी अवस्था हो तो लेखक की अतिरिक्त बदकिस्मती।

स्पष्ट है कि लेखक की जीविका का माध्यम यदि उस पुस्तक के अलावा और कोई नहीं है तो इस रायल्टी से वह अभाव-ग्रस्त जीवन ही व्यतीत कर सकता है। और प्रकाशक भी यदि लेखक की-सी गति से साल में दो-एक पुस्तकों का उत्पादन करता हो तो उसकी आर्थिक दशा लेखक से बुरी हो जाए। लेकिन प्रकाशक के लिए एक सुविधा यह है कि वह अधिक पूंजी लगाकर एक समय में अधिक लेखकों की पुस्तकें छापकर, हर पुस्तक में से थोड़ा-थोड़ा लाभ ग्रहण करके अपने आपको अर्थपति बना सकता है। यह सुविधा लेखक को नहीं है, यदि वह सृजनशील लेखक है तो वह चाहे तो भी अपनी लेखनी को यांत्रिक गति नहीं दे सकता। (बहुत तेज लिखने वाले कुछ इने-गिने लेखकों की बात फिलहाल जाने दीजिए) उत्पादन और सृजन, इन दोनों में मूल भेद यह है कि उत्पादन क्षमता बढ़ाना बाहरी साधनों पर निर्भर है और वे साधन सूद पर या वेतन पर मिल सकते हैं और सृजनशीलता को कम-ओ-बेश करना अपने वश में नहीं। सृजनात्मक प्रतिभा का विकास भीतर से होता है और यदि वह विकास भीतर से न होकर बाहर से किया जाए तो लेखन कार्य सृजन की कोटि से निकल कर उत्पादन श्रेणी में आ जाता है। ऐसे लेखक हैं जिन्होंने लेखन को उद्योग-धन्धे का रूप दे दिया है। वे 'मोटर मैकेनिक टीचर' से लेकर 'आवाज़ सुरीली बनाने के उपाय' तक की हर प्रकार की पुस्तक लिख सकते हैं और एक उद्योगपति होने के नाते आर्थिक सम्पन्नता की दृष्टि में सृजनशील लेखक से बढ़ जाते हैं।

जो लेखक अर्थ-प्राप्ति के सुख की अपेक्षा सृजनानन्द

को अधिक महत्व देता है, वह इस कोटि का उत्पादक बनना पसन्द नहीं करता। यदि उसकी सोच रचनात्मक है तो वह इस बात के लिए प्रयत्नशील हो सकता है कि उसकी पुस्तकों की अधिक बिक्री हो। उसकी पुस्तकें अन्य भाषाओं में अनूदित होकर उसकी समस्याओं का हल बनें। उनके नाट्य-रूपान्तर, संक्षिप्त संस्करण तथा रेडियो रूपान्तर बनें। इस प्रकार अपनी एक ही रचना में से वह अपनी आय के कई जरिये निकाल सकता है।

कुछ ही लेखक ऐसे होते हैं जिनकी पुस्तकें छपती हैं, उनके अनुवाद भी प्रादेशिक अथवा विश्व की अन्य भाषाओं में होते हैं। उनकी रचनाओं के काव्य तथा नाट्य-रूपान्तर भी प्रकाश में आते हैं। समस्या नये लेखकों की है। उनके लिए प्रथम रचना को ज्यों का त्यों छपवा लेना ही कठिन है। प्रकाशक की जो परिस्थिति ऊपर कही गयी है, उसे देखते हुए किसी प्रकाशन-जीवी लेखक से यह आशा कम की जा सकती है कि वह बहुत अधिक नये लेखकों की रचनाओं में अपनी पूंजी फँसाएगा। जिस तेजी से नये लेखक बढ़ रहे हैं, उस तेजी से न प्रकाशक बढ़े हैं न नये पाठक उस अनुपात में बढ़े हैं। इसलिए उन बहुत से नये लेखकों में से कुछ ही प्रकाश में आ पाते हैं। हर नया लेखक प्रकाशक की निगाह में अलाव की गीली लकड़ी होता है, जो सूखी लकड़ियों के ढेर में एकाध हो तो जल जाती है, अन्यथा धुआँ देती है।

नये लेखकों को यह बात निराशाजनक लगेगी। साथ ही नये लेखकों को यह जानकर संतोष भी होगा कि किसी लेखक का लेखक के तौर पर सफल होना वैसा ही कठिन है जैसे किसी प्रकाशक बनने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति का बतौर प्रकाशक सफल होना, अभिनय करने की इच्छा रखने वाले का बतौर हीरो प्रसिद्धि पाना तथा 'रेस्तरां' चलाने की इच्छा करने पर, अपने यहां आए ग्राहकों की लाइन लगवा लेना। हर सफलता के पीछे कुछ ज्ञात या अज्ञात कारण लगे रहते हैं जिनकी चर्चा यहाँ करना विषय को अनावश्यक विस्तार देना होगा।

बात नये लेखक की चल रही थी। यह सच है कि लेखक बनने का इरादा करने से लेकर अपने मन पसन्द विषय का लेखक बन जाने तक की परीक्षाएँ इतनी कठिन हैं कि उनमें से सही-सलामत गुजर जाने वाले व्यक्ति वही बच रहते हैं जिनके साथ 'लेखक' के अतिरिक्त और कोई विशेषण लगा हो, जिनकी सृजनात्मक प्रतिभा तीव्रतम हो अथवा जिनकी इच्छा शक्ति और कोई समझौता स्वीकार न करती हो। शेष की छँटनी हो जाती है।

ऊपर जिन लेखनी-उद्योग-पतियों की चर्चा हुई है वास्तव में वे इरादे से डगमगा जाने वाले लोग हैं जो प्रकाशन-पूर्व की अग्नि-परीक्षा की आँच को देर तक बर्दाश्त न कर सके। बर्दाश्त इसलिए न कर सके, क्योंकि उनके भीतर का लेखक इतना प्रबल नहीं रहा। ऐसे व्यक्ति तब तक आर्डर पर हर प्रकार का माल अपनी लेखनी से निकालते रहते हैं, जब तक इच्छित आय का दूसरा धन्धा मिल नहीं जाता।

जो लेखक बनने का इरादा करके कुछ 'और' बन गया है वह वैसा बन जाने को, सभी प्रकाशकों की मिली-जुली एक साजिश का परिणाम समझता है। तस्वीर का दूसरा रुख यदि पलट जाए तो जो परेशानी नये लेखक को पुराने प्रकाशक से मिलकर होती है, वही परेशानी नये प्रकाशक को नामी लेखक से मिलकर होती है। यदि किसी नये प्रकाशक को चोटी के लेखक की रचना प्राप्त करनी पड़े तो लेखक के मुख या बर्ताव से यही प्रकट होता है—'ठीक है, तुम मेरी रचना छापकर अपने आपको जल्दी लोकप्रिय कर लोगे। लेकिन तुम्हें शक्ति देने से मेरी जो शक्ति क्षरित होगी उसका क्या होगा। तुम्हारे नन्हें हाथ मेरी रचना को वहाँ तक न पहुँचा सकेंगे, जहाँ तक पहुँचने की मेरी कामना है।' यदि उस नवीन प्रकाशक के साथ 'प्रकाशक' के अतिरिक्त अन्य कोई विशेषण न जुड़ा हो तो उसे निराश लौटना पड़ता है।

यहाँ से प्रकाशक निराश होकर भी जाता है, क्योंकि प्रकाशन उसका व्यवसाय है, लेखक के ऐसे उत्तर को वह गम्भीरता से नहीं लेता। लेकिन लेखक को यदि प्रकाशक की ओर से इस प्रकार का उत्तर मिले तो वह उसे गम्भीरता से लेता है, क्योंकि लेखन उसका जीवन है। लेखन जिसका जीवन नहीं है, वह दो एक ऐसे कटु अनुभवों से जूझने के बाद लेखन कार्य को ही अभिशाप समझकर दूसरी राह लग जाता है। लेकिन जिसके लिए लेखन जीवन है वह इस कार्य को कभी अभिशाप नहीं समझता। वह उस उत्तर को गम्भीरता से लेने का आशय यह लेता है कि उसकी प्रतिभा में ही कोई कमी थी, जो आड़े आयी। अपनी प्रतिभा का विकास करके वह उस अमर यश की प्राप्ति अन्ततः कर लेता है, जो किसी उद्योगपति को करोड़ों रुपया खर्च करने पर भी प्राप्त नहीं होती। उद्योग और सृजन—उन दोनों में एक भेद यह भी है कि उद्योग का लाभ तब तक है जब तक उद्योग चलता रहता है। तीन पीढ़ी बाद उस उद्योगपति के वंशानुगामी भी अपने पूर्वजों का नाम याद रखना जरूरी नहीं समझते। और सृजक कालीदास शेक्सपीयर, टालस्टाय और तुलसीदास का नाम कौन नहीं जानता। लेकिन उनके समकालीन बड़े उद्योगपतियों का नाम शायद ही कोई इतिहासवेत्ता बता सके।

विदेशों में प्रकाशन

पाठ्य और जनरल पुस्तकें

हरकोर्ट ब्रास एण्ड वर्ल्ड के प्रधान और अमेरिका में पाठ्य-पुस्तकों के प्रमुख प्रकाशक मि० विलियम जॉवनोविच कहते हैं—"ब्रिटेन में जनरल पुस्तकों और तकनीकी या पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक अलग-अलग हैं, किन्तु इस पृथकीकरण से दोनों को ही हानि है। जनरल पुस्तकों का प्रकाशक भले ही यह कहने में गौरव अनुभव करे कि उसे पाठ्य-पुस्तकों से कोई मतलब नहीं, किन्तु निश्चय ही उसका ऐसा कहना आनन्ददायी होने से अधिक भूल को स्वीकार करना माना जाना चाहिए।"

अमेरिका में पाठ्य-पुस्तकें

अमेरिकन पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के बारे में मि० जॉवनोविच लिखते हैं—"अधिकांशतः सेल्समैन संपादक से विचार विमर्श में यही तर्क करते हैं कि स्कूलों में जिस प्रकार की पुस्तकें चल रही हैं, उसी प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करने में हित एवं समझदारी है। उनका विचार है कि सरकारी हस्तक्षेप और यूनीवर्सिटी-प्रेसों के पाठ्य-पुस्तक-प्रकाशन में प्रवेश के कारण उनमें सुधार न हो सकेगा।"

अमेरिका में लेखक

पिछले दिनों अमेरिका में ८१ वर्षीया कु० स्नैलर की नई पुस्तक 'ए वैनिश्ड वर्ल्ड' के प्रकाशन के अवसर पर, एक समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की ३ घंटे की अवधि में लेखक द्वारा हस्ताक्षर की हुई पुस्तक की ३०० प्रतियाँ बिकीं।

समारोह के प्रारम्भ होने के आधा घंटा पूर्व पुस्तक खरीदने वालों की लाइन लग गई। लाइन इतनी बड़ी थी कि प्रत्येक व्यक्ति को पुस्तक खरीदने के लिये आधा घंटा प्रतीक्षा करनी पड़ी, पुस्तकें खरीदने वालों की लाइन में तीन बैंकों के प्रैसीडेंट, एक जज, एक समाचार-पत्र सम्पादक, चार उद्योगपति थे। अनेक महिलाएँ अपने बच्चों को लेखिका से मिलाने के लिए लाई थीं।

लेखिका पहले एक हाई स्कूल में अध्यापिका थीं।

उपराष्ट्रपति डॉ० जाकिरहुसेन को लोकप्रिय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'नागरिक सुरक्षा' भेंट की गई। चित्र में पुस्तक के लेखक श्री रामाशंकर मिश्र डॉ० साहब को पुस्तक भेंट कर रहे हैं। पास ही लोकप्रिय प्रकाशन की संचालिका श्रीमती सरला कुमारी जैन तथा लोकप्रिय प्रकाशन के व्यवस्थापक श्री पारसनाथ मिश्र बैठे हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' खड़े हैं।

पुस्तक-समारोह

नागरिक सुरक्षा की आवश्यकता

प्रकाशक पुस्तकों के प्रचार पर भी ध्यान दें

"आज सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि देश का प्रत्येक नागरिक अपने को राष्ट्र का सच्चा प्रतिनिधि समझे। उसे चाहिये कि वह देश के सुख-दुःख और सुरक्षा को अपना ही सुख-दुःख और सुरक्षा समझने लगे। नागरिकों के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वे सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करें। अब तक नागरिकों को सुरक्षा सम्बन्धी बातों की जानकारी देने के लिए कोई साहित्य नहीं लिखा गया था। नागरिक सुरक्षा नामक पुस्तक ने इस कमी को काफी हद तक पूरा किया है।"

ये शब्द भारत के उपराष्ट्रपति डा० जाकिरहुसेन ने लोकप्रिय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'नागरिक सुरक्षा' के समर्पण समारोह के अवसर पर कहे। उन्होंने पुस्तक के युवा लेखक श्री रामाशंकर मिश्र को इस कार्य के लिए हार्दिक बधाई दी। यह समारोह उपराष्ट्रपति डा० जाकिरहुसेन के निवास-स्थान पर लोकप्रिय प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली की ओर से किया गया था। समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने कहा कि ऐसे साहित्य की आज हिन्दी में बड़ी आवश्यकता है।

उपराष्ट्रपति ने प्रकाशकों से भी आग्रह किया कि वे पुस्तकें प्रकाशित करने के साथ-साथ उनके अधिकाधिक प्रचार पर भी ध्यान दें। उन्होंने कहा कि अभी हमारे देश में पुस्तक खरीद कर पढ़ने का विकास नहीं हुआ है। इस समारोह में राजधानी के प्रमुख लेखक, प्रकाशक तथा पत्रकार उपस्थित थे।

अजमेर में
हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

त्रिसूत्री समारोह

पश्चिम रेलवे के अजमेर मण्डल ने हिन्दी दिवस के अवसर पर १४ सितम्बर, सन् १९६४ को हिन्दी व्याख्यान माला के अंतर्गत पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, साहित्यकारों के चित्रों व हिन्दी में उपलब्ध रेल साहित्य आदि की प्रदर्शनी हिन्दी व्याख्यान और कवि सम्मेलन का त्रिसूत्री समारोह आयोजित किया।

तीन दीपकों के आलोक में

यह समारोह बिसेंट इंस्टीट्यूट के प्रांगण में आम्र पल्लवों, तिरंगे झण्डों, पुष्पों आदि से सुसज्जित विशाल पण्डाल में हुआ। राजस्थान के शिक्षा-मंत्री एवं हिन्दी के तपस्वी साहित्यकार श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने भारतीय पद्धति के अनुसार तीन दीपक प्रज्वलित करके त्रिसूत्री समारोह का उद्घाटन किया। इसके पूर्व मण्डल अधीक्षक श्री सुन्दर गणेश सामन्त ने पश्चिम रेलवे द्वारा संचालित हिन्दी व्याख्यान माला के उद्देश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए माल्यार्पण द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ कुमारी हेमलता जोशी द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ।

रेलवे राष्ट्रीय संगम है

शिक्षा-मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने अपने उद्घाटन भाषण में सर्वप्रथम पश्चिम रेलवे को इस समारोह के लिए उन्हें आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया और कहा—"यद्यपि डाक्टरों की हिदायत थी कि वे पन्द्रह दिन तक बाहर नहीं जावें तो भी अजमेर के प्रेम ने विशेषतः पश्चिम रेलवे के सब मिले-जुले अधिकारियों की प्रेरणा ने डाक्टरों की मनाई पर विजय पाई।" उन्होंने कहा—"आप भी देख रहे हैं और मैं भी देख रहा हूँ कि इस आयोजन का श्रीगणेश वे कर रहे हैं जो अहिन्दी भाषी हैं। श्री सामन्त महाराष्ट्रीयन हैं, श्री धर्मचन्द जोशी पंजाबी हैं, श्री सेन गुप्त बंगाली हैं और मेरी मातृभाषा गुजराती है। आज के प्रमुख अतिथि वक्ता डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान् हैं, श्रोताओं में भी अधिकतर दूसरी भाषाओं के बोलने वाले हैं, क्योंकि रेलवे राष्ट्रीय-संगम है। देश के विभिन्न प्रान्तों से आकर रेलों में काम करने के कारण रेलों का सहज ही राष्ट्रीय स्वरूप अपने आप हो गया है। आज जब हम हिन्दी दिवस मना रहे हैं तब यह बात आप सबके सामने स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि सारे राष्ट्र के लोगों ने मिल कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया है। आज के समारोह के जो आयोजक हैं उन्होंने इसके महत्व को स्वीकार किया है और यह हिन्दी भाषियों का कर्त्तव्य है कि वे उनको बधाई दें। हिन्दी के प्रचार में जिम्मेदारी के कारण इन अहिन्दी भाषी हिन्दी प्रेमियों को आगे रहने दें और हिन्दी भाषी प्रेमीजन हिन्दी सिखाने व साहित्य को समृद्ध करने की जिम्मेदारी लें, क्योंकि हिन्दी भाषियों के लिए हिन्दी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा व राजभाषा है। तमिलनाद यह नहीं कहता कि हिन्दी राष्ट्रभाषा नहीं है। वह तो राष्ट्रभाषा स्वीकृत हो चुकी है। उसके राजभाषा के रूप में व्यवहार में कठिनाई आ रही है। परन्तु ज्यों-ज्यों चार बड़े हिन्दी भाषी प्रान्तों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, व राजस्थान जिनकी वह राजभाषा भी है, में उसका व्यवहार बढ़ेगा त्यों-त्यों कठिनाइयाँ स्वयं लुप्त होती चली जायँगी।

हिन्दी राष्ट्र के सम्मान व सुरक्षा की भाषा है

प्रमुख अतिथि डा० 'सुमन' ने अपने व्याख्यान का श्रीगणेश करते हुए कहा कि जितनी पुरानी भारतीय रेलें हैं उतना ही पुराना हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न है, जिसका प्रारम्भ सन् १८७८ में श्री बंकिमचन्द ने किया। इस आन्दोलन को देशव्यापी बनाने में अहिन्दी भाषी विद्वानों—स्वामी दयानन्द सरस्वती, तिलक, शारदाचरण मित्र, केशवचन्द्र सेन, गांधी, सप्रे, आगरकर, पराड़कर, विनोबा भावे, मामा वरेरकर, काका कालेलकर, आदि का हाथ रहा है। अब समय आ गया है जबकि 'यू पीपुल ईवन विस्पर इन इंगलिश' कहने वालों को उत्तर दिया जाय। हिन्दी आदान-प्रदान, राष्ट्र के सम्मान व

सुरक्षा की भाषा है। राष्ट्र को एक कड़ी में गूँथने के लिए उसकी अत्यन्त आवश्यकता है। उसमें हजारों शब्द गुजराती, मराठी, पंजाबी, तेलगु आदि भारतीय भाषाओं से आयँगे, जिन्हें पचाना होगा। हिन्दी को बड़ी बहन की तरह सब असुविधाएँ अपने सिर पर ओढ़कर दूसरी भगिनियों को प्रसन्नता के साथ लेकर चलना होगा।

रेलवे अन्तर्प्रान्तीय संस्था है

रेलवे अन्तर्प्रान्तीय संस्था है। इसमें विभिन्न भाषा-भाषी घुल-मिलकर रहते हैं। इस आयोजन ने मेरे एक बहुत बड़े भ्रम का निवारण कर दिया और इस क्षण से मैं मानने लगा हूँ कि रेल की गति के साथ हृदय की धड़कन भी है। मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि कल हिन्दी भाषा का इतिहास कहेगा कि रेलवे वालों ने हिन्दी को राष्ट्र की राजभाषा बना दिया।

तदुपरान्त रेलवे के यातायात लेखा विभाग के उप मुख्य लेखाधिकारी श्री धर्मचन्द जोशी ने मण्डल की ओर से धन्यवाद दिया। हिन्दी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रथम भाषण की समाप्ति के पश्चात् मण्डल अधीक्षक श्री सामन्त अन्य रेल अधिकारियों सहित शिक्षा-मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय व मुख्य अतिथि डा० सुमन, अजमेर जिलाधीश श्री आर० डी० थापर तथा अन्य अतिथियों को 'पुस्तक लोक' तथा पत्रिकांचल में आयोजित प्रदर्शनी दिखाने ले गये।

समारोह का प्रमुख अंग प्रदर्शनी

इस कार्यक्रम का प्रमुख अंग मण्डल द्वारा आयोजित प्रदर्शनी थी जिसमें हिन्दी के विभिन्न विषयों के उत्कृष्टतम ग्रंथ, विभिन्न प्रकार के कोष, अभिनन्दन ग्रन्थ, तकनीकी व वैज्ञानिक विषयों पर पुस्तकों के नवीनतम प्रकाशन, अनुपलब्ध किन्तु महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ, पत्र-पत्रिकाएँ, हिन्दी के गौरव-मुकुट साहित्यकारों के चित्र रेलवे बोर्ड, पश्चिम रेलवे, मध्य रेलवे, दक्षिण रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे, उत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे व दक्षिण पूर्वी रेलवे द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी-हिन्दी पत्रिकाएं, समाचार-पत्रक व लगभग १२५ तकनीकी पुस्तकें, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् आदि के हिन्दी प्रशिक्षण व सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग में

सहायता देने वाले प्रकाशन प्रदर्शित किये गये थे। इस प्रदर्शनी के दो विभाग थे। (१) पुस्तकलोक एवं (२) पत्रिकांचल।

पुस्तकलोक

पुस्तकलोक में देश के कोने-कोने से आये हुए हिंदी के प्रमुखतम प्रकाशकों द्वारा लगभग तीन हजार पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। वहाँ विभिन्न प्रशासकीय स्तरों पर होने वाले साहित्यिक प्रकाशन भी रखे गये। इस प्रदर्शनी को देखकर कोई भी व्यक्ति राष्ट्रभाषा हिंदी की समृद्धि और सर्वांगीण विकास का अनुमान सहज ही लगा सकता था। विज्ञान परिषद् इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित ड्राइवरों के लिए लिखी गयी पुस्तक, जिसकी भूमिका माननीय श्री लालबहादुर शास्त्री ने लिखी है तथा 'रेल इंजन परिचय और संचालन', 'लोको गाइड', 'स्टीम लोको गाइड' 'रेल परिचालन' आदि पुस्तकों ने जहाँ रेल कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित किया वहाँ साहित्य अकादेमी नई दिल्ली व राजस्थान साहित्य अकादेमी, उदयपुर के प्रकाशनों ने साहित्यिकों को प्रफुल्लता प्रदान की। जागरूक पाठकों के लिए भारतीय ज्ञानपीठ का मण्डप विशेष रूप से आकर्षक था। हिंदी ग्रन्थ रत्नाकर द्वारा प्रदर्शित पुस्तकों में शरत् साहित्य, कोष, अभिनन्दन ग्रंथ के अतिरिक्त 'काशी का इतिहास' 'शृंगार हाट' आदि पुस्तकें विक्रेताओं के लिए महत्वपूर्ण थीं। धर्मप्राण जनता के लिए सर्वोदय, रामकृष्ण मिशन, आनन्द कुटीर ट्रस्ट, पुष्कर (राजस्थान) के आध्यात्मिक व जीवनोपयोगी प्रकाशन, वेद पुस्तकालय की अच्छी व सस्ती पुस्तकें जहाँ उपलब्ध थीं, वहाँ गुप्ता ब्रदर्स के यहाँ अशोक, हिंद, सन्ध्या पाकेट बुक्स और दत्त बन्धु के यहाँ साहित्य संस्थान, हिंदी प्रचारक, आदि कई प्रकाशकों के प्रकाशन सुसज्जित थे। 'पुस्तकलोक' का विशेष आकर्षण परोपकारिणी सभा अजमेर के विशेष अनुग्रह से प्राप्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'सत्यार्थ प्रकाश' की पांडुलिपि, उनके हस्ताक्षर की सील जिसे वे काम में लाते थे, 'वीर विनोद' भूगोल के प्राचीन इतिहास के पाँच भाग, स्वर्गीय श्री चांदकरण शारदा व श्री हरविलास शारदा के चित्र व उनकी पांडुलिपि थीं। इनके साथ ही नवजीवन साहित्य मण्डल अजमेर के हिन्दी-इंगलिश-सिंधी शब्दकोष सहित सिंधी भाषा व देवनागरी लिपि में प्रदर्शित पुस्तकें थीं। पंजाबी भाषा व देवनागरी लिपि में हीर-रांझा, चानणा चिराग और नवीयाँ-राहवाँ नाटक व 'गोरा' तथा 'भारतीय कविताओं के देवनागरी लिप्यन्तर' भाषा प्रेमियों के लिए चर्चा का विषय बन गई थीं।

भारत में पहली बार हिन्दी आशुलिपि साहित्य का प्रदर्शन

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी में भारत में सबसे पहली बार हिंदी आशुलिपि (पश्चिम रेलवे के भूतपूर्व आशुलिपिक श्री जे० के० टण्डन द्वारा आविष्कृत) के विकास से सम्बन्धित साहित्य, पत्रिका, दृश्य चार्ट, आदि का प्रदर्शन सर्वभाषा संकेत लिपि निकेतन, अजमेर ने किया। इसकी प्रमुख विशेषता हिंदी, इंगलिश, उर्दू और तमिल में आशुलिपि शिक्षण पुस्तकें थीं। दूसरी भाषाओं से सम्बन्धित पुस्तकें, कोष व त्रैमासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन का कार्य भी यह निकेतन कर रहा है। जिसके निमित्त राजस्थान सरकार अनुदान प्रदान करती है। इस टण्डन प्रणाली की प्रशंसा सर्वश्री ए० जे० मुनरो, सर आईज़ेक पिटमैन एण्ड संस

लंदन, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, श्री आर० आर० दिवाकर, भूतपूर्व राज्यपाल बिहार, स्वर्गीय श्री अमरनाथ झा, अध्यक्ष जन सेवा आयोग, इलाहाबाद, श्री ए० डी० पंडित, चीफ मुख्यायोग, अजमेर, श्री एम० एन० तोलानी राजस्थान विश्वविद्यालय, आदि समय-समय पर कर चुके हैं। हिंदी और अंग्रेजी के प्रमुख पत्रों ने भी इसकी सराहना की है।

पत्रिकांचल

पत्रिकांचल प्रदर्शनी का दूसरा भाग था। जिसमें देवनागरी लिपि के बदलते हुए रूपों के विभिन्न चार्ट, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के द्विभाषी चार्ट व भारतीय भाषाओं के स्वयं शिक्षक तथा लगभग ३५० पत्र-पत्रिकाएँ प्रदर्शित थीं। यह खण्ड दर्शकों के कौतूहल का विषय बना हुआ था। क्योंकि इसमें कई ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ थीं जिसका लोगों ने नाम तो सुना था पर देखी नहीं थीं। 'हंस' के वे अंक भी प्रदर्शित थे जिनका सम्पादन स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द, श्रीमती शिवरानी प्रेमचन्द तथा श्री जैनेन्द्र-कुमार करते थे। साप्ताहिक 'हिंदुस्तान' 'धर्मयुग' 'निराला' 'समालोचक' आदि अनेकों पत्रिकाओं के प्रवेशांक, विशेषांक व भारतीय रेलों में रेलवे बोर्ड द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी व हिंदी द्विभाषी पत्रिकाएं, गज़ट, नियम पुस्तकें, वार्षिक रिपोर्टें, सामान्य नियमावलियाँ व पत्रक, सुरक्षा आदि विषयों पर पोस्टर आदि अपने विषय की भिन्नता व साजसज्जा के कारण विशेष रूप से दर्शकों का ध्यान आकर्षित करती थीं। रेलवे बोर्ड के रेल साहित्य में 'भारतीय रेल के सौ वर्ष' तथा सन् १९५३-१९५४ से १९६४-६५ तक के रेल मंत्रियों के हिंदी बजट भाषण अनायास ही दर्शकों को एक दशक की प्रगति से परिचित करा रहे थे। उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित राजपत्र भी इस उद्देश्य से प्रदर्शित किये गये थे कि जनता को सहज ही पता हो जाये कि हिंदी धीरे-धीरे व्यवहार में आगे बढ़ रही है। कोष खंड में रखे विधि, वैधानिक, व सोलह भारतीय भाषाओं के व्यवहार कोष ने दर्शकों को अधिक आकर्षित किया। हिंदी सीखने वालों ने दक्षिण भारत का 'तुलनात्मक व्याकरण', गुजरात विद्यापीठ की 'भूल सुधार', महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा, सभा पूना का 'राष्ट्रभाषा का आंदोलन, राष्ट्र-भाषा अध्ययन व राष्ट्रभाषा की समस्या' केन्द्रीय हिंदी संस्थान एवं केन्द्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल, आगरा के 'समन्वय' व 'गवेषणा', उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिंदी निर्देशिका', केन्द्रीय गृह मंत्रालय की 'कार्यालय पद्धति', केन्द्रीय हिंदी निदेशालय का पारिभाषिक कोष, संशोधित हिंदी वर्णमाला, देवनागरी व मराठी कुंजी पटल, वेसिक शब्दावली, द्विभाषा समानार्थी शब्दावलियों तथा 'भाषा' के विशेषांकों को देखने में विशेष रुचि दिखाई। नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित हिंदी सम्बन्धी साहित्य, बेसिक हिंदी, हिंदी वालो सावधान, अच्छी हिंदी, अच्छी हिंदी कैसे सीखें, हिंदी शब्दानुशासन, हिंदी आंदोलन जैसी पुस्तकों को छात्र व हिंदी पढ़ाने वाले अध्यापक-गण खरीदने का लोभ संवरण नहीं कर सके। बाबू वर्ग को केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् के सरकारी कामकाज हिंदी से सम्बंधित सुरुचिपूर्ण सामयिक, सस्ते व उपयोगी प्रकाशनों ने आश्वस्त एवं आकर्षित किया।

राष्ट्रभाषा हिंदी के गौरव-मुकुट अनेक साहित्यकारों के चित्रों में से कबीर, सूर, तुलसी, केशवदास, भारतेन्दु,

प्रेमचन्द, निराला, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के अतिरिक्त जिन चित्रों ने दर्शकों को आकर्षित किया उनमें डा० गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, स्वामी भवानीदयाल संन्यासी, डा० सुधीन्द्र व श्री सुन्दरलाल गर्ग के चित्र थे।

पत्रिकांचल की एक और आकर्षक सामग्री थी कांच पर लिखी गई 'संशोधित हिंदी वर्णमाला' जो जनता की जानकारी के लिए विशेष रूप से मण्डल द्वारा प्रस्तुत की गई थी।

प्राचीन ग्रन्थ एवं अनुपलब्ध पांडुलिपियाँ

इसके अतिरिक्त वहाँ डा० गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, स्वामी भवानीदयाल संन्यासी, चांदकरण शारदा, कवि सूर्यमल्ल का वंशभास्कर, समन्जी भाट का 'रस विलास,' छत्रकवि की संवत् १७५७ की 'विजय मुक्तावली' 'कुलपतिमिश्र का 'संग्रामसार' तथा राजस्थान के चारण कवियों के डिंगल भाषा में वीर रस के अप्राप्य ग्रंथों की पांडुलिपियाँ तथा संवत् १८०१ से १६२८ तक प्राचीन पट्टों तथा पत्र-व्यवहार के नमूने प्रदर्शित किये गये थे। यह बहुमूल्य सामग्री स्वर्गीय ओझा जी व संन्यासी जी के परिवारों व सर्वश्री तेजकरण जी शारदा, श्रीधर शर्मा, व श्री सत्यदेव राव के सौजन्य से प्राप्त हुई। इनके अतिरिक्त ८६ पृष्ठों की 'कविरत्न माला' की पांडुलिपि भी प्रदर्शित थी, जिसमें संस्कृत के कवियों की नामावली और प्रत्येक कवि का एक-एक श्लोक लिखा हुआ था। इसका पहला कवि अद्भुत पुल्ल व अन्तिम कवि शंखधर है। इन महानुभावों से सम्बन्धित प्रकाशित सामग्री में ओझा अभिनन्दन ग्रंथ जो उनके ७०वें वर्ष की पूर्ति के उपलक्ष में हिंदी साहित्य सम्मेलन में समर्पित हुआ था, और स्वामी भवानीदयाल संन्यासी द्वारा २८-१-१९४४ को प्रथम दिवस के सभापति के रूप में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर दिया गया अभिभाषण भी जिज्ञासु विद्यार्थियों के लिए उपादेय सामग्री थी। स्वामी भवानीदयाल संन्यासी द्वारा अंग्रेजी व हिंदी में जागरण
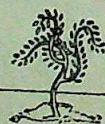
प्रेस जैकाप्स नैटाल (अफ्रीका) से प्रकाशित हिंदी (साप्ताहिक पत्रिका जुलाई, १९२३) व सं० २००४ विजया-दशमी पर अजमेर से प्रकाशित 'प्रवासी' मासिक की प्रतियाँ भी प्रदर्शित थीं। इन सबके बाद आती है डा० प्रभाकर माचवे के हस्तलेख में सन् १९५० की वसन्त पंचमी पर निराला के काव्य से लेकर लिखी गई ५४ पंक्तियाँ जिनका पहला अक्षर पढ़ने पर यह वाक्य बनता है—युगांतरकारी कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजी सेवा में सादर निवेदन है कि आप अपनी नवीन रचनाशालिनी लेखनी को विराम नहीं दें। जन साधारण ने जहाँ कवि सम्मेलन के माध्यम से अपनी साहित्यिक पिपासा को शांत किया वहाँ हिंदी के अनेक जिज्ञासु छात्रों, अध्येताओं और प्राध्यापकों ने इस पुस्तक-लोक व पत्रिकांचल को बड़े ही मनोयोग से देखा। पत्रिकांचल में प्रदर्शित सामग्री का व्योरा मुख्य अतिथियों को हिंदी पर्यवेक्षक श्री जगदीश बोरा व हिंदी बाल साहित्य के प्रणेता एवं कहानीकार श्री मनोहर वर्मा ने किया। पत्रिकांचल की साजसज्जा जो बहुत ही आकर्षक थी और अजमेर में लोगों को पहली बार देखने को मिली जिसमें सर्वश्री मनोहर वर्मा, श्रीमती मुकेश माथुर व श्री प्रेमी का विशेष हाथ था।

आशीर्वाद : हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर

राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने प्रदर्शनी को देखकर 'दर्शक पुस्तिका' में अत्यन्त प्रशंसा एवं सन्तोष प्रकट करते हुए लिखा कि "इस सुन्दर और उपयोगी पुस्तक संग्रह के लिए अनेक धन्यवाद। रेलवे अधिकारियों का यह प्रयास प्रशंसनीय है। हिंदी दिवस के उपलक्ष में उन सबको हार्दिक बधाई।"

मुख्य अतिथि डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने अपने उद्‌गारों की अभिव्यक्ति स्वरूप लिखा कि "पश्चिम रेलवे अजमेर मण्डल द्वारा आयोजित प्रदर्शनी को देखकर प्रसन्नता ही नहीं विश्वास हो गया कि अब हिंदी अवश्य राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगी। अंग्रेजी या अन्य किसी व्यवधान का भय जाता रहा। इसके सक्रिय संयोजकों को जितना भी साधुवाद दिया जाये थोड़ा है। भाई श्री सामन्त और श्री जगदीश बोरा समस्त हिंदी साहित्य की बधाई के पात्र हैं।

चिरस्मरणीय कवि-सम्मेलन

रात्रि को ९ बजे मुख्य अतिथि डा० 'सुमन' की अध्यक्षता में श्री देवकीनन्दन शर्मा 'अकिंचन', सहायक क्षेम निरीक्षक (कारखाना केरिज) ने कवि-सम्मेलन का संयोजन किया। प्रारंभ में श्री सामंत ने काव्य में मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उनके लिए कहा—

युगगायक यौवन के कवि मृदुभाषी गुण सारे।
स्वागत करते सभी रेलजन कविवर 'सुमन' पधारे॥

यह कवि-सम्मेलन लगभग पांच हज़ार श्रोताओं के साथ प्रातः ३ बजे तक चलता रहा।

नगर के कवियों के अतिरिक्त बाहर से आये हुए सर्वश्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' दिल्ली, शांतिलाल भारद्वाज राकेश उदयपुर, कौशल मिश्र उज्जैन, शिवशंकर जोशी राजकोट, रामनिहोर मिश्र कोटा व प्रवीण पांडे बम्बई आदि कवियों ने भी कविता-पाठ किया।

डा० 'सुमन' ने जनता को अपना काव्यमय परिचय देते हुए कहा—

मैं शिप्रा सा ही तरल सरल बहता हूँ।
मैं कालिदास की शेष कथा कहता हूँ॥
मुझको न मौत भी भय दिखला सकती है।
मैं महाकाल की नगरी में रहता हूँ॥

इस कवि-सम्मेलन की एक और विशेषता यह थी कि राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय अस्वस्थ होते हुए भी डाक्टरों के परामर्श के विरुद्ध प्रारम्भ से अन्त तक न केवल काव्यानंद लेते रहे बल्कि आपने कविता-पाठ भी किया। उनकी कविता का कुछ अंश इस प्रकार है—

दीपिका जलती, दिखाती राह है,
स्नेह से जलती न करती आह है।
खाक होने की नहीं परवाह है,
मैं मिटूं तू जले बस, यही चाह है॥

'हिन्दी कवयित्रियों के प्रेम गीत' के सम्पादक व साहित्य अकादमी के प्रकाशन अधिकारी श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने इस बार परम्परा तोड़कर हास्य रस प्रधान कविता का पाठ किया, जिसे जनता ने काफी पसन्द किया।

अजमेर में आयोजित इस त्रिसूत्री समारोह के कार्यक्रम को आकाशवाणी, जयपुर द्वारा रिकार्ड किया गया और शुक्रवार दिनांक १८ सितम्बर, १९६४ की रात्रि को आठ बजे जयपुर केन्द्र से 'समाचार तरंग' के अंतर्गत प्रसारित किया गया। इस अवसर पर बाहर के रेल अधिकारियों के अतिरिक्त राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर, हिन्दी प्रकाशकों व अन्य महानुभावों से समारोह की सफलता के संदेश प्राप्त हुए।

इस समारोह को सफल बनाने में जिन संस्थाओं व व्यक्तियों का सक्रिय व उदारतापूर्ण सहयोग मिला उनमें श्री गोपालदास बैजल, केन्द्र संचालक आकाशवाणी, जयपुर, श्री धर्मचन्द जोशी, उप मुख्य लेखा अधिकारी, श्री केतकर, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, श्री शास्त्री, मंडल विद्युत इंजीनियर, श्री गोविन्द राजन, जिला भंडार नियंत्रक, श्री सेन गुप्ता, मंडल कार्मिक अधिकारी, श्री शुक्ला, मण्डल परिचालन अधिकारी, श्री के० एन० माथुर, मंत्री रेलवे विसिट इन्स्टीट्यूट, श्री शर्मा, सुरक्षा अधिकारी, श्री कपिल राय जानी, मंडल कार्यालय अधीक्षक, श्री मंगल सक्सेना विशेष परिगण्य हैं।

देश के ५७००० रूट किलोमीटर भूमि पर भारत की जीवन रेखा द्वारा लगभग ६७०० स्टेशनों तथा लगभग १०००० गाड़ियों के माध्यम से प्रतिदिन दस लाख रेल कर्मचारी किसी न किसी स्तर पर जनता के सम्पर्क में आते हैं। समारोह की सम्पूर्ण स्थिति का आकलन करने पर जनता को पहली बार यह आभास हुआ कि यदि भारतीय रेलें जिनका विशाल पैमाने पर प्रतिपल, प्रति घंटे, व प्रतिरात भारतीय जनता से अनवरत सम्पर्क होता रहता है, हिन्दी को राजभाषा के रूप में पूर्णतः व्यवहार में ले आये तो अन्यत्र वह स्वतः ही छिटकती, बिखरती, उछलती, फैलती चली जायेगी। यही तथ्य शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय तथा मुख्य अतिथि डा० शिव मंगल सिंह 'सुमन' के भाषणों में ध्वनित हुआ। ●

संग्रहणीय एवं उपयोगी प्रकाशन

आलोचनात्मक

१. तुलसीदास और उनके काव्य
डॉ० रामदत्त भारद्वाज १२.५०

२. काव्य-शास्त्र की रूप-रेखा
डॉ० रामदत्त भारद्वाज ७.००

३. जैनेन्द्र : व्यक्तित्व और कृतित्व
सत्यप्रकाश मिलिन्द ७.००

४. साहित्य-समालोचन
सत्यप्रकाश मिलिन्द २.५०

५. हिन्दी-साहित्य-परिचय
तनसुखराम गुप्त १.१०

निबन्ध

६. संस्कृत निबन्ध मणिमाला
प्रो० शिवप्रसाद ९.००

७. निबन्ध प्रभाकर
डॉ० भोलानाथ तिवारी ६.५०

८. निबन्ध चन्द्रिका
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ४.००

९. गद्यांजलि
बांकेबिहारी भटनागर ४.००

१०. निबन्ध सुषमा
डॉ० मनमोहन गौतम ३.००

११. प्रबन्ध पराग
तनसुखराम गुप्त १.४०

उपन्यास तथा कहानी-संग्रह

१२. समझौता श्रीराम शर्मा 'राम' ५.००

१३. मधुवन राकेश वत्स ३.५०

१४. व्यामोह श्याम विमल २.५०

१५. अधूरे सपन
भगवतीस्वरूप उपाध्याय २.५०

१६. छोटे जीजा जी
भगवतीस्वरूप उपाध्याय १.००

१७. दिन बीत गया तनसुखराम गुप्त १.००

१८. भगोड़े युद्ध-बन्दियों की सच्ची-कहानियाँ
वरदाचारी पंडित ३.००

१९. गुप्तचरों की सच्ची कहानियां
वरदाचारी पंडित ३.००

२०. दो हाथ (कहानी संग्रह) इन्दुबाली २.५०

जीवनी और संस्मरण

२१. जीवन के कुछ क्षणों में
तनसुखराम गुप्त १.५०

२२. भारतीय महापुरुष तनसुखराम गुप्त ३.००

२३. महापुरुष चरितावली (संस्कृत)
प्रो० शिवप्रसाद २.५०

सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ६

संघ समाचार

कार्य समिति की बैठक

उत्तर प्रदेश के विकास विभाग में पुस्तकों की खरीद बन्द करने पर खेद

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति की एक बैठक रविवार दिनाँक १३ सितम्बर, सन् १९६४ को सायंकाल ३ बजे चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-६ में श्री ओमप्रकाशजी की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

सर्वश्री सीताशरण सिंह
" जवाहर चौधरी
" ओमप्रकाश जी
" भोलानाथ अग्रवाल
" रामतीर्थ भाटिया
" रामलाल पुरी
" श्यामलाल गुप्त
" तेजनारायण टण्डन
" दयानन्द वर्मा
" विजयप्रकाश बेरी
" रघुवीरशरण बंसल

१. गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत और सम्पुष्ट हुई।

२. निश्चय किया गया कि विगत वर्षों की भाँति संघ इस वर्ष भी १४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक राष्ट्रीय पुस्तक समारोह का आयोजन करे। इस अवसर पर देश के प्रमुख नगरों में पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित हों तथा संघ द्वारा प्रकाशित पोस्टर वितरित किए जाएं।

कार्य समिति समारोह से सम्बन्धित कार्यक्रमादि बनाने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों की एक उपसमिति आयोजित करती है :

१. श्री रामलाल पुरी
२ लाला श्यामलाल गुप्त
३. श्री दयानन्द वर्मा
४-५ संघ के अध्यक्ष एवं प्रधान मन्त्री (सपदेन)

३. कार्य समिति सखेद इस निर्णय पर पहुँची है कि अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों से पुस्तक वितरण की सहकारी योजना को वह कार्यान्वित करने में अपने को असमर्थ पाती है तथा इस सम्बन्ध में अंतिम निर्णय के दायित्व को संघ के आगामी अधिवेशन पर छोड़ती है।

४. श्री अध्यक्ष ने बताया कि सन्दर्भ पुस्तकों की सूची बनाने का काम चल रहा है। इसमें विदेशी शिक्षा-शास्त्रियों की सम्मति आने में थोड़ा विलम्ब हो गया है और यह सूची अक्टूबर के अन्त तक तैयार हो जायेगी।

५. एजूकेशनल पुस्तकों की सूची के सम्बन्ध में बताया गया कि वह तैयार हो गई है और अक्तूबर में प्रकाशित हो जायेगी। इस समय सूची यन्त्रस्थ है।

६. कार्यालय ने सूचना दी कि सदस्यों की प्रामाणिकता के विषय में जाँच हो गई है और एक सदस्यता के बारे में उचित संशोधन कर लिया गया है।

७. श्री रामतीर्थ भाटिया द्वारा प्रस्तावित एवं रघुवीरशरण बंसल द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव उत्तर प्रदेश में विकास खण्डों के पुस्तकालयों में पुस्तक न खरीदे जाने के विषय में सर्वसम्मति से पास हुआ।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्यसमिति उत्तर प्रदेश के विकास विभाग के अधिकारियों द्वारा दिये गये उन आदेशों पर खेद प्रकट करती है जिनके अनुसार राज्य

के विकास-खण्डों के लिए पुस्तकों की खरीद की मनाही कर दी गई है। यह आश्चर्य का विषय है कि स्वीकृत कोष होने के बावजूद उत्तर प्रदेश की ग्रामीण जनता के लिए पुस्तकें उपलब्ध करने के एकमात्र साधन पर भी इस प्रकार बाधा डाल दी गई है। विकास खण्डों में यदि उपयुक्त पुस्तकें पहुँचती रहें तो ग्रामीण जनता की रुचि उनके पढ़ने के लिए समय पाकर अवश्य पैदा होगी लेकिन यदि पुस्तकें विकास-खण्डों के पुस्तकालयों द्वारा खरीदी ही न जाएँ तो यह संभावना सदा के लिए समाप्त हो जाती है।

कार्य समिति उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्यमन्त्री और संबंधित मन्त्री महोदय से सानुरोध प्रार्थना करती है कि अपने निर्णय पर वे पुनर्विचार करें और अविलम्ब ऐसी व्यवस्था करें कि विकास-खण्डों के पुस्तकालयों में पुस्तकें नियमित पहुँचती रहें।

८. श्री सीताशरण सिंह द्वारा प्रस्तावित एवं श्री रामतीर्थ भाटिया द्वारा अनुमोदित यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया कि केन्द्रीय सरकार कापीराइट कानून को सशक्त बनाने के लिए कठोर पग उठाये। वर्तमान कानून से जाली पुस्तकें छापने और बेचने के अपराध में कोई कमी नहीं हो पा रही है।

९. श्री रामलालजी पुरी द्वारा प्रस्तावित तथा बंसलजी द्वारा अनुमोदित यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हुआ—

केन्द्रीय अथवा राज्यों के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर बड़ी संख्या में पुस्तकें खरीदने के लिए नमूने की पुस्तकें प्रकाशकों से मांगी जाती हैं लेकिन प्राय: नियम यह बना लिया गया है कि एक प्रकाशक की एक ही पुस्तक खरीदी जायगी। इस प्रकार के नियम से अनेक प्रकाशकों का, जो बड़े पैमाने पर प्रकाशन का कार्य करते हैं, उत्साहवर्द्धन नहीं हो पाता और अनेक ऐसे व्यक्ति, जो वास्तव में प्रकाशक नहीं हैं, अनुचित लाभ का अवसर पाते हैं। इस नियम से यह प्रवृत्ति भी प्रकाशक वर्ग में आती है कि विभिन्न नामों से ऐसे अवसरों पर पुस्तकें विचारार्थ भेजें।

कार्य समिति केन्द्र व राज्यों के अधिकारियों से प्रार्थना करती है कि पुस्तकों के चयन में पुस्तक को ही प्रमुखता देने का नियम व्यवहार में लाएं।

कार्य समिति का यह विचार भी है कि यदि योग्यता और अनुभव के आधार पर प्रकाशकों के पंजीबन्धन की कोई व्यवस्था केन्द्र व राज्यों के अधिकारियों द्वारा बनाई जा सके तो अच्छे साहित्य के प्रकाशन और चयन में उन्हें अधिक सुविधा हो जायेगी और ऐसी व्यवस्था स्वागतयोग्य होगी।

१०. कार्यसमिति ने निश्चय किया कि जिन सदस्यों से १९६४-६५ का वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है, वह ३१ अक्तूबर ६४ तक कार्यालय को अवश्य भेज दें।

अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देने के पश्चात् कार्यवाही समाप्त की गई।

—प्रधान मंत्री

इस मास के नए प्रकाशन

• एक रहस्य : एक सत्य

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत पंजाबी उपन्यासकार नानकसिंह का नया उपन्यास जो रहस्यमय भी है और रोचक भी। इसमें जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखा गया है। मूल्य २.००

• युग पुरुष नेहरू

सेठ गोविन्ददास की सशक्त लेखनी द्वारा लिखित युग पुरुष नेहरू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर नई पुस्तक जिसमें आप नेहरू जी के सम्बन्ध में बहुत व्यापक और दिलचस्प सामग्री पाएंगे। मूल्य २.००

• जानने की कहानियां

सत्यदेवनारायण सिन्हा द्वारा लिखित राकेट की कहानी, राष्ट्रपति की कहानी, रेल की कहानी, कागज़ की कहानी, थर्मामीटर की कहानी, गुब्बारे की कहानी इत्यादि सभी जानने योग्य कहानियों का सचित्र संग्रह। मूल्य १.५०

नए कहानीकार : नई पुस्तकमाला
सम्पादक : राजेन्द्र यादव

- **राजेन्द्र यादव की श्रेष्ठ कहानियां** २.५०
  मोहन राकेश द्वारा लिखित व्यक्ति-चित्र
- **फणीश्वरनाथ रेणु की श्रेष्ठ कहानियां** २.५०
  कमलेश्वर द्वारा लिखित व्यक्ति-चित्र

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

२.००
३.००
२.००
४.००
३.००
२.५०
२.५०
२.५०
२.५०
३.००
२.००
२.२५
२.२५
२.२५
२.२५
२.२५
२.२५
२.५०
२.५०
२.२५
२.२५
.००
.००
.००
.५०
.५०
.००
.००
.५०
.००
.५०
.५०

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

अलंकार-मीमांसा : ले० मुरली मनोहर प्रसाद सिंह; प्र० भारती भवन, गोविंद मित्रा रोड, पटना-४; सा० डि० ८; पृ० ३०८; मू० ६.०० ।

अज्ञेय का काव्य : ले० सुश्री सुमन झा; प्र० अनुसंधान प्रकाशन, आचार्यनगर, कानपुर; मू० १६.०० । शोधप्रबंध ।

औचित्य विमर्श : ले० राममूर्ति त्रिपाठी; प्र० भारती भंडार, इलाहाबाद; सा० क्रा० ८ ; पृ० २७३ ; मू० ६.०० ।

काव्यशास्त्र की रूपरेखा : ले० श्याम नंदन शास्त्री; प्र० भारती भवन, गोविन्द मित्रा रोड, पटना ४; सा० ड० क्रा० ६; पृ० ४१६; मू० ६.५० ।

गीतायन : स० पुनम दशम, हरीश भदानी; प्र० सूर्य प्रकाशन मंदिर, बिस्सों का चौक, बीकानेर; सा० डि०; पृ० १२०; मू० ३.०० ।

जनकवि दिनकर : ले० डा० सत्यकाम वर्मा; प्र० भारतीय प्रकाशन, ७०३ अशोक नगर, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० १९२; मू० ४.०० ।

महाकवि पंत :

महाकवि प्रसाद : ले० प्र० सा० उपरोक्त; पृ० १३६-१३६; मू० ३.००, ३.०० ।

युगकवि दिनकर : ले० प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव; प्र० बिहार ग्रंथ कुटीर, खजांची रोड, पटना-४ ; सा० डि०; पृ० १९०; मू० ११.०० ।

रसभंग : ले० डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु; प्र० बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना; सा० क्रा०; पृ० ८८; मू० २.५०; मैपलीथो कागज । पु० मु० ।

रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन : ले० डॉ० शिवकुमार शुक्ल; प्र० अनुसंधान प्रकाशन; आचार्य नगर, कानपुर; मू० १५.०० । शोध प्रबंध ।

राष्ट्रीय समग्रता में साहित्यिक का योगदान : ले० प्रो० दीनानाथ शरण; प्र० बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना ४; सा० क्रा०; पृ० १५०; मू० ३.०० ।

वियोग : ले०डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु; प्र० बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४; सा० क्रा०; पृ० ८०; मू० २.०० । मैपलीथो कागज । पु० मु० ।

हिन्दी उपन्यास शिल्पविधि का विकास : ले० डा० (श्रीमती) ओम शुक्ल; प्र० अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर; मू० १६.०० । शोध प्रबंध ।

हिन्दी निबंध का विकास : ले० डा० ओंकार नाथ शर्मा; प्र० पूर्वोक्त । शोध-प्रबंध ।

हिन्दी साहित्य परिचय : ले० अमरनाथ; प्र० ज्ञानालोक प्रकाशन, ड्योढ़ी आगामीर, लखनऊ; मू० २.०० ।

हिन्दी साहित्य : पिछला दशक : सं० विश्वनाथ; प्र० सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; सा० डि; पृ० ३५०; मू० ६.०० ।

कविता

उर्दू गुलिस्तां की बुलबुलें : सं० श्री रामनाथ सुमन; प्र० हिंद पाकेट बुक्स, (प्रा०) लि०, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली; मू० २.०० । पा० बु० ।

गुसाईं गुरुबानी (गुसाईं मत का गुरुग्रन्थ) : प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली; सा० डि० ८; पृ०; ८००; मू० २०.०० । गुरु नानक कालीन लुप्त ग्रंथ । प्राक्कथन डा० गोकलचंद नारंग; भूमिका डा० विजयेन्द्र स्नातक ।

सांप्रतिकी : सं० डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव; प्र० विहार ग्रंथ कुटीर, पटना ४; सा०क्रा०; पृ० १८०; मू० ४.००; नई कविता का संकलन ।

उपन्यास

अभागी की डायरी : ले० ओमप्रकाश शर्मा; प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दरीबा, दिल्ली; सा० फु०; पृ० १२८; मू० १.०० । पा० बु० ।

उजड़ा घर : ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र० हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली- ३२ । मू० १.००; पा० बु० ।

एक रहस्य : ले० नानकसिंह; प्र० हिंद पाकेट बुक्स दिल्ली-३२; मू० १.०० । पा० बु० ।

एक रहस्य : ले० नानकसिंह; प्र० राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली ६; मू० २.०० ।

चौरंगी : ले० श्री शंकर, अनु० राजकमल चौधरी; प्र० राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि०; ८ फैज़ बाजार, दिल्ली ६, पृ० ५२८; मू० ११.०० । बंगला से अनूदित ।

जानवर : ले० दत्त भारती; प्र० रतन एण्ड कं०; दरीबा, दिल्ली ; सा० फु० ; पृ० १९२ ; मू० २.०० । पा० बुं० । पु० मु० ।

ठंडी आग : ले० हृदयेश सिंह; प्र० पूर्वोक्त; मू० १.०० । पा० बु० ।

तस्वीर और साये : ले० गंगा प्रसाद मिश्र; प्र० साहित्य भवन प्रा० लि० इलाहाबाद; पृ० ४४८; मू० १०.०० ।

नीले आकाश तले : ले० यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र; प्र० रतन एण्ड कं०, दिल्ली; मू० २.०० । पा० बुं० ।

पतित : ले० दत्त भारती; प्र० पूर्वोक्त; मू० २.००; पा० बु० ।

पाणिग्रहण : ले० श्री गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य-सदन, ३०-९० कनाट सरकस, नई दिल्ली; पृ० २८८; मू० २.०० । पा० बु० ।

प्रेम प्रपंच : अनु० बनारसीदास चतुर्वेदी; प्र० सस्ता

साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० १२०; मू० २.०० ।

बयालिस : ले० श्री प्रताप नारायण श्रीवास्तव; प्र० जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर; मू० ७.०० । सामाजिक ।

भावुकता का मूल्य : ले० श्री गुरुदत्त; प्र० भारती साहित्य सदन, कनाट सरकस, नई दिल्ली; पृ० ३१२; मू०पा०बु० (पु० मु०) २.००; सजिल्द ६.०० ।

मास्टर महिमा : ले. मनोज बसु; प्र. सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा०क्रा०८; पृ०२५०; मू० ४.०० ।

रंग का पत्ता : ले० अमृता प्रीतम; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली; मू० १.०० । पा० बु० ।

व्यावर्तन : ले०प्रतापनारायण श्रीवास्तव; प्र० जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर; मू० ८.०० । सामाजिक ।

वन्दना : ले० प्र० मू० पूर्वोक्त ।

सावन की आँखों में : ले० यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र; सूर्य-प्रकाशन मंदिर, बिस्सों का चौक, बीकानेर; सा० क्रा०; पृ० १३५; मू० ३.०० ।

सिंदूर की राख : जयप्रकाश शर्मा; प्र०रतन एण्ड कं० दिल्ली; मू० १.०० । पा० बु० ।

कथा-कहानी

एक शिकारी हज़ार शेर : ले० कर्नल केशरीसिंह; प्र० भारती भंडार, इलाहाबाद; सा० डि०८; पृ० २३०; मू० ५.०० ।

गीली आँखें : ले० शिवचन्द्र प्रताप; प्र० बिहार ग्रन्थ कुटरी, खजांची रोड, पटना-४; सा० क्रा०; पृ० १५०; मू० ३.०० । शब्दचित्र ।

जानने की कहानियाँ : ले० सत्यदेव नारायण सिन्हा; प्र० राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली-६; मू० १.५० ।

प्रतीक्षा : ले० राजेन्द्र यादव; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२; मू० १.०० । पा० बु० ।

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियाँ : स. राजेन्द्र यादव; प्र० राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली-६; मू० २.५० ।

ये कथा रूप : सं० यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र; प्र० सूर्य प्रका-

शन मंदिर, बिस्सों का चौक, बीकानेर; सा० क्रा०; पृ० २३५; मू० ५.०० ।

राजस्थानी लोक कथाएँ : (दो भाग) श्री गोविन्द अग्रवाल; प्र० भारती भंडार, इलाहाबाद; सा०क्रा०; पृ० २६६-२६३; मू० प्रत्येक भाग ५.०० ।

राजेन्द्र यादव की श्रेष्ठ कहानियाँ : सं. राजेन्द्र यादव; प्र० राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली-६; मू० २.५० ।

आत्मकथा-संस्मरण

बीती बातें: ले० कपिलदेव नारायणसिंह सुहृद; प्र० बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४; सा० डि०; पृ० २००; मू० ११·०० । आत्मकथा ।

युग पुरुष नेहरू : ले० सेठ गोविन्द दास; प्र० राजपाल एण्ड संज़; दिल्ली-६; मू० २.०० ।

युग पुरुष नेहरू : ले० पूर्वोक्त; प्र० हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२; मू० १.०० । पा० बु ।

नाटक

कांचनरंग : ले० शंभुमित्र, अमित मित्र, अनु०नेमिचन्द्र जैन; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली-६; सा० क्रा०८; पृ० १२०; मू० ३.०० ।

मयूर पंख : डा० रामकुमार वर्मा; प्र० साहित्यभवन प्रा० लि०, इलाहाबाद; पृ० ५४४; मू० १२·०० । २१ एकांकी ।

ज्ञान-विज्ञान

आविष्कारों की सच्ची कहानी : मू०ले० ईगन लार्सन; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० २३२; मू० ३.५० । भारत सरकार की लोकप्रिय पुस्तकों के अनुवाद-प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत प्रकाशित ।

हमारा समुद्र : ले० भगीरथ; प्र० उमेश प्रकाशन, ५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६; सा० क्रा०; मू० ३.०० ।

किशोरोपयोगी

गुरु अंगद देव : ले० राजेश शर्मा

जूलियस सीज़र : ले० शत्रुघ्नलाल शुक्ल

राई से पहाड़ : ,, ,,

राजा लियर : ,, ,,

संत कबीर : ले० रामकृष्ण शर्मा; प्र०उमेश प्रकाशन; ५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली; मू० प्रत्येक २.०० ।

हमारे प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री : ले० वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी; प्र० किरन प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा० फु० ८; पृ० ४५; मू० २.०० । सचित्र, जीवनी ।

समाज कल्याण, सामुदायिक विकास

प्राचीन समाज

समाज कल्याण

समाज सुधार : ले० सावित्री देवी रांका; प्र० रश्मि प्रकाशन, जयपुर; सा० डि०; पृ० ४८; मू० प्रत्येक १.५० । वितरक किताब महल, जयपुर ।

सामुदायिक विकास : ले० एस० के० दे; प्र० राजकमल प्रकाशन, प्रा०लि०; फैज बाजार, दिल्ली; मू०३.०० ।

राजनीति

इंगलैंड में स्थानीय शासन : ले० मृत्युञ्जय प्रसाद मिश्र; प्र० भारती भवन, पटना-४; सा० डि० ८; पृ० ५००; मू० १०.०० ।

कश्मीर पर हमला : ले० कृष्ण मेहता; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पृ० २२५; मू० २.५० । पु० मु० ।

हमारी प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें

थीसिस (शोध-प्रबन्ध)

भारतीय मुक्तक परम्परा : डा० रामसागर त्रिपाठी ७.५०
बंगला पर हिन्दी का प्रभाव : डा० ब्रह्मानन्द १५.००
आधुनिक हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस : डा० श्रीनिवास शर्मा १२.५०
हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना : डा० सुरेश सिन्हा १२.५०

साहित्यिक

पद्मावत में काव्य और दर्शन : डा० गोविन्द त्रिगुणायत १५.००
हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ : प्रो० शिवकुमार एम०ए० (हिन्दी व संस्कृत) ८.००
हिन्दी साहित्य समस्याएँ और समाधान : डा० गणपतिचन्द्र गुप्त ५.००
कामायनी की भाषा : श्री रमेश मिश्र ७.५०

सटीक काव्य

कबीर ग्रन्थावली सटीक : पुष्पपालसिंह एम०ए० १०.००
जायसी ग्रन्थावली सटीक : डा० श्रीनिवास शर्मा ८.००
विद्यापति और उनकी पदावली सटीक : प्रो० कृष्णदेव शर्मा ५.००
मीराबाई और उनकी पदावली सटीक : प्रो० देशराजसिंह भाटी ५.००
केशव और उनकी रामचन्द्रिका : ,, ७.००
बिहारी सतसई सटीक : प्रो० विराज एम०ए० ४.००
घनानन्द कवित्त सटीक : लक्ष्मण दत्त गौतम ३.५०
पृथ्वीराज रासो (तीन अ०): देशराजसिंह भाटी ३.५०
कबीर साखी समीक्षा : प्रो० पुष्पपालसिंह ३.५०
महादेवी और उनकी दीपशिखा : डा० शान्तिस्वरूप ४.५०
दिनकर और उनकी उर्वशी : प्रो० देशराजसिंह भाटी ७.५०
दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र : ,, ,, ३.५०
पन्त और उनका रश्मिबन्ध ,, ,, ३.५०
प्रिय प्रवास की टीका : लक्ष्मण दत्त गौतम ५.००
कामायनी की टीका : रमेश मिश्र ५.००
साकेत की टीका : प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ५.००
भ्रमरगीतसार की टीका : प्रो० पुष्पपालसिंह ५.००
निराला और उनकी अपरा : प्रो० देशराजसिंह भाटी ४.५०
रत्नाकर उनका उद्धवशतक : ,, ,, २.५०
आधुनिक कवि पंत टीका : कृष्णदेव शर्मा ३.५०

निबन्ध

साहित्यिक निबन्ध : डा० गणपतिचन्द्र गुप्त ८.००
अशोक निबन्ध सागर : प्रो० विजयकुमार एम० ए० ५.००
अशोक निबन्ध माला : प्रो० शिवप्रसाद शास्त्री ३.००

आलोचनात्मक

प्रमुख कवि

कबीर : प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
सूरदास : प्रो० शिवशंकर २.५०
मीराँ प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
कवि प्रसाद भारत भूषण सरोज २.५०
मैथिलीशरण गुप्त : विजयकुमार एम० ए० २.५०
महादेवी वर्मा प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
प्रमुख कवियों की काव्य-साधना ,, ,, ३.५०

प्रमुख लेखक

आचार्य शुक्ल लक्ष्मण दत्त गौतम २.५०
वृन्दावनलाल वर्मा विश्वप्रकाश २.५०

प्रमुख कृतियाँ

गोदान डा० रामगोपाल शर्मा २.५०
गबन प्रो० रमेशचन्द्र गुप्त २.५०
चन्द्रगुप्त प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
स्कन्दगुप्त प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
चिन्तामणि प्रो० कृष्णलाल २.५०
बाणभट्ट की आत्मकथा प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
अशोक पत्र लेखन शिवप्रसाद शास्त्री १.५०
हिन्दी साहित्य का नूतन इतिहास : आचार्य बटुक ३.५०
हिन्दी साहित्य का इतिहास : डा० राजेश्वर प्रसाद २.५०

काव्य शास्त्रीय

पाश्चात्य काव्य समीक्षा : प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ३.००
भारतीय काव्य समीक्षा : डा० श्रीनिवास शर्मा २.५०
रस छन्द अलंकार : प्रो० लक्ष्मण दत्त गौतम १.५०
भाषा विज्ञान : प्रो० हेमदेव शर्मा २.५०

परीक्षोपयोगी (साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

अशोक हिन्दी प्रथमा गाइड : १९६४ संस्करण ७.००
अशोक हिन्दी मध्यमा गाइड ,, ,, ९.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (प्रथम भाग) ६.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (द्वितीय भाग) ८.००
अशोक आयुर्वेदरत्न गाइड : (प्रथम भाग) १५.००
अशोक आयुर्वेदरत्न गाइड (द्वितीय भाग) १५.००

अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६

नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त और भारतीय संविधान : ले० रघुनाथसिंह; प्र० ज्ञानालोक प्रकाशन, ड्योढ़ी आगामीर, लखनऊ; मू० २.२५।

राजविज्ञान के मूल सिद्धान्त : ले० सूद और मेहता; प्र० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

लोक प्रशासन : ले० महेन्द्रप्रसादसिंह, आई० पी०-एस०; प्र० भारती भवन, पटना-४; सा० डि० ८; पृ० ३५२, मू० १०.००।

इतिहास

आधुनिक योरोप : ले० डा० बी० एन० मेहता; प्र० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

खिलजी वंश का इतिहास : ले० के० एस० लाल; प्र० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

मानव इतिहास की रूपरेखा : ले० एस० आर० शर्मा; प्र० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

लड़खड़ाती दुनिया : ले० जवाहरलाल नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पृ० १७५; मू० ३.००। पु० मु०।

संस्कृति

भारत सावित्री : ले० वासुदेवशरण अग्रवाल; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा० ८; पृ० ३००; मू० ३.००।

भारतीय संस्कृति : ले० साने गुरुजी; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पृ० ३५०; मू० ४.५०। पु० मु।

विविध

गद्य भारती : सं० प्रो० केशरी कुमार; प्र० विहार ग्रंथ कुटीर, पटना-४; सा० डि; पृ० १८०, मू० ४.००। हिंदी की सभी विधाएँ।

नन्हीं नर्तकी : ले० मृणालिनी साराभाई; प्र० राजकमल प्रकाशन, प्रा०लि० दिल्ली ६; मू० ०.७५। चौरंगी आफसेट पर छपी। बाल साहित्य।

भारत के क्रांतिकारी : ले० मन्मथनाथ गुप्त; प्र० हिंद पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२; मू० २.००। पा० बु०।

स्वस्थ कैसे रहें : डा० लक्ष्मीनारायण; प्र० हिंद-पाकेट बुक्स, दिल्ली ३२; मू० १.००।

सब्ज़ बाग : ले० कन्हैयालाल कपूर; प्र० हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली-३२; मू० १.००। पा० बु०।

सच्ची आजादी : ले० भगवानदीन; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १२०; मू० २.००। आचार।

संत वाणी : ले० वियोगी हरि; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पृ० २.००; मू० २.५०। नीति।

सम्पादक के नाम पत्र

श्री वी० वी० जोन शिक्षा संचालक राजस्थान

पुस्तक व्यवसायियों के बधाई के पात्र

प्रिय महोदय,

मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि महान् शिक्षाविद् राजस्थान के शिक्षा संचालक श्री वी० वी० जोन ने अपने पत्र संख्या ई० डी० बी० पी० ए० ३९२६, ६४ दिनांक ३१ अगस्त १९६४ के द्वारा राजस्थान की समस्त हाई, हायर सेकन्ड्री तथा बेसिक एस० टी० सी० स्कूलों एवं कालेजों के प्रधान अध्यापकों को इस चीज के लिए पूर्ण स्वतन्त्र कर दिया है कि वे किसीभी उपयोगी पुस्तक को अपनी स्वेच्छानुसार किसी भी दुकानदार से शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत कमीशन पर बिना टेन्डर आमन्त्रित किये हुए क्रय कर सकते हैं। किसी भी पुस्तक का स्वीकृत सूची में होना अनिवार्य नहीं है।

इस सराहनीय कदम से पुस्तक व्यवसाय की कितनी उलझने सुलझ जायेंगी यह किसी भी प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता से छिपा नहीं है। अतः हमें सामूहिक रूप से श्रीयुत् जोन साहब का आभार प्रदर्शन करना चाहिये कि उन्होंने एक बढ़ती हुई कुप्रथा को रोकना समय की मांग समझी। मुझे विश्वास है कि आज नहीं तो कल देश के अन्य प्रान्त भी इसका अनुकरण करेंगे।

अब तो बात केवल व्यवसायी बन्धुओं के नैतिक मनोबल से ही बनी रह सकेगी। इसके लिए सहअस्तित्व की भावना लेकर जीओ और जीने दो के सिद्धांत पर चलकर पुस्तक व्यवसायी कदम बढ़ायें तो निश्चित ही हम उन्नति करेंगे और सही अर्थों में राष्ट्रसेवी भी।

भवदीय
प्रकाश चन्द्र जोशी,
मैनेजिंग डॉयरेक्टर,
दत्त बंधु प्रा०, लि० अजमेर

सूचना सार

चौथी योजना में शिल्प-शिक्षा : पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने का सुझाव

केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री श्रीमोहम्मदअली करीमभाई चागला ने लोक सभा में बताया है कि शिल्प शिक्षा के केन्द्रीय विचारक वर्ग ने यह सुझाव दिया है कि शिल्प संस्थाओं को दृढ़ बनाना चाहिये और इनकी पढ़ाई के स्तर को ऊँचा किया जाना चाहिए। इस काम के लिए चौथी पंचवर्षीय योजना में शिक्षकों की ट्रेनिङ्ग, पाठ्यक्रमों में संशोधन, ट्रेनिङ्ग के काम के उपकरण आदि की सप्लाई, स्नातकोत्तर कक्षाओं और अनुसंधान की व्यवस्था और शिल्प विषयों की पाठ्य-पुस्तकों और अन्य मानक ग्रंथों का प्रकाशन किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालयों में हिन्दी

लोकसभा में शिक्षा-मंत्री श्री चागला ने श्री बागड़ी के प्रश्न पर बताया कि आगरा, इलाहाबाद, अलीगढ़, बनारस, भागलपुर, दिल्ली, गोरखपुर, गुजरात, इन्दिरा कला संगीत, जबलपुर, जोधपुर, कुरुक्षेत्र, लखनऊ, बड़ोदा का एम०एस० विश्वविद्यालय, मगध, नागपुर, उस्मानिया, पंजाब, पटना, राजस्थान, रांची, सरदार वल्लभभाई, सागर, महिलाओं का एस० एन०डी०टी०, उदयपुर, विहार, विक्रम, जीवाजी, रविशंकर, गुजरात विद्यापीठ गुरुकुल कांगड़ी, काशी विद्यापीठ और दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयों ने अंग्रेजी के साथ- साथ हिन्दी को भी शिक्षा व परीक्षा का माध्यम बनाया है। इन्दौर और उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय इस प्रश्न पर विचार कर रहे हैं।

शिक्षा-मंत्री ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ऐसा कोई निर्णय नहीं किया है कि विश्व-विद्यालयों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम न बनाया जाए।

विज्ञान छात्रवृत्ति के लिए चुनाव : अगली परीक्षा ३ जनवरी १९६५ को

वैज्ञानिक प्रतिभा को प्रोत्साहन देने के लिए सन् १९६२-६३ में दिल्ली में विज्ञान के तेज छात्रों के चुनाव की योजना शुरू की गयी थी, जिसे बाद में देश भर में प्रचलित कर दिया गया। इसके अन्तर्गत ३५४ छात्रों को वृत्ति और १८६ को योग्यता पत्र दिया गया।

चुनाव में हायर सेकेण्डरी की ११वीं कक्षा के वे छात्र शामिल किये जाते हैं, जिन्होंने वार्षिक परीक्षा में, विज्ञान के विषयों में ५५ प्रतिशत अंक पाये हों।

छात्रवृत्ति उन्हीं को दी जाती है, जो तीन साल की बी०एस-सी० या समकक्ष डिग्री पढ़ाई में भर्ती होते हैं। पहले वर्ष ५० रुपया महीना और अगले दो वर्षों में ७५ रुपया महीना वृत्ति दी जाती है। छात्रों के चुनाव के लिए राज्यों के हर जिले में परीक्षा केन्द्र खोला जाएगा। चुनाव परीक्षा में बैठने का आवेदनपत्र और अन्य सूचना भी देश के प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी से मिल सकेगा।

अगली प्रतियोगिता ३ जनवरी, १९६५ को होगी। आवेदनपत्र स्कूल के प्रिंसिपल के जरिए ३० सितम्बर, १९६४ तक सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी को पहुँच जाने चाहिए। छात्रों के सम्बन्ध में अध्यापकों की रिपोर्ट १५ दिसम्बर, १९६४ तक परीक्षा केन्द्र के सुपरिंटेंडेंट को पहुँच जानी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें संकलित

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्) की हिन्दी पाठ्य पुस्तक समिति द्वारा उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए 'काव्य-संकलन' नामक हिन्दी काव्य की पाठ्य पुस्तक संकलित की है। विभिन्न कक्षाओं में उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों की रचना करने की योजना के अन्तर्गत ही इस पुस्तक का संकलन और प्रकाशन हुआ है।

पुस्तक का मूल्य एक रुपया ८५ पैसे रखा गया है।

भारतीय भाषाओं के इतिहास हिन्दी में

भारत एक विशाल देश है। यहाँ अनेकों भाषाएं बोली, लिखी एवं पढ़ी जाती हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हम सब एक हैं, हमारा देश एक है, हमारी संस्कृति एक है। हमारे देश भारत में यहाँ अनेकता में भी एकता है।

इसी की जानकारी के लिए भारतीय भाषाओं के इतिहास, सरल, सुबोध एवं सारगर्भित भाषा में, लिखे गये हैं।

अभी तक निम्नलिखित पुस्तकें छप कर तैयार हैं—

१. तमिल साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Tamil Literature in Hindi)

३.००

प्रो० न. वी. राजगोपालन् एम. ए. (हिन्दी, तमिल)
बी. ओ. एल. व्याकरणशिरोमणि
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

२. कन्नड़ साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Kannad Literature in Hindi)

३.००

श्री सिद्धगोपाल शास्त्री
(अपने विषय का हिन्दी में पहला ग्रंथ)

३. गुजराती साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Gujrati Literature in Hindi)

२.५०

प्रो० सुरेश त्रिवेदी एम. ए., हिन्दी विभाग
सरदार वल्लभभाई विद्यापीठ, वल्लभ विद्यानगर तथा
प्रो० विष्णुप्रसाद जानी एम. ए.
एल. डी. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद

४. संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Sanskrit Literature in Hindi)

२.५०

श्री सत्यनारायण शास्त्री
(मध्य प्रदेश सरकार द्वारा हायर सैकण्ड्री के लिए स्वीकृत पुस्तक)

५. पंजाबी साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Punjabi Literature in Hindi)

३.००

श्री ज्ञानेन्द्र अग्रवाल एम. ए.
(हिन्दी भाषा में छपी अपने विषय की अनोखी पुस्तक)

६. हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास

(History of Hindi Literature in Hindi)

१.५०

श्री शिवराज वर्मा एम. ए.
(तीसरा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)

ये पुस्तकें भारतीय भाषाओं के साहित्य का सरल, सुबोध हिन्दी में ज्ञान कराने के उद्देश्य से लिखी गई हैं। वास्तव में विद्वान् लेखकों ने तो 'गागर में सागर' ही भर दिया है।

आप भी अपने निकटवर्ती पुस्तक विक्रेता से खरीदिये अन्यथा हमें लिखें:—

आशा प्रकाशन गृह

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

३, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली-५

हिन्दी साहित्य : १९६४

- 'हिन्दी प्रकाशक' सन् '६३ की भाँति सन् '६४ में भी वर्ष भर के प्रकाशित साहित्य का परिचय देने के लिए परिचय विशेषांक प्रकाशित करेगा।

- कितने ही प्रमुख प्रकाशकों की अब तक प्रकाशित पुस्तकें कार्यालय में पहुँच गई हैं, उनके परिचय लिखने का काम प्रारम्भ हो गया है।

- जिन बन्धुओं ने अभी तक अपनी पुस्तकें नहीं भेजीं वे जल्दी भेजें और प्रतिमास के प्रकाशन निरन्तर भेजते जायं।

- विशेषांक की सामग्री १५ दिसम्बर को प्रेस में चली जायगी और जनवरी मास में विशेषांक प्रकाशित हो जाएगा।

- सरकारी और शिक्षा संस्थाओं की खरीद आदि में '६३ के विशेषांक से पूरी सहायता ली गई है। '६४ का विशेषांक जनवरी में प्रकाशित होने के कारण इस दिशा में और भी महत्वपूर्ण सेवा करेगा।

—संपादक
'हिन्दी प्रकाशक'

अखिल भारत शिक्षा सेवा

शिक्षामंत्री श्री चागला ने राज्य सभा में बताया है कि पंजाब, मध्य-प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के अलावा, अन्य सभी राज्य सरकारों ने प्रस्तावित अखिल भारत शिक्षा सेवा में सिद्धांत रूप में शामिल होना स्वीकार कर लिया है। उपरोक्त चार राज्य सरकारों का अन्तिम निर्णय मिलने के बाद ही इस सेवा के गठन के बारे में आगे कारवाई की जाएगी।

पुस्तक-प्रकाशनार्थ भारत और रूस के शिक्षा-शास्त्रियों का संयुक्त आयोग

श्री एन० सी० शाह के प्रश्न के उत्तर में श्री चागला ने कहा कि रूस के उच्च शिक्षा के मंत्री की भारत-यात्रा और मेरी रूस-यात्रा के फलस्वरूप अब रूस की सरकार भारत के वैज्ञानिक और शिल्पिक शिक्षा-कार्यक्रमों में सहायता देने के प्रश्न पर विचार कर रही है। उन्होंने आगे बताया कि भारत के विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए रूसी पुस्तकों के पुन: प्रकाशन के लिए दोनों देशों के शिक्षा-शास्त्रियों का एक संयुक्त आयोग स्थापित किया जा रहा है।

नए नियुक्त प्राध्यापकों को लम्बा अवकाश नहीं मिलेगा

राज्य शिक्षा विभाग ने निर्णय किया है कि एम० एड० क्लास या अन्य उच्चतर शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के इच्छुक २००–५०० या १८०–४०० के ग्रेड में कार्य कर रहे सरकारी हायर सैकंडरी स्कूलों के नव नियुक्त प्राध्यापकों को लम्बा अवकाश नहीं मिलेगा। जिला एवं क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारियों को ये हिदायत की गई हैं कि वे छुट्टी के ऐसे केसों की सिफारिश निदेशालय को न करें जिनसे अध्यापन कार्य की क्षति होती हो।

पंजाब में गणित के अध्यापकों की कमी

राज्य शिक्षा विभाग ने अपने क्षेत्रीय अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि उन सब अध्यापक और अध्यापिकाओं को हायर सैकंडरी स्कूलों में नियुक्त कर दिया जाए जिन्होंने संघनित पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। गणितज्ञ अध्यापकों का बहुत अभाव है और कई स्कूलों में इस विषय के अध्यापन की समुचित व्यवस्था नहीं है। कहा गया है कि जिन अध्यापकों ने संघनित पाठ्क्रम का प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उनकी सेवाओं का लाभ मिडिल कक्षाओं के लिए न उठाया जाय।

शिक्षा आयोग का समारंभ

केन्द्रीय शिक्षामंत्री श्री चागला ने २ अक्तूबर को शिक्षा आयोग का समारंभ किया है। यह आयोग देश की शिक्षा-प्रणाली की व्यापक पड़ताल करने और उसके पुन: संगठन के लिए सुझाव देने को नियुक्त किया गया है। आयोग से अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस और जापान के प्रमुख वैज्ञानिक और शिक्षाविद भी संबद्ध हैं। आशा है कि मार्च १९६६ तक आयोग अपनी अंतिम रिपोर्ट सरकार को दे देगा।

शिक्षा प्रसार के लिए पुस्तकें भेजने की तिथि

शिक्षा प्रसाराधिकारी उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद अपनी विज्ञप्ति संख्या सा-शि-१६०१/४७-३ (३०)-६४-६५ दिनांक ५ सितम्बर, ६४ द्वार सूचित करते हैं इस वर्ष की खरीद हेतु प्रकाशक, लेखक अपनी पुस्तकें १५ अक्तूबर तक चयनार्थ भेज दें। जो पुस्तकें १९६२ में या इसके उपरान्त प्रकाशित हुई हैं, उन्हीं पर विचार किया जायगा। प्रत्येक पुस्तक की नौ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

जोधपुर में अ० भा० हिन्दी प्रदर्शनी

किताब-घर जोधपुर से प्रदर्शनी के संयोजक श्री रामदत्त थानवी लिखते हैं :

प्रिय प्रकाशक बन्धु,

आप ही के सहयोग से हम जोधपुर में 'अखिल भारतीय हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी' के आठ अधिवेशन सफलता पूर्वक आयोजित कर चुके हैं और अब १४ नवम्बर १९६४ से २२ नवम्बर तक राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के सुअवसर पर नवमां अधिवेशन करने जा रहे हैं।

आप कृपया अपना प्रकाशन ७ नवम्बर १९६४ तक जोधपुर Paid पार्सल द्वारा अवश्य भिजवा दीजियेगा ताकि आसानी से हम उनका प्रदर्शन कर सकें, बिकी पुस्तकों का मूल्य तथा बची पुस्तकें To pay पार्सल से लौटा दी जायँगी। आशा है आप अपना माल प्रदर्शनार्थ जल्दी ही भेजने की व्यवस्था कर हमें अपना सहयोग प्रदान करते हुए कृतार्थ करेंगे।

प्रौढ़ साक्षरता के शिक्षकों के लिए सहायक पुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने प्रौढ़साक्षरता के शिक्षकों के लिए एक 'सहायक पुस्तक' का प्रकाशन किया है। इसमें प्रौढ़-शिक्षा के जाने-माने कुछ विद्वानों की वार्ताएँ संकलित हैं। पुस्तक का मूल्य १ रु० ४५ पैसे रखा गया है।

उदयाचल की नई व्यवस्था

दिनकर-साहित्य के प्रकाशक और विक्रेता 'उदयाचल' की नई व्यवस्था १ सितम्बर, १९६४ ई० से चालू हो गई है। श्री रामधारी सिंह दिनकर के कनिष्ठ पुत्र, श्री केदारनाथ सिंह रजिस्टर्ड लिखा-पढ़ी द्वारा इस प्रतिष्ठान के एकमात्र स्वत्वाधिकारी हुए हैं।

केदार बाबू व्यापार-कुशल और उत्साही युवक हैं और आशा की जाती है कि अपने यशस्वी पिता की देख-रेख में वे प्रकाशन का काम सुचारु रूप से करके हिंदी साहित्य की गौरव-वृद्धि करेंगे।

कुंजरू समिति का प्रतिवेदन

शिक्षा उपमंत्री, श्री भक्त दर्शन ने बताया है कि कुंजरू समिति ने मुख्य रूप से व्यायाम शिक्षा, सहायक छात्र, सैनिक दल और राष्ट्रीय अनुशासन योजना को स्कूल स्तर पर शिक्षा प्रणाली के एक अभिन्न अंग के रूप में अपनाने के लिए एक कार्यक्रम की सिफारिश की थी। सरकार ने इस सिफारिश को मान लिया है। कार्यक्रम के ब्यौरे तैयार करने के लिए सरकार द्वारा स्थापित विशेषज्ञ समिति ने अपनी सिफारिशें अभी हाल ही में पेश की हैं। इन पर सरकार विचार कर रही है।

बुनियादी शिक्षा का विस्तार

शिक्षा मंत्री, श्री चागला ने आज राज्यसभा में एक वक्तव्य में बताया कि आरम्भिक और बुनियादी शिक्षा को बढ़ाने तथा उसमें आने वाली दिक्कतों को दूर करने का मुख्य जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है। केन्द्रीय सरकार उनकी योजनाओं की जांच करती है और आर्थिक सहायता देती है। इस सिलसिले में शिक्षा मंत्रालय के आरम्भिक और बुनियादी शिक्षा विभाग ने अच्छी पाठ्य पुस्तकें छापने के लिए कागज देने और सभी भाषाओं में बाल-साहित्य तैयार करने के लिए प्रतियोगिता करने की दिशा में भी कदम उठाये हैं।

सुबह के भूले का अभिनय

कानपुर के विख्यात साहित्यकार प्रो० प्रकाशचन्द्र जैन द्वारा लिखित नाटक, 'सुबह के भूले' का श्री दिगंबर जैन नव युवक संघ द्वारा सफल अभिनय हुआ। निर्देशन स्वयं लेखक ने किया था। दर्शकों ने कृति एवं अभिनय की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

भूल-सुधार

सितम्बर के 'हिंदी प्रकाशक' में आवरण के दूसरे पृष्ठ पर स्टार बुक सेंटर दिल्ली का विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। उसमें गुलशन नंदा लिखित पाकेट बुक का नाम **गोलाई** छप गया है—वह वस्तुतः '**गेलार्ड**' है। भूल के लिए हमें खेद है। —सं०

श्रद्धेय मामा वरेरकर तथा मुक्तिबोध के प्रति

'हिन्दी प्रकाशक' परिवार—

मां सरस्वती के ज्ञान भंडार में,

गुलाबी बचपन से अनवरत,

श्रद्धा का अर्घ्य अर्पित करने वाले,

उन दो महान् साहित्य-तपस्वियों को,

विनीत श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

गोमती के तट पर	भगवती प्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्त सिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक-एकांकी-साहित्य

शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	"	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डा० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रत्नलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०

काव्य-साहित्य

प्रतिपदा	कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभान	१.७५
कुरुक्षेत्र हिमालय	आनन्द	२.५०

विभिन्न साहित्य

मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
जय भारत विशाल	राजेन्द्र शर्मा	२.००
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय	बालकृष्ण मुस्तर	१०.००
भारत-दर्शन	"	५.००
पंजाब-जन-जीवन और साहित्य		५.००
इंग्लैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००

आलोचना तथा हिन्दी साहित्य

विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	"	६.५०
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डा० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसाद सिंह	"	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	"	२.५०
शुक्ल एक समीक्षा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
सूर सरोवर	डा० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम तथा शास्त्रीय संगीत	डा० इन्द्रनाथ मदान	२.५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

धरती की पूजा	दुर्गादत्त शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	"	१.२५
हम आजाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूं	रामावतार त्यागी	१.००
ईसप की नीति कथाएं १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएं २	"	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.००
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
रामराज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
ईशोपनिषद्	गोपालजी	०.६०
उपनिषद्	"	१.५०
मनोवैज्ञानिक कहानियाँ	(पंजाबी)	१.२५
हैंडफुल आफ स्टोरीज़	(अंग्रेजी)	२.५०

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

टेलीफोन : २१२२९२

- हमने टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल व एग्रीकल्चरल-सम्बन्धी लगभग २५० प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हमारा अनुभव है कि इस आधुनिक युग में ऐसी पुस्तकों की बिक्री बहुत है।
- हमारी इन पुस्तकों के बिना आपकी दूकान व लाइब्रेरी अधूरी है।
- आप अन्य प्रकाशकों का माल बेचने की बजाय हमारा माल बेचने में अधिक लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि हमारी पुस्तकों पर अच्छा कमीशन मिलता है और काफ़ी सेल बोनस भी। हमारे रेट एक हैं। पक्के माल के अतिरिक्त हमने कच्चे मेल की हजारों पुस्तकें छापी हैं।
- क्या आपको देहाती सेल बोनस योजना के सम्बन्ध में जानकारी मिल चुकी है? इस योजना से गत तीन वर्ष में भारत के हजारों पुस्तक-विक्रेता लाभ उठा रहे हैं। आप भी एक पत्र लिखकर योजना के नियम मँगाइए।

आप शहर में रहते हों या गाँव में

हमारी प्रकाशित पुस्तकें छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धन्धों से लेकर बड़ी-बड़ी वर्कशापों तक में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। हमने उपयोगी और सस्ते साहित्य का प्रकाशन किया है, जिससे देश के ४५ करोड़ ग्रामवासियों को मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त हुआ है। इन पुस्तकों के साथ-साथ उच्चकोटि का साहित्य भी आपको हमारे पुस्तक-भण्डार में मिल सकता है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, टैक्निकल आदि जिस विषय की पुस्तकों की जरूरत हो, उसी विषय का सूचीपत्र केवल २५ नये पैसे के टिकट लिफाफे में भेजकर मंगावें।

१. टैक्निकल व इण्डस्ट्रियल, कला-कौशल सम्बन्धी साहित्य।

२. धार्मिक, पौराणिक, आर्यसमाजी, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक, जीवन-चरित्र, बालोपयोगी तथा स्त्रियोपयोगी।

३. उपन्यास, किस्से-कहानी, चरित्र-निर्माण।

४. खेती-बाड़ी, कृषि-सम्बन्धी तथा ग्राम-सुधार की पुस्तकें।

५. वैद्यक, ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा यूनानी-चिकित्सा सम्बन्धी।

६. म्यूजिक, संगीत तथा गायन-विद्या की पुस्तकें। ७. नाटक, ड्रामे

उपरोक्त सात प्रकार के सूचीपत्र, जो कि लगभग ४०० पृष्ठों में ५००० (पाँच हजार) से अधिक पुस्तकों का विवरण लिये हुए हैं। केवल एक रुपये के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये।

मल्टीपरपज़ शालाओं, समाज तथा विकास शिक्षा-केन्द्रों, ग्राम-पंचायतों, स्कूलों, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, विद्यालयों, गवर्नमेंट टैक्निकल और एग्रीकलचरल इंस्टीट्यूशन्ज, कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स, बेसिक ट्रेनिंग सेंटर्स तथा अधिकांश सरकारी, अर्द्ध सरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला, बाल, युवा एवं प्रौढ़ोपयोगी साहित्य

लाइब्रेरियों के लिए हमारे पास हिन्दुस्तान भर के समस्त प्रकाशकों के बहुत से नवीन उपन्यास व पुस्तकें विक्रयार्थ मौजूद हैं और इनके आपके हाथ में पहुँचते-पहुँचते और भी कितनी ही नई पुस्तकें आ जायेंगी। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हिन्दी की किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ने पर पहले हमें लिखें। यदि आपकी मांगी पुस्तकें हमारे पास तैयार न भी होंगी तो भी यथासाध्य हम भेजने की चेष्टा करेंगे। यदि किसी प्रकार न भेज सकेंगे तो तुरन्त आपको उचित उत्तर से सूचित करेंगे। हमारे द्वारा आप को सभी पुस्तकें सुभीते के साथ मिल सकेंगी। लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं, पब्लिक संस्थाओं, क्लबों, समाजों व सभाओं आदि को भरपूर कमीशन दिया जाता है।

हिन्दी पुस्तकों का बृहद भण्डार

भारत की राजधानी दिल्ली में पुस्तकों की सबसे बड़ी दूकान

हमारी प्रकाशित टैक्निकल, इण्डस्ट्रियल, कृषि-सम्बन्धी, स्त्रियोपयोगी, धार्मिक, आर्यसमाजी तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत-भर के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ ग्रामोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज शिक्षण, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्कशास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म-साहित्य और ज्योतिष-सम्बन्धी जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजा-पाठ, बालकोपयोगी और स्त्रियोपयोगी आदि आकर्षक पुस्तकें और नये वर्ष के पंचांग, डायरियाँ, कैलेण्डर इत्यादि मिलते हैं।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

दिल्ली के प्रमुख बाज़ार खारीबावली में हमने अपना सोल एजेण्ट हिन्द पुस्तक भवन तिलक बाज़ार को नियुक्त किया है। हमारी सभी पुस्तकें वहाँ हमारे ही भाव पर प्राप्त हो सकती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं २६-ए, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २ नवम्बर १९६४ अंक १२

नगेन्द्र-साहित्य

इसी मास प्रकाशित हो रहा है—

रस-सिद्धांत

२०.००

मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र का बहुप्रतीक्षित प्रामाणिक ग्रंथ। हिन्दी-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि।

भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा

२०.००

डा० नगेन्द्र के इस महत्वपूर्ण बहुप्रतीक्षित ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित, सम्वर्द्धित संस्करण प्रकाशित हो गया है।

पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों और फुटकर ग्राहकों को विशेष सुविधाएँ संबंधी महत्वपूर्ण घोषणा अन्दर पढ़िये।

- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका १२.५०
- देव और उनकी कविता ७.००
- रीतिकाव्य की भूमिका ५.५०
- विचार और विश्लेषण ५.५०
- सियारामशरण गुप्त ५.५०
- विचार और अनुभूति ४.५०
- विचार और विवेचन ४.५०
- अनुसंधान और आलोचना ४.००
- आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ ४.००
- कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ ३.००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष २, अंक १२ राष्ट्रीय पुस्तक-समारोह अंक, नवम्बर, १९६४ मूल्य, वार्षिक ३.००

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह

'हिन्दी प्रकाशक' के पाठकों को दीपावली की बधाई के साथ राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के श्रीगणेश की सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है। आशा है कि जिस उत्साह के साथ आपने दीपावली के महोत्सव में भाग लिया है, उससे दुगुना-तिगुना उत्साह इस समारोह को अर्पित करेंगे और इसे प्रत्येक प्रकार से सफल बना देंगे।

दीपावली का प्रारंभ पहले खेत में पकी हुई पहली फसल के स्वर्णिम रूप को देखने वाले पहले किसान ने किया था। वाणिज्य की वृद्धि के साथ इसे व्यापारी वर्ग ने भी अपनाया और इसे आर्थिक लेखे-जोखे पर दृष्टिपात करने का दिन भी बना लिया। व्यक्तिगत आय-व्यय का ब्यौरा बनाने के साथ-साथ इस दिन अर्थशास्त्र के इस सिद्धांत को भी सामने रखा जाता था कि धन का वितरण प्रत्येक स्तर तक पहुँचता रहे, जिससे समाज स्वस्थ और सबल रहे; कहीं ऐसा न हो कि वह किसी जगह रुक जाय, जमा हो जाय और दूसरी जगह उसके अभाव में सूख कर मुर्झा जाय।

आज यूरोप और अमरीका में और रूस में स्थिति चाहे जो हो, एशिया के विभिन्न देशों में विभिन्न शासन तंत्रों की उपस्थिति दीख पड़ती है परंतु यह बात सब में समान रूप से एक जैसी पायी जाती है कि आय के बड़े-बड़े साधन कुछ गिने-चुने आदमियों के हाथ सिमट गये हैं परिणाम स्वरूप कुछ लोग तो रातोरात करोड़पति बन गये हैं परन्तु निर्धनों की संख्या उसी अनुपात से बढ़ गई है और मध्यम वर्ग तेज प्रवाह के कारण पैर टिकाने में असमर्थ हो रहा है। नये करोड़पतियों ने रहन-सहन के उँचे मानदण्ड की जो आँधी चलाई है और धन की सर्वग्रासी क्षुधा ने मँहगाई आदि की जो लीला आरंभ की है उसका एक भी प्रबल झोंका और आ गया तो यह मध्यम वर्ग सफये हस्ती से हर्फे गलत की तरह मिट जायेगा।

भारत एशिया से पृथक नहीं है फलतः धन के वितरण की यह औंधी व्यवस्था यहाँ भी अपने पैर फैला रही है। और इसका प्रभाव अन्यान्य स्थानों की भाँति यहाँ के पुस्तक व्यवसाय पर भी पड़ रहा है। इसलिए पड़ रहा है कि जिसने रुपया बनाने की उल्टी-सीधी कला हस्तगत कर ली है और उसमें सिद्ध भी हो गया है उसके लिए संसार का शेष ज्ञान-विज्ञान निरर्थक है—वह और सब कुछ करता है परंतु पुस्तकें नहीं पढ़ता। फैशन के लिए ड्राइंग रूप में कुछ पुस्तकें रखने का रिवाज कहीं-कहीं देखा जाता है परंतु ओस चाटने से किसी की प्यास आज तक नहीं बुझी। दूसरी ओर जो निर्धन है वह पुस्तक का महत्व नहीं जानता, जनता है, तो उसे उपलब्ध नहीं कर सकता या रोजी-रोटी की मार से थक कर ऐसा चूर हो जाता है कि घर पहुँचते ही सो जाता है। पुस्तकों के साथ उस मध्यम वर्ग का ही सीधा संबंध है जो बुद्धिजीवी है और समाज का मेरुदण्ड माना जाता है। संसार की समस्त

क्रांतियों को जन्म देने वाला यही वर्ग पुस्तकों का सृष्टा और पाठक रहा है। निर्दय प्रहारों के कारण आज यह छटपटा रहा है। इसीलिए साहित्य के संसार में एक प्रकार का 'डेडलाक' दीख पड़ता है और पुस्तकों की दुनिया में अमावस्या नहीं तो कृष्णपक्ष की द्वादशी या त्रयोदशी का राज्य है।

किसी भी परिस्थिति से भयभीत होकर पराजय स्वीकार करना कायरता की निशानी है; ज्ञान-विज्ञान की अखण्ड ज्योति को निरन्तर अग्रसर रखने के पवित्र व्यवसाय में संलग्न रहने वालों के लिए तो यह और भी अधिक लज्जा की बात हो जायगी। जो मिट्टी सामने है उसीसे महादेव बनाने का काम उनको करना ही है। किसी ने कहा भी है :

लोग कहते हैं ज़माना है बदलता अक्सर
मर्द वो हैं जो ज़माने को बदल देते हैं।

इसीलिए राष्ट्रीय पुस्तक समारोह में जहाँ दुकानों को सजाने और प्रदर्शनी का आयोजन करने का परामर्श दिया गया है वहीं ऐसी गोष्ठी करने का अनुरोध भी किया गया है जिसमें इस विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया जाय कि लोग पुस्तकें कम क्यों पढ़ते हैं। दुकानों की सजावट और प्रदर्शनी आदि से जहाँ आप समर्थों के साथ-साथ पुस्तकें जिनके लिये आज भी अनिवार्य हैं उनको आकर्षित कर सकेंगे वहीं गोष्ठी के विचार द्वारा आज की परिस्थिति को भी दीपावली की भाँति आलोकित करने के मार्ग ढूंढ सकेंगे। पुस्तकालयों और पाठकों के दृष्टिकोण समझकर पुस्तकों में या उनकी प्रसारण प्रणाली में कोई त्रुटि होगी तो उसे दूर कर सकेंगे और अपने आप को प्रत्येक प्रकार से सन्नद्ध करके उस परिस्थिति तो पलट देंगे जो शंका का कारण बन रही है।

दिल्ली में समारोह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी और गोष्ठी की व्यवस्था हो गई है। विश्वास है कि पुस्तक व्यवसाय का प्रत्येक केन्द्र इसी प्रकार आगे बढ़ेगा और अगले वर्ष में इस मशाल का प्रकाश दूर दीहातों में भी पहुँच जायगा।

यूनेस्को के बुक प्रमोशन विशेषज्ञ दिल्ली में

यूनेस्को रीजनल सैंटर, करांची के बुक प्रमोशन एक्सपर्ट मि० विल जैचो से वार्तालाप हेतु एक गोष्ठी अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के कार्यालय में आयोजित की गई। गोष्ठी में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे :

सर्व श्री ओम्प्रकाश, दीनानाथ मल्होत्रा, विश्वनाथ, कन्हैयालाल मलिक, सुरेन्द्रकुमार मलिक, अमरनाथ, शांतिलाल जैन, किशोर गर्ग, जवाहर चौधरी एवं श्री संतराम विचित्र। मि० जैचो ने भारत में पुस्तक-प्रवर्तन को बढ़ावा देने के लिये पुस्तकों के यथोचित वितरण पर ज़ोर दिया। उन्होंने सुझाया कि प्रकाशकों को सम्मिलित रूप से अपने प्रकाशनों के वितरण की व्यवस्था करनी चाहिए। इसके लिये वे अपने कोआपरेटिव बना सकते हैं।

भारत के निर्माता एवं प्रेरणा स्रोत स्व० श्री नेहरू की ७५वीं पुण्य-जयंती पर १४ नवम्बर १९६४ को 'मण्डल' का अप्रतिम प्रकाशन

नेहरू : व्यक्तित्व और विचार

संपादक-मंडल

बनारसीदास चतुर्वेदी	हरिभाऊ उपाध्याय
श्रीमन्नारायण	यशपाल जैन

- इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के प्रथम खण्ड में देश विदेश के नेताओं, साहित्यिकों तथा विख्यात विद्वानों के लिखे हुए प्रेरणादायक संस्मरण हैं।
- इसके द्वितीय खण्ड में १९१२ से १९६४ तक के विकास कार्यों की झांकियां प्रस्तुत करने वाले लेखों, पत्रों एवं ऐतिहासिक भाषणों का, जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुए, संकलन है।
- लगभग १५० दुर्लभ चित्रों से समन्वित।
- डबल क्राउन अठपेजी ६०० पृष्ठ, सुन्दर छपाई, आकर्षक आवरण, पक्की जिल्द **मूल्य : २५ रुपये**

१५ नवम्बर १९३४ तक १० या उससे अधिक प्रतियों का आर्डर भेजने वालों को रेल भाड़ा सहित ३३१/३ प्रतिशत की सुविधा दी जायगी।

एक प्रति मंगाने वालों को केवल डाक-व्यय की सुविधा दी जायगी।

आगामी प्रकाशन

सहकारिता	—जवाहरलाल नेहरू	**रचनात्मक राजनीति**	—सं० रामकृष्ण बजाज
महात्मा गांधी	—बी० आर० नंदा	**अहिंसा की कहानी**	—यशपाल जैन
शिक्षा का विकास	—भगवान प्रसाद	**पत्र व्यवहार भाग ५**	—सं० रामकृष्ण बजाज
प्रेम प्रपंच	—तुर्गनेव	**बेकार कुछ नहीं**	—अमरनाथ राय

- **आर्डर के साथ १० रुपये अग्रिम भेजने की कृपा करें।**
- **अपना नजदीकी रेलवे स्टेशन अवश्य लिखें।**

सस्ता साहित्य मण्डल

प्रधान कार्यालय कनॉट सर्कस नई दिल्ली	सस्ता साहित्य मण्डल	शाखा कार्यालय जीरो रोड इलाहाबाद

भाषा, लेखक और पुस्तक

—जवाहरलाल नेहरू

स्व० नेहरूजी के २५ जुलाई १९३७ को लिखे निम्नांकित अवतरण आज भी उतने ही प्रेरणापद हैं। आशा है कि जवाहर जयन्ती के अवसर पर इन पर गंभीरता पूर्वक विचार किया जायगा।

जो लोग भाषा को संस्कृति की मूर्ति, काल्पनिक विचारों को शब्द और वाक्यों में बाँध लेने वाली, विचारों को पारदर्शी कर देनेवाली, अर्थों के सुन्दर प्रकार करने वाली, संगीत और लय से पूर्ण, अपने शब्दों के आर्कषक इतिहास वाली तथा जीवन के हर पहलू का चित्र समझ कर प्रेम करते हैं वह इसके संबंध में उठे बाज़ारू तर्कों पर आश्चर्य प्रकट करके उस विवाद से दूर रहना ही पसन्द करते हैं।

एक जीवित भाषा स्फूर्तिदायक, सदैव परिवर्तनशील, प्रगतिशील तथा उसे लिखने-बोलने वाले व्यक्तियों के लिए दर्पण के समान है। उसका ढाँचा थोड़े से व्यक्तियों की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है परंतु उसकी जड़ जनता में रहती है। जनशिक्षा से, जनप्रचार से, समाचार पत्रों के द्वारा, पुस्तकों, सिनेमा और रेडियो से भाषा में पुराने ज़माने की तुलना में आज जल्दी परिवर्तन किये जा सकते हैं। लेकिन एक भाषा में जनस्पर्श नहीं है तो वह अपनी शक्ति खो देती है और एक कृत्रिम जीवनहीन चीज़ बन जाती है—वह जीवन की शक्ति, आनन्द और बल नहीं रहती। एक विशेष दिशा की ओर भाषा की प्रगति पर ज़ोर देने का अर्थ उसकी आत्मा और उसके सौंदर्य को नष्ट कर देना हो जायगा।

बहुत-से नासमझ लोग यह आवाज़ लगाते हैं कि भारत में सैकड़ों भाषाएँ हैं, यहाँ पर ज़बानों का ठिकाना नहीं। भारत पर एक निगाह डालकर देखने से पता चलता है कि विशाल देश होते हुए भी इसमें चन्द भाषाएँ ही बोली जाती हैं, वह भी एक दूसरी से मिली हुई हैं। भारत में एक ऐसी बहुत बोली जानेवाली भाषा भी है जिसे करोड़ों व्यक्ति समझते हैं।

प्रांतीय भाषाओं के प्रभाव को ज़रा भी कम किये बिना भारत भर के लिए आपसी विचार विनिमय के लिए एक आम माध्यम आवश्यक है। कुछ लोगों का विचार है कि अंग्रेजी यह काम दे सकती है, कुछ हद तक उसने बड़े आदमियों वगैरह में कुछ काम दिया भी है। किन्तु जनता के दृष्टिकोण से यह नितांत असंभव है। हम करोड़ों व्यक्तियों को मात्र विदेशी बोली से ही शिक्षित नहीं कर सकते। अनिवार्य रूप से अंग्रेजी हम लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण भाषा रहेगी। क्योंकि इतने दिनों तक हमारा उसका साथ रहा है, दूसरे इन दिनों उसका संसार में महत्व भी बहुत है। विदेशों से वार्तालाप करने के लिए यह एक मुख्य भाषा रहेगी किन्तु मुझे आशा है कि इस काम के लिए अकेली यही भाषा न रह जायेगी। मेरे ख्याल से हमें अन्य विदेशी भाषाओं का ज्ञान करना चाहिये जैसे फ्रेंच, जर्मन, रशन, स्पेनिश, इटालियन, चीनी तथा जापानी। अंग्रेजी कभी भी करोड़ों व्यक्तियों की अखिल भारतीय भाषा नहीं बन सकती।

बहुत-सी भाषा सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने के लिए लेटिन लिपि की वकालत की गई है। जल्दी काम करने की दृष्टि से यह बेहतर है लेकिन मेरा ख्याल है कि लेटिन लिपि के लिए ज़रा-सा भी मौका नहीं है। भावना की दीवाल है जो इस बात से और मजबूत हो गई है कि लेटिन लिपि हमारे विदेशी शासकों की है किन्तु उसको अस्वीकार करने के और भी ठोस कारण हैं। लिपियाँ हमारी संस्कृति का अनिवार्य भाग हैं; उनके बिना हम अपनी प्राचीन परम्परा से बिल्कुल अलग हो जायेंगे।

हाँ, यह सम्भव है कि हम अपनी लिपियों में थोड़ा-बहुत सुधार कर लें। बंगाली, मराठी और गुजराती लिपियाँ देवनागरी वे मिलती-जुलती हैं। यह बहुत आसान बात है कि इन चारों भाषाओं की एक लिपि बना ली जाय। यह आवश्यक नहीं है कि वह वर्तमान देवनागरी ही हो, उसमें कुछ परिवर्तन किया जा सकता है। फिर ये चारों भाषाएँ बहुत निकट आ जायंगी।

यदि आवश्यकता हो तो एक दक्षिणी लिपि भी रखी जा सकती है परन्तु किसी भी लिपि को दबाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। जब तक कि सब की सलाह से दक्षिणी भाषाओं को किसी उत्तरी लिपि में फिट न कर लिया जाय। वह उत्तरी लिपि हिन्दी अथवा कुछ परिवर्तित रूप में हिन्दी ही हो सकती है।

हिन्दी और उर्दू का आधार, व्याकरण और आम शब्दों का कोष समान है। वास्तव में यह दोनों मूल में एक ही भाषा हैं। १८५७ के गदर तक सिर्फ लिपि को छोड़ कर उर्दू का अर्थ हिन्दी होता था। मुसलमान जो उर्दू में लिखते थे अपनी भाषा को हिन्दी ही कहते थे। १९वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिन्दी उर्दू का प्रयोग भिन्न भाषाओं के लिए किया जाने लगा और अलगाव बढ़ने लगा। अब उर्दू शहरों की भाषा है और हिन्दी गाँव की। हिन्दी शहरों में भी बोली जाती है किन्तु उर्दू तो केवल शहरों में ही सुनी जाती है।

घरेलू बोलचाल में हिन्दी उर्दू में इतना अंतर नहीं है जितना पिछले वर्षों में साहित्यिक भाषाओं में हो गया है। यह अन्तर स्वस्थ विकास का चिह्न है। दोनों नवीन विचारों के प्रदर्शन के लिए संघर्ष कर रही हैं। इसके लिए दोनों का शब्दकोष निर्धन है किन्तु दोनों का स्रोत काफी सम्पत्तिशाली है। एक का स्रोत संस्कृत है और दूसरी का फारसी। इसलिए दोनों के बीच की खाई चौड़ी होती चली गई।

मैं तो यह चाहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू विदेशी भाषाओं के शब्द और विचार भी अपना लें और उन्हें ग्रहण कर लें। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दी और उर्दू भिन्न वस्त्र पहने हुए भी एक दूसरे के निकट होती जायेंगी। इसलिये हमें हिन्दी और उर्दू के पृथक-पृथक विकास को संदेह की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। इस वक्त हम इस अलगाव को बरदाश्त कर रहे हैं ताहम वह एकता के लिए ही झेला जा रहा है।

इस एकता का आधार क्या होगा? निश्चय जनता ही इसका आधार है। आज के बहुत-से झगड़े जनसाधारण से दूर कृत्रिम साहित्यिक भाषा होने के कारण हैं। जब लेखक लिखते हैं तो किसके लिए लिखते हैं? हर एक लेखक के सामने ज्ञान या अज्ञान में श्रोता समाज होता है जिसे अपने मत का कर लेने के लिए वह लिखता है। भारी निरक्षरता के कारण अपने देश में वह श्रोता समाज परिमित संख्या में है पर दिनोंदिन वह शीघ्रता से बढ़ रहा है। मैं इस मामले में पारंगत नहीं पर मेरा विचार है कि आज का हिन्दी या उर्दू का औसत लेखक उस छोटे-से श्रोता समाज का लाभ भी नहीं उठाता। वह सिर्फ उस छोटे-से साहित्यिक मंडल के लिए लिखता है जो उसकी वाह वाह करने आते हैं। इसीलिए उसकी भाषा जन-साधारण की नहीं हो पाती—लेखक का शब्द और स्वर जन-समूह तक नहीं पहुँचता, यदि पहुँचता भी है तो उसे समझा नही जाता। यह क्या आश्चर्य की बात नहीं कि हिन्दी और उर्दू की पुस्तकों की बिक्री बहुत कम होती है? हिन्दी और उर्दू के समाचार पत्र भी अधिक विशाल जन-साधारण तक नहीं पहुँचते! क्योंकि उनमें भी वही साहित्यिक भाषा होती है।

इसलिए लेखकों को श्रोताओं और ग्राहकों की व्यापकता का ध्यान करके लिखना चाहिए। यह अपने आप भाषा को सरल बना देगा। लच्छेदार और सुन्दर शब्दावली की जगह, जो भाषा की अवनति कर देती है, दृढ़ और मजबूत शब्द आ जायेंगे। अभी तक हमारे दिमागों से यह बात दूर नहीं हो पाई कि सांस्कृतिक प्रगति दरबारों से ही होती है। यदि हम इसी प्रकार समझते रहेंगे तो उसी सीमित दायरे में पड़े रहेंगे और जनता के दिल तथा दमाग तक कभी न पहुँच पायेंगे। संस्कृति का आधार जनसाधारण होना चाहिए, भाषा जो संस्कार का एक अंग है कैसे इस आधार पर न रहेगी?

जनसाधारण के सम्पर्क का यह रूप सादे शब्दों और वाक्यों का ही प्रश्न नहीं है। इसमें विचार भी आ जाते हैं और उन शब्दों और वाक्यों के भीतर क्या है यह भी। भाषा को, जिसके द्वारा जनसाधारण से अपील की जाती है, उन्हीं की समस्याओं, उनके दुख-सुख, उनकी आशा-निराशा का वर्णन करना चाहिए, उसे समस्त जनता का प्रतिनिधित्व करना चाहिए तथा उसका दर्पण बन जाना चाहिए न कि यह कि वह कुछ व्यक्तियों या दल का ही प्रतिनिधित्व करे। तभी उसकी जड़ें भूमि में जायेंगी और उसे खाद्य प्राप्त होगा।

मैं जानता हूं कि भारत की सभी भाषाओं में यह विचार प्रबल हो रहा है और सब जनता की ओर देखने लगी हैं। इस क्रम में और भी तेजी आनी चाहिए और हमारे लेखकों को इसे विशेष रूप से उत्साहित करना चाहिए।

श्री दिनकर कृत नवीन पुस्तकें

[अपना आर्डर नीचे दिए पते पर भेजें]

आत्मा की आँखें

मूल्य : ४.००

डी० एच० लारेन्स की कविताओं पर आधारित ये कविताएँ अत्यन्त महीन और विचारपूर्ण हैं। ये अनुवाद नहीं, मौलिक कृतियाँ हैं, जो काव्य-प्रेमियों को अपूर्व संतोष देती हैं।

कोयला और कवित्व

मूल्य : ३.५०

दिनकरजी की नवीन कविताओं का संग्रह। कविताएँ वैसे तो पुरानी शैली की हैं जिसके, दिनकरजी आचार्य हैं, किन्तु, अनेक कविताएँ ऐसी भी हैं जिनमें नवीनता की भंगिमा स्पष्ट है। यह संग्रह दिनकरकाव्य में एक नयी कड़ी जोड़ता है।

मृति-तिलक

मूल्य : २.००

स्फुट कविताओं से सजाई मंजूषा।

दिनकर की सूक्तियाँ

मूल्य : २.५०

दिनकरजी की सम्पूर्ण काव्य-कृतियों से चुनी, विभिन्न विषयों पर उत्तम पंक्तियों का संकलन

वृहत सूचीपत्र मँगवा कर अनुगृहीत करें।

हमारा नया पता :

उ द या च ल

१४, राजेन्द्रनगर मार्केट, पटना-४

विक्रेता वार्ता

विक्रेता और लेखक का सहयोग पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के उपाय

श्री पॉल स्मिथ

अमरीका के विख्यात पुस्तक-विक्रेता श्री पॉल स्मिथ ने इस रोचक और उपयोगी लेख में बताया है कि लेखक, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता एक जंजीर में बंधे हुए तीन कुत्ते प्रतीत होते हैं जो परस्पर गुर्राते रहते हैं परंतु वे एक त्रिभुज के तीन ऐसे कोण हैं जो दूसरे कोण की अवहेलना नहीं कर सकते ।

आप ने कहा है कि लेखकों और पुस्तक विक्रेताओं के सहयोग से पुस्तकों की बिक्री बढ़ सकती है परन्तु उसके लिए लेखक सेल्समैन न बन जाय; वह सिर्फ ......

आपके विचार थोड़े हेर-फेर के साथ उन सब स्थानों के लिए उपयोगी हैं जहाँ पुस्तकें लिखी और बेची जाती हैं ।

मैं स्वच्छंदतापूर्वक पहले लेखकों से निवेदन करना चाहता हूं । यदि आप किसी दुकान पर जाते हैं और वहाँ अपनी पुस्तक नहीं पाते, तो इसका यह कारण नहीं कि पुस्तक-विक्रेता ने आपकी पुस्तक छिपा रखी है, अथवा वह बिक्री नहीं करना चाहता अथवा उसे आपसे व्यक्तिगत रूप से कोई शिकायत है । यह तो स्वाभाविक है, किन्तु मैंने कुछ लेखकों को इस तरह की चीजों में विश्वास करते पाया है ।

आपकी ही तरह पुस्तक-विक्रेता हमारा एक साथी है, जिसने इस कार्य को चुना है, यद्यपि इसमें अच्छे जीवन-यापन के अवसर कुछ कम ही हैं । जिस प्रकार लेखक-रूप में आपका अस्तित्व पाठकों के मिलने पर निर्भर करता है, उसी प्रकार विक्रेता का अस्तित्व भी पुस्तकों पर निर्भर करता है, जिन्हें लोग खरीदेंगे । उसे अपना, अपने कार्यकर्ताओं का, मकान-मालिक का भरण-पोषण करना होता है और जब भी वह इसके लिए पर्याप्त धन नहीं कमायेगा, तब केवल आपकी ही पुस्तक के लिए नहीं, प्रत्येक पुस्तक के लिए, पाठकों तक उन्हें पहुँचाने का एक माध्यम कम हो जायेगा, जिससे साहित्य रूपी संसार भी प्रभावित होगा ।

अतः पुस्तक-विक्रेता का सबसे पहला काम पर्याप्त संख्या में पुस्तकें बेचना है—गन्दी पुस्तकें, यदि आप पसंद करते हैं, महत्वहीन पुस्तकें, अच्छी पुस्तकें, लेकिन सर्वोपरि बिकने वाली पुस्तकें जिससे कि उसका काम चलता रहे । यदि आपकी पुस्तक अच्छी बिकने वाली है और वह इस बात को जानता है तो निश्चय ही वह उसे उत्साह के साथ बेचेगा । जब तक कि आपकी ख्याति नहीं होती, और उसके क्षेत्र में आपकी पुस्तकों की मांग नहीं होती, तब तक वह आपकी पुस्तक की सौ-पचास प्रतियाँ नहीं खरीदेगा । बेचने के लिए वह कुछ प्रतियाँ अवश्य खरीद लेगा और यदि आपकी पुस्तक बिकती है तो और अधिक प्रतियाँ मँगा लेगा । और यदि वह नहीं बिकती तो चाहे वह अच्छी से अच्छी साहित्यिक कृति हो वह उसका स्टाक नहीं रखेगा । जिस प्रकार जंगल में खड़ा एक उत्तम वृक्ष यों ही अपना जीवन समाप्त कर देता है, क्योंकि वहाँ उसकी उपयोगिता को समझनेवाला कोई नहीं होता, उसी प्रकार आल्मारी में पड़ी हुई पुस्तक, जिसको न कोई खरीदता है और न कोई पढ़ता है, मृतक के समान है ।

एक पुस्तक-विक्रेता के रूप में आपकी पुस्तक का स्टाक रखने अथवा न रखने के लिए, मुझे साहित्यिक चर्चा से कोई मतलब नहीं, मुझे तो आपकी पुस्तक की भावी बिक्री के बारे में अपना अनुमान लगाना होता है क्योंकि मेरे पास स्थान सीमित होता है । हो सकता है, कुछ हद तक मेरा

अनुमान गलत हो, किन्तु मुझे अनुमान लगाना ही पड़ता है, अतः मैंने निष्कर्ष निकाले हैं, जो पुस्तक की भावी असफलता के बारे में हैं। यहाँ मैं उनकी आपकी जानकारी दूंगा।

आप, जो पुस्तकें लिखते हैं, हम पुस्तक विक्रेता, जो उन्हें पाठकों तक पहुँचाते हैं और प्रकाशक, जो योजना बनाते हैं और पुस्तकें तैयार करते हैं, एक साहित्यिक त्रिभुज के तीन कोण हैं। हमारे तीनों के कार्य भिन्न हैं। हम उन तीन कुत्तों की तरह हैं जिनको एक जंजीर में बाँध दिया गया है। हम एक दूसरे पर भौंकते और गुर्राते हैं और अक्सर दो मिलकर तीसरे पर—किन्तु इस बात को अच्छी तरह समझ लीजिये कि हम एक दूसरे को बचा नहीं सकते। हमारा प्रत्येक का भाग्य दूसरे से बंधा हुआ है। मैंने यह बात इसीलिए कही है कि मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं। जो कुछ मैंने कहा है, एक पुस्तक-बिक्रेता के नाते कहा है, जो आपका प्रिय मित्र भी है और घातक शत्रु भी। यदि बात प्रकाशक की ओर से कही गई होती तो कहानी भिन्न होती—और आपको सुनना चाहिये कि प्रकाशक और पुस्तक बिक्रेता मिलकर लेखकों के बारे में क्या चर्चा करते हैं।

अच्छा अब मैं उस पुस्तक की ओर वापस चलता हूँ जो मेरी आलमारी में नहीं है। मैं इसके साहित्यिक महत्व के बारे में कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि जैसा आप देखेंगे, इस बात की काफी सम्भावनाएँ हैं कि मैंने इस पुस्तक के बारे में कुछ सुना न हो और यदि सुना भी हो तो शायद मैंने उसे पढ़ा न हो। सम्भवतः आप इसे अच्छी तरह समझेंगे, यदि मैं यह कहूँ कि पुस्तकें मेरी आलमारियों में किस प्रकार लाई जाती हैं।

वे मुझे क्या दिखाते हैं?
पुस्तकें नहीं

करीब ४०-५० प्रकाशकों के सेल्समैन वर्ष में तीन बार मेरी दुकान पर आते हैं, और भी अनेक दुकानों पर जाते हैं। वे भेड़िये की तरह मुझ पर हमला करते हैं और उनके प्रत्येक हमले में मेरा सारा दिन खराब हो जाता है। वे मुझे सैकड़ों नई पुस्तकें दिखाते हैं, जिनमें से मुझे कुछ पुस्तकें चुनकर स्टाक करनी होती हैं।

वे मुझे क्या दिखाते हैं? पुस्तकें नहीं। अभी पुस्तकें छपकर तैयार भी नहीं हुई हैं। कभी-कभी उनके पास प्रकाशित होने वाली पुस्तक का टाइप किया हुआ विवरण मात्र होता है। अधिकांशतः उनके पास पुस्तकों के कवर होते हैं। उनके कवरों के ढेर से हम कुछ पुस्तकें चुनते हैं जिन्हें लोग खरीद सकेंगे। आपकी पुस्तक की बिक्री के लिए यह पहली कठिनाई है। कवर से आप पुस्तकों के बारे में क्या समझ सकेंगे?

अब हम कवर की बात ही करते हैं—वह कैसा लगता है? क्या यह रंगीन है, आकर्षक है, इसकी डिजायन अच्छी है और क्या इसकी छपाई अच्छी हुई है? और क्या पब्लिशर ने ही इसकी बिक्री भी अधिक आशा न रख कर इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया है। अतः आप अपनी पुस्तक के बारे में इस दृष्टि से भी सोचें कि आप कौन-सी पुस्तक खरीदना पसंद करेंगे और कौन-सी नहीं।

एक पतली पुस्तक को
दो समस्याओं का सामना करना पड़ता है

कवर से हमें पुस्तक के आकार के बारे में क्या जानकारी होती है? क्या पतली पुस्तक की कीमत भी कम रखी गई है? यदि हाँ तो इसकी बिक्री की सम्भावनाएं हैं। किन्तु यदि इसका मूल्य अधिक हो तो उसे अपने मूल्य को ठीक सिद्ध करना होगा। जब मैं कोई पतली पुस्तक खरीदता हूं तब मैं जानता हूं कि इसके जीवन की आशा मोटी पुस्तक से कम है। यह स्वाभाविक है कि इसकी पुश्त पर शो के लिए डिजाइन न होगी। इसकी बिक्री करने के लिए इसको काउन्टर के शो-केस में लगाना होगा, अन्यथा यह नहीं बिकेगी और आलमारी में यों ही पड़ी रहेगी।

दूसरी ओर यदि आपकी पुस्तक मोटी है और ४ फीट दूर से भी इसकी पुश्त पर लिखा नाम पढ़ा जा सकता है तो निश्चय ही आपकी पुस्तक की बिक्री की संभावनाएं अधिक हैं।

दूसरी बात कवर पर पुस्तक के नाम के साथ लेखक के नाम की है। मुझे आपसे बात कहते हुए नफरत होती है कि पुस्तक-विक्रेता हाथियों की तरह हैं—वे कभी

भूलते नहीं हैं। यदि आपकी पिछली पुस्तक काफी अच्छी बिकी है तो आशा है कि प्रारम्भ में ही आपकी दूसरी पुस्तक की अच्छी बिक्री हो जायगी चाहे आपकी पुस्तक उतनी अच्छी न भी हो। यदि आपकी पहली पुस्तक अच्छी नहीं बिकी है तो आपकी दूसरी पुस्तक को बेचने के लिए सेल्समैन को काफी प्रयास करने पड़ेंगे।

मुझे इस समस्या को चालू रखना चाहिए कि आपकी पुस्तक मेरी आलमारी में क्यों नहीं है। दूसरी सम्भावना इस बात की है कि आपका प्रकाशक चोटी का नहीं है। अभी कुछ समय पहले जिन ४०-५० सेल्समैनों का मैं जिक्र कर रहा था, वे बड़े प्रकाशन गृहों से आये थे। अनेक ऐसे प्रकाशक भी हैं जो सेल्समैन भेजने का व्यय नहीं उठा सकते। मैं आपको बताता हूँ कि आपको एक प्रकाशक से क्या आशा रखनी चाहिए! वह आपकी पुस्तक का अच्छा सम्पादन कराए, उसे सुन्दर और सही रूप में प्रकाशित करे और उसकी बिक्री की प्रभावशाली व्यवस्था करे।

लेखक से सेल्समैन बनने की कोशिश न करें

मुझे इस बारे में कुछ कहने का अवसर दें, क्योंकि यह भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। आप जिस क्षेत्र में जाने हुए लेखक हैं, उस क्षेत्र के पुस्तक-विक्रेता इस आशा में कि आपकी पुस्तक क्षेत्र में बिकेगी, उसका स्टाक रखना पसंद करेंगे।

यहाँ हम कुछ नाजुक समस्या पर आते हैं। यदि आपका प्रकाशक इस ओर पूरा ध्यान नहीं दे पा रहा तो आप थोड़ा भार उठा सकते हैं। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आपको इसमें आसानी होगी। किन्तु आप अपनी प्रिय वृद्धा आण्ट को अपनी पुस्तक का आर्डर देने के लिए न भेजें जो फिर उसे खरीदने ही नहीं जायगी। आप इस बात को स्मरण रखें कि आपकी पुस्तक की जानकारी पुस्तक विक्रेता के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी आपके लिए आपकी पुस्तक की बिक्री। बातचीत में ही आप अपनी पुस्तक के बारे में उसे बता दें।

कुछ प्रकाशक प्रचार में कमी रखते हैं

आपके प्रकाशक की पुनः चर्चा करते हुए अंतिम बात जो मैं आपको बताना चाहता हूं कि आप उससे अच्छी मात्रा में विज्ञापन करने की आशा रखें। विज्ञापन से मेरा आशय व्यावसायिक पत्रों में नहीं—मेरा मतलब समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और अन्य साधनों से है जहाँ पाठक उसे देख सकें।

इस प्रकार का विज्ञापन आवश्यक है। पुस्तक-विक्रेता जानते हैं कि जो प्रकाशक यह भूल करते हैं उनकी पुस्तकें उनके गोदाम में ही पड़ी रह जाती हैं।

अब हम पुस्तक विक्रेता की ओर आते हैं। जब आपकी पुस्तक उसके पास विक्रयार्थ पहुंच जाती है और वह उसके बारे में जानकारी कर लेता है तो आप उससे स्थानीय विज्ञापन का आधा खर्च करने की आशा कर सकते हैं और समुचित प्रदर्शन की। सम्भवतः वह इसे आलमारी में प्रदर्शित करेगा। किसी भी प्रकार उसका यह कर्तव्य है कि वह जनता को पुस्तक देखने और खरीदने का अवसर दे।

प्रथम उत्साही पाठकों को किस प्रकार पकड़ा जाय

लेखक के हस्ताक्षर करा कर पुस्तक खरीदने का शौक काफी पाठकों को होता है। अतः पुस्तक के प्रकाशित होने पर इस प्रकार उसकी बिक्री की व्यवस्था करने से भी उसकी बिक्री अच्छी हो जाती है।

अंत में मेरा आपसे यही निवेदन है कि ऊपर बताई गई बातें—अच्छा कवर, आकर्षक डिजायन, भरपूर प्रचार आदि—पुस्तक की बिक्री को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं, किन्तु आपकी पुस्तक तो तभी अच्छी बिकेगी जब कि वह वास्तव में अच्छी होगी।

('पब्लिशर्स वीकली' से साभार)

हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रकाशन

● **हिन्दी भक्तिरसामृतसिन्धु** श्री रूप गोस्वामी २५.००

प्रेम लक्षणा भक्ति पर सांगोपांग विवेचन प्रस्तुत करनेवाला 'भक्तिरसामृतसिन्धु' ग्रंथ गौड़ीय वैष्णव श्रीरूप गोस्वामी की अन्यतम कृति है। रस सिद्धान्त की शास्त्रीय कसौटी पर कृष्ण-भक्ति को इस ग्रंथ में 'भक्तिरस' सिद्ध किया गया है। वैष्णव भक्ति साहित्य के मर्म को समझने तथा विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों की साधना पद्धति के रहस्य को हृदयंगम करने के लिए यही एकमात्र आधार ग्रंथ है। सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि ने इस ग्रंथ का व्याख्या-विवेचन पूर्वक हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत किया है। इस प्रामाणिक अनुवाद से यह दुर्लभ ग्रंथ हिन्दी पाठकों के लिए सुलभ हो गया है।

● **पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा** सं० डा० सावित्री सिन्हा १०.००

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समृद्ध और विस्तीर्ण परम्परा के शृंखलाबद्ध अध्ययन तथा उसकी मौलिक एवं महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक मान्यताओं के समवेत उपस्थापन की दिशा में हिन्दी में यह सर्वप्रथम प्रयास है। ग्रन्थ की उपादेयता निर्विवाद मानी गई है।

● **काव्य-कला** सं० महेन्द्र चतुर्वेदी २५.००

प्रस्तुत ग्रंथ लातीनी रीतिकार होरेस की प्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय कृति 'आर्स पोयतिका' का हिन्दी पद्य और गद्य रूपान्तर है। पद्य भाग का अनुवाद स्व० डा० रांगेय राघव द्वारा हुआ है। योरोप के कवियों और साहित्य चिन्तकों पर होरेस के प्रभाव को देखते हुए अध्येताओं के लिए यह ग्रन्थ अनिवार्य कहा गया है।

● **हिन्दी अभिनवभारती** आचार्य अभिनव गुप्त २५.००

आचार्य अभिनव गुप्त की दुर्लभ कृति 'अभिनव भारती' का आचार्य विश्वेश्वर द्वारा अनुवाद एवं व्याख्या।

● **हिन्दी नाट्यदर्पण** २२.००

काव्यशास्त्र पर रामचन्द्र-गुणचन्द्र की प्रसिद्ध कृति का हिन्दी रूपान्तर एवं विशद् व्याख्या।

● **पाश्चात्य काव्य-शास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त** १५.००

पश्चिम के उन सभी प्रमुख साहित्य-सिद्धान्तों का प्रामाणिक विवेचन-व्याख्यान जिनका हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के आधुनिक साहित्यों पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

देशभर में हिंदी के सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं पर उपलब्ध हैं

एकमात्र वितरक

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क : दिल्ली-६

[फोन : २६२४२१]

बाल-साहित्य की ग्रंथ-सूची

श्री त्रिभुवनशंकर मेहता

नेशनल कौंसिल आफ एजूकेशनल रिसर्च ट्रेनिंग का कैरिकुलम, मैथेड तथा टेक्स्टबुक विभाग बाल-साहित्य की एक ग्रन्थ-सूचीप्रस्तुत करने वाला है। कई बन्धुओं ने सूची के सम्बन्ध में जानकारी मांगी है। हमारे अनुरोध पर विभाग के फील्ड एडवाइज़र श्री त्रिभुवनशंकर मेहता समूची जानकारी दे रहे हैं।

(१) सम्भवत: आपको विदित ही है कि हमारा विभाग पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति तथा पाठ्यपुस्तकों संबंधी शोध-कार्य में संलग्न है। जहाँ एक ओर विद्यार्थियों के लिए उनकी वय के अनुकूल विषय एवं भाषा को ध्यान में रखकर रची गई आदर्श पाठ्यपुस्तकों का होना जरूरी है, वहाँ उनके लिए उत्तम साहित्य के माध्यम से मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन एवं विभिन्न विषयों सम्बन्धी सूचनाओं की उपलब्धि भी नितांत आवश्यक है। यह हर्ष का विषय है कि अब हिन्दी में बालोपयोगी साहित्य प्राप्त होने लगा है। किन्तु जैसे कि प्राय: यह धारणा बन जाती है कि बच्चों के लिए लिखना तो बड़ा सुलभ है पर वास्तविकता यह नहीं है क्योंकि यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा इसके लिए एक विशेष कौशल भी अपेक्षित है। यही कारण है कि आज जो भी ग्रंथ बालोपयोगी साहित्य के नाम पर प्राप्त हैं वे सभी उपयोगी नहीं कहे जा सकते।

(२) आजकल हिन्दी में उपलब्ध बालोपयोगी साहित्य में कौन-सी पुस्तकें वास्तव में विषय, भाषा एवं रूपाकार की दृष्टि से बालोपयोगी हैं—इसकी खोजबीन करने के लिए बाल-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों की टिप्पणी सहित एक ग्रंथ-सूची बनाने का निश्चय किया गया है। हमारा उद्देश्य यह है कि एक ऐसी ग्रन्थ-सूची तैयार हो जाए जिससे पुस्तकें खरीदने-वाले को बाल-साहित्य की उत्तम पुस्तकों की जानकारी प्राप्त हो सके ताकि खरीदने-वाला बालोपयोगी साहित्य के नाम पर प्राप्त अनुपयोगी सामग्री खरीदने से बच सके। इस ग्रन्थ-सूची को तैयार करने की प्रणाली यह होगी कि हम सभी हिन्दी-बालोपयोगी पुस्तक-प्रकाशकों से अपनी हिन्दी की बालोपयोगी पुस्तकें बिना मूल्य उपहार-प्रति के रूप में भेजने के लिए निवेदन करेंगे (समाचार-पत्रों में हमारा यह निवेदन छप चुका है)। पुस्तकें प्राप्त हो जाने के पश्चात् उन्हें इस विषय के विशेषज्ञों की एक समिति में रखा जाएगा। यह समिति बच्चों की वय के अनुसार पुस्तक की उपयोगिता तथा विषय एवं भाषा के स्तर को विशेष रूप से ध्यान में रखकर प्राप्त पुस्तकों में से अच्छी पुस्तकें चुनकर विषय एवं वय के आधार पर उनका वर्गीकरण कर देगी। अच्छी पुस्तकों के सम्बन्ध में समिति के निर्णयों को देश के अनुभवी अध्यापकों की एक गोष्ठी में रखा जाएगा और अध्यापक-गण अपने क्रियात्मक एवं प्रतिदिन के अध्यापन के अनुभव के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया उन पुस्तकों के सम्बन्ध में प्रकट करेंगे। इस प्रकार अध्यापक-गोष्ठी में स्वीकृत यह बालोपयोगी ग्रंथ-सूची प्रकाशित होकर देश के स्कूलों तथा शैक्षिक संस्थाओं के लिए तैयार हो जाएगी। इतना कार्य हम इस योजना के अन्तर्गत करना चाहते हैं। हमारा प्रकाशक-बन्धुओं से निवेदन है कि वे इस कार्य में हमारा हाथ बंटाने के लिए अपने हिन्दी के बालोपयोगी प्रकाशनों की एक-एक प्रति विभागाध्यक्ष, पाठ्यक्रम-पद्धति तथा पाठ्य-पुस्तक विभाग ५, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-१२ के नाम यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। इन भेजी गई पुस्तकों का मूल्य नहीं दिया जाएया और न ही ये लौटाई जाएंगी। साथ में ये भी सूचित कर देना उचित ही होगा कि केवल पुस्तकों की सूची भेजने मात्र से काम नहीं चलेगा, पुस्तकें अवश्य भेजना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करनेवाले हमारे विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त बालोपयोगी साहित्य की यह ग्रन्थ-सूची हमारे विभाग द्वारा स्कूलों में भेज दी जाएगी परन्तु पुस्तकें खरीदना शैक्षिक संस्थाओं पर ही निर्भर रहेगा। विशेषज्ञों तथा अध्यापकों द्वारा पुस्तक की उपयोगिता एवं उसी के आधार पर ग्रंथ-सूची में उस पुस्तक का नाम रखने का निर्णय ही सर्वमान्य होगा।

कापीराइट ऐक्ट और जाली पुस्तकें

श्री कृष्णचन्द्र बेरी
संचालक, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

कापीराइट ऐक्ट सारे विश्व में एक ऐसी व्यवस्था है जिससे पुस्तक-व्यवसाय में दूसरों के अधिकार पर हस्तक्षेप करने पर अपराधी को दंडित किया जा सकता है, परन्तु कापीराइट ऐक्ट के निर्माताओं को इस ऐक्ट का सर्जन करते समय संभवतः इस बात का स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि जाली पुस्तकों का व्यवसाय भी इतने बड़े पैमाने पर आरम्भ हो सकता है, अन्यथा उस ऐक्ट में ही इस बात की व्यवस्था हो चुकी होती कि ऐसा कार्य करने वाले को इतना कठोर दंडित किया जाय, जिसे देखकर ऐसा गुरुतर अपराध करने का किसी का साहस ही न हो।

प्रकाशकों को जो सम्मान विश्व के अन्य देशों में प्राप्त है उससे सर्वथा भिन्न स्थिति हमारे देश में है। कतिपय सहृदय और प्रकाशकीय मर्यादाओं को समझने वाले प्रकाशक आज की स्थिति में यह सोचने लगे हैं कि वे प्रकाशन-व्यवसाय के क्षेत्र में क्यों आये, जहाँ प्रकाशकीय स्वत्वाधिकार का संरक्षण नहीं है और प्रत्यक्ष रूप से जाली पुस्तकों का काम करनेवाले लोगों को दंडित करने के लिए कोई भी विशेष धारा कापीराइट ऐक्ट में पायी नहीं जाती। चोरी से जाली पुस्तकें छापकर लेखकों तथा प्रकाशकों की सम्पत्ति पर डाका डालने वाले जाली गिरोह के लोग जब प्रकाशकों की श्रेणी में संबोधित होते हैं तो प्रबुद्ध प्रकाशकों के लिए बड़ी ही लज्जा का विषय हो जाता है, केवल यही सोचकर कि क्या प्रकाशक इतने गिर गये हैं कि सारे देश में जाली पुस्तकें छापने का एक गिरोह-सा बन गया है। इस गिरोह का साहस इतना बढ़ गया है कि आज वह नैतिकता की भी दुहाई देने लगा है। गिरोह के लोग यह कहते सुनाई देते हैं कि सही प्रकाशक कम कमीशन देते हैं। इसलिए हम नकली पुस्तकें छापने के लिए विवश हैं। यह भी तर्क सुनने में आता है कि अपनी गरीबी दूर करने के लिए हम यह काम करते हैं और कभी-कभी तो ये समाज-द्रोही इतनी दूर तक बढ़ जाते हैं कि इनके मुँह से सुना जाता है कि हम जाली पुस्तकें न छापते तो पुस्तकों के मूल्य कम ही न होते। चाहे जो भी हो, जाली पुस्तकों के छापने की मनोवृत्ति की निन्दा पुस्तक-व्यवसाय से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति करेगा। इससे लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों तीनों के वर्गों की हानि हो रही है। प्रकाशकों की वास्तविक आय छिन जाती है, लेखक अपनी रायल्टी से वंचित हो जाते हैं और पाठक अशुद्ध और रद्दी पुस्तकें पाते हैं। लाभ के भागीदार होते हैं—जाली पुस्तकें छापने और बेचनेवाले।

सरकारी प्रकाशनों के जाली काम से सरकार को भी क्षति उठानी पड़ती है और गरीब जनता की गाढ़ी कमाई से टैक्स द्वारा वसूली रकम से छापी पुस्तकें सरकारी गोदाम में सड़ जाती हैं, जबकि जाली पुस्तकों के संस्करण धड़ल्ले से बिकते हैं। आज का सबसे बड़ा प्रश्न है, इन समाज-विरोधी तत्वों का सामना करना। यह तभी सम्भव होगा जब कापीराइट ऐक्ट की धारा में ऐसी व्यवस्था हो जिससे इन अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिल सके। पुस्तक-विक्रेता इनका बहिष्कार करें और जाली पुस्तकें बेचने में सहयोग न दें। प्रकाशक अपने संगठन में ऐसे कार्य करनेवालों को दृढ़ संकल्पपूर्वक स्थान न दें। यदि ऐसा न हुआ तो पुस्तक-व्यवसाय में जुआचोरी के काम में उतरे, ये समाजद्रोही कालान्तर में डाकुओं का काम करने लगेंगे।

हमारा अपना विश्वास है कि जब शासन और पुस्तक-व्यवसायी दोनों ही सम्मिलित रूप से इनका विरोध करने के लिए सन्नद्ध हो जायेंगे तो ये समाज-विरोधी लोग या तो स्वतः आत्मसमर्पण कर देंगे अथवा ताड़ित और दंडित होने पर इनका दिमाग ठिकाने आ जायेगा।

शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों, घरेलू लायब्रेरी एवं वाचनालयों के लिए उपयोगी तथा संग्रहणीय पुस्तकें

विज्ञान

आदमी का जन्म
—मन्मथनाथ गुप्त (पुरस्कृत सचित्र) १.२५

चन्दा मामा का देश
—संतोषनारायण नौटियाल (पुरस्कृत सचित्र) ४.००

अंकुर का सपना —धर्मपाल शास्त्री (सचित्र) १.००

विज्ञान और सभ्यता
—रामचन्द्र तिवारी (पुरस्कृत सचित्र) ५.००

पानी बोला—रामचन्द्र तिवारी, सिद्धि तिवारी
(सचित्र, १९६३) २.५०

धरती माता
—रामचन्द्र तिवारी, सिद्धि तिवारी (सचित्र) ३.००

क्यों और कैसे —मनोहरलाल वर्मा (सचित्र) ४.००

प्रायोगिक भौतिकी की मौखिक प्रश्नोत्तरी
—नानकशरण खरे, विष्णु कुमार गंगल ३.००

गणित भाग- भौतिक विज्ञान —ए० एन० पुरी ५.००

हायर सेकेण्डरी प्रायोगात्मक-भौतिक विज्ञान
ए० एन० पुरी ५.००

चुम्बकत्व एवं विद्युत्तत्व —खरे : श्री वास्तव १६.००

परमाणुयुगीन भौतिकी—हेनरी सेमट : ह्वाइट
(सचित्र, १९६३) ५.०० ग

भौतिकी का प्रामाणिक प्रथम-परिचय
एडवर्ड जी० ह्यूई (१९६४) ५.०० ग

खोज की राहें—राल्फ ई०लाप(सचित्र, १९६४) ३.५० ग

अंतरिक्ष यात्रा की प्रथम पुस्तक —जीन बैन्डिक
(सचित्र) ४.०० ग

अंतरिक्ष स्टेशन
—डानल्ड कॉक्स (रंगीन, १९६३) ३.०० ग

कृत्रिम उपग्रह और अंतरिक्ष राकेट
—एरिक वर्गास्ट (सचित्र, १९६४) ३.०० ग

बाह्य अंतरिक्ष में उपग्रह
—एसीमोव (सचित्र, १९६४) ४.०० ग

पृथ्वी से अंतरिक्ष तक
—डेविड ओ० वुडवरी (सचित्र, १९६४) ४.०० ग

भूगोल

प्रकृति के बीच अनुभूति के क्षण
—एडविन वे टील (सचित्र, १९६४) ४.५० ग

अज्ञात महाद्वीप की खोज
—वाल्टर सुलिवान (सचित्र, १९६४) ६.५० ग

दक्षिणी ध्रुव की खोज डुफेक (सचित्र, १९६४) ३.५० ग

दक्षिणीध्रुव-विजय
—पाल साइपल (सचित्र, १९६२) १०.०० ग

उत्तरी ध्रुव : वर्फ की दुनिया —कमाण्डर विलियम आर० एण्डर्सन : क्ले ब्लेयर जूनियर
(सचित्र,१९६२) ५.५० ग

उत्तरी ध्रुव-विजेता
—मेरी पियरी स्टेफर्ड (सचित्र, १९६२) ४.०० ग

उत्तरी ध्रुव के नीचे सर्वप्रथम —कमाण्डर विलियम आर० एण्डर्सन (सचित्र, १९६३)२.५० ग

उत्तरी ध्रुव की सतह
—कमाण्डर जेम्स कालबर्ट (सचित्र) २.०० ग

राजनीतिशास्त्र व इतिहास

सच्चे दोस्त : बहादुर दुश्मन
—रावर्ट एफ० कैनेडी (सचित्र, १९६४) ४.५० ग

अमरीकी राजनीति और अमरीका के राजनैतिक दल
—किलन्टन रासिटर (१९६४) ४.०० ग

अमरीकी राजनैतिक प्रक्रिया —लेवि व राश ७.५० ग

अमरीका की विदेशी-नीति
—आर्नेस्ट आर० मे (१९६४) ७.५० ग

भारत और पश्चिम —बारवारा वार्ड ४.५० ग

नयी राह —चेस्टर बौल्स (१९६२) ६.००

मेरा देश : मेरे देशवासी —परम पावन दलाई लामा
(सचित्र, १९६४) ७.५० ग

संयुक्त राष्ट्र प्रवेशिका
—एडना एप्स्टीन (सचित्र १९६४) २.७५ ग

भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन
—लिओनार्ड मोसले ७.५०

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

बिक्री बढ़ाने के लिए
एक व्यावहारिक योजना

बुक सैन्टर

—श्री रामलाल पुरी
संचालक, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

हमारे देश में हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय में लगा लगभग प्रत्येक पुस्तक-व्यवसायी आज असन्तुष्ट दीख पड़ता है, इसका कारण यह है कि इसमें लगी पूंजी पर लाभ का अनुपात अत्यन्त कम है। इसके अनेकों कारण हैं जिनमें खर्चों का बढ़ जाना भी एक है। यदि योजनाबद्ध होकर कार्य किया जाय तो खर्च एक सीमा तक घटाये जा सकते हैं और व्यापार में नियमितता लाई जा सकती है। बाहर के देशों में पुस्तक-व्यवसाय इतना नियमित है कि वहाँ का व्यापारी पूर्णतः सन्तुष्ट है और कहीं भी किसी प्रकार की असुविधा या अनियमितता देखने में नहीं आती। मेरी राय में यदि भारत में इस प्रकार की योजना बन सके और उसे व्यवसायियों का सहयोग प्राप्त हो सके तो कोई कारण नहीं कि यहाँ का पुस्तक-व्यवसायी असन्तुष्ट रहे। इस सम्बन्ध में मैं एक योजना प्रस्तुत करता हूँ इस आशा के साथ कि इसे उपयोगी माना जायेगा और हम परस्पर मिल-बैठकर, इसे कार्यान्वित करके, हानि के स्थान पर लाभ कमाकर अपने व्यवसाय को अधिक नियमित कर सकेंगे।

यह एक व्यावहारिक योजना है और इससे प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता दोनों को ही पर्याप्त लाभ की आशा हो सकती है। इस योजना के अन्तर्गत एक संस्था बनाई जा सकती है जिसे 'बुक-सैन्टर' कहा जाय। यह 'बुक-सैन्टर' बाहर के पुस्तक-व्यवसायियों को स्थानीय प्रकाशकों की पुस्तकें उन्हीं के कमीशन पर सुलभ कराये। इस सैन्टर में प्रकाशकों को अपनी पुस्तकें नहीं रखनी होंगी केवल प्राप्त आर्डरों को भेज देने भर की आवश्यकता है। आर्डर प्राप्त होते ही बुक सैन्टर के कर्मचारी उक्त आर्डर की पुस्तकें स्वयं इकट्ठी करेंगे और उन्हें शीघ्रातिशीघ्र रवाना करने का प्रबन्ध करेंगे। इस प्रकार प्रकाशक को पैकिंग, पोस्टेज, फ़ारवर्डिंग, रेलभाड़ा व इन कार्यों के लिए स्टाफ़ आदि रखने का सारा खर्च बच जायेगा और उनका यह कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से बुक-सैन्टर द्वारा सम्पन्न हो जायेगा। प्रकाशक अपना ध्यान अधिक उत्तम पुस्तकें प्रकाशित करने या पुस्तकों का प्रचार-प्रसार व विज्ञापन आदि की ओर लगा सकेंगे और वितरण की ओर से निश्चिन्त हो जायेंगे।

इस प्रकार के बुक-सैंटर देश के उन नगरों में स्थापित किये जा सकते हैं जहाँ उचित संख्या में प्रकाशक हों। रिटेल पुस्तक-व्यवसायी उस नगर के सभी प्रकाशकों की पुस्तकें एक ही स्थान से मँगा सकते हैं जिससे उन्हें हर प्रकार की सुविधा भी प्राप्त होगी और उनके खर्च व असुविधाएँ भी कम होंगी।

बुक-सैन्टर का काम केवल बाहरी पुस्तक-व्यवसायियों को ही पुस्तकें सुलभ कराना होगा, लायब्रेरी या रिटेल बिक्री के लिए प्रकाशक स्वतन्त्र रहेंगे।

बुक-सैंटर का खर्च मैम्बर प्रकाशक अपनी-अपनी बिक्री के अनुपात से उठायेंगे। इस बुक-सैन्टर की कार्य प्रणाली सुचारु रूप से चलाने के लिए मैम्बर प्रकाशक नियम आदि बना सकते हैं। सम्बन्धित खर्च व उधार आदि देने के लिए व्यापारियों की सूची आदि भी बनाई जा सकती है।

इस बुक सैन्टर योजना से प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता दोनों पक्षों को निश्चित लाभ की आशा है। जिनमें से कुछ प्रत्यक्ष लाभ इस प्रकार हैं :

१. प्रकाशक का ध्यान पुस्तकों के प्रकाशन और उनके उचित प्रचार-प्रसार की ओर रहेगा और वितरण आदि समस्याओं की ओर से वह निश्चिन्त हो सकेगा अतः पुस्तकों की बिक्री बढ़ेगी।

२. प्रकाशकों का पैकिंग, पोस्टेज, फ़ारवर्डिंग रेल-भाड़ा और इससे सम्बन्धित स्टाफ़ आदि का सारा खर्च समाप्त हो जायेगा।

३. सम्मिलित रूप से पुस्तक-विक्रेताओं की जो सूची बनेगी उससे सभी मैम्बर प्रकाशकों को समान लाभ होगा।

४. रिटेल पुस्तक-व्यवसायी एक ही स्थान से स्थानीय प्रकाशकों की पुस्तकें मँगा सकेंगे और उन्हें भी समय व धन की बचत होगी तथा सम्बन्धित असुविधाएँ समाप्त हो जायेंगी।

५. उधार देना इस व्यवसाय में अत्यन्त आवश्यक है पर उधार दिये धन की सुरक्षा उससे भी अधिक आवश्यक है। बुक-सैंटर के माध्यम से Defaulters भी खतम हो जायेंगे क्योंकि किसी विक्रेता के Defaulters होने पर उसे किसी भी सम्बन्धित प्रकाशक का माल नहीं मिलेगा और एक साथ सभी मैम्बर प्रकाशक उससे सचेत हो जायेंगे। अन्य नगरों के बुक-सैन्टरों को ऐसे व्यापारियों से सम्बन्धित सूचना भेज देने पर वहाँ के बुक-सैन्टर भी उसे माल नहीं देंगे। इससे Defaulters की हिम्मत टूटेगी और प्रकाशकों को भी आर्थिक क्षति नहीं उठानी पड़ेगी।

६. बुक-सैंटर में स्टाक तो रहेगा नहीं अतः वहाँ से किसी प्रकार की जोखिम नहीं हो सकती।

७. सम्पूर्ण पुस्तक-व्यवसाय में नियमितता आयेगी, टैण्डर-प्रणाली में अधिक कमीशन देने की होड़ कम हो सकेगी और बरसाती मेंढ़कों की भाँति व्यापारी पैदा नहीं होंगे क्योंकि उन्हें पता चल जायेगा कि अब कोई भी प्रकाशक उन्हें पिछले दरवाजे से पुस्तकें नहीं बेच सकेगा। पुस्तक व्यवसायी भी अधिक कमीशन नहीं भर सकेंगे क्योंकि उन्हें भी पुस्तकें अन्य किसी स्थान से नहीं मिल सकेंगी। अतः कमीशन दरों में भी एकरूपता आयेगी।

८. रिटेल पुस्तक व्यवसायियों के लिए पुस्तकें बेचना अधिक सुलभ और लाभप्रद हो जायेगा और सम्पूर्ण पुस्तक-व्यवसाय में पारस्परिक सद्भावना व सहयोग का प्रचार होगा।

नये प्रकाशन

काव्यशास्त्र की रूपरेखा ६.५०

ले० श्यामनन्दन शास्त्री

काव्यशास्त्र जैसे श्रमसाध्य, गंभीर विषय पर यह पुस्तक बड़ी योग्यता, अध्यवसाय एवं मनोयोग से प्रस्तुत की गई है।

अलंकार मीमांसा ६.००

ले० मुरली मनोहर प्रसाद सिंह

यह वैज्ञानिक एवं शोध-दृष्टि से लिखा गया एक सर्वांगपूर्ण विवेचन प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है।

हमारे अन्य आलोचना ग्रन्थ

नयी कविता नयी आलोचना और कला
ले० कुमार विमल २.००

हिन्दी कहानी—प्रक्रिया और पाठ
ले० सुरेन्द्र चौधरी २.००

हिन्दी आलोचना—स्वरूप और विकास
डा० राम दरश मिश्र १.५०

प्रकाशक

भारती भवन

गोविन्द मित्रा रोड, पटना-४

पाठ्य पुस्तकों का उपयोग और उनका जीवन

श्री वेंकटलाल ओझा
मंत्री, हिन्दी समाचार पत्र संग्रहालय
कसारट्टा रोड, हैदराबाद

मेरे एक मित्र अभी हाल में ब्रिटेन आदि का प्रवास कर लौटे हैं। उनकी रुचि शिक्षा में है और कई संस्थाओं के वे अध्यक्ष भी हैं। अपने यूरोपीय प्रवास में उन्होंने वहाँ की शिक्षण संस्थाएँ देखीं जो स्वाभाविक ही था। एक बात उन्हें बड़ी आश्चर्यजनक लगी; वह थी वहाँ की पाठ्य-पुस्तकें। उन्होंने देखा कि पुस्तकें मजबूत मोटे कागज पर छपी हैं और उनका मूल्य भी हमारे देश की तुलना में कहीं अधिक है। जब इस संबंध में उन्होंने पूछा कि आठ-नौ मास काम आने वाली पुस्तक के लिए इतना खर्च करना क्या भार नहीं है, तो उसका उत्तर सुन कर वे आश्चर्यचकित रह गये।

उत्तर में कहा गया कि यह पुस्तक कम-से-कम ३-४ वर्ष काम आयेगी। हम पुस्तकें कक्षा में बैठते ही छात्र को देते हैं और फिर वापस ले लेते हैं। पुस्तक घर नहीं ले जायी जाती। इस कारण वह अधिक दिन टिकती है। इस वर्ष ये बालक पढ़ रहे हैं और अगले वर्ष दूसरे बालक पढ़ेंगे। इस तरह वर्षों एक ही पुस्तक कई बालकों को पढ़ा देगी। और इस दृष्टि से पुस्तक सस्ती ही कही जायगी।

'बिना पुस्तक के बालक घर पर पाठ कैसे याद करते होंगे?'

'हमारे यहाँ जो कुछ पढ़ाना होता है बालक को यहीं पढ़ा दिया जाता है। कोई बालक पाठशाला का कार्य घर पर नहीं करता।'

पर हमारे देश में तो ठीक इससे उलटा है। पाठ्य पुस्तकों की इतनी अधिक संख्या है कि बालक उनको ठीक से उठा भी नहीं सकता। एक गधे का बोझ उसे ढोना पड़ता है। दूसरी ओर कक्षा में शिक्षक भी केवल थोड़ा-सा पढ़ाकर घंटी बजने की प्रतीक्षा करते रहते हैं और बालकों से कहते हैं कि घर से लिख कर या याद करके आ जाना।

तीसरी बात इन सबसे बढ़ कर है और वह यह है कि पाठ्य-पुस्तकों का प्रति वर्ष बदलते रहना। स्वाधीन भारत में गत १७-१८ वर्ष में पाठ्य-पुस्तकों में इतने अधिक परिवर्त्तन और परिवर्द्धन हुए हैं कि 'न भूतो न भविष्यति'। अंग्रेजों के शासनकाल में भी शिक्षा संबंधी कुछ ठोस नीति थी, चाहे वह सही हो या गलत पर थी स्थायी नीति, जिसके कारण प्रतिवर्ष पाठ्य-पुस्तकों में आये दिन परिवर्त्तन नहीं होते थे। आज तो मंत्रिमंडल की तरह ही पाठ्य-पुस्तकें नित्य बदलती रहती हैं। जिसके कारण प्रतिवर्ष छात्रों को समय पर पुस्तकें नहीं मिल पातीं, चाहे वह सरकार द्वारा प्रकाशित हों या निजी प्रकाशक द्वारा, स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

क्योंकि पुस्तकों के चयन की घोषणा बहुत ही विलंब से प्रकाशित की जाती है जिससे कोई उस पर किसी तरह के पुनर्विचारार्थ अनुरोध कर सके। अल्प समय में पुस्तकें छपती हैं। कागज की उपलब्धी समय पर नहीं होती। संपादन तो क्या पुस्तकों का प्रूफ भी ठीक से नहीं देखा जाता। जैसे-तैसे पुस्तक छापकर बाजार में पहुँचा दी जाती है। जिससे चारों ओर असंतोष की आग भभकती है। क्या ही अच्छा हो एक ठोस शिक्षा नीति निर्धारित कर पाठ्य-पुस्तकों का चयन किया जाये और फिर वर्षों तक उनका चलन रहे जैसा कि ब्रिटेन आदि में है तो हमारे यहाँ भी पाठ्य-पुस्तकों की अकाल मृत्यु नहीं होगी। उनका जीवन बढ़ेगा। उनकी उपयोगिता बढ़ेगी। पुस्तक अच्छी संपादित होगी, छपाई अच्छी होगी। बढ़िया कागज होगा। बढ़िया जिल्द होगी। कलात्मक और विषय को स्पष्ट करने वाले चित्र होंगे। इस तरह प्रकाशक उस पर अधिक ध्यान देकर सावधानी-पूर्वक उसे तैयार करेगा। अधिक संख्या में वह छपेगी। जिससे छपाई की लागत भी कम बैठेगी। नये टाइप पर पुस्तक छपेगी। प्रतिवर्ष जो टनों कागज करोड़ों रुपये का इस तरह बेकार जाता है वह बचेगा, जो बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत में भारी योग होगा।

आशा है देश के शिक्षा के कर्णधार इस पर उचित ध्यान देकर राष्ट्रीय धन की अपव्यय से रक्षा करेंगे।

हमारे प्रकाशन

कथा-साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
गोमती के तट पर	भगवती प्रसाद वाजपेयी	६.५०
पाकिस्तान मेल	खुशवन्त सिंह	५.००
मिट्टी की लोथ	हरिप्रकाश	४.००
रक्षाबन्धन	रघुवीरशरण बंसल	५.००
हँसता कौन : रोता कौन	यदुनन्दन कपूर	२.५०

नाटक-एकांकी-साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
शीशदान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	३.५०
साँपों की सृष्टि	"	२.५०
कंजूस	आर० एम० डोगरा	२.००
अजय आलोक	डा० महेन्द्र भटनागर	२.४०
शाप और वर	रत्नलाल शर्मा	३.००
पुनर्जीवन	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०

काव्य-साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
प्रतिपदा	कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह	४.००
रसवन्ती	सूर्यभान	१.७५
कुरुक्षेत्र हिमालय	आनन्द	२.५०

विभिन्न साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
मौत भी हार गई	राजेन्द्र शर्मा	२.५०
जीवन ज्योति	क्षेमचन्द्र 'सुमन'	२.५०
जय भारत विशाल	राजेन्द्र शर्मा	२.००
हमारे आदिवासी	हरिप्रकाश	२.००
कुरुक्षेत्र एक सांस्कृतिक परिचय	बालकृष्ण मुस्तर	१०.००
भारत-दर्शन	"	५.००
पंजाब-जन-जीवन और साहित्य		५.००
इंग्लैंड से पत्र	प्रो० ईशकुमार	१.००

आलोचना तथा हिंदी साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
विद्यापति	जयनाथ 'नलिन'	११.००
रामचन्द्र शुक्ल	"	६.५०
हरिकृष्ण 'प्रेमी'	विश्वप्रकाश दीक्षित	६.५०
वृन्दावनलाल वर्मा	डा० कमलेश	५.००
राधिकारमणप्रसाद सिंह	"	६.००
हिन्दी गद्य विकास और परम्परा	"	२.५०
शुक्ल एक समीक्षा	जयनाथ 'नलिन'	३.००
सूर सरोवर	डा० हरवंशलाल शर्मा	२.५०
सुगम तथा शास्त्रीय संगीत	डा० इन्द्रनाथ मदान	२.५०

बाल तथा प्रौढ़ साहित्य

पुस्तक	लेखक	मूल्य
धरती की पूजा	दुर्गादत्त शर्मा	१.२५
धरती का सुहाग	"	१.२५
हम आजाद हुए	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	१.२५
मैं दिल्ली हूं	रामावतार त्यागी	१.००
ईसप की नीति कथाएं १	देवर्षि सनाढ्य	१.२५
ईसप की नीति कथाएं २	"	१.२५
मीठी तानें	श्रीनाथसिंह	१.००
हमारा भारत	प्राणनाथ सेठ	१.२५
रामराज्य की ओर	राजेन्द्र शर्मा	१.००
स्वाधीनता संग्राम की कहानी	रघुवीरशरण बंसल	१.२५
ईशोपनिषद्	गोपालजी	०.६०
उपनिषद्	"	१.५०
मनोवैज्ञानिक कहानियाँ	(पंजाबी)	१.२५
हैंडफुल आफ स्टोरीज़	(अंग्रेजी)	२.५०

बंसल एण्ड कम्पनी

नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

टेलीफोन : २१२२९२

पुस्तक व्यवसाय में भ्रष्टाचार

श्री रामतीर्थ भाटिया
राजधानी ग्रन्थागार, नई दिल्ली

भ्रष्टाचार और सदाचार पुराने प्रतिद्वन्द्वी हैं। किन्तु आजकल भ्रष्टाचार ने सदाचार को केवल परास्त ही नहीं किया बल्कि उसे प्रायः अपने चंगुल में दबा रखा है। उसे चंगुल से छुड़ाने के लिए बहुत से देवता अपना संगठन कर रहे हैं किन्तु यह असुर इतना भयानक और शक्तिशाली है कि यद्यपि उसके साथ किसी को खुलेआम सहानुभूति नहीं फिर भी उसका प्रभाव मिटने में आता है न उसके आसुरी साम्राज्य का कोई भी किला टूटता नज़र आता है। मेरे इस रूपक का रूप एवं संदर्भ आपके सामने है।

भ्रष्टाचार की जहाँ तक समस्या है—हमारे व्यवसाय को ही क्या इसने तो सारे राष्ट्र को ही गले से पकड़ रखा है। हर जगह इसकी चर्चा है। समाज की इस गिरावट का कारण यही एक बात मानी जाती है। अन्यथा भारतीयों के परिश्रम और बुद्धि में कोई कमी नहीं। इसी कारण हमारी सरकार भी चिंतित है। सरकारी या गैर सरकारी तौर पर भ्रष्टाचार निरोधक और सदाचार पालक समितियाँ बना रखी हैं। हमारे गृहमंत्री श्री नंदाजी इसके निराकरण के लिए प्रयत्नशील हैं। आज की मँहगाई, अनाज और सभी प्रकार की वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि का मूल कारण भी इसी राक्षस को बताया जाता है और खाद्य पदार्थों में मिलावट तो इसकी चरम सीमा है—इस विवरण का प्रयोजन इतना ही है कि यह अग्नि प्रचण्ड हो चुकी है। फलस्वरूप सभी अपने-अपने घर को इससे बचाने के लिए यत्न कर रहे हैं। इसी प्रकार हम पुस्तक व्यवसायियों के लिए भी अपने घर की इस आग से चिंतित होना स्वाभाविक बात है।

पुस्तक व्यवसाय में भ्रष्टाचार के कई रूप हैं—एक घर का, दूसरा बाहरी यानी इस व्यवसाय का। अपने सहयोगियों की आन्तरिक समस्या के अलावा सबसे पहला संबंध सरकार और उसके शासन और अधिकारियों से है—फिर लेखकों और मुद्रकों, कागज-व्यापारियों, बाइंडरों एवं साधारण ग्राहकों से—किन्तु पहले मैं अपने दामन में झाँकने के पक्ष में हूँ—क्योंकि बाहरी लोगों से वही व्यवसायी अपने शक्तिशाली संगठन द्वारा या व्यक्तिगत प्रयास से अपने हित और स्वार्थ के लिए साहस करके खड़ा रह सकता है, जिसका अपना नैतिक बल है। भ्रष्टाचार की चर्चा कर देने से तो भ्रष्टाचार को कम नहीं किया जा सकता है। यह अच्छे आचरण और चरित्र से ही समाप्त या कम हो सकता है।

यह उपाय सरल और व्यावहारिक भी है कि—सब अपने घर की सुध लें—।

मैं इस बात से सहमत नहीं कि पुस्तक व्यवसाय भी दूसरे व्यवसायों की तरह पूर्णतः एक व्यवसाय मात्र है। हम प्रकाशक और पुस्तकविक्रेता सरस्वती के पुजारी हैं—पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, अध्यात्म आदि के साहित्य का प्रचार करते हैं, नैतिकता और सदाचार की शिक्षा मानव की हर पीढ़ी को हमारे द्वारा ही मिली है। महान लेखकों और मनीषियों को हम ही प्रकाश में लाते हैं। अतः यह बिजनेस निश्चय ही व्यवसाय से अधिक एक रचनात्मक कार्य है। इसी लिए मैं अपने वर्ग का इस संदर्भ में उत्तरदायित्व भी दूसरे की अपेक्षा अधिक मानता हूँ। संसार को उपदेश, संदेश, और शिक्षा देना और स्वयं उसका पालन न करना, भ्रष्टाचार का एक और निकृष्ट रूप है। यदि हम इसका कुछ अंश में भी पालन करें तो अपने इस प्रकाशक और विक्रेता के नाम को सार्थक कर सकते हैं।

चलिए हम पुस्तक व्यवसाय को इतनी ऊँची पदवी न दें और कुछ क्षण के लिए यह मान लें कि हम भी केवल मात्र व्यवसायी हैं— दूसरी चीजों के व्यापारियों की तरह व्यापारी हैं तो भी व्यापार और व्यवसाय के अनुसार उसकी अपनी मर्यादा है। व्यवहार-कुशलता आपसी लेन-देन की स्वच्छता है, जो किसी भी कारोबार का मौलिक आधार है—प्रत्येक व्यवसाय की रीढ़ की हड्डी है। कारोबार का सारा ढाँचा उसी पर खड़ा है। यह

व्यवहार-कुशलता, लेन-देन की सफाई, अपने सहयोगी सहव्यवसायी में विश्वास और ईमानदारी न हो तो किसी व्यापार की गाड़ी नहीं चल सकती। यहाँ तक चोर और डाकुओं और जेबकतरों की भी एक नैतिक संहिता-व्यवहार पद्धति आपस में होती है। वह दुनिया को लूटते हैं, किन्तु अपने साथियों, सहयोगियों और अपने वर्ग में उनकी निष्ठा, व्यवहार-स्वच्छता, विश्वास-ईमानदारी अवश्य रहती है, बल्कि इसका पालन बड़े कड़े ढंग से किया जाता है। वह व्यक्ति एक मिनट भी उनके गिरोह में नहीं रह सकता जो आपसी निष्ठा व विश्वास का उलंघन करे। मेरा अभिप्राय इस बात से इतना है कि समाज से उपेक्षित वर्ग इन चोर-डाकुओं के लिए भी यह बात जरूरी है। अत: मैं पुस्तक व्यवसाय में भ्रष्टाचार में सबसे प्रथम स्थान इस बात को देता हूँ कि प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता अपने लेन-देन के बारे में अपने कर्त्तव्य का पालन प्राय: नहीं करते—वी० पी० की वापसी, आर्डर देकर बिल्टी बैंक आदि से स्वीकार न करना, बिलों का भुगतान न करना, मियादी हुण्डी की सुविधा लेकर हुण्डी लौटा देना और इससे आगे भी एक और गर्हित काम—बिक्री और वापसी की शर्त पर भी पुस्तकें लेकर बिकी पुस्तकों का पैसा न देना, और पुस्तकें भी न लौटाना या लौटाते समय पूरी बेदर्दी से पेकिंग करना। यानी सारी सुविधाएँ लेकर ऐसी मनोवृत्ति का परिचय देना कि जैसे सारे लेन-देन में उनका कोई उत्तरदायित्व है, न कोई असूल न सिद्धांत है। इस प्रकार वन वे ट्रेफिक कई जगह चल रहा है। इसमें संदेह नहीं कि अपवाद भी हैं, बहुत से अच्छे व्यापारी हर जगह हैं—हर शहर—हर प्रान्त में हैं। किन्तु बीमारी भयंकर रूप से फैल रही है। भ्रष्टाचार की चर्चा जब आती है—हर व्यक्ति इससे अपनी घृणा प्रकट करता है और अपने को छोड़ कर (उस क्षण) शेष सारा संसार उसके लिए भ्रष्टाचारी है। मानव का यह स्वभाव ही है, वह अपेक्षा करता है कि उसके साथ अन्य सभी अच्छा व्यवहार करें। अगर उसे दूसरे किसी से पैसे लेने हैं तो दूसरा उसको तुरन्त भुगतान करे किन्तु यही बात जब उस पर घटती है, जब उसे दूसरे किसी को देने होते हैं तो मस्तिष्क का काँटा बदल जाता है और व्यापार में प्राय: होता यही है कि हर व्यक्ति को दस जगह लेना है तो पांच जगह देना भी है। बस यही एक बात सारी समस्या के कारण और निवारण का बिन्दु है। यह चाबी और ताली है कि हर व्यक्ति दूसरों से वही व्यवहार करे जो वह अपने लिए चाहता है—वरन् दूसरों को दोष देना स्वयं भ्रष्टाचार का बीज बोने वाली बात है। इसकी अन्य समस्याओं पर पुन: किसी चर्चा में उल्लेख करेंगे। ●

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

हिंदी के पुस्तकाध्यक्ष,
हिन्दी के सुधी विद्वान,
हिन्दी के विद्वान, शोधकर्ता एवं निदेशक गण,
हिन्दी के शोध छात्र,

महोदय,

व्यक्तिगत रूप से आप सबको सूचित कर सकना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए विज्ञापन का सहारा लिया गया है। इसके लिए क्षमा चाहते हुए निवेदन यह है कि आप सब सभा के खोज विवरणों से अवगत हैं। वह हिन्दी शोध-जगत का मूलाधार रही है और हिन्दी के उन्नयन एवं विकास के आकलन के लिए उसकी उपयोगिता अनन्य एवं अनिवार्य रूप से सर्वग्राह्य रही है।

सन् १९०१ से सन् १९५५ ई० तक के विस्तृत नवीन खोज का संशोधित संक्षिप्त विवरण केन्द्रीय सरकार की सहायता से दो खंडों में नवम्बर ६४ में प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्मरणीय है कि खोज का विस्तृत विवरण केवल सन् १९४३ ई० तक का ही प्रकाशित है। दोनों खंड लगभग रायल आकार के ६५०-६५० पृष्ठों से अधिक हैं। कपड़े की जिल्दबन्दी भी की गयी है। और प्रत्येक खंड का मूल्य ३०)-३०)है। दोनों खंड एक साथ मँगानेवालों को ५१) में ही दिसम्बर माह तक देने की व्यवस्था की गयी है। यह अत्यन्त सीमित मात्रा में छप रही है। इसलिए विशेष रूप से निवेदन है कि इस संबंध में अपना आदेश शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
(प्रकाशन मन्त्री)

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

पाकिस्तान में किताबों के मेले

इशारे करने वाली किताबें : हर घर में पुस्तकालय की आवश्यकता : औरतों ने किताबें पढ़ने का फैशन छोड़ दिया : स्कूली खरीद के बुरे हाल : पुस्तक विक्रेता की बरबादी का ब्यौरा : तीन हजार मासिक वेतन वाले आफिसर भी किताब नहीं खरीद सकते !

पाकिस्तान के कराची, ढाका और लाहौर शहर में किताबों का मेला एक साथ किया गया है। मेला नेशनल बुक सेंटर आफ पाकिस्तान की ओर से आयोजित था। उस योजना का स्वागत करते हुए पाक राष्ट्रपति फील्ड मार्शल अयूब खाँ ने अपने संदेश में कहा कि शिक्षा की प्रगति के साथ प्रत्येक वर्ग के लिए अच्छी पुस्तकें भी समान गति से प्रकाशित होनी चाहिए, नहीं तो शिक्षा अधूरी रह जायगी। आपने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक घर में एक पुस्तकालय अवश्य होना चाहिए—चाहे वह छोटा ही क्यों न हो।

उज्ज्वल भविष्य का मार्ग

कराची में मेले का उद्घाटन करते हुए उर्दू तरक्की बोर्ड के सदर श्री मुमताज हुसेन ने कहा कि पुस्तकों में दिलचस्पी रही तो भविष्य उज्ज्वल होगा। आपने परामर्श दिया कि अच्छी किताबें अधिक से अधिक संख्या में लिखी जानी चाहिए और उनका प्रकाशन भी होना चाहिए। प्रकाशन के मार्ग में जो कठिनाइयां हों उनको दूर करने का प्रबन्ध सरकार करे। यूनेस्को की ओर से डायरेक्टर अखतर हुसेन रायपुरी ने आश्वासन दिया कि वे बुक सेंटर को पूरा सहयोग देंगे।

लाहौर : प्रमुख प्रकाशन केन्द्र

लाहौर के पत्रों ने इस अवसर पर विविध वर्ण की चर्चाएँ प्रस्तुत की हैं। जिसमें दैनिक 'मशरिक' ने एक लेख में बताया है कि पश्चिमी पाकिस्तान में लाहौर शैक्षणिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और वैज्ञानिक पुस्तकों के प्रकाशन का सबसे बड़ा केन्द्र है। वहाँ लगभग ३० प्रसिद्ध प्रकाशक हैं और वर्ष भर में लगभग ५० लाख रुपये की किताबों का कारोबार होता है। अनुमान है कि लाहौर में साहित्यिक पुस्तकों के दस हजार पाठक हैं और वह हर तरह की किताबें पढ़ते हैं। साधारणतया महीने में ४० साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित हो जाती हैं।

१८५० से प्रारम्भ

लाहौर में सबसे पहली किताब उर्दू में सन् १८५० में छपी थी। उसका नाम 'कानूने दीवानी' था। बाद में धार्मिक और चिकित्सा की किताबें ३०० की संख्या में छपने लगीं। उनके टायटिल सादे परन्तु बेलबूटे वाले होते थे। थोड़े दिनों में इस संदर्भ में लाहौर लखनऊ और कानपुर का मुकाबला करने लगा। १९२५ में किताबों पर आवरण चढ़ाने और उसे रंगीन छापने का सिलसिला शुरू हुआ। विभाजन के बाद हर दिशा में प्रगति हुई और धार्मिक तथा राजनीतिक पुस्तकें अंग्रेजी में भी छपने लगीं। पहले पहल कश्मीरी बाजार प्रकाशन का केन्द्र था, अब माल रोड है।

इल्म और कागज

इस दैनिक में लाहौर की डायरी लिखने वाले इंतजार हुसेन ने लाहौर के किताबी मेले की चर्चा करते हुए किताब का पूरा इतिहास लिखा है। आपने बताया है कि इमाम अबू हनीफा को एक बार डाकुओं ने घेर लिया। इमाम ने कहा, सारी दौलत तुम ले जाओ लेकिन मेरे कागज मुझे दे दो। ये कागज मेरे दस वर्ष के इल्मी चिंतन का परिणाम हैं। डाकुओं के सरदार ने कहा—अच्छा तुम्हारा इल्म है कि कागज गये तो इल्म भी गया ! इमाम चुप हो गये और उस दिन से इल्म सीने में रहने लगा और सीना-ब-सीना मुन्तकल होता रहा। मगर सीने

उतने चौड़े नहीं रहे और इल्म फिर कागज़ पर उतर आया। स्मृति ने भी आदमी का साथ छोड़ दिया। मगर आदमी इल्म का प्यासा था इसलिए कलमी किताबें हीरे-जवाहरात बन गईं। दास्तान कहने वालों और बयाज़ (हस्त लिखित काव्य संग्रह) रखने वालों की कदर बढ़ गई। फिर पश्चिम वालों ने छापेखाने का आविष्कार कर लिया और नवलकिशोर प्रेस ने दीवान और दास्तानें छाप-छाप कर अंबार लगा दिए—जो दास्तानें नहीं छप सकीं वह खुशबू की तरह उड़ गईं क्योंकि वह स्मृति हमारे पास नहीं थी कि हम उन्हें याद रखते।

आदमी की मजबूरी

जाँ पाल शातर का कहना है कि मैंने कलम को तलवार समझ कर लिखना शुरू किया था, अब ऐसा नहीं समझता लेकिन लिखना मेरी मजबूरी हो गई है। इस मुल्क में संजीदा किताबें भी लिखने वाले की मजबूरी हैं लेकिन किताब पढ़ना यहाँ के आदमी की मजबूरी नहीं है। इसलिए जासूसी नावेल खूब बिकते हैं। उनसे भी ज्यादा खुफिया छपने वाले नावेल बिकते हैं और घूमते-फिरते हैं और प्रकाशक संजीदा लेखक से मुंह लटकाकर कहते हैं कि आपकी किताब का तो अभी पहला एडीशन भी खत्म नहीं हुआ—नंगी क्या नहाये क्या निचोड़े!

बेटी जैसी प्यारी किताब

वह ज़माना गया जब इल्म का प्यासा और साहित्य का दीवाना किताब वाले के पास भिखारी बन कर जाता था और ऐसे किताब माँगता था जैसे उस ज़माने में बेटी माँगते थे। उस ज़माने में हर किताब की कदर थी और वह बेटी से ज्यादा प्यारी होती थी। अब इश्तहार के बगैर कोई माल नहीं बिकता और किताब तो इश्तहार से भी कम ही निकलती है। नेशनल बुक सेंटर वाले किताबों का मेला लगा कर किताबों के पास से आँख बचा कर निकल जाने वालों को राह पर लाने की कोशिश कर रहे हैं। खुदा उन्हें कामयाबी दे।

क्यों और कैसे पढ़ते हैं ?

दैनिक 'नवाय वक्त' में कुमारी अल्ताफ फातिमा एम० ए० बी० टी० ने बताया है कि लोग किताबें क्यों और कैसी पढ़ते हैं। उन्होंने लिखा है, किताबें पढ़ने के कारण भिन्न-भिन्न होते हैं। कई बार हम हीनता के बोध को दूर करने के लिए पढ़ते हैं और कई बार हीनता-बोध का आनंद लेने के लिए। कई बार किताब बोरियत को दूर करने के लिए पढ़ी जाती है और कई बार बोरियत का मज़ा चखने के लिए। पढ़ने वालों में बड़ी संख्या उनकी होती है जो किसी सोचे-समझे प्रोग्राम के बिना जो किताब हाथ लग गई उसे ही पढ़ना शुरू कर देते हैं। वह इस नसीहत पर विश्वास नहीं करते कि बिना सोचे-समझे पढ़ने से अपना वक्त भी खराब होता है और किताब का भी।

उपहार में मिली किताबें पढ़ने के बाद मेरे सामने भी यह सवाल आया था कि कौन-सी किताबें पढ़नी चाहिये। लायब्रेरियों में किताबों से ठसाठस भरी आलमारियों को देख कर मेरा दिल उदास हो जाता था और सोचने लगती थी कि यह छोटी-सी उम्र दुनिया भर की इतनी किताबों को अपने भीतर कैसे समेट सकेगी! धीरे-धीरे मालूम हुआ कि उन किताबों में कुछ ऐसी भी हैं जो इशारे करती हैं। मेरा अनुभव यह है कि जब किसी किताब ने मुझे इशारा किया तब उसे पढ़ कर मैं कभी नहीं पछताई। लेकिन अफसोस, उन किताबों में अधिकांश विदेशी भाषा में और विदेशों की छपी थीं।

मेरी समझ से किताब का चुनाव आदमी की उमर, जरूरत, वातावरण और समझ के अनुसार होता है लेकिन मेरी यह बात याद रखिये कि किताब का चुनाव कभी-कभी इंसान को रुसवा भी कर देता है।

औरतों की पसंद

आप शायद पूछें कि औरतें कैसी किताबें पढ़ती हैं। सो पहले वह रसोई और कढ़ाई-बुनाई का चाव से अध्ययन करती थीं, फिर सामाजिक उपन्यासों पर टूटीं और पढ़-पढ़ कर आँसू बहाती रहीं। अब उन्होंने पढ़ने का फैशन छोड़ दिया है। यह मुझे तब मालूम हुआ जब एक एयर

होस्टेस ने बताया कि "मैंने बहुत से शायरों की नावलें पढ़ रखी हैं।"

एक बड़ी बी ने मेरे बचपन में बताया था कि हमारे जमाने में दो तरह की किताबें होती थीं। एक—मीलाद अकबर, राहेनजात और शहादत नामा, दूसरी—उमरावजान अदा, छप्पन छुरी और जहरे इश्क। खांसाहब कभी-कभी पूछ बैठते थे कि क्या पढ़ रही हो। हम झट मीलाद अकबर की इबारत या शहादत नामे का कोई टुकड़ा सुना देते थे और वह इतमीनान के साथ हुक्का पीने लगते थे।

स्कूली खरीद

दैनिक 'नवाय वक्त' में ही हनीफ रामे ने स्कूली पुस्तकालयों में किताबों की खरीद पर रोशनी डालते हुए लिखा है—दुनिया भर में किताबों की खपत में लायब्रेरियों का बड़ा महत्व होता है। हमारे यहाँ अच्छी लायब्रेरियां कितनी हैं, यह न पूछिए। स्कूली लायब्रेरियों में भी पढ़े-लिखे लायब्रेरियन होते तो कुछ गुजारा हो जाता। लेकिन होता क्या है। पहले तो लायब्रेरी की ग्रांट ही साल भर मंजूर नहीं हो पाती। जब कारोबारी साल डूबने को होता है तब लायब्रेरी की ग्रांट उभरती दीख पड़ती है। स्कूल में कोई लायब्रेरियन होता और उसने कोई बढ़िया लिस्ट बना रखी होती तो फिर भी बात बन जाती लेकिन वहाँ किसी थके-मांदे मास्टर पर यह काम लादा गया है। वह ग्रांट को बचाने के लिए बाजार की तरफ दौड़ता है जहाँ दूकानदार 'हाजिर' माल सामने रख देता है। उस 'हाजिर' के साथ इंस्पेक्टर आफ स्कूल से लगा कर लायब्रेरियन तक के लिए कमीशननुमा रिश्वत भी नत्थी होती है जो हर एतराज का मुंह बंद कर देती है और वह किताबें बोरियों में भर कर स्कूल या कालेज पहुँचा दी जाती हैं जो साल भर में भी नहीं बिकीं, जिनको मक्खियाँ चाट गई हैं और जिनके टायटिल फट गये हैं—जिनके लेखक का नाम उसकी कृति के साथ ही गुम हो चुका है। स्कूलों और कालेजों में भी उन बोरियों का मुंह बंद ही रहता है, जब पाठ्य पुस्तकों पर ही सारी ताकत लगा दी जाती है तब व्यापक अध्ययन करना किसी हकीम ने नहीं बताया।

लेखक ने प्रकाशकों को ऐसी पत्रिका प्रकाशित करने की सलाह दी है जिसमें अच्छी और नई किताबों का विवरण हो और जो स्कूलों आदि को मुफ्त भेजी जाय।

बिचारा पुस्तक-विक्रेता

दैनिक 'मशरिक' ने मेले के अवसर पर एक पुस्तक विक्रेता का पत्र छापा है। विक्रेता बन्धु ने लिखा है कि मेरी दूकान पर ऊँची सोसायटी के लोग किताबें खरीदने आते हैं इस लिए मैं मालदार आदमी समझा जाता हूँ लेकिन असलियत यह है कि मैं बरबाद हो चुका हूँ।

एक दिन एक बहुत बड़े अफसर अपनी बीवी के साथ आये। इधर-उधर देखने के बाद बेगम साहबा ने मुंह फाड़ कर पूछा कि आप फलाँ-फलाँ किताबें पढ़ने के लिए नहीं दे सकते। माफी माँगने पर उन्होंने कहा कि किताबें खरीदना हमारी ताकत के बाहर है—मैं तो पड़ोस से मँगवा कर पढ़ लेती हूं। और वे साहब महीने में तीन हज़ार रुपये की तनख्वाह वसूल करते हैं।

ये ऊँचे जोड़े कैसी किताबें पढ़ते हैं, यह भी जान लीजिये। एक दिन एक साहब अपनी बेगम के साथ आये। रिसालों और अखबारों पर एक उड़ती नजर डाल कर मुँह बिगाड़ कर अंग्रेजी में बोले, आप के यहाँ दत्त भारती का तो कोई नावल है नहीं। मैं इशारा भी करूं तो लोग इनको झठ पहचान लेंगे इसलिए—

मैं तो इस कारोबार से तंग आ गया हूं। सोचता हूं कि शायद वक्त बदले और लोग किताब खरीद कर पढ़ने लगें। इसी उम्मीद के सहारे दुकान लगाये बैठा हूं।

- पुस्तकें पढ़िये !
- दूसरों को पढ़ने की प्रेरणा दीजिये !
- राष्ट्रीय पुस्तक समारोह में भाग लीजिये !

सम्पादक के नाम पत्र

पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का उचित मार्ग

बन्धुवर, वन्दे,

पिछले दिनों यह चर्चा का विषय रहा है कि राजस्थान सरकार द्वारा राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों के जाली संस्करण भारी संख्या में बिके, जिससे लाखों रुपये की राजकीय क्षति हुई। इस सम्बन्ध में खोज-बीन करने पर मुझे विश्वस्त जानकारी प्राप्त हुई है।

इस सम्बन्ध में राज्य की नीति स्पष्ट प्रतीत नहीं होती क्योंकि राज्य सरकार की घोषणा के अनुसार पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के व्यवसाय को "न हानि न लाभ" के आधार पर कर रही है। परन्तु यह जन-सेवा कहाँ तक नियमित हो पाई है यह सर्वविदित है।

मैंने लगभग २॥ वर्ष पूर्व माननीय शिक्षा मंत्री एवं वित्त मंत्री महोदय राजस्थान को इस सम्बन्ध में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया था, उसके अनुसार यदि राज्य सरकार पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य प्रान्तीय प्रकाशकों को सौंप दे, जिस प्रकार उत्तर प्रदेश में है, तो राज्य सरकार को लगभग १० लाख रुपये वार्षिक की आय इस मद में हो सकती है। साथ ही यह कार्य सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित रूप से चल सकता है। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय प्रकाशकों एवं मुद्रकों की भी रोजी-रोटी की व्यवस्था हो सकती है। ऐसी स्थिति में यह एक विचारणीय प्रश्न है कि हमारी सरकार एक सही कदम उठाने में क्यों हिचकिचा रही है। जब कि आपत्कालीन स्थिति को दृष्टि रखते हुए राष्ट्रीय बचत एवं जन-कल्याण के प्रश्नों को प्राथमिकता देना अनिवार्य कहा जा रहा है।

भवदीय,
प्रकाश चन्द्र जोशी
प्रबन्ध संचालक
दत्तबन्धु प्राइवेट लिमिटेड
महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर—

१ नवम्बर से ३० नवम्बर तक पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्त उन सभी आर्डरों पर जो १०० रु० नैट या इससे अधिक रकम के होंगे, ७।। प्रतिशत विशेष छूट दी जायगी। बिल्टी बैंक या वी०पी० द्वारा ही मंगाई जाय।

नवीन प्रकाशन
१९६३-६४

पुस्तक	लेखक	मूल्य
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	डा० नगेन्द्र	१२.५०
कूटकाव्य : एक अध्ययन	डा० रामधन शर्मा	१२.५०
युगचारण दिनकर	डा० सावित्री सिन्हा	१०.००
ध्यान सम्प्रदाय	डा० भरतसिंह उपाध्याय	१०.००
शरत्चन्द्र : व्यक्ति और साहित्यकार	मन्मथनाथ गुप्त	६.००
सौन्दर्य-तत्त्व और काव्य सिद्धान्त	डा० सुरेन्द्र बारलिंगे	६.५०
आधुनिक हिन्दी-काव्य में रूप-विधाएं	डा० निर्मला जैन	२५.००
आंध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास	डा० चन्द्रभान पाण्डे	१०.००
धूमकेतु	नरेश मेहता	८.००
मेरा समर्पित एकान्त	,,	३.००
प्रकृति और काव्य (संस्कृत-साहित्य)	डा० रघुवंश	१३.००
साहित्य-समीक्षा	मुद्राराक्षस	६.००
समर्थ जीवन-दर्शन	म. तु. कुलकर्णी	४.००
सम्मोहिता	उषादेवी मित्रा	५.००
कारावास	दोस्तोव्स्की	७.५०
भारत का सीमान्त	डा० जगदीशचन्द्र जैन	४.००
अपनी धरती	रेवतीसरन शर्मा	२.५०
अजन्ता की बोलती तस्वीरें	विमला दत्ता	२.५०
सरल रूपक मंजरी	विराज	२.००
श्री हित चौरासी	श्री ललिताचरण गोस्वामी	३.५०
नाली से	पी. केशवदेव	२.५०
रस सिद्धान्त	डा० नगेन्द्र	२०.००
आविष्कारों की सच्ची कहानी	ईगन लार्सन	३.५०
कांचन रंग	अनु० नेमिचन्द्र जैन	३.००
गुसाईं गुरुबानी		२०.००
अमिट रेखाएं	अक्षय कुमार जैन, रत्नसिंह शांडिल्य	३.५०
गोरी	मेजर गोवर्धन सिंह	३.००
कौशिकजी की इक्कीस कहानियाँ	सं० पीताम्बरनाथ कौशिक	५.००
सुभद्रा	रामचन्द्र तिवारी, सिद्धि तिवारी	५.००
मोतीलाल नेहरू	शांतिलाल छाजेड़	१.५०
खरगोश गुसाईं	वीणा दर	३.००
आर्ट की कहानी	रामनाथ पसरीचा	२.००
झबरी	विराज	२.५०
बालिस्तिया	ताजवर सामरी	१.५०
सूरज चाँद सितारे	संतराम वत्स्य	१.२५
कितने बजे ?	,,	१.२५
पौधों की कहानी	,,	१.२५
कृषि उद्योगों का विकास और पंचायतें	रामनारायण उपाध्याय	१.२५
विकास कार्यों में जन-सहयोग	क्लेरेंस किंग	४.५०
कवितायें : १९६३	सं० अजित कुमार, विश्वनाथ त्रिपाठी	४.००
Theory of Infinite Series	Dr. P. L. Bhatnagar, Dr. C. N. Srinivasiengar	10.00

• पुस्तकालयों को

कालेजों, विद्यालयों एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए १२।। प्रतिशत कमीशन की सुविधा अर्पित की जायगी। बाहरी आर्डरों पर एफ०ओ०आर०की सुविधा भी दी जायगी।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

पुस्तक-विक्रेताओं को ७॥ प्रतिशत छूट

'स्थायी ग्राहक योजना' के नये नियमों के अनुसार, अतिरिक्त कमीशन के अलावा, वर्ष के अंत में सभी स्थायी ग्राहकों को वर्ष भर की कुल खरीद पर ५ प्रतिशत नक़द बोनस अर्पित किया जायगा।

महत्वपूर्ण प्रकाशन
१९६२ एवं पूर्व

पुस्तक	लेखक	मूल्य
मालवीयजी के लेख	सं० पद्मकान्त मालवीय	८.००
मालवीय जी : जीवन-झलकियाँ	,,	८.००
डा० राधाकृष्णन्	रमेशनारायण तिवारी	१.७५
पुराण कथा-कौमुदी	पं० रघुनाथदत्त बन्धु	१०.००
कामायनी के अध्ययन की समस्याएं	डा० नगेन्द्र	३.००
पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य का इतिहास	चन्द्रकान्त बाली	१५.००
उपमा कालिदासस्य	डा० शशिभूषण दासगुप्त	३.००
हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण	महेन्द्र चतुर्वेदी	६.५०
लिच्छवियों के अंचल में	डा० जगदीशचन्द्र जैन	३.५०
न मीत न मंजिल	रेवतीसरन शर्मा	५.००
हृदय का काँटा	तेजरानी पाठक	३.००
चिराग की लौ	रेवतीसरन शर्मा	२.५०
दुनिया की दुनिया	मनमोहन मदारिया	२.००
आविष्कार और अन्वेषण	विराज	२.५०
ताजमहल पै कौआ बोला	सूर्यकुमार जोशी	२.५०
घर की बात (नाटक)	प्रेमनाथ दर	१.५०
डाक्टर नगेन्द्र के आलोचना-सिद्धान्त	नारायण प्रसाद चौबे	७.००
एक वासन्ती रात	मनमोहन मदारिया	३.००
अर्थहीन	डा० रघुवंश	४.५०
रेबेका	दाफनी दु मोरियर	८.००
हमारा शरीर	सन्तराम वत्स्य	१.२५
हमारा स्वास्थ्य	,,	१.२५
प्रेमचन्द के नारी-पात्र	ओप अवस्थी	५.००
मुन्ने की परेशानी	शशिप्रभा गुप्ता	१.५०
आल्हा	नर्मदा प्रसाद गुप्त	५.००
ब्रज भाषा के कृष्णभक्ति काव्य में अभिव्यंजना शिल्प	डा० सावित्री सिन्हा	२०.००
समीक्षात्मक निबन्ध	डा० विजयेन्द्र स्नातक	५.५०
हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध	डा० उदयभानुसिंह	१५.००
मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता	डा० उमाकांत	१५.००
गुप्त जी की काव्य साधना	,,	८.००
प्रकृति और काव्य (हिन्दी)	डा० रघुवंश	१२.००
नाट्यकला	,,	७.५०
खड़ी बोली काव्य में अभिव्यंजना	डा० आशा गुप्त	१६.००
भारतीय कला के पदचिह्न	डा० जगदीश गुप्त	५.००
हिन्दी साहित्य रत्नाकर	डा० विमल कुमार जैन	५.००
हिन्दी के अर्वाचीन रत्न	,,	७.००
रामचरित मानस और साकेत	परमलाल गुप्त	५.००
धूल-धूसरित मणियाँ	सीता बी० ए०	१५.००
आदिम मानव समाज	भूपेन्द्रनाथ सान्याल	४.००
अनेक देश एक इन्सान	कुलभूषण	६.००
दूसरी दुनिया	अक्षयकुमार जैन	३.००
ब्रिटेन में चार सप्ताह	,,	२.५०
India of Vedic Kalpasutras	Dr. Ram Gopal	35 00

- फुटकर ग्राहकों को—
- दो रुपये से अधिक के आर्डर पर आधा डाक-व्यय माफ।
- पाँच रुपये से अधिक के आर्डर पर पूरा डाक-व्यय माफ।
- दस रुपये से अधिक के आर्डर पर पूरा डाक व्यय माफ एवं १० प्रतिशत कमीशन।

'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-६

परीक्षा में प्रथम श्रेणी
अध्ययन के तरीकों का सर्वेक्षण

विश्वविद्यालय परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी व अन्य उच्च श्रेणियाँ प्राप्त करने के मामले में कौन-कौन सी बातों का महत्वपूर्ण स्नान है इस बात का पता एक सर्वेक्षण से चला है।

आगरा सेन्ट जोन्स कालिज के मनोविज्ञान विभाग के पथप्रदर्शन के अन्तर्गत कालिज के छात्रों की आदतों का जो एक सर्वेक्षण किया गया है उससे बहुत-सी दिलचस्प बातें ज्ञात हुई।

सर्वेक्षण से पता चला है कि जिन छात्रों की संयोगवश प्रथम श्रेणी आयी है उन्होंने अपनी पढ़ाई प्रातःकाल के घंटों में की जब कि उनके अन्य साथियों ने, जो कि परीक्षा में कम भाग्यशाली रहे हैं, शायद ही सुबह पढ़ा हो।

अधिक अंक प्राप्त करने वालों ने अपना ८० प्रतिशत समय प्रातःकालीन समय में पाठ्य पुस्तकें पढ़ने पर दिया तथा २० प्रतिशत ने शाम के समय पढ़ा जब कि तीसरी श्रेणी में पास होने वाले छात्रों ने शाम के समय अधिक तथा सुबह के समय बहुत कम पढ़ा।

और अधिक सफल छात्रों ने अतिरिक्त पढ़ाई दोपहर व शाम को की। अन्य छात्रों ने सुबह के समय पढ़ने की तकलीफ नहीं की और अपना ३५ प्रतिशत समय गैर पाठ्य पुस्तकें पढ़ने में खर्च किया।

पढ़ाई के तरीके में भी उल्लेखनीय अन्तर पाया गया है। अधिक नम्बर प्राप्त करने वाले ८० प्रतिशत छात्र टहलते हुए पढ़े, २० प्रतिशत बिस्तर पर लेटकर तथा २० प्रतिशत ने साथियों के साथ मिल कर पढ़ा। जिन छात्रों ने परीक्षा में कम नम्बर लिये, उनमें से ८० प्रतिशत ने बिस्तर पर लेटकर पढ़ना पसन्द किया।

परीक्षाओं के लिये तैयारी में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों में से ६८ प्रतिशत ने अपने द्वारा तैयार किये गये नोट्स पर निर्भर किया तथा मूल पुस्तकें भी पढ़ीं। तीसरी श्रेणी में पास होने वाले छात्रों में से ५४ प्रतिशत ने श्रेणी में लिये गये नोट्स ही पढ़े और २३ प्रतिशत ने बाजार से कुंजियाँ खरीद कर पढ़ीं।

अभिभावकों के पढ़े लिखे होने से भी छात्रों की सफलता पर काफी प्रभाव पड़ा।

सर्वेक्षण से यह तथ्य भी सामने आया है कि प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र अच्छे समृद्ध घरानों के ही लड़के हों, ऐसी बात नहीं है। जिन छात्रों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की, उनमें से ४० प्रतिशत कम आय वाले वर्ग के थे। जो छात्र पढ़ाई में व क्लास में जाने में नियमित रहे वे उनसे बहुत अच्छे रहे जो कि पढ़ाई में अनियमितता बरतते थे।

शिक्षा के उद्देश्य का जहाँ तक सम्बन्ध है, ६० प्रतिशत प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना था जब कि २० प्रतिशत का अच्छा रोजगार मिल जाना तथा २० प्रतिशत का प्रतिष्ठा के लिये था। तीसरी श्रेणी प्राप्त करने वालों में २० प्रतिशत मजे के लिए पढ़ते थे तथा १५ प्रतिशत प्रतिष्ठा के लिए।

नेहरू जी

पुस्तकों का अनादर देख कर नाराज हो जाते थे। लिखने पढ़ने की सामग्री को स्वच्छ और व्यवस्थित रखना उनका व्यसन बन गया था।

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह

प्रकाशकों और विक्रेताओं से अनुरोध

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधान मन्त्री ने संघ के सदस्यों तथा अन्य प्रमुख प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं को निम्नलिखित सन्देश भेजा है :

बन्धुवर

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्यसमिति ने विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाने का निश्चय किया है। यह समारोह हमारे दिवंगत नेता श्री जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन १४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक मनाया जाता रहा है। इस वर्ष भी उन्हीं दिनों में एक सप्ताह तक मनाया जायेगा।

श्री नेहरू अनन्य पुस्तक-प्रेमी थे। उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि पुस्तकें जनता की रुचि का अभिन्न अंग बन जायं। इस बार का समारोह उनकी अनुपस्थिति में होगा। अतः हम सबका कर्त्तव्य है कि पुस्तकों के उस प्रणेता और पुस्तक-संसार के उस संरक्षक की स्मृति में इस समारोह का आयोजन और भी अधिक लगन तथा परिश्रम के साथ करें।

समारोह को सफल बनाने के लिए आपका सक्रिय सहयोग आवश्यक है। समारोह के दिनों में आप दुकानों को अधिक से अधिक साफ-सुथरी रखें और उन्हें विशेष रूप से सजायें जिससे जन-साधारण का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो। इस अवसर पर यदि आप कपड़े का एक आकर्षक बैनर अपनी दुकान पर लगा सकें तो और भी उत्तम रहेगा।

इस सम्बन्ध में प्राप्त आपके अमूल्य सुझावों का संघ स्वागत करेगा। वह सैदव आपकी सहायता के लिए प्रस्तुत है। उसकी ओर से एक आकर्षक पोस्टर तैयार कराया जा रहा है। पोस्टर की कुछ प्रतियाँ शीघ्र ही आपकी सेवा में भेजी जायेंगी। आप उसे अपनी दुकान पर तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर लगवाने की कृपा करें।

संघ समाचार

पुस्तक-प्रदर्शनियों और गोष्ठियों का आयोजन भी आप अपने नगर में करायें जिससे जन-साधारण में पुस्तकों के प्रति रुचि जाग्रत हो। तत्सम्बन्धी आयोजनों की सूचना भी हमें देने का कष्ट करें ताकि उन्हें संघ के मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' में प्रकाशित किया जा सके।

पुस्तक प्रदर्शनी

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रधान मन्त्री ने निम्नलिखित परिपत्र संघ के सदस्यों आदि को भेजा है :

प्रिय बन्धु,

इस वर्ष 'राष्ट्रीय पुस्तक समारोह' में अन्य विभिन्न कार्यक्रमों के अतिरिक्त नई दिल्ली में हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही है। इस प्रदर्शनी में विज्ञान, तकनीक आदि विषयों को छोड़कर १९६२, १९६३ और १९६४ में प्रकाशित अन्य सब साहित्य की पुस्तकें रखी जायेंगी। आप से प्रार्थना है कि आप उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, संस्मरण, जीवनियाँ, यात्रा-विवरण, बालसाहित्य, प्रौढ़-साहित्य तथा मानविकी (Humanities) विषयों की विश्वविद्यालय-स्तरीय पाठ्य-पुस्तकें अवलिम्ब संघ के कार्यालय को भेज दीजिये; प्रकाशन १९६२ से पहले के न होने चाहिये। विज्ञान और तकनीकी साहित्य की एकाधिक प्रदर्शनियाँ भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इधर आयोजित की हैं, इसलिए संघ ने इन विषयों के अतिरिक्त अन्य हिन्दी प्रकाशनों की प्रदर्शनी करने का निश्चय किया है।

संघ का इरादा है कि इस प्रदर्शनी की पुस्तकों में से एक विशिष्ट समिति द्वारा, जिसमें लेखक, प्रकाशक और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रतिनिधि हों, चुनी हुई पुस्तकों की प्रदर्शनी देश के अन्य भागों में, विशेषतः अहिन्दी प्रदेशों में ले जाई जाय।

प्रदर्शनी की सफलता आपके सहयोग पर अवलम्बित है। कृपया फ्रेड पेड रेलवे रसीद द्वारा अपने प्रकाशनों के पार्सल दिल्ली के लिए रवाना कर दीजिए। प्रदर्शनी के बाद संघ सुरक्षित पुस्तकें लौटा देने का जिम्मा लेता है।

अल्प आयु वालों के लिए साहित्य की सूची

प्रधान मंत्री ने निम्नलिखित पत्र संघ के सब सदस्यों तथा प्रमुख प्रकाशकों को भेजा है।

प्रिय बन्धु,

बुक्स फार एशियन स्टुडेंट्स (एशिया फाउंडेशन) के डायरेक्टर श्री सोहनसिंहजी से हमें एक पत्र प्राप्त हुआ है। जिसकी प्रतिलिपि पृष्ठांकित है। उन्होंने लिखा है कि वे एक ऐसी योजना बना रहे हैं जिससे अल्पायु के पाठकों के लिए उपयोगी पुस्तकें प्राप्त कराई जा सकें। पुस्तकें ऐसे विषयों पर होनी चाहिए जो हमारे प्रतिदिन के जीवन के उपयोग में आवें—जैसे साइकिल, सिलाई की मशीन, बिजली का सामान, मशीनरी आदि की देखभाल और मरम्मत, आजीविका-उपार्जन, विभिन्न उद्योगों में कार्य, गृह-उद्योग आदि, अच्छी नागरिकता, ऐच्छिक संगठन एवं मिलन, उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक मनोरंजन, आदि-आदि। इनके अतिरिक्त अन्य इसी प्रकार के उपयोगी विषय हो सकते हैं।

यदि संबन्धित विषयों की पुस्तकों की एक-एक प्रति उन्हें मिल जाये तो पुस्तकों की प्रारम्भिक सूची बनाने में उनको सहायता मिलेगी। उनकी फाउंडेशन उन पुस्तकों का प्रचार-प्रसार भी करेगी। अतः आप अपने उपयुक्त प्रकाशनों की एक-एक प्रति संघ के कार्यालय को शीघ्र ही भिजवा दें, ताकि वे उनकी सेवा में भेजी जा सकें।

इस सम्बन्ध में आपके कोई अन्य सुझाव हों तो वह भी लिखने की कृपा करें।

नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

अलंकार प्रदीप : ले० डा० उमेशचन्द्र पाण्डेय ; प्र० किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद; सा० क्रा०; पृ० १६० ; मू० २.०० ।

कन्नड़ साहित्य का नवीन इतिहास : ले० सिद्धगोपाल काव्यतीर्थ; प्र० आशा प्रकाशन गृह, ३ नाई वाला करोल बाग, नई दिल्ली; मू० ३.०० ।

काव्यात्म-मीमांसा : ले० डा० जयमन्त मिश्र; प्र० चौखम्बा विद्याभवन, चौक वाराणसी-१; मू० १६.०० । काव्य सिद्धान्त में आत्मा की गवेषणा ।

पंजाबी साहित्य का नवीन इतिहास : ले० योगेन्द्रपाल अग्रवाल एम० ए०; प्र० आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली; मू० ३.०० ।

प्रयोगवादी काव्यधारा : ले० डा० रमाशंकर तिवारी; प्र० चौखंबा विद्याभवन वाराणसी-१; मू० १२.५० ।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के सामाजिक नाटक : ले० भारतभूषण चड्ढा; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली; सा० डि०; पृ० १७०; मू० ५.०० ।

हिन्दी की छायावादी कविता का कलाविधान : ले० डा० बलबीर सिंह 'रत्न'; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली; सा० डि; पृ० ३५०; मू० १२-५० ।

कविता

नदी किनारे : ले० नीरज; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली; सा० क्रा० ; पृ० ६८; मू० १.५०, तृतीय संस्करण ।

प्रेमांजलि : ले० बलजीत 'तुलसी'; प्र० आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १००; मू० २.५० ।

उपन्यास

जनभोग्या : ले० पुरुषोत्तम गौड़; प्र० किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद; सा०क्रा०; पृ०१६०, मू० २.५० ।

ज़िन्दगी एक घाव एक फूल : ले० हरनाम प्रसाद वाजपेयी; प्र० प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० ५००; मू० १०-०० ।

टीपू सुल्तान : ले० यादवचन्द्र जैन; प्र० प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० १२८; मू० २.५० ।

दर्रा : ले० जॉन स्लिमिंग; प्र० लोकप्रिय प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली ; सा० क्रा०-८ ; पृ० २८६; मू० २.५० ।

निर्झरिणी और पत्थर : ले० कुमारी निर्मला दर; प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चन्द्रलोक जवाहर नगर, दिल्ली-६; सा० क्रा०-८; पृ० २६०; मू० ५.०० ।

भग्य रेखा : ले० गुरुदत्त; प्र० उमेश प्रकाशन, ५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली ; सा०क्रा०; मू० ३.०० । पु० मु० ।

मां : ले० म० गोर्की; प्र० प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०; मू० ६.०० ।

विद्यादान :

सभ्यता की ओर : ले० गुरुदत्त; प्र० उमेश प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; सा० क्रा०; मू० प्रत्येक ६.०० । पु० मु० ।

सूनी राह : ले० भगवती प्रसाद वाजपेयी ; प्र० प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०; मू० ४.०० ।

कथा-कहानी-संस्मरण-जीवनी

दशरथनन्दन श्रीराम : ले० राजगोपालाचार्य; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ४००; मू० ६.०० । पु० मु० ।

नेहरू व्यक्तित्व विचार : प्र० सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली; सा० क्रा०-४; पृ० ६००; मू० २५.०० । संग्रह । संस्मरण ।

महात्मा गांधी : ले० वी० आर० नन्दा; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ३८४; मू० ७.०० । संस्मरण ।

राजाजी की लघुकथाएँ : ले० राजगोपालाचार्य; सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० फु०-८; पृ० ८०; मू० २.०० पु० मु० ।

लाल बहादुर शास्त्री : ले० व्यथित हृदय; प्र० रामप्रसाद एण्ड संस; आगरा; सा० क्रा०-८; पृ० १४८; मू० ३.५० ।
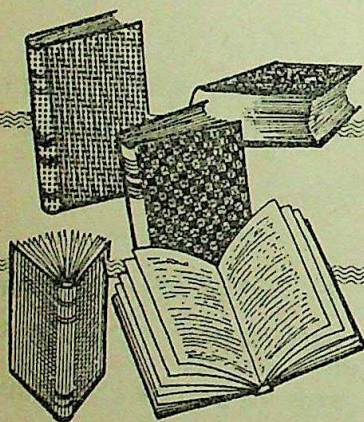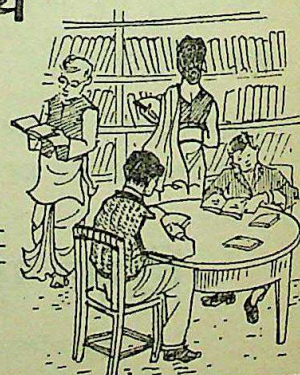
नाटक-एकांकी

छलना : ले० भगवतीप्रसाद; प्र० प्रभात प्रकाशन २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा०क्रा०; पृ० १३२; मू० ३.०० ।

धूमशिखा : ले० उदयशंकर भट्ट; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा०क्रा०; पृ० १५२; मू० २.५० । पु० मु० ।

फाल्गुनी : ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ; प्र० प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-६; सा० क्रा; मू० २.०० ।

मुक्तधारा : ले० प्र० सा० मू० पूर्वोक्त । पु० मु० ।

मालविकाग्निमित्र : अ०पी० डी शास्त्री; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० क्रा०-८; पृ० १६०; मू० ३.०० ।

रेशमी डोरे : ले० डा० जमीला कुरैशी; प्र० परिमल प्रकाशन, १९४ सोहबतिया बाग, इलाहाबाद-६; सा० क्रा०; पृ० ११२; मू० ३.०० ।

बाल-किशोर साहित्य

ईश्वर की सिठाई : ले० शैलेश मटियानी; प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; सा० फु०-८; पृ० ४४; मू० १.०० ।

कोकाबेली : ले० डा० विद्याभूषण विभु; प्र० परिमल प्रकाशन, १९४ सोहबतियाबाग, इलाहाबाद-६; सा० क्रा० पृ० ८०; मू० १.५० । कविताएं, सचित्र ।

गढ़वाल की लोककथाएँ : ले० गोविन्द चातक; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० फु०-८; पृ० ५६; मू० १.५० । सचित्र तृ० सं० ।

छोटी-बड़ी कहानियां : ले० योगराज 'थानी'; प्र० आशा प्रकाशन गृह, करौल बाग, नई दिल्ली; मू० १.५० ।

दुष्यन्त शकुन्तला : ले० ठाकुरदत्त मिश्र; प्र० किताब महल, इलाहाबाद; सा० डि० पृ० ७२; मू० १.५० । तृ० सं०

पढ़ो, हँसो और गाओ : ले० उर्मिला वर्मा; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० फु-८; पृ० २४; मू० १.०० कविताएँ ।

प्रतिज्ञा : ले० ठाकुरदत्त मिश्र; प्र० किताब महल प्रा० लि०; इलाहाबाद; सा० डि०; पृ०६०; मू० १.५० । तृ० सं०

बाजीराव पेशवा : ले० उमाशंकर; प्र० उमेश प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली-६; सा० क्रा०; पृ० ९६; मू० २.०० । पु० मु० ।

मनोरंजक कहानियां : प्र० पब्लिकेशन डिवीजन, दिल्ली ६; सा० क्रा० ४ ट्र; पृ० १०४; मू० १.०० । तृतीय संस्करण

रंग-बिरंगी कहानियाँ : ले० विष्णुदत्त 'विकल'; प्र० आत्माराम एंड संस, दिल्ली-६; सा० फु-८; पृ० ५६; मू० १.५० । सचित्र ।

शिक्षाप्रद एकांकी : ले० नन्दलाल चत्ता ; प्र० आशा प्रकाशन गृह, करौल बाग, नई दिल्ली; मू० १.५० । ८ एकांकी ।

साहस और पराक्रम की कहानियाँ : ले० मनहर चौहान

सिपहसालार खाँ : ले० विश्वमित्र शर्मा

सुन्दर सुन्दर कहानियाँ : ले० धर्मपाल शास्त्री एम. ए.; प्र० आशा प्रकाशन गृह, करौल बाग, नई दिल्ली; मू० २.००, १.५०, १.५० ।

ज्ञान-विज्ञान

अनोखी धरती अनोखे लोग : ले० मीनादास, शिवतोष दास; प्र० संक्रांति प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा०फु०-८; पृ०१०८; मू० ४.०० । रंगीन, सचित्र ।

अहिंसा की कहानी : ले० यशपाल जैन; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली-१; सा० क्रा०-४; पृ० ५६; मू० २.०० ।

गगन गंगा : ले० डा० विद्याभूषण 'विभु'; प्र० परिमल प्रकाशन, १९४ सोहबतिया बाग, इलाहाबाद; सा० क्रा०; पृ० ९६; मू० २.०० । ग्रह-नक्षत्रों पर कविताएं ।

बेकार कुछ नहीं : ले० अमरनाथ; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली-१; सा० क्रा०-८; पृ० ४०; मू० ०.४० ।

भारत के जंगली जीव : प्र० पब्लिकेशंस डिविज़न, दिल्ली-६; सा० फु०-४ ट्र; पृ० १६४; मू० ३.५० ।

युगों-युगों में दिल्ली : ले० निर्भयस्वरूप वर्मा एम०

ए०; प्र० आर्य बुक डिपो, ३० नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली; मू० २.०० ।

संसार की बालविभूतियाँ : ले० शंकर बाम; प्र० संक्रांति प्रकाशन, ३७ दरियागंज, दिल्ली; सा० फु०-८; पृ० १००; मू० ३.५० । सचित्र ।

इतिहास-राजनीति

अजेय राष्ट्रभावना : ले० डा० भगवतशरण उपाध्याय, प्र० प्रभात प्रकाशन, २०५ चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० १६३; मू० ३.५० । इतिहास ।

अमरीकी राजनीति और राजनैतिक दल : ले० किलंटन रासिटर; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० डि०-८; पृ० १८०; मू० ४.०० । सचित्र ।

रचनात्मक राजनीति : सं० रामकृष्ण बजाज; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० २००; मू० ३.५० ।

राजनय के सिद्धांत और व्यवहार : ले० श्रीमती कृष्णराय; प्र०चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी; मू० ५०० ।

सभ्यता की कहानी : पश्चिम एशिया खण्ड : ले० विल डूरेंट, अनु० श्रीकांत व्यास; प्र० किताब महल प्रा० लि० इलाहाबाद; सा० डि०; पृ० ४००; मू० १०.०० । स्टोरी ऑफ सिविलीजेशन के ओरिण्टल हैरिटेज खण्ड का अनुवाद ।

हमारा स्वाधीनता संग्राम : ले० डा० विमलेश; प्र० साहित्यवाणी, ५ गोसाई टोला, इलाहाबाद; सा० क्रा०-८; पृ० ६६; मू० १.२५ ।

चिकित्सा

आधुनिक एलोपैथिक गाइड : ले० हरनारायण कोकचा; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली; सा० क्रा०; पृ० ५००; मू० १५.०० ।

चूरन भंडार : हरनारायण कोकचा; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६; सा० क्रा०; मू० ३.०० ।

प्राकृतिक चिकित्सा क्या व कैसे : ले० महाबीर प्रसाद पोद्दार; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० ८०; मू० १.०० । पु० मु० ।

धर्म-आचार-ज्योतिष

ज्योतिष-विज्ञान : ले० पं० विशुद्धानंद; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; सा० क्रा०-८; मू० ६.०० ।

बाल्मीकी रामायण भाषा : पं० जैगोपाल; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० २२×२९-८; मू०१२.०० ।

युग धर्म : ले० हरिभाऊ उपाध्याय; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० २००; मू० २.५० । पु० मु० ।

शिव उपासना : (स्तुति) : रामकृष्ण 'रसिक'; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० क्रा०-८; मू० ४.५० ।

विविध

किशोरों का मनोभाव : ले० एस० पी० कनल; प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; सा० डि०-८; पृ० १६०; मू० ७.५० । मनोविज्ञान ।

जवाहरलाल नेहरू-श्रद्धांजलि : प्र० पब्लिकेशंस डिविजन दिल्ली-६; सा० क्रा०-४; मू० १.५० ।

पत्र-व्यवहार भाग ४ : सं० रामकृष्ण बजाज; प्र० सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० २५० मू० ४.०० ।

प्रकृति के बीच अनुभूति के क्षण : ले० एडविन वे० टील, अनु० मुद्राराक्षस; प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; सा० क्रा०-८; पृ० २५२; मू० ४.५० । भूगोल, सचित्र ।

लाइनमैन वायरमैन गाइड : नरेन्द्रनाथ; प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; सा० क्रा०-८; मू० १५.०० ।

सचित्र गृहविज्ञान : ले० आशारानी व्होरा; प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६; सा० क्रा-८; पृ० ४६०, मू० ८.०० ।

सहकारिता : पं० जवाहरलास नेहरू; प्र० सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली; सा० क्रा०-८; पृ० १२८; मू० २.०० । ग्रामोपयोगी ।

इस मास के नए प्रकाशन

पहले से कहीं आकर्षक सजा-सज्जा के साथ

उपन्यास

सन्तुलन-असन्तुलन—मनहर चौहान

मनहर की लेखनी का एक और कमाल। जनाब ! यह एक नहीं दो उपन्यास हैं। एक सन्तुलन दूसरा असन्तुलन। दोनों एक ही जिल्द में—फिर भी स्वतन्त्र आवरण पृष्ठ लिए हुए। हिन्दी में पहली बार इस प्रकार के प्रकाशन का प्रयोग, रोचक इतने कि एक ही बैठक में पढ़ जाएं।

किशोर-उपन्यास-माला के नए पुष्प

शान्तिदूत नेहरू —वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

वीर कुँवरसिंह "

भीष्म —सुदर्शन चोपड़ा

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य —प्रकाश नगायच

गुरु अमरदास —राजेश शर्मा

विविध

शेक्सपियर के नाटकों की कथाएँ भाग २

—संपादक शत्रुघ्नलाल शुक्ल

पुस्तक विक्रेता बन्धु अपना आर्डर भेजें।

उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

हमारे कुछ प्रसिद्ध प्रकाशन

उपन्यास

सोना और खून भाग २ उत्तरार्द्ध
आचार्य चतुरसेन ९.००
अतीत के चित्र
मोहनलाल महतो वियोगी ४.००
कांदीद वाल्तेयर
(मूल फ्रेंच से अनूदित) २.००
पाथेय दयाशंकर मिश्र ३.५०
छोटी चाची " ३.५०
छोटी बहू " ३.५०
चातकी " ३.५०
पानी की दीवार रजनी पनिकर ३.००
अन्धेरे के दीप ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
कान्ता ओमप्रकाश शर्मा ३.५०
हार या जीत देवदूत १.७५
अन्धेरा-सवेरा यादवचन्द्र जैन ४.००
ज्योति-किरण विमल वेद ४.००
रायसीना की लपटें
भगवद्दत्त 'शिशु' ३.००
नर्तकी रूपकोसा (प्रथम भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.५०
नर्तकी रूपकोसा (द्वितीय भाग)
अनु० मनोहर लाल चौहान ४.००
प्राणों की प्यास मधूलिका ३.५०

कहानी संग्रह

कुछ पैसे राम सरन शर्मा १.२५
मलयानिल नीलकण्ठ पिल्ले २.००
भाग्यरेखा भीष्म साहनी १.७५
कथा मंजरी श्री यश २.५०
सपूत शकुन्तला अग्रवाल २.००
उपनिषदों की कहानियाँ १.७५

नाटक-संग्रह

नीर-क्षीर क्षेमचन्द्र 'सुमन' २.५०

जीवनियाँ और संस्मरण

प्रवासी की आत्म-कथा
स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ८.००
एक युग : एक प्रतीक
देवेन्द्र सत्यार्थी ४.००

लोक साहित्य, दर्शन तथा हास्य

अगुआ और बनफ्शे का फूल
खलील जिब्रान ३.००
आकाश-पाताल
श्री जी. पी. श्रीवास्तव २.२५
बेला फूले आधी रात
देवेन्द्र सत्यार्थी १०.००
नई जिन्दगी डा० लक्ष्मीनारायण ३.५०

हमारा बाल साहित्य

बड़ों का बचपन
(भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)
विश्वमित्र शर्मा २.२५
सोने की कहानियाँ
विश्वमित्र शर्मा १.५०
अणुशक्ति की कहानी
विश्वमित्र शर्मा १.२५
सुनो कहानी विश्वमित्र शर्मा २.००
(दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत)
अलिफ लैला विश्वमित्र शर्मा ५.००
देश-देश के बच्चे (प्रथम भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
देश-देश के बच्चे (द्वितीय भाग)
रमेशचन्द्र 'प्रेम' १.२५
सोनपरी (लोक कथाएँ)
जहूरबख्श १.२५
हाय नागिन (लोक कथाएं)
जहूरबख्श १.२५
राधाकृष्ण (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत) १.२५
आकाश के अचरज अन्ना दीदी २.२५
धरती के अचरज अन्ना दीदी २.२५
घोड़ों की खेती श्री जहूरबख्श १.५०
हिन्दी बाल सखा
आ० सुन्दरसिंह ०.६५
ललारी और नाई
हरजसराय जैन १.२५
कलन्दरों की आत्मकथा " १.५०
अनजाने देश में ओम प्रकाश १.५०
रमई काका कस्तूरीलाल टण्डन १.७५
घनचक्कर रुद्रदत्त मिश्र १.५०
साहसी शेखू (भाग १)
दयाशंकर मिश्र 'दद्दाजी' १.५०
साहसी शेखू (भाग २) " १.५०
चुटियावाले चाचाजी " १.५०
बच्चों के बापू जहूरबख्श २.२५

भारत-परिचय माला

काश्मीर विश्वमित्र शर्मा १.७५
बंगाल मन्मथनाथ गुप्त १.७५
केरल प्रभाकर माचवे १.७५
महाराष्ट्र " १.७५
असम " १.७५
पंजाब लेखराम १.७५
राजस्थान शोभालाल गुप्त १.७५
उत्तरप्रदेश रामनारायण अग्रवाल १.७५
बिहार मोहनलाल महतो वियोगी १.७५
मद्रास योगराज थानी १.७५
आंध्र योगराज थानी १.७५
मैसूर " १.७५
गुजरात मनहरलाल चौहान १.७५

राजहंस पब्लिकेशन्स, मराडी रुई, सदर बाजार, दिल्ली-६

सूचना सार

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी और पुस्तक व्यवसायियों की संगोष्ठी

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित भारतीय भाषाओं की प्रथम पुस्तक प्रदर्शनी २६ नवम्बर से २ दिसम्बर तक रवीन्द्र भवन की दीर्घाओं में होगी। प्रदर्शनी के अवसर पर पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण, वितरण और प्रसारण में संलग्न सज्जनों की एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया है। गोष्ठी की चर्चा का केन्द्रिय विषय 'आज के लिए आवश्यक पुस्तकें' होगा। गोष्ठी की ५ बैठकें होंगी जिनमें विषय की निम्नलिखित शाखाओं पर इस क्रम से चर्चा होगी:

२६ नवम्वर प्रातः तीन घण्टे की बैठक में—जीवन और साहित्य अर्थात् पुस्तक का विषय।

२६ नवम्वर सायं २।। घण्टे—प्रस्तुतीकरण की समस्याएँ, कागज, मुद्रण और वंधन।

३० नवम्बर, प्रातः २।। घण्टे—वितरण, विक्री का अर्थशास्त्र।

३१ नवम्बर, सायं २।। घण्टे—वाचन रुचि और उसमें पुस्तकालयों का योगदान।

१ दिसम्वर, प्रातः २।। घण्टे—उपसंहार और सुझाव

पहली और अंतिम बैठक की अध्यक्षता नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० बी० वी० केसकर करेंगे।

एशिया की प्रिंटर्स कांग्रेस मलीना में तीसरे अधिवेशन की तैयारी

एशिया की प्रिंटर्स एण्ड ग्राफिक आर्ट कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन २० से २४ फरवरी (सन् ६५) तक फिलीपीन की राजधानी मनीला में हो रहा है। फिलीपीन प्रिंटर्स एसोसियेशन के डायरेक्टरों ने अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ से अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि भेजने का अनुरोध किया है। अधिवेशन में भाग लेने वालों के ठहरने आदि का सुविधाजनक प्रबन्ध किया जायगा। अधिवेशन के अवसर पर मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे।

वाल्मीकि एवं तुलसी की आत्मा जब तड़पी होगी...

पूना में शालांत परीक्षा पास कुछ छात्रों ने अपने सामान्य ज्ञान का परिचय देते हुए बताया कि टालस्टाय व शेक्सपीयर इसलिए प्रसिद्ध थे कि उन्होंने रामायण लिखी। गनीमत है यह नहीं बताया कि रामायण संस्कृत में लिखी या अवधी में।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कि सिंह कहाँ पाये जाते हैं बताया गया—जंगल में या चिड़िया घर में। डिस्कवरी आफ इंडिया (नेहरूजी लिखित) के लेखक कोलंबस एवं वास्कोडिगामा को बताया गया और मिर्जा गालिब को बिहार का राज्यपाल कहा गया।

और टेलिफोन के आविष्कारक अलेक्जांडर ग्राहम बेल के बारे में यह खोज रही कि उन्होंने 'चन्द्रगुप्त' का पता लगाया था। एक छात्र ने इस आविष्कार के नाम से कुछ सम्बन्ध जोड़ा और लिखा—यह एक तरह की बिजली की घण्टी है।

और केरल की राजधानी के लिए त्रिवेन्द्रम छोड़कर भारत के अन्य सभी नगरों के नाम लिए गये।

पंजाब में राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकें

शिक्षा विभाग ने निर्णय किया है कि आगामी स्कूल सत्र १९६५-६६ से कक्षा पहली से पाँचवीं तक नई 'राष्ट्रीयकृत हिन्दी और पंजाबी रीडर' पुस्तकें पढ़ाई जाएं, जिसमें पहली कक्षा के लिए प्राइमरी और चौथी तथा पांचवीं कक्षा के लिए सामाजिक शिक्षा की नई पुस्तकों के अन्य सेट तथा पहली से तीसरी कक्षा तक के सामाजिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए गाइड पुस्तकें भी सम्मिलित हैं।

पाठ्य-क्रम में इन विषयों पर हाल में ही निर्धारित पुस्तकें उक्त कक्षाओं में वर्तमान स्कूल सत्र के बाद नहीं पढ़ाई जायेगी।

मिडल परीक्षा में प्रश्नपत्रों की नई प्रणाली

मिडल स्तर की परीक्षा में अनुचित साधनों के प्रयोग को रोकने के लिए पंजाब राज्य के शिक्षा विभाग ने यह निर्णय किया है कि वर्ष १९६५ की मिडल स्टैंडर्ड परीक्षा में प्रत्येक केन्द्र के परीक्षार्थियों को एक ही साथ एक ही विषय पर दो अथवा दो से अधिक प्रश्न पत्र दिए जाएंगे। अर्थात् कुछ परीक्षार्थियों के पास एक प्रकार का प्रश्न-पत्र होगा तो कुछ के पास दूसरे प्रकार का और अन्य के पास तीसरे प्रकार का। किन्तु सब प्रश्न पत्र एक ही विषय (सबजेक्ट) पर होंगे और सभी में पूछे गए प्रश्नों का स्तर समान होगा। विभिन्न प्रकार के प्रश्न पत्रों को परीक्षार्थियों में इस प्रकार बांटा जाएगा कि वे अपने से आगे अथवा पीछे और अगल-बगल बैठे परीक्षार्थियों से नकल न कर सकें।

एक ही विषय पर विभिन्न प्रश्न पत्रों का रंग भी अलग-अलग होगा। उदाहरण स्वरूप, यदि एक परीक्षार्थी को हरे रंग का प्रश्न पत्र दिया गया है तो दूसरे के पास नीले रंग का प्रश्न पत्र होगा और उसके दूसरी तरफ किसी तीसरे रंग का प्रश्न पत्र बाँटा जाएगा।

विद्यार्थियों को अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के ऊपर प्रश्नपत्र का रंग लिखना होगा। प्रश्न पत्र के रंग का नाम प्रश्न पत्र के ऊपर दाएं कोने पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा होगा और परीक्षार्थियों को केवल उसी रंग का नाम अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के ऊपर लिख देना होगा।

प्रश्न पत्रों में प्रश्नों की क्रम संख्या क्रमशः लगातार दी जाएगी। उदाहरणतया, यदि एक प्रश्न पत्र में १० प्रश्न हैं तो उसमें क्रमांक १ से १० तक दिया जाएगा, और दूसरे प्रश्न पत्र में ११ से २० (१ से १० नहीं) क्रमांक मुद्रित होगा। इसी प्रकार तीसरे प्रश्न पत्र में क्रमशः क्रमांक मुद्रित होगा।

जूनियर बेसिक स्कूलों के लिए
१.५० करोड़ से अधिक रुपया स्वीकृत

उत्तर प्रदेश सरकार ने तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में गाँवों में खोले गये ८,००० मिश्रित बेसिक स्कूलों के नियमित रख-रखाव के लिए १,५०,६४,७३० रुपये की स्वीकृति प्रदान की है। योजना के अन्त

हिन्दी साहित्य : १९६४

- 'हिन्दी प्रकाशक' सन् '६३ की भाँति सन् '६४ में भी वर्ष भर के प्रकाशित साहित्य का परिचय देने के लिए परिचय विशेषांक प्रकाशित करेगा।
- कितने ही प्रमुख प्रकाशकों की अब तक प्रकाशित पुस्तकें कार्यालय में पहुँच गई हैं, उनके परिचय लिखने का काम प्रारम्भ हो गया है।
- जिन बन्धुओं ने अभी तक अपनी पुस्तकें नहीं भेजीं वे जल्दी भेज दें।
- विशेषांक की सामग्री १५ दिसम्बर को प्रेस में चली जायगी और जनवरी मास में विशेषांक प्रकाशित हो जाएगा।
- सरकारी और शिक्षा संस्थाओं की खरीद आदि में, ६३ के विशेषांक से पूरी सहायता ली गई है। '६४ का विशेषाँक जनवरी में प्रकाशित होने के कारण इस दिशा में और भी महत्वपूर्ण सेवा करेगा।

—संपादक
'हिन्दी प्रकाशक'

तक ऐसे स्कूलों की संस्था दुगनी हो जायगी। राज्य सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में ३७५ नयी क्रमिक कक्षाओं की स्थापना और उनके रख-रखाव के लिये ३०,०३,४२० रुपये भी स्वीकृत किये हैं। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े आकार प्रकार के जूनियर बेसिक स्कूलों की स्थापना तथा उनके प्रबन्ध के लिये ८,१८,५०० रुपये की एक और धनराशि स्वीकृत की गयी है।

स्कूलों के निरीक्षण में कोताही

पंजाब के शिक्षा एवं स्थानीय स्वायत्तशासन मंत्री, श्री प्रबोधचन्द्रजी ने शिक्षा विभाग को आदेश जारी किया है कि निरीक्षक कर्मचारी राज्य के स्कूलों का नियमित रूप में निरीक्षण करें।

यह आदेश इस लिए आवश्यक समझा गया कि जब इन्होंने डेरा बसी के सरकारी हाई स्कूलों का एवं प्राइवेट हाई स्कूलों का आकस्मिक निरीक्षण किया तो देखा कि प्राइवेट हाई स्कूलों का फरवरी, १९६३ के बाद कोई निरीक्षण नहीं किया गया था।

इस आकस्मिक निरीक्षण के दौरान यह भी देखा गया कि सरकारी स्कूल में पाँच श्रेणियों में कोई अध्यापक नहीं था। इसी प्रकार प्राइवेट हाई स्कूलों में भी दो श्रेणियों में कोई अध्यापक न था। मंत्री महोदय ने मुख्याध्यापकों एवं सम्बन्धित अध्यापकों को अपने कर्तव्य में कोताही करने पर ताड़ना थी। वह दो सरकारी स्कूलों की दो अध्यापिकों के कार्य से बहुत प्रसन्न हुए। वे अपने कर्तव्य का अच्छी प्रकार पालन कर रही थीं।

उच्च शिक्षा पर सप्रू समिति की शिफारिशें

उच्च शिक्षा के बारे में श्री पी० एन० सप्रू की अध्यक्षता में संसद सदस्यों की समिति की कुछ मुख्य सिफारिशें ये हैं:

(१) विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा को राज्य सूची से निकाल कर समवर्ती सूची में रखा जाए।

(२) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के १५ सदस्य हों, जिनमें से कम से कम ५ पूर्णकालिक हों। ये व्यक्ति उप-कुलपति के ओहदे में हों।

(३) चौथी योजना में इस आयोग के लिये काफी अधिक रकम रखी जाए।

(४) यह आयोग सम्बन्धित विश्वविद्यालयों की सलाह से, आर्थिक सहायता के लिए, ज्यादा से ज्यादा संस्थाओं को मान्यता दे।

(५) चिकित्सा, कृषि, विज्ञान, इंजिनियरी, विधि आदि व्यावसायिक शिक्षा भी इस आयोग के अन्तर्गत आनी चाहिए।

(६) माध्यमिक शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए तेजी से उपाय किए जाएं।

(७) उच्च शिक्षा संस्थाओं में विश्वविद्यालयी शिक्षा और अनुसंधान के लिए तथा लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियों की संख्या में काफी वृद्धि की जानी चाहिए।

(८) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम में यह संशोधन किया जाए कि राज्य सरकारें कोई विश्वविद्यालय खोलने से पहले आयोग से सलाह ले लें। जो विश्वविद्यालय इस आयोग की सलाह के बिना स्थापित हों, उन्हें आर्थिक सहायता न देने का आयोग को अधिकार होना चाहिए।

(९) राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों से नीति सम्बन्धी महत्वपूर्ण बातों पर समय-समय पर सलाह ली जानी चाहिए।

(१०) दाखिले के मामले में सभी विश्वविद्यालय एकसी नीति का पालन करें।

(११) केन्द्रीय सरकार को चाहिए कि वह उच्च शिक्षा को बढ़ाने के लिए प्रत्येक राज्य में उच्चतम स्तर की एक-एक केन्द्रीय संस्था खोले जो राज्य की अन्य संस्थाओं के सामने अनुकरणीय उदाहरण रख सके।

(१२) प्रातःकालीन और सायंकालीन कालेज खोले जाएं और डाक से पढ़ाई की व्यवस्था की जाए।

विज्ञान-शिक्षा पर सोवियत विशेषज्ञों की रिपोर्ट

हाल में यूनेस्को के अन्तर्गत सोवियत रूस के विशेषज्ञों का एक दल भारत में विज्ञान की पढ़ाई के तरीके का

अध्ययन करने आया। उसने अपनी रिपोर्ट दे दी है। दल ने रिपोर्ट में ये सिफारिशें की हैं :

(१) आधुनिक प्रगति को शामिल करते हुए पाठ्यक्रम में सुधार।

(२) पाँचवी कक्षा तक सामान्य विज्ञान की पढ़ाई तथा नवीं के बजाय छठी कक्षा से ही जीवविज्ञान, भौतिकशास्त्र और रसायन शास्त्र को अलग-अलग करके पढ़ाना।

(३) अध्यापकों के पढ़ाई के तरीके में सुधार।

(४) प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विशेष प्रबन्ध।

(५) विज्ञान के उपकरणों के नमूने तैयार करना और उन्हें सुधारना।

(६) अध्यापक ट्रेनिंग संस्थाओं में विज्ञान की अधिक शिक्षा।

(७) अध्यापकों को पत्रव्यवहार द्वारा तथा नौकरी के दौरान ट्रेनिंग केन्द्रों में शिक्षा देना।

(८) विस्तार सेवा केन्द्रों में वृद्धि।

(९) विज्ञान-शिक्षा में अनुसंधान का सघन कार्यक्रम

(१०) विज्ञान में और अधिक छात्रों की भरती।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री बता चुके हैं कि देश में केवल सोवियत-सहायता से वैज्ञानिक अनुसंधान तथा उच्च अध्ययन केन्द्र खोलने का कोई प्रस्ताव नहीं है। फिर भी शिल्पिक सहायता के संयुक्त राष्ट्र विस्तार कार्यक्रम (१९६२-६६) के अन्तर्गत सोवियत रूस ने लगभग ६ लाख डालर की सहायता दी है, जो विश्वविद्यालयों के ९ विभागों के लिए है। इसमें उच्च अध्ययन के ७ केन्द्र भी हैं। इस सहायता से विशेषज्ञ बुलाए जाएगे, ट्रेनिंग के लिए अधिवृत्तियाँ दी जाएंगी और विज्ञान के विशेष उपकरण लिए जाएंगे। ये ९ विभाग बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, यादवपुर, मद्रास और उस्मानिया विश्वविद्यालय के हैं।

●

नेहरू जयन्ती पर उनके विशाल अध्ययन और पुस्तक प्रेम का अनुकरण कल्याणकारी होगा।

संग्रह करने योग्य कुछ पुस्तकें

कोश

वृहत् हिन्दी कोश कालिकाप्रसाद आदि ३०.००
ज्ञान शब्द कोश मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव १५.००
पारिभाषिक शब्द कोश (समाप्त) ४.००
हिन्दी-साहित्य कोश भाग २
डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि ४५.००
वृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश डा० हरदेव बाहरी ३०.००
वाङ्‌मयार्णव
महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्मा प्रेस में
भाषा विज्ञान कोश डा० भोलानाथ तिवारी २५.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति :
विक्टोरिया से नेहरू तक रामगोपाल एम० ए० ११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान डा० सम्पूर्णानन्द ११.००
चीन—कल और आज के० एम० पणिक्कर ५.००
राजनीतिशास्त्र प्राणनाथ विद्यालंकार ४.५०

धर्म और दर्शन

सूफी मत-साधना और साहित्य रामपूजन तिवारी ११.००
विश्व के धर्म-प्रवर्त्तक रघुनाथ सिंह एम० पी० ६.५०
चिद्विलास डा० सम्पूर्णानन्द ५.००
दर्शन का प्रयोजन डा० भगवानदास ३.५०
नीतिशास्त्र सुश्री शान्ति जोशी ८.००

पालि ग्रन्थ

पालि व्याकरण भिक्षु धर्मरक्षित २.५०
महापरिनिब्बान सुत्तं ,, ,, ३.५०

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार पण्डित कमलापति त्रिपाठी ६.५०
भारतीय पत्रकार कला रौलैण्ड ई० वूलसले ६.५०
समाचार पत्रों का इतिहास
पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ६.५०
आधुनिक पत्रकार कला रा० र० खाडिलकर ४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान हंसराज भाटिया ५.००
सामान्य मनोविज्ञान ,, ,, १०.००

भ्रमण

आर्याना रघुनाथ सिंह, एम० पी० ३.००
बदलते रूप में रा० र० खाडिलकर ३.५०
दक्षिण पूर्व एशिया रघुनाथ सिंह, एम० पी० ७.५०
आस्ट्रेलिया रघुनाथ सिंह, एम० पी० ४.००
कुमाऊँ राहुल सांकृत्यायन १५.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास एक इतिहास प्रेमी
(भाई परमानन्द), परिवर्द्धित चौथा संस्करण ८.००
पश्चिमी यूरोप (प्र०भाग) अनु० छबिनाथ पाण्डेय ५.००
गांधी हत्याकाण्ड विहंगम ५.००
अशोक के अभिलेख डा० राजबली पाण्डेय प्रेस में

संस्मरण

जेल के वे दिन विजयालक्ष्मी पण्डित २.५०
कुछ स्मरणीय मुकदमे डा० कैलाशनाथ काटजू ८.००
मेरे बचपन की कहानी श्रीमती नयनतारा सहगल ६.००
महात्माजी और महाराज विपिनचन्द्र झवेरी १.५०
कुछ स्मृतियाँ और कुछ स्फुट विचार
डा० सम्पूर्णानन्द ६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना
रामनरेश वर्मा, एम० ए० ४.५०
गीतिकाव्य प्रो० रामखेलावन पाण्डेय ६.५०
तुलसीदास और उनका युग डा० राजपति दीक्षित ८.००
धरातल शान्तिप्रिय द्विवेदी २.७५
कल्पलता आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ३.००
काव्यप्रकाश (मम्मटकृत) आचार्य विश्वेश्वर १६.००
ध्वन्यालोक (श्री मदानन्दवर्द्धनाचार्य)
आचार्य विश्वेश्वर १२.००
सामयिकी शान्तिप्रिय द्विवेदी ६.००
विनय पत्रिका देवनारायण द्विवेदी ६.००

कथा-साहित्य

उलूकतन्त्र बलदेव प्रसाद मिश्र २.००
शव साधन बलदेव प्रसाद मिश्र २.५०
तूफान सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों की
कहानियों का संग्रह २.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन महात्मा टालस्टाय ६.५०
कर्त्तव्याघात देवनारायण द्विवेदी ४.५०
प्रणय ,, ,, ५.००
नूतन ब्रह्मचारी स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट ०.६३
देशभक्त और देशद्रोही २.५०
बयालीस प्रतापनारायण श्रीवास्तव ४.५०
गेंजी की कहानी मुरासाकी शिकाबू ४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वी सिंह राहुल सांकृत्यायन ४.००
महर्षि कर्वे प्रभाकर सदाशिव पण्डित २.२५

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव ३.५०
विज्ञान के चमत्कार भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव ३.००
परमाणु शक्ति भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव ३.००
घरेलू बिजली भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव ४.००

विविध

नारीत्व मारगरेट सूर ह्वाइट ३.५०
खाद का उपयोग दुर्गाप्रसाद सिंह १.५०
जियो जागो यूस्टेस चेस्टर ४.००
पुस्तक प्रकाशन सर स्टेनले अनविन ६.००
तैरने की कला कालिदास माणिक ०.७५

प्राप्तिस्थान :— **ज्ञानमण्डल लिमिटेड**
कबीरचौरा, वाराणसी

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, प्रधानमंत्री कन्हैयालाल मलिक द्वारा संपादित, उद्योगशाला प्रेस, किंग्सवे, दिल्ली-९ में मुद्रित एवं १६ ए, ... नगर, दिल्ली से प्रकाशित

देश की उन्नति टैक्नीकल शिक्षा पर निर्भर है !

विद्युत सम्बन्धी

पुस्तक	मूल्य
इलै० इंजीनियरिंग बुक	१५.००
इलैक्ट्रिक गाइड	१०.००
इलैक्ट्रिक वायरिंग	४.५०
इलैक्ट्रिक बैट्रीज़	४.५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८.२५
इलैक्ट्रिक सुपरवाइज़री पेपर्स	१०.५०
सुपरवाइज़र वायरमैन	४.५०
इलै० परीक्षा पेपर्स सम्पूर्ण	१५.००
ए० सी० मोटर वाइंडिंग	१५.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
इलैक्ट्रिक वायरगेज	१२.००
इलैक्ट्रिक डायग्राम्स	१२.००
टाँका लगाने का ज्ञान	४.५०
छोटे डायनेमो इलै० मोटर	४.५०
ट्रांसफार्मर गाइड	६.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग	६.००
इलै० सुपरवाइजरी शिक्षा	६.००
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	६.००
ए० सी० जैनरेटर्स	८.२५
इलै० मोटर्स ग्राल्टरनेटर्स	१६.५०
इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२.००
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४.५०
बिजली मास्टर	४.५०
गैस वैल्डिंग	६.००
इलैक्ट्रीसिटी	६.००
भारतीय बिजली नियम	२.५०
इलै० लाइनमैन वायरमैन गा०	२५.५०
ग्राल्टरनेटिंग करैंट	२५.५०
विद्युत इंजीनियरिंग	१६.००
प्रैक्टी० ग्रार्मेचर वाइंडिंग	८.२५
रैफरीजरेटर गाइड	८.२५
ग्रार्मेचर वाइंडर्स गाइड	१५.००
ग्राइसप्लाण्ट (बर्फ मशीन)	४.५०
टेक्नीकल डिक्शनरी	४.००
एयर कण्डीशनिंग गाइड	१५.००

ग्रायल व स्टीम इन्जिन्स

पुस्तक	मूल्य
ग्रायल व गैस इंजन	१५.००
ग्रायल इंजन गाइड	८.२५
क्रूड ग्रायल इंजन गाइड	६.००
लोको शेड फिटर गाइड	१५.००
स्टीम वायलर्स ग्रौर इंजन	८.२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२.००
हैंडबुक ग्राफ स्टीम इंजीनियर	२०.२५

रेडियो साहित्य

पुस्तक	मूल्य
वायरलैस रेडियो गाइड	८.२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८.२५
घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	४.५०
ब्रहत् रेडियो विज्ञान	१५.००
रेडियो मास्टर	४.५०
सर्किट डायग्राम्स ग्राफ़ रेडियो	३.७५
ट्रांजिस्टर रेडियो	४.५०
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७.५०
रेडियो पथ-प्रदर्शक	५.५०
बेसिक रेडियो शिक्षक	२.००
रेडियो कम्यूनिकेशन	६.००
ट्रांजिस्टर डेटा ग्रौर सर्किट	१०.५०
टेप रिकार्डर	१०.५०
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	६.७५

मोटरकार सम्बन्धी

पुस्तक	मूल्य
मोटरकार वायरिंग	४.५०
मोटर मैकेनिक टीचर	६.००
मोटर ड्राइविंग टीचर	४.५०
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५.००
मोटर साइकिल गाइड	४.५०
मोटरकार ग्रोवरहालिंग	६.००
मोटरकार इंजीनियर	८.२५
मोटरकार इंजन (पावर यू०)	८.२५
मोटरकार सर्विसिंग	८.२५
कम्पलीट मोटरकार ट्रे० मै०	२४.७५
मोटर प्रश्नोत्तर	६.००
स्कूटर ग्रौर ग्राटो रिक्शा	४.५०
खेती ग्रौर ट्रैक्टर	६.००
ग्राटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२.००
ग्राधुनिक टिपीकल मोटर गाइड	४.५०

खराद सम्बन्धी

पुस्तक	मूल्य
खराद शिक्षा (टर्नर गाइड)	४.५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४.५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६.००
फिटिंग शाप प्रैक्टिस	७.५०
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२.००
मशीन शाप प्रैक्टिस	१५.००
लेथ वर्क	६.७५
मिलिंग मशीन	८.२५
बैंच वर्क एण्ड डाईफिटर	८.२५
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुग्रल	८.२५
खराद ग्रापरेटर गाइड	८.२५
फिटर मैकेनिक	८.२५

फर्नीचर व ग्रह निर्माण सम्बन्धी

पुस्तक	मूल्य
भवन-निर्माण कला	१२.००
विश्वकर्मा प्रकाश	७.५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	१२.००
लोकास्ट हाउसिंग टेकनीक	५.२५
सीमेंट की जालियों के डिजायन	६.००
मिस्त्री डिजायन बुक	२५.५०
हैंडबुक ग्राफ़ बिल्डिंग्स	३४.५०
टिम्बर केल्कुलेटिंग इंगलिश	२.००
जन्त्री पैमाइश चोब (हिंदी)	१.५०
फर्नीचर बुक	१२.००
फर्नीचर डिजायन बुक	१२.००
मारबल चिप्स के डिज़ायन	६.००
जंत्री पैमा. चोब (गोल लकड़ी)	३.००
जंत्री पैमा० चोब (चिरी लकड़ी)	३.००
मशीन वुड वर्किंग	६.००

दस्तकारी

पुस्तक	मूल्य
कारपेण्ट्री मास्टर	६.७५
कारपेण्ट्री मैनुग्रल	४.५०
प्रैक्टीकल घड़ीसाज़ी	४.५०
साइकिल रिपेयरिंग	२.५०
हारमोनियम रिपेयरिंग	२.५०
सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२.५०
ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२.५०
प्रैक्टीकल फोटोग्राफी	२.५०
ब्लैकस्मिथी (लोहारी का काम)	४.५०
आयरन फर्नीचर	१२.००
नक्काशी ग्रार्ट-शिक्षा	६.००
बढ़ई का काम	६.००
राजगीरी शिक्षा	६.००
स्प्रे पेन्टिंग	८.२५
पोट्रीज़ गाइड	४.५०

जनरल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
जनरल मैकेनिक गाइड	१२.००
शीट मेटल वर्क	८.२५
वीविंग गाइड	४.५०
हैण्डलूम गाइड	१५.००
पावरलूम गाइड	५.२५
फाउण्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८.२५
प्लम्बिंग ग्रौर सेनीटेशन	६.००
एग्री० इण्डस्ट्रियल पम्पस	८.२५
सिनेमा मशीन ग्रापरेटर	८.२५
ट्यूबवैल गाइड	३.७५
फाउण्ड्री वर्क	४.५०
मशीनिस्ट	२५.५०

पुस्तक विक्रेताओं व लाईब्रेरियों को पर्याप्त कमीशन !

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

(फोन २६१०३०)

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३ दिसम्बर, १९६४ अंक १

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ३, अंक १ | दिसम्बर, १९६४ | मूल्य, वार्षिक ३.००

तीसरे वर्ष में प्रवेश

दिसम्बर १९६४ के इस अंक से 'हिन्दी प्रकाशक' का तीसरा वर्ष आरम्भ हो रहा है। दूसरे वर्ष में इसे अपने विशाल परिवार की अनुकंपा और भी अधिक मात्रा में मिली है अतएव यह अपने अनुभवी एवं यशस्वी लेखकों, उदारमना विज्ञापनदाताओं और स्नेहशील पाठकों को अभिवादन करता हुआ कार्य क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है।

अपने इस दूसरे वर्ष में 'हिन्दी प्रकाशक' ने उपलब्ध हिन्दी साहित्य की वर्गीकृत सूचियाँ प्रस्तुत करने का क्रम प्रारंभ किया है। सन् '६३ में प्रकाशित साहित्य की सूची इस क्रम के पहले मनके के रूप में प्रस्तुत हुई है। तीसरे वर्ष में सन् '६४ में प्रकाशित साहित्य की सूची तो प्रस्तुत ही होगी, कुछ अन्य सूचियाँ भी उपस्थित करने का संकल्प किया गया है। उपयोगी पते प्रस्तुत करने का जो क्रम पहले वर्ष से ही चल रहा है, उसे अधिक पुष्ट करने का प्रयास भी किया जायगा। प्रकाशन क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को सामने रखने एवं उनके समाधान खोजने का काम पूर्ववत् चलता रहेगा तथा हिन्दी प्रकाशन का एक प्रामाणिक इतिहास देने की चेष्टा भी की जायगी। ऐसे ही कई अन्य स्वप्न और संकल्प मन में हैं। विश्वास है कि सहृदय सुहृदों के सौजन्य से वे सब पूरे होंगे और 'हिन्दी प्रकाशक' विनम्र सेवक की प्रौढ़ प्रतिष्ठा से उत्तरोत्तर गौरवान्वित होता रहेगा।

सुबह के भूले...

उत्तरप्रदेश के विकास विभाग ने आदेश दिया था कि विकास खण्डों को पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता नहीं है। कहते हैं, विभाग इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि विकास खण्डों की सीमा में रहने वाली जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि नहीं है, इसलिए पुस्तकों पर पैसा खर्च करना अपव्यय है। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ की कार्य समिति ने विभाग के इस निष्कर्ष और आदेश पर खेद प्रकट किया था और अक्टूबर के 'हिन्दी प्रकाशक' में विभाग से अनुरोध किया गया था कि वह कार्य समिति के प्रस्ताव पर विचार करे एवं अपने नाम को सार्थक करता हुआ सही दिशा में ही अग्रसर हो।

प्रतीत होता है कि विभाग ने अपने निर्णय पर फिर विचार किया है और विकास खण्डों को कृषि एवं पशुपालन की ही पुस्तकें खरीदने का आदेश दे दिया है। विकास खण्ड विभाग द्वारा स्वीकृत ऐसी ही पुस्तकें खरीद कर अपने पुस्तकालयों की शोभा एवं उपयोगिता में वृद्धि करेंगे। प्रकाशकों को सलाह दी गई है कि स्वीकृत पुस्तकों की सूची में शामिल करने के लिए इन विषयों की ६३-६४ में प्रकाशित पुस्तकें अधिक से अधिक ३० नवम्बर तक कृषि

उत्पादन एवं ग्रामीण विकास आयुक्त, कार्यक्रम १ शाखा, रायल होटल बिल्डिंग लखनऊ के पते पर भेजें। प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति निशुल्क भेजनी चाहिए। और साथ में एक सूची भी होनी चाहिए जिसमें पुस्तक एवं लेखक का नाम, मूल्य तथा कमीशन की दर लिखी हो।

विभाग के इस निर्णय का स्वागत करते हुए हम उसका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि उसके इस निर्णय की सूचना उत्तर प्रदेशीय सूचना विभाग के १७ नवम्बर को प्रसारित होने वाले पत्रक में अंकित हुई है। समाचार पत्रों के कार्यालयों तक पहुँचने में इसे कम-से-कम तीन-चार दिन लगे हैं, 'हिन्दी प्रकाशक' के कार्यालय में तो यह २७ नवम्बर को पहुँची है। इस प्रकार भारत भर में फैले हुए हिन्दी प्रकाशकों को यह सूचना समय पर नहीं मिली और वे विभाग को अपनी पुस्तकें नहीं भेज सके। परिणाम स्वरूप विभाग को इन विषयों की पर्याप्त पुस्तकें नहीं पहुँची होंगी। जल्दी-जल्दी में जो थोड़ी-बहुत पुस्तकें पहुँची होंगी, उन्हीं के आधार पर स्वीकृति सूची बनेगी तो यह निश्चित रूप से एकांगी और अनुपयोगी होगी।

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के कार्यालय ने एक पत्र के द्वारा यह तथ्य विभाग के सामने रखा है और सुझाव दिया है कि पुस्तकें भेजने की तिथि बढ़ा दी जाय। विश्वास है कि विभाग इस उचित अनुरोध को सहर्ष स्वीकार करेगा और बढ़ी हुई तिथि की सूचना ऐसे ढंग से प्रसारित करेगा कि वह सर्वत्र और सुविधापूर्वक पहुँच जाय।

विभाग से एक यह निवेदन करना भी हम आवश्यक समझते हैं कि प्रत्यक्ष से परोक्ष प्रेरणा अधिक प्रभावशाली मानी जाती है। स्व० प्रेमचंद जी की कहानी 'सुजान भगत' किसान को श्रम और उदात्त भाव की जैसी प्रेरणा दे सकती है वैसी प्रेरणा कृषि के लाभों पर सीधी भाषा में लिखी पुस्तक नहीं दे सकती। किसानों के लिए उपयोगी साहित्य का चुनाव करते समय वह अपनी दृष्टि व्यापक रखेगा तो अन्ततोगत्वा लाभ ही होगा।

ग्रन्थ-विमोचन

पुस्तकों के प्रकाशनोत्सवों के लिए इधर ग्रन्थ-विमोचन शब्द प्रचलित हुआ है परन्तु विद्वानों में इस पर कुछ चर्चा भी सुनी गई है। कुछ विद्वानों को इसमें 'संकट मोचन' की ध्वनि मिली है और कुछ को 'ग्रन्थि-विमोचन' अधिक उपयुक्त जान पड़ा है। कुछ का मत है कि प्रकाशन समारंभ ठीक रहेगा। राष्ट्रकवि श्रद्धेय मैथिलीशरण गुप्त ने इस चर्चा पर कहा है कि जीवित भाषा में शब्द बनते रहते हैं—जिन शब्दों में पर्याप्त बल नहीं होता, वे रह जाते हैं—उनके स्थान पर अधिक सार्थक शब्द आ जाते हैं। उन्होंने इस शब्द पर और भी अधिक विचार करने की आवश्यकता भी प्रकट की है।

'हिन्दी प्रकाशक' के पाठक इन शब्दों पर अपना मत प्रकट करें तथा अपनी समझ से अन्य उपयुक्त शब्द सुझावें तो ऊहापोह के बाद कोई निर्णय हो जाय और उसी शब्द का प्रयोग होने लगे।

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा आयोजित

हिन्दी पुस्तकों की विशाल प्रदर्शनी

१७ दिसम्बर को नई दिल्ली में प्रारंभ होगी

भारत के शिक्षा उपमंत्री श्री भक्तदर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे

प्रदर्शनी में राजस्थानी, भोजपुरी और मैथिली आदि की पुस्तकें तथा हिंदी की पत्रिकाएँ भी प्रदर्शित होंगी।

१९६४ में प्रकाशित हिन्दी साहित्य
फरवरी के 'हिन्दी प्रकाशक' में

सूची प्रकाशित होगी

प्रकाशक बन्धु अपनी पुस्तकें अविलंब भेज दें।

—प्रधान मंत्री

पुस्तकें और पत्नियाँ

श्री रतनलाल जोशी
प्रधान संपादक दैनिक 'हिन्दुस्तान' दिल्ली

पुस्तक व्यवसाय को वक्र दृष्टि से देखने वाली सरकारें चिंतित न हों, जोशी जी की सहज एवं मंद मुस्कान का अभिप्राय यह नहीं है कि सरकारें भी पत्नियों के पर्याय में आती हैं। जोशी जी भी निश्चिन्त रहें, डा. केसकर चाहे जितने प्रयत्न करें, आजकल के पढ़े-लिखे पुरुष पुस्तकों में मन लगा कर पत्नियों को रुष्ट न करेंगे। --सं०

'आज यह तै हो जाना है कि या तो मैं रहूँगी इस घर में या पुस्तकें रहेंगी। जहाँ देखो, वहाँ किताबें ! गन्दगी देख-देख मैं तो अधमरी हो गई हूँ।' सुप्रसिद्ध राजनेता और रानी विक्टोरिया का प्रियपात्र प्रधानमंत्री बेंजामिन डिज्रायली जैसे ही संध्या को घर में घुसा कि उसकी पत्नी इन शब्दों में बरस पड़ी। मगर डिज्रायली भी ऐसा-वैसा कूटनीतिज्ञ नहीं था। उसने कोट उतारा और एक-एक पुस्तक उठा-उठा कर खिड़की से बाहर फेंकनी शुरू कर दी। जब बाइबिल भी उसने फेंकने को उठायी तो पत्नी ने झपट कर उसका हाथ पकड़ लिया, बोली--'यह क्या करते हो बेन, यह तो ईश्वरीय पुस्तक है, कहीं इसे भी फेंका जाता है !' डिज्रायली ने उत्तर दिया --'मेरे लिए तो हर पुस्तक बाइबिल का भाष्य है, सबको फेंक रहा हूँ तो इसे भी फेंकूंगा।'

डा० केसकर ने पुस्तक-प्रदर्शनी लगाई है। पता नहीं उनके मन में क्या है, क्या वे डिज्रायली -दम्पत्ति वाला काण्ड पुस्तकें खरीदने वालों के घर में शुरू करवाना चाहते हैं ? बंगाल के क्षितिमोहन बाबू कहते हैं कि अनुराग में अनुभव प्रायः दूध में मक्खी की ही कहावत चरितार्थ करता है। शायद इसीलिए पुस्तकों से पत्नियों को चिढ़ होती है। मनोवेत्ताओं की राय कुछ दूसरे प्रकार की है। वे कहते हैं कि नारी स्वभाव से प्रेमरूपा होती है और प्रेम के अन्तःपुर में सौत की खैर नहीं ! शायद इसीलिए हिलैयर बेलाक ने दुःख के साथ लिखा है कि 'मेरी पुस्तकों को जब दीमकें खाने लगती हैं तो मेरी पत्नी का 'मूड' सुधरने लगता है।'

लेकिन यह बात नहीं है कि पत्नियों को सभी पुस्तकें बेकार लगती हैं। कुछ पुस्तकें ऐसी भी बताई जाती हैं जो उन्हें बड़ी दिलचस्प लगती हैं। बर्नर्डशा से लेडी हेमिल्टन ने जब पूछा कि मिस्टर शा मेरे पढ़ने के लिए आपने कौन-सी पुस्तक लिखी है तो श्री शा ने उत्तर दिया--क्षमा कीजिए महोदया, अभी तक तो मैंने आपके पढ़ने के लिए कोई पुस्तक नहीं लिखी है, किन्तु मरने से पहले मैं आपके लिए एक पुस्तक ज़रूर लिखूंगा। उसके नाम का विज्ञापन आप कृपया पत्रों में छपवाना शुरू कर दीजिए। आपके पढ़ने के लिए लिखी जाने वाली मेरी पुस्तक का नाम होगा--'पति को सभ्य कैसे बनाया जाए ?'

टालस्टाय का दाम्पत्य-जीवन बड़ा संतप्त था। स्वयं उनकी लड़की ने लिखा है कि पिता जी का लिखना-पढ़ना माता जी को कतई पसन्द नहीं था, सुकरात के जीवन में भी इसी आधार पर दाम्पत्य-दुःख कम नहीं था। आंद्रे मोराउस ने महापुरुषों के इस सन्तप्त दाम्पत्य का निदान करते हुए लिखा है कि जैसे समुद्र की प्रशंसा करने वाला मुग्ध व्यक्ति यह भूल जाता है कि अथाह-अनन्त समुद्र की सारी महिमा कुएँ के एक गिलास पानी के सामने फीकी है, वैसे असीम मानवता के अनन्त आकाश में उड़ने वाला लेखक भी प्रायः यह भूल जाता है कि उसके अनुराग का भूखा एक नीड़ भी है जिसमें वह स्वयं क्षण-क्षण की ज़िन्दगी बिता रहा है।

बात फिर सौतिया डाह पर आकर अटक गई है। दो पत्नियों वाले पति की जो दुर्दशा होती है, वही दुर्दशा पुस्तक और पत्नी की प्रेम-चपेट में कराहते लेखक या पुस्तक-प्रेमी की होती है। दो पत्नियों वाले पति की दयनीय दशा का चित्र संस्कृत के किसी कवि ने बड़ी खूबी से खींचा है--

बिलाद्वहि बिलस्यांतः
स्थित मर्जारसर्पयोः
मध्ये चाखुरिवा भाति
पत्नीद्वययुतो नरः ।

—दो पत्नियों वाले पति की दुर्दशा उस चूहे के समान होती है जिसके बिल के बाहर बिल्ली ताक लगाए बैठी रहती है और बिल के अन्दर सांप उसे खाने की प्रतीक्षा करता रहता है।

लेकिन केवल पत्नियाँ ही क्यों अकसर बड़े लोग भी पुस्तकों से चिढ़ते हैं। लायड जार्ज कभी ऐसे व्यक्ति को अपने आसपास रखना नहीं चाहते थे जो पुस्तक पढ़ने का आदी हो। कहते हैं सरदार पटेल भी पुस्तक प्रेमियों का अच्छा-खासा मज़ाक उड़ाया करते थे। लार्ड वैवेल स्वयं बड़े विद्वान और मनस्वी लेखक थे; किन्तु 'पुस्तक-कीटों' की कर्म-तत्परता पर उनका विश्वास बहुत कम था। इसी प्रकार कवि 'अकबर' इलाहाबादी को भी कुछ खास किस्म की किताबों से नाराज़ी थी—

हम ऐसी कुल किताबें
काबिले जब्ती समझते हैं;
कि जिनको पढ़के लड़के
बाप को खब्ती समझते हैं।

ग्रेटा गार्बो के संस्मरण इस प्रसंग में कुछ नए प्रकाश का ही प्रमाण देते हैं। गार्बो को वेदान्त और दर्शन-शास्त्र की पुस्तकें बहुत पसंद हैं। वह कहती है, पुस्तक और नारी में विरोध कैसे हो सकता है? मैं पुस्तक के बिना रह नहीं सकती। हां नारी के बिना पुरुष ज़रूर रह सकता है। नारी सृष्टि का सूक्ष्म तत्व है और पुरुष भौतिक तत्व। अतः नारी को अपने स्वभाव के अनुकूल पुस्तकें ही भाएंगी। पुरुष की पुस्तकें उसे स्वभावतः बुरी लगेंगी ही।

नारी सृष्टि का सूक्ष्म तत्व है, पति-प्रेम-प्लुत नारी के मुख से एक राजस्थानी कवि ने इसे बड़े रसात्मक शब्दों में कहलवाया है—

साजन फूल गुलाब रौ
म्हे फूलन की बास,
साजन म्हारा कालजा
म्हे साजन की सांस।

दैनिक 'हिन्दुस्तान' से साभार

ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, तिरंगे आवरणों से सुसज्जित तथा सजिल्द बाल साहित्य

क्रम	पुस्तक		लेखक	मूल्य
१.	रसभरी कहानियां	—	मनहर चौहान	२.००
२.	साहस और पराक्रम की कहानियां	—	मनहर चौहान	२.००
३.	चाचा के आशा दीप	—	सावित्रीदेवी वर्मा	१.५०
४.	सिपहसालार खान	—	विश्वामित्र शर्मा	१.५०
५.	अपना विकास आप कीजिए	—	श्याम कपूर	१.५०
६.	अपना चरित्र-निर्माण आप कीजिए (दो रंगों में)	—	श्याम कपूर	२.००
७.	सुन्दर सुन्दर कहानियां	—	धर्मपाल शास्त्री एम०ए०	१.५०
८.	वैज्ञानिक वरदान	—	धर्मपाल शास्त्री एम० ए०	२.५०
९.	रचनात्मक कहानियां	—	कमला गौतम एम० ए०	१.५०
१०.	नेहरू सूत्राणि	—	डॉ० के० डी० भारद्वाज श्री सुरेन्द्र कुमार गम्भीर एम. ए.	१.५०
११.	प्यारी प्यारी कहानियां	—	धर्मपाल शास्त्री एम. ए.	१.५०
१२.	अच्छी अच्छी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१३.	नयी नयी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१४.	नयी पुरानी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१५.	छोटी बड़ी कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१६.	पशु पक्षियों की कहानियां	—	योगराज थानी	१.५०
१७.	हीरे की अंगूठी (बाल उपन्यास)	—	योगराज थानी	१.५०
१८.	मां की ममता (बाल उपन्यास)	—	योगराज थानी	१.५०
१९.	दादी नानी की कहानियां	—	भण्डारी	१.५०
२०.	शिक्षाप्रद एकांकी	—	नन्दलाल चत्ता	१.५०
२१.	बाल एकांकी	—	सुखपाल गुप्त	०.५६
२२.	कथा कहानी	—	नन्दलाल चत्ता	०.५६
२३.	युग युगों में दिल्ली	—	निर्भयस्वरूप वर्मा एम० ए०	२.००
२४.	जहां सुमति तहां सम्पति नाना	—	रघुवीर सिंह	०.७५
२५.	पन्नी का मुकुट	—	रमेश भैया	२.००

आशा प्रकाशन गृह

३, नाई वाला, करौल बाग, नई दिल्ली—५

हिन्दी प्रकाशन : नयी दिशाएँ, नयी प्रवृत्तियाँ

—कन्हैयालाल मलिक

हिन्दी प्रकाशन की नई दिशाओं और नई प्रवृत्तियों को समझने के लिए स्वाधीनता से पहले के हिन्दी प्रकाशन और उसके आधारभूत तत्व को देख लेना लाभदायक होगा।

सन् ४७ यानी स्वाधीनता से पहले हिन्दी प्रकाशन एक मिशन की दृष्टि से अधिक होता था; तब इसकी तीन प्रमुख धाराएँ थीं: (१) धार्मिक एवं ग्रामीण लोक साहित्य (२) साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन (३) पाठ्य-पुस्तकें। उस समय साहित्य के अन्तर्गत आलोचना का प्रकाशन कम होता था; उसकी अपेक्षा काव्य, नाटक तथा कथा-साहित्य का प्रकाशन अधिक था। उस समय प्रकाशनों की खपत जन-साधारण में होती थी; पुस्तकालयों की खरीद थी, परन्तु सरकारी खरीद नाममात्र को होती थी।

जब हमारी राष्ट्रीय सरकार ने अपने संविधान की रचना की तब उसने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प किया और १५ वर्षों में हिन्दी को उन्नत करने की घोषणा की जिससे हिन्दी विश्व की समृद्ध भाषाओं में सम्मानपूर्वक अपना स्थान ग्रहण कर सके। सरकार की योजना के अनुसार शिक्षा-क्षेत्र में भी विशेष परिवर्तन हुए। प्राय: विश्वविद्यालयों में हिन्दी एम०ए० में विषय के रूप में आ गई। विभिन्न विश्वविद्यालयों में ऐसी स्वीकृति भी प्रदान की गई कि बी० ए० तक के परीक्षा-पत्रों के उत्तर अँग्रेज़ी अथवा हिन्दी में दिए जा सकेंगे।

इन घोषणाओं का परिणाम हिन्दी के प्रकाशन व्यवसाय पर पूर्णरूपेण पड़ा। हिन्दी के प्रकाशकों ने एम०ए० स्तर की हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित कीं और भारतीय भाषा (संस्कृत) तथा विदेशी भाषा (अँग्रेज़ी) के आधार से आलोचनात्मक प्रकाशन समृद्ध हुआ।

बी०ए० तक परीक्षा-प्रणाली में हिन्दी को स्थान मिलने के कारण इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र, दर्शन तथा साहित्येतर विषयों की हिन्दी पुस्तकें प्रकाश में आईं। कुछ पुस्तकों का सृजन हिन्दी में ही हुआ और कुछ भारतीय लेखकों ने अपनी अँग्रेज़ी कृतियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराया और कुछ विदेशी पुस्तकें अँग्रेज़ी से अनूदित होकर हिन्दी में आईं। यहाँ यह कहना भी अनुचित न होगा कि अब भी इस क्षेत्र में काफी कमी है और यह कार्य विश्वविद्यालयों, अर्ध-सरकारी संस्थाओं एवं राजकीय संस्थाओं द्वारा भी शीघ्रता से हो रहा है। वह दिन अब दूर नहीं है जबकि विश्व का अधिकतम सुयोजित एवं भारतीय मर्यादा के अनुकूल का समस्त साहित्य हिन्दी में उपलब्ध हो जायेगा।

शिक्षा-प्रणाली में हिन्दी के महत्व का एक दूसरा लाभ यह भी हुआ कि विश्व की श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों के हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित हुए। आज हिन्दी का अनूदित साहित्य भी विषय-सामग्री की दृष्टि से काफी समृद्ध दिखाई देता है और इसका भविष्य भी उज्ज्वल है। स्वाधीनता से पूर्व अनूदित प्रकाशन हमें उपन्यास, गल्प, नाटक तथा चरित्रविकास के क्षेत्र में ही दिखाई देते थे। आज वे सर्वत्र एवं सभी क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं।

हिन्दी के इस महत्व के साथ विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी में शोधकार्य की प्रगति भी तेज हो गई। १९५७ से पूर्व हिन्दी में शोधकार्य बहुत कम था; कुछ एक विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय तो होता था किन्तु उसके स्पष्टीकरण के लिए अँग्रेज़ी भाषा ही माध्यम थी। आज भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से प्रति वर्ष अनुमानत: १०० व्यक्तियों को हिन्दी की पी-एच० डी० अथवा डी० लिट० की उपाधियाँ प्रदान की जाती हैं और लगभग साठ शोध-प्रबन्ध हिन्दी में प्रकाशित हो जाते हैं।

शोधकार्य के विस्तार से ही हिन्दी साहित्य में सन्दर्भ साहित्य, कोश एवं प्राचीन साहित्य का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ। इस समय हिन्दी का सन्दर्भ साहित्य काफी मात्रा में उपलब्ध है। और वह मात्रा दिन प्रतिदिन अधिक होती जा रही है।

केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों ने देश में साक्षरता प्रसार के लिए तथा बालकों में साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए कई योजनाएँ प्रारम्भ कीं, जिससे बाल-साहित्य प्रतियोगिता, नवसाक्षर प्रतियोगिता के अतिरिक्त समाजशिक्षा के अन्तर्गत भी कई प्रतियोगिताएँ प्रारम्भ हो गईं। इन प्रतियोगिताओं के कारण बाल, नवसाक्षर, प्रौढ़ एवं समाजशिक्षा साहित्य का प्रकाशन विस्तृत और पुष्ट हो गया।

जन-साधारण में पढ़ने की रुचि जगाने और बढ़ाने की दिशा में हिन्दी की पाकेट बुक्स के प्रकाशन ने विशेष योग दिया है। आज रेलवे बुक स्टॉलों, बसों के अड्डों तथा नगर एवं कस्बे के विभिन्न बाज़ारों में हिन्दी की पाकेट बुक दृष्टिगोचर होती हैं और जन-साधारण में उनकी खपत भी अच्छी प्रतीत होती है।

इस प्रकार सन् ४७ की तुलना में आज का हिन्दी प्रकाशन काफी विशाल पैमाने पर पहुँच गया दीख पड़ता है। परन्तु यह अन्तर भी स्पष्ट है कि आज प्रकाशन का कार्य मिशन की दृष्टि से नहीं अपितु औद्योगिक दृष्टि से हो रहा है। उद्योग में उत्पादन की मात्रा अधिक अवश्य होती है किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि वह सब ठीक ही होगी। स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी का साहित्य स्वांत:सुखाय लिखा जाता और प्रकाशित होता था। आज साहित्य का सृजन लेखक भी आर्थिक पक्ष के आधार पर सरकारी खरीद एवं जन-रुचि को लेकर कर रहे हैं और प्रकाशन के कार्य में भी व्यवसाय प्रधान हो गया है। व्यवसाय की यह प्रवृत्ति व्यक्तिगत प्रकाशनों में ही नहीं सरकारी तथा अर्ध-सरकारी प्रकाशन संस्थानों में भी दीख पड़ती है और और ऐसा प्रतीत होता है कि उनके प्रकाशनों में भी विक्री को महत्व दिया गया है।

स्वाधीनता के पश्चात् साहित्य के कुछ विषयों, जैसे काव्य में प्रायः गतिरोध ही दिखाई दे रहा है। कुछ कृतियों को छोड़ कर हमारे यहाँ काव्य-साहित्य इन १७ वर्षों में कम ही प्रकाशित हुआ है। नाटकों का सृजन अधिकांश पाठ्य पुस्तकों के लिए ही हुआ है।

कथा-साहित्य (उपन्यास एवं कहनियाँ) का जन-साधारण में प्रचलन अधिक है। सार्वजनिक पुस्तकालयों में भी वह अधिक मात्रा में खरीदा जाता है। इस कारण इसका सृजन और प्रकाशन तेजी से होता रहा है। अब इसके प्रकाशन की गति कुछ शिथिल प्रतीत होती है।

आज हिन्दी प्रकाशकों के सामने एक गम्भीर प्रश्न भी उपस्थित है। आज का प्रकाशन व्यवसाय प्रायः सरकारी खरीद पर अवलम्वित है जो हिन्दी के लिए उत्तम नहीं कहा जा सकता। सरकारी अथवा अर्ध-सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित साहित्य भी अप्रत्यक्ष द्वार से सरकारी खरीद में ही आ गया है। जनता में तो साहित्य की खपत ही नाममात्र को है।

जबतक जनता में साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत न होगी और प्रकाशक अथवा लेखक को यह आभास न होगा कि उसके द्वारा सर्जित साहित्य अल्मारियों की शोभा ही नहीं अपितु जनता की वस्तु है उस समय तक न तो उत्साह के साथ लेखक ही उत्तम साहित्य दे सकेगा और न प्रकाशक ही उत्तम साहित्य प्रकाशित कर पावेगा। 'वन-वे-ट्रैफिक' जैसी यह स्थिति जितनी जल्दी दूर होगी, हिन्दी प्रकाशन की नयी प्रवृत्तियाँ उतनी ही जल्दी पूर्ण विकास की ओर अग्रसर हो जाएँगी।

नेशनल बुक ट्रस्ट के सोविनार से साभार

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रदर्शनी एवं सेमिनार

श्री रघुबीरशरण बंसल

संचालक, बंसल एंड कंपनी दिल्ली

नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में राष्ट्रीय पुस्तकों की प्रदर्शनी २६ नवम्बर से २ दिसम्बर तक रवीन्द्र भवन नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भाषावार विभिन्न कक्षों में प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शनी की वाह्य रूपरेखा आर्कषक थी जो दर्शकों पर अपनी छाप छोड़ती थी।

प्रदर्शनी की प्रदर्शित पुस्तकों में हिन्दी का स्थान प्रथम दीख पड़ा (३३०० पुस्तकें)—दूसरा स्थान अंग्रेज़ी का (३००० पुस्तकें) तथा तीसरा स्थान बंगला का मिला जिसमें १३०० पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं। इन आंकड़ों से यह तथ्य भलीभांति प्रकट हो जाता है कि हिन्दी के विषय में कोई कितना भी क्यों न कहे, उसका स्थान प्रथम है। यद्यपि अंग्रेज़ी विश्व की समृद्ध भाषा है फिर भी वह प्रदर्शनी में हिन्दी से प्रतियोगिता में हार ही गई।

हिन्दी अपना स्थान स्वयं ले रही है अन्यथा किसी दूसरे का वश चले तो हिन्दी को इतना नीचे धरातल में धकेल दिया जाय जिसका कोई ठिकाना ही न हो। प्रदर्शनी में प्रवेश करते समय ही हिन्दी की पुस्तकें दृष्टिगोचर होती थीं किन्तु रक्खी बेतरतीब थीं। न तो उनका कोई वर्गीकरण ही सही प्रकार से हो पाया था और न प्रर्दशन ही। अंग्रेज़ी में विषय-वर्गीकरण एवं साज-सज्जा की कोई शिकायत नहीं थी।

यदि हिन्दी पुस्तकों के प्रदंशन में हिन्दी प्रकाशक संघ का सहयोग लिया जाता तो प्रदंशनी में हिन्दी को उचित स्थान मिल जाता। यह बात अपने को उस दिन अनुभव हुई जब श्री कृष्णचन्द्र जी बेरी के साथ ३० नवम्बर को प्रदर्शनी देखी। प्रदंशनी को देखकर हम यह बात गर्व के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी साज-सज्जा और रूप की दृष्टि से दिन प्रतिदिन ऊँचा उठता जा रहा है। विषय-सामग्री एवं विविधता की दृष्टि से भी भारतीय प्रकाशन प्रगति कर रहा है।

सैमीनार

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित सैमीनार में भाग लेकर मेरे मन में एक यह बात अवश्य आई कि यह सारा आयोजन नाम से तो नेशनल बुक ट्रस्ट का है किन्तु है सारा कार्य-व्यापार फैडरेशन आफ बुकसेलर पब्लिशर्ज ऐसोसियेशन का। सेमीनार के ३८ डेलीगेटों में से १५ स्थान फैडरेशन को मिले थे। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ को केवल एक स्थान देकर संघ का ही उपहास नहीं किया गया था अपितु समस्त हिन्दी प्रकाशक जगत की अवहेलना की गई थी। उत्तरी भारत में से राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, हिमाचल, उड़ीसा की न तो संस्थाओं के प्रतिनिधि बुलाये गये और न हिन्दी प्रकाशक संघ को ही इतना स्थान दिया गया कि वह इन क्षेत्रों से अपने प्रतिनिधि बुला कर समस्त भारत का प्रतिनिधित्व करा सके। समस्त भारतवर्ष के प्रतिनिधित्व के दृष्टिकोण से यह सेमीनार अत्यंत ही संकुचित रहा।

सैमीनार का सारा कार्य-व्यापार अंग्रेज़ी में हुआ, हिन्दी वहाँ नाममात्र को भी नहीं थी। कोई सूचना पट भी हमें हिन्दी का दिखाई नहीं दिया। और इस सैमीनार को देखकर हमें ऐसा लगा कि माननीय गृहमंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा कितना ही प्रयास करें किन्तु अभी अंग्रेज़ी के प्रतिनिधि, अंग्रेज़ी के शुभचिन्तक हिन्दी को कहीं भी आगे नहीं आने देंगे। अच्छा होता कि सैमीनार का नाम अंग्रेजी बुक सैमीनार अथवा फैडरेशन आफ बुकसेलर और पब्लिशर ऐसोसियेशन सैमीनार रखा जाता। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि नेशनल बुक ट्रस्ट

भविष्य में हिन्दी के प्रति इस प्रकार का व्यवहार नहीं करेगा। यदि ट्रस्ट का भविष्य में भी यही व्यवहार रहा और उसने यही रवैया अपनाया तो हम हिन्दी वालों के लिए असहयोग के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। असहयोग और अहिंसा का पाठ हमने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी से ही पढ़ा है।

सैमीनार में परस्पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ, प्रकाशन एवं पुस्तक व्यवसाय सम्बन्धी समस्याएँ हमारे सम्मुख आईं और हमने नेशनल बुक ट्रस्ट के द्वारा अपने कुछ विचार और समस्याएँ व्यक्त कीं। उनको सरकार कितना मानती है यह देखने की बात है। सैमीनार तथा कनवैन्शन में जितनी बातें कहीं गईं वह सबकी सब वही बातें थीं जिनको हिन्दी प्रकाशक संघ अपने कई मंचों से सरकार के सम्मुख प्रस्तुत कर चुका है। और सरकार ने उन पर अब तक कोई रचनात्मक पग नहीं उठाया। यदि इस बार सरकार ने सेमीनार के प्रस्तावों और सिफारिशों पर ध्यान दिया तो सैमीनार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। अन्यथा सैमीनार का जो मुख्यकार्य होता है, "विचार विनियम करता है और भविष्य में विचार विनियम के लिए समय एवं रूपरेखा निश्चित करता है," वही पूर्ण होगा। ●

पुस्तक-व्यवसाय और विक्री

श्री केदारनाथ पचौरी
प्रतिनिधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

समय-समय पर पुस्तक व्यवस्था संबंधी पत्रिकाओं में आदरणीय पुरी जी, श्री वेरी जी, श्री भाटिया जी और श्री दयानन्द जी वर्मा के लेख पुस्तक व्यवसाय और उसकी समस्याओं पर पढ़ता रहा। सौभाग्य से हिन्दी प्रकाशक संघ के एक या दो वार्षिक अधिवेशनों में भी मुझे सम्मिलित होने का अवसर मिला, वक्ताओं के भाषण सुने।

विचार आता रहा कि मैं भी कुछ लिखूं. कुछ करूँ पर संयोग से या संकोच से न लिख सका और न बोल सका। इस वर्ष कुछ बातें मेरे सामने आईं जिसके कारण मैं दो शब्द लिखने को विवश हुआ।

हिन्दी का प्रकाशन बड़ी तेजी से बढ़ रहा है, नये-नये प्रकाशक मैदान में आ रहे हैं. उसी प्रकार नये-नये लेखक भी दिखाई देने लगे हैं।

लेखक, प्रकाशक, और विक्रेता—मुख्यरूप से तीन प्रकार के लोग ही इस व्यवसाय में संलग्न हैं। चौथा नंबर आता है पाठक का—वह पैसा खर्च करता है और अपने पैसे के बदले में चाहता है उचित और मनचाही पुस्तक।

ग्राहक की पसंद क्या है, कैसी पुस्तक उसे चाहिए, यदि इस विषय पर लेखक और प्रकाशक विचार करें, और जन रुचि के अनुसार साहित्य का प्रचार और प्रसार हो तो संभव है कि पाठकों की संख्या बढ़ सके। वैसे अब तक पुस्तक व्यवसाय की जो गति है वह बड़ी विचित्र है। हर प्रकाशक केवल सरकारी अनुदान की ही प्रतीक्षा करता है और उसी की आशा पर ज़िंदा है। सरकार कब तक अनुदान देगी यह भविष्य पर निर्भर है क्योंकि प्रत्येक प्रदेशों की सरकारों के अपने-अपने प्रकाशन हैं। जिस प्रकार की प्रवृत्ति छोटे प्रकाशकों में है कि एक पुस्तक छाप कर, एक दूसरे का प्रकाशन लेकर अपना मेल बढ़ा लेते हैं, हो सकता है कि आगे चल कर सरकारें भी यही सोचना आरंभ कर दें कि हम ही क्यों न एक दूसरे का प्रकाशन लेकर संस्थाओं को बाँट दें, नकद रुपया क्यों दें। तब क्या होगा?

वैसे इस बात की संभावना तो कम ही है पर देखा यह जा रहा है कि कुछ बड़े कहलाने वाले प्रकाशक ऐसा कराकर ही छोड़ेंगे। क्योंकि बड़े होने के नाते वह बेरोक-टोक कभी भी किसी शिक्षा मंत्री, शिक्षा संचालक या ऐसे ही किसी अन्य अधिकारी से मिल-मिलाकर और मोटा कमीशन देकर एक जनरल आर्डर निकलवा लेते हैं कि अमुक प्रकाशक या अमुक लेखक का एक सैट प्रत्येक पुस्तकालय में होना चाहिए। वह आर्डर निकलवा ही नहीं लेते बल्कि माल भी भिजवा देते हैं। ऐसे आर्डर निकालने वाले भी यह देखने का कष्ट नहीं करते कि ये पुस्तकें स्कूलों आदि में पहले से ही भरी हुई हैं।

इधर हमारे कुछ बड़े प्रकाशक कुछ प्रसिद्धि प्राप्त लेखकों की पुस्तकें छाप रहे हैं और अपने बड़प्पन और लेखक की प्रसिद्धि का लाभ उठाकर मनमाना मूल्य रख रहे हैं और कम से कम कमीशन बुकसेलरों को दे रहे हैं। उन्हीं बड़े कहलाने वाले प्रकाशकों के सामने जब किसी सरकार का बड़ी संख्या में खरीद का प्रस्ताव आता है तो वह बुकसेलरों से भी १० प्रतिशत अधिक कमीशन सरकार को दे देते हैं जबकि वह बुकसेलर के आगे अपना आदर्श रखते हैं अपने नियत कमीशन का!

अब ज़रा ध्यान दीजिये कि जब बड़ा प्रकाशक किसी भी बड़ी सप्लाई में या पहुँच द्वारा अधिक कमीशन सरकार को देता है तब एक छोटा प्रकाशक जो कि वास्तव में एक बुकसेलर ही है, कहीं का नहीं रहता क्योंकि बड़ी खरीद तो गई बड़े प्रकाशक के पेट में और जन रुचि का साहित्य न छपने के कारण या बहुत अधिक मूल्य छपा होने के कारण पाठक या साधारण ग्राहक बुकसेलर को मिला नहीं, तब वह करे तो क्या करे?

ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि प्रकाशक से जो माल उसे उधार मिला था उसमें से जो बिक्री थोड़ी बहुत हुई उसे वह खाय क्योंकि पेट का मामला तो पहला है। अगर खायगा नहीं तो कम से कम लेट ज़रूर करेगा।

तो अब सवाल आता है कि लेखक, प्रकाशक, और बुकसेलर तथा उससे संबंधित पुस्तक व्यवसाय कैसे जिंदा रहे ? उसका तरीका मेरे सामने तो एक ही है, चाहे छोटा लेखक हो चाहे बड़ा, रायल्टी की दर कम रखे और कैंची और गोंद वाली पालिसी को छोड़ दे कि यदि उसने १० पुस्तकें लिखी हैं तो उसमें से थोड़ा २ मैटर लेकर एक ग्यारहवीं पुस्तक तैयार कर दे और जब पाठक पढ़े तो वह अपने भाग्य को कोसे कि यह सब मसाला तो मैं पहले पढ़ चुका, अब ख्याति के बाद यह महानुभाव लक्ष्मी के पीछे क्यों दौड़ने लगे ?

मेरा निवेदन यह है कि जनरुचि का और ठोस साहित्य ही हमारे लेखक महोदय लिखें। इससे राष्ट्रभारती के कोश की अभिवृद्धि तो होगी ही साथ ही पाठक को यह विश्वास भी हो जायेगा कि मैं जो यह पुस्तक खरीद रहा हूँ इसका पैसा पानी में नहीं जायगा।

उसके बाद आता है प्रकाशक का नंबर। उन लोगों का भी यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वह पुस्तकों का मूल्य पाठक की शक्ति के अनुसार ही रखें केवल यह सोच कर न रखें कि सरकार तो खरीद ही लेगी। प्रकाशक को सदैव अपने छुटभैया बुकसेलर और पाठक का ध्यान रखना चाहिये। साथ ही इस होड़ में नहीं पड़ना चाहिये कि यदि १००० पेज की पुस्तक बड़े आकार में छपी है तो उसी को १५० पेज में पाकिट साइज में छापकर पाठक को दे दें। इससे पाठक की संतुष्टि नहीं होती, यों पाकिट बुक छापने से हिन्दी का पाठक बढ़ा अवश्य है पर साहित्य की दुर्दशा करने पर गालियाँ भी कम नहीं मिलीं।

तीसरा नंबर आता है बुकसेलर का, उसका भी कुछ कर्त्तव्य अवश्य है। केवल प्रकाशक को कोसने और उसकी रकम दाब रखने से तो उसका भला होगा नहीं। उसे भी अपने क्षेत्र में घूम-घूम कर अपने ग्राहक और पाठक को यह भलीभाँति समझा देना चाहिये कि बन्धु हमारे यहाँ आपकी आवश्यकता की सभी सामग्री है। आपको बड़ी जगह भागने की आवश्यकता नहीं। जब तक पाठक और ग्राहक को यह विश्वास नहीं हो जाता कि हमें उचित मूल्य पर पुस्तकें मिल जायंगी तब तक वह बड़ों की तरफ अवश्य दौड़ेगा क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

मेरे इस छोटे से लेख का सारांश यह है कि लेखक, प्रकाशक एवं विक्रेता जब तक यह नहीं सोच लेते कि हम एक दूसरे के पूरक हैं तब तक यह व्यवसाय आगे नहीं बढ़ेगा बल्कि कठिनाइयाँ ही बढ़ेंगी।

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

हिंदी के पुस्तकाध्यक्ष,
हिंदी के सुधी विद्वान्,
हिंदी के विद्वान्, शोधकर्ता एवं निदेशक गण,
हिंदी के शोध छात्र,

महोदय,

व्यक्तिगत रूप से आप सबको सूचित कर सकना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए विज्ञापन का सहारा लिया गया है। इसके लिए क्षमा चाहते हुए निवेदन यह है कि आप सब सभा के खोज विवरणों से अवगत हैं। वह हिन्दी शोध-जगत् का मूलाधार रही है और हिन्दी के उन्नयन एवं विकास के आकलन के लिए उसकी उपयोगिता अनन्य एवं अनिवार्य रूप से सर्वग्राह्य रही है।

सन् १९०१ से सन् १९५५ ई० तक के विस्तृत नवीन खोज का संशोधित संक्षिप्त विवरण केन्द्रीय सरकार की सहायता से दो खंडों में नवम्बर ६४ में प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्मरणीय है कि खोज का विस्तृत विवरण केवल सन् १९४३ ई० तक का ही प्रकाशित है। दोनों खंड लगभग रायल आकार के ६५०-६५० पृष्ठों से अधिक हैं। कपड़े की जिल्दबन्दी भी की गयी है और प्रत्येक खंड का मूल्य ३०-३० रु० है। दोनों खंड एक साथ मँगानेवालों को ५१ रु० में ही दिसम्बर माह तक देने की व्यवस्था की गयी है। यह अत्यन्त सीमित मात्रा में छप रहा है। इसलिए विशेष रूप से निवेदन है कि इस संबंध में अपना आदेश शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
(प्रकाशन मन्त्री)
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

सम्पादक के नाम पत्र

लेखक कहाँ जाय, क्या लिखे

महोदय,

आपकी पत्रिका 'हिन्दी प्रकाशक' नित्य प्रति प्राप्त होती रही है और इसके द्वारा मुझे कुछ ज्ञान-लाभ भी होता है। मैं भारत का एक छोटा-सा हिन्दी लेखक भी हूँ। आप को कदाचित् मेरा यह पत्र-लेख पढ़कर आश्चर्य अवश्य होगा, क्योंकि पत्रिका प्रकाशकों के संघ की है और पत्र एक लेखक का—उसके साहित्य तथा साहित्यिक जीवन के सम्बन्ध में।

इस पत्रिका के द्वारा मैं अपनी बात 'साहित्य अकादमी' के कानों तक पहुँचाना चाहता हूँ, जो नवोदित लेखकों की ओर से कानों में तेल डाले हुए बैठी हुई है। यद्यपि आपकी पत्रिका के योग्य कदाचित्, यह अभिलेख न हो; किन्तु संभवतः उन अबोध साहित्यकारों के हित में अवश्य है, जो अभी शैशवावस्था के अंक में किलकारी भर रहे हैं और जिन्हें अपने यौवनकालीन भविष्य का तनिक भी ज्ञान नहीं है।

यह ठीक है कि आज सम्पूर्ण भारत में अनेकानेक साहित्यकार हैं, किन्तु उस दिन क्या होगा जब हर साहित्यकार की गति महाप्राण 'निराला' जैसी हो जायेगी? जब आज के महान साहित्य-प्रणेता न होंगे तब क्या होगा? इसके उत्तर में हर व्यक्ति यही कहेगा कि नये उत्पन्न हो जायेंगे, लेकिन कहाँ से? एक व्यक्ति के ऊपर जिस प्रकार की आपत्तियाँ आती हैं, मैं समझता हूँ, सब पर वैसी ही आती होंगी। एक अन्धे को सम्पूर्ण जगत् अन्धा ही दीखता है। मैं उपर्युक्त उत्तर देने वाले प्रत्येक व्यक्ति से पूछता हूँ कि उन जैसे महान् साहित्यकार कहाँ से आयेंगे जैसे पहले हो चुके हैं? क्योंकि आज के हर नवोदित लेखक के समक्ष हर समय कुछ न कुछ महत्वपूर्ण समस्याएँ मुँह बाये खड़ी ही रहती हैं; रोटी, कपड़ा और मकान।

जब एक लेखक के पास यह प्रमुख वस्तुएँ न होंगी तो वह साहित्य-सृजन तो न करके अर्थ-सृजन ही करेगा। वह इस अर्थ में कि वह साहित्य न लिखकर 'रोटी' लिखेगा, जैसे आज प्रत्यक्ष हो रहा है। आज का बाज़ारू (अश्लील) साहित्य कौन लिखता है, क्यों लिखता है?

इनका भी सृजन करने वाले वही लेखक हैं, जिन्होंने जब यह देखा कि उनके उच्च साहित्य का कोई मान या मूल्य नहीं है तो विवश होकर उन्हें अश्लील साहित्य का सहारा लेना पड़ा—जो आज 'पब्लिक टेस्ट' बन गया है—और इसकी बदौलत उन्होंने अपनी समस्याओं को हल करने की विधि निकाल ली। आज के किसी ऐसे लेखक से पूछिये तो जवाब मिलता है—"साहित्य से मुझे क्या, वह जाये भाड़ में। साहित्य से क्या रोटी मिलेगी? हमें 'रोटी' चाहिये, साहित्य नहीं।"

इस प्रकार की भावनाओं के अन्तर्गत कहीं साहित्य रचना हो सकती है? क्या एक भूखा लेखक साहित्य की रचना कर सकता है? इस आशय से सम्बन्धित एक पत्र जब मैंने स्वर्गीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी के द्वारा 'साहित्य अकादमी' को भेजा तो उसके उत्तर में मेरे पास केवल एक पत्रिका आई कि 'साहित्य आकादमी' ने यह किया है, वह किया है। लेकिन ज़रा चारो ओर निगाह फेरिये, साफ मालूम हो जायेगा कि 'साहित्य अकादमी' ने लेखकों के प्रति क्या किया है और क्या कर रही है। मैं अपने वर्त्तमान प्रधानमंत्री आदरणीय श्री लालबहादुर शास्त्री जी से यह पूछना चाहता हूँ कि उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र व मातृभाषा दोनों ही करार दे दिया है, लेकिन भावी हिन्दी लेखकों का क्या होगा?

क्षमा कीजियेगा, सम्पादक जी! यह तो 'साहित्य अकादमी' है, प्रकाशक महोदयों के तो नक्शे ही नहीं मिलते! जब कोई लेखक अपनी रचना लेकर उनके पास पहुँचता है तो उसे स्पष्ट इन्कार कर दिया जाता है—

सभी बड़े प्रकाशक यही करते हैं; फिर वे क्या करें, वे भी तो विवश हैं कि उनका पैसा डूब जायेगा—चाहे लेखक की कृति अन्य की अपेक्षा अधिक सुन्दर हो। रहे छोटे प्रकाशक, वे लेखक को मूर्ख समझकर उसकी रचना बिना मूल्य पर लेकर सारे अधिकार और सारा लाभ स्वयं ही ले लेते हैं, अन्यथा लेखक की कृति का कोई मूल्य नहीं, वह अप्रकाशित ही रह जायेगी—इस भावना से प्रेरित हो कर लेखक अपनी कृति के प्रकाशन के लिये इस दुर्व्यवहार को सहता है। आप प्रमाण माँगेंगे, तो वह भी मेरे पास उपस्थित है। मेरे पिछले पाँच उपन्यास बिना किसी मूल्य पर छपे हैं और लगभग सभी अत्यधिक लोकप्रिय हुए, किन्तु मूल्य कुछ भी नहीं। अभी जब मैंने छठा ग्रन्थ तैयार किया तो फिर वह भी बिना मूल्य पर माँगा गया। इससे चिढ़कर जब मैंने देहली के ही एक प्रकाशक महोदय के पास पत्र लिखा—इस ग्रन्थ के प्रकाशन के सम्बन्ध में—तो उनका तथा अन्य पत्रों का उत्तर पाकर इतनी अधिक प्रसन्नता हुई कि जी में तो यह आया कि उस ग्रन्थ को फाड़ कर चूल्हे में डलवा दूँ या फिर कूड़ेखाने में। आशा है, आप समझ गये होंगे।

अब आप ही बताइये कि आज के इस प्रकार के लेखक कहाँ जायें, क्या खायें और क्या लिखें? आशा है, आप इसे प्रत्रिका में एक छोटा सा स्थान देकर मेरा मान रख लेंगे। अपशब्द के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

—वीरेन्द्रनाथ बहोरे 'अज्ञात'
६, बहोरन टोला, चौक,
लखनऊ–३

मुख्य समस्या

अभी 'हिन्दी प्रकाशक' में 'लेखक और प्रकाशक' शीर्षक लेख पढ़ा। लेखक ने उसमें कुछ काम की बातें कहीं हैं। सब प्रकाशक बुरे नहीं होते। सब लेखक भी बुरे नहीं होते। मुख्य समस्या तो पुस्तकों की बिक्री की है। पुस्तकें बिकने लगें तो अपने आप बहुत सी समस्याएँ हल हो जायें। परंतु जब तक सरकार ईमानदारी और सचाई के साथ इस ओर ध्यान नहीं देती, तब तक कुछ हो नहीं सकता। वह चाहती ही नहीं कि लोग पुस्तकें पढ़ें!

—कृष्णानन्द गुप्त, गरौठा

संघ समाचार

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह

दिल्ली में उत्साह

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर दिल्ली में पुस्तकों की प्रायः सभी प्रमुख दुकानें नये एवं आकर्षक ढंग से सजाई गईं और ग्राहकों को कई तरह की सुविधाएँ दी गईं। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ द्वारा इस अवसर के लिए प्रेषित रंगीन पोस्टर सर्वत्र प्रदर्शित हुआ। प्रकाशक संघ के प्रधान कार्यालय से ५००० की संख्या में रंगीन पोस्टर सदस्यों को भेजे गये। समाचार पत्रों में पुस्तकों की चर्चा हुई और विशेष परिशिष्ट प्रस्तुत हुए।

पुस्तक प्रदर्शनी १७ दिसम्बर को

दिल्ली में इस अवसर पर होने वाली हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी को और भी अधिक सज-धज और सुरुचिपूर्ण ढंग से आयोजित करने के लिए १७ दिसम्बर, ६४ तक स्थगित करने का फ़ैसला किया गया। तथा यह भी निर्णय किया गया कि उक्त प्रदर्शनी में राजस्थानी, मैथिली और भोजपुरी के साहित्य के साथ-साथ हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं को भी प्रदर्शित किया जाय।

काम पूरे ज़ोरों से चल रहा है। प्रदर्शनी के इस आयोजन में सभी प्रकाशक बंधुओं एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों का पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

वाराणसी में विचारगोष्ठी

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निदेशानुसार १४ नवम्बर को काशी पुस्तक व्यवसायी संघ की ओर से राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के उपलक्ष में 'हिन्दी की पुस्तकें पाठकों द्वारा क्यों कम पढ़ी जाती हैं' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन 'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय पिशाच मोचन में डा० तिलेश्वर राय प्रिंसिपल, जे० पी० मेहता कालेज वाराणसी की अध्यक्षता में किया गया।

बंगला के पाठक-लेखक

गोष्ठी का सभारम्भ करते हुए काशी पत्रकार संघ के अध्यक्ष श्री श्यामाप्रसाद पाण्डेय 'प्रदीप' ने हिन्दी की पुस्तकों के अधिक मूल्य का जिक्र किया और सुझाव दिया कि पुस्तकों का मूल्य कम रखा जाय। उन्होंने कहा कि बंगाल में पाठकों में पढ़ने की रुचि हिन्दी पाठकों की अपेक्षा बहुत ज्यादा है। बंगला के लेखक पाठकों के लिए उपयुक्त सामग्री उपस्थित करते हैं जब कि हिन्दी के पाठकों को उनकी रुचि के अनुकूल बहुत कम पुस्तकें मिलती हैं। प्रकाशकों को ऐसे लेखक खोज निकालने चाहिए जो कि जनता के दिल और दिमाग को समझें। ऐसे लेखक तभी मिल सकते हैं, जब उनका सही मूल्यांकन किया जाय।

चार कारण

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के मंत्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने कहा कि सामाजिक परिवेश, आर्थिक विषमता, आधुनिक युग का प्रचार और प्रकाशन का स्तर -- चार ऐसे कारण हैं जो हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री में मुख्य रूप से बाधक हैं। महाराष्ट्र और बंगाल की सामाजिक स्थिति से तुलना करते हुए श्री बेरी ने बताया कि बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान आदि हिन्दीभाषी क्षेत्रों में सामाजिक परिवेश कभी भी ऐसा नहीं बन पाया, जिससे यहाँ का पाठक अपनी अन्य दुनियाबी चिन्ताओं से मुक्त हो पुस्तकों के पढ़ने में अधिक रुचि ले। इन प्रदेशों का मध्यवर्गीय समाज आर्थिक विषमता में उलझे रहने के कारण पुस्तकों के बारे में सोच ही नहीं पाता। कुछ अपवादों को छोड़कर सामान्यतः प्रकाशन स्तर अभी तक ऐसा नहीं हो सका है जो सहज ही पाठकों के मन को मोह ले और उनके मन में यह भावना जागृत हो कि उन्हें अमुक लेखक या अमुक प्रकाशक की पुस्तकें अपने यहाँ संग्रहीत करनी हैं। आधुनिक युग के प्रचार को देखते हुए प्रकाशकों को चाहिए कि वे अपने विज्ञापन के तौर-तरीकों में क्रांति पैदा करें। जब तक पुस्तकों का विज्ञापन वर्तमान युग की वैज्ञानिक विज्ञापन-प्रणाली को दृष्टिगत रख नहीं किया जायेगा तब तक पुस्तकों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट होना बहुत कठिन है। इसके लिए आव-

श्यक है कि हम अधिक से अधिक प्रदर्शनियों का आयोजन करें और पाठ्यरुचि का सर्वेक्षण पुस्तकालयों द्वारा करवायें।

पराधीनता का परिणाम

उत्तर प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष पं० हरिहर पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी भाषी प्रदेश विगत एक हज़ार वर्षों से विदेशी आक्रमणों से बहुत ज़्यादा आक्रांत रहते आये हैं। यही कारण है कि इन प्रदेशों में सामाजिक परिवेश वैसा नहीं बन सका, जैसा कि बंगाल और महाराष्ट्र का है। इन प्रदेशों की संस्कृति को नष्ट करने की हमेशा चेष्टा की गयी और यहाँ के मध्यम वर्ग ने सदैव अपने को जीवित रखने की चेष्टा करने के लिए संघर्ष किया। अब ऐसा समय आ गया है कि यहाँ का मध्यम-वर्ग पढ़ने-लिखने की ओर रुचि ले रहा है और यदि प्रकाशकों ने समुचित प्रचार-प्रसार किया तो उन्हें हिन्दी के पाठक धीरे-धीरे मिलेंगे।

बाल साहित्य पर बल

हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डा० किशोरीलाल गुप्त ने अच्छे बाल-साहित्य के प्रकाशन की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने बच्चों को अच्छा बाल साहित्य दें तो यही बच्चे आगे चलकर हिन्दी के अच्छे पाठकों में गिने जायेंगे। डा० गुप्त ने हिन्दी में ग्रंथावलियों के अभाव का जिक्र किया और प्रकाशकों से आग्रह किया कि हिन्दी के ख्यातिप्राप्त लेखकों की पुस्तकें कम मूल्य में प्रकाशित करें। उन्होंने लेखकों से भी आग्रह किया कि वे ग्रंथावलियों के लिए प्रकाशकों से अनुबन्ध करें जिससे ग्रन्थावलियाँ प्रकाशित हो सकें।

स्तर सँभालने की जरूरत

'बनारस' दैनिक के सहकारी सम्पादक श्री माधवजी ने हिन्दी में प्रकाशित होनेवाले अधिकांश शोध-ग्रंथों को निम्न स्तर का बताया। उन्होंने शिकायत की कि संस्कृत के ग्रन्थ से संस्कृत का अनुवाद न करके अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद किया जाता है। उन्होंने शिकायत की कि कुछ पुस्तकें खरीदने के बाद उन्हें यह अनुभव हुआ कि

हिन्दी में छपने वाली अधिकांश पुस्तकों की विषयवस्तु उस मूल्य के बराबर नहीं है जो मूल्य पाठक पुस्तक-विक्रेता को उस पुस्तक के एवज में देता है ।

जनता तक पहुँचे

गोष्ठी का समापन करते हुए डा० शिवप्रसाद सिंह ने कहा कि प्रकाशन तथा विक्रय का कार्य उतना आसान नहीं है जितना कि लोग समझते हैं । इस कार्य में आनेवालों को यह सोच लेना होगा कि उन्हें व्यवसाय के साथ-साथ कुछ सेवा का कार्य भी करना है । उन्होंने कहा कि आज के युग में प्रकाशन व्यवसाय को वैज्ञानिक रीति से विकसित करना होगा । फिर कोई ऐसा कारण नहीं है कि हिन्दी में पाठक कम मिलें । मध्यमवर्ग की स्थिति का जिक्र करते हुए डा० सिंह ने कहा कि हमारे मध्यम-वर्ग की स्थिति बंगाल और महाराष्ट्र के मध्यमवर्ग से अच्छी नहीं है । यही कारण है कि इच्छा रहते हुए भी हिन्दी भाषाभाषी राज्य का मध्यमवर्ग हिन्दी पुस्तकें नहीं खरीद पाता । इतने पर भी एक बौद्धिक वर्ग पैदा हो रहा है जो पुस्तकों के पढ़ने का प्रेमी है । इस बौद्धिक वर्ग के पास पहुँचने के लिए प्रकाशकों को प्रयत्न करना होगा और जनता के बीच चलना होगा । जनता से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न रखने पर प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता इस वर्ग तक नहीं पहुँच सकेंगे ।

काशी पुस्तक व्यवसायी संघ के अध्यक्ष श्री कैलास-नाथ भार्गव ने विचारगोष्ठी में आये लोगों को धन्यवाद दिया ।

जोधपुर में पुस्तक प्रदर्शनी

किताबघर जोधपुर द्वारा सन् १९५६ से एक ऐसी योजना का सूत्रपात किया गया जो अपने में एक अजीब सी लगती थी । ऐसे समय जब कि सरकार टेण्डर से पुस्तकें खरीदती थी और व्यापार काफी मन्दा था उस समय पाठकों की भी कमी थी; खासकर जोधपुर में जहाँ कुछ भी उद्योग नहीं था । सरकारी कार्यालयों में लोग बाबूगीरी करते थे । इस योजना को एक मखौल ही माना गया था । पहले साल में केवल सन् ५५ के प्रकाशन ही प्रदर्शित किये गये और वे भी मात्र प्रदर्शन ही । पाठकों

की कमी रही और जो भी आये उनमें से कुछ पुस्तकें चुरा कर ले गये। इस तरह हजारों पुस्तकों में से सैकड़ों पुस्तकों की चोरी हुई। सन् १९५७ में सभी अच्छी पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया और उसमें भी पुस्तकों की चोरी हुई। सन् १९५८ में प्रदर्शनी में पुस्तक विक्रय व्यवस्था चालू की गई और अखिल भारतीय प्रकाशक संघ ने भी इस प्रदर्शनी के आयोजन की सराहना की। इस तरह प्रति वर्ष यह आयोजन वसन्त ऋतु में होता रहा परन्तु जिस समय प्रकाशक संघ ने भी राष्ट्रीय पुस्तक समारोह मनाने का निर्णय ले लिया उस दिन से यह आयोजन भी इस समारोह का अंग बन गया और हर वर्ष समारोह के अवसर पर ही यह आयोजन हो रहा है। भारत के विभिन्न प्रकाशक अपने प्रकाशन इस प्रदर्शनी में भेजते हैं और ये सभी करीब एक सप्ताह के लिये लाखों पाठकों को बिना शुल्क के दिखलाये जाते हैं।

प्रदर्शनी का मूल उद्देश्य पाठकों के दिल में पढ़ने की अभिरुचि पैदा करना है और ऐसी प्रदर्शनी से हिन्दी का वांङ्मय लोगों के सामने आ ही जाता है और उनको देख कर लोगों के मन में पढ़ने की अभिलाषा बढ़ती ही है। जोधपुर की यह प्रदर्शनी १९६४ में अपना नवमा आयोजन १४ नवम्बर को कर पाई जिसका उद्घाटन राजस्थान के उपमंत्री श्री परसराम मदेरणा ने किया और २२ नवम्बर तक यह चलती रही। करीब १७००० पुस्तकें आईं और प्रदर्शित की गईं। अनुमानतः २८००० पाठकों ने इसको देखा।

मथुरा में बाल मेला एवं पुस्तक प्रदर्शनी

इस वर्ष डेम्पियर पार्क मथुरा में बाल-दिवस पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का सुन्दर आयोजन किया गया। प्रदर्शनी और बाल-दिवस का आयोजन बहुत सफल रहा जिले के गण्यमान्य नेता, अधिकारी गण, साहित्यकार और शिक्षाविदों ने इस आयोजन में भरपूर योग दिया।

अंतिम दिन इंदौर के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मनमोहन जी मदारिया के सम्मान में जवाहर पुस्तकालय

मथुरा के कार्यालय में एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन हुआ। उस गोष्ठी ने अंत में विचार गोष्ठी का रूप ले लिया। विचार गोष्ठी का मुख्य विषय था पाठक अधिक होते हुए भी अन्य भाषाओं की अपेक्षा हिन्दी पुस्तकों की बिक्री कम क्यों है ?

साहित्य संगम मथुरा के संचालक श्री रघुनाथदास अग्रवाल ने अपने तर्क रखे, उनका उत्तर राज्यश्री प्रकाशन के अधिष्ठाता श्री प्रमोद बिहारी ने बड़ी अच्छी शैली में दिया।

मुख्य अतिथि श्री मनमोहनजी मदारिया ने भी अपने भाषण में इस बात पर अधिक जोर दिया कि जब तक हिन्दी का लेखक उत्तम साहित्य की रचना नहीं करता और हिन्दी का प्रकाशक सजग रहकर सोच विचार कर साहित्य का प्रकाशन नहीं करता तब तक पाठक भी पैदा नहीं होंगे और व्यवसाय में भी गतिरोध रहेगा।

हास्य रस के प्रमुख साहित्यकार डा० बरसानेलाल जी चतुर्वेदी ने श्री मदारिया जी का स्वागत करते हुये अपने भाषण में कहा कि हास्य और व्यंग्य साहित्य किसी भी देश और जाति की बुराइयों को दूर करने में रामबाण औषध है। हास्य निबंध या कविता जब तक पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो जाते तब तक उसका अधिक प्रचार कैसे बढ़ेगा ?

जवाहर पुस्तकालय के संचालक श्री कुंज बिहारीलाल पचौरी एम. काम ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया।

कुछ अच्छे प्रकाशकों की पुस्तकें ही प्रदर्शनी के लिए उपलब्ध हो सकीं, भविष्य के लिए प्रकाशकों को चाहिए कि इस प्रकार के आयोजनों में भर पूर योग देने की कृपा करते रहें।

कवि बच्चन को समर्पित

५७ दीप, ५७ फूल

नई दिल्ली में निराला समारोह

राजधानी के साहित्यकारों ने २७-१०-६४ को अपने अत्यन्त प्रिय कवि श्री हरिवंशराय बच्चन की ५७वीं वर्षगांठ बड़े ही सुरुचिपूर्ण तथा सुसंस्कृत वातावरण में मनायी।

समारोह के अध्यक्ष डा० नगेन्द्र ने कहा—बच्चन आधुनिक काल के प्रथम कवि हैं, जिन्होंने कविता को जीवन से जोड़ा, उनका काव्य और व्यक्तित्व दोनों ही बड़े निश्छल हैं। आत्मदान ही कवि का लक्ष्य रहा है इसलिए उसे उपेक्षा भी सबसे अधिक सहनी पड़ी है। उसी का परिणाम है कि आज छोटे-छोटे राजनीतिज्ञ का सार्वजनिक अभिनंदन होता है और बड़े से बड़े कवि पर हमारी दृष्टि नहीं जाती। यह आयोजन एक शुभ शकुन है।

'तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमंत्रण' तथा 'सुख की एक सांस पर होता है अमरत्व निछावर' जैसी रचनाओं के अमर गायक श्री बच्चन का अभिनन्दन समारोह जब गान्धर्व महाविद्यालय के मंगल गान से आरम्भ हुआ तो कांस्टीट्यूशन क्लब का हाल लेखकों और कवियों से भरा था पर वातावरण की शांति इस बात का आभास दे रही थी कि वह सरस्वती के पुत्र का अभिनन्दन है न कि किसी राजनीतिक पुरुष का।

श्री ताराचंद खंडेलवाल ने ५७ जगमगाते दीप, ५७ पुष्पों की सुगंधित माला और फिर वयोवृद्ध साहित्यकार श्री वियोगी हरि द्वारा बच्चन का टीका—इस सबसे उस वातावरण की एक झलक मिल सकती है।

श्री ताराचन्द खंडेलवाल के माल्यार्पण के पश्चात प्रसिद्ध लेखक तथा संसत्सदस्य सेठ गोविन्ददास ने इन शब्दों के साथ समारोह का उद्घाटन किया—कवि धरती का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और साहित्य सभी क्षेत्रों में सर्वोपरि है। इस नये युग में साहित्य को उसका श्रेष्ठ आसन मिले हमारा यही प्रयत्न होना चाहिये। बच्चनजी आधुनिक कवियों में प्रमुख हैं और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि इतनी लोकप्रियता और जनता का स्नेह किसी भी कवि को नहीं मिला जितना इन्हें मिला है।

व्यक्ति और कवि

प्रसिद्ध हिन्दी प्रकाशक श्री कन्हैयालाल मलिक ने इस अवसर के लिए विशेष रूप से प्रकाशित पुस्तक 'बच्चन : व्यक्ति और कवि' बच्चनजी को भेंट की। इस पुस्तक में सर्व श्री निरंकारदेव सेवक, सुमित्रानंदन पंत, नरेन्द्र शर्मा, बालस्वरूप राही आदि के लेखों के अतिरिक्त बच्चनजी की कुछ प्रसिद्ध कविताएं भी संकलित हैं।

हिन्दी भवन की अध्यक्ष श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने एक शाल तथा मानपत्र भेंट किया। यह मानपत्र ताम्र तथा रजत का बना है और इस पर अंकित है—हिन्दी के वर्चस्वी कवि डा० बच्चन को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए ५७वीं वर्षगांठ पर सादर समर्पित।

श्री प्रभाकर माचवे ने अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा—मधुशाला हिन्दी की एकमात्र कविता पुस्तक है जिसका अंग्रेजी के अतिरिक्त प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इतना ही नहीं आज तक आधुनिक कविता की कोई पुस्तक मधुशाला से अधिक नहीं बिकी। मधुशाला जहाँ अखण्ड आनन्द का स्रोत है वहां 'तुम तूफान समझ पाओगे' जैसी पंक्तिया लिखने वाले कवि बच्चन का सर्वश्रेष्ठ सृजन उनके संग्रह निशा निमंत्रण में संगृहीत है। ये सदा युग के साथ रहे हैं। मधुशाला, निशा निमंत्रण के बाद बंगाल का काल फिर सूत की माला फिर सतरंगिणी और प्रणय पत्रिका इनके विविध रंगों के काव्य चित्र हैं।

अनुशासित जीवन

बच्चनजी के मित्र तथा प्रसिद्ध हिन्दी कवि श्री नरेन्द्र शर्मा ने समारोह को पारिवारिक उत्सव का रूप देते हुए कहा—इनका जीवन और काव्य बड़े ही अनुशासित हैं। ईश्वर करे ये शतायु हों।

उर्दू के प्रसिद्ध कवि श्री सागर निजामी ने कहा—

२७ वर्ष पहले मैं इनसे तब मिला था जब ये आसमान पर थे। यह कहना उचित न होगा कि ये हिन्दी के बड़े कवि हैं—क्योंकि भाषा, देश, काल और नाम की सीमाओं में बांधना गलत होगा। कवि पूरी इन्सानियत के होते हैं। बच्चन जी सारी दुनिया के कवि हैं। इकबाल की पंक्ति में सागर ने इस तरह अपना प्यार अर्पित किया—"जरा नम हो कि यह मिट्टी बड़ी जरखेज है साकी।"

कविवर श्री रमानाथ अवस्थी ने अपनी काव्यमय श्रद्धा इन पंक्तियों में व्यक्त की—"भूलो मुझे नहीं, मरते औ जीते, अनगिन दिन बीते, हो न सके पूरे, अरमान अधूरे विपदा बहुत सही—भूलो मुझे नहीं।"

श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने प्रकट किया—बच्चनजी कविता और जनता के बीच की कड़ी रहे हैं। वे चाहे कोई महाकाव्य रचें या नहीं पर उन्हें महाकवि का आसन प्राप्त हो चुका है।

प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने कहा—इन्होंने छायावाद की लीक को तोड़ा, इनका अपना एक केन्द्र है जिससे ये कभी डिगे नहीं। इनकी रचना का सम्बन्ध इनके गहन अंतरंग से है।

गांधर्व महाविद्यालय की छात्राओं ने बच्चनजी के दो गीत भी प्रस्तुत किये।

बच्चनजी को ज्वर होने के कारण वे काव्य पाठ नहीं कर सके पर उनकी कमी को पूरा किया श्रीमती तेजी बच्चन ने। उन्होंने बच्चनजी की कई सरस कविताएं सुनायीं।

समारोह का संचालन श्री बांकेविहारी भटनागर ने किया और अतिथियों को धन्यवाद दिया श्री यशपाल जैन ने।

यह समारोह चित्र कला संगम, हिन्दी भवन तथा लेखिका संघ के सम्मिलित प्रयास से आयोजित हुआ।

"तन के सौ सुख सौ सुविधाएं
मेरा मन वनवास दिया-सा
कहते लाज मरा जाता हूं
मैं सागर के बीच पिआसा"

इन अमर पंक्तियों के लेखक के शतायु होने की सभी ने प्रार्थना की।

'रस सिद्धान्त' का ग्रंथ-विमोचन समारोह

एक दिसम्बर की संध्या को नेशनल स्पोर्ट क्लब मथुरा रोड़ नई दिल्ली में डा० नगेन्द्र के आलोचनात्मक ग्रंथ 'रस-सिद्धान्त' का ग्रंथ-विमोचन समारोह संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास जी की अध्यक्षता में हुआ। ग्रंथ का विमोचन राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने किया। इस समारोह में राजधानी के अनेक साहित्यकार, पत्रकार, दिल्ली विश्व-विद्यालय एवं महाविद्यालय के प्राध्यापक, भारतीय संसद के सभासद, प्रमुख शिक्षा शास्त्री एवं प्रकाशन जगत के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डा० कोठारी, उपशिक्षा मंत्री भक्तदर्शन जी, डा० केसकर, संयुक्त शिक्षा सचिव श्री रमाप्रसन्न नायक, डा० गंगोली, कैप्टन भगवानसिंह, श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री मुन्नूलाल द्विवेदी, श्री राजेन्द्रप्रसाद नारायण सिंह, श्री गंगाशरणसिंह, श्री भगवती चरण वर्मा और श्री सी० वी० राव आदि के नाम प्रमुख हैं।

विश्व के श्रेष्ठ आलोचक

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए सेठ गोविन्ददास जी ने कहा कि आलोचना क्षेत्र में डा० नगेन्द्र का स्थान बहुत ऊँचा है। मैंने भारतीय एवं विश्व के वाङ्मय को पढ़ा है। यदि डा० नगेन्द्र अंग्रेजी भाषा में आलोचना करते तो उनका स्थान विश्व के श्रेष्ठतम आलोचकों में होता, उत्तम आलोचना के बिना साहित्य में निखार नहीं आता। मैं डा० नगेन्द्र की इस कृति के लिए शुभकामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि डा० नगेन्द्र भविष्य में भी अपनी कृतियों से हमारे हिन्दी साहित्य का भण्डार भरते रहेंगे।

विष का परिहार

राष्ट्रकवि गुप्त जी ने ग्रंथ-विमोचन करते हुए कहा कि आलोचक रस को विष के प्रहार से बचाता है। और डा० नगेन्द्र की यह कृति इस कार्य के लिए उत्तम कृति है। मेरी स्थिति तो जौहरी के उस सेवक की भांति है जो स्वर्ण जड़ित आभूषणों की मंजूषा को खोलकर पारखी अथवा ग्राहकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

हिन्दी के सव्यसाची

आचार्य प्रवर डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस ग्रंथ के सम्बन्ध में कहा कि डा० नगेन्द्र हिन्दी आलोचना के सव्यसाची हैं, जिस प्रकार अर्जुन महाभारत में दोनों हाथों से तीर चला सकता था उसी प्रकार डा० नगेन्द्र भारतीय साहित्य एवं आधुनिक पाश्चात्य साहित्य दोनों सिद्धांतों के आलोचक के रूप में अधिकारी हैं। प्राचीन साहित्य का चिन्तन और उसका मूल्यांकन ऐतिहासिक दृष्टि से करना चाहिए। डा० नगेन्द्र ने पुराने शास्त्रों का अध्ययन नई दृष्टि से किया है। और यह कृति उनके चिन्तन का नवनीत है। मैं कृति (रससिद्धांत), कृतिकार (डा० नगेन्द्र) तथा प्रकाशक (नेशनल पब्लिशिंग हाउस) तीनों के प्रति बधाई एवं शुभकामना प्रकट करता हूँ।

रस सिद्धांत—हिन्दी का गौरव ग्रंथ

पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी 'श्रीवर' ने ग्रंथ के विषय में कहा कि इस कृति के कुछ अंश 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए हैं और उनके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि इस ग्रंथ की गणना हिन्दी के गौरव ग्रंथों में की जायेगी। आधुनिक विद्वान और विद्यार्थी इससे लाभान्वित होंगे। डा० नगेन्द्र कवि होने के साथ-साथ ब्रज भाषा के अधिकारी हैं। और इस कारण रस के सच्चे शब्दों में पारखी हैं।

नीरसवादियों के लिए नई दृष्टि

प्रमुख नाटककार एवं कवि श्री उदयशंकर भट्ट ने कहा कि भारतीय वांड्मय में रस की चर्चा बड़ी पुरानी है। वैदिककाल से आज तक रस साहित्य को प्रभावित करता रहा है। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि नीरसवादियों को डा० नगेन्द्र का यह ग्रंथ एक नई दृष्टि प्रदान करेगा ।

मुक्त दृष्टि : नई शैली

डा० गोपाल शर्मा ने ग्रंथ के विषय में कहा कि डा० नगेन्द्र का यह ग्रन्थ अलमूय एवं अद्वितीय है। इसमें वेद से लेकर आज तक रस की पुष्टि हुई है। डा० नगेन्द्र लेखन क्षेत्र में हठवादी अथवा आग्रहवादी नहीं हैं। उन्होंने आधुनिक मनोविज्ञान के आधार पर उसकी चर्चा नये ढंग से प्रस्तुत की है। और इस दृष्टि से यह ग्रन्थ बड़ा ही उपयोगी है ।

हिन्दी के अभिनव गुप्त

डा० सुरेन्द्र बारलिंगे ने कहा कि हिन्दी के अभिनव गुप्त डा० नगेन्द्र हिन्दी के अभिनव गुप्त हैं। उन्होंने रस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि रस की चर्चा भारतीय वांड्मय में बड़ी पुरानी है। डा० नगेन्द्र ने आधुनिक दृष्टिकोण से इसकी विवेचना की है। यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

हिन्दी के रसावतार

हिन्दी के प्रमुख कवि नरेन्द्र शर्मा ने कहा कि विषय की दृष्टि से पुस्तक में गम्भीरता के कारण नीरसता और विलष्टता आ जानी स्वाभाविक है किन्तु मुझे इस कृति में पढ़ते समय रस का अनुभव हुआ। डा०नगेन्द्र आलोचक के साथ-साथ एक सफल गद्य शैलीकार भी हैं। उनकी दृष्टि बड़ी स्वच्छ एवं समन्वयवादी है। मैं चाहूँगा कि आज की यह सभा डा० नगेन्द्र को रसावतार की पदवी से विभूषित करे और चाहे यह पदवी आज ही दे दी जाये अथवा उनके दूसरे ग्रंथ के प्रकाशन पर।

पारायण ग्रन्थ

उपन्यासकार एवं दार्शनिक श्री जैनेन्द्रकुमार जैन ने कहा कि डा० नगेन्द्र बचपन से ही रसिक हैं। और उन्होंने उसी रस का आस्वाद परिज्ञान स्वरूप पुस्तक में परिणत किया है। डा० नगेन्द्र का यह ग्रंथ पठन के लिए नहीं अपितु पारायण के लिए है। मैं डा० नगेन्द्र की कृति की शुभ कामना प्रकट करता हूँ । और लेखक तथा प्रकाशक को उत्तम कृति के लिए बधाई देता हूँ।

डा० नगेन्द्र ने अभ्यागतों का स्वागत करते हुए कहा कि अनेक कारणों से मैं इस ग्रंथ को अपनी साहित्य साधना की परिणति मानता हूं। पिछले तीस वर्षों में काव्य के मनन और चिन्तन से मेरे मन में जो अन्तः संस्कार बनते रहे हैं, उनकी संहति रस सिद्धान्त में ही हो सकती है। अतः रससिद्धान्त की उपलब्धि मैंने मूलतः 'साधुकाव्य-निषेवण' के द्वारा ही की है—शास्त्र के अनुचिन्तन से तो उसका पोषण मात्र हुआ है।

प्रस्तुतः ग्रन्थ की समाप्ति तक आते-आते मेरी धारणा कुछ ऐसी होने लगी थी कि अब शास्त्र-चर्चा छोड़कर आधुनिक काव्य के अध्ययन में प्रवृत्त होना चाहिए और इस प्रकार फिर उसी भूमि पर उतर आना चाहिए जहाँ से यात्रा आरम्भ की थी । परन्तु भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय अनायास ही यह तथ्य सामने आया कि वर्तमान काव्य-सर्जना के आधारतत्वों—बिम्ब, प्रतीक, प्रभाव-छवि आदि की सम्यक् व्याख्या के लिए भारतीय अलंकार सिद्धान्त की अनुस्थापना कदाचित् उपादेय हो सके। वास्तव में ऐसे प्रयासों से परम्परा को नवजीवन मिलता है और प्रयोग को स्थिर आधार। इस प्रकार एक बार फिर भारतीय काव्यशास्त्र के तृतीय भाग को पूरा करने का लोभ उत्पन्न हो गया है । शास्त्र की भूमि निश्चय ही कठिन है, पर अब मन को अभ्यास हो चला है। यहाँ श्रम भी सुख-सा रहा ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस के संचालक श्री कन्हैयालाल मलिक की सौजन्यता एवं सहृदयता तथा प्रकाशन विभाग के अधिकारी श्री माधव की व्यवस्था ने समारोह को सफल बनाने में विशेष योग दिया ।

—रघुवीरशरण बंसल

नेशनल बुक ट्रस्ट : पुस्तक प्रदर्शनी एवं सैमीनार

इस वर्ष नेशनल बुक ट्रस्ट ने पुस्तकों के प्रचार के लिए राजधानी में २६ नवम्बर को पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। २९-३० या पहली दिसम्बर को सैमीनार तथा कनवैन्शन का आयोजन किया।

पुस्तक प्रदर्शनी

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने रवीन्द्र भवन में प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहा— पुस्तकें ज्ञान के प्रसार का साधन हैं, अतः महान ग्रन्थों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये उनके सस्ते संस्करण प्रकाशित किये जायं।

उन्होंने कहा—बहुत पुराने काल से पुस्तकें ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण योग देती आ रही हैं। पुस्तकें महान व्यक्तियों के विचारों का दर्पण होती हैं। रामकृष्ण, विवेकानन्द, गांधी, मार्क्स, नेहरू सभी को हम पुस्तकों के माध्यम से ही समझते हैं।

पुस्तकों से ही हम यह जान पाते हैं कि लोकतंत्र तथा कल्याणकारी राज्य का अभिप्राय क्या है। एक लेखक के नाते मैं यह भी जानता हूँ कि बुरी पुस्तकें भी होती हैं जो समाज को हीन बनाती हैं। पुस्तक प्रकाशन के कार्य में एकांकी दृष्टि उचित नहीं है। हमें एक ओर जहाँ विज्ञान-टेक्नालोजी साहित्य के उत्तम ग्रन्थ प्रकाशित करने चाहिए वहाँ उन ग्रन्थों को भी महत्व दिया जाय जिन्हें पढ़कर पाठक का मानसिक धरातल ऊपर उठता है। मुद्रण, साज-सज्जा आदि की प्रगति पर राष्ट्रपति ने संतोष व्यक्त किया और कहा कि भविष्य में मुद्रण कला को और भी विकसित करना चाहिए।

अमरता की आकांक्षा

समारोह के अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षामंत्री श्री चागला ने कहा— इस प्रकार की प्रदर्शनी की बहुत पहले से आवश्यकता थी। हमें देखना चाहिए कि पुस्तकें क्यों लिखी जाती हैं। व्यक्ति अपने विचारों को स्थायित्व प्रदान करते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि उसके पीछे अमरता की आकांक्षा रहती है। पुस्तकें लेखकों के विचारों एवं भावनाओं को अमरता प्रदान करती हैं।

उन्होंने चेतावनी दी कि कोई भाषा मात्र अपनी परम्पराओं के दावों से जीवित नहीं रह सकती बल्कि उसे नये युग की आवश्यकताओं को भी समझना होगा। केवल पुस्तकें प्रकाशित करना कोई बात नहीं है बल्कि वे पुस्तकें अर्थ रखती हैं जिनकी समाज को आवश्यकता है।

ट्रस्ट का कर्त्तव्य

राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट का कर्त्तव्य है कि वह भारतीय लेखकों की ऐसी रचनाएं प्रकाशित करे जो पाठकों को कम मूल्य पर उपलब्ध हो सकें। शिक्षामंत्री ने यह भी बताया कि पुस्तकों का प्रकाशन ही अंतिम कार्य नहीं है बल्कि उनके वितरण की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है। वितरण व्यवस्था के सुचारु न होने के कारण शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित बहुत-सी अच्छी किताबें भी रद्दी बनी पड़ी हैं।

डा० केसकर का भाषण

प्रारंभ में ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० केसकर ने बताया कि भारत में यह अपने प्रकार की पहली प्रदर्शनी है। इसके लिए प्रकाशकों से पुस्तकें आमंत्रित की गयी थीं। कुल १८ हज़ार पुस्तकें आयीं जिनमें से १५ हज़ार पुस्तकें प्रदर्शनी में प्रदर्शित हैं। सबसे अधिक पुस्तकें अंग्रेज़ी की हैं। दूसरा नम्बर हिन्दी का है।

सैमिनार

२९ नवम्बर को प्रथम सैशन में पुस्तकालय विज्ञान के आचार्य श्री बी० एस० केशवन ने पठन-पाठन की रुचि और उसमें पुस्तकालय का योग विषय पर सारगर्भित भाषण दिया और कहा कि सरकार को इसमें अधिक व्यय करना चाहिए और पुस्तकों का उत्पादन ऊँचे स्तर का होना चाहिए।

उसी दिन सायंकाल के अधिवेशन में प्रकाशन व्यवसाय के उत्पादन की समस्याएं: कागज मुद्रण एवं जिल्दबन्दी पर श्री पी० एस० जैसिंह ने सारगर्भित निबन्ध पढ़ा और बताया कि अभी भारतवर्ष में इस प्रकार की मशीनरी नहीं है कि जो हम अपनी पुस्तकों का स्तर विदेशी पुस्तकों की तुलना में रख सकें। इसके लिए उन्होंने सरकार से सिफारिश की कि प्रकाशन व्यवसाय में प्रयोग की जाने वाली सामग्री पर न्यूनतम टैक्स लगाये जावें और विदेशों से मुद्रण और जिल्दवन्दी की मशीनें मंगाने के लिये सुगमतापूर्वक उदारता के साथ इम्पोर्ट लायसैन्स दिये जायें।

३० नवम्बर को तृतीय अधिवेशन में पुस्तक वितरण एवं बिक्री समस्याओं के विषय में श्री०वी०बलरामन ने निबंध पढ़ा। इस अधिवेशन में पोस्टेज़ तथा रेल भाड़ा कम करने के लिये सरकार से मांग की गई। पुस्तकें टैन्डर सिस्टम से नहीं खरीदी जानी चाहिए—यह एकमत से सदन ने कहा और सरकार से अनुरोध किया कि पुस्तकों की खरीद में टैन्डर प्रथा को समाप्त किया जाये।

३० नवम्बर के दूसरे अधिवेशन में डा० मुल्कराज आनन्द ने पुस्तक में साहित्य और जीवन समस्या पर सारगर्भित निबन्ध पढ़ा और कहा कि हमें उच्चत्तर स्तर का साहित्य उत्पादन करना चाहिए भारतीय भाषाओं की उत्तम कृत्तियों की समीक्षा तथा विवरण प्रकाशित करके (अंग्रेज़ी तथा हिन्दी भाषा में) भारत तथा विदेशों में बांटा जाय जिससे उसका अन्य भाषाओं में अनुवाद हो सके। पुस्तकों का अनुवाद उत्तम एवं प्रामाणिक हो इस पर विशेष ध्यान दिया जाये।

सैमीनार के प्रथम अधिवेशन पर २९ नवम्बर को अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के संयुक्त सचिव श्री कृष्णचन्द बेरी ने हिन्दी पुस्तकों की वाचन अभिरुचि का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया और बताया कि सामान्य पाठक हिंदी पुस्तकों के प्रति क्या आस्था रखता है और किस प्रकार की पुस्तक चाहता है। श्री बेरी जी का सम्पूर्ण लेख हिंदी प्रकाशक के अगले अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

१ दिसम्बर को नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० केसकर की अध्यक्षता में सैमीनार के विषय में तीन प्रस्ताव पास हुए।

प्रथम प्रस्ताव में एक लायब्रेरी समिति की स्थापना पर बल दिया गया। दूसरे प्रस्ताव में ये आशा व्यक्त की गई कि पुस्तकों की सप्लाई बुकसेलरों के द्वारा हो।

प्रकाशक तथा थोक पुस्तक विक्रेता विक्रेता का सही मूल्यांकन करें। तीसरे प्रस्ताव में कहा गया कि पुस्तकें टैन्डर सिस्टम में न बिकें, इसके लिए उचित कारवाई की जाय।

(१) सैमीनार ने इन प्रस्तावों के अतिरिक्त अपनी कुछ बातें सिफारिश के रूप में भी कहीं जिनमें सरकार से मांग की कि वह पुस्तक उत्पादनो में प्रयोग की जाने वाली सामग्री का उत्पादन उच्चस्तर से कराये।

(२) सरकार पुस्तकों के प्रकाशन और मुद्रण में सहयोग दे।

(३) समाचार पत्रों में पुस्तकों की समीक्षा के लिए अधिक स्थान दिया जावे।

(४) सरकार मुद्रण तथा बाइन्डिग की मशीनों को मंगाने में उदारतापूर्वक विदेशी मुद्रा उपलब्ध करे।

(५) सरकार प्रकाशकों तथा मुद्रकों को उसी प्रकार का उचित सम्मान दे जो समाचार पत्रों को दिया जाता है।

(६) सरकार उत्तम प्रकार की पुस्तक उत्पादन करने के लिये मुद्रण व्यवसाय में शिक्षण के लिए विशेष ध्यान दे।

(७) पुस्तकें सस्ती मिल सकें इसके लिए कागज पर से उत्पादन शुल्क हटाया जाये।

(८) पुस्तकों पर डाक खर्च कम से कम लगे और पुस्तक की परिभाषा के अन्तर्गत पुस्तक-सूचियों तथा पुस्तक-विज्ञापन सामग्री को भी रखा जाये।

(९) इण्डियन ऐयर लाइन्स कार्पोरेशन से प्रार्थना की जाये कि वह आधे दरों पर पुस्तकों के पैकिट ले।

(१०) प्रकाशक महोदय सहयोगी आधार पर प्रति वर्ष अपना एक सूचीपत्र पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के लिए प्रकाशित करें।

२ दिसम्बर को सायंकाल पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय से सम्बन्धित एक सम्मेलन श्री सदानन्द भटकल की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें सात महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों पर चर्चा की गई। इनमें से अधिकांश प्रस्ताव वही हैं जो सैमीनार में प्रस्तावों तथा सिफारिशों के रूप में किये गये हैं। ●
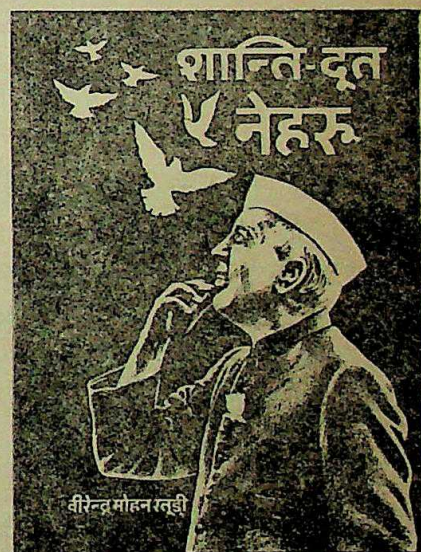
नये प्रकाशन

साहित्य-समालोचना

बच्चनः व्यक्ति और कवि : सं. बांकेविहारी भटनागर; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जवाहर नगर दिल्ली; सा. डि.-८, पृ. १२८, मू. ४.०० । कवि की ५७वीं वर्षग्रन्थि पर अर्पित ।

रस सिद्धांत : ले. डा. नगेन्द्र; प्र. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; सा. रा.-८; पृ. ३८०; मू. २०.०० ।

सूर साहित्य विमर्श : ले. दशरथराज अस्नानी; प्र. प्रभात प्रकाशन; २०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू० ५.०० ।

हिन्दी साहित्य और साहित्यकार : ले. सुधाकर पाण्डेय; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; सा. क्रा.; मू. १.२५ । पु. मु. ।

काव्य

संजीवन : क. रमाकांत शुक्ल; प्र. अंशु प्रकाशन, उन्नाव; सा. डि-८; पृ. १२८; मू. २.५० । कच और देवयानी पर खण्डकाव्य ।

उपन्यास

कैदी की पत्नी : ले. रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र. बेनीपुरी प्रकाशन, मोतीझील, अशोक मार्केट, मुजफ्फरपुर ; मू. ३.०० । पु. मु. ।

पतितों के देश में : ले. प्र. मू. पूर्वोक्त । पु. मु. ।

भटके राही : ले. मधुर भाषिणी; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. २.५० ।

मीमांसा : ले. अनूपलाल मंडल; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; सा. क्रा; मू. ३.०० ।

मुस्कान का मोल : ले. डा. अजमेर सिंह तोमर; प्र. जवाहर पुस्तकालय, मथुरा ; मू. ५.०० ।

युद्ध और शांति : ले. तालस्ताय; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. ८.०० ।

समस्या और समाधान : ले. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी; प्र. जवाहर पुस्तकालय, मथुरा; मू. ३.०० ।

कहानी

चिता के फूल : ले. रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र. बेनीपुरी प्रकाशन, मुजफ्फरपुर; मू. ३.०० । पु. मु. ।

नई नारी : ले. प्र. पूर्वोक्त; मू. २.५० । पु. मु. ।

नाटक

अमरसिंह : ले. आचार्य चतुरसेन; प्र. प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली; मू. २.५० ।

अरूप रतन : ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर; प्र. प्रभात प्रकाशन दिल्ली; मू. २.०० ।

तथागत : ले. रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र. बेनीपुरी प्रकाशन,मुजफ्फरपुर; मू. ३.०० । पु. मु. ।

देश के लिए : ले. राजकुमार; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी; सा. क्रा.; मू. २.०० ।

नया समाज और गाँव के देवता :

शकुन्तला :

सीता की मां : ले. रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र. बेनीपुरी प्रकाशन, मुजफ्फरपुर; मू. १.५०, १.२५, १५० ।

बाल-साहित्य

पूज्य चाचा नेहरू : ले० अशोककुमार सहगल; प्र० नवयुग पब्लिकेशंस, हनुमान मन्दिर रोड, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली; सा० डि०; पृ०; ९६; मू० ३.०० सचित्र ।

बहादुर दमकल वाले : ले. बालबन्धु; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; सा.डि., मू. १.२५ । पु. मु. ।

बेटे हों तो ऐसे :

बेटियाँ हों तो ऐसी : ले. रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र. बेनी-पुरी प्रकाशन मुजफ्फरपुर; मू. प्र. १.०० । पु. मु. ।

रानी घोड़ी: ले. बालबन्धु;

सितारों की बरात : ले. डा. एस.पी खत्री; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; मू. प्र. १.२५ । पु. मु. ।

राजनीति शास्त्र

अन्तराष्ट्रीय सम्बंध : ले. हरिदत्त वेदालंकार; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि.-८; पृ. ५७६; मू.११-०० । पु. मु. ।

अंतराष्ट्रीय कानून : ले. हरिदत्त वेदालंकार; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि.-८; पृ. ६०४; मू. १३.५० । पु. मु. ।

विदेशी राज्यों की शासन विधि : ले. डा. सत्यकेतु विद्यालंकार; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि.-८; पृ. ५४०; मू. ८५० । पु. मु. ।

इतिहास

एशिया का आधुनिक इतिहास : ले. डा. सत्यकेतु विद्यालंकार; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि.-८; पृ. ८९६; मू. १५.०० । पु. मु. ।

भारत का इतिहास : ले. डा. सत्यकेतु विद्यालंकार; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि.-८; पृ. ५९२; मू. ४-५० ।

समाज शास्त्र

उच्चतर समाज और शास्त्रीय सिद्धांत : ले. प्रो. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि-८, पृ. ५२२; मू. १२.००

सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान : सिद्धांत और व्यवहार में : ले. सत्यपाल रुहेला; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि-८; पृ. ४५६; मू १०.०० ।

भारत में समाज कार्य एवं समाजिक पुर्न-निर्माण : ले. डा. जी. आर. मदन; प्र. सरस्वती सदन, मसूरी; सा. डि-८; पृ. ३९२; मू. ९-५० ।

विविध

कलीदास के पक्षी : ले. हरिदत्त वेदालंकार; प्र. गुरुकुल संग्रहालय, गुरुकुल कांगड़ी; सा. क्रा.-४; पृ. १९६; मू. १५.०० ।

चिन्तामणि-चिंतन : ले. ओमप्रकाश सिंहल; प्र. हिन्दी साहित्य संसार. १३६९ वैदवाड़ा, दिल्ली; सा. क्रा.; पृ. १६०; मू. २.५० ।

प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा : ले. डा. रायगोविन्द-चन्द्र; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; सा. क्रा. ४; मू.१५.०० । पुरातत्व ।

भारत का भौगर्भिक अध्ययन : ले. डा. बलवीरसिंह नेगी; प्र. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी; सा. डि; मू. १५.०० । भूगभंशास्त्र ।

सरल निबंध और रचना : ले. ओमप्रकाश शर्मा, विष्णु-दत्त शर्मा; प्र. हिन्दी साहित्य संसार, वैदवाड़ा, दिल्ली; मू. १.७५ ।

सूचना सार

सर्वोत्तम पाठय पुस्तकों को पुरस्कार

विकासशील देशों में प्रकाशित स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकों की प्रतियोगिता में यूनेस्को ने एशिया के जिन १६ देशों को पुस्तकें भेजने का आंमत्रण दिया है, उनमें भारत भी है। सर्वोत्तम पाठ्य पुस्तक को १,००० डालर का नेसिम हबीफ पुरस्कार दिया जाता है।

स्व० नेसिम हबीफ ने यूनेस्को को जो धन दिया है, उसमें से यह पुरस्कार दिया जाता है। यह पुरस्कार इतिहास, भूगोल, नागरिक-शास्त्र या समाज-शास्त्र की जनवरी १९६० से दिसम्बर १९६३ के बीच प्रकाशित सर्वोत्तम पाठ्य-पुस्तक के लेखक को दिया जाएगा। १२ से १८ वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए लिखी गई पुस्तकें ही इस प्रतियोगिता में भेजी जा सकती हैं। यह पुस्तक मौलिक होनी चाहिए और इसका प्रकाशन सम्बन्धित देश के किसी रजिस्टर्ड प्रकाशक द्वारा होना चाहिए।

जो लेखक और प्रकाशक इस प्रतियोगिता में पुस्तक भेजना चाहें उन्हें प्रत्येक पुस्तक की तीन-तीन प्रतियाँ 'सेक्रेटरी, इंडियन नेशनल कमीशन फार कोआपरेशन विद यूनेस्को, शिक्षा मंत्रालय, 'ई' ब्लाक सिविल, डलहौजी रोड, नई दिल्ली-११ को १०' दिसम्बर,१९६४ तक भेजनी चाहिए।

स्कूल-कालेजों में सन् ६८ से नई पुस्तकें

उत्तरप्रदेश के हाई स्कूल और इण्टरमीडियेट शिक्षा बोर्ड ने निर्णय किया है कि सन् १९६८ से हाई स्कूलों और इण्टरमीडियेट कालेजों में सभी विषयों की पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जायेंगी और नई पाठ्यपुस्तकें पढ़ायी जायेंगी।

यह भी निर्णय किया गया कि कागज आदि की बढ़ी हुई कीमतों के कारण प्रकाशकों को पुस्तकों की कीमत नाममात्र बढ़ाने की अनुमति दी जाय। वे पुस्तकों का मूल्य उतना ही बढ़ा सकेंगे जितना बोर्ड निर्धारित करेगा।

बोर्ड ने इण्टरमीडियेट स्तर तक की शिक्षा के लिए योग्यतावाले अध्यापकों की कमी दूर करने के लिए अस्थायी नियम भी बनाने का निश्चय किया। यह कदम इसलिए उठाया जायगा कि विज्ञान की दिशा में उत्तरप्रदेश देश के अन्य क्षेत्रों से पीछे न रहे।

उपर्युक्त अस्थायी नियमों के अनुसार इण्टरमीडियेट कक्षाओं में एम० एस० सी० प्रथम वर्ष की परीक्षा पास किये हुए लोग भी जो प्रशिक्षित होंगे पढ़ा सकेंगे।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर : वाराणसी में स्थानान्तरित

विश्वविद्यालय प्रकाशन के संचालक एवं स्वत्वाधिकारी श्री पुरुषोत्तमदास मोदी सूचित करते हैं कि विश्वविद्यालय प्रकाशन का सारा व्यवसाय तथा कार्यालय गोरखपुर से वाराणसी स्थानान्तरित कर दिया गया है । वाराणसी का पता है—के ४०/१८,भैरवनाथ, (फोन न० ४७४१) । कृपया अब इसी पते पर सम्पर्क स्थापित करें ।

अर्थशास्त्र पर मौलिक ग्रंथों की समीक्षा

बम्बई से प्रकाशित होनेवाले 'इंडियन इकॉनॉमिक जर्नल' (त्रैमासिक) में अर्थशास्त्र विषय पर हिन्दी में प्रकाशित मौलिक पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जायगी । समीक्षक हैं—डॉ० व्रजिकशोर सिंह, रीडर, अर्थ-शास्त्र-विभाग काशी-हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५ । प्रकाशकों से अनुरोध है कि उपरोक्त पते पर अपने अर्थ-शास्त्र विषयक प्रकाशनों की एक-एक प्रति भिजवायें ।

'हरम के पासवान' जब्त

भारत सरकार ने मीर गुलाम अहमद कश्फी द्वारा लिखित और कश्मीर पब्लिशिंग हाउस, टी०७८२, पुराना किला, रावलपिण्डी द्वारा प्रकाशित 'हरम के पासवान' नामक उर्दू पुस्तक जब्त कर ली है ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए समिति

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों का निर्देशन करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के आचार्य डा० नगेन्द्र की अध्यक्षता में एक परीक्षा समिति का गठन किया गया है । समिति में निम्न सदस्य हैं :—डा० धीरेन्द्र वर्मा (इलाहाबाद), डा० दीनदयालु गुप्त (लखनऊ), डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी (चंडीगढ़), डा० हरवंशलाल शर्मा (अलीगढ़) डा०विनय मोहन शर्मा (कुरुक्षेत्र), प्रो० देवेन्द्र-नाथ शर्मा (पटना), डा० सत्येन्द्र (राजस्थान), डा० उदयनारायण तिवारी (मध्यप्रदेश), प्रो० अयोध्यानाथ शर्मा (कानपुर) तथा श्री गंगाशरण सिंह (संसद सदस्य बिहार) ।

बिन्दु जी का निधन

भारत के प्रख्यात रामायण व्याख्याकार गोस्वामी बिन्दु जी महाराज का मंगलवार २-१२-६४ को वृन्दावन में निधन हो गया ।

कवि और प्रकाशक के रूप में भी आप प्रर्याप्त प्रख्यात थे ।

राजस्थानी पुस्तकों की प्रदर्शनी

राजस्थानी भाषा के समृद्ध भंडार की झलक जनता के सामने रखने के उद्देश्य से राजस्थान की राजधानी जय-पुर में इस मास के प्रारम्भ में रामलीला मैदान के सम्मुख मानचित्र स्थल पर एक पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की गई । इस प्रदर्शनी के अवसर पर प्रकाशित सूची में ७०३ ग्रंथों के नाम थे, लेकिन वहाँ प्रदर्शित पुस्तकों की संख्या इतनी नहीं थी । जहाँ तक प्रदर्शनी के उद्देश्य का प्रश्न है, वह महत्वपूर्ण और सामयिक है ।